भक्त भगवन्त चरितावली एवं चरितामृत

(संपूर्ण)

शब्दार्थ सहित

लेखक

परमहंस राम मंगल दास

गोकुल भवन, वशिष्ठ कुंड

अयोध्या

आश्रम

श्रद्धेय परशुराम जी
गोकुल भवन, वशिष्ठ कुण्ड
अयोध्या, उ.प्र. 224-123
फोन: 05278-232484

वेबसाइटः www.rammangaldasji.org

प्रकाशक

Dr. Rajiv K. Varma
Dept. of Electrical & Computer Engineering
The University of Western Ontario
London, Ontario, N6A 5B9 Canada
Tel.: 001-(519) 661-2111 Ext. 85111
E-mail: rkvarma.uwo@gmail.com

© डॉ. राजीव कुमार वर्मा

Bhakt Bhagwant Charitavali evam Charitamrit (Sampurna)
by: *Paramhans Ram Mangal Das*

अनन्त श्री परमहंस राम मंगल दास जी

(1893–1984)

विश्व के एक अद्वितीय ब्रह्मलीन संत जिनके समक्ष भगवान, देवी–देवता, ऋषि–मुनि, हर धर्म के पैगम्बर, सिद्ध सन्त, पौराणिक तथा ऐतिहासिक महापुरुषों ने प्रगट होकर आध्यात्मिक पद व उपदेश लिखवाये – उनके द्वारा लिखित भक्तों तथा भगवान की कथाएं।

दो शब्द

द: परमहंस राममंगलदास

हम 28 की उम्र में रामघाट पर अपने गुरु जी परमहंस बाबा बेनी माधौ दास जी महाराज के पास आये। दो माह बाद, सब से पहले शुरू-शुरू ध्यान में राम विवाह देखा था। महारानी जी 10 हजार सखिन के बीच में जै माल ले कर धीरे-धीरे चलती थीं। सब सखी मंगल गाती थीं। 20 कड़ी का था, ऐसे स्वर मिले थे, मालूम होता था एक जनी गा रही है। हम सुबह लिखना चाहते थे तो महाराज जी ने मना कर दिया, कहा, ''पहिले पहिले न लिखौ, नहीं तो फिर कुछ न होगा।'' तब सब भूल गये।

फिर एक दिन नित्य दरबार गये। वहां बीच में राजा जनक जी बैठे थे, गल मोच्छा रखाये, गोरे-गोरे पतरे-पतरे, बंददार लम्बा अंगरखा पहिने, सफेद धोती चौकसिया टोपी सर पर थी। हम ने पूछा ''आप कौन हैं", तो कहा, ''हम राजा जनक हैं।'' हमने कहा, ''आप राजा जनक हैं तो हम को रामजी का कोई पद सुनावो।'' तो खड़े हो कर, कुछ झुक कर दाहिना हाथ सामने कर के पद सुनाने लगे। चारौं तरफ ठौर पर घूम कर पहिली कड़ी सुना कर मस्त हो गये। तब हमैं सब याद हो गया।

इसके छः माह बाद नानक देव रामघाट पर बट बृक्ष के नीचे दिन में 11 बजे प्रगट हुए। शुकुल धोती पहिने थे जैसी हमारे यहाँ जनेऊ में पहिराई जाती है—पीली रंगी इस रीति से बहुत पंडित अभी पहिरते हैं। सफेद बाल चाँदी चाँदी ऐसे चमकते थे। दाढ़ी भी सफेद चमकती थी। बहुत गोरे थे, शरीर महकता था। हम दंडवति किया। फिर उनके गले के पास से पेट तक चाँदी कैसी पटरी प्रगट हो गई। उसमें 35 (पैंतीस) अक्षरी खुदी थी, काली रोशनाई की, हम से कहा ''सुनावो''। हमने कहा

''हम रोज़ इसका पाठ करते हैं।" सुनाया, तो वह पटरी उलट गई, पेट की तरफ अक्षर हो गये। हम से कहा, ''यह स्तोत्र तुमको सिद्ध हो गया।''

फिर हम चरणोदक उतारा, तब अंतर हो गये। फिर थोड़े दिन में प्रगट हो कर थोड़ा बताया। फिर तीसरी बार सब बता कर अंतर हो गये। महाराज (गुरुजी) ध्यान में बैठे थे। हमने दो किताब (कक्षा) पढ़ा है, पर हमैं सब याद हो जाता, लिख लेते। फिर ऐसे सिद्ध संत अभी तक दो हज़ार के ऊपर मिले हैं जिनके पद लगभग 3500 से ज्यादा ही होंगे। कभी गिने नहीं गए हैं। वह सब हम लिख लेते थे। मास्टर हरनाथ सिंह ने खुशखत लिखा है। चार जिल्दें हैं।

कुछ समय हुआ भगौती (भगवती) का हुक्म हुआ कि कुछ भक्तौं की कथाएँ लिख दो। अवस्था 82 की हो गई है, शरीर कमज़ोर है पर भगौती का हुक्म है तो धीरे धीरे 300 से ऊपर कथाएँ लिखी हैं। पहिले इनमें से 200 छपैंगी, फिर भगवान की जैसी इच्छा होगी। इन कथाओं में कुछ ऐसी हैं जिन्हें हमने सुना है, ज्यादातर ऐसी हैं, जिनका हमारा स्वयं का अनुभव है, जो हमारे सम्पर्क में आये हैं, जिनसे हम से बातचीत हुई है। जिसने जैसा बताया वैसा ही लिख दिया है।

इस पुस्तक ''भक्त भगवन्त चरितावली एवम् चरितामृत'' में हम नानक जी की वाणी से कथाएँ आरम्भ करते हैं। नानक जी जनक जी का अंश थे। नानक जी के गुरु शुकदेव जी थे।

इस पुस्तक में 1 ईसाई, 32 मुसलमान, 169 हिन्दू भक्तों की कथाएँ हैं।

द: परमहंस राममंगलदास

गोकुल भवन
वशिष्ठ कुंड, अयोध्या
पिन 224123
सम्वत् 2032 वि० फागुन कृष्ण 10
दिनांक 24-2-76

प्रस्तावना

परमपूज्य गुरुदेव श्री परमहंस राम मंगल दास जी ने भगौती (भगवती दुर्गाजी) के हुकुम से भक्तों की 300 से ऊपर कथाएँ लिखीं तथा उनको दिव्य-ग्रन्थ खण्ड 5 [1] तथा दिव्य-ग्रन्थ खण्ड 6 [2] में संकलित किया।

परमहंसजी ने 1976 में अपने 'दो शब्द' में लिखा है–"पहले इनमें से 200 छपैंगी फिर भगवान की जैसी इच्छा होगी।" तदनुसार, इन कथाओं में से 202 चुनकर उन्होंने 'भक्त भगवन्त चरितावली एवं चरितामृत' के नाम से 1976 में छपवाया।

परमहर्ष की बात है कि अब भगवान की इच्छा से गुरुदेव द्वारा लिखित समस्त कथाएँ **प्रथम बार** छप रही हैं। प्रस्तुत दिव्य ग्रन्थ "भक्त भगवन्त चरितावली एवं चरितामृत (संपूर्ण)" में सबसे पहले वही 202 कथाएँ हैं जो गुरुदेव ने स्वयं अपने कर कमलों से चुन कर छपवाई थीं। उसके बाद बाकी कथाएँ उसी क्रम में हैं जैसे कि दिव्य-ग्रन्थ खण्ड 5 तथा दिव्य-ग्रन्थ खण्ड 6 में गुरुदेव ने लिखी हैं। केवल एक कथा "राजा राम सिंह गंगवल की यात्रा" अपनी विशेषता की वजह से अपने मूल स्थान से हटाकर अन्त में कर दी गई है। उसके स्थान पर परमहंस राम मंगल दास जी के "बड़ा ग्रन्थ खण्ड-2" में लिखी कथा "चीरावतार" डाल दी गई है। पूज्य श्री दादा गुरु जी की कथा का एक अंश भी अंत में जोड़ दिया गया है।

इस प्रकाशन में पूरा प्रयास किया गया है कि मूल दिव्य-ग्रन्थों में जैसे परमपूज्य श्री परमहंस राममंगल दास जी ने कथाएँ तथा आध्यात्मिक

पद लिखे हैं उन्हें अक्षरश: प्रकाशित किया जाये। इन कथाओं में कुछ शब्दों के अर्थ कोष्टक में लिख दिये गये हैं तथा अंत में विस्तार से शब्दार्थ जोड़ दिये गये हैं जिससे पाठकों को समझने में आसानी हो।

आदरणीय डॉ. के.एन. मिश्रा जी के अत्यन्त स्नेह, प्रोत्साहन तथा दिव्य-ग्रंथ वितरण में निरन्तर सहयोग के लिये हम उनके सदा ऋणी रहेंगे। श्री टी. सदागोपन जी के अनुपम सहयोग व साथ के लिये हम उनके प्रति हार्दिक आभार प्रकट करते हैं।

इस चरितावली के कार्य में हमारे दोनों बच्चों सर्वेश व रत्ना तथा हमारे भैया अंशुल चन्द्रा ने बहुत श्रद्धा और प्रेम से योगदान दिया है।

इस प्रकाशन कार्य में जो कोई त्रुटि हो गई हो इसके लिए हम सबसे हृदय से क्षमाप्रार्थी हैं।

दि. 2 नवम्बर, 2007

श्री गुरुदेव के परमतुच्छ दास
राजीव लोचन व मालिनी
(राजीव कुमार वर्मा व मालिनी वर्मा)

[1] "दिव्य ग्रन्थ खण्ड 5", लेखक परमहंस राम मंगल दास जी, 534 पृष्ठ, उत्तर प्रदेश राजकीय अभिलेखागार, लखनऊ द्वारा पंजीकृत, सं: 16087-UP/LKO/5524

[2] "दिव्य ग्रन्थ खण्ड 6", लेखक परमहंस राम मंगल दास जी, 544 पृष्ठ, उत्तर प्रदेश राजकीय अभिलेखागार, लखनऊ द्वारा पंजीकृत, सं: 16088-UP/LKO/5525

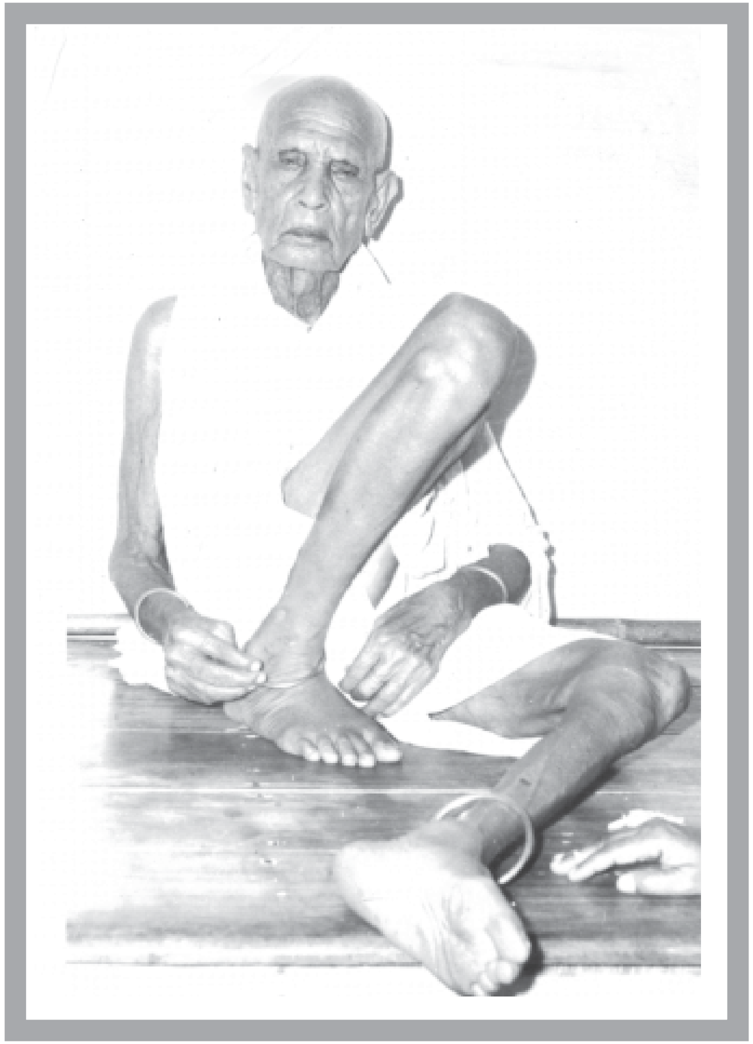

अनन्त श्री परमहंस राम मंगल दास जी

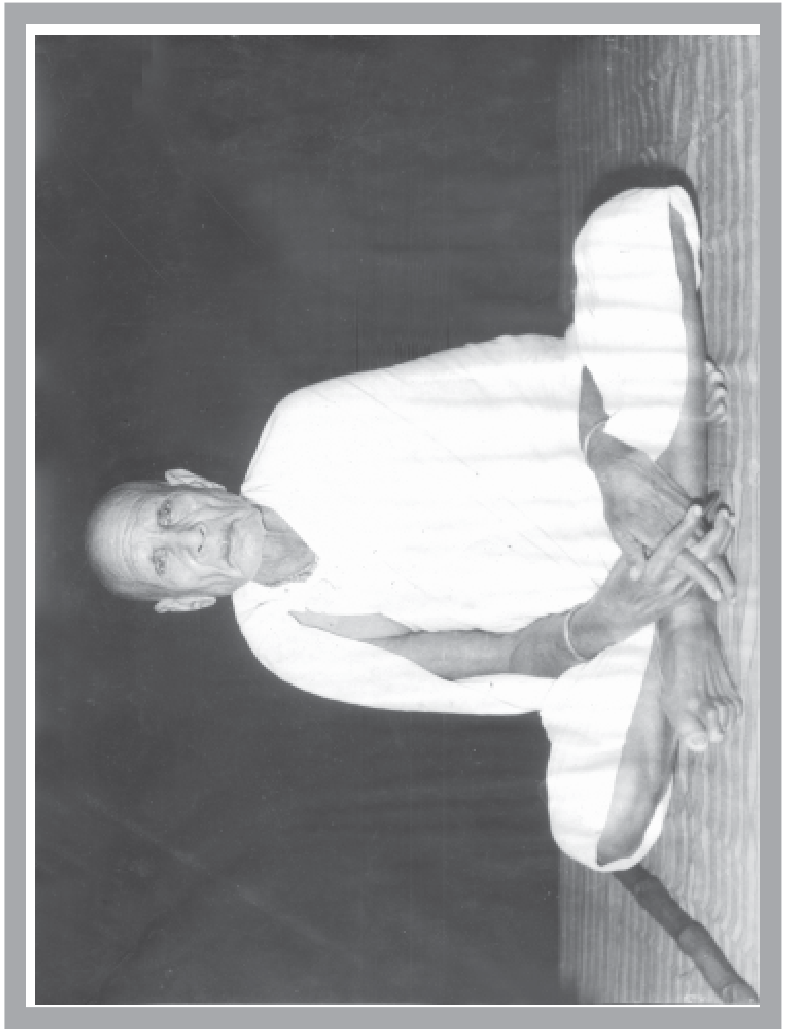

श्री गुरुदेव दयामय

श्री गुरुदेव स्लेट पर लिखते हुये

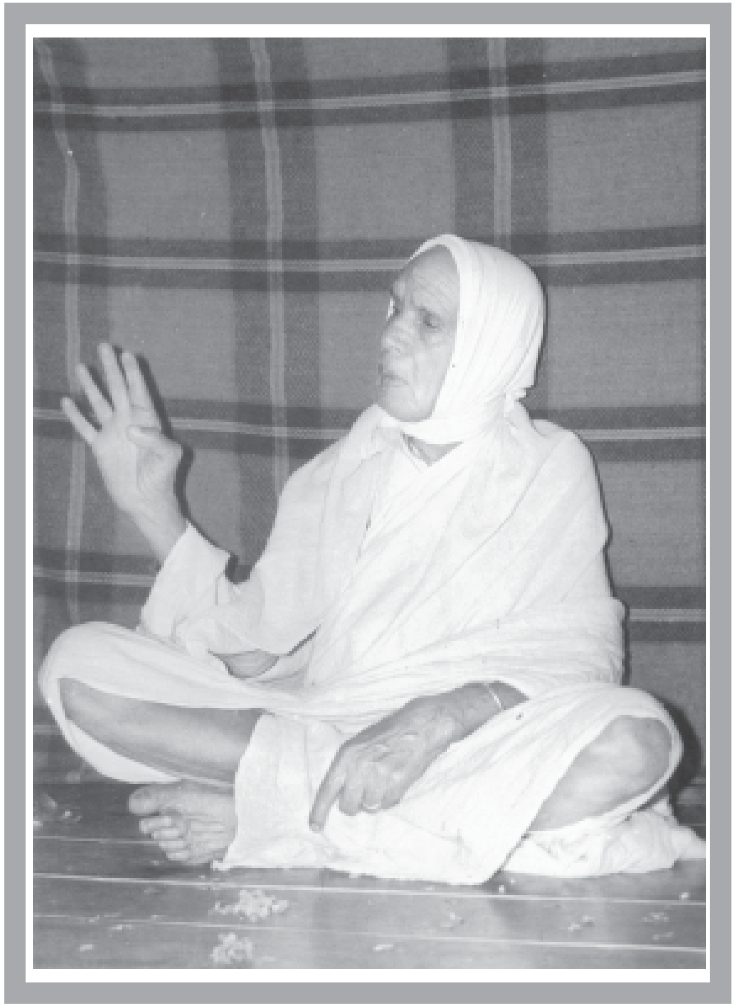

श्री गुरुदेव आश्रम में उपदेश देतु हुए

विषय सूची

दो शब्द v
प्रस्तावना vii

1. श्री गुरु नानक देव जी बाणी 1
2. श्री बाबा रघुनाथ दास जी 11
3. श्री बाबा जगन्नाथ दास जी 23
4. श्री परमहंस बाबा बेनी माधव दास जी 25
5. श्री बाबा माधौ राम 40
6. श्री बाबा टीका दास 42
7. श्री पलटू साहेब व सन्त राम प्रसाद जी को वैराग्य 56
8. श्री तपसी राम दास जी पंजाबी 59
9. श्री बिदेही जी 60
10. श्री विंद्या दास 61
11. श्री ईसा जी 64
12. श्री मुहम्मद साहेब 64
13. बड़ी बुआ जी 65
14. मर्द शहीद, राम भक्त 69
15. श्री कलन्दर शाह जी 71
16. शीश पैगम्बर 72
17. ज़िकिर शाह 72
18. खजट्टी पीर 73
19. इब्राहीम शाह जी 75
20. नौ गजा पीर 76
21. काठियावाड़ के एक अपूर्व भक्त 77
22. लालबिहारी मिश्र 79
23. श्री बाबा चालीदास जी 83
24. श्री बाबा राम किंकर दास जी 96
25. परमहंस श्री राम कृष्ण 98

26. श्री इलाही बेहना 98
27. श्री भूलन शाह जी 101
28. लाला रामदीन 102
29. सुन्दर दास अहीर 104
30. बूढ़ी माता 105
31. श्री शुक्र शाह जी 108
32. भदरसा का मेहतर 109
33. जनकपुर की ब्राह्मणी 110
34. चित्रपट बोलते हैं 110
35. श्री भरथरी जी से भेंट 111
36. भक्त पूरन मल 112
37. उपेन्द्र दत्त बंगाली 114
38. श्री खफ़ीफ़ शाह 116
39. करामत शाह 117
40. श्री भर भर शाह जी 118
41. गंग कवि 119
42. सुचित्त शाह जी 120
43. मियाँ करीम 121
44. राधा लोहारिन 123
45. जनौरा के जोती बकस 123
46. बाबा ध्यान दास 125
47. बाबा राम फल दास 127
48. फुरसत शाह 130
49. बाबा हरी दास 131
50. लाला राज नारायण 137
51. अच्छन मियां तेली 140
52. अंधे शाह 141
53. सन्तों का सीताराम ध्वनि करना 141
54. पंडित गंगा प्रसाद 142
55. ब्रह्मचारी और रिटायर्ड दारोगा 144
56. पाराशर नाथ की मढ़िया 145
57. राधाकृष्ण नाऊ 146
58. देवी दीन ब्राह्मण 148
59. शुक देव जी का दर्शन 149
60. रामदौर ब्राह्मण 152

61. बाबा बसन्त राम 156
62. अधना के सर्वजीत 166
63. चार चमारों का पुण्य 167
64. औघर बाबा 168
65. मानसरोवर कैलाश से आये एक सन्त 169
66. ठाकुर बद्री सिंह 171
67. एक वाममार्गी ब्रह्मचारी 172
68. पंडित कैलाश 175
69. राम नाम की महिमा 177
70. मास्टर लाला महाराज बहादुर 178
71. बजरंग बक्स सुपुत्र शिवदान सिंह 180
72. गजोधर बक्स 184
73. श्यामा माई हठयोगी की और एक रुस्तम हठयोगी की कथा 185
74. महात्मा गांधी जी से भेंट 187
75. महन्त सीता सरन 188
76. अवध राम राज सिंह 189
77. बाबा कमल दास अहीर 190
78. बाबा मुरारी दास 191
79. जगन्नाथ दास जी के गुरु 192
80. लाला गया प्रसाद 194
81. पूरन दास पासी 197
82. राम दीन लोहार 199
83. पं० बली राम 199
84. बाबा राम सरन दास 200
85. अजब दास के पुत्र 203
86. हड्डी हड्डी से जल जाने पर भी नाम की धुनि निकलती थी 206
87. जानकी कुँवरि 206
88. दादू बेहना 207
89. बाबा हरि चरन दास 209
90. मैनपुरी का ब्राह्मण लड़का 212
91. औघड़ 215
92. बाबा गुलज़ार शाह 217
93. पाँचू धोबी 219

94. नज़र अली शाह 220
95. कुदऊ सिंह 221
96. पं० सफालू 222
97. मौलाना रूम 224
98. बस्ती ज़िले की ठकुराइन 226
99. गजोधरपुर की ठकुराइन 226
100. सोमदत्त ब्राह्मण की माता 227
101. बाबू बाँके बिहारी की धर्मपत्नी 228
102. पं० उमा पति और उनके भतीजे बब्बन पति 230
103. जगन्नाथ वैश्य की धर्म पत्नी 231
104. श्यामा माई ब्राह्मणी 234
105. आगरे की बुढ़िया कुरमिन 236
106. जालवन (जालौन) जिला की बूढ़ी ठकुराइन 238
107. पंजाब के अमीर का लड़का (का) विराग 240
108. कलूट की स्त्री 242
109. फिक्कू चिकवे की पत्नी 246
110. बिहारा सिंह की धर्म पत्नी 247
111. बाबा राम प्रसाद तथा भक्त ब्राह्मण 249
112. गोकुल भवन में राधा कृष्ण की प्रतिष्ठा 251
113. लाला सूरज प्रसाद 252
114. पंजाब के ब्राह्मण 254
115. बलरामपुर का एक ब्राह्मण 254
116. माता दीन ब्राह्मण 255
117. लाल हरगोविन्द प्रसाद सक्सेना 256
118. लाला राज नारायण सकसेना की बहिन मालती 257
119. सन्त दूलन दास जी 258
120. श्री सन्त भगवान दास 259
121. बलदी दास औघड़ 259
122. नारायणदास कुर्मी 262
123. पं० राजेन्द्र दास 266
124. भूपाल की बूढ़ी बेगम 268
125. सरसैया घाट (कानपुर) के एक राम नाम
लिखने के उपासक साधू का आनन्द 269
126. ईश्वर विश्वासी ठठेर 271
127. पंडित भगवान दास 272

128. ठाकुर राम चेतन दास ब्रह्मचारी 273
129. मूर्ति पूजन के प्रेमी एक परम भागवत साधू 275
130. एक फ़कीर श्री अहमद 276
131. हीरा लाल कुर्मी 277
132. गूंगी माई चमारिन 279
133. पगली माई कहारिन 280
134. बिशेश्वर दास पासी 283
135. गंगा के करीब के एक साधू 286
136. मिथिला के सन्त 286
137. सत्यनामी बाबा 287
138. बाबा राम हर्ष दास 288
139. ठाकुर शुकदेव दास 289
140. समी माता की कृपा 291
141. कनक भवन के मैनेजर 291
142. ठाकुर दामोदर सिंह 293
143. सन्त घनश्याम शरण 294
144. कई युग के सन्त का आगमन 295
145. हुसेन शाह जी 296
146. मस्त शाह जी 297
147. डॉ० अखिलेश्वरनाथ श्रीवास्तव 298
148. सावित्री देवी 299
149. राम जानकी राम जानकी जपने वाला ब्राह्मण 300
150. गोविन्द साहेब 300
151. पीतम सिंह 301
152. श्री वली शाह जी 302
153. लाला अमबिका प्रसाद 303
154. बाबा फक्कड़ दास 304
155. मंजारी माई (लंगड़ी) 305
156. लाला सत्य नारायण लाल 307
157. बाबू सम्मन लाल 307
158. एक चमार 308
159. फिकिर शाह 309
160. ईश्वर विश्वासी एक ब्राह्मण विद्यार्थी 309
161. सफाई शाह जी 310
162. खैरियत शाह जी 310

163. लाल गुरु प्रसाद के पिता सोहनलाल व माता 311
164. बड़े महाराज जी द्वारा बताया एक छत्री का हाल 311
165. बाबा हरनाम दास जी 312
166. साँई दाता 313
167. खैराबाद के रिटायर्ड लाला 316
168. रोजा शाह जी 317
169. शंकर जी और भरथरी 318
170. डॉ० लुम्बा जी 319
171. सुरेश, पुत्र छोटेलाल गुप्ता 320
172. चतुरभुज दास 320
173. रामसिंह 321
174. बाबा विंध्या दास 321
175. नादिर गुलाब सिंह 322
176. श्री झन्झू शाह जी 323
177. लाला हठी परसाद 324
178. सीता कुण्ड के हनुमान जी 325
179. पंडित भगवत दास जी 326
180. गौरा गांव, कुसुम्भी की ब्राह्मणी 326
181. ज्योतिषी श्याम सुन्दर लाल मिश्र 327
182. महाबीर सिंह की धर्म पत्नी 329
183. बदमाश भी तर जाते हैं 330
184. भरतकुंड, अयोध्या 330
185. भगवान बुद्ध 333
186. पं० चन्द्र नाथ पाण्डे 334
187. कीर्तन करने वाली बुढ़िया धोबिन 334
188. शुकदेव दास जी की पंचायती कुटी 335
189. एक भक्त राजा और अभिमानी गुरु 337
190. ठाकुर रघुनन्दन सिंह 338
191. एक डाकू ठाकुर (मस्तराम) 339
192. श्याम अंडे से प्रगटा बालक 340
193. भगवान श्री राम जी और भगवान श्रीकृष्ण जी ने खेल दिखाया 341
194. धूरिया बाबा 344
195. भागलपुर की यात्रा 345
196. जगदीशपुरी की यात्रा 348

197. काशी होकर जनकपुर की यात्रा 350
198. एक निरछल जीव विश्वासी 354
199. राम नाम की महिमा का प्रतक्ष प्रमाण 356
200. बूढ़ी माता 356
201. श्री जग जीवन साहेब 363
202. श्री गाजी मियाँ 363
203. भैरव गिरि औघड़ से बड़े महाराज की भेंट 366
204. जब दयानन्द जी आए 367
205. माया की चाल 369
206. अभी हाल के एक भक्त का बैकुण्ठबास 371
207. काफ़िर लुटेरे के संबंध में 371
208. चीरावतार 372
209. श्री बहौरी भुजुवा 373
210. श्री ओरी भर्र 373
211. मियाँ सच्चे शाह जी 374
212. मियाँ मुनीर काश्मीरी 374
213. बदला चुकाना पड़ता है 375
214. श्री बिहारी अहीर 375
215. ठाकुर सुजान सिंह 376
216. श्री नारद जी के शिष्य सालिक राम गोवा 377
217. श्री राम मनोरथ दुबे 378
218. जानकी बाई 379
219. श्री महाराज जी के उपदेशामृत 379
220. साधक के लिए अनमोल उपदेश 379
221. दो अपढ़ माइन का गान 380
222. श्री गोपाल दास जी 380
223. एक ब्रह्मचारी से प्राप्त कथा 381
224. एक औरत व बच्चे की रक्षा 382
225. भक्त हरिहर बक्स 383
226. हिंडोले से गिरने पर भी भगवान द्वारा रक्षा 384
227. बिना मौत कोई मर नहीं सकता 384
228. एक बालक साधू की सरयू में डूबते हुए रक्षा 385
229. एक बंधे साँड़ की रक्षा 386
230. एक जीव की रक्षा 386
231. भगवान ने एक गाय की रक्षा करी 387

232. एक दूसरी गाय की रक्षा भगवान ने की 388
233. श्री महाराज जी से प्राप्त अनमोल उपदेश 390
234. एक साँड़ की भगवान ने रक्षा की 390
235. बन्दरौं की रक्षा 391
236. एक कुत्ते व सर्प की रक्षा भगवान ने करी 391
237. साधुओं से धनुष यज्ञ का वरनन 392
238. बारात का वरनन 394
239. एक जहरीले सांप, एक मूस और एक बीछी की कथा 394
240. औघड़ बाबा 395
241. श्री निर्बैर शाह जी 396
242. श्री अंधेशाह जी 396
243. बेनाम के सन्त 397
244. बिना आज्ञा के फूल तोड़ लिए 397
245. श्री अंधेशाह जी 398
246. साहू की खीर 398
247. अयोध्या जी के चार हठ योगी 399
248. श्री महाराज से प्राप्त उपदेश 400
249. लाला महाबीर प्रसाद 400
250. एक ठाकुर औघर 401
251. गोमती किनारे के औघड़ 401
252. नानी के ननिहाल के एक सांप की कथा 402
253. सिलपिल्ले भगवान 403
254. लाला हठी प्रसाद 405
255. आटे में सान कर रुपया निगल गया 405
256. गुरु उपदेश 406
257. दो साधुन का हाल 407
258. मोहनी माई ब्राह्मणी 408
259. हनुमान प्रसाद पोद्दार 409
260. बलिराम दास 410
261. कबीर जी की बानी 411
262. शिवनाथ सिंह की बहन माया देवी 411
263. शिवनाथ सिंह की धर्म पत्नी चन्द्रवती देवी 412
264. हरनाथ सिंह जी की धर्म पत्नी श्रीमती कमला की यात्रा 412
265. बड़े महाराज जी द्वारा बताई कथा 413
266. कुआँ के समीप बृक्ष 414
267. बाबा नारायण दास 415
268. तकदीर 415
269. तदबीर 416
270. अनइच्छित कैसे हो 416
271. भगवान की लीला भगवान जानैं 417
272. जा को राखै साइयाँ मार सकै नहिं कोय 418
273. कुवाँ का हाल 418
274. बांसी के खजानची के मंदिर, राम घाट, का कुछ हाल 419
275. मास्टर हरनाथ सिंह मेहरोत्रा के पिता प्राग नारायण व उनकी धर्मपत्नी 421
276. सन्त संग का प्रभाव 421
277. परभू पासी 421
278. श्री आगा जी 422
279. सुमति शाह जी 422
280. श्री छाया शाह जी 423
281. श्री खिल्ली शाह जी 423
282. श्री सफा शाह 426
283. श्री भोला मस्तान 426
284. तकनी माई कबरिन 427
285. नारद और गान विद्या 427
286. बैजू बावरे और तान सेन 428
287. बादशाह हुसैन 433
288. साधू राम किशुन दास 433
289. मिसरिख में एक गरीब लड़के का गान 435
290. बिहारा सिंह की बताई एक विचित्र गंधर्व की कथा 435
291. जो जस कीन तो तस फल चाखा 436
292. श्री घसीटे शाह जी 437
293. हरि दास जी 438
294. कृष्ण भगवान युधिस्थिर बार्ता 439
295. श्री बनहूस शाह 440
296. जन्म अष्टमी 440

297. श्री खिदमत शाह जी 441
298. श्री महबूब शाह 441
299. श्री सिफ़ारिश शाह 442
300. श्री महाराज जी के उपदेश वचन 442
301. पारस और लोहे का भेद 442
302. श्री मोहर्रम शाह बगदादी 443
303. प्रेम की नदी 443
304. गाने बजाने से भगवान की प्राप्ति 443
305. श्री महाराज जी कमला बार्ता 444
306. श्री टीका शाह जी 445
307. सांप का काटा दो माह बाद जीवित 445
308. ऊधो जी सखिन को समुझाने आये 446
309. भगवान का रहस 447
310. सूर जी का ध्रुपद 467
311. साधू के लक्षण 448
312. बाबा बैष्णव दास जी 448
313. श्री अंधेशाह जी 450
314. सीता कुण्ड के पास देवी जी मन्दिर के कुयें के प्रेत का उद्धार 451
315. डॉक्टर श्री अखिलेश्वर नाथ सिंह श्रीवास्तव के पत्र की प्रतिलिपि 452
316. पाँच महावाक्य 455
317. प्रेत का उद्धार 456
318. भगवान के सच्चे भक्त 460
319. श्री सूर शाह जी के दोहे 461
320. साधू गनपत दास 462
321. एक सन्यासी 464
322. बुलाकी शाह 464
323. अपढ़ की बानी 465
324. श्री देखा साह जी 465
325. श्री अपढ़ साह मुराव 466
326. चेतन शाह 470
327. पंचम मगता 470
328. सेवक मगता 471
329. आवाज सुनी 471

330. भक्त सहिदिया, मुसलमान 471
331. दरसन साह 472
332. अज्ञान शाह जी 473
333. जग जीवन साहेब 473
334. कसनी शाह जी 474
335. जगजीवन साहेब 474
336. श्री खुश खुर्रम शाह जी 475
337. श्री टंच शाह जी 475
338. श्री रसना दास 476
339. नानक जी 477
340. पैहारी बाबा 477
341. नेम शाह जी 477
342. टेम शाह जी 478
343. जुक्ती शाह जी 478
344. श्री घमंडी शाह जी 479
345. हस्थ शाह जी 480
346. बड़ी बुआ 480
347. अंधे शाह जी 481
348. परपंच शाह जी 482
349. श्री भुरवा धरकार 483
350. श्री रामदयाल काछी 483
351. श्री छोटे शाह जी 484
352. श्री नीचशाह जी 485
353. श्री दयाशाह जी 485
354. श्री निरद्वंद साह जी 486
355. श्री मुलाजिम शाह जी 487
356. श्री कामिल साह जी 487
357. श्री कमाई शाह जी 487
358. श्री हवहब साह जी 488
359. श्री जालिम साह जी कुरमी 489
360. श्री निडरसाह जी 490
361. श्री मुदमंगल साह जी 490
362. श्री माधो साह जी 490
363. श्री भल्लर साह 491
364. श्री मंसाराम जी 491

365. श्री समर्थ रामदासजी 492
366. श्री फटकार शाह जी 497
367. श्री लाला रामसहाय जी 497
368. धनुहा गांव के रामसिंह की कथा 500
369. पं० प्यारे लाल 501
370. पुरानी खोपड़ी का भूत 501
371. भगवान प्रेम के बंधन में हैं 502
372. रामनेवाज सिंह, दारोगा 502
373. बाबा हरीदास 503
374. टंडन की बूढ़ी सास 503
375. पं० देवीदत्त 504
376. बाराह क्षेत्र की कुछ बातें 505
377. ठाकुर अमर पाल सिंह 506
378. श्री महाराज जी 506
379. श्री महाराज जी 507
380. श्री महाराज जी 507
381. श्री महाराज जी से प्राप्त सद् उपदेश 508
382. नसे शाह जी की बाणी 510
383. श्री भूधर दास हकीम 510
384. एक भक्त का बिशाल भाव 510
385. बिना मौत कोई मर नहीं सकता 511
386. श्री महाराज जी के उपदेश 511
387. श्री महाराज जी के उपदेश 512
388. श्री ज्ञान दास 512
389. श्री मुजफ्फर हुसेन 513
390. श्री मधुकरिया बाबा जी 513
391. श्री बड़े महाराज जी के संबंध में 514
392. राजा राम सिंह गंगवल 516
शब्दार्थ 519

1. श्री गुरु नानक देव जी बाणी

दो शब्द:-

हम दो पाठ सुखमनी साहेब के करते थे। 18 की उम्र में चार साल घूमे हैं। एक धोती, चार लंगोटी, एक लोटा-डोरी और एक सोंटा रखते थे। किसी के दरवाज़े नहीं जाते थे। जो पाती कडू न हो या गूलर की गदिया खा लेते थे। चार चार दिन पानी पी कर घूमते थे। बड़ा बल था। जाड़ा गर्मी कुछ न लगती थी।

पछाँह हरदोई जिला, गांव बहादुर नगर के पच्छिम एक फ़रलांग पर बाबा टीका दास, उदासी सन्त, सिद्ध पुरुष की कुटी थी। बाबा टीका दास वैश्य थे। 85 बर्ष पर शरीर छोड़ा था। शंकर जी ने उनको भजन बताया था। 30 बर्ष की उम्र में वै हनुमान जी को रोटी बना कर खिलाये थे। उनका चरित्र बहुत ऊँचा है। उनकी जन्म भूमि जिला गोरखपुर, गाँव चौरी चौरा है।

हम वहाँ गये और बातचीत हुई। उन्होंने कहा "पैंतीस अच्छरी को मूंह बन्द करके ज़बान आगे नीचे के दांतों में सटा कर नाभी पर मन लगा कर उठाओ। इसे "राज दन्ती" मुद्रा कहते हैं। गर्दन झुकी रहै। दो माह में नाभी का चक्र खुल गया। अश्नान करने के बाद अपने आप पाठ शुरू होकर बन्द हो जाता है।

28 की उम्र में अयोध्या जी आए। रामघाट पर राम किंकर दास की छावनी पुरानी मानी जाती है। वहाँ पर महाराज जी अनन्त श्री 1008 श्री बेनी माधो दास परमहंस देव जी मंदिर के पीछे एक कोठरी 12 हाथ लम्बी 7 हाथ चौड़ी थी, उसी में रहते थे। जब हमें 6 माह बीत गये तब पास ही बट का वृक्ष था, उसी के नीचे "गुरु नानक देव जी" प्रगट हो गये। गुलाब के फूल के रंग का शरीर था। खूब महकता था। सफेद धोती

पहने थे, जैसी हमारे यहाँ जनेऊ में पहनाई जाती है। हमने दंडवत किया, चरनोदक उतारा। महाराज जी तखत पर बैठे ध्यान में मग्न थे। कुछ देर के बाद उनके गले से पेट तक एक चाँदी की पटरी प्रगट हो गई। उसमें काले काले अक्षर पैंतीस अक्कखरी के खुदे थे। हमसे कहा "इसे पढ़ो।" हमने कहा "हम रोज़ इसका पाठ करते हैं।" कहा "सुनाओ।" हमने सुना दिया। उसमें दुर्गा मंत्र भी है–

"ओँ श्रीँ ह्रीँ ल्रीँ सुन्दरी बालायै नमः"

(10 माला रोज़ सुबह नहाकर पूरब मूँह बैठ कर जपे)

बस पटरी उलट गई। अक्षर पेट की तरफ हो गये। हमसे कहा "यह असतोत्र तुम्हारा सिद्ध हो गया। इसी मंत्र के जपने से गुरु गोविन्द सिंह जिनका जन्म पटना का था, तेग बहादुर के पुत्र थे, क्षत्री वंश के थे, मुसलमानों को परास्त किये थे। भगौती (भगवती दुर्गा जी) ने खाँड़ा, चक्र, किरपान दिया था। गुरु गोविन्द सिंह जी ने 10 दिन खड़े खड़े पूरब मुख करके यह 'दुर्गा मंत्र' जपा था।"

यह मंत्र सिद्ध हमने किया था। मन लगा कर 10 माला करने से सब काम होता है।

गुरु नानक ने 10 दिन के बाद प्रगट होकर एक दोहा कहा, फिर अन्तर हो गये। फिर थोड़े दिन बाद थोड़ा लिखवाया, फिर कुछ दिन बाद पूरा लिखवा दिया। जो बताते थे हमें याद हो जाता था।

॥ श्री गुरु नानक देव जी बाणी ॥

दोहाः– अर्द्ध चन्द्र ओँकार पर जानि लेय जो कोय।
सत्य लोक को जाय फिरि आवागमन न होय ।।1।।
कंठ की जाप पिपीलका, स्वाँसा की है मीन।
सूरति जाप विहंग है, जानहिं परम प्रवीन ।।2।।

पदः– शब्द का भेद कछु वेद नहीं पायो,
कहत हैं सब साँच साँच ।।
गुरुदेव से नाम की धुनी जानि,
तब हरि चरित्र फिर बाँच बाँच ।।

तीनोइ गुनन के परे होय तब,
लगै कभी नहिं आँच आँच।
मन रम्यो नाम औ रूप संग,
ठग स्थिर ह्वै गये पाँच पाँच ।।
प्रेम मगन छबि देखै तौन,
घनश्याम सखा सखी नाच नाच।
मिटि जाय करम गति बिधि की लिखी,
जो मस्तक में दियो खाँच खाँच।।
है सुरन को दुर्लभ नर शरीर,
कैसा सुन्दर यह ढाँच ढाँच।
नानक बिरथा मानुष्य शरीर,
हरि भजन बिना जैसे काँच काँच ।।8।।

दोहाः– वेद की गति बैकुण्ठ तक आगे गति कछु नाहि।
राम नाम गुरु से मिले है सब के तन माहि ।।
सुर मुनि संतन जो कही सो सब दीन लिखाय।
वेद भेद पायो नहीं, साँची दीन बताय ।।
वेद त्रिगुन के परे नहीं तीनों गुन परवीन।
श्री कृष्ण भगवान ने गीता में कह दीन ।।
मोक्ष जीव तब होत है, मिटै सबै संताप।
एक अंश हरि भेजते, जग हितार्थ हित आप ।।
पाप से महि गरुआय जब, तब आवैं वे अंश।
जगत आय रक्षा करैं, होय दुःख विध्वंस ।।
फँसें नहीं वे जगत में, चले जाँय हरि पास।
ऐसै खेल लगा रहै, कीजै मन विश्वास ।।
हरि की लीला अगम है, नाहिं न पारावार।
सतगुरु किरपा करैं जब नाम खुलै सुखसार ।।
चारों मोक्षन का यहीं, हाल जानि तुम लेहु।
राम नाम सुमिरन करहु, निज नैनन लखि लेहु ।।8।।
भक्तन संग खेलत रहैं, राम आप ही खेल।
संशय देंय मिटाय सब, जो ह्वै जाय अकेल ।।

अकेल उसी को कहत हैं, नाम कि धुनि एक तार।
तार कभी टूटे नहीं, काह करै संसार ।।
कोटिन के तब बीच में, बैठौ बोलौ खाव।
विघ्न कोई व्यापै नहीं, राम नाम परभाव ।।
यह सिद्धान्त अपेल है, जानि लेहु गुरु पास।
आँखी कान खुलैं तबै, होहु राम के दास ।।
राज योग या को कहत, सब योगन को मूल।
या के बिन जाने सुनो, मिटै न तन मन शूल ।।
छूटि जाँय संकल्प सब, निर्विकल्प ह्वै जाय।
तब हरि के ढिग जाइ है, साँची दीन बताय ।।
संतन की संगति करै, तन मन प्रेम लगाय।
राम कृपानिधि द्रवहिं तब, सतगुरु देहिं मिलाय ।।
सूरति शब्द के जाप को, सतगुरु देहिं बताय।
रोम रोम से नाम धुनि, श्याम स्वरूप दिखाय ।।16।।
अजपा या को कहत हैं, सूरति शब्द की जाप।
जिह्बा चलै न कर हिलै, जपै आप को आप ।।
राम कृष्ण औ विष्णु जी, एकै हैं नहिं दोय।
नानक जे जन जानिगे, मुक्ति भक्ति लियो सोय ।।
कह नानक धनि संत वे, जिन कछु साधन कीन।
तिन चरनन की रज भली, मुख औ सिर पर लीन ।।
साढ़े तीन कोटि तीरथ बसैं, चरनन में लेव जान।
धोय के प्रेम से पीजिये, कह नानक हो ज्ञान ।।
संतन की महिमा अगम, को करि सकै बखान।
नानक हर दम संग रहैं, जिनके कृपा निधान ।।21।।

चौपाई:– संतन के मन की हरि जानै।
हरि की लीला संत बखानैं ।।1।।
संत सदा संग केलि करत हैं।
हरि संतन का ध्यान धरत हैं ।।2।।
हरि औ संत संग रहैं कैसे।
जल औ जल तरंग हैं जैसे ।।3।।

दोहा:– हरि औ संत में भेद नहिं, कहि नानक सुनि लेव।
तन मन मारो दीन ह्वै, जानि गूढ़ गति लेव ।।1।।
सात कमल तन में अहैं, नाल एक ही जान।
नानक कहि अभ्यास करि, देखै चतुर सुजान ।।2।।

चौपाई:– कमल लाल रंग दल हैं चारी।
बैठि गजानन सुरति सम्हारी ।।
गुदा चक्र का भेद बताया।
करि के जतन जानि हम पाया ।।
कमल पीत रंग षट दल जानो।
शक्ति सहित ब्रह्मा कर थानो ।।
इन्द्री चक्र का भेद बतायन।
उत्पति यहँ से होत सुनायन ।।
नाभी इन्द्री मध्य बखानो।
कुंडलिनी को यहँ पर जानो ।।
पूँछ को मूँह में बैठि दबाये।
जब जागे तब सुख उपजाये ।।
श्याम रंग दल आठ सुहावन।
बिष्णु लक्ष्मी बास है पावन ।।
पालन करत सबन पर दाया।
नाभि-चक्र का हाल सुनाया ।।8।।
बारह दल रंग श्वेत कमल है।
शिव गिरजा जहँ बैठि विमल है ।।
हिरदय चक्र का हाल यह भाई।
जो देखा सो दीन बताई ।।
कमल धूम रंग सोरह दल जहँ।
आतम इच्छा शक्ति रहत तहँ ।।
कण्ठ के चक्र का भेद है प्यारे।
चलु आगे मिलिहै सुख सारे ।।
कमल सहस दल बहु परकाशा।
जोति निरंजन गिरिजा बासा ।।13।।

दोहाः– शेष सुकुल रंग सहस फन ऊपर छाया कीन।
त्रिकुटी के नीचे अहै जानहिं परम प्रवीन ।।

चौपाईः– दुइ दल कमल रंग शशि केरा।
रेफ़ बिन्दु को तापर डेरा ।।

दोहाः– शिव ब्रह्मा विष्णू जपैं राम नाम यह जान।
चमकै तेज अपार तहँ को करि सकै बखान ।।

चौपाईः– त्रिकुटी चक्र कहत हैं याको।
तिरगुण का फाटक है बाँको ।।
सूरति शब्द में जौन लगावै।
सतगुरु किरपा से खुलि जावै ।।
तीनों देव खुशी हों ताता।
आशिष देंय जाव अब भ्राता ।।

दोहाः– तिरबेनी अश्नान करि जब निर्मल ह्वै जाय।
तब जोती के दरस हों गगन महल में जाय ।।

पदः– गगन महल में रहस करत हैं,
राधे कृष्ण मुरारी जी।
राग रागिनी सखा सखी संग,
मुरली बाजै प्यारी जी ।।
अनहद बाजा वरनि सकै को,
ताल सुरन गति न्यारी जी।
नानक देखत ही बनि आवै,
कीजै ध्यान सम्हारी जी ।।4।।

दोहाः– शून्य भवन में लय भई सुधि बुधि गई हेराय।
किरपानिधि की कृपा से, फिर आगे बढ़ि जाय ।।
भँवर गुफ़ा या को कहत महा शून्य है नाम।
जड़ समाधि तहँ होत है हठ योगिन को धाम ।।
सत्य लोक के पास ही बना अहै गोलोक।
कृष्ण के अन्तर राधिका गौवन का तहँ थोक ।।3।।

पदः– बने विचित्र भवन तहँ पावन।
रंग रंग के बृक्ष सुहावन ।।

पुष्पन की सुगंध तहँ उड़ती।
मधुर मधुर वायू जहँ चलती ।।
झूला झूल रहे गिरधारी।
कोटि काम छबि तन पर वारी ।।
राम ब्रह्म साकेत के बासी।
जिन इच्छा करि सब परकासी ।।
पूरण सुख के हैं प्रभु रासी।
चारों मोक्षन के तहँ बासी ।।
वरनि सकै छबि वहँ की को है।
देखत ही बनि आवत जो है ।।
अन्तरगत हैं आदि भवानी।
अगणित शक्ती जिन उपजानी ।।7।।

दोहाः– हमको गुरु महाराज ने दीन्हो भेद बताय।
जड़ समाधि में मन चपल सृष्टी रचत अघाय ।।
या से या को मत सिखो, मानो बचन हमार।
राज योग को जान लो, मिलै तुम्हैं सुखसार ।।
शून्य में सोऽहं रूप प्रभू, रहत लीजिए मान।
पवन में पवन जबै मिलैं कैसे पावै जान ।।
सत्यलोक से दयानिधि नाम को दीन पठाय।
त्रिकुटी पर आसन कियो, दुइ दल कमल पै आय ।।
एक अंश महा शून्य में, दूसर शून्य में जान।
गगन में तीसर जानिए, त्रिकुटी चौथा मान ।।
त्रिकुटी से बहु अंश बनि, छिटकैं तन में जाय ।।
धुनी उठत है नाम की, रोम-रोम हर्षाय ।।6।।

चौपाईः– मध्य भाग पच्छिम दिशि सो है।
तीनों नारायन मन मोहै।।
धुनी ध्यान का खेल पसारैं।
शून्य समाधि सबै मिलि धारै ।।
आपै आप को जानन हारे।
आपै आप खेल बिस्तारे।।

करि विश्वास श्री गुरु बानी।
निर्भय ह्वै भजु सारंगपानी ।।
छूटि जाय सब तन की काई।
हर शै में फिरि वही दिखाई।।
जप अरु ध्यान सदा संग जानो।
अन्तराय होवै नहिं मानो ।।
अकह अपार अगम यह बाता।
गुरु किरपा नानक कहैं ताता ।।7।।

दोहाः– सतगुरु बचन में प्रीति हो अन्धकार हरि जाय।
प्रेम दीनता उर बसे हर दम रूप दिखाय ।।

चौपाईः– नाम रूप का खेल अपारा।
पालन उत्पति प्रलयक सारा।।
नाम से रूप बनत पल माहीं।
रूप से नाम कि सब पर छाहीं ।।
लीला धाम बनत नहिं देरी।
नाम कि सब दिशि अहै उजेरी ।।3।।

पदः– नाम रूप परकाश दशा लय और न दूजा कोई जी।
द्वैत भाव तन से जब छूटै, सूरति शब्द मिलोई जी ।।
अस्तुति निन्दा सम तब होवै, तन मन प्रेम मिलोई जी।
नानक सतगुरु से जब जानै, मुक्ति भक्ति तब होई जी ।।4।।

दोहाः– बायें स्वर में शशि रहैं, दाहिने सूर्य को जान।
मध्य में सुखमन जानिए, तहँ पर शिव को थान ।।

चौपाईः– प्राण का बास कण्ठ में जानो।
हिरदय बास मनहि कर मानो ।।
जब मन सूरति संग लग जाई।
तब आकाशबृत् होत है भाई ।।
छबि देखै जब श्याम की प्यारी।
प्रेम कि डोरि बंध्यो सुख भारी ।।3।।

दोहा– शंख, चक्र, गदा, पदुम, कर मुरली धनुष औ बान।
तीनों शक्तिन के सहित, सन्मुख कृपानिधान ।।

पन्द्रह बिधि की जाप को, गुरु किरपा हम जान।
कह नानक मानो सही, लय समाधि अरु ध्यान ।।
नीचे ऊपर दन्त जो, समुहे पर हैं जान।
जिह्बा तिन में साटिये, मुख मूँदौ हो ज्ञान।
बैठि उनमुनी से तबै, सूरति शब्द लगाव।
चन्द्र सूर्य जब एक हों, सुखमन घाट नहाव ।।
तिरबेनी अश्नान भई, वहाँ खेचरी लागि।
पाप पुण्य दोनों जरे, सबै कामना भागि ।।
हठ योगिन की खेचरी, तुम्हें देंव बतलाय।
जिह्बा उलटि के दशम में, कसि के देव लगाय ।।
महा शून्य के घाट पर महा खेचरी जान।
भँवर गुफा पहुँच्यो जबै बन्द भई तब मान ।।
श्री गुरु शुकदेव जी मो पर किरपा कीन।
रूप सदा सन्मुख रहै, सूरति शब्द में लीन ।।
मानुष का तन पाय कै, निशि दिन भज्यो न राम।
अगणित चक्कर काटिहै, मिले नहीं बिश्राम।
राम नाम सुमिरन करौ, तन मन प्रेम लगाय।
नानक की यह विनय है, सब से शीश नवाय ।।10।।

पदः– सब में सब से परे है स्वामी,
रूप अहै नहिं रूपम।
अकथ अनादि कहैं सुर मुनि,
सब गावत चरित अनूपम ।।
अकह अपार अगम करुणामय,
भक्तन हित नर रूपम।
नानक सरन सरन प्रभु तेरी,
चरु अरु अचर के भूपम ।।4।।

दोहाः– महा प्रकाश में रूप है, रूप में महा प्रकाश।
नाम में महा प्रकाश है, रूप में नाम का बास ।।
नाम रूप परकाश का देखा चहे जो रंग।
नानक हर दम हरि भजै रहै सदा ही संग ।।

गौर वर्ण शशि जानिए, श्याम वर्ण हैं भानु।
पालन शशि ते होत है, उत्पति सूर्य से जानु ।।3।।

चौपाई:– पिता बिष्णु सम रवि को जानो।
लक्ष्मी माता सम शशि मानो।
सुखमन मन को सुख उपजावै।
धुनी ध्यान लय में पहुँचावै ।।2।।

दोहा:– शशि ते थिर कारज बनैं, रवि से चर को जान।
नानक हरि के भजन बिन, मिलै न पद निर्वान ।।
सिद्धिन में परि के कहीं, मन प्रसन्न ह्वै जाय।
पावन बेड़ी पड़ गई, घूम घूम चकराय ।।
तीखे कन्टक जानिये, बचा रहे सो सूर।
नानक गुरु परताप ते, राम कृपा भरपूर ।।3।।

चौपाई– चारौं ध्यान देंव बतलाई।
सुनि के तन मन अति हर्षाई।।
प्रथम ध्यान करु नैनन बन्दा।
देखौ चरित सच्चिदानन्दा ।।
दूसर ध्यान खुलें दोउ नैना,
खेलें हंसैं कहैं मृदु बैना।
तीसर ध्यान है सन्मुख झाँकी।
वरनि सकै को छबि अति बाँकी ।।
चौथा ध्यान दिब्य साकेता।
संत हंस संग कृपा निकेता ।।
चारौं ध्यान सिद्ध ह्वै जावैं,
तब सब सुर मुनि दरश दिखावैं ।।।।
नाना खेल करैं संग आई।
सो चरित नहिं वरनि सिराई ।।7।।

दोहा– पांच प्राण मिलि एक हों, तब पावो वह ठौर।
कह नानक मेरे गुरु, तत्व ज्ञान शिर मौर ।।
अपने में सबको लखैं, सब में आप को जान।
इस रहस्य के भेद को, नानक सो कछु जान ।।

नाद बिन्दु में जब कोई ह्वै जावै सम्पन्न ।।
वीर्य उर्ध्व होवै तबै, कह नानक सो धन्य ।।3।।

चौपाई– पदवी महापुरुष की जानौ।
दरशन करत हरै अघ मानौ।

दोहा– नानक ऐसे संत जन, गुरु किरपा मिलि जाहिं ।।
मानो हरि ही मिल गए भेद नहीं बिलगाहिं ।।।
नानक ऐसे संत जन, करैं सदा उर बास।
जिनकी कृपा कटाक्ष ते, तन मन रहे हुलास ।।
संतन की महिमा अगम, मेटि करम गति देहिं ।।
बचन प्रभू टारैं नहीं, पास आपने लेहिं ।।
संतन की संगत करै, आवागमन नशाय।
कह नानक मानों बचन, दीन्हों भेद बताय ।।
गई पिपीलका गगन तक, मीन समाधी कीन।
सात स्वर्ग ऊपर विहंग, जाय के आसन लीन ।।
सूरति लागै शब्द पर, तन मन प्रेम से जान।
नानक ता को प्राप्त हों, चारों बिधि के ध्यान ।।6।।

''जै श्री गुरुदेव भगवान की''

2. श्री बाबा रघुनाथ दास जी, बड़े महाराज
बड़ी छावनी, अयोध्या

यह पैतेपुर गाँव के निवासी थे, कान्यकुब्ज ब्राह्मण थे। बड़े संस्कारी औतारी पुरुष थे। शादी हो गई थी। सरकारी नौकरी फौज में करते थे। भगवान का भजन, नाम जप, रामायण का पाठ करते। शंकर जी हनुमान जी से प्रेम था। सालिगराम जी की पूजन करते, नरबदेश्वर साथ रहे। एक बार भिनगा राज्य पर फौज ने चढ़ाई कर दिया। महाराज जी भगवान का भोग लगा रहे थे। भगवान ने इन के रूप से सब तोपों में बत्ती दे दिया। तोपैं दगने लगीं। उस राजा की फौज भाग गयी। जब महाराज जी गए तो रापट (राबर्ट) साहब ने कहा, ''रघुनाथ सिंह, तुम्हारी बहादुरी हमने विलायत को लिख दिया। तुम ने बड़ी बहादुरी का काम

किया। सब तोपौं पर बत्ती दे दिया।'' महाराज ने कहा ''हम तो अपने भगवान का भोग लगा रहे थे।'' यह कह कर महाराज ने नौकरी से इस्तीफा दे दिया और कमरी की लंगोटी और एक मिट्टी की हंडी ले कर चल दिये। काशी से हरद्वार तक गंगा के किनारे किनारे तीन साल घूमे। जो अन्न, खेत कट जाते हैं खेतों में दराज (दरार) होते हैं उनमें घुस जाता है, वह लकड़ी से खोद कर एक तोला कोई अन्न हो, गंगा जल से धो कर भगवान को अर्पण करके पाते और थोड़ा जल पी लेते।

महाराज जी के गुरु यहाँ बासुदेव घाट पर रहते थे। उनको मालुम हुआ तो बुला लिए। बट के नीचे हंडी रख कर गुरु की दंडवति कर के और जो साधू रहे सब की दंडवति कर के बैठ गए। सिर्फ लंगोटी कमरी की थी और हंडी। कुछ दिन बाद फूस की झोपड़ी बन गई, भजन में लग गए। कुछ दिन बाद एक ब्रह्मचारी को हरीदास, जिला रायबरेली, गाँव बबूरिहा, ने भेजा। उनको नाम बता दिया था, पर वै भूल गए थे। उनके पास सनातन भगवान थे। अवध में घूमे, जहां जाते पूछते और कहते ''हम आठ सेर पक्का भोजन करते हैं।'' तो कोई नहीं बोलता। घूमते-घूमते महाराज जी के पास आ गए। हाल कहा। महाराज जी ने कहा ''लाओ इन्हें, यह हमको और आपको खवावैंगे।'' महाराज ने ले लिया। गुरुद्वारे में धरा दिया। ब्रह्मचारी ने कहा, ''इनका सनातन भगवान नाम है।'' कुछ दिन ब्रह्मचारी रहे फिर चले गए। कुछ दिन बाद साधू आने लगे तो भंडार में जितनी मूर्ति (मनुष्य) रहीं उतना परसाद बनता था। महाराज साधुन से कह देते थे ''जाओ परसाद पाओ।'' एक दिन गुरु ने कहा ''तुम तो जो आता है उसे भेज देते हो'' महाराज जी ने कहा ''सब को पूरा हो जाता है या कम हो जाता है'' तो गुरु ने कहा ''तुम से इस बात से क्या मतलब, तुम बड़े सिद्ध हो तो अलग जा कर बैठो।'' महाराज जी दंडवति कर के भगवान को लेकर सरजू के किनारे चले गए। वहाँ झाऊ (एक विशेष पौधा) खूब फरा था। वही भोग लगाते और पाते थे। कुछ समय बीतने पर मान सिंह राजा ने 52 बिगहा में मिट्टी की बड़ी-बड़ी निशानी लगवा दिया, फिर कल्लू मल ने एक बिगहा गोलान में फूस का बंगला बनवाया, ऊंचा, माटी की 18 सीढ़ी बनी थीं ऊपर चढ़ने के लिए। फिर साधू आने लगे, उनकी कुटी बनने लगीं, कुवां शायद 5 या 7 बने। साधू और गरीबों की सेवा होने लगी।

महाराज जी सब सामान छोड़ आये थे वह उनके मकान पर सरकार ने भेज दिया था। फिर घर से सालिगराम, नरबदेश्वर, रामायण आ गई। दूर दूर से कम्मल (कंबल), कपड़ा, चटाई, भोजन का सामान घी तेल आने लगा। तब 2 मन पक्का गेहूं एक रुपये का था। हज़ारौं साधू रहने लगे। भंडारी, जल भरिया, अमनियां (सब्जी-फल कटाई) करने वाले सब मुंह में साफी बांधे रहते थे। जब काम हो जाता था तब साफी खोलते थे। बीच चौतरे में महाराज चटाई पर बैठते लंगोटी काली कमरी की लगा कर। फिर चारौं तरफ एक कायदे से साधू, ब्राह्मण, पंडित, दर्शन करने वाले बैठते थे। भगवान के थार पर माछी नहीं बैठने पाती थी, ऐसा इन्तजाम था। फिर पंगत (भोजन) होती थी। जब सब पा (भोजन कर) चुकते थे तब महाराज पाते थे। भंडारी सबेरे अपने अपने भगवान का भोग लगा कर तब भंडार में जाते थे। फिर सब तैयार हो जाय तो भंडारी डोल डाल (टट्टी) हो कर, नहा कर आवै। गरमी में सौंफ शक्कर दी जाती थी। बरसात में पेड़ा, बर्फी तमाम आते थे वह दिये जाते थे। फिर पा कर, जल पी कर, भंडार में फेरने (भोजन परसने) जाते थे, जिस से किसी चीज़ पर मन न चले। समैया (उत्सव) में कई हजार साधू-सेवक आ जाते, सब की सेवा होती थी, कोई भूखा नहीं लौटता था। सबेरे कोठार खुला तो 12 बजे रात में बन्द होता था, हांक दे कर कि अब कुठार बन्द होता है, जिसे जो कुछ जरूरत हो ले ले। बहुत लोग आते, कहते कि 25 जने घर के हैं, और हैं अकेले, तो महाराज जानते हुए 25 सीधा (भोजन की कच्ची सामग्री) दिलाते थे। उनके कहने पर कि काहे में ले जांय तो चादर साठिया तमाम धरे रहते थे, उनमें बंधा दिया जाता था। चोर आते तो सब सामान बंधा कर उनको दिलाते, कहते, ''कोई मारौ नहीं, पेट के लिये आए हैं।'' कोई एक धोती के लिये आवे तो पूछा जाय कितने आदमी घर के हैं, जै हों, उनके दो-दो धोती दी जांय। गरीबों पर बड़ी निगाह रखते थे। जो तीर्थ यात्रा को जाते उनको कपड़ा, बर्तन, खर्चा दिलाते; कहते ''जहां जहां दर्शन को जाना हमारी दंडवति कह देना।'' यह नहीं पूछते थे कि तुम सब कहां के रहने वाले हो। महाराज के आगे तमाम रुपया पैसा चढ़ता था। किसी ने यदि 2 पैसे की जगह धोके से एक आना चढ़ा दिया तो आँखैं खोल कर बेंत से हटा देते थे कि तुमने यह धोके से चढ़ा दिया है।

एक आदमी ने 32 रुपया चढ़ाया तो महाराज जी ने बेंत से हटा दिया, कहा, ''घोड़ा बेंच कर चढ़ाया है, घुराइन्द आती है। भगवान के भोग के काम का नहीं है।'' बहुत लोग दिन में महाराज के आगे से रुपयों की मुट्ठी भरते तो महाराज धीरे धीरे मुंह घुमा लेते। जब वह अपने कपड़े में रख लेते, तब मुंह सामने करते। खूब चोरी करते। लोग समझते कि आँखें बन्द हैं देखते नहीं हैं। राम जानकी उनके सामने रहते थे। उनकी नाना प्रकार की लीलायें देखा करते।

चैत, सावन, कार्तिकी समैया पर महाराज पर पूजा अधिक चढ़ता था। हनुमान जी पर कम चढ़ता तो हनुमान जी के यहां का हिसाब महाराज जी मंगा कर और अपने यहां का शुमार (हिसाब) करा कर, हनुमान जी के यहां भेज कर तब यहां का रुपया सनातन भगवान के सामने दिखा कर बनियां के यहां भेज दिया जाता था। वह सब सामान भेजा करता था। जैसे, महाराज पर तीस हज़ार चढ़ा और हनुमान जी पर पच्चीस हज़ार चढ़ा तो पाँच हज़ार हनुमान जी को भेजा जाता था।

पहले यह पर्बत उड़ते थे तो बड़ा नुकसान होता था तो इन्द्र ने बज्र से इनके पंख काट दिया। एक मैनाक पर्वत पाताल भाग गया। वह जब बड़ा पर्व होता है तब गंगा, जमुना, सरस्वती, शारदा, सरजू में आता है तो अथाह जल गांठ (घुटना) भर रह जाता है। एक कोई बड़ी पर्ब थी। सरजू में बड़ा मेला था, आया। महाराज के साथ सरजू जी के किनारे हजारौं आदमी बैठे थे। महाराज जान गए, सरजू के उस पार निकल गये और सब लोग निकल गये, जल गांठ भर हो गया। बहुत रुपया महाराज पर चढ़ा। महाराज ने कहा ''यहाँ सब सामान बने।'' बनने लगा, हज़ारौं मूरती वहीं परसाद पाये। मंझले महाराज ने महाराज जी (हमारे गुरु) से बताया था, ऐसी ऐसी घटना बहुत हैं।

महाराज जी के साथ चौतरे पर हज़ारौं साधू सेवक बैठे थे। महाराज जी आंख बंद किये नाना प्रकार की भगवान की लीला देखा करते। एक साधू कहीं से आया। चबूतरा ऊंचा था, 18 सीढ़ी कच्ची बनी थीं, ऊपर चढ़ गया। महाराज के दाहिने हाथ की अंगुली, जिसे छिंगुनियाँ कहते हैं, दांतों से काटा तो महाराज ने आंखें खोलीं, खून बह रहा था, साधू पास खड़ा था। महाराज ने हाथ उठा कर सब को दिखाया। कहा, ''देखो, बड़ा भूखा साधू है, अंगुली मुंह में डाल लिया। इसको बहुत अच्छी मिठाई खवाई जाय।'' वह साधू रोने लगा। ''हमने बड़ा पाप किया।'' महाराज

ने कहा, ''नहीं, यह भगवान ने परीक्षा करवाई है। भजन करने वाले इस पर चलेंगे, तब भगवान अपना लेंगे–गोस्वामी जी (तुलसीदास जी) ने कहा है, 'साधू से होय न कारज हानी।' अपने को मिटा देना, यानी अपने को सब से नीचा मान लेना साधू का काम है। भजन की भीख जो भिखारी दीन होता है उसी को भगवान देते हैं।'' फिर उसकी महाराज ने बड़ी खातिर करवाई। उसका समाधान कर के भेजा। महाराज जी की अंगुली धोई गई। जिस जगह खून गिरा था वह धोया गया, कोई कष्ट न हुआ। अपनै ठीक हो गई। उसने ज़ोर से काटा था।

एक साधू सीता कुण्ड के पास गुफा में रहता था। वह देर में आया। हज़ारौं साधू सेवक खा चुके थे। भंडारी ने एक हंडी में कढ़ी पकौड़ी बची थी रख दिया था। कहा, ''यही बची है, शुद्ध है, तुम ले जाओ।'' वह ले कर महाराज जी के पास आया। उनके पास हजारौं आदमी बैठे थे। वह चबूतरे पर चढ़ गया। उसने उस हंड़िया को महाराज जी के ऊपर मारा। हंडी खम्भा में लग कर फूट गई, कढ़ी पकौड़ी महाराज पर पड़ी। महाराज काली कमरी की लंगोटी लगाते थे। कोई कपड़ा शरीर पर न था। शरीर में कढ़ी खूब लग गई। साधू चला गया। महाराज ने आँखें खोली और कहा, ''कढ़ी, पकौड़ी कैसे खाये, उसको महा प्रसाद रोटी-साग कुछ न दिया।'' भंडारी ने कहा, ''भंडार में यही था।'' महाराज का हुक्म हुआ "10 सीधा पक्का सामान दे आओ।'' साधू ले गये। उसने सब सामान धर कर मुंह में करिखा (कालिख) लगा कर आया। महाराज जी की दंडवति किया, फिर एक टांग से, हाथ जोड़ कर, खड़ा हो कर रोने लगा। महाराज ने कहा ''तुम तो बड़े साधू हो, क्रोध आया अपना काम कर के चला गया, तुम्हारा दोष नहीं है। देखो, क्रोध ने तुम्हारे साथ कितनी नेकी की। तुम भोजन के लिये आये थे, न मिला, कढ़ी पकौड़ी मिली, हमारे पास लाये तो हम से भगवान ने 10 सीधा पक्का सामान दिलाया।'' महाराज ने उसे मिठाई खवाई और कहा, ''अब जाओ भोजन बनाओ जा कर, तुम को आज देर हो गई।'' फिर गया, भोजन बना कर अपने सालिगराम का भोग लगाया। रात में भगवान ने उसे स्वप्न दिया, कहा, ''देखो, साधू जो होते हैं वह बुराई करने वाले के साथ भलाई करते हैं।'' वह साधू फिर दूसरे दिन श्री महाराज जी के पास आया, सब हाल बताया। श्री महाराज जी ने कहा, ''तुम अपने

ठाकुर जी के लिये रोज़ाना भोग ले जाया करो, तुमको बनाने में तकलीफ होती है।'' तब से रोज़ ले जाने लगा।

एक साधू आया। महाराज के पास बहुत भीड़ रहती थी। वह साधू श्री महाराज जी को महतारी, बहिन, बिटिया की खराब खराब गाली देने लगा। तो साधू और सेवक बिगड़े। महाराज ने कहा ''सब साधू सेवक चुप रहैं'' तो सबने कहा–''गोस्वामी जी ने कहा है 'हरि हर निन्दा सुनै जो काना। होय पाप गो घात समाना'' तो महाराज ने कहा ''हम तो खुद सुन रहे हैं। हमारी बात से तुम्हारी गती होगी कि गोस्वामी जी की बात से होगी'' तब सब मूर्ति शान्त हो गए। गरमी का महीना था, महाराज जी ने उसे खूब बढ़िया बढ़िया मिठाई खवाई, और उसको दो अचला सात सात हाथ के, दो साफी पाँच-पाँच हाथ की, चार लंगोटी, एक चदरा, एक आसन, एक लोटा, कटोरी, थाली, गिलास दे कर एक कुटी में आसन करा दिया और कहा ''खूब भजन करो'' वह फिर साधू हो गया, जात का ठाकुर था। फिर भगवान की दया हो गई, सब उसकी तारीफ करने लगे। वह साधू सब की सेवा करने लगा तो उसके पट खुल गए।

महाराज के समय में हजारौं आदमी मजूरी करके आते, सुबह बाल भोग लेते, दोपहर को भोजन करते, शाम को पाते। गर्मी में जाज़िम (चादर) बिछा दी जाती, रात में उस पर सोते। जाड़े में पैरा छोड़ कर उस पर जाज़िम बिछवा देते, ऊपर से ज़ाज़िम उढ़ा दी जाती थी। इस तरह लोग रहते थे। लड़किन की शादी, लड़कों के जनेउ के लिये लोग आते- उनको जिस चीज़ की जरूरत होती सब दिला देते थे। जिस के घर में कोई मरता वह आता तो दसवाँ, तेरहीं का जो सामान माँगता उसे दिला देते। कोई आया आधा सेर तेल के लिये। कोतवाल ने महाराज के पास आकर कहा। महाराज ने कहा ''कोठारी से दिला दो''। कोठारी एक पाव देने लगा तो कोतवाल ने महाराज से जा कर कहा। महाराज ने कहा ''एक सेर दिला दो'' तो कोठारी आधा सेर देने लगा। फिर कोतवाल ने महाराज से कहा, तो महाराज ने कहा ''दो सेर दिला दो''। इसी तरह बढ़ते बढ़ते महाराज ने कहा कि 32 सेर उसके घर पहुंचा दो। तब कोठारी सिर पर धर के उसके घर पहुंचाते थे। यह लीला भगवान कराते थे।

साधू, जप, पाठ वालों की कुटी और ध्यान वालों की कुटी करीब करीब थीं। ''जप, पाठ, पूजन करो, घंटी न बजाओ, पाठ ऐसे करौ कि

उसके कान में आवाज न जाय। वै ध्यान में कुछ देख रहे हैं, सुन रहे हैं, उसमें बाधा पड़ जायगी।"

महाराज फौज़ी थे। इस से उनके पास गोरौं की फौज, सिक्खौं की, मुसलमानौं की सब आती थी, दंडवति कर के बैठतीं। सब का स्वागत होता था। अच्छे अच्छे मुसलमान फ़कीर दूर दूर से आते, हर एक मज़हब के आते, सब का सत्कार होता। जब तक मन चाहता रहते, खूब सत्संग करते। महाराज के बचन सुन कर मस्त हो जाते, रोने लगते थे। एक साधू आया, महाराज से पूछा ''आप की कौन उपासना है?'' महाराज ने कहा, "हमारे यहाँ आ कर उपासा यानी भूखा न लौटे, यही उपासना है।" वह चुप हो गया। फिर उसे भोजन करा कर महाराज ने भेजा। प्रसन्न चित्त हो कर गया। महाराज ब्रत के दिन कुत्ता, बन्दर सब को फलाहार दिलाते थे और जो रोज़ भंडार में बनता था वह दिया जाता था। सियारों को कई जगह धराते थे सान कर के जिसमें खाने में झगड़ा न करैं। एक मगर का बच्चा था सरजूजी के किनारे कुंड में उसे खूब खिलाते थे। वह जब मस्त हो गया तो महाराज जी ने कहा ''तुम्हारा नाम हम मोहन दास धर दिया, किसी साधू सेवक को न पकड़ना।'' महाराज जब स्नान करने जाते थे तो उसके पास जाते, वह देख कर महाराज के पैरों पर मुंह धर के महाराज की तरफ देखने लगता था, तब महाराज दाहिने हाथ से सिर सोहरा कर कहते ''अब तुम जाओ, हम अस्नान करेंगे।'' यह सुन कर वह कुंड में चला जाता। महाराज के पास जो कोई आता कोतवाल से कह दिये थे कि जलपान करा कर हमारे पास लाना। भूखे में मन ठीक नहीं रहता, इसी से कोई ठीक काम नहीं होता।

एक बुढ़िया अवध में आई। बहुत स्थानों में गई और कहती थी कि दो पैसे में हमारा कोई भंडारा करा दे, तो लोग उसे डाटते, कहते भाग जा, कहीं दो पैसे में भंडारा होता है। सब जगह घूम कर महाराज जी के पास गई। महाराज ने कोतवाल से कहा ''इसके दो पैसे लेकर रंग बदल (हल्दी) लेकर दाल के टोकना (बटुआ) में छोड़ दो। छोड़ दी गई। जब सब भोजन बन गया तो बुढ़िया की जै बोल दी गई। तब बुढ़िया ने चांदी के एक हजार रुपया भंडार के लिये दिया। तब 2 मन गेहूं एक रुपये के थे, साढ़े तीन सेर एक रुपये का घी था। अवध के साधू सब सुन कर चुप हो गए।

एक साधू लौकी का कमंडल बना कर लाया, कहा ''इसे कोई आटा, दाल, चावल से भर नहीं सकता।'' साधू सुन कर समझे कि इसका दिमाग ठीक नहीं है, क्या बकता है। वह तोंबी मंत्र से बनाई जाती है। उसकी शै (वस्तु) जिन्नात निकाल ले जाते हैं इसी से वह भरती नहीं है। महाराज के पास साधू गया। कोतवाल से पूछा तो सब हाल कहा। महाराज ने एक मुट्ठी आटा उसमें छोड़ दिया तो वह भर कर फूट गई। फिर महाराज ने उसे भोजन कराया और कहा ''यह सब दुनियाँ के चमत्कार हैं, जिन्हें लोग बहुत मानते हैं। यह कोई भजन नहीं है। तुमने घर बार छोड़ा, साधु भेष बनाया, फिर मान बड़ाई के चक्कर में पड़ कर किसी काम के न रहे। एक भजन करता है उसी की आड़ में हजारौं खाते हैं। यह शरीर परस्वारथ परमारथ के लिये मिला है। न भजन हो तो पर-उपकार में ही लग जाय तो चौथे बैकुण्ठ में पहुँच जाय। अपने शरीर से किसी का दिल दुखाना, नीचा दिखाना महा पाप है। बड़ी भाग्य से नर शरीर मिलता है। इस शरीर को देवता तरसते हैं। यह कर्म-भूमि है। यहाँ की अच्छी कमाई से भगवान के धाम में बास होता है। साधू को महाराज जी ने खूब समझाया। वह रोने लगा और बोला, ''श्री महाराजजी! अब आप की दया से हमारे मन के विकार निकल गये। हमारे अन्दर ऐसी चोट लगी है कि भगवान के नाम जप के सिवा कुछ न करूँ।'' वह दंडवति कर के चला गया। चारौं धाम घूमा। हर समय राम राम करता था और थोड़ी थोड़ी देर में रोता था। उसके पट खुल गये। फिर महाराज जी के पास आया, दंडवति किया। उसकी दशा देख कर महाराज जी ने छाती से लगाया और एक कुटी में आसन करा दिया। कई वर्ष रहा। 90 में शरीर छोड़ा।

जब पंगति बैठती रही तो सीताराम साथ बुलाते रहे, फिर बीच में एक बार सीता राम बुलाते थे। उठने के समय फिर बोलाते रहे, तब पंगति उठती थी। तो पक्षी पत्तलों पर कूद पड़ते। जानते थे कि यह उठने की सीताराम कही गई है। खूब खाते, जब छक जाते, तब पत्तलें उठाई जाती थीं।

रोज महाराज जितनी जगह में साधुनि की कुटी थी, पहिले सनातन भगवान की पांच परिकरमा करते, फिर साधुनि की कुटिया की परिकरमा करते, तब आसन पर बैठते दोनों समय। 11 पर साधू शयन करते, 2 पर उठते, एक घंटा क्रिया कर्म में लगता। सूर्य न उदय हो तब

तक अपना नियम कर लेते। नेम टेम का समय भी खराब न होता था। रात में कोई भूखा आ जाय तो उसे भर पेट मिठाई पवाई जाती थी। फलाहार करने वालों को गंजी-आलू, अरुई-अमरूद दिये जाते थे। फलाहार का प्रमाण है कि अन्न का आधा दाम लगे नहीं तो जप, पाठ, पूजन, दर्शन, कीर्तन का फल नहीं मिलता। जो धूनी तापते हैं उसमें इतनी लकड़ी हो कि जिससे न अधिक आँच लगे, न ठंड लगे। अगर आँच लगेगी तो पछेल कर बैठेंगे और ठंड लगी तो आगे को खसकेंगे तो मन न बटोर सकेंगे। जो भभूती लगाते थे उनसे अमनियाँ नहीं कराई जाती थी, जल नहीं भराया जाता था, क्योंकि भभूति झड़ने से भगवान का भोग नहीं लगता।

जो साधू चरस, गांजा, तमाखू पीते थे, उनसे भी काम नहीं लिया जाता था उनके हाथ गंधाते थे। भगवान का भोग न लगेगा। सिर्फ परसाद पावैं, अपना भजन करैं। कितने साधू नशा पीना, भभूती लगाना, धूनी तापना, फलाहार करना छोड़ दिये थे। गती तो भजन से होती है। नशा न मिलने से मन लाँय लाँय होता है। पता लगाते हैं। एक एक कोस जाते हैं, जब पी लेते हैं तब मन कुछ देर ठीक रहता है। फिर वही हाल होता है। इससे सब नशा हानिकारक हैं। तब साधक समझ जाते थे कि ठीक बात है, छोड़ देते थे।

अवध में साधू निमंत्रण में जाते तो रंगी साफी पाते। यह ला कर धो कर साफ करके पहिनते थे। महाराज का हुक्म था। सादा वस्त्र, सादा भोजन करने से साधक का मन शान्त रहता है। हजार आदमी में दाल साग की छौंक में बहुत कम घी जाता था। कोई भंडारा दिया तो जो बना वह सब पा लेवें। सैकड़ों मन घी, तेल जमा रहता। सेवक लोग आते उनको दिया जाता। जिसके कोई भंडारा या कोई जरूरत हो उसे दिया जाता था। साधून से महाराज कहते थे ''तुम को क्या संतान पैदा करना है, खूब ताकत की चीजें खावोगे तो इन्द्री प्रबल होगी, मन तुम को नीचा दिखा देगा।'' तब सब समझ कर उसी रीति पर चलते थे।

महाराज जी को जब 12 वर्ष यहाँ आये हो गये, तब माता जी ने पत्र लिखा कि ''हम भी आप की शरण में आकर अपना जीवन सुधारना चाहती हैं।'' महाराज ने लिखा दिया ''जब तुम्हारी इच्छा हो आ जाओ, कई कुटी खाली हैं।'' पत्र पाते ही वहाँ से अपने परिवार के एक महाराज के भक्त के साथ आ गईं, कुटी में आसन लगा कर भजन

करने लगीं। रोज सरजू अस्नान-सनातन भगवान की दंडवति, महाराज जी की दंडवति करती थी। अपना नेम समय से करतीं। तब साधू आश्रम के उनकी दंडवति करने लगे तो महाराज से कहलाये ''यह बात ठीक नहीं है, हमैं दुःख होता है! हमारी आप के सामने दंडवति करते हैं।'' महाराज ने कहला भेजा ''जीव भाव से तरता है, उनका भाव है, हम रोकेंगे तो उनको दुख होगा। इसमें तुम्हारी हानि नहीं है, तुम अपना भजन करो, न दंडवति से खुश हो, न दंडवति से दुखी हो तभी गती होगी।'' फिर वह चुप रहीं कभी कुछ न पूछा। भगवान की दया हो गई। शायद महाराज 77 की उम्र में गये, माता जी 100 पर गई। बैठी जप करती थीं। आरती आई उसे ले कर कहा ''विमान आ गया,'' बस शरीर छूट गया। तब मंझले महाराज ने क्रिया कर्म, भंडारा खूब धूम से किया।

महाराज के समय के साधू सेवक कहा करते थे कि हमैं महाराज बहुत मानते हैं। एक साधू 40 कोस पर था। महाराज ने तार दिवा दिया ''जैसे हों वैसे ही चले आवैं।'' महीना गरमी का था। तार की खबर मिली। डोल-डाल हो कर आसन पर जाता था सिर्फ लंगोटी लगाए लोटा बगल में दबाए, आसन पर न गया, चल दिया। दो दिन में आया तो दूरि से दंडवति किया। साधूओं ने कहा ''तुम आसन तक न लाये, ऐसे कैसे आए।'' उसने सब हाल बताया कि महाराज का हुक्म था कि जैसे हों वैसे चले आवैं। वैसे ही चल दिये। दो दिन में आए, न हाथ पांव शुद्ध किया, न कुल्ला दातून अश्नान किया। अगर हम शुद्ध हो कर आते तो आज्ञा का उल्लंघन हो जाता। दोनों तरफ से कहीं ठिकाना न मिलता। यह बात महाराज सुन रहे थे। ऊपर से आये नीचे। बहुत साधू खड़े थे, कहा ''देखिये, इतना कष्ट उठाया, लार तक नहीं घूंटा, ऐसा विश्वासी दीन हमारे बचन को पूरा किया।'' उसके पट खुल गये। फिर महाराज जी ने कहा, ''अब तुम अश्नान करो'' साधू को 2 अचला, 2 साफी, 4 लंगोटी, चादरा, आसन दिया गया। वह अश्नान करके लंगोटी लगा कर अचला लगा कर महाराज की दंडवति किया। भंडारी ने उसे भोजन कराया। कुटी में आसन लगाया।

एक कुठारी का शरीर छूटा तो महाराज के आँसू आ गये। सब साधू बोले ''महाराज आप के आँसू क्यों आ गये'' तो कहा ''आँसू इससे आए कि वह उदार था। एक सेर का हुक्म दिया जाय तो वह डेढ़ सेर देता था। अब ऐसा कुठारी और नहीं है।'' जब साधू उसके शरीर

को सरजू जी ले गये तो महाराज जी साथ गए। उसे सब ने सरजू जी में पधार दिया, अश्नान किया, महाराज जी भी अश्नान कर के सब के साथ आसन पर आए।

एक साधू चित्रकूट में चिथरा लपेटे घूमा करता था। सब की जूठन खाता, उसे लोग पागल कहते। वह किसी से बोलता न था। एक दिन पूस महीना, उजेरी दसमी 12 बजे दिन में बोला और कहा, ''देखो बाबा रघुनाथ दास विमान पर जा रहे हैं।'' तब सब लोग बोले ''यह पागल क्या कहता है।'' फिर जब बात ज़ाहिर हुई तब ठीक ठहरी। कोई बड़ा ऊंचा सन्त था।

बड़े महाराज और मंझले महाराज के समय में जो साधू आरती में न आवैं तो हुक्म हो जाय कि जगदीशपुरी में जा कर दर्शन कर के यहाँ आवैं। अगर डोलडाल गये हों या बीमार हों तो माफ़ी मिल जाय। कोई साधू से झगड़ा करे तो यही सज़ा दी जाय कि जिसका कसूर हो उसे आने जाने का खर्चा दिया जाय, तब लौट कर रह सकते थे। कोई साधू एक या दोनों बांह उठा कर आवे तो उसे समझाते थे कि एक आदमी तुम्हारी सेवा में रहता है—लंगोटी खोलै, तुम को शौंचावे, लंगोटी बाँधै, अश्नान करावै, कपड़ा धोवै, भोजन करावै—क्या उसे कष्ट नहीं मालूम होता है? तुमको इससे क्या प्राप्ती होती है? तो वह साधू मान जाता था। उसकी बाँहैं एक या दोनों को उतारते थे, मालिश कराते थे। जब वह सब काम अपना करने लगता था तब जाता था।

जो नंगे आता था उसे समझा कर कपड़ा पहिनाते थे। पूंछते थे कि तुम को जल भोजन करने का ज्ञान है, मान अपमान लगता है तो कहता ''हाँ'' तो फिर लंगोटी लगाने का ज्ञान नहीं है जो नंगे घूमते हो। नंगा वह रहे जिसे बाल भाव हो जाय। उसे विज्ञान दशा कहते हैं। यह मन मुखी आडम्बर है, इस से गती नहीं होती है। तो वह मान जाता था। कपड़े दिये जाते थे, पहन लेता था। जो पेड़ में रसरी बाँध कर झूलते हैं, पैर ऊपर सर नीचे, मूंड़ और दाढ़ी में कपड़ा बाँध लेते हैं, नीचे कंडे की आगी जला लेते हैं, एक आदमी ढारें देता (झुलाता), रसरी बंधी है। अगर ढार आगी के पास रुक जाय तो प्राण चले जाँय, सब शरीर अंग भंग हो जाय। यह कोई भजन नहीं है, काया कष्ट है। महाराज खूब समझाते थे। सब से सरल वेद, शास्त्र, उपनिषद, गीता, मानस, भागवत,

सब का सार भगवान के नाम का जप है। जिसका जिस नाम से प्रेम हो। भगवान के हजारौं नाम हैं। एक में मन लगा – मुक्ति, भक्ति, ज्ञान सब प्राप्त हो जाय। तुम्हारी जीविका का प्रबंध भगवान संग लगा दिये हैं। कहीं जाओ वह वहीं मिलेगा। तुमको देख कर सब लोग कहते हैं "बाबा बड़ा भारी सिद्ध है" खूब पैसा चढ़ता है। यह दूध भिक्षा नहीं है। ठगाई के पैसे से गती नहीं होती, इस तरह समझा कर कुछ दिन रोक कर तब जहाँ का रहने वाला साधू होता था, उसे जो जरूरत होती थी, देकर भेजते थे। महाराज के समान उदार, दयावान महाराज ही थे। उनका सूक्ष्म चरित्र यह हम अपने गुरु महाराज से सुने थे। बहुत भूल गये।

महाराज जी के समय में सरजू जी में बड़ी बड़ी नावें चलती थीं। एक एक नाव में हजारौं मन अनाज आता था। एक नाव डूबने लगी तो जो लोग लाते थे वे बोले "दोहाई बाबा रघुनाथ दास जी की, नाव डूबी रही है, बचाओ।" महाराज के कान में शब्द आया तो महाराज ने जाकर जोर लगाया, नाव बच गई। महीना जाड़े का था। महाराज के पसीना आ गया था। भक्तों ने पूछा "महाराज आपके पसीना आया।" तो कहा "एक नाव डूबती थी, तो नाव वालों ने हमें पुकारा था, हमें नाव में जोर लगाना पड़ा इससे पसीना आ गया, वह लोग अभी आते होंगे कुछ देर में।" लोग आये, एक मन जो गल्ला था लाए, 1 रुपया साथ में। तीन हजार नाव आती थीं, जो सामान होती उसमें से एक मन सामान और 1 रुपया आता था। साल में दो बार नाव का मालिक जाँच करने आता था कि इतनी नाव हमारी आईं। तो दो बार में सवा सवा रुपया पूजा देता था। वही उतना लिखा जाता था और जो चढ़ता था सो सनातन भगवान को दिखाकर बनियाँ के यहाँ भेज दिया जाता था। वही सामान देता था।

महाराज जी से भक्तों ने कहा कि यदि आपका एक चित्र उतर जाता तो गादी पर धरने से सब को दर्शन मिलता, तो महाराज ने कहा "जिसका भाव होगा उसे दर्शन होंगे, भगवान और भगवान के भक्त हर जगह मौजूद हैं।" जब शरीर छूटा तो भक्त खींचने वाले को बुला लाये। मंझले महाराज मना किये। सामान लेकर खड़े हुए, वह दूसरे किस्म का था, काठ लगे थे, वह तड़ाक से आवाज दिया, खराब हो गया, तो मंझले महाराज ने कहा "महाराज ने मना किया था, तुम सब नहीं माने।"

एक तख्त बना था, उस पर 24 आदमी बैठ सकते थे। उस पर

बिमान बनाकर महाराज को बैठाया गया था, शुकुल अचला, शुकुल तिलक लगा कर। विश्राम चौरा, भक्त लोग कहते थे, जहाँ पर धर कर महाराज जी को सरजू लाभ किया गया था। बड़े बड़े बाँस लगाए गए थे। सैकड़ों भक्त बाँसों में काँधा देकर ले गये थे। हमने उस तख्त के दर्शन किये हैं। वहाँ कई पेड़ थे, एक पीपल का था। उस तख्त पर कोई बैठता न था। उस तख्त की सब दंडवति करते थे।

गुरु महाराज को मंझले महाराज ने बताया था वही थोड़ा लिखा है।

3. श्री बाबा जगन्नाथ दास जी मंझले महाराज

बड़ी छावनी, अयोध्या

यह बड़े महाराज बाबा रघुनाथ दास जी के शिष्य थे। इनको हम मंझले महाराज कहते हैं। इन्होंने गादी की सेवा ऐसा किया है कि सबेरे से शाम तक मक्खी नहीं बैठ पाती थी। सब पंगत हो जाती थी तब बड़े महाराज पाते थे, इसी रीति से मंझले महाराज पाते थे। तब एक साधू गादी पर मुरछल करता था जाड़े में, गर्मी में बरसात में पंखा किया जाता। बड़े महाराज की गादी की सेवा से मंझले महाराज को बड़ा बल हो गया था, सिद्ध हो गये थे। साधू सेवा, गरीबों की सेवा, गौवों की, कुत्ते-बन्दरौं की सेवा बड़े महाराज के बाद उसी रीति से किया मंझले महाराज ने।

मंझले महाराज के समय में एक हज़ार मूर्ती रहते थे। समैया पर अधिक हो जाते थे। कोई कोई साधू मंझले महाराज से कहते कि मूर्ती अधिक आ गई हैं तो मंझले महाराज कहते "तुम लोग क्यों घबराते हो, महाराज का प्रताप कहीं चला थोड़े गया है।" जाकर परसाद पर साफी छोड़ कर बाँटने लगते, फिर कम नहीं पड़ता था।

मंझले महाराज के समय में एक सूखा पड़ा था। पाला पड़ा तो गेहूँ, चना, जौ सब में सांचा पड़ा था। सब सूख गये, एक तोला किसी के अन्न न हुआ। बहुत आदमी, हमैं याद है, भूखौं मर गए। तब हम 10 साल के थे। उस समय छावनी में एक हज़ार मूर्ती थे। तीन सौ बाहेर चले गये। मंझले महाराज ने कहा "जिस किसान के द्वारे जाना, आध

पाव अन्न कोई हो, लेकर, धोकर, भगवान को अर्पण करके पा लेना जिससे किसी को कष्ट न हो।'' तब खाने वाले एक सेर, सवा सेर के थे। सात सौ मूर्ती आश्रम में रह गए। बाबा जै राम दास जी की जमात में बारह सौ मूर्ती आ गये। एक साल सब रहे। फी (प्रति) मूर्ती को आध पाव के हिसाब से पतली पतली खिचड़ी दो बजे दिन में एक बार मिलती थी। पाकर चुप रहते थे। मंझले महाराज ने कहा ''सब साधू संतोष करैं, किसानों की खैर मनावैं, भगवान से प्रार्थना करैं। जब भगवान अन्न देंगे तब फिर भर पेट खावैंगे।'' सब साधू इसी रीति से एक साल रहे। फिर अन्न पैदा हो गया, सेवकों के यहाँ से आने लगा। मंझले महाराज जी ने कहा "अब अपनी इच्छा भर खाओ।" उस समय ऐसा पाला पड़ा था कि छप्परों और तालों में पानी पर जम गया था।

एकादशी को गंजी, अरुई, आलू, गाड़िन उबाले जाते थे। सिर्फ भगवान के थार भर को साफ करके छौंक दिये जाते थे, बाकी ऐसे ही बाँट दिये जाते थे। सब साधू साफ करके पाते थे। कभी कभी खरबूजा अमरूद आ गए तो वे भी बाँट दिये जाते थे। रामनौमी में अधिक भीड़ होती थी। जानकी नौमी, राधा अष्टमी, नरसिंह जयंती, शिव रात्रि, अनन्त चौदस, हनुमति जयंती, सूर्य भगवान का जन्म, बलदेव जी का जन्म, राम विवाह आदि, यह सब समैया होती रहीं।

एक समय मंझले महाराज बीमार हुए। चार माह एक पाव गाय का माठा (मट्ठा), एक पाव पक्की इमली का पना मिला कर पीते थे। सारे बदन में सूजन हो गई थी। वैद्य लोग कहते कि महाराज परहेज करौ तो दवा करैं। महाराज ने कहा ''हम तो एक पाव गाय का माठा और एक पाव इमली का पना पाते हैं, इसके अलावा कुछ नहीं पाते। यह रोग नहीं, भोग है।'' जब राम नौमी करीब आई तो सब साधू कहने लगे कि महाराज सेवक आवेंगे तो मंत्र कैसे देंगे, शरीर ठीक नहीं है। समय आ गया, महाराज बैठ गए। मंत्र देने लगे। सप्तमी से पूरनमासी तक हजारौं आदमियों को मंत्र दिया। मेला बाद कहा ''अब भोग पूरा हो गया। मूंग की दाल थोड़ी रोटी पावेंगे।'' फिर थोड़ा थोड़ा पाने लगे, सूजन कम होने लगी। दो माह में शरीर पुष्ट हो गया।

राम घाट पर बाबा पहलाद दास रहे। बड़े शुद्ध जीव थे, पढ़े नहीं थे, कुछ शरीर सुस्त रहा। मंझले महाराज 15 दिन तक रोज फलाहार

भेजते रहे। फिर कहवा भेजा कि ''अब आप चलें, हम 15 दिन बाद आवेंगे''। बस पहलाद दास ने शरीर छोड़ दिया। फिर मंझले महाराज ने 15 दिन बाद शरीर छोड़ा।

4. श्री परमहंस बाबा बेनी माधव दास जी
गोकुल भवन अयोध्या

उन्नाव जिला, गाँव असावरि के बाशिन्दा महाराज जी रहे, पिता का नाम राम सहाय था। दो बहिनें थी। लहुरी के त्रिवेदी कान्यकुब्ज ब्राह्मण थे। जब महाराज जी 14 साल के हुए तो पिता ने कहा ''अब हम भजन करने जाते हैं, जहां पैदा हो वहां शरीर न छोड़े। पास में धन है, खेती है, लड़किन की शादी कर देना और पशु इतने रखना कि उनका पेट भर जाया करै।'' बस यह कह कर चल दिये। चार कोस पर इनके बड़े भाई की ससुरारि बेरथर में थी। भाई का शरीर छूट गया था। भौजाई थीं, वहाँ गये, उनके पैर छूकर हाल बताया और कहा ''हम भगवान की शरण में जाते हैं।'' जब से गये कोई पत्र न दिया, न लौट कर आये, बड़ा तीव्र वैराग हो गया था। फिर महाराज जी की माता ने छः माह पहिले कह दिया था कि हमारा शरीर फलाने दिन इतने समय छूटेगा। शरीर छूटने का दिन आ गया तो महाराज को पास बैठा कर कहा ''तुमको हम राम जी को सौंप दिया, भजन करना।'' ठाकुर जी का भोग लग गया था। सब घर के पा चुके थे। अपना भी पा चुकी थीं। महाराज जी को अपने दाहिने तरफ बैठारे थीं, कहा ''हमारा शरीर गंगा में प्रबाह कर देना, मुख में कपूर बार कर छोड़ देना, आगी में न जलाना।'' फिर कहा ''अब हम जा रही हैं।'' राम राम करते करते शरीर छोड़ दिया। शरीर महाराज के भल हो गया। गाँव के सब आँगन में मौजूद थे। दो बजे दिन का हाल है। सब इन्तज़ाम गाँव के लोगों ने, करके बैलगाड़ी पर ले गए। बैल बहुत तेज थे। गंगा में प्रवाह कर दिया, फिर सब लोग वापस आये। महाराज जी ने माता जी का दसवाँ, तेरहीं, बरसी, चौथ पाटा सब किया, भंडारा किया। फिर गाँव में एक ब्राह्मण सोठियाये के मिश्र रहे, उनका शरीर छूट गया था। उनकी पत्नी, 3 लड़के थे, गरीब थे। मकान खेती, गऊएं बैल सब सामान दे दिया और कुंजी देकर,

उनके पैर छूकर, गाँव में सब से मिल कर चल दिये। बहुत आदमी और औरतें रोने लगीं। सब कुछ दूर साथ आये। महाराज घूम कर खड़े होकर सब के हाथ जोड़ा, कहा, ''आप सब लौट जायें'' तब सब लौटे।

महाराज जी अवध आए। सरजू अश्नान किया। नागेश्वर नाथ, काले राम, जन्म भूमि, जन्म स्थान, रतन सिंहासन, कनक भवन, हनुमान जी होकर सनातन भगवान महाराज जी की गद्दी की दंडवति करके मंझले महाराज की दंडवति किया। फिर बैठ गए। सात दिन रात्रि बैठे रहे। तब मंझले महाराज ने पीठ ठोंका, कहा, ''आज आठवाँ दिन है, अस्नान करो और कुछ भोजन करो'' तो महाराज ने कहा ''कुछ भूख पियास नहीं है'' तो जबरदस्ती उठाया, कहा, ''तुम्हारी कला सब से ऊपर हो।'' फिर सरजू पास थी, अश्नान किया। मंझले महाराज ने कुछ मिठाई फल दिया। भगवान को अर्पण करके पाया। तब महाराज ने अपना हाल बताया–''14 की उमर में शंकर जी ने हमें भजन बता दिया था, हम 15 दिन ध्यान में बैठे तो दाहिनी जाँघ पर राम जी छोटे स्वरूप और बाईं जाँघ पर महारानी जी बैठ गईं, कहा। 'क्या चाहते हो?' हमने कहा 'हम आपको हर समय सामने देखा करें।' तो कहा 'एवमस्तु', सामने हो गए। फिर थोड़े दिन बाद वैसे ही जाँघों पर बैठ गए, कहा, ''अब क्या चाहते हो'' महाराज ने कहा ''हम आपके पास ही रहें'' फिर 'एवमस्तु' करके अंतर हो गए। फिर उसी भजन की विधि हनुमान जी ने दोहरा कर बता दिया। शंकर जी ने कहा ''तुमको राम मंत्र जानकी मंत्र लेना है।'' यह सब बात महाराज जी ने मंझले महाराज को बताया, तब मंझले महाराज ने प्रसन्न होकर मंत्र बताया। बहुत विस्तार है। थोड़ा लिखा है।

महाराज जी, जनक जी का अंश थे। उनको बहुत अनुभव होते थे, थोड़े से हमने लिखे हैं। मंझले महाराज का नाम बाबा जगन्नाथ दास था।

(1) जब बड़े महाराज प्रेम में रो दियेः-

करीब 50 साल हुए (सन् 1924 होगा), राम घाट मन्दिर में महाराज जी ध्यान में बैठे थे। 10 बजे दिन का हाल है। नाना प्रकार की भगवान राम जानकी, राधेश्याम, विष्णु लक्ष्मी (कमला) की लीला, सब देवता, ऋषी मुनी का यश वर्णन करना व बीच-बीच में जय जयकार होता था। जब ध्यान छूटा तो हनुमान जी 12 की उमर में प्रगट हो गये। तो महाराज

जी ने दाहिने हाथ से दोनों चरन तीन बार छूकर अपने मस्तक में लगाया और कहा ''हमैं तो इन्हीं चरणारबिन्दों (चरण कमलों) का भरोसा है।'' हनुमान जी ने कहा, ''आप तो चरणारबिन्दों में लग गये और सब विवाद में पड़े हैं। आपको घर ही पर शिव जी ने ध्यान बता दिया था, राम जी, महारानी जी सामने हो गये थे 14 साल की उमर में और भगवान से बरदान माँगा था 'हम आपके पास ही रहैं।' भगवान ने बरदान दे दिया था 'एवमस्तु पास ही रहौगे सिर्फ तुम को मन्त्र लेना पड़ेगा।' वही ध्यान फिर हमने बताया था।'' जब हनुमान जी ने ऐसा कहा तो महाराज जी बड़े ज़ोर से रोने लगे, तब हनुमान जी सर पर हाथ रखकर अन्तर हो गये। एक टुकड़ा कपड़े का पतला सर में बांधते थे। तीनों समय नहाते तो उस कपड़े से शरीर पोछते थे। वह कपड़ा पास धरा था। मन्दिर महक रहा था। हम गये तो नेत्र लाल लाल हो गये थे। आँसुन से पेट-छाती-जाँघ तर थी। हमने उस कपड़े से पोछा तो कपड़ा तर हो गया। आगे लंगोटी भीग गई थी। उस कपड़े को बाहर निचोड़ा तो नेत्रों का जल काफ़ी निकला। फिर उसे धोकर फैला दिया। फिर महाराज अपने समय से उठकर डोलडाल गये। नहाकर बैठे तो हमने पूछा ''आज क्या बात हुई? ऐसा हमने न देखा न सुना था।'' तब सब हाल बताया।

(2) कमल खिलाने से मक्खियाँ लगती हैंः-

बड़े महाराज जी का वीर्य उर्ध्व (ऊपर) होने से उनको बड़ी गर्मी रहती थी, जाड़े के दिनों में भी। कुछ सिद्धों ने बताया कि आप थोड़ा टहल लिया करें तो रोज छावनी, हनुमान जी व जन्म भूमि दर्शन करने आते थे। प्रतिदिन एक पाव खट्टे नीबू का रस पीते थे जिससे कुछ गर्मी शान्त रहती थी। महाराज जी के आठवें-दसवें एक मामूली छिद्र से कुछ तेल ऐसा निकलता था जो नीचे कमर तक आ जाता था जिसको हम बहुत रगड़ कर धोते थे। उसमें बड़ी सुगन्ध रहती थी। जो साफी मच्छरों के बचाव के लिए अपने ऊपर ध्यान में बैठते समय डाल लिया करते थे उस साफी में भी अत्यन्त सुगन्ध रहती थी। हमने पूछा कि यह क्या है? तो आपने कहा कि सब कमल खिले हैं इसी वजह से मक्खियाँ लगती हैं।

(3) गंगा-जमुना-सरस्वती का प्रकट होना:-

अरसा 50 साल का हुआ (सन् 1924) महाराज और हम एक कोठरी में जो पं. राम किशोर ने बनवाई थी, रहते थे। वह 12 हाथ लम्बी और 7 हाथ चौड़ी मिट्टी से जोड़ी गई थी। उसे हमने मिट्टी, भूसा, गोबर से भीतर बाहर लेसा था। नीचे ज़मीन कच्ची रक्खी गई थी, खूब पीट कर बराबर कर दिया था। उसमें बाबू प्रागनारायण जी ने ईंटा लाकर अपने हाथ से दो पावा बनाकर पटरा चार लगा दिये थे। उस पर सब सामान भोजन का रहता था। आगे और दक्खिन तरफ़ दो चबूतरा बन गये, कमर की बराबर–एक 12 हाथ लम्बा, 6 हाथ चौड़ा और एक 7 हाथ लम्बा, 6 हाथ चौड़ा। नहीं तो बरसात में अन्दर पानी भर जाता। बाबू ने कहा ''आप मिट्टी खोदेंगे?'' हमने कहा ''हम खोद भी सकते हैं और ढो भी सकते हैं।'' तो कहा ''हम खोदते हैं आप ले ले जाँय।'' बड़े बहादुर थे। चार दिन में दोनों चबूतरा ठीक हो गये। कड़ी पड़ी थी चौका मिट्टी के थे। उसकी ही झाँप थी। उसी में महाराज जी और हम रहते थे। सर्द बहुत था। महाराज जी खजूर की चटाई पर रहते थे। चटाई छोटी रखते थे। गांठ के बराबर पैर जमीन पर रहते। चटाई रोज सुखाते थे, आठ दिन पर सड़ जाती थी। हमको एक साधू एक हाथ चौड़ा पाँच हाथ लम्बा एक पटरा दे गया था उस पर रहते थे।

पं० राम किशोर रोज़ भोजन करने आते थे। एक दिन चाँदी के दो रुपया चटाई के नीचे छोड़ गये। रात में महाराज और हम 11 बजे शयन करते और 2 बजे उठ जाते। जब शयन किये थोड़ी देर में हमसे कहा ''हमारी पीठ में काई लगी है।'' हमने कहा ''काई कहाँ से आई?'' तो उठे। हमने चटाई उठाई तो 2 रुपया मिले। हमसे कहा कि हम रुपया छूते नहीं यही काई थी। जब पंडितजी भोजन पर आये तो हमने कहा। तो कहा कि हम स्वभाविक महाराज को चढ़ा के छोड़ गये। कभी ऐसा नहीं हुआ, महाराज जी को कष्ट हुआ। महाराज जी से छिमा माँगी। महाराज जी ने कहा ''यह भगवान की लीला है। तुम लोगों को चेतावनी दी है। तुम्हारा दोष नहीं है।'' बाबूजी तमाम कम्मल लाते थे और ऊनी सफेद बनियानी पूरी बांह की बड़ी मजबूत तब वह 6 रुपये में मिलती थी। कम्बल भागलपुरी एक पटा 6 हाथ लम्बा 4 हाथ चौड़ा 5 रुपया का एक मिलता था। सब महाराज जी बँटवा देते थे। हम जाड़े में दो बोरा

रखते थे–एक पैरों की तरफ छोड़ लेते और एक सर की तरफ से छोड़ लेते थे। सरदी बहुत थी। महाराज जी ने कहा ''हमारे छोटे पर से जाड़ घाम नहीं लगता है, तुम अंग भंग हो जाओगे। हमारी देखी देखा यहाँ कई साधू मर गये। दिन भर उघारे (नंगे बदन) लंगोटी लगाये घूमा करते थे, रात में हलवाइयों की भट्टी के पास बैठते, कोई पैरा की खरही में घुसते। ठंढक से कलेजा खराब हो गया। इससे दो बोरा जोड़ कर राखौ।''

फिर महाराज जी एक माह प्रयाग कल्प बास को गये। हमराह में 4 मूर्ति साथ गये–राधौदास, शारंगदास, वैष्णव दास, जगन्नाथ दास। सब सामान एक माह के भोजन की व बरतन खरीद लाये। महाराज जी की पहली नहान 2 बजे रात की थी, दूसरी 9 बजे दिन की तीसरी 3 बजे दिन की। वह सब चारौं भक्त भी ऐसा करते थे। 11 बजे भोजन हो जाता था। 9 बजे नहाकर महाराज जी बैठे और चारों भक्त बैठे तो तीन देवियाँ सुकुल धोती धारन किये प्रकट हो गईं। फिर वह देवियाँ महाराज जी के सामने खड़ी हो गईं। जो बीच में थीं, उनके दाहिने हाथ में एक थाली सोने कैसी प्रकट हो गई। उसमें बाहर नकासी बनी थी, हरे-लाल-पीले-सफेद नग जड़े थे। थाली के अन्दर फूल बत्ती बहुत लगी थीं, घी से तर थीं। बीच की देवी ने महाराज जी की तरफ हाथ थाली समेत उठाया तो सब बत्ती फक्क से जल उठीं। वह देवी महाराज जी की आरती करने लगीं, फिर दूसरी ने किया, फिर तीसरी ने किया। फिर वह थाली अन्तर हो गई। सुगंध से सबकी नासिका भर गई। फिर तीनों देवी बैठकर दंडवत किया, हाथ जोड़ा और अन्तर हो गईं। सबको दर्शन हुए। सबने महाराज जी से पूछा ''यह कौन देवी थीं?'' महाराज जी ने कहा ''गंगा जी, जमुना जी व सरस्वती जी थीं। पहले गंगा जी ने, जमुना जी ने फिर सरस्वती जी ने आरती की।'' जब भक्त महाराज जी के संग लौट कर आये तब हमसे हाल बताये। सब बड़े आनन्द से वर्णन किया। नग ऐसे चम चम करते थे थाली के कि जो आँखैं चकाचौंध कर देते थे।

(4) समुद्र ने देव वस्त्र भेंट किया:-

एक दिन महाराज मंदिर में बैठे थे ध्यान में तो बड़ा जलाशय देखा। उसमें से एक बृद्ध ब्राह्मण गोरा गोरा-शुकुल धोती पहिने जैसी जनेऊ में हमारे यहाँ पहनाई जाती है वैसी थी, हाथ में सफेद वस्त्र था,

निकला। महाराज जी से कहा ''असाढ़ में आवो या बैसाख में आवो।'' वस्त्र दिखाकर जलाशय में समा गया। महाराज का जब ध्यान टूटा तो विचार किया कि हम पैसा छूते नहीं हैं। बिना टिकट के जाना ठीक नहीं है। हमारे चाचा-चाची को प्रेरना भगवान ने कर दिया। वै आ गये। शुरु बैसाख में कहा-''महाराज जी! हमैं अपने साथ चारौं धाम करा दीजिए।'' महाराज जी चल दिये। जब जगदीशपुरी पहुँचे तो समुद्र नहाने गये तो जो साफ़ी महाराज तंज़ेब की 7 हाथ की बड़े अर्ज की थी, वह मच्छरों से बचाने के लिए ऊपर छोड़ लेते थे 15 वर्ष की थी। उसे समुद्र में धोकर, नहाकर, निचोड़ कर काँधे पर रखकर चल दिये। आसन पर आये तो उसे घाम में फैलाने के लिए खोला तो उसमें उसी मेल (प्रकार) का कपड़ा 10 हाथ का निकला। तो चाचा चाची से और एक सेठानी साथ ही वहाँ थीं उनसे पूछा तो सबने कहा ''हमारा नहीं है।'' जब महाराज ध्यान में बैठे तो याद आया। सबसे कहा ''जो ध्यान में देखा था वही बात है। हमारे पिता राम जी को प्रगट होकर थाल में रत्न दिये थे, हमैं पुत्र जानकर साफ़ी दिये हैं। हम पैसा छूते नहीं हैं।'' वह साफ़ी महाराज जी चाची को दिया और कहा ''पूजा में रखना।''

फिर महाराज जी, चाचा, चाची वहाँ से द्वारिका जी, रामेश्वर दर्शन करके बद्रिका आश्रम को चले। सत्यनारायण चट्टी है वहाँ सत्य नारायण की मूर्ति बड़ी सुन्दर है। महाराज जी ने दंडवति किया तो हंसे। मुकट, कुंडल गिर गये तो पुजारी ने कहा ''क्या बात हुई? न हवा है, न किसी ने छुआ है। कैसे गिर गये?'' महाराज ने कहा ''अपने लड़के को दंडवति करते देखा तो प्रसन्न होकर हंसे, उसी से गिर पड़े।'' पुजारी ने फिर लगाया। चाचा चाची ने पूजा चढ़ाया। फिर बद्री नारायण, तुंगनाथ, केदारनाथ दर्शन किये।

केदारनाथ में महाराज जी तीन दिन रहे। एक राजा आया था। उसके साथ कई सेवक थे। उस तम्बू के नीचे सब थे। महाराज से कहा ''हमारे तम्बू में आ जाओ।'' महाराज ने कहा ''हमें ठंडी नहीं लगती। हम आकर क्या करैं?'' उसने चाचा-चाची को उसमें कर दिया। महाराज ने पूछा ''कैसा तम्बू है जो गरम रहता है?'' तो कहा ''जब दुम्मा भेड़ी के बच्चा पैदा होता है तो उसके बाल काट लिये जाते हैं। वह बहुत गरम होते हैं। एक ऊनी बसन (वस्त्र) मुट्ठी में आ जाता है वह दो सौ का मिलता है। उसे ओढ़े तो सारा बदन देख पड़ेगा। ठंड न लगैगी। उस

ऊन का तम्बू है।'' फिर महाराज जी, चाचा, चाची चौथे दिन वहाँ से विन्द्रावन आए। वहाँ सब दर्शन करके नैमिस आये। वहाँ दर्शन करके अवध आये। फिर तीन दिन बाद चाचा चाची घर गये। वहाँ फिर भंडारा किया। सब गाँव में जै (जितनी) जाती हैं सबको प्रेम से भोजन कराया बड़ी दीनता शान्ती के साथ। फिर एक साल रहे।

इलाही, राधा कृष्ण नाऊ, मोहनदास तेली, देवी दीन भुरजी सात दिन पर आते थे। इलाही ने पूछा ''महाराज जी ने कौन भजन बताया?'' तो कहा ''ठीक है।'' एक साल बाद जिस दिन मन्त्र लिया था उसके सात दिन पहले अवध आये। महाराज के संग मनीराम छावनी कथा सुनने जाते थे। जब जात्रा का एक दिन रह गया तो रात में 3 बजे ध्यान में बैठे थे तो देखा कि बहुत बड़ा जलाशय है। महाराज आगे हैं हम पीछे महाराज की लंगोटी साध लिया और साथ चल दिये तो जलाशय गाँठ भर रह गया। महाराज ने पार कर दिया। फिर ध्यान टूट गया। सुबह महाराज से बताया। महाराज ने कहा ''समय आ गया।'' भोजन 11 पर हो गया। 2 बजे महाराज ने चाची से कहा ''तुम चुप हो जाव। रोना न बोलना।'' भगवान के सामने अशोक के नीचे बैठे थे। महाराज जी ने भगवान का चरनोदक दिया और अपना चरनोदक दिया कहा ''आँखैं बन्द करौ और सुरति उधर लगावो। विमान आ गया है।'' बस आँखैं बन्द करके बैठ गये, सुरति लगाकर। शरीर छूट गया। फिर सरजू जी को साधू ले गये। थोड़े दिन बाद चाची अकेले गईं। एक फरलाँग पर बाग रही। हमने देखा तो पूछा ''तुम अकेली आई हो। चाचा नहीं आये?'' तो हाल बताया।

हम रोज़ जाते थे। एक दिन पेटार (बड़ी पेटी) खोला तो उसमें कपड़े रहे। उसमें एक काला साँप बैठा था तो फन फुलाकर खड़ा हो गया। तो फिर बन्द कर दिया। हम गये तो बताया। हमने कहा ''चींटी जाने की तो जगह नहीं है, साँप कैसे जा सकता है? यह तो शेष भगवान थे, दर्शन दिया।'' फिर पेटारा खोला गया। उसमें कपड़े कपड़े थे। साँप का पता नहीं था। चाचा ने जब नर्क का दृश्य देखा था तब से सब जीवन पर दया आ गई थी। पक्षी चिड़ीमार पकड़ कर बेचते थे। उनको दाम देकर छुटा देते थे, कहते ''अपने मन के फल खाते हैं, अपने मन का जल पीते हैं। इनको बड़ा दुख है। बोल नहीं पाते हैं। रात दिन चिन्ता में रहते हैं।''

जब चाची गई हैं तब लोग जान गये। जो रुपया चाचा कपड़े का छोड़ दिये थे वह लोग दे गये कहा ''इसका भंडारा करा देवें।'' चाचा के परिवार के, उनके छोटे भाई शिव प्रसाद महाराज को लेने आये। महाराज गये। फागुन के कुछ दिन रहे। पत्थर पड़े थे। बड़ा ठंडा था। एक बड़ा गढ़ा था। उसमें पाथर का पानी भरा था। महाराज ने कहा, ''यहाँ डोल डाल अश्नान कर लें।'' सवेरे का समय था। शिव प्रसाद ने कहा, ''यह सब पत्थर सूखे गिरे हैं वह गल गये हैं। बहुत ठंढ है। पानी नहीं है।'' महाराज जी ने कमंडल भरा, डोल डाल गये, हाथ पांव धोया और उसमें पैठ कर कई डुबकी लगाया, लंगोटी बदला, तब फिर गये। वहाँ हमारे चाचा सगे की चौपारि में कोदो का पैरा बिछाया गया और नई जाजिम। उस पर महाराज ने मृगछाला बिछाया। 3 दिन रहे। खूब भंडारे में गाँव के लोग जुटे। काम किया। चौथे दिन शिव प्रसाद साथ गये। हम भी स्टेशन तक पहुँचा कर लौटे। बड़ा विस्तार है। हमने थोड़ा लिखा है।

(5) श्री महाराज जी द्वारा गोकुल भवन का परिचयः-

श्री बड़े महाराज जी साढ़े पाँच साल राम घाट पर रहे। वहाँ हम साथ रहे। यह ज़मीन जहाँ आश्रम बना है गोकुल भवन का, डिप्टी कमिश्नर होबार्ट साहब की दी हुई है। साहब उन्नाव से बदल कर फैजाबाद आये। बाबू प्रागनारायण खत्री के मित्र थे। बाबू ने साहब को लिखा कि महाराज जी को राम घाट पर तकलीफ़ है। साहब मोटर से आये तथा साथ में डिप्टी कलक्टर लाला शिव प्रसाद जो महाराज के भक्त थे, उनको भी लाये। महाराज जी नहा कर सूर्यन को जल दे रहे थे। साहब ने टोप उतार कर तीन बार सीताराम कहा फिर कहा कि बाबू प्रागनारायण ने हमें लिखा है कि महाराज जी को वहाँ कष्ट है, बरसात में पानी भर जाता है, आने जाने वालों को तकलीफ होती है। तब बड़े महाराज बोले कि ''एक कोठरी 13 हाथ लम्बी और 7 हाथ चौड़ी है। उसी में हम और 'राम मंगल दास' रहते हैं। सब सामान खाने पीने का रहता है। आगे दो चबूतरा कमर भर एक दक्खिन एक पश्चिम बाबू और राम मंगल दास ने बनाये हैं नहीं तो कोठरी में पानी आ जाय। शहर जाने में कमर भर पानी उतर कर जाना पड़ता है।" फिर साहब ने हमसे कहा ''हमारे पास वशिष्ठ कुण्ड पर जमीन है तुम देख आवो।'' हम देखकर रामकिशोर जी से कहा। वे साहब के पास गये। पंडित रामकिशोर जी

ने बाबू को लिखा। बाबू ने राम किशोर को लिखा कि जाकर साहब से लिखा लो। साहब ने सब लिखकर पट्टा बना कर शायद 30 साल का पंडित जी को दे दिया।

महाराज ध्यान में बैठे तो तीन बजा था, साइत (मुहूर्त) 3 बजे की थी। वे दो पर यहाँ हमसे पहले आ गये थे। बट के नीचे बैठे थे तो देखा कि एक शुकुल हाथी बड़ा सुन्दर खूब सजा, जिस पर चारौं भाई और वशिष्ठ जी बैठे थे। फीलवान (हाथीवान, महावत) बहुत सुन्दर सजा था। हाथी बैठ गया। सब उससे उतरे। महाराज जी ने सबकी दंडवति किया। सब ने सर पर हाथ रख दिया। फिर सब सवार होकर जन्म भूमि की तरफ चले गये। तब तक हम आ गये। महाराज जी ने हाल बताया। फिर सुबह नींव रखने के उपलक्ष में पूजन हुआ, परसाद बटा। फिर ईंट आने लगीं। बाबू आ गये, बनने लगा। जब तैयार हो गया तब भंडारा हुआ।

भंडारे के बाद यहाँ आये तो महाराज बैठे ध्यान में। तो कृष्ण भगवान ने दधि लूटन लीला दिखाकर दही का भरा हाथ चीख (चख) कर महाराज जी के मूंह में खोंस दिया। महाराज जी हँसे और हमसे कहा कि इसका नाम गोकुल भवन धरना। तब महाराज जी ने बाबू से कहा। बाबू ने पत्थर लगवा दिया। ऊपर सनातन राम और हनुमान जी का नाम पीछे से लिखा गया।

तब यहीं एक पुराना कुवाँ था। हम पूजा करते थे। एक दिन शाम को पानी भरने गये तो ढाई हाथ रसरी कम पड़ गई। रसरी जोड़ कर पानी खींचा। महाराज से कहा। महाराज जी चुप रहे। सुबह पानी लेने गये तो ढाई हाथ पानी आ गया खूब सफ़ेद। रसरी बढ़ गई। महाराज जी से कहा तो बोले ''गंगा जी आ गईं।'' यह खेत दो बीघा है, सबमें झाऊ चार-चार अंगुल का जम गया। तमाम साधू देखने आए तो कहा ''कहीं से बीज उड़कर आ गया है'' तो हमने कहा-''बीज इसी खेत में जमा, दूसरे में क्यों नहीं जमा?'' जब पानी चलाने की नाली बनवाया। तब किनारे-किनारे के बड़े बड़े पेड़ कई कटवाये, मोटे मोटे कई साल के थे और सब खेत दुबारा गोड़ा गया तब झाऊ निर्मूल हुआ। बहुत कम लिखा है। बहुत बड़ी बड़ी घटना यहाँ हुई हैं।

(6) सिद्धों का आनाः-

करीब 46 साल हुए होंगे, महीना गर्मी का था। उजेला पाक (शुक्ल पक्ष) था, चौदस थी। इसी दक्षिण के बरामदे में पूरब तरफ

महाराज जी लेटे थे। समय 12 बजे रात्रि का था। हम करीब ही लेटे थे। दयाल दास अहीर और शिव नारायन भंडारी सीतापुर जिले के, महाराज नगर के, छत पर लेटे थे। बिटिया (परमंहस राममंगल दास जी की छोटी बहिन) घर गई थीं। मणि पर्वत के सिद्ध लोग आये। तब चारों तरफ़ छपरा था। काठ के खम्भे 28 लगे थे। पहाड़ी लकड़ी खम्भों की चीरी लगी थी। यही इतनी इमारत थी और भंडार बना था। चहरदीवारी भी बनी थी। खूब जगह साफ रखते थे। सब हाता भर गया। सबने बारी-बारी दंडवति किया। वे सिद्ध 14 हाथ, 20 हाथ, 25 हाथ, 30 हाथ के थे। शरीर पर सिर्फ लंगोटी लगाये थे। दाढ़ी केश सब सुनहले थे, शरीर तेज से चमकते थे। महाराज उठकर बैठ गये।

कई सिद्धों ने हमसे कहा ''इनको अब कंठी, जनेऊ की जरूरत नहीं है। इनका नाम सिद्ध हो गया है, सहज समाधि हो गई, राम जानकी हर समय सामने रहते हैं, लय समाधि हो गई, प्रेम समाधि हो गई। अवध में किसी को नहीं हुई है।'' दो घंटा सब रुके फिर अन्तर हो गये। सवेरे महाराज जी ने हमसे कहा ''कंठी हमारे गले से छोर लो, जनेऊ निकाल लो, आलस लगता है।'' तब हमने निकाल लिया। हमने पूछा ''महाराज जी! ये कुछ खाते-पीते हैं?'' तो कहा-''सरजू जी में दूध की एक लहर आती है किसी दिन दिन में, किसी दिन 2 बजे रात में। दिन में भी 2 बजे आती है। यह सब अपना अपना पात्र भर लेते हैं।'' हमने पूछा ''और किसी नदी में भी आती है?'' तो कहा ''शारदा-जमुना-गंगा-त्रिवेणी, गोमती में।''

फिर कहा ''यहाँ और सिद्ध (अयोध्या) पुरी में हैं?'' तो कहा ''लाखों हैं। जो प्रेमी सच्चा हो, वह रात में सरजू किनारे रहे, निरछल हो उसे देख पड़ेंगे। वैसे कोई उनको देख नहीं सकता। ये पुरी में प्रधान-प्रधान जगहों में रोज़ दर्शन करते हैं, दंडवति करते हैं। यह पुरी सिद्धों की सराय है। इसका वर्णन कौन कर सकता है। सब पुरिन से श्रेष्ठ है। अपना भाव ठीक हो तो कुछ देख सुन सकता है। यहाँ बड़े-बड़े प्रतापी राजा हो गये। भगवान की जन्म भूमि है।'' यह लिखाने के बाद सन्यासिनी माता ने पूछा कि क्या वह सिद्ध सन्त अब भी आपके पास आते हैं? यह बात सुनकर श्री महाराजजी (श्री राममंगल दास जी) हंसे और बोले कभी कभी।

तब राजा रामसिंह ने पूछा: ''क्या इन लोगों पर जल नहीं पड़ता तो श्री महाराजजी ने कहा, ''इन पर जल नहीं पड़ता, न घाम लगता है न जाड़ा लगता है। इनके ऊपर भगवान के नाम की छाया रहती है।''

(7) मंद करत जो चहैं भलाई:-

यह बात राम घाट पर जब हम श्री महाराज जी के साथ रहे 54 साल हो गये तब की है। वहाँ साढ़े पाँच वर्ष रहे। जब दो वर्ष बीते तो एक दिन शाम के समय महाराज जी तखत पर बैठे थे, हम चौतरा पर बैठे थे। हमने कहा ''महाराज जी! एक बात हम माँगते हैं।'' तो कहा ''कौन बात?'' ''जो आपके बाद हमारी सेवा करै उससे अधिक जो जाल (धोखाधड़ी) करै, परेशान करै, मारै, उसकी गती ऊंची हो।'' हमें पास बुलाया और पीठि पर दोनों हाथ थपथपाया। सिर पर हाथ फेरा फिर हंसे और कहा :-

चौपाई:- उमा सन्त की यही बड़ाई। मन्द करत जो चहैं भलाई ।।

आँसू खूब आये। फिर चौतरा पर बैठकर आँसू पोंछ कर हाथ मूंह धोया।

(8) भाव पर लिखाया:-

भाव पर उपदेश करते हुए एक दिन महाराज ने कहा ''भगवान भाव के भूखे हैं। अपना भाव विशाल बनाओ। जीव की गति भाव से होती है। भगवान की लीला भगवान जानैं। जितना जनावैं उतने में विश्वास कर ले बस पार हो जाय। जब उधर लागौ तो सब देवी देवता बड़ी दया करते हैं। समय पर जगा देते हैं यह तो ऊँचे उठाना है।

पाँच ब्रह्म सिर में हैं-(1) सोऽहं, (2) ओँकार, (3) रँकार (4) श्रीमन्नारायण, (5) महा विष्णु। इनके साथ पाँच देवी हैं वे समय समय पर जगा देती हैं। अपना सूक्ष्म शरीर जैसे लोहा तपाया लाल 5 वर्ष का नंगा जै बजे कहौ तो जगा देता है।

(9) सूक्ष्म शरीर को बतलाया:-

सूक्ष्म शरीर को महाराज ने बताया कि इस शरीर से सूक्ष्म शरीर निकालने व जीव का इस शरीर में स्थान को पूछने पर श्री महाराज जी ने बताया कि जब अभ्यास हो जाता है तब बोध होता है। सब वस्तु नाम की धुनी से अलग अलग फरियाने लगती है। जो पुण्य छीण हो कर तारा

ऐसा छूटता है वह ज़मीन पर गिर कर गायब हो जाता है। वह अन्न या घास या फल में प्रवेश होता है। आदमी या पशू खाता है। वह जीव बहुत बारीक अणू है जो कपड़े से निकल जाता है। खाने से जाकर सर में पहुँचता है। जब नर मादी का प्रसंग होता है तो धातु पेट में है उसमें गरभाशय में आ जाता है तो पहिले छोटा गोला बनता है फिर बढ़ता है।

(10) बड़े महाराज के दर्शन को नर नारायण आये:-

यह बात कुम्भ हरिद्वार की थी तब की बात है। मेरे बड़े गुरु भाई जगन्नाथ दास जी श्री महाराज जी के संग थे। जमात सब बृन्दाबन में पड़ी थी। दो सन्त बहुत गोरे-गोरे उमर 25 साल की मालूम होती थी, एक ही रंग डील डौल के थे, एक एक सफेद गुदरी ओढ़े थे, आँखें व पैर खुले थे, सब जमात में घूम कर महाराज जी के पास आये। एकादशी थी। जगन्नाथ दास फलाहार लेने गये। सवा सेर मलाई लाये, जल भरा। महाराज जी ने भोग लगाया और पाया। जो बचा वह जगन्नाथ दास जी पाते पर वह दोनों संत उठ कर पा गये और चल दिये। बोले नहीं। फिर जगन्नाथ उनके पीछे लग गये कि देखें कहाँ जायेंगे। कुछ दूर चल कर वे अन्तर हो गये। जगन्नाथ दास जी ने महाराज जी से पूछा कि ये कौन थे, कुछ बात नहीं किये। महाराज जी ने कहा ''वह नर नारायण थे, दर्शन देने आये थे।'' फिर जमात उठकर दूसरे दिन हरिद्वार गई। महाराज जी का शरीर छूटे 40 साल हो गये।

(11) श्री राधा महारानी ने पंखा झला:-

माघ का महीना था। 3 बजे दिन में बड़े महाराज के योग अग्नि बढ़ी पसीने से तर हो गये। हम जान गये। ताड़ का पंखा झलने लगे। राधा महारानी महाराज जी के पीछे प्रगट हो गईं। एक हाथ में उनके हरा पंखा गोल झालरदार था। हमारे हाथ से पंखा ले लिया और कहा, ''तुम तो बहुत सेवा करते हो। अब हम कुछ दिन करेंगी।'' पंखा करने लगीं। गर्मी शान्त हो गई।

हमसे कहा ''भक्तों के भोग यहाँ भोगाकर अपने धाम को भेज देती हूँ। इनको 14 की उम्र में राम जानकी से बरदान जो माँगा वह मिल गया।'' हमने कहा ''क्या माँगा था?'' तो कहा, ''चुप ध्यान में बैठे थे। शंकर जी ने ध्यान बता दिया था। दाहिनी जाँघ पर राम जी और बाईं

जाँघ पर महारानी जी छोटे स्वरूप से बैठ गये। राम जी ने कहा 'क्या चाहते हो?' तो इन्होंने कहा 'बस आपको हम हर समय देखा करैं।' बस राम जी ने 'एवमस्तु' कह दिया। दुबारा 15 दिन बाद फिर प्रगट हुए और कहा 'क्या माँगते हो?' तो बोले 'हम हर समय आपके पास रहैं।' तो रामजी बोले 'एवमस्तु'।''

(12) श्री जानकी महारानी सेवा से प्रसन्न हुईं:-

बड़े महाराज जी की बीमारी के समय गर्मी का महीना था। मन्दिर के उत्तर तरफ बरामदे में तखत पड़ा था। महाराज जी की सेवा में पं. राजेन्द्र दास जी थे। वह चँवरी हाँकते थे कि महाराज के ऊपर मक्खी न बैठे। जानकी जी दोनों खम्भों के बीच में लता पता हरी हरी थी उसके बीच में प्रगट हो गईं। छटा छबि सिंगार ऐसा था जो देखते ही बनता था, कहने में नहीं आ सकता। शरीर से बड़ी सुगन्ध आती थी। थोड़ी-थोड़ी हवा चलती थी। हमसे कहा-''कब तक सेवा करोगे?'' हमने कहा, ''जब तक हमारा शरीर रहेगा तब तक।'' पंडित जी ने दंडवति किया। हम ताकते रहे तो दाहिना हाथ हमारी तरफ उठाकर अन्तर हो गईं। सुगन्ध बहुत देर तक आती रही। महाराज जी की बीमारी में तमाम देवी-देवता, सिद्ध-सन्तों के प्रतक्ष दर्शन होते थे। कहाँ तक लिखावैं। बोल नहीं पाते, नहीं तो बहुत बड़ी सुखसागर हो जाय।

(13) महाराज-बाबा टीकादास बार्ता:-

बाबा नरायण राम रानूपाली के स्वर्गबास का भंडारा था। सौ बिगहा का कोटि है। उसमें सब साधू भरे थे। पता मिला कि बाबा टीकादास आये हैं। महाराज जी ने कहा ''जाओ ले आओ।'' हम गये तो बड़ी भीड़ रही। हमने मन में सोचा कि इतनी भीड़ में कहाँ तलाश करैं। साधू फाटक से गुरु सागर की तरफ आ रहे थे बड़ी भीड़ के साथ। हम उधर जा रहे थे। कस में पड़ गये। आधी दूर पहुंचे। सामने बाबा मिल गये। हमें पकड़ लिये। फिर उसी जगह से वापिस गये। सात आदमी संग आए थे। वहाँ जाकर जलपान किया। बात हुई तो कहा ''भीड़ मिट जाय बिदाई हो जाय तब चलना ठीक होगा। चार दिन बाद आना।'' हम एक बार रोज जाते थे। जब सब बिदा हो गये तब आये। महाराज बट के पास तखत पर बैठे थे। दंडवति किया। बात हुई भजन की। तो महाराज ने

कहा, ''हमैं 14 की उम्र में घर पर शंकर जी ने भजन की विधि बताई थी। सब काम हो गया सिर्फ मंत्र मंझले महाराज से लेना पड़ा। हम 16 सूर्य तक पहुंचे।'' बाबा ने कहा ''हमें भी शंकर जी ने बताया। हम 12 सूर्य तक पहुंचे। हमारी आदत रही कि हम भूखे प्यासे हैं और कोई भूखा आ गया तो उसे भोजन कराकर तब पाते थे। हमारे सिर में गर्मी बढ़ गई। एक बार गेहूं या जौ की रोटी खाते थे, मूंग की दालि, साग-लौकी, तरोई, चौराई पालक। न मिला तो कोई जरूरत नहीं।'' बाबा से महाराज से तीन दिन तक भजन की बातें होती रहीं। महाराज ने हमसे कहा ''तुम सुनोगे तो सब दिमाग में भर जाँयगी तो फिर बहुत कसर रह जाएगी। इससे अलग बैठो। अपनी सुरति पर ख्याल करो।'' जब महाराज जी से दिन में या रात में किसी देवी देवता, सिद्ध सन्त से बात होती थी, तो हमने एक बार पूछा ''आप किससे बात करते हो?'' तो कहा ''तुम हमारा बोल सुन सकते हो पर उनका बोल नहीं सुन सकते, न उन्हें देख सकते हो। जब भगवान की कृपा हो जाएगी तब देख सकोगे और सुन सकोगे।''

फिर बाबा सब दर्शन करके, महाराज की दंडवति करके चले गये। साल बाद फिर आये और 3 दिन रहे। फक्कड़ बाबा संग था। तब बाबा से हमने ब्राह्मण का हाल बताया रुपया निगलने का तो हँसे और कहा ''पंजाब में एक साधू बड़े धनी थे। उनके यहाँ बाहर से एक साधू आया। कुछ दिन बाद बुखार आया। खूब तगड़ा रहा। उसके पास सतुआ था और सवा सौ गिन्नी (सोने के सिक्के) थीं। वह सब गिन्नी सतुआ में सान कर निगल गया। जब पेट में तकलीफ हुई तो डाक्टर आये, देखा तो कहा, ''इसके पेट में कुछ कड़ापन है उसी से दर्द है।'' तो एनीमा दिया। तब मल के साथ लपटी गिन्नी निकलीं। दर्द चला गया। डाक्टर ने महन्त से कहा ''यह उठवाइये।'' महन्त ने कहा ''हमारे पास कई लाख रुपया है हम क्या करेंगे?'' तो मेहतरि को बुलाया और कहा ''इसे उठा ले जाओ। यह तुम्हारा धन है।'' मेहतर उठा ले गया। साधू ठीक हो कर चला गया।

(14) महाराज जी 36 वर्ष सरजू जी नहा कर 2 बजे रात्रि में बड़ी छावनी आकर भजन में बैठ जाते। फिर 9 पर सरजू जी जाते। फिर

लौटकर अपने हाथ से रोटी दाल बनाते, पाकर, बरतन चौका करके फिर 3 पर सरजू जी जाते। नित्य तीन स्नान होते, फिर भजन में बैठ जाते।

लगातार 36 वर्ष ऐसा नेम किए। शरीर में गर्मी बढ़ गई। लंगोटी तक सही नहीं जा सकती थी। एक दिन एक सिद्ध सन्त कहीं से आए। उनसे बात हुई। उस सन्त ने कहा, ''महाराज! आपका वीर्य उर्ध्व है। और कोई होता तो पागल हो जाता। आप थोड़ा टहल लिया करो।'' तब से महाराज जी 4 बजे मनीराम जी की छावनी कथा में जाने लगे। शाम को जब कथा समाप्त हो जाती तब हनुमान गढ़ी जाकर दर्शन करके बड़ी छावनी जाते थे। 2 माह बाद गर्मी शान्त हुई लंगोटी सहने लगी फिर पहनने लगे हमेशा।

एक दिन हनुमान गढ़ी पर पं. तुला राम व्यास और कई सन्तों ने कहा, ''महाराज जी! हम लोग आपके मुखारविन्द से कुछ सुनना चाहते हैं।'' महाराज जी ने कहा, ''हम तो पढ़े नहीं हैं। अनुभव के पद यादि हैं सिद्धों के। वह नहीं समझ पावोगे।'' तो हनुमान जी ने मन्दिर से श्लोक बोले। महाराज जी सुने और कोई नहीं सुन पाये।

श्लोक:–रकार: शब्द: परमं ध्वनि: ध्वनेरन्तरगतो ज्योति:
ज्योतिषोरन्तरगतो ध्वनि:।
तपसा तन्मय ध्यानेन तद्विष्णो: परमं पदम् ।।

(15) पाँच महावाक्य:-

बड़े महाराज ने अपने महाप्रयाण के पहले यह पाँच महावाक्य कहा था। श्री महाराज जी ने हमसे कहा:

"1. अयोध्या में रहना चाहै तहाँ पर।
2. कोई ज़मीन दे तो न लेना।
3. मरे पर पास में कफ़न को पैसा न निकले।
4. कोई मारै तो हाथ न चलाना।
5. किसी से बैर न करना।
तब हमारे पास पहुंच जावोगे।"

यह पाँच बातें कहा तो शरीर छूटा। बली भगत से 12 रु० कर्ज लिया जो पास में उत्तर बगीचा है वहाँ से। फिर बाबू जी दूसरे दिन आए तार गया था। 40 घंटे बाद सरजू जी ले गए। सुबह पता जहाँ तहाँ भेज

दिया। साधू आए। श्री राम बालक दास जी रामायणी बड़ी छावनी के, बोले कि सरजू जी ले चला जाय। हमने कहा कि बाबू को तार गया है, आ जावेंगे, तब ले चलैंगे। महाराज जी कह गए हैं कि राम घाट पर पधारना। तो श्री राम बालक दास जी ने कहा कि वहाँ गाँठ भर पानी है। सबेरे इतना जल बरसा कि वहाँ बहुत पानी हो गया। गाँठ भर, कमर भर पानी हलते-हलते वहाँ गये। नई साफिन में माटी करार की करीब 12-12 सेर बाँधि कै श्री महाराज जी के दोनों तरफ कमर में लगा कर हमने कहा ''जो पैर पाता हो वह हमारे साथ चलै।'' तो तीन साधू चले। बड़ा जल था। थोड़ा शरीर डूब गया, मुश्किल से निकल पाए। कई घंटे पर ले गए। एक ब्रह्मचारी आए। वे बोले कि नेत्र जब शरीर सड़ैगा तब बिहीन होंगे। इनका वीर्य उर्ध्व है। उनके नेत्र शंख ऐसे थे, पुतरी नहीं थी। राम जानकी सामने हर समय रहते थे। फिर बाबू जी आए। विमान बनवाया, मखाना और पैसा झोरी में भरा खूब फेंकते रहे।

सन् 1932 में शरीर छूटा था श्रावण शुक्ल एकादशी का दिन था।

5. श्री बाबा माधौ राम
रानू पाली, अयोध्या

बाबा माधौ राम जी, रानू पाली आश्रम का कुछ चरित्र मंझले महाराज जी, महाराज जी (हमारे गुरु जी) से बताते थे, वह सब महाराज जी (गुरु जी) ने हमसे बताया था, वह हम थोड़ा लिखते हैं।

बाबा माधौ राम, जो नानक जी का मंत्र है, दोनों समय में पाँच पाँच माला जपते थे, फिर वै राम राम जपा करते थे। उनको आकाशबानी हुई, ''तुम छावनी में बाबा रघुनाथ दास जी के पास जाओ, उनको शंकर जी हनुमान जी ने राम नाम के जप का भेद बताया है। उनके सामने राम जानकी की छटा हर समय रहती है।'' बाबा महाराज जी के पास बड़ी छावनी गए। सब हाल एकान्त में बताया। महाराज जी ने पहिले उनको छाती से लगाया फिर बैठे, जप का भेद बताया। बाबा लौट कर गए, साधन करने लगे। तीसरे दिन नाम की धुनी खुली। फिर पाँचौं तत्व दरसने लगे, फिर जौन देवता जहाँ पर बैठा है दरसने लगा और छइउ चक्र चलने लगे, सातौं कमल खिल गए। नासिका के दोनों स्वरन से सुगंध आने लगी,

कुंडलिनी जाग कर शुभ लोक दिखा लाई, लय दशा होने लगी, फिर शून्य समाधि होने लगी। फिर सब देवता, ऋषी, मुनी, सिद्ध संत मिलने लगे। जिस देवता के यहाँ दिब्य भोजन का निमंत्रण होता था वहाँ जाते थे। दो बजे बाबा उठते, अश्नान करके तीन बजे बैठते थे। सूर्य उदय पर उठ जाते। उधर सूर्य बैठने पर बैठते, 10 पर उठ जाते, 11 पर शयन करते। दो माह में सब भजन का काम हो गया। राम जानकी की छटा सामने छा गई। शंकर जी हनुमान जी ने कहा ''तुम तो महासुखी हो गये। तुम बड़े सरल चित्त के हो और तुम में बड़ी दीनता है। जो भक्त के लक्षन हैं, सब तुममें हैं, यह भजन गुप्त रखना, बिना भगवान के हुक्म किसी को न बताना। अब तुम छावनी जाकर बाबा रघुनाथ दास से सब बता आओ और 10 दिन बाद उनके पास जाया करो।''

बाबा माधौ राम जी महाराज के पास गए, साष्टांग दंडवति करने का विचार किया, तब महाराज ने छाती से लगा लिया। एकान्त ले गये, सब हाल बाबा ने बताया। महाराज ने कहा ''जिस पर इतनी दया भगवान की हो गई वह भीतर से नै (तर) गया, हम तुम एक हो गये। ऊपरी देखाव में जो भक्त कच्चे हैं वै बिरोध करते हैं, उनकी हानि होती है। सब के भाव अलग अलग हैं, उनके आँखी कान नहीं हैं। बिना परमारथ और परस्वारथ के हैं।'' फिर 10 दिन बाद महाराज जी के पास जाते, एकान्त में अपना अनुभव बताते, भोजन करके लौट आते।

जो कोई मंत्र लेने आते उसे नानक जी का मंत्र बताते, सुबह शाम पाँच पाँच माला जपना और मन हे मन राम राम करना, किसी को न बताना, इसी से तुम्हारा दोनों तरफ का काम ठीक हो जायगा।

फिर जालिम जंग कुरमी, वाजिद अली का कार्यकर्ता था, वहाँ से अरसा हुआ छुट्टी पर गया, वह बहुत जवाहिरात लाया था। वह बाबा से मंत्र लिया। एक करोड़ की जवाहिरात चढ़ाई। बाबा ने आधी उठाकर बाग में एक जगह खंती से गाड़ दिया, आधी पुजारी ने उठा लिया। फिर पहले गुरु-सागर पुजारी ने खुदाना शुरू किया। तब एक लाख में बना था लखौरी ईंट का।

बाबा संगति बक्स की समाधि थी, फिर धीरे धीरे बनने लगा। बाबा गुरु-सागर के समीप कोठरी जो है उसमें रहते थे। फिर गरीबों को अन्न दिया जाने लगा। भंडारे बड़े बड़े होने लगे, छावनी भर का निमन्त्रण

भंडारे में होने लगा। फिर अवध के साधू बड़े महाराज के जरिये से भंडारे में आने लगे। बरतन कपड़ा दिये जाते थे। 100 बिगहा जमीन है, फिर पत्थर की इमारत और ईंटौं की बनने लगी।

फिर बाबा नारायन राम ने पाठशाला और साधूनि के लिये, बाबा संगति बक्स की समाधि, माधौ राम की समाधि और कोट खिंचाया। हम 16 की उम्र में मंत्र लिया, आते जाते थे, कोट हमारे सामने बना है। 100 बीघा में आम, फरेंद और कई तरह के पेड़ थे। सब जनता आम, फरेंद खाती थी। कोई रोक टोक न थी। चंदन के पेड़ बहुत थे। केशव राम ने बेचा था। सब इतर बनाने वाले ले गये थे।

बाबा माधौ राम जी के समय में गुरु सागर पर के बुरजा पर नरायन राम बैठे थे, पानी बरसने लगा, राम राम करते थे, पानी उनके ऊपर न पड़ा, किसी ने बाबा से कहा। बाबा ने कहा ''खेद (खदेड़) दो, अभी कुछ कमाया नहीं, मिटाये देता है। साधक को तप धन बचाने की जरूरत है।'' फिर बहुत भक्तौं ने प्रार्थना की तब रहने पाये। कुछ समय बाद बाबा का एक चेला फैजाबाद का मरा था, उसे लिये जाते थे तो रानू पाली के चौराहे पर उतारा। नरायन राम टहलते थे तो उसके सर पर एक लात मारा, उसकी स्वाँसा चलने लगी, कुछ देर बाद ठीक हो गया। तब किसी ने बाबा से कहा। बाबा ने खिदवा दिया। नीमसार भाग गए। बाबा ने कहा, ''हमारे मरने के बादि आवैं।''

बाबा माधौ राम जी गुरु सागर पर कोठरी में बैठ गए। किवाड़ अन्दर से बन्द करके, ध्यान किया, ब्रह्मांड बेधन करके निकल गये। लंगोटी खोल कर अलग धर दिया था। किवाड़ तोड़ा गया था। तब फिर सरजू ले गये थे। तब बाबा नरायन राम बुलाये गये।

नरायन राम का शरीर हमारे सामने छूटा, शायद 92 वर्ष पर। बाबा माधौ राम की उमर हम भूल गये। केशव राम, राम गोपाल हमारे सामने मरे हैं। यह कोई आश्रम की उन्नति न कर पाये। बहुत विस्तार है, थोड़ा लिखा है।

6. श्री बाबा टीका दास
गाँव बहादुर नगर, जिला हरदोई

बाबा टीका दास जी गाँव चौरी चौरा, जिला गोरखपुर के रहने वाले थे। यह वैश्य जाति के थे। इनके पिता परचून की दुकान करते थे। माता

थीं दो बहिनें थीं। जब वह गर्भ में आए तब से उनके रोज़गार में बढ़ती होने लगी। जब पैदा हुए और 5 साल के हुए तो लड़कों और लड़कियों को बुला कर सब से राम राम कराने लगे। उन सब को मिठाई खिलाते, दोनों समय एक एक घंटा राम राम कराते और स्वयं करते। तब रोज़गार में और उन्नति होने लगी।

12 की उमर में शंकर जी ने इन्हें भजन की बिधि बता दिया और कहा, ''दो बजे रात उठ कर नहा कर बैठ कर करना।'' यह करने लगे और कोई संसारी बात कहै तो कह देते ''भाई, हम से कोई बात न कहौ, हमैं अच्छी नहीं लगतीं।'' फिर पिता की दुकान पर जाने लगे। जो कोई सामान लेने आवै उसे दे देते कहते ''सब तेरे हैं लै जाव''। इनके पिता कुछ न कहते। जितना देते उतने दाम सन्दूक में धरे मिलते। अब बढ़ती बहुत होने लगी। एक बाँट पत्थर का था। उस से कभी तौलने से 6 सेर होता और कभी 4 सेर, तो इनके पिता ने मंदिर बनवा कर पधार दिया। फिर कई लाख का धन हो गया। दोनों बहिनों की शादी हो गई।

जब यह 16 साल के हुए तब माता-पिता का परम धाम हो गया। इन्होंने आधा धन दोनों बहिनों को दे दिया और आधा गाँव में बाँट दिया। तब शंकर भगवान ने कहा, ''अब तुम पहले जगदीशपुरी को जाओ फिर जहाँ भगवान का हुक्म होगा वहाँ जाना।'' बाबा जी एक लौकी का कमंडल और दो लंगोटी, एक 6 हाथ की साफी पहन कर पैदल चल दिये। 20 कोस रोज़ चलते थे। जहाँ ठहरते लोग भोजन को कहते तो आध पाव आटा लेते, थोड़ा नमक मिला कर दो भौंरी बना कर भोग लगाते। इसी तरह जात्रा पूरी की। वहाँ सात दिन रहे। भगवान ने पुजारी से स्वप्न में कह दिया था ''हमारा भक्त टीका दास आया है उसे रोज़ बुला कर भोजन करा देना। वह एक बार थोड़ा खाता है।'' पुजारी ने तलाश किया, मिले। मंदिर में दर्शन किया। सब लोग धन्य धन्य करने लगे। थोड़ी मूंग की दाल भात लेकर पाते थे एक समय रोज़। तीन बार दर्शन को जाते थे। भगवान ने कहा ''अब तुम पछाँह चले जाव। गोमती के किनारे जंगल में 12 वर्ष रहो। फिर तुम्हें थोड़ी दूर गोमती के किनारे जहाँ गिरवर दास की ज़िन्दा समाधि है, शंकर जी का शिवाला है, हनुमान जी की कोठरी है, वहाँ कुछ दिन रहना होगा।'' बाबा दंडवति कर के चल दिये। जैसे आये थे उसी तरह खाते पीते वहाँ पहुंचे। वह जगह पुरी

से 500 कोस से कम न होगी। जंगल सब घना सुहावना था। देख कर मन खुश हो गया। ऐसी ऐसी झाली थीं जिनके तरे घुस जाव तो कोई देख न सके। बगैर काँटौं की थीं।

बाबा गोमती में नहाते। गीली लंगोटी, गीली साफी पहनते। शरीर की गर्मी से सूख जाती। 12 वर्ष कोई देख न पाया। वहाँ चरवाहा गाय, बैल, भैंस, बकरी चराने जाते थे। एक दिन एक चरवाहे के पेट में दर्द उठा। वह रोता था। बाबा झाली से निकलकर उसके मूंह में कोई पत्ती छोड़ दिये। वह उठ कर बैठ गया। ठीक हो गया। उसने गाँव में जाकर कहा। वहाँ से दो ढाई सौ ठाकुर ब्राह्मण और लोग आ गये। खोज कर झाली से निकाल लाए। जहाँ गिरबर दास की समाधि, शंकर जी का मंदिर, हनुमान जी की कोठरी है वहाँ बैठारा और ''कहा, कसम खाओ कहीं भाग तो न जाओगे।'' बाबा ने कहा, ''नहीं जायंगे''। बस वहाँ बैठ गये। लोग चले गये। एक आदमी थोड़ी सूखी लकड़ी लाया और दियासलाई से जला दिया, कहा, ''मच्छड़ बहुत हैं धूनी की ज़रूरत है।'' फिर वह आदमी चला गया। शाम का समय था, कुछ न बताया कि मैं कहाँ रहता हूं।

बाबा धूनी के पास बैठे। बट के नीचे एक मुसलमान की समाधी बहुत पुरानी है। वहाँ साल में एक बार कार्तिक में बड़ा मेला होता है। कई दिन तक वह हाथी बन कर आया और सूँढ़ जमीन में पटके, चिंघारे और चारों तरफ घूमे। बाबा ने हाथ जोड़ा कहा ''हमने तुम्हारा कुछ नुकसान नहीं किया है। भगवान का भजन करते हैं।'' बस अन्तर हो गया। दूसरे दिन शाम को कुत्ता बनकर आया जैसे बड़ी रासि का घोड़ा होता है। खूब भौंकता रहा, आगे के पैरों से माटी खुरचता रहा। बाबा ने हाथ जोड़ा, फिर अन्तर हो गया। फिर तीसरे दिन 40 हाथ का बन कर आया। 40 हाथ की चादर बिछा कर लेटा। फिर बाबा ने हाथ जोड़ा फिर अन्तर हो गया। चौथे दिन एक बोझ सूखी लकड़ी ला कर डाल दिया और कहा ''अब तुम निर्भय भजन करो। इतनी परीक्षा हमने किया तुम डिगे नहीं।" बाबा ने हाथ जोड़ा फिर अन्तर हो गया।

एक दिन उजेरी रात में साधू भेष में हनुमान जी एक अलफ़ी पहने मटमैले रंग की आए। गर्मी का समय था। थोड़ी बिनवा कंडी लाए, कहा, ''बाबा, कुछ पकावो।'' बाबा ने दो मोटी रोटी नमक मिला कर

पलाश के पत्ते पर रख दीं। हनुमान जी अलफ़ी उतार कर गोमती में हाथ पैर धो कर भोजन किया। फिर गोमती में जल पिया। बाबा ने हम से कहा कि उनके सारे बदन में सोने कैसे अक्षर राम राम के चमकते थे। हमसे कहा कि हम समझ गए यह हनुमान जी हैं। अलफ़ी पहनी तब हम पैरों पर सर रख दिया। उन्होंने तीन बार दाहिने हाथ से पीठ ठोंक दिया, कहा, ''हम तुम से भजन ही करावेंगे।'' बस अन्तर हो गए।

एक दिन बाबा नहाते थे गोमती में तो एक पत्थर पैर में लगा। उसे उठा लाए। हनुमान जी की कोठरी में रख दिया एक ताखे में। वह रात में बहुत उजेरा देता था, दिन में कुछ नहीं। इस बात का हल्ला हो गया। मोगियापुर के ठाकुर लोग आपस में सलाह किये कि बाबा से माँग लिया जाय। एक आदमी आया। बाबा से कहा। फ़कीर की समाधि का मेला शुरू हो गया था। बाबा ने कहा ''एक को देंगे तो दूसरा बैर मानेगा।'' कई हज़ार आदमी थे। बाबा जी उस पत्थर को हनुमान जी की कोठरी में ताखे में धरे थे। ला कर सबके सामने गोमती में फेंक दिया। तमाम आदमी कूद पड़े। देर तक ढूंढ़ते रहे। किसी को न मिला। आखिर सब लोग निराश हो कर निकल आए।

फिर हनुमान जी ने कहा, ''अब यहाँ सात साल हो गये। बहादुर नगर के पास एक मैदान है एक फरलांग पर वहाँ चलो। तुम को अब कुछ देश की सेवा सौंपी जायगी। तुम्हारा भजन का काम हो गया। वह जगह सिद्ध स्थल 700 वर्ष की है। वहीं तुम्हारा शरीर छूटेगा।'' बाबा वहाँ से चल कर उस जगह आ गये। अन्दाज़ एक या डेढ़ कोस का फासला है। जब बाबा टीका दास जी उस जगह से हनुमान जी की आज्ञा से चलने को तय्यार हुए तो कोई नया वस्त्र लाया। हनुमान जी ने कहा, ''इस धोये कपड़े की चार लंगोटी बना लो। दो साफ़ी छा छा हाथ की, दो साफ़ी तीन तीन हाथ की। लंगोटी लगा कर साफ़ी पहन कर चलो। यह लंगोटी साफी गोमती माता में कंकड़ ईंट, बालू बाँध कर छोड़ दो तो गल जायगी। किसी को देने लायक नहीं है।'' बाबा ने वैसा ही किया। गोमती जी, शंकर जी, हनुमान जी और फ़कीर की समाधि की दंडवति कर के चल दिये।

वहाँ बंगला बनाया गया। बाबा रहने लगे। ठाकुर, ब्राह्मण दो रंडी थोड़ी उम्र की शाम को भेजते थे। सुबह तक रहती थीं धूनी के पास।

न बाबा बोलते थे, न रंडी बोलती थीं। वहीं सो जाती थीं। एक साल ऐसा हुआ। फिर गाँव के धनी लोग मकान बनाने लगे। बाबा ने कहा ''कच्चा बनाओ।'' बन गया। कई कोठरी थीं। बाहेर भी कई कोठरी थीं आने जाने वालों के लिये। कुआँ बन गया। लोगों ने कई बीघा ज़मीन लगा दी। सब खेत बोवा देते थे, बैल यहीं अपने अपने रखते थे, गल्ला भरा देते थे। सेवा होने लगी। बाबा से गिरबर दास का हाल पूछा तो बताया था। शंकर जी का शिवाला, हनुमान जी की कोठरी उन्होंने बनवाया था, भक्त लोग बनाये थे। बाबा झोंपड़ी में रहते थे। दोनों जगह पूजा करते थे। एक औरत के संतान न थी। वह स्वत: रोज़ सबेरे आती गोमती में नहाती, शंकर जी, हनुमान जी के यहाँ सफाई करती, बाबा की झोंपड़ी के आस पास करती, नदी पर सफ़ाई करती और दंडवति कर के चली जाती। तीन साल ऐसा किया। उसके पुत्र हुआ बड़ा सुन्दर जैसे बाबा सुन्दर थे। उसका प्रचार लोगों ने कर दिया। जब लड़का पाँच साल का हुआ तो बड़ा तेजस्वी था। बड़े ज्ञान की बातैं करता था। सुनने वाले पंडित लोग चुप हो जाते थे। बाबा ने समाधि बनवाई और लोगों को बुलाया। भीड़ लग गई। तब बाबा ने कहा, ''तुम लोग अन्धे नहीं हो। पुत्र शंकर जी हनुमान जी ने दिया है। हम को दोष लगाते हो कि बाबा का लड़का है। भगवान तुम्हारे इस पाप को माफ़ कर दें यही प्रार्थना है।'' बस चाकू से फ़ोता इन्द्री काट कर गोमती में फेंक दिया। मंत्र पढ़ कर फूंक मारा तो खून बन्द हो गया। कारीगर से कहा ''आजन्म समाधी लेते हैं, तुम चुन दो।'' बाबा बैठ कर समाधि ले लिया। चुन दिए गए तो सब लोग रो रो कर अपने अपने घर चले गए।

जब से बाबा वहाँ आए साधू, ब्राह्मण, पंडित, गरीब आने लगे। जहाँ सेवा होती है वहाँ सब तरह के औरत मर्द जाते हैं। कोई भूखा न लौटता था। धीरे-धीरे काम बढ़ता गया। बाहेर कुटी के मिलान में कई कोठरी आने जाने वालों के लिए बनी थीं। हमारे पास एक धोती, चार लंगोटी, लोटा-डोरी, सोंटा था। हम नरकुल की चटाई पर लेटे थे। बाबा दो बजे रात को एक सफेद कम्मल, बड़ा ज़बर कोई लाया था, हमारे ऊपर छोड़ दिया। कुछ देर बाद हम गरमा गए। महीना पूस या माघ का था। कम्मल उलट दिया। देखा बाबा बैठे हैं और सामने बड़ा भारी सोने का सिंहासन है। उसमें हनुमान जी गदा लिये खड़े हैं। ऐसा सिंगार था

कि मारे तेज के आँखैं चका चौंध हो गईं। 15 मिनट बाद बाबा चले गए और सिंहासन सहित हनुमान जी अन्तर हो गए। दूसरे दिन बाबा ने रात में कोई नया लिहाफ लाया था आ कर ओढ़ा दिया तो कुछ देर में हम गरमा गए। उसे उलटि दिया। देखा एक बड़ा भारी सिंहासन सोने कैसा जिसमें नग जड़े चमकते थे, प्रकाश निकलता था। चारौं भाई महारानी जी सब बैठे थे। हनुमान जी हाथ जोड़े मत्था झुकाये महाराज महारानी के चरनों के समीप बैठे थे। देर तक हम देखते रहे। जब बाबा उठे तब सब अन्तर हो गए।

हमने सुबह बाबा से कहा ''महाराज जी ने कहा था कि जो भगवान की प्राप्ती कर लिया वह भगवान का हो गया। कोई जाति हो, हम से अधिक सेवा करना। अपना विश्वास अटल रखना। भाव विशाल बनाए रखना तो ऐसे सन्तों की सेवा से सब प्राप्त हो जाता है। वैसा ही हम करते हैं।'' बाबा ने कहा, ''यह सत्य है जो महाराज जी ने आप को बताया है। ऐसा उपदेश अपने शिष्य को वही दे सकता है जिसके आँखी कान खुल गए हों। जियतै सरनि, जियतै मरनि, जियतै तरनि हो गई। जीवन मुक्त उसी को कहते हैं जो जियतै में सब जानि लिया। तब वह भक्त हो गया। शरीर छोड़ कर भगवान के धाम गया और भगवान का रूप बन कर सिंहासन पर बिराजमान हो गया।''

कुछ दिन बाद लखनऊ से बाबा विचार दास आए। शरीर बहुत सुन्दर था। भजन करते थे। बाबा की तपिस्या का हाल सुने थे। दो सौ साधू साथ थे। महीना गर्मी का था। हवा तेज़ चलती थी। बाबा ने उन सब को ठहराया। उनके पास तम्बू, छोलदारी, छाता, कनातें थीं। बाबा ने कहा, ''कनात की ज़रूरत नहीं है। पवन पुत्र अपने पिता से कह देंगे हवा न चलैगी।'' बाबा ने दो महीना रोका। हवा और लूक न चली। रात में बादल हो जाता। गर्मी न लगती थी।

कई भक्त बैठे थे। आठ बजे रात अंधेरी थी। बाबा ने कहा ''देखो विमान ठाकुर को लेने जा रहा है।'' सब ने कहा ''कहाँ? हमैं नहीं देख पड़ता।'' तो बताया ''जो बूढ़े ठाकुर यहाँ रोज़ आते हैं। नाम बताया हम भूल गए हैं। खेती बहुत है, दया धर्म की मूर्ति हैं। दरवाज़े पर से कोई खाली नहीं जाता। याचक की याचना पूरी करते हैं। परिवार दार और काफ़ी धनी हैं। दो साधू जाओ और देख आओ कि कैसे शरीर छूटैगा।''

कुटी से चार फरलाँग था। दो मूर्ति गये तो देखा खाट पर बैठे सब को धर्म का उपदेश करते रहे। फिर कहा ''जैसा हमारे पिता ने हम से कहा था कि दया और धर्म को खूब साधे रहना जब तक शरीर है। हमने निपटा दिया। अब तुम सब ऐसा ही करना तो किसी चीज़ की कमी न रहेगी। इस से बढ़ कर कोई परउपकार नहीं है।'' फिर कहा ''हम ने जो कभी किसी को कोई अनुचित बात कहा हो उस पर ध्यान न देना। हम सब से हाथ जोड़ कर छिमा माँगते हैं। जो पैसा धर्म में लगता है उसका दस गुना भगवान देते हैं। अब देखो, सुनो, विमान आ गया। देवी देवता बाजा बजा रहे हैं। झंडा पताका लिये हैं। अपसरा नाच रही हैं। विमान चालक चार हैं। सब सजे बड़े सुन्दर हैं।'' फिर बड़ा प्रकाश भया। शरीर छोड़ दिया।

जो दो माह बाबा विचार दास महन्त लखनऊ के बाबा टीका दास के यहाँ रहे उनकी सेवा भाव से मस्त हो गये। जाने की आज्ञा मांगी। बाबा ने कहा ''अभी कौन बहुत दिन हुए हैं, आप पहले पहल आये हैं।'' तो श्री महन्त विचार दास जी बाबा को लिपटि गए और प्रेम में मस्त हो कर रोने लगे। बाबा के पैर छूना चाहा तो बाबा ने कहा, ''आप सिद्ध पुरुष हो कर क्या विचार कर रहे हैं? मैं जाति का बनिया हूँ, मेरी कौन गती होगी, आज तक कोई ब्राह्मण हमारे पाँव नहीं छू पाया है।'' बाबा उनके चरणों पर गिर पड़े। बिचार दास के आँसुन से बाबा की पीठि तर हो गई। बाबा उठ कर कुवाँ से जल भर कर श्री महन्त जी का मुख व दाढ़ी धोई। महन्त जी की साफ़ी से सब पोंछा। जब प्रेम का वेग शान्त हुआ तो कहा, ''जैसा सुना था वैसा ही आँखौं से देखा।'' बाबा से भक्तौं ने कहा, ''आप पीठि धो डालैं'' तो कहा ''नहीं, भगवान ने अमृत बरसाया है।'' गर्मी के दिन थे। प्रेम की नदी का जल ठंडा होता है। श्री महन्त विचार दास जी बाबा से कह सुन कर बिदा हुए।

बहादुर नगर में एक भुरजी था। उसके कोई सन्तान न थी। बाबा से कहा। बाबा ने कहा ''तुम 40 के ऊपर हो गए सन्तान क्या करौगे। ऋषियों ने कहा है 20, 30, 40 तक योग, भोग, संग्राम होता है। 40 के उपरांत बुढ़ापे में गिन्ती है, ऋषियों ने कहा है, जब घर में लड़के के सन्तान हो तो उस पुरुष को ब्रह्मचर्य से रहना चाहिए।'' उसने कहा ''हमारे हर समय मन में पुत्र की इच्छा बनी रहती है, भूलती नहीं है।'' बाबा ने कहा ''पुत्र होगा तो बड़ा जबर साधू हो जायगा'' तो कहा,

''कोई हर्ज नहीं है। हमारा नाम तो रहेगा।'' बाबा ने कहा ''तुम्हारी पत्नी शिव जी का पूजन करै।'' वह पूजन करने लगी। साल बाद उसके पुत्र हुआ। उसका नाम बाबा ने नन्द राम रखा। जब वह 5 साल का हुआ तब करीब एक फरलाँग कुटी थी, रोज चला जाता। बाबा की दंडवति करता, वहीं भोजन करता। बाबा उसे पढ़ाने लगे। जब वह डोल डाल जाता तो बाबा उसे सौंचा देते, नहवा देते, कपड़े छाँट (धो) कर सुखा देते। जब 10 साल का हुआ तो साधू तीर्थ यात्रा में जाने को तैयार हुए तो उसने कहा ''बाबा हम भी जायँगे।'' बाबा ने संग भेज दिया, कहा ''राम नाम चलते, बैठे-ठाढ़े, लेटे करते रहना।'' वह संस्कारी जीव जुट गया। कुछ दिन बाद वह अन्दर के बाजा सुनने लगा। सब साधुन से पूछै तो कोई कुछ बताता था, कोई कुछ बताता था। पंजाब में एक भक्त आदमी ने बताया कि जो तुम्हारे सिर में बाजा बजते हैं वह जो भगवान के दरबार में बजते हैं वही हैं।

बाबा नन्द राम साधूओं के साथ चार साल घूमे। जब बाबा की कुटी पर आए तो बाबा से बताया कि हमारे सर में बाजा बजते हैं तो बाबा ने भी वही बताया जो पंजाब के भक्त ने बताया था। फिर कुछ दिन बाद बाबा से आज्ञा लेकर अमृतसर श्री नानक देव के दरबार में गये। वहाँ एक साल रहे। बाबा से भक्तौं ने कहा, ''बाबा नन्द राम कहाँ हैं?'' बाबा ने कहा, ''अभी बताते है।'' बाबा ध्यान में बैठे। कुछ देर बाद कहा "नानक जी के दरबार में है, हम बुला आये हैं।" नानक जी ने नन्दराम से कहा कि तुम्हारे गुरुजी आये थे। हम से मिलकर कहा "नन्दराम को बुलाने आये थे, अब तुम चले जाव।" नन्दराम चल दिये। एक दिन भक्तौं ने कहा, "बाबा, नन्दराम कहाँ हैं?" फिर ध्यान में बैठे, कहा ''आगरा के स्टेशन पर हैं। हम बुला आये हैं।'' एक दिन फिर पूछा तो कहा, ''गाँव के डाँड़े पर हैं आ रहे हैं।'' नन्द राम आये। बाबा की दंडवति किया। कुछ दिन रहे। बाबा से कहा, ''हम कहीं एकान्त में भजन करेंगे।'' बाबा ने कहा ''यहाँ से सात कोस पर पिपरौला गाँव के करीब एक ब्रह्मचारी की कुटी खाली पड़ी है। उनका शरीर छूट गया है। कुटी कच्ची बनी है। तुम वहीं जाव।''

किसी भक्त ने कहा, ''एक गाय हम भेजते हैं। दो माह की ब्यायी है।'' एक साधू शीतल दास को साथ कर दिया। वहाँ 75 बीघा जमीन

का जंगल रहा जहाँ गौवें चरती थीं। कुटी के पास ही कुवाँ था। पानी नाँद में भरा रहता था। भूसा घास की जरूरत नहीं पड़ती थी। नन्द राम दास जी आध सेर दूध एक बार लेते थे। बाकी वह साधू पीता था। गाँव से सामान आ जाता था तो साधू बनाता था और कोई साधू आ जाता तो बनाना पड़ता था।

हमने (बाबा टीका दास से) कहा ''बाबा! हम नंद राम के दर्शन को जायँगे'' तो कहा, ''अच्छा जाव'' एक अद्धा गाँव से मंगवाया और भोजन का सामान धरा दिया। चार आदमी साथ चले। सूर्य बैठे पहुंचे तो बाबा के एक चेला ठा० शिव नारायण दास के हाता के कोने में धूनी लगाए बैठे थे। हमने कहा, ''चलो तुम्हारे गुरु भाई हैं हमैं दर्शन करा दो'' तो कहा ''हम नहीं जाँयगे उनकी कोठरी में बड़े बड़े साँप रहते हैं।'' फिर हम गए तो बैठे थे नंगे। राम राम करते थे, होंठ चलते थे। उठ कर हाथ पकड़ कर बैठाया। दो घंटे बात चीत हुई। खूब जाड़ा था। सर्प निकलते थे और खूब भन्नाते थे। जब सुन न पाते थे तो मोर पंखा की झाड़ू हिला देते थे तो सब बिलों में घुस जाते थे। हमने कहा कि जहाँ साँप बहुत होते हैं वहाँ धन होता है। तो कहा ''यहाँ एक डेग असर्फी है।'' हम ने कहा कि हम होते तो खोद कर गरीबों को बाँट देते, गाँव गरीब है। तो कहा, ''हम से धन से कोई सरोकार नहीं है।'' हमने कहा कि अब हम भोजन बनाने जाते हैं। जो भक्त आये हैं उन्हें पवाना (खिलाना) है। तो एक कपड़ा कमर में लपेट कर आए। जब तक हम भोजन बनाया सब को पवाया, खड़े रहे। हमने कहा ''आप आसन पर जाँय'' तब कहा ''जब आप सैन करोगे तब जाँयगे।'' हम ने कहा ''अभी भक्त बर्तन मलेंगे देर होगी।'' तो कहा ''देर की कोई बात नहीं। आप क्या रोज़ रोज़ आते हैं। भगवान की और बाबा की कृपा से हमैं भी दर्शन मिले।'' जब सब काम से छुट्टी हो गई, सब सैन हो गये तब कोठरी में गए।

सुबह डोल डाल गए। कोठरी के बाहेर चौखट के नीचे एक बिल था। उसमें एक काला साँप घुस रहा था। शीतल दास ने देखा तो कुदाली उलट कर उसे मार दिया। वहीं अन्दर गड़हा था। उसमें 18 साँप बैठे थे। उसने सब को कुदाली से कूट दिया। जब डोलडाल से लौटे तो देखा। कहा, ''तुम हमारे गुरु भाई न होते तो अभी खेद (खदेड़, बलपूर्वक भगा)

देते। 18 सांप मार दिये। जब एक मारा तो वहाँ खोदने की क्या जरूरत थी। सब अपनी मौज में बैठे थे। वह रात में बाहेर आकर अपना अपना अहार तलाश कर के खा कर अपनी जगह में आ जाते हैं। हमारी कोठरी में बहुत हैं। कभी किसी को काटते नहीं।'' फिर हमने उनसे (बाबा नन्द राम से) कहा ''अब हम जाँयगे, बाबा (बाबा टीका दास जी) के साथ दूसरी जगह जाना है।'' तो कहा ''अब कब दर्शन मिलेंगे?'' हमने कहा ''जब भगवान की मर्ज़ी होगी।'' फिर हमें छाती से लगा कर कहा ''अच्छा हम कुछ दूर तक चलेंगे।'' हम सब अद्धा पर बैठे, वह कमर में कपड़ा लपेटे एक मील तक आए, हाथ जोड़े राम राम करते हुए आए। तब हम उतर कर जबरदस्ती उनको लौटाया। ऐसी दीनता उनमें थी। ऐसी लाखौं में किसी एक भक्त के होगी।

बाबा (बाबा टीका दास जी) के पास आए। हाल बताया। बाबा ने एक भक्त का और हाल बताया। कहा ''उसका लड़का-लड़की औरत इन से भी बढ़ कर हैं, तुम को दिखावैंगे। कौम के हिन्दू तेली हैं।''

गुरु पर्व पर पाँच हजार साधू रहे। तेजा दास के पेट में कभी कभी शूल (विकट पीड़ा) उठती थी। उसी समय वहाँ शूल उठी। पड़े फटक रहे थे। बाबा ने कहा ''तेजादास! तुम अभी घर चले जाव।'' तब तेजादास समझ गए कि बाबा हमारी सच्चाई सब को दिखलाना चाहते हैं। कहा, ''अभी जाते हैं।'' दंडवति किया और पेट पकड़ कर चल दिये। साधूओं ने कहा ''बाबा, घर 5 कोस (1 कोस = 2 मील लगभग) है, दिन कम है, तकलीफ है, कैसे जायगा।'' बाबा ने कहा ''पहुँच जायगा, कल फिर आवेगा।'' धीरे धीरे चलकर नदी में जो सवा कोस पर थी, कमर भर जल में उतरे। दर्द चली गई, फिर कभी नहीं हुई। भोर हुई। नहा धोकर फिर कुटी पर आये। बाबा की दंडवति किया। बाबा ने उठा कर छाती से लगाया। पीठ ठोक कर शिर पर हाथ फेरा। फिर सब को दंडवति करके काम में लग गये। आटा चालना, माड़ना, चूल्हा चेताना, साग कतरना, पानी कुआँ से भरना। उमर 60 की थी। साधुओं ने पूछा ''कैसे गये इतनी तकलीफ़ में?'' तो कहा ''गुरु की आज्ञा न मानते तो नर्क होता, नदी पार होते ही बीमारी चली गई।''

एक हसनापुर के साधू आतम प्रकाश कई लाख के धनी थे। हमारे यहाँ से 3 कोस पर कुटी है। चेला को गद्दी दिया। कई हजार साधू थे।

हमें पता चला कि बाबा आवैंगे। हम गए। बाबा से कहा कि कोई सन्त के दर्शन करावो। सब जगह घूमे। एक बुढ़िया गई थी। एक साधू थे पैतेपुर के केहरीदास, एक बाबा विचार दास महन्त लखनऊ के थे। कहा ''यही साधू हैं।'' जब सब बिदा भये तब आतम प्रकाश से बाबा से बात चीत भई, कहा, ''तुम्हारे आँखी कान नहीं हैं, धन के मद में मस्त हो, हमारे एक भक्त कौम का हिन्दू तेली है। बड़ा गरीब है, एक लड़का है एक लड़की है, औरत है। थोड़ी खेती है। एक पहर सब खाते हैं। भजन करते हैं, कोई कुछ मदद करने को तैयार होता है तो हाथ जोड़ देते हैं। कहते हैं, ''जैसे भगवान भूखे प्यासे राखैंगे वैसे रहैंगे। भगवान इसी शरीर से मिलते हैं, खान, पान, मैथुन, निद्रा, हर एक योनि में होती है। हम किसी से न कुछ माँगा है न माँगैंगे, जो देगा वह न लेंगे।'' तब आतम प्रकाश ने कहा ''हम तेजादास को फेल कर देंगे।'' तब बाबा ने कहा ''तुम खुद फेल हो जाओगे।''

आतम प्रकाश गये। वहाँ से 30 कोस बड़ा सेज गाँव है। वहीं तेजादास का मकान कच्चा मामूली था। तेजादास को पूंछा। वै आए, दंडवति किया और कहा ''क्या आज्ञा है।'' तो कहा, ''बाबा टीका दास ने कहा है 'वह हमारा सच्चा भक्त है,' वही तुम्हारी भक्ती देखने आये हैं।'' तेजादास ने घर ले जाकर आसन लगाया। अमीर थे, पलंग माँग लाए, भोजन बनाया। पलंग के पास डोल डाल करते, पेशाब करते, गाली देते थे। वै सब साफ करते और चुप रहते थे। जो भोजन चाहते थे वह हनुमान जी घर ही में जुटा देते थे। खूब परेशान करते थे। महीना फागुन का था तो कहा ''अमावस्या से नीमसार की 84 कोस की पैकरमा (परिक्रमा) हैं, हमें करा दो।'' तेजादास के एक बैल था। एक बैल अपने भाई का लेकर अपना और लड़के को ले कर बाबा को बैलगाड़ी पर ले कर 15 दिन में पैकरमा करा कर कुटी पर ले गए। पैकरमा में भी गाली देते रहे। रास्ते में गाली देते रहे। जब कुटी पर आए तो बुद्धि पलट गई। कुछ दिन के बाद बाबा के यहाँ गए, दंडवति किया और कहा ''हम तो हार गए। तेजादास तो परम साधू है। ऐसा भक्त कहीं कोटिन में होगा। हमारे अपराध आप छिमा करैं। हम साधू का भेष बनाया और कुछ न जाना वृद्ध हो गए।'' फिर बहुत रोए। बाबा ने बहुत समझाया तो कहा ''आप अपने मुख से कहिये कि तुम्हारी दुर्गति नहीं

होगी। हमारा दिल घबड़ा रहा है। या हम तेजादास से जाकर माफी माँगें।'' बाबा ने कहा ''वहाँ जाने की ज़रूरत नहीं है।'' तब कहै कि हम को ऐसा लगता है कि हम पागल हो जाँयगे जो ऐसे शान्त सच्चे भक्त को हमने तंग किया। इतना कह कर धरती पर गिर पड़े और बेहोश हो गये। बाबा ने मूंह पर जल के छींटे मारे। बड़ी देर में होश आई। चेत हुआ। बाबा ने उठा कर बैठाया तो कहा ''मेरे शरीर में शक्ती नहीं है। हम कैसे कुटिया पर जाँयगे।'' बाबा ने उनको शहद का शरबत पिलाया, अंदर की आग शान्त हुई। तब अद्धा मंगा कर गाँव के दो साधू लेकर बाबा कुटिया पर गए। वहाँ सात दिन रहे। बाबा ने भजन का मार्ग बताया और रहनी, गहनी, सहनी बताया। तब भजन में लगे। फिर भगवान की दया हो गई। 90 की अवस्था में परलोक बासी हुए।

बाबा की कुटी पर एक ठाकुर कहीं से हाथी पर आये। उतरे, उनको जलपान कराया गया। एक रोगी, जाति का हिन्दू था, दवा के लिये आया बैल गाड़ी पर। उसे कुष्ट रोग था। हाथ पैर से मवाद बहती थी। जो लोग संग आए थे उसे उतारे। बैठा तो बड़ी बदबू आती थी। ठाकुर उठ कर अलग बैठे जाकर। उन्होंने बाबा से कहा ''ऐसे रोगी दूर बैठारे जाते हैं। जितने लोग यहाँ रहते हैं व आते हैं उनको बहुत तकलीफ होती है। मारे बदबू के दिमाग खराब हो जाता है। आप कैसे साधू हैं जो ऐसे अपाहिज रोगिन को कुटी पर बैठारते हैं। हवा से दूर तक बदबू जाती है।'' बाबा ने कहा ''यह कर्म भोग हैं। अपना अपना भोगते हैं। हमारा जो धर्म है वह हम भगवान के हुक्म से करते हैं। अब तुम 15 दिन बाद आना। इसी के हाथ से तुमको शरबत घोला कर पिलावैंगे, तब तुम्हारी गर्मी शान्त होगी।''

बाबा ने 'तबकिया हरताल' मंगा कर एक तोला, एक कुल्हड़ में कुकुरौंधा का रस दो छिटांक छोड़कर हरताल छोड़ दिया उसमें और एक दिया ढाँक दिया। दो कंडे फोड़ कर टुकड़े करके बीच में मंत्र पढ़ कर कुल्हड़ रख दिया। जब कंडा जल कर ठंडे हो गये तब कुल्हड़ निकाल लिया। उसमें जो दिया ढाँका था हटाया तो हरताल चूना सा हो गया। उसे शीशी में रख लिया। फिर एक एक चावल भर देसी बंगला पान पीस कर एक माशा पान की लुब्धी में दोनों समय देने लगे। गाय का धारोष्न दूध आध सेर, साढ़े तीन तोला मधु मिलाकर सुबह शाम देते

थे। 15 दिन में वह रोगी ऐसा हो गया जो कोई पहचान न सकै। उम्र 40 की थी। मालूम होता था 20 साल का है।

जब ठाकुर आए तो बाबा ने उससे शरबत घोरवाया और पिलवाया। ठाकुर ने कहा ''यह तो 20 साल का होगा। इसका शरीर चमकता है।'' बाबा ने उसे सब कपड़े नए मंगा कर पहनाये थे। कोई घर के लोग पहचान न पाये। जब 15 दिन बाद बैलगाड़ी लेकर आए। तब ठाकुर ने बाबा की साष्टाँग दंडवति किया। बाबा ने कहा, ''हमारी दंडवति नहीं, भगवान की दंडवति है जिन्होंने अच्छा किया है।'' फिर रोगी को बाबा ने घर भेजा और कहा ''एक साल भोजन का परहेज़ रखना फिर रोग कभी न उभरेगा''। उसने कहा, ''हम पैदल जावेंगे, हमारे बड़ा बल हो गया है।''

बाबा की कुटी के पीछे बाग थी। उसमें कल्पनाथ और बहुत जड़ियाँ थीं। उसमें साँप बिछखोपड़ा बहुत थे। कोई मारता न था और न उन्होंने कभी किसी को काटा। कुटी में मूस (चूहे) कबूतर बहुत थे। कबूतर नीचे अंडा धरते थे, मूस कभी खाते न थे। मूसों को अन्न छींट दिया जाता था। पानी 10 सेर ताम्बे के कलस में धर दिया जाता था। खाते और पानी पीते थे। अगर कुछ देर हो जाती थी एक घड़ी की, तो बाबा के ऊपर तमाम मूस चढ़ जाते थे तो हमसे कहते थे कि ब्रह्मचारी मूस बहुत तंग करते हैं, क्या अन्न नहीं छींटे हो, पानी नहीं धरे हो। जब हम अन्न पानी धर दें तो बाबा के पास से आकर खाने पीने लगें। दो बार अन्न पानी धरते थे–सुबह और शाम में–10 सेर पक्का गेहूं या चना धरते थे। मूसों को समय मालूम था अपने समय पर आ जाते थे।

जब रात को कोई साधू आ जाता था तो बाबा किसी को जगाते न थे। कहते थे ''हम बनियाँ हैं, हमारा बनाया खावोगे कि खुद बनावोगे, जैसी इच्छा हो।'' जैसा वह लोग कहते थे, करते थे। सामान सैकड़ों आदमियों के लिये हर समय तैयार रहा करता था खूब साफ। अगर बर्तन झूठे हों तो पास ही ताल था। बाबा जाकर, मल कर, चूल्हा पोत कर, आटा भिजा दें, बना कर पवा दें, जो पावैं नहीं तो अपने हाथ से बना कर पावैं। अगर हम होते थे तो हम बना देते थे। उनके बड़ा बल रहा, आलस्य नहीं रहा। भूखे प्यासे हों और कोई आ गया तो उसे बना कर खवा कर तब पानी पीते थे। इसी से सर में गर्मी बढ़ गई थी। मूंग की दाल, लौकी, तरोई ठंडी, गाय का मट्ठा और ठंडी चीजें खाते थे

एक पहर। बहुत गरीब और पशुन की सेवा किया। भजन हो गया तब धूरि में बैठे रहें। कमर से अचला बाँधते थे। एक कोट कलीदार गाढ़ा का दोहरा, एक पैसे की बटन दूधिया। गर्मी में एक कुरता इकहरा पहनते थे। हर समय मस्त रहते थे। सब जाति उनको छू लेती थीं। हमसे कहते थे ''ब्रह्मचारी, क्या करैं? किसी को मना करैं तो उसको दुख होगा। हमको भगवान के यहाँ दुख दिया जायगा। भगवान सब में हैं।'' ताल खुदा हुआ पुराना था। उसमें बहुत मछली थीं। पानी एक एक घंटा कुवाँ से भरते थे। फिर जो आता था वह भरता था।

बाबा टीका दास के यहाँ गुरु नानक जी की तिथि होती थी। बहुत भीड़ होती थी, उसमें बनाने वाले, आटा भिजाने वाले, बेलने वाली औरतें खूब चोरी करती थीं। कोई बाबा से कहै कि ऐसा काम होता है तो बाबा कहैं ''कुछ न कहो, पेट के लिये करते हैं, जो यहाँ से ले जायंगे, उनके लड़के घर के खाएंगे, साल में एक बार बेचारौं की इच्छा भगवान पूरी करते हैं।'' तब सब चुप हो जाते थे। सैतुहाई अमावश को और संक्रांति को खिचड़ी, घी, दही, अचार खूब सब खाते थे। सेतुआ चीनी घी छोड़कर खिलाते थे। सब ब्राह्मण साधू गरीब पा जाते थे, तब बाबा पाते थे। देखने में बड़ा आनन्द आता था। तब सब चीज मद्दी थी। यह भंडारे देखते बनते थे, लिखते नहीं बनते, फिर सब को बराबर भक्त लोग दक्षिणा देते थे। सब का बराबर सनमान होता था। आटा खूब ढीला भिजाया जाता था, जिसमें घी खूब लगै।

बाबा एक गाँव करीब था वहाँ होकर निकले तो गेहूँ की दवाँई बैलों से होती थी। बैलों के मुंह में भुसिक्का (खौंचा) लगे थे। बाबा ने कहा ''इनके मुंह काहे बाँधे हो?'' तो कहा ''यह न बाँधने से पैर में मुंह घुसेर कर अन्न खाते हैं।'' बाबा ने कहा ''तुम बोझ गिन कर बैलों में मड़नी करौ, एक में मुँह बाँधौ, एक में न बाँधौ फिर जब ठीक होकर बसाया और तौला जाय तो देखौ किसमें कम है, किसमे अधिक है।" तब वैसा किया गया। जिनके मुंह खुले थे, खाते थे, उनमें गेहूं अधिक हुए। तब लोगौं ने मुंह बन्द करना छोड़ दिया। एक जगह खेतौं में बंदर अन्न खाते थे, लोग बन्दरों को तंग करते थे, तो बाबा ने कहा ''तुम इनको तंग न करौ, खाने दो, तो अन्न कम न पड़ेगा, यह हनुमान जी की सेना है।'' सब ने मान लिया। हर साल से अधिक अन्न होने लगा। तब लोगौं ने बन्दरों को हाँकना बन्द कर दिया।

7. श्री पलटू साहेब व सन्त राम प्रसाद जी को वैराग्य

बड़ी जगह, अयोध्या

पलटू साहेब के समय में यहाँ अवधपुरी में जंगल था। करीब 400 सन्त रहते थे। पलटू जी परचून की दुकान करते थे। उसी में अपना निर्बाह करते। भगवान में प्रेम था। बाबा राम प्रसाद जी के यहाँ 30 मूर्ति रहते थे। तब थोड़ी जगह थी। जो पैसा चढ़ता था वह पलटू के यहाँ भेज देते थे। उसी में अपना निर्बाह करते। भगवान में प्रेम था। उसी सामान का भोग लगता था और साधू पाते थे। एक दिन कुछ चढ़ौती नहीं चढ़ी। राम प्रसाद जी ने कहला भेजा कि आज यहाँ भगवान के पास पैसा नहीं है, जब आवेगा भेज दिया जायगा।'' तब जो साधू कहने गया था उससे पलटू जी ने कहा ''हमारा उनका नगद का ब्योहार है।'' तब वह साधू लौट कर राम प्रसाद जी से सब हाल बताया। राम प्रसाद जी ने कहा ''अच्छा ठीक है, जैसी भगवान की इच्छा होती है होता है, आज साधू जल पीकर रह जाँयगे।'' फिर वैसा ही हुआ।

भगवान 10 बजे शयन होते थे, तब बाबा राम प्रसाद चिकारा लेकर एक घंटा भगवान [चारौं भाई, चारौं महारानी और छोटे सरकार] को गाना सुनाते थे। जानकी घाट के पुजारी, पूजा करते थे। उनके छोटे स्वरूप [राम जानकी] हमारे यहाँ हैं। जब हम रामघाट से गोकुल भवन आये तब जानकी घाट के साधू ने दिया था और कहा था कि यह बाबा के जुगुल सरकार हैं। पुजारी का नाम राम चरन दास था। उनको सब करुणा सिन्धु कहते थे। शायद रामायण के प्रेमी थे, कुछ टीका भी किया था। उस समय बहुत मद्दा (सस्ता) था। एक सेर आटे की 125 पूरी छोटी छोटी बनाई जाती थीं, उसी से आठों मूर्तियों का भोग लगता था। चारों धाम बाबा घूमे थे। भगवान को संग रखते। जो पीताम्बर भगवान [8 मूर्ती] ओढ़े थे उसी में रुपया बांध कर चारौं भाई, उम्र 12 साल की, गोरे रंग के गए, आधी रात को। पलटू सो रहे थे, जगाये। पलटू उठे बोले ''तुम सब कहाँ से आये हो?'' तो कहा ''बाबा राम प्रसाद ने भेजा है, पीताम्बर में रुपया बाँध कर दिया है और कहा है सबेरे सब सामान भेज देना।''

पलटू साहेब खुद जाकर बाबा को पीताम्बर दिया और कहा ''इसी में रुपया बाँध कर आधी रात में चार लड़के गोरे गोरे ले गये थे और कहे थे 'बाबा ने यह अमानत दिया है, सुबह सामान भेज देना', तो हम रात में रुपया गिना, 1600 रुपये थे। इतने का सामान हमारे पास नहीं है, आपके यहाँ 30 मूर्ती हैं, हम खर्च भर का जब तक रुपया रहेगा दिया करेंगे।'' बाबा ने पीताम्बर देखा तो बड़े आश्चर्य में हो गए। जब मंदिर खुला तो पुजारी ने कहा ''पीताम्बर शयन का क्या हुआ? भगवान खुले पड़े हैं।'' तब बाबा ने देखा, बस प्रेम में रोने लगे, कहा ''आपकी इतने दिन सेवा की हमको कभी दर्शन न दिया।'' पलटू ने बाबा से कहा ''हम जाते हैं, रोज़ का सामान भेजा करेंगे''। एक साधू पलटू के साथ गया, सामान आ गया, अमनियाँ हो गया, भंडार चेताया गया। बाबा के तीब्र वैराग हो गया। समय पर भोग लगा। बाबा और साधू पाये। बाबा उस दिन तिलक में बीच की श्री लगाना भूल गए। जाकर शयन किया। रात में जो छोटी पूरी लगती थी, भोग लगाकर सब को दी जाती थीं, सब को दे दी गईं। 10 बजे शयन भगवान का हो गया, चिकारा लेकर खड़े हो गये और कहा ''आज दर्शन चारों भाई-चारों महारानी ने न दिया तो शरीर छोड़ देंगे।'' गाना शुरू कर दिया 10 बजे से 11 बजे तक गान करके प्रेम में मस्त हो गये गिर पड़े, प्रेम समाधि हो गई। पहले महारानी जी प्रगट हो गईं। फिर सब प्रगट हो गये। महारानी जी ने राम प्रसाद जी का सिर अपनी जाँघ पर धर लिया। समाधि तोड़ दिया। महारानी जी ने राम प्रसाद जी से कहा ''आज तुम श्री लगाना भूल गये, हम बिन्दी लगाए देती हैं।'' तो दाहिने हाथ की छगुनियाँ के पास की अँगुली जिसमें पैती पहिनी जाती है, माथे में बीच में लगा दिया। वह दिब्य बन गई। फिर बाबा उठ कर बैठ गये, सब की दंडवति की, प्रेम से आँसू नेत्रों से झरने लगे। महारानी जी ने अपने वस्त्र से आँसू पोंछा, आँसू बन्द कर दिया। फिर सब ने सिर पर कर फेरा। फिर अन्तर हो गये।

राम प्रसाद जी आनन्द में मस्त थे। दो बजे सरजू जी गये, अश्नान करके आये और नित्य नेम किया। सवेरे साधू लोग दंडवति किया तो कहा ''आप आज कैसा तिलक लगाए हैं।'' तो बाबा ने कुछ न कहा। पुजारी जी ने देखकर पूछा तो सब हाल बताया।

इधर पलटू के वैराग हो गया। बाबा का रुपया वापिस कर के दंडवति किया और कहा ''हम तीर्थ यात्रा को जाते हैं। आप की बदौलत हमें दर्शन हुए।'' पलटू जी (महीना अषाढ़ का रथ यात्रा का रहा) जगदीशपुरी गये। वहाँ रथ यात्रा देखा, सब जगह दर्शन किया, 4 दिन ठहरे। भगवान के दर्शन 3 बजे रात्रि में हुए। भगवान ने कहा, ''तुम को चारौं भाइन के दर्शन अवधधाम में हो गये, तुम हमारी मूर्ति अपनी जगह पर पधारना, तुम्हारी गादी चल जायगी, तुम्हारा नाम हो जायगा।'' पलटू ने दंडवति किया। भगवान ने अपना दाहिना चरन पलटू के सिर पर रख दिया। फिर अन्तर हो गये। पलटू वहाँ से रामेश्वरम्, द्वारिका, बद्री नारायण, बृन्दावन घूम कर अवध आए। जहाँ जहाँ गए सब ने दर्शन दिया। फिर पलटू ने भंडारा ठाना।

अड़ोस पड़ोस के गरीब जान गये। लड्डू कचौड़ी का भंडारा था। साधूओं का निमंत्रण किया। साधूओं ने कहा ''यह बनियाँ घाटि तौल तौल कर रुपया इकट्ठा किया, इसका अन्न हम नहीं खाँएंगे।'' बाबा राम प्रसाद जी ने सबको समझाया ''पलटू बहुत शुद्ध जीव है, उसे चारौं भाइन के दर्शन हो गये, चारौं धाम घूमा है। भोजन सब को करना चाहिये।'' परन्तु साधू न माने। बाबा ने कहा ''तुम हमारे यहाँ के साधुन के लिये, भगवान के लिये भेज दो।'' बाबा ने साधू भेजा, सामान आया, भोग लगा, सब ने पाया। बाकी पलटू ने गरीबों को बाँट दिया।

दूसरे दिन पलटू बाबा की दंडवति कर के गोविन्द साहेब के यहाँ गये। वहाँ मंत्र लिया। कुछ समय रह कर साधन किया। काम सब हो गया। उनका नाम दूर दूर तक ज़ाहिर हो गया। तब अवध आये, अपनी जगह पर ठहरे। भक्त धीरे धीरे आश्रम बनवाने लगे। भगवान जगदीश पधर गये। अच्छे सिद्ध संत आने लगे, सेवा होने लगी।

पलटू साहेब की कुण्डलियाँ हम ने देखा व पढ़ा था। बहुत विचित्र थीं। अब नहीं मिलती हैं। पलटू साहब जलाये नहीं गये। हमें जब लिखाया गया था तब बात हुई थी। हम से कहा कि यह सब बात गलत है। हम जलाये नहीं गये। यह बात पलटू साहेब के आश्रम वाले बनाकर लिख दिया है कि ''जलाये गये।'' वे यहाँ आये थे, बताया ''हम नहीं जलाये गये।'' बड़ी भीड़ रही, सरजू किनारे रेती में ठहरे थे। उनके चार भक्त यहाँ आये। चार घंटा रुके। बहुत बातैं हमने सुनाया। उनके होश

उड़ गये। वै मूर्तिन को नहीं मानते। इससे हम नहीं गये। ईश्वर सर्वत्र है तो क्या मूर्ती के बाहेर है। कितने मूर्ती पूज कर अजर अमर हो गये। यह पुरानी प्रथा है। इन के खंडन किहे से खंडन नहीं हो सकता।

मूर्ती पूजक, चित्र पूजक आज भी सच्चे हैं जिनसे चित्र और मूर्ती बातैं करते हैं। निकसि निकसि (निकल निकल) कर नाना प्रकार की बातैं करती हैं। हर युग में रहते हैं बीज किसी का नाश नहीं है। जीव की गती भाव से होती है।

8. श्री तपसी राम दास जी पंजाबी
तपसी जी की छावनी, अयोध्या

श्री महाराज जी (गुरुजी परमहंस बाबा बेनी माधव दास जी) ने बताया कि तपसी राम दास पंजाब से आए। जहाँ तपसी जी की छावनी है वहीं सरजू जी बहती थीं। उसी जगह बैठ गये। 4 दिन बैठे रहे तब हनुमान गढ़ी के एक साधू को हनुमान जी ने स्वप्न दिया कि एक राम भक्त सच्चा चार दिन से सरजू किनारे बैठा है, कुछ नहीं खाया। तुम उसे भोजन दे आया करो। साधू भोजन ले गए तो बाबा ने पूछा ''कहाँ से लाए हो?'' तो उसने सब हाल बताया। तब साधू जी ने दंडवति करके कहा ''आप धन्य हैं जो हनुमान जी ने आप के हाथ हमारे ऐसे नीच को परसाद भेजा है। अब हमारी गती हो जायगी।'' परसाद पाया। फिर रात में हनुमान जी प्रगट हुए, कहा, ''तुम रोज़ जन्मभूमि हो कर हमारे यहाँ आ कर सरजू किनारे वहीं रहो।'' फिर कई साधू मिल कर झोंपड़ी बना दिये। अब रोज़ हनुमान गढ़ी से परसाद आने लगा और राम दास जन्मभूमि दर्शन कर के हनुमान जी दर्शन कर के झोंपड़ी में भजन करने लगे। फिर धीरे-धीरे साधू आने लगे, छप्पड़ पड़ने लगे। अब जो सामान आज आया सो आज ही सब खर्च कर दिया जाता था। दूसरे दिन को नहीं रखते थे। जीवन भर यही नेम रहा।

एक बड़े सालिकराम जी थे उन की पूजा करते थे। उनके आगे छप्पड़ की छावनी थी। साधुन का चरनोदक उतारा जाता था। सीसे के जार गुलाबजल धरने के लिये पहले आते थे, उन्हीं में धरा जाता था। सीता राम दास जी महन्त के आगे तक था। बिगड़ता नहीं था। अब नहीं

जानते, वहीं पूछने से पता चलेगा। बाबा चटाई बिछाते, चटाई ओढ़ते, लंगोटी लगाते, धूनी रखते, बभूती लगाते थे। एक साधू आया तो बाबा के जटा जो इधर उधर लटकते थे आगे के जटा पकड़ कर झिटका मारा तो जटा के बाल जितने साधू के हाथ में थे, उखड़ गए। बाबा का मूंह खून से तर हो गया। बाबा ने हाथ जोड़ कर कहा "साधू जी, क्या खाओगे।" साधू चुप हो कर भाग गया। कोई साधू उससे बोला नहीं। बाबा ने कहा "यह पुराना बदला है। भगवान ने पूरा करा दिया।" जब बृद्ध हो गए, जन्म भूमि आने में थक जाते, तो भगवान ने कहा "अब तुम न आया करो, वहीं दर्शन होंगे।" तो बाबा ने कहा, "जब तक सधैगा हम आवेंगे।" एक दिन सालिकराम नहवाते थे तो दो पल्ला हो गये, भगवान उसी में निकल आए। तब भगवान बोले "अब वहाँ न जाना, हम आ गए।" शायद 100 के ऊपर शरीर छोड़ा है।

उनके बादि बाबा लाल दास जी हुए हैं। हमें महाराज जी ले गये थे दर्शन कराने। तब 125 वर्ष के थे। गोरे गोरे, पतले पतले, ठमके ठमके। चुप, मन बटोरे, आँखें बन्द किये बैठे रहते थे, किसी से बोलते न थे। एक पाव गाय का दूध 24 घंटे में लेते थे। उनका नेम यह था कि जो बाहेरी साधू आवें उनको पहिले कपड़ा, कम्मल दिया जाय, फिर आश्रम वालों को दिया जाय और निमंत्रण आवै तो बाहेर के साधू भेजे जाँय। अगर कोई साधू झगड़ा करै तो दूसरा साधू उसके करीब आसन न लगावै। वह क्रोधी है मारेगा। उसे भगवान दंड देंगे। साधू का स्वभाव उसमें नहीं है। उसकी दोनों तरफ बदनामी है और गती नहीं होती है। उनके समय से मंदिर और साधुन के रहने की जगह की तरक्की होने लगी। बड़े शान्त मूर्ति थे। बहुत विस्तार है, थोड़ा लिखा है।

9. श्री बिदेही जी
सरगद्वार, अयोध्या

श्री महाराज जी हाल बताते थे कि एक बिदेही जी हुए हैं। उनका मंदिर सरजू जी के किनारे सरगद्वार पर है। यह भी गरीबों की सेवा करते थे। फिर उनकी दशा विचित्र हो गई। ऐसा भगवान में तन्मय हो गए कि खाने पीने की सुधि भूल गए। जब होश में आते तो साधू कहते कि आप

कुछ खाये नहीं। तो कहते लाओ। फिर कुछ खाते। जब आगे धरा जाता तो कुछ खा कर लोट जाते और तन्मय हो जाते। पड़े रहते। हाथ धूनी में गिर जाता तो उनको पता न चलता। जब कोई कहै अश्नान करौ तब नहाते। जब कोई डोल डाल की याद दिलाता तो डोलडाल जाते। काफ़ी अवस्था में शरीर छोड़ा।

10. श्री विंद्या दास
शिष्य बाबा रघुनाथ दास, बड़ी छावनी

महाराज जी (गुरुजी परमहंस बाबा बेनी माधव दास जी) बताते थे कि बड़ी छावनी में महाराज से मंत्र लेकर 20 की उम्र में पैदल चारौं धाम की यात्रा को गए। फिर नैपाल, पशुपतिनाथ, मुक्ति नाथ, कामरू कमिक्षा, ज्वाला जी, अमरकंटक, बहुत जगह घूमे सात साल। फिर मंझले महाराज के समय में आये। उनकी मंझले महाराज ने बड़ी खातिर की। सब सन्त मंडली उनकी रहनि, सहनि, गहनि, नेम, टेम, जप, पाठ, ध्यान देख कर प्रसन्न हो गए। एक माह रहे। फिर हनुमानजी ने कहा "तुम मनी पर्वत पर चलौ, बैठौ। वहाँ तुम्हारी 12 वर्ष तक परिक्षा होगी, हटना नहीं, हम तुम्हारी रक्षा करैंगे।" मंझले महाराज से कहा "हनुमान जी की आज्ञा हुई है कि मनी पर्वत पर बैठो।" मंझले महाराज ने एक झोंपड़ी बनवा दी। थोड़ा फलाहार करते थे—आलू, अरुई, गंजी, कोंहड़ा, इनमें से एक वस्तु कोई हो एक टेम। दूसरे समय कुछ नहीं। सरजू अश्नान कर के प्राचीन जहाँ जहाँ मंदिर हैं सब के दर्शन कर के आकर बैठ गए, बड़े महाराज (अपने गुरुजी) का नाम ले कर। फलाहार मंझले महाराज भेजते थे। फिर विद्या कुंड रोज अश्नान करते। वहाँ से जल लाते। अपना नेम करते। तब मुसलमानों ने जाना कि यह साधू यहाँ दखल कर लेगा। दक्खिन पास में हमारे शीश पैगम्बर और सिद्धों की मज़ार हैं। तो रात में आते, माँस हांड़ झोंपड़ी पर फेंकते।

मुसलमानों का फेंका हाड़ माँस झोंपड़ी पर नहीं आता था। चारौं तरफ से फेंकते थे। सुबह उठ कर बाबा सब बाहेर छोड़ आते, वहाँ सफाई कर देते। 12 वर्ष तक यह परीक्षा हुई। जिस दिन से फेंकना शुरु किया था उसके भोर 10 बजे शीश पैगम्बर गए, कहा, "तुम हटना नहीं,

हम भी हनुमान जी के भक्त हैं। यह भगवान की तरफ़ से परीक्षा होती है। तुम से हनुमान जी कह चुके हैं। दुष्ट अपनी दुष्टता नहीं छोड़ते। अन्त में उनको नर्क होता है।'' फिर एक दोहा कहा–

दोहाः– दुष्ट न छोड़ै दुष्टता कैसेहू सुख देत।
धोवे हूँ सौ बेर (बार) के, काजल होत न स्वेत ।।

फिर उनकी बात दूर दूर तक पहुँच गई। बड़े लोग आने लगे भक्त होने के लिये। तो कहा ''हम अभी मंत्र देने लायक नहीं हैं'' तो आकासबानी हुई कि जो कोई मंत्र लेने आवे उसे बता दो। तुम को भगवान के आज रात में दो बजे दर्शन होंगे।'' चित्त प्रसन्न हो गया। 2 बजे भगवान प्रकट हो गये। साथ हनुमान जी थे। बाबा ने भगवान की दंडवति किया। भगवान ने उठा कर छाती से लगाया। पट खुल गए।

बाबा ने हनुमान जी की दंडवति करने का विचार किया तो हनुमान जी ने रोक दिया कहा ''स्वामी के आगे सेवक की दंडवति न करना चाहिए। यह मर्यादा के विरुद्ध है। गुरु के आगे गुरु भाई आपस में हाथ जोड़ कर दंडवति कर लें सिर्फ गुरु की साष्टांग दंडवति कर लो।'' फिर जो आता उसे मंत्र बता देते थे और मिठाई, फल, कपड़ा, रुपया, कहते थे "हमें नहीं ज़रूरत है। यह तुम जहाँ चाहो वहाँ दे दो। हमैं गुरुद्वारे से एक बार फलाहार आता है और दो टुकड़ा कपड़े के, 4 लंगोटी साल में हमैं जरूरत पड़ती हैं सो हमारे गुरु भाई भेज देते हैं।'' तब भक्त लोग जो लाते थे वह बड़ी छावनी में दे आते थे। फिर भक्त लोग कुआँ नीचे बनाये। ऊपर बनने लगा तो मुसलमानों ने मुकदमा चलाया। फिर बाबा की जीत विलायत से हो गई। तब आकासबानी हुई कि केवल एक मूर्ति हमारी पधारौ। उसका नाम मनी भगवान धरा जाय। बाबा ने भक्तों से कहा, "ऐसी आकासबानी हुई है।" भगवान पधारे गए। सब ने कहा ''बाबा! कुछ उत्सब हो जाय'' तो कहा ''छावनी में जाकर जो तुम्हारी श्रद्धा हो वह कर देना।'' फिर छावनी में जाकर भक्तों ने कर दिया। यहाँ पर जो पंडित प्रतिष्ठा कराये थे उनको रुपया, कपड़ा, लोटा, गिलास, पंच पात्र, आसनी, माला, जप माली सब सामान दिया गया। दही बर्फी का भोजन करा कर बिदा किये गए।

अवध के साधू और घरबारी लोग और दूर दूर के दर्शन को आने लगे। जो कुछ चढ़ता था वह एक पुजारी साधू छावनी का था, छावनी

भेज दिया जाता था। सिर्फ भगवान के भोग भर का यहाँ सामान एक दिन का रहता था। रोज़ाना तमाम सामान चढ़ता था। तब बहुत मद्दा था। बाबा झोपड़ी में रहते थे। जब तक मंझले महाराज रहे तब तक बाबा को फलाहार छावनी से आता था और झोपड़ी छावनी से ही छवाई जाती थी। भक्तों ने कहा, ''आपको एक छोटी कोठरी बन जाय तो ठीक रहे।'' बाबा ने कहा ''हमारे गुरुजी फूस की ही झोंपड़ी में रहते थे और पैसा न छूते थे। पैसा जो आता था भगवान को दिखा कर बनिया के यहाँ दे दिया जाता था। वही सामान देता था। यहाँ भी जो आता है वह हम छावनी भिजवा देते हैं। हमें न पैसे की जरूरत है, न कपड़े की ज़रूरत है। हमारा अहार हमारे गुरु भाई, मंझले महाराज छावनी से भेजते हैं।'' मंझले महाराज ने, जैसे बड़े महाराज ने चलाया वैसी ही उनकी गादी की सेवा की व साधू सेवा की। जब गुरु पर विश्वास होता है तब सब काम ठीक चलता है। जब मंझले महाराज रामधाम गए तब फलाहार यहीं पुजारी बना देते थे। बाबा ने 100 के ऊपर शरीर छोड़ा था। उस समय एक भक्त आये तो चांदी के 2600 रुपये आगे धरे। बाबा ने पूछा ''क्या है?'' तो कहा ''यह रुपया आप छू दें, गरीबों को बाटेंगे'' तो बाबा ने कहा ''हम ने कभी पैसा नहीं छुआ। अब अंत में कैसे छुएँ, हमारी गती राम नाम के प्रताप से होगी। यह काम तुम्हारा सब का है। साधू का काम नहीं है।'' उठवा दिया, कहा, ''जैसी तुम्हारी इच्छा हो घर जा कर वैसा करना, चाहे गरीबों को बाँटना, चाहे लड़कियों की शादी में देना, लड़कों के जनेऊ में देना।''

जब समय चलने का आया तो कहा ''शंकर जी, हनुमान जी आ गए, विमान आ गया।'' उन्होंने दंडवति की और कहा ''शंकर जी, हनुमान जी की जय।'' बस शरीर छूट गया। शंकर जी, हनुमान जी ने एक एक हाथ पकड़ कर सिंहासन पर बैठा दिया। विमान चालक विमान ले कर राम धाम चले गये।

छावनी पता दिया गया तो सब साधू लोग आए और उन्हें सरजू लाभ कराया गया। पहिले ही कह गए थे कि हमारा भंडारा न कराया जाय।

11. श्री ईसा जी
ईसाइयों के पैगम्बर

ईसा लम्बे पतरे पतरे बहुत गोरे थे। दाढ़ी केश थे। ईसा को जब फांसी दी गई तब प्राण सर पर चढ़ गये। ईसा हठ योग सिखे थे। कोई जानि न पाया। गाड़ि दिये गये। तीन दिन बादि तीन हठ जोगी उधर निकले तो दिव्य दृष्टि से देखा, आपस में सलाह किया, यह जिन्दा हैं इन्हें निकालना चाहिए। तब तीनौं मिल कर माँटी हटाना शुरू किया। तब ईसा को निकाला फिर मिट्‌टी झारा, नहलाया। कुछ लोग जान गये, आये, जलपान कराया। फिर ईसा काशमीर को चले आये। कुछ समय रह कर शरीर छोड़ा। सफेद तहमद बाँधे थे। नीचे लंगोट था। हमारी अवस्था जब लगभग 39 की रही होगी। तब यह हमारे पास ध्यान में गोकुल भवन में आये। यह पद सुनाया, जो हमें यदि हो गया था–भोर में लिख लिया था। हमने कह दिया था कि हम हिन्दी की दो किताब (कक्षा) पढ़े हैं। तो हिन्दी में बोले–

शेरः– ईसा है नाम मेरा फरज़न्द हूँ खुदा का ।।1।।
आया हूँ तुम से मिलने जाना तुम्हें जहाँ का ।।2।।
गुरु ने जिसे बताया यह शब्द का पड़ाका ।।3।।
सूरति लगा के दागा पहुँचा वहीं तड़ाका ।।4।।

12. श्री मुहम्मद साहेब
मुसलमानों के पैगम्बर

मुहम्मद साहेब दोहरी देह के गोरे गोरे थे सर बड़ा था। तहमद सफेद बाँधे थे, नीचे लंगोट था। साधू भेष में। हमारी अवस्था लगभग 40 की होगी तब यह हमारे ध्यान में गोकुल भवन में आये। बहुत बड़ा पद सुनाया था। वह सब हम लिख लिया था। ग्रंथ (श्री राम कृष्ण लीला भक्तामृत चरितावली - दिव्य-ग्रंथ 1) में लिखा है। थोड़ा यहाँ लिख देते हैं।

शेरः– ईमान जिसका हो मुसल्लम रहम जीवों पर सदा।
अल्ला का प्यारा जानिये तन मन से सच्चा वह गदा ।।

शेरः– तसबी जबै मन की फिरै सब काम तब तेरा सरै।
रोज़ा नेवाज़ तभी छुटै जब सामने सूरत डटै ।।
भांड़ा भरम का फूटिगा पढ़ना कुरान का छूटिगा।
कहते मुहम्मद हैं सही मुरशिद बिना मिलते नहीं।।4।।

13. बड़ी बुआ जी
बड़ी देवकाली जी के मंदिर के पास, अयोध्या

बड़ी बुआ की मजार पर 21-8-73 को दिन 10 बजे डाक्टर रमेश ने चादर चढ़ाई। बड़ी बुआ ने जो हमसे कहा है लिखाते हैं। जब हम गये, सफाई कराई, चद्दर ओढ़ाई गई, हार पहनाया गया, अगरबत्ती लगाई गई, पेड़े का भोग लगाया, फिर आँख बन्द कर के कुछ देर बैठे तो आवाज़ बाँयें कान में आई "भय्या, तुम बहुत दिन पर आए" हमने कहा "हाँ, बुआ जी, शरीर कमज़ोर हो गया है। चल कम पाते हैं, परन्तु हमारी सूरति 24 घंटे में कई बार आपके पास जाती है। अरसा हुआ आपने, हम ध्यान में पड़े थे, 4 बजा होगा, जाड़े का महीना था, आकर अपनी जांघ पर हमारा सर रख लिया था। हमने देखा सफेद धोती, सफेद सलूका बाँह कट्‌टा बदन में था, बाल सफेद सर के थे, सारा शरीर गुलाब के फूल के समान था और आपके संग इतना हजूम (भीड़) था कि हाता भरा था। आप एक घंटे अपने जाँघ पर हमारा सर धरे रहीं। हम चुप पड़े रहे। फिर आप और हजूम (भीड़) सब अन्तर हो गया।" हम से कहा, "ठीक है। जब तुम अपने गुरु के पास रामघाट पर आये और एक कोठरी में रहने लगे, जब दो माह बीत गये तो 3 बजे रात में महाराज जी के साथ ध्यान में बैठे थे तो तुम्हारे दो दिन जो विचार उठी थी सो बताती हूँ। पहले दिन मुसलमानों पर और दूसरे दिन बंगालियों पर। पहले दिन की बात यह है: तुम ने मन में कहा 'मुसलमान हिन्दुओं को मारते हैं, गौवें काटते हैं, तो भगवान उनके यहाँ कैसे खाते होंगे।' फिर तुमको ध्यान हो गया। एक बूढ़े मुसलमान, उनकी बुढ़िया बड़े सच्चे भक्त थे। तुम उनके घर पहुंच गये, वहाँ भगवान राम एक कुरसी पर बैठे थे। एक कुरसी खाली थी। तुम उस पर बैठ गये। एक मेज़ पड़ी थी बीच में। वह बूढ़ा मुसलमान अंदर से कढ़ी पकौड़ी एक प्याले में

लाया। एक तश्तरी में बड़ी रोटी लाया। मेज़ पर धरा। भगवान ने कहा 'खाव' हम खाने लगे। उस कढ़ी-पकौड़िन-रोटिन में बड़ा स्वाद था। मिट्टी की तश्तरी मिट्टी का गेड़वा था और मिट्टी का प्याला था। जल पिया। बूढ़ा मुसलमान तारकशी का टोपा ऊँचा, उसमें तंजेब का साफा लगाये, साफ सफेद अचकन, साफ सफेद घुटन्ना पहिने था। ध्यान टूटा। महाराज के पास आ गये।"

"दूसरे दिन ध्यान में बैठे 3 बजे, पर यह शंका उठी थी तो ध्यान हो गया। एक बंगाली के यहाँ पहुंच गये। वहाँ कृष्ण भगवान बैठे थे। हम भी बैठ गये। बंगाली एक पत्तल लाया, फिर भात लाया। उसमें खूब महक थी और कटोरे में मछली, चार-चार अंगुल की थीं, धरा। भगवान ने कहा 'खाइये'। हम खाने लगे। उन मछलियों में काँटे न थे। बड़ा स्वाद मछली भात में था। खा कर जल पिया गिलास में। फिर बंगाली ने लोटे में जल ला कर हाथ धुलाया। ध्यान टूट गया। महाराज जी के पास बैठे देखा। शंका यह थी कि बंगाली मछली भात खाते हैं और कीर्तन करते हैं तो भगवान इनके यहाँ कैसे खाते होंगे।"

"तब तुम ने कान पकड़े और कहा 'भगवान साँचे मन के मीत हैं, जाति कोई हो।'" बड़ी बुआ ने फिर कहा ''तुम्हारे गुरु के सामने राम जानकी रहते थे। वे तुम्हारे मन का हाल जान गये। उनकी शक्ती से तुम्हारे मन की यह शंकायें राम भगवान और कृष्ण भगवान ने दूर कर दीं। वे पढ़े नहीं थे, गुरु नानक का अंश थे। स्वत: सिद्ध थे। ऐसा महापुरुष कोटिन में कहीं होता है। भजन के अलावा कुछ संसार का हाल नहीं जाना। जो शब्द मूंह से निकालते थे वह हजार बार कहेंगे, न एक शब्द घटेगा न बढ़ेगा। झूठ वह नहीं जानते थे। सत्यवादी थे। शीत-ऊषन नहीं सताता था। सिर्फ लंगोटी सहती थी। वीर्य ऊर्ध्व था। जाड़े में पसीना निकलता था। साँप-बीछी का ज़हर नहीं मालूम होता था। उनके पास भी मुसलमान भक्त आते थे। उनकी बानी सुनकर बहुत खुश होते थे। कई कई दिन रहते थे। खूब खातिर करते थे।"

"जब वे भोग लगाने बैठते थे और जब भोग लग जाता था तब बताते थे कि आज सनातन भगवान बड़ी छावनी के भोग पाये हैं। रोज़ का हाल बतलाते थे कि आज कनक भवन के सरकार, आज रतन सिंहासन के, आज जन्म स्थान के, आज जन्मभूमि के, आज बड़ी जगह के, आज

तपस्वी जी की छावनी के, आज मनी राम जी की छावनी के, आज लक्ष्मन किला के, आज हनुमत निवास के, आज हनुमान गढ़ी के, आज जानकी घाट के, आज नरसिंह जी के, आज पं. राम बल्लभाशरण के जानकी घाट वाले, आज गोला पर के जानकी बल्लभाशरन के, आज बड़ी कुटिया के, आज त्रेता के ठाकुर जिनके एकादशी को सब को दर्शन मिलते हैं, आज काले राम जी के, आज माधुरी कुंज के आये, आज बलिराम आचारी के यहाँ से आये, आज जगदीशपुरी के आये, आज द्वारिकाधीश जी आये, आज बद्रीनाथ जी आये, आज श्री रंग जी आये, आज बिहारी जी बृन्दाबन के आये, आज बावन भगवान आये, आज राम घाट के राघौ जी आये, आज ददुआ के राधा माधौ आये, आज राधा बृजराज आये, आज भगवान दास जी आचारी तुलसी चौरा के आये, आज राम किंकरदास की छावनी के आये, आज वशिष्ठ कुंड के आये, आज मनी पर्वत के आये। और भी बहुत बताते थे। सब याद नहीं हैं। बताते थे कि ऐसी ऐसी पोशाक पहिने थे। जब महाराज मनी राम की छावनी कथा में जाते थे तब हम देखने जाते थे। वही पोशाक पहिने देखते थे। यह शायद दो माह या कुछ अधिक देखा होगा तो आवाज़ आई कि क्या गुरु की परिक्षा करता है। तब जाना बन्द कर दिया।" हमने बुआ जी से कहा, ''हमें देखने में बड़ी खुशी होती थी, हम परिक्षा नहीं करते थे।'' तब बुआ जी ने हमारे गले में दोनों हाथ छोड़ कर मत्था चूमा और दोनों गाल चूमे, दोनों हाथों की हथेली चूमी, छाती से लगाया। फिर सर पर हाथ हमने दोनों पैरों पर सर धर दिया। उन्होंने पीठ पर हाथ फेरा और तब अन्तर हो गई।

बड़ी बुआ जब से पैदा हुई गाय का कच्चा दूध पिया। माँ का दूध नहीं पिया। सयाने पर सुबह 8 बजे एक पाव फिर (शाम) 4 बजे एक पाव पीती थीं। बस और कभी कुछ नहीं खाया। आजन्म ब्रह्मचारनी रहीं। मियाँ चिश्ती ने स्वामी सुखानन्द जी का चित्रकूट का पता बताया। उसी समय बुगदाद के जमील शाह स्वामी जी के पास आये थे। उसी समय बुआ जी गईं थीं। पहिले इनको बताया राम मंत्र, जानकी मंत्र, जप की बिधि, कंठ से जाप करना, फिर ध्यान बताया। 15 दिन रहीं। सब काम हो गया। उन्होंने 125 की उम्र में शरीर छोड़ा।

जमील शाह ज़बान से जपते थे। स्वामी जी ने कंठ का तरीका बताया। उसी दिन पट खुल गये, तो कहा, ''हम पढ़ते पढ़ते कलमे को

बूढ़े हो गये, हमें कोई न मिला जो कायदे से बताता। दूर दूर घूमे। इस कलमे में इतनी ताकत!'' स्वामी जी ने कहा ''तुम्हारे मन में यह घुस गया कि भारत में इसका बताने वाला कोई नहीं है। इसी से भगवान ने तुमको यहाँ भेजा, तुम्हारा समय आ गया। भगवान ने पूरा कर दिया।'' स्वामी जी ने कहा ''अब तुम हमारे गुरु (आदि गुरु स्वामी रामानन्द जी) के पास काशी जाव, वहाँ हमारे गुरु भाई 11 हैं। कुछ दिन रह कर आना।'' जमील शाह पैर छू कर पैदल चल पड़े। जब वहाँ पहुंचे तो स्वामी अनन्तानन्द जी को सुखानन्द जी का पत्र दिया। पढ़ा गया। सब गुरु भाई सुने, स्वामी जी (रामानन्द जी) भी सुने। उनकी बड़ी खातिर हुई। दो माह रहे। स्वामी जी के शिष्य उनको जमील दास कहने लगे। जमील दास ने स्वामीजी के सामने हाथ जोड़ कर कहा ''पहले हमें सब जमील शाह कहते थे, अब जमील दास कहते हैं। हमारा नाम आप और कुछ बदल दें।'' स्वामी जी ने कहा, ''यह हमको प्राण नाथ कहते हैं, तुम सब भक्त इनका यही नाम कहो।'' फिर स्वामी जी की आज्ञा हुई ''अब तुम अपने गुरु के पास जाव। अकेले अलग रहना।'' स्वामी जी की दंडवति और सब गुरु भाइन की, कर के चल दिये। सुखानन्द जी के पास आये। सब हाल बताया। स्वामी जी ने एकान्त जगह बता दी। कन्द मूल पहचनवा दिये। वहाँ रहने लगे। 126 की उम्र में शरीर छोड़ा।

बुआ जी ने बताया कि यहाँ अयोध्या जी में इतने मुसलमान फ़कीर अच्छे हैं:-

1. मर्द शहीद–राम भक्त, सरजू के किनारे टीले पर। यहीं पर दो और भक्तों की समाधि है–(i) श्री गुलाम अली तबलची और (ii) श्री हरिहरानन्द सन्यासी जो सितारिया थे।
2. कलन्दर शाह–राम भक्त, जानकी बाग में।
3. शीश पैगम्बर–हनुमान भक्त, मणि पर्वत पर।
4. राजे गाजे– राम भक्त, जानकी बाग से मर्द शहीद की तरफ जाने पर पड़ती है।
5. ज़िकिर शाह–राम भक्त, साकेत महाविद्यालय के अन्दर
6. खजट्टी पीर–राम भक्त, कुबेर टीला पर
7. नौ गजा पीर–राम भक्त, अयोध्या पुलीस थाने के पीछे

8. श्री इब्राहीम शाह–कृष्ण भक्त, अरगड़ा मोहल्ले में।
9. अब्दुल अली–राम भक्त, बशिष्ठ कुंड पर मोहल्ले में

कुछ भक्तौं (नम्बर 1, 2, 3, 5, 6, 7, 8) का चरित्र संक्षेप में आगे लिखा है। बड़ा विस्तार है।

14. मर्द शहीद, राम भक्त सरजू के किनारे टीले पर

इनके गुरु की मज़ार रुदौली में है। अरसा हुआ जब महाराज जी थे एक मुसलमान आया। महीना गर्मी का था। यहाँ से दक्खिन 10 या 12 कोस गाँव है, नाम हम भूल गए। उसकी उम्र 25 साल की थी। यहाँ तीन दिन रहा। हाल बताया। लूक चलती थी। महाराज को हम सुरंग में रखते थे। वह महाराज के ताड़ का पंखा बैठा हाँका करता था। भोजन करा देते थे। अश्नान सरजू में रोज़ करता। उसके जगह ज़िमीदारी थी। उसने कहा ''हमारे भाई, बाप माँस-मछली-लहसुन-प्याज खाते हैं हम सादा भोजन करते हैं। शादी नहीं की है। गाँव के लोग खाने को देते हैं। हम अपने हाथ बना लेते हैं। हमें कुछ हिस्सा खाने भर को मिल जाय तो हमारा बसर हो जाय।" हम ने उसे मर्द शहीद के पास शाम को भेज दिया। रात 2 बजे आवाज आई ''तुम फिक्कू हलवाई फैज़ाबाद के यहाँ से सवा सेर बर्फी लावो, एक खुशबूदार हार लावो, एक हलकी सफेद चादर, दो इतर (इत्र) की फुरहरी दो किस्म के सफेद लोबान, तब तुम को मिलेंगे, और पहले उनको मिलेंगे जिन्होंने तुमको बताया है।"

वह मुसलमान लड़का हमारे पास आया हाल बताया। महाराज के चरनों पर कुछ रुपये चढ़े थे। हमने दिये, भोजन कराया। फिर फैज़ाबाद भेजा। सामान लाया। शाम को सब सजावट किया। हम कुआँ पर 11 बजे जा कर पानी से धुला दिया और कम्मल धो कर सुखा कर बिछा दिया। गुलाब के फूल रख दिये, अगरबत्ती लगा दिया। इतर की दो फुरहरी रख दिया। वहाँ बैठ गये। ठीक 12 बजे फकीर प्रगट हो गए। तारकशी का टोपा ऊँचा था, तंजेब लपटी थी। ऊपर थोड़ा देख पड़ता था। सफेद पायजामा था, सफेद अचकन थी। साथ में थे एक सन्यासी हरिहरानन्द जो सितार बजाते थे। बड़े गोरे, महीन तंजेब का अचला गेरुहा

रंग का था। सारा शरीर देख पड़ता था। एक मियाँ काले, काले उम्र उनकी भी 40 की होगी, सर में बाल, दाढ़ी थी, तबलची थे। उनका नाम गुलाम अली था। सब से हम दंडवति किया, फिर बैठक हो गई। तबला सितार बजने लगा। सन्यासी ने एक ध्रुपद शुरु किया। बहुत ज़ोर से उठाया। इतनी जोर से अलाप भरा कि वह ध्रुपद आसमान में चक्कर लगाने लगी। पहिली कड़ी याद है सो लिखता हूँ–

"सीतापति रामचन्द्र मेरो दुख हरहु नाथ
पार ब्रह्म परमात्मा स्वामी नारायण हे ।।

हम तो सुन कर लय दशा में हो गये। सुधि बुधि भूल गये यानी ज्ञान, ध्यान भान सब का पता ही न रहा। फ़कीर की दया से शरीर में होश आया। तब फ़कीर ने कहा "आँखें बन्द करौ, राम जी के चले जाने के बाद जो मंदिर मूर्तियाँ वहाँ पधारीं गईं उनके दर्शन करावैं।" हम आँखैं बन्द किया तो फकीर आगे आगे चले ऊपर ऊपर। हम कमलासन से पीछे पीछे सर सर सर सर चले। बहुत मंदिरों के दर्शन कराया। बहुत बड़ी बड़ी मूर्तियाँ छटा छबि सिंगार की शोभा वरनन में नहीं आ सकतीं। फिर फ़कीर ने कहा "आँखैं खोल दो।" खोला तो कुंवाँ पर कमलासन से बैठे थे। फिर सब अन्तर हो गए।

वहाँ जा कर लड़के को लेकर रुदौली गुरु की समाधि पर उसी रीति से (वे) ले गये। कहा "आँखैं बन्द करौ।" फिर कहा "आँखैं खोलो"। मज़ार के करीब बैठा था। आप भी बैठे थे। पाँच तवाफ़ मज़ार की दोनों ने लगाया। आवाज़ आई "जा तेरा मनोरथ पूरा हो गया।" फिर फकीर ने उसे आँखैं बन्द करके घर भेज दिया। वहाँ भाई, बाप खुशी से हिस्सा दे दिया। उसका आदर करने लगे। आप अन्तर हो कर अपनी मज़ार पर आये। हम से यहाँ कहा था, "सात दिन हमारी मज़ार पर बैठे मन लगा कर तो हम उसका सब काम पूरा कर दें। संसारी धन, जश, पुत्र, संकट, ईश्वरीय भजन की बिधि बता दें, खान, पान, रहनि, सहनि तो ईश्वर की मेहरबानी उस पर हो जाय।"

एक छोटा रोटी का टुकड़ा रोज़ खाते थे। 126 पर शरीर छोड़ा। यह भी अरब से आये थे।

15. श्री कलन्दर शाह जी, राम भक्त
जानकी बाग, अयोध्या

कलन्दर शाह जानकी बाग के, राम भक्त थे। उनके 4 पद विनायक जी के पास से मिले थे। जब चारौं महारानी जनकपुर से ब्याह कर आई हैं, तब उनका वरनन वै अलग अलग लिखे थे। वह सब पद विनायक जी के न रहने पर लोग, दो इलमारी थीं, उनमें से अच्छी अच्छी पुस्तकैं व पद निकाल ले गए।

जानकी बाग में एक रघुनाथ साधू था। वह रामायण पढ़ता था तो वै प्रगट हुए। वह डर के मारे हनुमान चालीसा पढ़ने लगा। वह बोले "क्या हम भूत हैं जो हनुमान चालीसा पढ़ता है। रामायण तू गलत पढ़ता था इससे हम आये थे रोकने। बेमन पाठ, पूजा, जप, कीर्तन, कथा सुनाना या सुनना भगवान के यहाँ खाता में नहीं लिखा जाता है। वह गैर हाजिरी में भर जाता है। साधू होकर भेष बदनाम करवाता है। दया-धर्म नहीं, दीनता-शान्ति नहीं, मन काबू नहीं, तो देखाऊ भजन से कैसे पार होगे। यह तो भूसा का पछोरना हुआ। सूप से भूसा पछोरता है तो वह उड़ जाता है।"

"जो पुराना संस्कारी है उसे तो भगवान जल्दी मिलते हैं। सादा भोजन सतोगुणी करना चाहिए। तमौगुणी रजोगुणी भोजन से भजन नहीं हो सकता। तमौगुणी क्रोध बढ़ाता है, रजौगुणी काम बासना पैदा करता है। यह भोजन नर्क को ले जाते हैं। ईश्वर प्रेमी साधक इनको त्याग दे तभी पार हो सकता है।"

"जब हम अरब से आये तो इसी जगह बैठ गये। हिन्दू लोगों ने फूस की झोपड़ी बना दी। दो लंगोटी, एक लोटा, एक जल पीने का मिट्‌टी का पात्र था। सरजू करीब थी अश्नान करते। एक कौर पकाया चावल हिन्दू लोगों से ले लेते। खाकर पानी थोड़ा पी लेते। चलते फिरते मालिक का नाम लेते रहते। जहाँ जहाँ प्राचीन दर्शन थे वहाँ जाते थे। फिर हमैं अनुभव होने लगा और मंदिर की मूर्ती सामने देख पड़ने लगीं। एक दिन आधी रात को महारानी जी प्रगट होकर हमैं त्रिकुटी का ध्यान बता दिया। हम करने लगे। पट खुल गये। फिर चारौं सरकार चारौं महारानी सामने हो गये। नाम की धुनी का हा हा कार मच गया। शंकर जी हनुमान जी ने कहा, 'तुम तो महान भक्त हो गये। जो भगवान का सच्चा प्रेमी होता

है, चाहै दूर से आवै चाहै करीब से, उस पर ऐसी ही कृपा होती है।' फिर सब देवी देवता मिलने लगे, सिद्ध सन्त हिन्दू मुसलमान।''

उन दिनों लू बहुत चलती थी तो हिन्दू लोग एक गुफ़ा बनवा दिये। उसमें रहने लगे। 135 वर्ष की उम्र में शरीर छोड़ा था। 500 वर्ष हुए। बहुत विस्तार है, थोड़ा लिखा है।

16. शीश पैगम्बर, हनुमान भक्त
मणि पर्वत, अयोध्या

शीश पैगम्बर अरब से आये। यहाँ भजन किया। हनुमान जी के भक्त थे। गणेश कुंड अश्नान करते, रोज़ हनुमान जी के दर्शन करते। एक झोंपड़ी में रहते थे। एक मुट्ठी कच्चे चना खाते थे। डेढ़ सौ वर्ष पर शरीर छोड़ा था। बहुत कड़ी तपस्या की। अधिकतर खड़े खड़े हनुमान जी का मंत्र जपते थे। हनुमान जी उनके सामने हर समय रहते थे, इसी से सब देवी देवता उनसे मिलते थे। जीवों पर बड़ी दया थी। सब को बराबर मानते थे। किसी से द्वैत भाव न था। इन्हें शरीर छोड़े पाँच सौ वर्ष हो गये।

जब मनी पर्वत पर आये तो उसी जगह लोगों ने झोंपड़ी बना दी। हनुमान हनुमान करते थे तो आकाश बानी हुई ''तुम्हारा प्रेम केशरी किशोर से है तो यह मंत्र जपा करो।'' तब से यह मंत्र जपना शुरु कर दिया।

मंत्रः-

''ओँ नमो हनुमान महाबीर बजरंग अंजनी
कुमार पवन पूत राम दूताय नमः''

17. ज़िकिर शाह, राम भक्त
साकेत महाविद्यालय (डिग्री कालेज में), अयोध्या

ईरान के ज़िकिर शाह 28 की उम्र में अयोध्या जी आये। एक मुट्ठी जौ भिगो कर खाते थे। 6 माह बाद विष्णू भगवान प्रगट हो गये, सर पर हाथ फेरा, सब प्राप्त हो गया। तब से वही एक मुट्ठी भिगोय जौ से जीवन बिताया। 105 पर शरीर छोड़ा। पेड़ के नीचे रहते थे। सिर्फ़

दो लंगोटी रखते थे। शरीर दुबला था, बल नहीं घटा था। घर पर सन्तों की पुस्तकें बहुत देखीं थीं उसी से मन भगवान की तरफ हो गया था।

आकाशबाणी हुई कि अयोध्या पाक (पवित्र) स्थान खुर्द मक्का है वहाँ तुम्हारा काम हो जायगा। तब यहाँ चले आये।

बस इतना बता कर अंतर हो गये। यह घटना 500 वर्ष की है।

18. खजट्टी पीर, राम भक्त
कुबेर टीला, अयोध्या

खजट्टी पीर भी अरब से 30 की उम्र में आये। इसी कुबेर टीला पर बैठ गये। आकाशबानी हुई कि तुम इसी पर रहौ। महीना गर्मी का था। सिर्फ़ लंगोटी थी और एक लोहे का चिमटा था। दाढ़ी केश थे, रंग न बहुत काला न गोरा। उसे गेहुवाँ रंग कहते हैं। चार दिन बैठे रहे तब हनुमान जी प्रगट हुए और कहा कि तुम गर्दन झुका कर सुख आसन से बैठो और नाभी पर सुरति लगाओ। इसे परा बानी कहते हैं। यह जप सतयुग का है। पैशंती हृदय में त्रेता की है, मद्धिमा बानी द्वापर की है, बैखरी कलियुग की है। यह चारौं बानी ब्रह्म बानी से प्रगट हुई हैं। फिर सब बानी एक में लय हो जाती हैं सुरति लगाने से।

संत ने हनुमान जी की दंडवति की और उसी रीति से बैठ गये। सात दिन के बाद उनके पट खुल गये। फिर हनुमान जी प्रगट हुए और कहा ''अब तुम्हारा काम हो गया, कुछ जलपान करो'' तो कहा ''कुछ भूख-प्यास नहीं है।'' तो ज़बरदस्ती उठाया और कहा ''कुछ थोड़ा टहल लो शरीर अकड़ गया है। हम अभी जो तुम्हारे लिये भगवान के यहाँ से हुक्म होगा भेजैंगे।'' हनुमान जी भिगोय चना आध पाव एक कुल्हड़ में और एक कुल्हड़ में पानी भेजा भैरव जी के हाथ, कहा, ''रूप बदल कर जाना। यह विकराल रूप है। साधक ने ऐसा रूप नहीं देखा है।'' एक दिन 2 बजे रात को चारों भाई प्रगट हो गये। सन्त ने साष्टांग दंडवति किया। राम जी ने कहा ''तुम तो हमारे बड़े प्रेमी हो गये। मारुत नन्दन ने तुमको उपदेश देकर कृतार्थ कर दिया, अब हम चारौं भाई मय शक्तिन के तुम्हारे सामने हर समय रहेंगे। मारुतनन्दन हमारे परम भक्त हैं।'' इतना कहा कि चारौं भाई चारौं महारानिन की छटा छबि सिंगार संत के सामने हो गई। वे रूप अन्तर हो गये।

दिब्य रूपौं की शोभा अपार है। सब देवी, देवता, सिद्ध सन्त, ऋषी मुनी दर्शन देने लगे। राम नाम की धुनी सारे शरीर से, रोम रोम, जोड़ जोड़, हाँड़ हाँड़ और ज़र्रा ज़र्रा से हाहा कार मच गया। जीवन भर भैरव जी वही चना और जल देते थे।

125 वर्ष पर जानकी नौमी वाले दिन ठीक 12 बजे दिन में शरीर छोड़ा।

सीताराम आचारी एक दिन हम से कहा ''हमें दर्शन हो सकते हैं?'' हमने कहा ''तुम्हारा भाव ठीक होगा तो ज़रूर दर्शन होंगे।'' 11 बजे दिन में जाकर इमली के नीचे बैठ गये। महीना चैत का था। 5 या 7 दिन बीते थे। एक घंटा बैठे रहे। फिर एक इश्लोक अयोध्या के महातम (महिमा) का पढ़ा, वैसे ही प्रगट हो गए कहा, ''हम तो अयोध्या की रज का सेवन करते हैं, भजन नहीं जानते।'' आँखों से आँसू चलते थे। फिर एक कुल्हड़ में चना एक में पानी जो भैरव जी दे गये थे, दिया। सीताराम ने बड़े प्रेम से पाया। आकर हमसे कहा ''महान सन्त हैं, सब प्राप्ति है तब भी इतनी दीनता हैं, कहते हैं 'हम तो अयोध्या जी की रज का सेवन करते हैं, भजन नहीं जानते'।''

महाराज जी (गुरु जी) बताते थे–फ़कीरे राम कुर्मी अवध में बास करने आये। जहाँ मकान बना है (इस समय यह जन्मभूमि के निकट मानस भवन धर्मशाला के सामने है) वहाँ झोंपड़ी डाल कर भजन करने लगे। उनको स्वप्न हुआ ''तुम खझट्टी पीर की समाधि पर चिराग जला दिया करो, बेफई (ब्रहस्पतिवार), शुक्रवार को। तुम्हारे जो मन में है पूरा हो जायगा।'' वै जलाना शुरू कर दिये। कुछ दिन बाद दर्शन हुये, कहा, ''क्या चाहते हो?'' तो कहा ''यहाँ हमारा भी नाम हो जाय'' तो कहा ''जाव फकीरे राम तुम्हारा नाम हो जायगा।''

बस कुछ दिन बाद उनके भक्त लोग मंदिर मकान बनाना शुरू कर दिया। धीरे धीरे सब बन गया। भगवान पधराये, साधू सेवा होने लगी। मंदिर का नाम ''सिया-पिया केलि कुंज फ़कीरे राम जी'' धरा गया।

19. इब्राहीम शाह जी, कृष्ण भक्त
मोहल्ला अड़गड़ा, अयोध्या

यह बादशाह के लड़के थे। अड़गड़ा के पास (श्री अयोध्या जी में) भजन किये हैं। एक झोंपड़ी में रहते थे। यह आज (7-9-73) रात में आये 2 बजे होगा। जितना उन्होंने बताया वह लिखा है।

वह अरब की तरफ से आये थे थोड़ी उम्र में। कृष्ण भगवान के भक्त हैं। वै 64 दिन कुछ आबदाना नहीं किये हैं। मालूम होता था कि दम निकल जायगा। तब भगवान प्रगट हो गए। सर पर हाथ फेरा। आँखें खुल गईं। कान में कहा, ''इधर सुनो हमारे नाम की धुनी हो रही है।'' फिर ऐसी शक्ती हो गई कि उठ कर खड़े हो गये और मस्ती में नाचने लगे। शरीर सूख गया था सो ताज़ा हो गया, चमकने लगा, सामने रूप छा गया, राधा जी बाम भाग में हो गईं। मधुर मुश्कान, सरकार मुरली अधर पर धरे हैं, छिन छिन में कूकने लगे। फिर कहा ''कज़ा होने पर हमारे पास आवोगे।'' फिर गले से लगाया और अन्तर हो गये। अब हम उस महान सुख का वरनन नहीं कर सकते। जो जो लीला देखते हैं और तरह-तरह का गाना सुनते हैं। किसिम किसिम की लीला देखते हैं, हजारों किसिम के अन्दर बाजे बजते हैं। थोड़ा लिखा दिया है।

यह 16 की उम्र में यहाँ आये थे और 101 वर्ष की उम्र में शरीर छोड़ा।

जब हम 16 की उम्र में आये तो आकाशबाणी हुई ''12 बर्ष तुम इस पावन पुरी के कूचा साफ करौ और एक पाव चना दोनों समय भिगोकर बिना नमक के खाव। इसी तरह जीवन भर करना पड़ैगा। पानी भी थोड़ा ज़रूरत भर को पीना।'' हम इस हुक्म को करना शुरु कर दिया। जब 12 बर्ष हो गये तब फिर सुनाई दिया ''अब 64 दिन का फाँका (उपवास, अनाहार) करौ। तब हमारे दर्शनों के भिखारी बन सकौगे।'' फिर हमने उतने फाँका किये। तब पाक होकर गर्भ के कौल से रिहाई हो गई। तमाम सिद्ध सन्त हिन्दू मुसलमानों के, देवी देवताओं के दर्शन होने लगे। बड़ा बिस्तार है। इतने में ज्ञानी भक्त समझ जाएंगे।

20. नौ गजा पीर, राम भक्त
पुलिस थाने के पीछे, अयोध्या

नौ गजा पीर 40 की उम्र में अरब से आये। बड़ी दया रही। गरीबों पर अधिक निगाह रखते थे।

एक दिन मोहम्मद साहेब के दर्शन स्वप्न में हुए तो कहा ''तुमको भजन करना है तो राम धाम को चले जाव वहाँ तुम्हारे ऊपर परमेश्वर की कृपा हो जायगी। तुम्हारा ईमान ठीक है, जीवों पर दया है। ऐसे बशर से ईश्वर बहुत खुश रहते हैं। उसी को सब सच्चा सन्त, भक्त, साधू, गदा, फकीर, दरवेश कहते हैं, पीर मुरशिद, औलिया, रौशन ज़मीर धीरे-धीरे हो जाता है, फ़नाफिल्ला का दरजा उसे मिल जाता है।''

सुबह वहाँ से चल पड़े। अयोध्या आये। यहाँ जंगल था। मामूली साधू थे। जहाँ समाधि है वहीं बैठ गये। संस्कारी जीव थे। समय पर लोगों ने छप्पड़ का एक बंगला छोड़ दिया। उसी में रहने लगे। एक छिटाँक आटा किसी अन्न का हो, ले लेते थे। उसे मिट्टी के प्याले में घोल कर आधा सेर पानी में थोड़ा नमक डाल कर एक बार दोपहर में पी लेते थे। और पाँच समय भगवान की प्रार्थना करते थे। उसमें उनको तन्मयता हो जाती थी।

एक दिन शंकर जी हनुमान जी प्रगट हुए। दंडवति किया तो शंकर जी ने कहा, ''तुम स्वाँसा से राम राम जपौ। स्वाँसा खाली न छोड़ना। इसी से सब प्राप्ति हो जायगी।'' जप शुरु कर दिया। कुछ दिनों के बाद कई तरह के बाजे सुनने लगे, पाँचौं तत्वों के दर्शन होने लगे, फिर नाम की धुनी होने लगी, प्रकाश होकर समाधि होने लगी, यहाँ तक कि तीन तीन दिन तक समाधि में बैठे रहते थे। एक दिन ऐसा हुआ कि दो माह तक समाधि लगी रही, तब हनुमान जी ने प्रगट होकर पीछे गर्दन की नसैं दाब दिया। समाधि टूट गई। खूब चैतन्य हो गए। चरन दोनों गह लिये। तब हनुमान जी ने कहा ''दर्शन का समय आ गया।'' दूसरे दिन 2 बजे रात में महाराज महारानी जी प्रगट हो गए। सर पर हाथ फेर दिया और कहा ''हमीं को चाहते हो तो हम तुम्हारे सामने हर समय रहैंगे। तुम हमारे सच्चे प्रेमी हो।'' फिर जुगुल सरकार सामने

छा गए। शरीर में बड़ा बल आ गया। फिर महाराज महारानी सिर पर हाथ फेर कर अन्तर हो गए। इनके मस्ती आ गई। फिर सब देवी देवताओं के दर्शन होने लगे भगवान का जस सुनाने लगे। सिर्फ़ लँगोटी रखते थे और एक मिट्टी का प्याला, दो करवा-एक से डोलडाल का काम लेते, एक से अश्नान खान-पान का काम लेते थे। रोज सरजू जी अश्नान करते थे। राम जी की छट्टी (जन्म के बाद 6 दिन पर) के दिन 12 बजे दिन में शरीर छोड़ा मुख्य मुख्य जगह दर्शन करके 150 वर्ष पर। बहुत बिस्तार है। हम थोड़ा लिखे हैं।

21. काठियावाड़ के एक अपूर्व भक्त

45 वर्ष पहले की घटना है। काठियावाड़ से एक सन्यासी आए। उम्र 70 साल की थी। वे पीनस पर चलते थे बड़े धनी थे। बड़े सुकुमार और पढ़े थे। उनके तीव्र वैराग्य हो गया। एक चेले को सौंप कर अकेले चल दिये। यहाँ पंडित बल्लभा शरण जी के यहाँ ठहरे। बातचीत हुई। पंडित जी ने रामकिशोर के साथ यहाँ भेजा। आये तो रामकिशोर ने महाराज जी से कहा, ''यह सन्यासी इतने विद्वान हैं कि यहाँ कोई इनकी बराबरी नहीं कर सकता। कहते हैं कि मत्थे के ज्ञान से गती नहीं होती बिना हत्थे में आए। जो हमें रास्ता बतायेगा हम उसी के दास हो जाएंगे।" 16 शालिगराम मंगा के पूजा करने लगे। कनक भवन में भागवत शुरु किया। रोज शाम को वेद की स्तुति भगवान को सुनाते थे। तुलसी का माला बनवाकर धारण किया।

महाराज जी ने कहा, ''अपने भेष में रहो। गती भजन से होगी भेष बदलने से नहीं और बैर बढ़ेगा।'' राम मंत्र उनका था। महाराज जी ने ध्यान बताया। वह जुट गए। दो माह रहे। बड़ी उन्नति की।

उनका चेला 200 रुपया माहवार भेजता था। वह विद्यार्थियों को बाँट देते थे।

पहले उनको स्वामी शंकराचार्य के दर्शन हुए। स्वामी जी ने कहा, ''तुम बड़े भाग्यशाली हो। भगवान ने तुमको ऐसे महापुरुष के पास भेज दिया है कि तुमको सब कुछ प्राप्त हो जायेगा। सब का समय भगवान बाँधे हैं। जीव धीरज नहीं धरता। यह महाराज (श्री बेनी माधव दास जी) नानक जी के अंश हैं।''

फिर वे 11 पर शयन करते, 2 बजे उठते, शौच जाते, नहाते, जप करते, ध्यान करते। सुबह जलपान करके यहाँ आते। तीन जगह रास्ते में बैठते, थक जाते। बड़े गोरे रंग के थे। पैर बड़े मुलायम लाल लाल थे, जूता खराऊँ सब छोड़ दिये थे। भगवान की दंडवति करते, चरणोदक लेते, महाराज की दंडवति साष्टाँग करते, चरनोदक लेते। हमारे पैर पकड़ते, हम उनके हाथ पकड़ लेते थे, पर वे नहीं मानते थे। दीनता की मूर्ति हो गये थे। एक दफ़े थोड़ा भोजन करते थे। शाम को पश्चिम मुख बैठकर ध्यान करते। जैसा महाराज जी बताते थे उसी रीति से सब काम करते थे। सब देवी देवता मिलने लगे, सर पर हाथ फेरने लगे। सब कुछ प्राप्त हो गया। रोज़ महाराज जी से जो देखते सुनते थे बताते थे, वह हम कहाँ तक बता सकते हैं।

फिर महाराज ने कहा ''तुम्हारा काम हो गया, अब तुम (अपने) आश्रम को चले जाव।'' तब वै सुबह पूजन का सामान लाये। पं० राम किशोर संग थे। मिठाई, फूल-माला, कपड़ा सफेद तंजेब का धोया हुआ, चन्दन यहाँ उतार दिया था। कटोरा में चरन धोए, धूप किया, भगवान का हम भोग लगाया, आरती की, फिर अपने महाराज की आरती की, चन्दन, फूल, अक्षत चरनों पर चढ़ाया, वस्त्र ओढ़ाया। परसाद हमने दिया उनको व पंडित जी को। वै थोड़ा सा परसाद महाराज जी को पवाया, जल पिलाया। उसे पाकर वही जल पिया। उस दिन यहीं भोजन किया। महाराज जी की परसादी पाया। पंडित जी रोज़ पाने आते थे। पंडित जी ने कहा, ''ऐसा ईश्वर प्रेमी, दीनता का रूप हमने कभी नहीं देखा।'' फिर चरनोदक एक बोतल में गंगा जल भर कर हमने दिया। शाम को स्टेशन भेजने गए। कुछ सामान तथा मामूली आसन ओढ़ना था। फिर हम सवार कराकर चले आए।

सात वर्ष वहाँ रहकर हँसते-हँसते शरीर छोड़ा। पत्र आया करते थे। किसी से न मिलते थे, न बोलते थे। अपने ध्यान में बैठे या पड़े रहते थे। उनका शिष्य पत्र भेजता था।

शरीर छोड़ने के एक घंटा पहले, बीसों शिष्य थे, सब को बुलाया और कहा-

1. कोई अतिथि आवे भूखा न जाय।
2. कोई कपड़ा पात्र जो कुछ माँगै उसे देना।

3. जीवों पर दया करना।
4. अपना तकलीफ़ सह लेना दूसरे को आराम देना।

अब हम जा रहे हैं। आश्रम में कोई चीज की कमी नहीं है। सब मिलकर रहना। जैसा हमने बताया है, वैसा ही करना और चलना।''

कुछ देर में कहा ''विमान आ गया।'' महाराज जी प्रगट हो गये। महाराज जी की दंडवति किया। महाराज जी ने सर पर हाथ धर दिया। फिर महाराज जी अन्तर हो गए। सब के हाथ जोड़ा कहा ''जो कुछ हमने कभी किसी को अनुचित कहा होगा उसकी क्षमा माँगते हैं।'' सब के नेत्रों में आँसू आ गए। बस हँसते-हँसते शरीर छोड़ा।

फिर उनका शिष्य जो मालिक था यहाँ को पत्र भेजा। सब बातें लिखी थीं। बड़े अच्छे संस्कारी थे। 77 वर्ष की आयु में 3 बजे दिन में शरीर छोड़ा।

पं० राम किशोर ने कहा, ''महाराज जी! अगर आप न होते तो अयोध्या की बड़ी बदनामी होती। कोई साधू यहाँ नहीं है जो इनको ठीक मार्ग बता देता। भगवान ने अपने धाम की मर्यादा रख ली।''

22. लालबिहारी मिश्र
गाँव ईश्वर वारा, जिला सीतापुर

यह बद्री मिश्र की पहली पत्नी के पुत्र थे। इनके पिता की तीन शादी हुईं। दूसरी के स्वामी दयाल और तीसरी के हर दयाल थे। इनके पिता को गाने की बड़ी शौक थी। अच्छा गाना सिखे थे। गाने वाले दूर दूर से आते थे। हिन्दू-मुसलमान कथिक सब की खातिर करते थे। बड़े धनी थे। जब तक जिसका मन होता था तब तक रहता था। आप सितार बजाते थे। कोई तबला, सारंगी, मृदंग, किनावर, डंड ताल, दारा, पखाहुज, ढप, ढोलक, इस्तराज, चिकारा, तम्बूरा बजाते थे। बड़ा मजमा इकट्ठा रहता था। जब उनका शरीर छूट गया तो गाना बजाना बन्द हो गया। तब कुछ दिन बाद तीनों भाई अलग-अलग हो गए। लाल बिहारी बड़े ऊँचे तगड़े थे और क्रोधी थे। दोनों भाइन को कभी-कभी मार देते थे। बजाज़ी (कपड़ा बेचने का धंधा) करने लगे।

बजार गाँव की रामपुर बम्भौर की जाते थे। एक समय रामपुर से बाज़ार करके लौटे, सूर्य बैठ गए थे। पीपल का पुराना पेड़ था। उसके चारों ओर भेट के पेड़ थे। एक काला साँप बैठा था। घोड़ा निकला तो उसने पैर में काट लिया। घोड़ा सौ कदम चला होगा कि गिरकर मर गया। मकान एक कोस रह गया था। बाज़ार दो कोस घर से थी। एक गाँव करीब था, जाकर हाल बताया। लोग आए। कपड़ों को घर पहुँचा दिया।

फिर लाल बिहारी के वैराग हो गया। कपड़ा उतना घर पर ही बिक गया। हर मंगलवार को बंदरों को गुरधनिया पुआ खिलाने लगे।

गाँव के उत्तर एक फरलाँग पर बाग है, एक तालाब है। रोज़ शंकर जी को रामायन सुनाने लगे। मकान के पीछे शंकर जी का चौतरा था, नीम का पेड़ था। कुछ दूरी पर कई नीम के पेड़ थे, रूसा, बेर के पेड़ थे। एक बीछी पुरानी छै अँगुल की, भूरी-भूरी आती थी। शंकर जी की परिक्रमा करके शंकर जी में चपट जाती थी। जब कथा हो जाय, लोग चले जायँ, तब वह जाती। एक दिन देखा गया तो नीम के पेड़ से सटा हुआ एक छेद था। उसी में चली जाती थी।

लाल बिहारी एक साल तक बाल न बनवाए। रुपया जो उधार पड़ा था कपड़े का सो छोड़ दिया। ठाकुर लोगों के पास 300 रुपया था। किसी ने कहा ''ठाकुर! लाल बिहारी तुम्हारे ऊपर बाल रखवाए हैं उनका रुपया दे दो।'' ठाकुर ने बुलाया। लाल बिहारी गए कहा, ''बाल जाकर बनवा लेंगे। हमने सब का पैसा छोड़ दिया है।'' वहाँ से आकर बाल बनवा लिया।

कुछ दिन बाद ठाकुर का 3 साल का लड़का मर गया। ठाकुर की बुद्धि खराब गई तो जाकर सीतापुर में दावा कर दिया जाल बनाकर। इनके पास कागज़ आया। मंगल को बंदरों को गुरधनियाँ पुआ खिलाने गए और कहा, ''हनुमान जी! आप हमारे मन की जानते हैं। हमारा मन पैसों से उठ गया है तिस पर भी हम परेशान किए जाते हैं।'' बन्दर खा रहे थे। जब खा चुके तो पास में तालाब था। पानी पीकर पेड़ों पर चढ़कर बैठ गए। एक बन्दर बड़ा था। वह आया और कहा ''तुम आज ही सीतापुर चले जाव।'' तब रेल न थी। पैदल लोग जाते थे। 15 कोस सीतापुर हमारे गाँव से है। घर आए। चाची से कहा। हम भी बैठे थे।

भोजन करके चल दिये। 12 कोस पर खैराबाद में रुक गए। एक दिन बाद पेसी पर गए। पुकार हुई हाजिर हुए। हाकिम अंग्रेज़ था। उसने इनकी तरफ देखा, कहा, ''तुम अपने घर जाव।'' मुकदमा बरखास्त कर दिया। ठाकुर लोग और उनका वकील कुछ बोल न सका। जब ठाकुर लोग घर गए तो कहा, ''हमने बड़ा पाप किया जो ब्राह्मन के ऊपर झूंठा जाल बनाकर दावा किया। इसी से भगवान ने खारिज करा दिया। इसमें हमारी बदनामी हुई।'' ठाकुर लोग लाल बिहारी के पास आए और माफ़ी माँगा। लाल बिहारी ने कहा ''हम तो आपकी रियाया (प्रजा) हैं। हम नाराज़ नहीं हैं। आप चिन्ता न करें। भगवान आपका भला करैं। हमने जिनको जिनको कपड़ा उधार दिया था सब छोड़ दिया। उम्र 52 साल की हो गई। अब भगवान का भजन करेंगे। रुपया तुम गरीबों को बाँट दो। रिण से उद्धार हो जाओ।'' ठाकुर ने ऐसा ही किया।

कुछ दिन बाद लाल बिहारी के दोनों पैरों में गाँठि के नीचे फुड़ियाँ निकलने लगीं। अच्छी नहीं होती थीं। अवध आए। मनीराम जी की छावनी में कथा होती थी। वहाँ गए कथा सुनी। कथा जब उठी तो बहुत साधू महाराज जी की दंडवति करने लगे। जब महाराज चले तो पीछे पीछे चाचा-चाची चले। प्रह्लाद दास के मंदिर में गए। महाराज पग धोकर मंदिर के पास अशोक के नीचे चौतरे पर बैठे तो साष्टांग दंडवति किया और खूब रोये। फिर अपने जो-जो पाप किये थे सो बतलाया। तब महाराज जी ने कहा ''सब का समय भगवान बाँधे हैं। तुम भगवान की पुरी में भगवान के सामने सब बयान कर दिया। भगवान पापी की प्रार्थना सुनते हैं। जब उसमें दीनता आ गई तब भगवान दयाल होकर अपना लेते हैं। कबीर जी ने कहा है–''कहैं कबीर यह युग युग भई। जब से चेते तब से सही।''

फिर महाराज जी ने उनको राम मंत्र जानकी मंत्र बताया, सब बिधि जप की और ध्यान बताया। जुट गए। 15 दिन रहे। देखने सुनने लगे। एक दिन दिन में बैठे ध्यान कर रहे थे। एक बड़ा बाँदर आया। एक कपड़े में कुछ रुपये चाँदी के बाँधे थे। जाँघ पर धर दिया कहा, ''इसका भंडारा करा देना।'' चाचा जब उठे तो महाराज से बताया। महाराज जी ने हनुमान दास जो महन्त थे, उनको बुलाया कहा, ''देखौ कितना पैसा है?'' तो महन्त ने गिना 194 रुपया 3 चवन्नी चाँदी की थीं। भंडारे का

इन्तज़ाम हुआ तो महन्त जी ने कहा, ''कितनी मूर्ती का निमंत्रण हो?'' महाराज जी ने कहा ''यह भंडारा मारुत नन्दन का है। कम न पड़ैगा। जितनी तुम्हारी खुशी हो उतने निमंत्रण कर दो।''

महन्त की उम्र 60 की थी। कोई न अनुभव था, न विश्वास देवता में था। कंजूस थे। वे महाराज जी के ज़रिये से बहुत रुपये पाते थे। इससे एक हजार मूर्ती का निमन्त्रण महाराज के नाम से कर दिया जिससे कम पड़ने पर हमारी बदनामी न हो। जो कोई कुछ कहैगा तो हम कह देंगे कि परमहंस जी ने भंडारा कराया था। महाराज जी ने अच्छे-अच्छे भंडारी मनीराम छावनी, तपसी जी की छावनी, बड़ी छावनी के बुलाया। उन सब को जलपान मोहन भोग का भोग लगाकर खूब पवाया। सब जुट गए। हलुआ, तसमई (खीर), माल पुआ, लड्डू, पूरी, रायता, साग, आलू, परवर का, छोहारा-किशमिश, अदरक, मसाले की चटनी बनी। भगवान का भोग लगा। एक हजार मूर्ति का निमंत्रण था। डेढ़ हजार मूर्ति आ गए। हाता भर गया। तो महन्त जी ने महाराज से कहा। महाराज ने कहा, ''तुम चिन्ता न करौ। सब को पवाओ।'' पंगति होने लगी। सब सामान कुछ कम न हुआ। फिर गरीब कंगाल आने लगे। महाराज ने भंडारिन से कहा-''अपनी अपनी दो-दो पारुस रख कर गरीबों को बाँट दो। दो दो पारुस घर पर खावेंगे।'' महाराज चाचा-चाची कुछ नहीं खाये। जब सब से छुट्टी मिल गई तब महाराज चाचा-चाची ने 10 बजे (रात को) भोजन किया।

सामान जो बचा सो उसके भोर ठाकुर जी के थाल भर का ताज़ा बना, भोग लगा। बाकी सब भक्तौं ने बासी सामान खाया। जितनी मूर्ती भोजन किये सब तारीफ करते थे। ऐसा स्वाद आया और शरीर में शान्ती आ गई, सो हम क्या बयान करैं। ऐसा भंडारा हम लोगों की जानि में कभी नहीं हुआ।

फिर सात दिन रह कर चाचा चाची घर गये। किसी से मिलते न थे। जब हम जाते तो मिलते। एक फरलाँग दक्खिन तरफ ताल है वहाँ आम के पेड़ हैं। वहाँ अश्नान को जाते, डोल डाल होकर, हाथ पाँव शुद्ध करके, कुल्ला दातून करके, फिर लोटा मल कर, नहाते, फिर घर आते। कुछ दिन बाद नहा कर, धोती निचोड़ कर डार पर रखकर लोटा

लेकर नंगे हँसते चले आते। किसी दिन धोती काँधे पड़ी रहती, लोटा छोड़ आते, किसी दिन लोटा धोती दोनों छोड़ आते। दोनों हाथ चमकाते, नाचने लगते कहते, ''यह राम जी की कैसी छबि है। महारानी जी की कैसी छबि है।'' फिर उनके लिए पिछवारे निबहरा था, रूसे के पेड़ थे, वहाँ टट्टियाँ लगा कर ईंटा रख दिये गए। चाची पानी धर आती थीं डोल डाल बैठार देतीं। फिर घर पर आकर हाथ पाँव शुद्ध करातीं अश्नान करातीं। ठाकुर जी नहवाते। एक सालिकराम राखे थे। घंटों बैठे भोग लगाया करते, फिर जल दिखाते, पाते। दशा विचित्र हो गई। गाँव वाले सब कहते थे कि परमहंस जी ने क्या सिखा दिया जो ऐसी दशा हो गई। बड़े पापी थे। फिर उन्हें सब मानने लगे।

23. श्री बाबा चालीदास जी, मेहतर
ग्राम-कनवाखेरा, पोस्ट व जिला-सीतापुर

श्री 108 श्री चालीदास जी मेहतर, मुकाम कनवाखेरा, पोस्ट व जिला सीतापुर, सरायन नदी के पार जंगल में, सड़क के पूरब समाधि है। एक कोस से ज़्यादा दक्षिण तरफ़ है। इनको शरीर त्याग किये 48 वर्ष 9 माह हुए। इनके दर्शन को हम सीतापुर से बुधवार कार्तिक बदी 3-4 संवत् 2029 (1972 ईस्वी) को सुबह साढ़े नौ बजे मोटर से गये थे। पुल टूट गया है, इसलिये मोटर सड़क पर छोड़ दी और हम लोग नाव पर गये और वापस आये। जाते समय एक ऊँची जगह पर उनके गुरु की समाधि पड़ती है, वहीं उनके एक चेले की भी है। वहाँ भी दो साधू मेहतर रहते हैं। वहाँ दो जगह कोठरी बनी हैं। फिर नदी पर ऊँचे पर एक सोनार का फार्म है। फार्म में एक बूढ़ा मुराऊ रहता है। रामकोट के ज़मींदारों से लिया है। उसी के बीच बाबा चालीदास की समाधी बनी है। एक कोठरी पक्की बनी है, किवाड़ लगे हैं। उसमें जाकर फेरी लगाया, कुछ देर खड़े रहे, फिर उनके चेले की समाधी पर फेरी लगाया। चाली जी के चेले का नाम मन्नीराम था।

वहाँ पर चार आदमी रहते हैं। एक आदमी आया, एक कुरसी लाया। उस पर बैठे। संग में उमाशंकर, अवधबिहारी, बृजबिहारी, बृजबिहारी का लड़का अरुन, जो मोटर चलाता था, संग में थे। सब लोग

कुछ समय वहाँ रहे, फिर नदी पर आये। नाव से उतर कर बाबा के गुरु की समाधी पर फेरी लगाकर और कुछ देर रुक कर 11 बजे लोहार बाग घर पर आ गये। पहिले चाली का शरीर छूटा, उसके बाद उनके चेले का छूटा, फिर गुरु का छूटा, फिर चाली के गुरुभाई का छूटा।

बाबा चालीदास जंगल में नदी के किनारे पर रहते थे। जब बहुत बाढ़ आई तो सब के कहने से ऊँचे पर चले गये। शरीर छूटने के बाद जब समाधि बन गई, तब फिर बाढ़ आई। पाँच हाथ ऊँचे दीवाल तक पानी चढ़ गया। कोठरी में भर गया। काफी ऊँचाई तक पानी पहुंच गया था। कई लोग पुराने हैं, वे पूछने पर बताते थे।

चाली बाबा एक छोटी डलिया में बताशे धरे बाँटा करते थे। वह चुकते (समाप्त होते) नहीं थे। यह बात सब जानते थे और कुछ नहीं जानते थे।

चाली ने 18 की उम्र से 28 की उम्र तक फौज़ में नौकरी की। झाड़ू, बुहारू का काम था। सब खुश रहते थे। उनको वैराग्य हो गया। अपने आप भोजन एक बार बनाते थे। दोनों समय थोड़ा थोड़ा खाते थे। 5 रुपये माहवार वेतन मिलता था। थोड़े में बसर करते, बाकी गरीबों को बाँट देते थे। काशी में राजा हरिश्चन्द्र के समय कलुवा भंगी था, उनके परिवार के थे। छोटे पर के सदाचारी थे। चारों धाम घूमे, फिर सीतापुर आये। महमूद शाह मेहतर, कनवा खेरा, नदी के किनारे झोंपड़ी में स्त्री-पुरुष रहते थे। एक झोपड़ी में गाय रहती थी। उनसे कहा, ''बाबा हमें भी कुछ बताओ''। वे बोले, ''हम तो राम-राम करते हैं''। बस चाली जुट गये।

चालीदास जी नौकरी छोड़ कर जंगल के करीब रहने लगे। वहाँ बैठ गये और ''राम-राम'' करने लगे। पहिले दाहिनी आँख उठी तो कहा, ''हम राम-राम नहीं छोड़ैंगे, आँख चाहे फूट जाय''। आँख थोड़े दिन में फूट गई। फिर बाईं आँख उठी तो चालीदास ने कहा, "यह भी फूट जाय, हम राम-राम नहीं छोड़ेंगे। वह भी फूट गई। फिर थोड़े दिन में चालीदास जी की दोनों हिय (हृदय) की आँखें खुल गईं। तब चाली ने डिप्टी कमिश्नर से कहा ''एक शालिकराम जी की मूर्ति मँगा दो''। तब साहब ने किसी पंडित से कह कर मँगा दिया था। चालीदास उसका पूजन करते थे। तब डिप्टी कमिश्नर ने सड़क बनवा दी। रहने की जगह बन गई। बाजे टाँग दिये गये। भगवान के चित्र लगा दिये गये।

इतवार को हिन्दू, मुसलमान, अंग्रेज जाने लगे। चालीदास पहिले ''सीता-राम'' कहते थे, जो वहाँ आता था। एक बार थोड़ा खाते थे। चौदह साल ''राम-राम'' किया। एक दिन पंडित से कहा ''आज शरीर छोड़ेंगे। हमें गीता सुना दो''। चाली बाहर बैठ गये। अर्जुन गीता सुन कर शरीर छोड़ दिया। चालीदास की समाधि बनी है। उनकी दशा विचित्र हो गई थी जो वर्णन में नहीं आ सकती। जो कुछ थोड़ा हमें हाल में बताया गया है, वह हमने लिखा है। हमें उनकी बातों में ऐसी मस्ती आ गई कि आँसू चलने लगे। फिर वहाँ से आकर थोड़ा लिखा। बहुत विस्तार से बताया था।

हमारा हाल भी कुछ बताया। नाभाजी के समय का कुछ हाल बताया था। उन्होंने कहा ''तुम्हारा काम हो गया, तुम पाप-पुण्य से अलग हो गये। मान-बड़ाई नरक की निशानी है। समय भी करीब आ गया है। जहाँ मान-बड़ाई है, वहाँ आकर लोग समय बरबाद करते हैं। भजन, ध्यान, सुमिरन की यह बड़ी बाधा है। समय स्वाँस अनमोल पाकर खाली न छोड़ना चाहिए। समय आकर फिर नहीं मिलता।''

जहाँ उनकी समाधि है, उससे कुछ दूर ''नज़र अली शाह'' की समाधि है। बसंत को मेला लगता है। वहाँ भी एक हठयोगी छः हजार वर्ष के रहते हैं। हम सब बातैं लिख नहीं सकते। थोड़ा लिखा है। कासिमपुर गाँव नदी पार है। वहाँ समाधि है और एक बाग है। हम 18 की उमर में वहाँ दो बार गये हैं।

श्री चालीदास जी का कीर्तनः-

दोहाः-राम नाम सुमिरन करै पावै मुक्ति औ भक्ति।
चाली कह यासे सुलभ और कोई नहिं जुक्ति ।।1।।
नैन श्रवन जियतै खुलैं राम-सिया दरशाय।
चाली कह सुर मुनि मिलैं सिर कर धरि लिपटाय ।।2।।
षट चक्कर चलने लगैं चाली कह भन्नाय।
कमल सातहू जाँय खिलि, स्वरन से महक उड़ाय ।।3।।
नागिनि जगि शुभ लोक सब तुमको देय घुमाय।
चाली कह देखत बनै मुख से बोलि न जाय ।।4।।
अमृत घट में पान हो अनहद की हो तान।
चाली कह सुनि मस्त हो रहै न तन का भान ।।5।।
ज्ञान-ध्यान-विज्ञान सब राम नाम के बीच।
चाली कह सुमिरन करौ छूटै भव की कीच ।।6।।

चौदह बरसै नाम जप तन मन प्रेम से कीन।
चाली कह तब कृपानिधि पास आपने लीन ।।7।।
मेहतरि से बेहतरि भयो धन्य जानकीनाथ।
चाली कह सुमिरन करो तब करि देंय सनाथ ।।8।।
माया चोरन को लिहे जाय बैठि गई दूरि।
चाली कह सुमिरन करो बने हो कायर कूर ।।9।।
शान्ति दीनता लेव गहि आप को देय मिटाय।
चाली कह मन होय बसि द्वैत भाव भगि जाय ।।10।।

प्रेम भाव विश्वास अरु सत्य आय लिपटाय।
चाली कह सो धन्य है नर तन का फल पाय ।।11।।
आँख फूटि दोनों गईं राम नाम नहिं छूट।
चाली कह हिय की खुलीं कौन सकै अब लूट ।।12।।
हर-हनुमति रक्षा करैं गदा त्रिशूल है हाथ।
चाली कह सुमिरत रहत सिया सहित रघुनाथ ।।13।।
परस्वारथ परमार्थ बिन नर तन बिरथा जान।
चाली कह तन त्यागि के नर्क को कीन पयान ।।14।।

[1]

पदः– जल भोजन हल्का जब होवै।
तन मन नाम से अपना नोवै ।।1।।
आलस नींद भागि जब जावै।
तब आनन्द निज दिल में आवै ।।2।।
जो कछु देखै सुनै न भाषै।
तब अनुभव की फरती साखैं ।।3।।
चाली कहैं पहिल यह साधन।
तब वह बचि जावै सब बाधन ।।4।।

दोहाः– जब आज्ञा सिय राम की कहने की ह्वै जाय।
चाली कह तब ही कहै तब साधक बचि जाय ।।15।।

वार्तिकः–

फिर कहने लगे नाम की महिमा बहुत अपार है, अकथ है, अलेख है, अगम है। शेष शारदा नहीं जान सकते। ''राम जी'' नाम का प्रभाव

नहीं कह सकते, तब और देवी-देवता क्या कहैं। जो जितना देखा सुना है उतना कहा है। उसी तरह हम भी थोड़ा कहते हैं। सुनो, नाम से जो जो जाना सो लिखाते हैं:-

नाम से हिय की आँखें खुलीं, रूप की प्राप्ति, धुनि की, लय की, शून्य की, चारौं ध्यान की, चारौं अजपा की, पिपीलिका मार्ग की, मीन मार्ग की, विहंग मार्ग की, सुषमना की, अनहद बाजा की अमृत पान की, कुण्डलिनी की, सब लोकन की, छइउ चक्कर की, सातौं कमलन की, दोनों स्वरन से तरह तरह की महकन की, देवतन के घर खान-पान की, सब लोकों से तारों की, सारी सृष्टि अपने शरीर में देखी, सारी सृष्टि में अपने शरीर को देखा अन्तर्ध्यान होना, काया प्रवेश होना, शरीर के चौदह भाग अलग-अलग करना, फिर एक में मिल जाना, सब रूप धारन करना, फिर अपने रूप में आ जाना।

तमाम हिन्दू सन्त और भाई नाम से अजर-अमर हैं, मुसलमान और उनकी पत्नी अजर-अमर हैं। जो जानते हैं, वे मानेंगे, कहाँ तक लिखवावैं।

दोहाः– चाली कह चलना पड़ी होय हिसाब शुमार।
चित्रगुप्त सब लिखत हैं जो मन उठत विचार ।।16।।
नर-तन की सब इन्द्रियाँ होवैं वहाँ गवाह।
शुभ कर्मन बैकुण्ठ दें अशुभ से नर्क अथाह ।।17।।
धर्मराज बैठे वहाँ चित्रगुप्त के पास।
चाली कह उनको सबै गुन औगुन का भास ।।18।।
सच्चा प्रभु दरबार है सच्चा है इन्साफ़।
चाली कह सुमिरन करै सब ह्वै जावै माफ़ ।।19।।

[2]

पदः– सिया राम मोहिं गले लगा लो,
पास खड़े मुस्क्याते हो ।।1।।
नाम तुम्हार जपै तन मन से,
वाके हाथ बिकाते हो ।।2।।
हर दम वा पर सूरति राखत,
मुक्ति भक्ति के दाते हो ।।3।।
चाली अधम खड़ा कर जोड़े,
काहे देर लगाते हो ।।4।।

चाली की यह विनय सुन कर महाराज और महारानी जी ने चाली का एक-एक हाथ पकड़ कर बच्चों की तरह दुलराया और कहा, ''हम तुम्हारे सामने हर समय रहेंगे और हर जगह तुम हमारे साथ रहोगे।'' फिर चाली के सामने छटा-छबि सिंगार की अद्‌भुत झाँकी हो गई।

दोहाः– ना जीने की खुशी है भक्तों न मरने का डर है।
राम नाम जप के परताप से काम हमारा सर है ।।20।।
निर्भय औ निर्बैर हमेशा, हर हनुमान का बर है।
चाली कहैं चलौं साकेतै, जो हमार निज घर है ।।21।।

[3]

पदः– नाम कि धुनि जो ररंकार है,
कर्म रेख पर मेख मार है ।।22।।
सब दिशि सुनिए एक तार है,
चाली कह सब सुख का सार है ।।23।।

[4]

पदः– धन्य वे नर नारि हैं जे प्रेम से सुमिरन किया ।।1।।
नाम धुनि परकाश लय औ सामने रघुबर सिया ।।2।।
देव मुनि जै जै करैं बरसै सुमन हरषै हिया ।।3।।
चाली कहैं तन छोड़ि कै साकेत में बासा लिया ।।4।।

दोहाः– कन कन में सिया राम हैं, कन कन में प्रिय श्याम।
कन कन में कमला बिष्णु हैं, चाली करें प्रनाम ।।22।।
सबै पदारथ पास हैं बनि जावै जो घूर।
राम नाम सुमिरन करै, यही सजीवनि मूर ।।23।।
सन्मुख सीताराम हों, सुनै नाम का तूर।
चाली कह सो भक्त है प्रेम में चकनाचूर ।।24।।

वार्तिकः–

चाली की पहली अवस्था में यह मन में विचार उठा कि क्या मुसलमान जो भजन करते हैं, भगवान के यहाँ अलग अलग बैठारे जाते हैं या एक ही जगह। तो आकाशवाणी हुई और यह शेर सुनाई दी–

शेरः– फ़लक पर शोर यह बरपा
रसूलिल्लाह आवैंगे।

मेरे चाली तेरे मन के सखुन
को हल करावैंगे ।।1।।

फिर ''मोहम्मद साहेब'' आये, चाली को हृदय से लगाया और कहा ''वहाँ जाति की ज़रूरत नहीं है। जो परमेश्वर का भजन करता है वह उनकी परम्परा में हो जाता है। भगवान उसे अपने हाथ से दिब्य वस्त्र पहना कर, सिर पर मुकुट लगा कर सिंहासन पर बैठाते हैं। सब एक ही जगह राखे जाते हैं। जो जैसा भजन किया है उस रीति से उसकी सजावत, सिंहासन मिलते हैं। वहाँ भी नम्बर लगे हैं, इतना फरक है।'' चाली की शंका दूर हो गई, चरनन पर पड़ गये। रसूल ने उठाकर उनके पेट व माथे की खाक अपने कपड़े से साफ़ किया, फिर सर पर हाथ फेरा और अन्तर्ध्यान हो गये। भगवान के अनेक नाम हैं। जो जिस नाम से उनको भजता है, उसी नाम से वे मिलते हैं।

दोहाः– यह सृष्टि का खेल रचा ऐसा,
कोई आता कोई जाता है।
चाली कहैं हर दम ख्याल रहै,
सिया राम जगत पितु माता हैं ।।25।।

[5]

पदः– हिन्दू-मुसलमाँ सैकड़ों साकेतबासी हो गये ।।1।।
चाली कहैं हम ध्यान करि कै पहुंचि देखा हो गये ।।2।।
सुर मुनि की बानी सब सही हरि नाम बीजक बो गये ।।3।।
तन मन लगा सुमिरन किया तब सब निवासी हो गये ।।4।।

[6]

पदः– जियतै में सब प्राप्त भया सो जीवन-मुक्त कहाता है ।।1।।
चाली कहैं तब वह भक्त भया हरि रूप रंग बनि जाता है ।।2।।
परमानन्द उसे कहते वह दोनों दिसि विख्याता है ।।3।।
सुर मुनि उसकी कीरति गावैं वह मुक्ति-भक्ति का दाता है ।।4।।

वार्तिकः–

सातों समाधियों में से चार से गती होती है– लय समाधि, शून्य समाधि, प्रेम समाधि, सहज समाधि। पाँचवीं जड़ समाधि से आयु बढ़ती है, अजर-अमर हो जाता है पर भगवान की प्राप्ति नहीं होती है। तमाम

सिद्धियाँ भी प्राप्त हो जाती हैं। भय समाधि व चोट समाधि में शरीर छूटने पर प्रेत योनि या नर्क होता है। यह ऋषियों के वाक्य हैं।

[7]

पदः– चौबिस घंटा भीतरहि जनम मरन सब होय ।।1।।
चाली कह सुमिरन बिना पहुंचि सकत नहिं कोय ।।2।।

वार्तिक–

जप, पाठ, पूजन, कीर्तन, कथा, सेवा धर्म सब सुमिरन के अन्दर हैं। जिसमें मन लग जाय उसी से पार हो जाय।

[8]

पदः– लखै नैनन से सिया सरकार,
सुनै श्रवनन से ररंकार ।।1।।
सुर मुनि सब बोलैं जै जै कार,
चाली कह जियते भयो पार ।।2।।

[9]

पदः– राम नाम की महिमा भक्तौं मामूली कोई जान सकै ।।1।।
चाली कहैं जुटै तन मन से नेम टेम को ठानि सकै ।।2।।
शांति दीन बनि धीरज धरि के शब्द में सूरति सानि सकै ।।3।।
राम सिया की झाँकी सन्मुख सुर मुनि को पहिचान सकै ।।4।।

चौपाईः- देखै नैन सुनै दोऊ काना, रसना से नहिं जात बखाना ।।1।।
जिनके भरा हृदय अज्ञाना, ते करते अपने मन माना ।।2।।
सब से नीच बना सो जाना, वा के खुलिगे आँखी काना ।।3।।
चाली कहैं भयो मस्ताना, तन तजि निज पुर कीन पयाना ।।4।।

[10]

पदः– परस्वारथ परमारथ दोउ दल,
बिना प्रेम के होत नहीं ।।1।।
चाली कहैं सत्य यह बानी,
सुर मुनि सब ने यही कही ।।2।।
पहिले नेम टेम से सुमिरौ,
प्रेम आय कर लिपटैगा ।।3।।

चाली कहैं देव मुनि भाखा,
काल मृत्यु नहिं झपटैगा ।।4।।
माया मृत्यु काल औ जम गण,
भक्त को देखि क डरते ।।5।।
चाली कहैं भक्त जो सच्चे,
कष्ट परै नहिं टरते ।।6।।

[11]

पदः– बिना परिश्रम नर तन बिरथा भजन कहाँ से होवै ।।1।।
चाली कहैं अन्त तन तजि कै कल्पन नर्क में रोवै ।।2।।
चौरासी का चक्कर छूटै राम नाम जपि लीजै ।।3।।
चाली कहैं सुलभ यह मारग मन काबू करि लीजै ।।4।।

[12]

पदः– नाम जपने का मज़ा पाये हैं हम ।।1।।
दुःख सुख सम मान कै आये हैं हम ।।2।।
जिसकी रसना पर हर समय रट है रामै नाम की
उनके चरणों को पकड़ि आये हैं हम ।।3।।
चाली कहैं तन छोड़ि कै साकेतपुर आये हैं हम ।।4।।

[13]

पदः– हर जगह सब भक्त हैं,
और हर जगह भगवान हैं ।।1।।
चाली कहैं भगवान ही ने,
दीन हम को ज्ञान है ।।2।।
दीनता औ शान्ति बिन,
खुलते न आँखी कान हैं ।।3।।
कर्म शुभ कीन्हे बिना,
हटता नहीं अज्ञान है ।।4।।
पढ़ते सुनते लिखते हैं,
धरते नहीं कोई ध्यान हैं ।।5।।
सुर-मुनि की बानी मान कर,
जुट जाय तब कल्यान है ।।6।।

[14]

पदः– जपि राम नाम मन मारि गए,

जियतै बिधि लेख को टारि गए ।।1।।

जम काल मृत्यु सब हारि गए,

चाली कहैं तरिगे तारि गए ।।2।।

जे आलस नींद से हारि गए,

तिन को जम-दूत पछारि गए ।।3।।

गहि नरक कुण्ड में डारि गए,

चाली कहैं बिगड़ बिगाड़ गए ।।4।।

वार्तिकः–

साधू हो या गिरही, जिसके मन में द्वैत घुसा है उसकी गती नहीं होती है। उसमें दया धर्म नहीं है। प्रेत योनि या नर्क होता है। पापी की संगति करने वाले को पापी का आधा पाप उसे मिलता है। जब शरीर छूटता है तब उसे जमदूत नर्क ले जाते हैं। नाना प्रकार के कष्ट देते हैं, तब कौन सहायता करै। वहाँ तो बुद्धि भ्रष्ट है, सूझता नहीं है। मन मति से कुमति की संगति हो जाती है। यह नर-तन पर उपकार और भजन के लिए मिला है। ब्राह्मण का शरीर सबसे उत्तम माना गया है। ऋषी मुनि कह गए हैं ''जो पापी से भाषन करता है उसके ऊपर पाप का असर आ जाता है। वह जब अच्छे दस मनुष्यों से भाषन कर ले तो उसका पाप नाश हो। जिसके सामने पापी निकले और वह जानता हो कि यह पापी है तो तीन बार 'राम-राम-राम' या 'श्याम-श्याम-श्याम' या 'नारायण-नारायण-नारायण' कह दे तो पाप उस पर असर न करैगा। यही उपाय इसकी है। जो नहीं जानता उसे कुछ पाप न व्यापैगा।''

जो बड़ा पापी है उसको जै बार देखोगे तै गऊ मारने की तुम पर हत्या लगेगी, यदि तुम जानते हो। जो नहीं जानता उसे कुछ न व्यापैगा। ऋषी मुनी कह गए हैं ''जहाँ पर बहुत लोग बैठे हैं उस पर दरी या कोई कपड़ा बिछा है, उस पर अपना वस्त्र बिछा कर बैठो। पापी-धर्मात्मा सब बैठे हैं, सबका असर तुम पर आता है। अपना वस्त्र बिछाने से तुम पर पापी का असर न आवैगा।''

ऋषी-मुनियों के वाक्य पर चलने से ही तुम्हारा कल्याण होगा। जिनके दया धर्म नहीं है वे घोर पापी हैं। दूसरों को मारते-काटते उन्हें

अच्छा लगता है। वही मरने पर जमदूत बनाए जाते हैं। यह उपदेश हमें शंकर भगवान और हनुमान जी ने दिया था। जब तक शरीर है तब तक दया धर्म परउपकार करता रहे। ब्यास जी ने यही बताया और सिद्ध संतों का भी यही मत है। कलियुग महाराज अपने परिवार नीच कौम को खूब भक्त बना रहे हैं। ऊँची कौम को नीचा दिखा रहे हैं। देखो! ऐसे ही अपने परिवार की तरक्की सबको करना चाहिए।

खान पान और प्राण का लोभ लगा है। इससे नीचे गिर जाते हैं। कर्म की गती कर्म करने से ही मिटती है। कौन कर्म? निष्कपट होकर भगवान में लग जाय तब मिट जाय। जितने भक्त हुए हैं वे करनी करके हुए हैं। मनुष्य का अनमोल तन बृथा में न जाय। कमर कस कर परउपकार में लग जाय। तुम जहाँ से आये हो वहाँ कैसे पहुँचोगे बिना शुभ काम किए। पढ़ते हो, सुनते हो और लिखते हो, दूसरों को समझाते हो। वहाँ तिल-तिल का हिसाब लिखा जाता है। फिर अपने मन का करते हो। जो तुम्हारे ऊपर मालिक है उससे नहीं डरते हो। मौत को भूले हो।

चाली ने विज्ञान दशा वालों पर कहा है। उनका बाल भाव हो जाता है। उनको गन्दा पानी शुद्ध पानी ऐसा मालूम होता है। सबका जूठा शुद्ध भोजन के समान है। जो कुछ खिला दो खा लेंगे। उनको हानि नहीं करेगा। तुम्हारी हानि होगी। जो देखा-देखी ऐसा करते हैं उनकी गती नहीं होती। रोगी होकर मर जाते हैं। बहुत सिद्ध सन्त हैं जो आचार-विचार नहीं छोड़े। कोई आश्रम में पक्षी, कुत्ता, बन्दर, साधू, गिरही मरता है तो उस दिन सबको फलाहार दिया जाता है। उनसे कोई पूछता है तो कहते हैं, ''अगर हम ऐसा न करें तो यह सब ऐसे ही झूठे सिद्ध बनेंगे। अन्त में नर्क होगा। इससे ऐसा करते हैं। आप तरते औरों को तारते हैं। उनकी भी ऊँची गती (होती) है जो एक जीव को रास्ते पर लाता है। वह परम पद पाता है। उतने ही भजन से विज्ञान दशा हो जाती है, उतने ही भजन से लाखों का हिसाब बता देते हैं। ऐसी उनमें भगवान शक्ति दे देते हैं। इसमें दिमाग़ लगाना मूर्खता है। भगवान की लीला भगवान जानें। वे सर्वशक्तिमान हैं। राम, कृष्ण, बिष्णु के सहस्त्र नाम हैं। जिस नाम से प्रेम हो उसी से मुक्ति-भक्ति, ज्ञान-विज्ञान प्राप्त हो जाता है। सिर्फ तन मन प्रेम से लग जाय।''

॥ श्री चालीदास जी का कीर्तन ॥

कीर्तनः- तन समय स्वांस अनमोल मिला,
सिया राम भजो सिया राम भजो ॥1॥
चाली कहैं गुरु से नाम मिला,
सिया राम भजो सिया राम भजो ॥2॥
सब से आसान यह मार्ग मिला,
सिया राम भजो सिया राम भजो ॥3॥
तन छोड़ि सो राम का धाम मिला,
सिया राम भजो सिया राम भजो ॥4॥

[15]

पदः– बचन जो गुरु का है माना वही सिया राम का प्यारा ॥1॥
कहैं चाली सुनौ भक्तौं जियति ही तर गया तारा ॥2॥
देव मुनि सब उसे चहते द्वैत का मूँह किया कारा ॥3॥
दया उसके भरी उर में लोभ को करि दिया छारा ॥4॥

[16]

शेरः– जानै वही मानै वही सुख जिसके आँखी कान है।
चाली कहैं सुमिरन बिना हटता नहीं अज्ञान है।

[17]

पदः– महाबीर बजरंग पवनसुत रामदूत हनुमान ॥
अंजनी पुत्र केशरी नन्दन विद्या बुद्धि निधान ॥
राम सिया सन्मुख में राजत सुनत नाम की तान ॥
चाली पर अस दाया कीनी मुक्ति-भक्ति दियो दान ॥

पदः– सिया राम की सेवा के हित शंकर रूप धरयो हनुमान ॥
एक रूप ते जग को देखत मुक्ति-भक्ति दें दान ॥
बीज मंत्र की धुनी सुनत औ अजर-अमर गुन खान ॥
राम सिया सन्मुख में राजत जिनका रचा जहान ॥
ऐसा दानी देव न दूसर सुर मुनि कीन बखान ॥
चाली कहैं मिलै जेहि यह पद आवागमन नसान ॥16॥

दोहाः– गुरु से जाको भाव नहिं, ताको जानो दुष्ट।
चाली कह शुभ काम में, कैसे होवे पुष्ट ॥

अहंकार औ कपट संग, माया चोरन गुष्ट।
चाली कह जियतै नरक, मति वाकी है कुष्ट ॥
संगति जब अच्छी नहीं, बुद्धि गई ह्वै भ्रष्ट।
चाली कह वे हर समय, बने रहत हैं नष्ट ॥
बुरे काम हित खरचते, दया धरम में रुष्ट।
चाली कह नैनन लखा, ऐसे मन के चुष्ट ॥
मातु पिता को नर्क भा, मिली ऐसि औलादि।
चाली कह धिक्कार है, दोनों कुल बरबादि ॥
इनकी संगति जो करै, सीधे नर्कै जाय।
चाली कह तलफ़ै गिरै, बार-बार गश खाय ॥

दोहाः– राम कृष्ण औ बिष्णु के, सहस नाम परमान।
चाली कह जपि जानि लो, सबसे हो कल्यान ॥
भेद खेद को छोड़िए, या से होगा नर्क।
चाली कह सुर मुनि बचन, या में नेक न फर्क ॥

शेरः– दीनता औ शान्ति बिन भगवान से तुम दूर हो।
चाली कहैं थू थू तुम्हें दोनों तरफ़ से क्रूर हो ॥

दोहाः– दुष्ट कि संगति जो करै, सो दुष्टै ह्वै जाय।
चाली कह सुर मुनि बचन, चौरासी चकराय ॥
परस्वारथ परमार्थ बिन, भव से होत न पार ।
वेद शास्त्र सुर मुनि बचन, चाली कहत सम्भार ॥

[18]

पदः– राम श्याम नारायण भजिये सीता राधा कमला।
चाली कहैं शान्त मन होवै चोर करैं नहिं हमला ॥
राम कृष्ण औ बिष्णु को भजिए रमा राधिका सीता।
चाली कहैं चेतिए भक्तौं जीवन जात है बीता ॥
राघौ केशव गोविन्द भजिए सीता कमला राधा।
चाली कहैं देव मुनि बानी काटै कोटिन बाधा ॥
माधौ रघुपति जदुपति भजिये लछिमी राधे रामा।
चाली कहैं मिलै तब निज घर सुफ़ल भयो नर चामा ॥

दोहाः– दया धर्म हिरदय धरै दीन बने गहि शाँति।
चाली कह तेहि भक्त की छूटि जाय सब भ्राँति ॥

[19]

कीर्तनः— रसना रटि ले राधे श्याम राधे श्याम राधे श्याम।
चाली कहते सहस्रनाम सहस्रनाम सहस्रनाम ।।

पदः— क्रोध को जिसने है जीता वही सच्चा बहादुर है।
कहैं चाली सुनौ भक्तों वही मेरा बिरादर है ।।
जियति ही सब किया करतल दोऊ दिसि उसका आदर है।
देव मुनि वेद की बानी न मानै तौन कादर है ।।

शेरः— निरादर उसका दोनों दिसि जो आलस नींद में रहेता।
कहैं चाली तजै तन जब तो जाकर नर्क में ढहेता ।।
सत्य का मार्ग जो गहेता वही सच्चा भगत जानो।
कहैं चाली उसे जियतै मुक्ति औ भक्ति भा ज्ञानो ।।

दोहाः— साँचा झूँठ को झूँठ मानता झूँठा झूँठ को साँच।
चाली कहैं अन्त में जम गण आय के लेते टाँच ।।

छन्दः— शुभ कारज करि लेव जियत में,
कर्म की भूमी बनी यही ।।
चाली कहैं पदारथ चारिउ,
इसी रीति से मिलत सही ।।

24. श्री बाबा राम किंकर दास जी
रामघाट, अयोध्या

बाबा श्री राम किंकर दास जी नाऊ के बालक थे। राम घाट पर रहते थे। साधू सेवा करते थे। पढ़े थे। सिद्ध पुरुष थे। पहले फूस की कुटिया बनी थी। धीरे-धीरे पक्का मंदिर बन गया। भगवान राम जानकी लखन लाल पधर गये। तीन राम लला और बहुत शालिगराम जमा हो गये। जो साधू आते थे और उनका शरीर छूट जाता था, तो उनके शालिगराम रख दिये जाते थे। एक शालिगराम नरसिंह भगवान कहे जाते थे। फिर बाबा राम किंकर दास जी की छावनी बोली जाने लगी। उनके बड़ी दीनता थी। आप किन्हीं सन्त से राम जानकी मंत्र लिये थे। मरने के कुछ दिन पहले एक ब्राह्मण आया। वह राम जानकी मंत्र लिये था। उसे सब सौंप दिया और काफ़ी अवस्था में शरीर छोड़ा।

वहाँ पर हमारे महाराज जी साढ़े सात साल रहे। महाराज के पास एक भक्त राजाराम डेढ़ वर्ष रहा। फिर चला गया। महाराज जी को भोजन की तकलीफ़ होने लगी। महाराज जी के सामने राम जानकी की छटा रहती थी। वह भोजन नहीं बना पाते थे। आटा दाल तवा हर जगह छटा की चमक रहती थी। तब वह भोजन श्री माधो दास जी के यहाँ करते थे। देर हो जाती थी। महाराज 11 पर भोजन कर लेते थे। हम उस समय बाबा टीका दास जी के यहाँ रहते थे जो हमारे घर से 30 कोस है। तब हमारी अवस्था 27 साल की थी। महाराज जी वहाँ प्रगट हुए। बाबा से बात हुई। तब बाबा ने कहा कि अब तुम जाओ हम नहीं रोकैंगे। हम सब हाल माताजी से कहा। वह बोलीं, ''जाओ।'' पाँव छूकर चल दिये।

साढ़े पाँच साल वहाँ रहै। हर उत्सव समैय्या पर भगवान को एक तखत पर लेटा कर मज्जन अश्नान कराते और पूजा करते थे। एक दिन हमारे मन में यह इच्छा भई कि पास में सोती है, खूब निर्मल जल बह रहा है तो भगवान को अश्नान कराते। हम भगवान के सामने आए और कहा ''आप सब में बहुत वज़न है सो कैसे ले चलेंगे।'' तो लखन लाल जी ने कहा ''तुम आवोगे तो हम हल्के हो जाएंगे।'' गर्मी का महीना था, उजाली रात थी। 4 बजे का समय था। हम दाहिने काँधे पर रामजी को और बाँयें काँधे पर लखन लाल जी को बैठाया। तब लखन लाल जी ने कहा ''राम लालजी को हमें दो।'' तब लखन लाल जी ने दो राम लला को काँधे पर और एक राम लला को गोद में ले लिया और हम महारानी जी को दाहिनी गोद में ले लिया। जब तो सब फूल की तरह लगते थे। साथ में एक हजार से अधिक बन्दर खों खों करते हुए थे। सब के सोती के किनारे पहुँचते ही सब अपने आप खटाखट उतर कर अश्नान करने लगे। पहले लखन लाल अश्नान करके और राम लला को अश्नान करा कर फिर पहले की तरह तीनों राम लला को लेकर और हम महारानी जी को गोद में लेकर वापस आये। सब बन्दर भी अश्नान करके कूदते हुए साथ में आये। जैसे ही पधराया तैसे ही पहले की सी मूर्ती हो गये और सब बन्दर चले गए। बड़ा बिस्तार है कहाँ तक लिखा जाय। वह सिद्ध पीठ है। वहीं पर मंदिर बनवाने को परमहंस श्री रामचन्द्र दास जी ने कहा है।

25. परमहंस श्री राम कृष्ण

कलकत्ता

रामकृष्ण जी जब तीर्थाटन करके पराग में आये तो तीन दिन से कुछ खाया न था। त्रिबेनी जी के किनारे पीले-पीले मूली के पत्ते पड़े थे-बेचने वाले फेंक दिये थे। वही उठाकर जल से धोकर खाकर थोड़ा जल पिये तो गौरांग महाप्रभू प्रगट हुए। उनका शरीर सोने के ऐसा चमकता था। प्रकाश ऐसा हुआ कि उनकी आँखैं चौंध्या गईं। रामकृष्ण जी ने आँखैं दोनों हाथ से बन्द करके कहा, ''आप कौन हैं? अपना तेज खींचौ। हम शरीर से कमजोर हैं सह नहीं सकते।'' भगवान ने तेज खींचि लिया। तब रामकृष्ण जी ने आँखें खोलीं। भगवान ने कहा, ''तुम सुनते नहीं हो, हमारे नाम की धुनी तुम्हारे अन्दर से हो रही है।'' तो कहा, ''नहीं सुनते।'' भगवान ने कहा ''बायें कान पर सुरति लगावो। हमारा राशि का नाम महामंत्र रं रं रं हो रहा है। हमारे रोम-रोम में ब्रह्मांड हैं। स्वाँस से कितने निकलते हैं और हमारे अन्दर समा जाते हैं। यह बीज मंत्र ज़र्रा-ज़र्रा में व्याप्त है। जिसको यह प्राप्त हो जाय वह जनम-मरन और काल त्रास से छूट जाय।'' रामकृष्ण ने भगवान की यह बानी सुनकर उधर ध्यान दिया तो धुनी होने लगी। भगवान कृष्ण सन्मुख हो गये।

जब कलकत्ता काली जी के मन्दिर में आये तो शाम की आरती होने लगी तो आप मुरछल करने लगे। काली जी ने प्रगट होकर सर पर हाथ फेर दिया। कहा, ''अब तुम चौरासी के चक्कर से अलग हो गये।'' उनसे काली जी से बातचीत होती थी। काली जी उनका रुख जैसा देखती थीं वैसी बात करती थीं। इसी से वे प्रसन्न रहते थे।

दोहाः- हे गौराङ्ग महाप्रभू भक्तन के सिरताज।
दया के सागर आप हौ सारौ सब के काज ।।

26. श्री इलाही बेहना

उमरायगंज, जि० सीतापुर

इलाही बेहना हमारे गाँव से दो फरलांग पर रहते थे। उनके गुरु भूलन शाह जी 125 बर्ष के थे। तब हम 12 साल के थे। दर्शन को गए। गाँव में कँधई तेली के यहाँ आये थे। बहुत गोरे ऊँचे शरीर के थे।

वै 11 अलिफ़नामे लिखे हैं और पाँच तत्व का सोंटा लिखे हैं। एक अलिफ़नामा और पाँच तत्व का सोंटा हमारे पास है। इलाही को हम काका कहते थे।

हमने कहा कि कुछ अपने गुरु का हाल सुनाओ, तो कहा ''हम 12 साल की उम्र में कुटी में गए। हमारी शादी हो गयी थी। हम से कहा 'भजन सीखने आए हो? हमने कहा 'हाँ' तो हमें खाने पीने को न पूछे 10 कोस पैदल गए थे। कमलासन से बैठार दिया। चार दिन उठने नहीं दिया। गर्दन झुकाकर, सीना ढीला करके, दोनों हाथ गोफ़ा लगाकर आगे रखकर, इसे उन्मुनी मुद्रा कहते हैं। भगवान में हमारा प्रेम था। भगवान की दया से हमें कोई तकलीफ़ न हुई। न भूख, न प्यास, न थकावट न निद्रा आई। सारे बदन व रोम रोम से नाम की धुनी रं रं रं रं होने लगी। बड़ा प्रकाश हुआ। मालूम होता था सब प्रकाश ही है। और कुछ नहीं देख पड़ा। फिर वह गायब हो गया और ज़र्रा ज़र्रा से धुनी होने लगी, हा हा कार मच गया। फिर राम जानकी की छटा सामने हो गई। महाराज महारानी मालूम होता था छिन छिन में पोशाक बदल रहे हैं किसिम किसिम की। पाँचवें दिन कहा, 'उठौ अश्नान करौ' अश्नान के बाद एक मोटी रोटी का टुकड़ा वज़न में एक छटाँक का दिया। एक पाव पानी दिया। दिन भर हिन्दुन के यहाँ मजदूरी कराते, जो पैसा मिलता उसे खैरात कराते। पाँच साल एक टुकड़ा रोज़ रोटी का देते। एक पाव पानी देते, मजूरी कराते, खैरात कराते। 11 बजे रात को सैन कराते, 2 बजे उठाकर अश्नान कराते, 10 माला ओंकार का जप कराते।

5 साल में सब देवताओं के दर्शन, सब के घर दिब्य भोजन को सूक्षम शरीर से जाने लगे। सारी सृष्टि अपने शरीर में और सारी सृष्टि में अपने को देखने लगे। शुभ लोकों से तार आने लगे। सब देवी देवताओं से सतसंग होने लगा। तमाम सिद्ध सन्त मिलने लगे। फिर 40 दिन की समाधि सिखा दिया। तब घर को भेजा।''

एक दफ़ा (बार) जौ या गेहूँ की रोटी मूंग की दाल खाते। दो बजे रात नहाते थे। पसारखाने का काम था और कुछ खेती थी। जवानी में 4 आदमी काम करने में हार जाते थे और बुढ़ापे में दो आदमी हार जाते थे। घर में एक भाई जुम्मन थे, उनकी औरत और लड़का था। इनके भी एक लड़का था, उसे भजन बता गये हैं। घर में सादा भोजन बनता था। लहसुन, प्याज कुछ नहीं बनता था। हिन्दू सीखने आते तो सब सामान

कुर्मी पड़ोस थे, दिला देते। एक दफ़े सादा भोजन कराते। मुसलमान आता तो घर से खिला देते थे। सात दिन आँख बन्द कराकर गर्दन झुकाकर वैसे ही बैठारते थे। उसी से साधक को कुछ-कुछ होने लगता था।

दूध घी कुछ नहीं बताते थे। हमने पूछा तो कहा "धातु रूखे भोजन से कड़ी हो जाती है। दूध घी से पतली होकर के फेंक देती है। माँस, मछली, लहसुन, प्याज, तेल, खटाई, मिरचा, करेला, कड़ू-मूली यह काम बासना को तेज करती हैं। मीठा शुद्ध एक छटाँक जलपान को काफ़ी है। जितने नशा हैं, वह भजन के बाधक हैं। अपनी सच्ची कमाई का अन्न और चोरों से बचना तब होता है जब अच्छी संगति हो। अच्छे-अच्छे ग्रंथ जो हैं उन ऋषियों ने जैसे प्रचार किया है वैसे तुम अमल करो। साधक जहाँ दुनियाबी बातें होती हों वहाँ न जाय। उसके पास कोई आवै संसारी बातैं करै तो उसके हाथ जोड़ दे: 'हम साधक हैं नीचे गिर जाएंगे।' किसी का जीव व जीविका जाती हो तो झूंठ बोलने में हानि नहीं है वैसे झूठ न बोलै। बिना सत्य को पकड़े सत्य वस्तु न मिलेगी। आँख से देखे हो तब भी कुछ न कहौ उसमें भी करने वाला न मानैगा।"

भूलन शाह की थोड़ी उम्र में कोई चिश्ती हो गए हैं उनके शिष्य होकर भजन सीखा था। स्वामी जी (रामानन्द जी) के समय में भी एक चिश्ती हो गये हैं, उनको अधिक दिन हो गये। भूलन शाह ने अपने अलिफ़नामे में लिखा है चिश्ती से तरीका लिया। इलाही ने 85 की उम्र में शरीर छोड़ा।

श्री इलाही जी, उमरायगंज सीतापुर, अपढ़ हैं।

पदः– तुम्हैं हम देखत रहत सिया राम ।।1।।
नाम कि धुनि हर शै से होती ररंकार बसुजाम ।।2।।
सुर मुनि सब नित दर्शन देते सब को करत प्रनाम ।।3।।
चौरासी का चक्कर छूटा सुफ़ल भयो नर चाम ।।4।।
समय स्वाँस तन है अमोल यह पाय करौ शुभ काम ।।5।।
शुभ से गती अशुभ से दुर्गति दोनों दिसि बदनाम ।।6।।
भूलन शाह हैं गुरु हमारे बास नेवादा ग्राम ।।7।।
कहत इलाही सुमिरन करिये यही अन्त दे काम ।।8।।

27. श्री भूलन शाह जी
गाँव नेवादा, जिला सीतापुर

सोंटा पाँच तत्व काः-

[1]

क्या भयो लिखने पढ़ने से क्या भयो रोज़ा के रखौटे से।
क्या भयो काबा के जाने से क्या भयो मत्था के घसौटे से ।।
क्या भयो चिल्ला के खींचे से क्या भयो अल्ला के कहौटे से।
भूलन शाह कहैं सुन मूरख राखौ साँस मंझौटे से ।।
मानौ तो मूरख भली बात है न मानौ तो सोंटे से ।।1।।

[2]

क्या भयो अज़ान कहे से क्या भयो मसजिद के पैठे से।
क्या भयो कुरान पुरान पढ़े से क्या भयो महफिल के बैठे से ।।
क्या भयो बाज़ बयान सुने से क्या आलिम के ठैंठे से।
भूलन शाह पाक तब ह्वै हो दिल को लखौ कसौटे से ।।
मानौ तो मूरख भली बात है न मानौ तो सोंटे से ।।2।।

[3]

क्या भयो सर मूड़ मुड़ाय क्या आबलक के सफौटे से।
क्या भयो कफनी के पहिने से क्या भयो सेली के गजौटे से ।।
क्या भयो तस्बी के बाँधे से क्या सुमिरन के हतौटे से।
भूलन शाह कहैं सुन मूरख ह्वै है प्रेम के औंटे से ।।
मानौ तो मूरख भली बात है न मानौ तो सोंटे से ।।3।।

[4]

क्या भयो मोहनी बोले से क्या भयो शंखों के फुकौटे से।
क्या भयो गल मुंदरी बजाये से क्या पूजा के करौटे से ।।
क्या भयो श्लोक के पढ़ने से क्या बम्भन के चुनौटे से।
भूलन शाह कहैं सुन मूरख होवेगा दुई को मेटे से ।।
मानौ तो मूरख भली बात है न मानौ तो सोंटे से ।।4।।

[5]

क्या भयो भजन के नित गाये क्या खँझड़ी के पीटे से।
क्या भयो माला के फेरे से क्या कंठी के लपेटे से।

क्या भयो तीरथ के जाने से क्या काशी के करौटे से।
भूलन शाह कहैं सुन मूरख ह्वै है आप को मेटे से ।।
मानौ तो मूरख भली बात है न मानौ तो सोंटे से ।।5।।

शेरः– सोंटे पाँच तत्व हम कहै पाँचों का मजा भूलन शाह लै रहै।

दोहाः– जो दुबिधा में फँस रहे, न किये वे प्रेम से चाह।
उनका दोज़ख यहीं है, कहा है भूलन शाह ।।

28. लाला रामदीन
जिला, गाज़ीपुर

गाज़ीपुर ज़िले के एक लाला रामदीन आए। गाँव का नाम हम भूल गये हैं। अरसा 45-46 साल का हो गया। वे दुर्गा जी के भक्त थे। एक दिन रात में भगवती ने कहा, ''तुम राम मंत्र ले लो। हम भी राम मंत्र जपती हैं। हमारे सामने राम जानकी की छटा हर समय रहती है। तुम काशी जाकर गंगा अश्नान करके शंकर जी, अन्नपूरना जी, हनुमान जी, भैरव जी के दर्शन करके और जहाँ जहाँ दर्शन हैं, करके एक रात रुक कर फिर अवध जाना तुमको वहाँ गुरु मिल जाएंगे।''

वे काशी आये। जैसा भगवती ने बताया था उसी प्रकार सब किया। फिर सुबह माधौराज आये। जैसा भगवती ने बताया था उसी प्रकार सब किया और त्रिबेणी के हाथ जोड़ा कहा, ''हम अवध जाते हैं। दुर्गा माता ने कहा है कि तुमको वहाँ गुरु मिलेंगे।''

लाला जी के साथ दो मूर्ति और थीं। पहले सरजू जी नहाकर मुख्य-मुख्य दर्शन करके नये घाट बाबा तुलसी दास मंदिर के मंदिर में गए। वे समझे गोस्वामी जी का मंदिर है। वहाँ सुखराम दास जी महन्त गिरदा लगाये आसन पर बैठे थे। उनकी दंडवति किया और कहा, ''हमें राम जानकी मंत्र देकर मार्ग बताओ जिससे बोध हो जाय।'' महन्त जी ने कहा, ''हम पण्डित हैं, वेद शास्त्र पढ़े हैं सब। सात पसेरी (पाँच सेर) पक्की सब मेवा का धूप, गोघृत मिला कर एक माह में हवन करते हैं। हमारी एक शिष्या लाला शंकर बक्स की धर्म पत्नी, ग्राम रामपुर जिला सीतापुर, की भेजती है। हमको खुद बोध नहीं है तो तुमको क्या बोध करावैंगे। भोग भोगते हैं। अच्छा अच्छा भोजन, अच्छे-अच्छे कपड़े, मान बड़ाई में मस्त हैं।''

तब लाला जी राम घाट पर आए मौनी बाबा के पास। वहाँ राम धुनि होती थी। जब बन्द भई तब लाला जी अपना हाल बताए। तो मौनी जी ने कहा, ''हमारे बड़े महाराज की परम्परा में एक सिद्ध रहते हैं। वे पढ़े नहीं है। उनका नाम श्री बेनी माधव दास है। वे गोरे-गोरे दोहरी देह के हैं। एक लँगोटी रखते हैं। उनके जाड़-घाम नहीं लगता है। यहाँ से एक फरलाँग पर एक कोठरी है उसमें एक चेला राम मंगल दास रहता है। वह भोजन बनाता है, बर्तन मलता, सब जाति की दवा करता, सबका मल मूत्र धोता, दवा का दाम नहीं लेता है, वहाँ जाव।''

लाला जी तीन आदमी वहाँ आये। शाम हो गई थी। महाराज जी रोज़ कथा में मनीराम जी की छावनी जाते थे। एक घंटा बैठकर हनुमान जी होकर आते थे। महाराज जी पग धोकर बैठे थे। हम भी बैठे थे। लाला जी महाराज जी की दंडवति करके बैठ गए। फिर अपना हाल बताया। महाराज जी ने कहा, ''कल आओ।'' लाला जी अपना नेम करके तीन मूर्ति दस बजे आये। हम 10 पर भोजन तैयार करते थे। महाराज जी ने भोग लगाया, सब को पवाया, फिर बैठक भई। महाराज जी ने कहा, ''तुम्हारा हाल गंगा जी, सरस्वती जी, जमुना जी, हम ध्यान में बैठे थे, तो प्रगट हो गईं। शुकुल वस्त्र धारण किये थीं और कहा, 'यह लाला रामदीन बड़ा सीधा निर्छरि जीव है। हमसे नहा कर प्रार्थना किया था कि हम अयोध्या जाते हैं हमें गुरु वहीं मिलेंगे।' दुर्गा जी ने भी कहा है। 'आप कल्याण के रुप हैं इसका उद्धार कर दो। जब से सृष्टि भगवान ने रची है तब से चौरासी में चक्कर काटता है। अब इसका समय आ गया है। एक जीव को संसार से निकालने में महान पुण्य है जिसे शारदा शेष भी वरनन नहीं कर सकते हैं।''' महाराज जी ने लाला को पहले मंत्र बताया, फिर दोनों मूर्ति को बताया। वे दोनों मूर्ति दूसरे दिन चले गए।

लाला जी को महाराज जी बासुदेव घाट पर (छावनी में बड़ी छावनी का एक मंदिर है, बड़े आदमी का बनवाया है, उसमें बहुत जगह है, दो मूर्ति छावनी की रहती हैं), रख दिये। लाला जी वहीं रहने लगे। जब 15 दिन जप किया, तो राम मंत्र जानकी मंत्र के अक्षर बड़े-बड़े सामने आ गये। तब महाराज जी से हाल बताया। महाराज जी ने कहा, ''तुम्हारे दोनों मंत्र सिद्ध हो गये।'' फिर महाराज जी ने उनको ध्यान बता दिया। रोज़ आते, चरनोदक लेते। थोड़ा परसाद हम रख देते थे, वह पाते। फिर

उनकी दशा विचित्र हो गई। पेन्शन पाते थे। अपनी कमाई का अन्न खाते थे। लड़का, पोता व और सब थे। घर से पत्र आया करते थे। जब सब कुछ प्राप्त हो गया, तब महाराज जी ने कहा, ''अब तुम घर को चले जाव।'' फिर महाराज जी की पूजा करके, चरनोदक लेकर, भोजन करके घर चले गये। घर के सब जीव बड़े लायक थे। लाला जी की आनन्द की बातैं हम कहाँ तक लिखैं। वहाँ से पत्र लिखा था, ''हम महाराज जी का रोज़ चरनोदक लेते हैं। जब भोग लगाते हैं तब महाराज जी प्रगट होते हैं। तब हम पाते हैं। जब हमें प्यास लगती है तो महाराज जी को जल अर्पण करते हैं तब महाराज जी पीते हैं। जो छोड़ देते हैं उसमें हम जल मिलाकर पीते हैं। यह लीला रोज़ होती है।'' हमने सब संक्षेप लिखा है।

6 माह पहले कहा था, ''हम फ़लाने दिन शरीर छोड़ेंगे।'' जब वह दिन आ गया तो सब से कहा ''भोजन कर लो।'' सब ने भोजन किया। आपने स्वयं भी भोजन किया। एक घंटे बाद सबसे कहा, ''हमारा समय आ गया। जिसका जिस देवी देवता से प्रेम हो उसमें लग जाय उसका कल्यान होगा।'' फिर कहा ''देखो विमान चालक कह रहे हैं चलो! चलो!!'' बस बैठे-बैठे शरीर छोड़ दिया। हमने संक्षेप में लिखाया है।

29. सुन्दर दास अहीर
ज़िला सीतापुर

एक सुन्दर दास अहीर था। पहले मज़दूरी करता था। फिर साधू हो गया। बलदेव सिंह, जस करन सिंह, हरी दास तथा देवी दीन ब्राह्मण के संग रहने लगा। समय आ गया, भगवान की दया हो गई। एक आदमी धनी था। कुछ रोग हो गया। सुन्दर दास से कहा, ''बाबा! कुछ दवा बताओ।'' बाबा ने कहा, ''अपनी श्रद्धा माफ़िक (अनुसार) साधू ब्राह्मणों को भोजन कराओ। कुआँ के पास एक गढ़ा खोदो। सब के चरण धोवो। वह जल 12 बोतलों में रख लो। बाकी सब खेतों में छुड़ा दो। वही जल सुबह, दोपहर, शाम को थोड़ा पी लिया करो।'' भंडारा हुआ। सब काम उसी तरह किया। 2 माह में उसका रोग चला गया। शरीर पुष्ट होकर चमकने लगा, खेतों में खूब पैदावार होने लगी। उसका भाव और विश्वास अटल हो गया।

एक आदमी आया और कहा, ''हम बद्री नारायण जायँगे'' तो कहा, ''उसी पैसे से साधू-ब्राह्मण और गरीबों का भंडारा कर दो। यहीं दर्शन देंगे।'' उसने वैसा ही किया। भगवान ने आकर दर्शन दिया। भगवान ने कहा और सर पर हाथ फेरा, ''जिसका भाव ठीक है उसके लिये हम हर जगह मौजूद हैं। जिसका भाव ठीक नहीं है वह कैसे जानेगा। गती भाव से होती है।''

30. बूढ़ी माता
हुसेनगंज, लखनऊ

इनके गुरु एक लाला हनुमान जी के भक्त थे। एक नाल पत्थर की थी। उसमें बजरंग बली लिखा था। उसी में शंकर भगवान पधरे थे। बहुत विशाल मूर्ति करीब ढाई सेर की थी। बूढ़ी माता को शंकर भगवान का मंत्र बताया था– ''ओँ नमः शिवाय''। यही जपती थीं और शंकर जी की पूजा करती थीं। बहुत गरीब थीं। एक लाला राय साहब एक कोठरी दिहे थे। उसी में रहती थीं। दो लड़के थे। एक नौकर था। उसके लड़के लड़की थीं। बूढ़ी माता के भी लड़की थीं। सब की शादी हो गई थी। उनके लड़के लड़की थीं। यह हम भूल गये कि कै लड़की थीं। एक लड़का बिना शादी के था। वह घर से आकर कुछ पानी आदि भरकर रख देता था। वह घर से कुछ न माँगतीं न लेती थीं। कोई मोहल्ले का कुछ दे गया तो बनाकर खा लिया नहीं तो नमक की डली मूंह में छोड़कर पानी पी लिया। आठ-आठ दिन ऐसे बीत जाते थे। कुवाँ करीब था। जाड़े में शंकर जी कहते थे, ''बीस दफ़े (बार) अश्नान करो।'' तो लोटा डोर लेकर जातीं पानी भरने तो शंकर जी कुवाँ का पानी चहला (कीचड़) कर देते थे। उसे ही लोटे में भरतीं। बीस बार शरीर में लेस लेती थीं। बहुत बड़ी कसनी करते। एक बार बूढ़ी माता ने कहा, ''आप कब तक ऐसा करेंगे'' तो शंकर जी ने कहा, ''चुप रहो। जैसा हम कराते हैं करती जाव तब पट खुलेंगे।'' चुप हो गईं। बड़ी कसनी सहा। सब देवी देवता मिलने लगे। तब कृष्ण भगवान ने कहा, ''तुम्हारे प्रेम से हम सब आते हैं। जब तक हमारा नाम नहीं जानोगी तब तक हमारे पास नहीं पहुँचोगी।'' हमारा नाम बताया, कहा कि लाला गुरु प्रसाद के यहाँ से

फ़लाने दिन आवेंगे राम बाग, कानपुर से। लाल कुएँ पर गार्गी दत्त के यहाँ ठहरेंगे। लड़के को भेज कर बुला कर नाम की बिधि जान लेना।

जिस दिन हम लखनऊ आए, लड़का आया और कहा, ''हमारी माता ने आपको बुलाया है।'' हम चल दिये। वहाँ से शायद एक फरलाँग था या कुछ अधिक। गए तो 5-7 मुनक्का धरा, एक बत्ती की आरती किया। भोग लगाया और मुनक्का थोड़ा-थोड़ा सबको दिया। फिर एक छोटे बरतन में खिचड़ी बनाई, शायद बनी बनाई आधा सेर होती। थाली में परसा, भोग लगाया। सब देवी देवता देख पड़े। थोड़ी हम खाया। फिर सब को बाँटा। मूँग की खिचड़ी में नमक पड़ा था। उसमें बड़ी महक थी। जिन लोगों ने खाया, कहा, ''ऐसी खिचड़ी हमने कभी नहीं खाई। बड़ा स्वाद है।'' हमने कहा, ''यह कर्मा माई का अंश हैं। जगदीशपुरी में समुद्र के करीब झोंपड़ी थी। सबेरे 4 बजे खिचड़ी बनाती थीं। भगवान बालक रूप से पाकर अन्तर हो जाते थे। वही बचा परसाद पाती थीं। चूल्हे की राख हटा देती थीं। कभी चूल्हा नहीं पोतती थीं। भगवान की आनन्द में मस्त रहती थीं।'' सब ने यह बात सुना। फिर हम पाकर बैठे तो भीड़ हो गई। उनको कुछ बता न सके। लौट गए।

दूसरे दिन हम अकेले गए तो भगवान ने कहा कि आध पाव हलुवा बना लेना और हाँडी में खिचड़ी। उससे कुछ अधिक वैसे ही बना था। धरे रहीं। 5-7 मुनक्का भोग लगाया, आरती किया। खिचड़ी परसी, हलुवा भोग लगा कर बैठे। फिर उनको ध्यान बताया। उनका सब काम हो गया था, सिर्फ नाम खुलना बाकी थी। वह ऐसा खुला कि हा हा कार मच गया। फिर लोग आ गए। सब को परसाद दिया गया। फिर आसन पर आए। जब हमें मिली हैं तो 60 के ऊपर थीं, साँवली सी, ठमके कद की पतली-पतली। शरीर महकता था। पद्मिनी पत्नी का शरीर महकता है। शरीर बहुत गरू (भारी) था। फिर हमारे साथ कानपुर आईं। 15 दिन रहीं। वहाँ हमने 18 रुपये का बंधान करा दिया, कपड़े दिला दिये। हमसे कहा, ''भगवान ने कहा है कि चूड़ी पहिनो।'' चूड़ियाँ मँगाई, पहनाई गईं, परसाद बटा। फिर एक दिन कहा कि भगवान ने कहा है "नथुनी पहिनो।" एक छोटी नथुनी बनवाई गई, पहनाई गई, परसाद बटा। फिर एक दिन कहा कि भगवान ने कहा है ''जनेऊ पहिनो।'' पाँच ब्राह्मण बुलाकर जनेऊ पहनाया गया, परसाद बटा। थोड़ा हल्का फलाहार करने लगीं। जब जनेऊ बढ़ जाय तो हनुमान जी कहैं,

''जनेऊ बदलो नहीं तो हम दंड देंगे।'' तब जनेऊ बदलैं। फिर हमारे साथ लखनऊ आईं। जहाँ रहती थीं वहाँ भेज दिया। एक शंकर जी की मूर्ति चबूतरे पर पधरी थी। किसी मोहल्ले में वहाँ एक हनुमान जी की एक बीता की मूर्ती थी बहुत पुरानी। उसमें कभी सिंदूर लगा होगा। कुछ कुछ मालूम होता था। लड़के ने लाकर दिया। उस मूर्ति को नहवाया तो हमसे कहा, ''वै हमारी तरफ मुलुर मुलुर चितवै लगे, कहा, 'हमैं रोज नहवाया करौ।' तब से रोज़ नहवाती हूँ।'' उनका सब देवतन से प्रेम था।

जब हम जाते थे तो एक छोटी चौकी थी हमारे गाँठिन के बराबर। उसी पर लेटते थे अपना भी उसी पर लेटती थीं। हम रात में कई बार पैर पसारते फिर समेटते थे। वै ठमकी थीं। उनको कुछ तकलीफ नहीं होती थी। हमारा हाल द्वापर का बताया था।– कृष्ण भगवान ने कहा है, ''यह हमारा सखा शुकदेव ग्वाल है। हर समय संग नाचता, गाता था और दूध लूटने में संग रहता था।'' अँगूठे की गाँठ के ऊपर एक फुड़िया निकली। शाम को एक मक्खी ने उस पर हग दिया। कुछ देर में कीड़े रेंगने लगे छोटे-छोटे तो देखा। बस एक कपड़ा उस पर लपेट दिया, कहा ''मौज करौ खूब खाओ। हमैं कुछ तकलीफ न होगी। अब हमें भगवान के धाम जाना है।'' कीड़े बड़े हो गए, खाने लगे तो कपड़ा नीचे से गाँठि के करीब तक लपेटा। वहाँ तक कीड़े सब खा गए। सिर्फ़ हड्डी रह गई और बदबू न आई।

जब समय आ गया तो कहा, ''जो जो देवता हमें रोज़ मिलते थे सब आ गए हैं और बाजा बजा रहे हैं, झंडे फहराते हैं, नाच गान हो रहा है, बीच-बीच में जै-जै की धुनि सुनाई देती है। विमान आ गया, आवाज़ आ रही है ''चलौ! चलौ!! चलौ!!!'' कृष्ण भगवान दाहिनी बाँह साधे हैं, बाईं बाँह शंकर जी, हनुमान जी ने साधा। फिर विमान पर बैठा दिया। पारषद लै कर चल दिये। कैलाश दर्शन करके इन्द्रपुरी में इन्द्र ने धूप आरती किया। वहाँ से चारौं बैकुण्ठ में चारौं नारायण के दर्शन किया। फिर गोलोक में दर्शन करके साकेत पहुँच गई। वहाँ रामजी ने उठ कर अपने हाथ से वस्त्र भूषण साज कर सिंहासन पर 12 वर्ष का शरीर बना कर पुरुष का बैठा दिया। जो माई भजन करती हैं वह वहाँ पुरुष बना दी जाती हैं। चारौं बैकुण्ठों में स्त्री पुरुष 12 वर्ष के रहते हैं। वहाँ साकेत में खाने पीने को कुछ नहीं है। और लोकों में खान-पान बातचीत है।

बड़ा विस्तार है। हमने थोड़ा लिखा है। लिखने में आवाज़ बहुत बढ़ जाती है, हा हा कार मच जाता है, नशा ऐसा सवार हो जाता है।

जहाँ दाह होती है वहाँ ले जाने के समय पैर का कपड़ा खोला गया तो तमाम कीड़े ज़िन्दा गिरे और हड्डी रह गई थी। माँस, नसैं सब खा गये थे। इतना तन्मय थीं। कुछ तकलीफ न हुई। सात बर्ष की उम्र से शंकर जी में प्रेम था। 12 की उम्र में मंत्र लिया। उनके गुरु कह गये थे कि तुम्हारा काम घर ही पर हो जायगा, कहीं जाना न पड़ैगा। वैसा ही हुआ। कह गईं थीं, ''गोमती के पास जहाँ मरघट है वहीं शरीर जला देना।''

उन्होंने 82 पर शरीर छोड़ा था। यह बात बाकी रही। बूढ़ी माता से पूछा, ''तुमको शंकर जी जाड़े में 20 दफ़े नहाने की कहते थे। फिर जब तुम लोटा लेकर कुआँ पर जाती थीं तो पानी सुखा देते थे। वही चहला 20 बार शरीर में लेसती थीं थोड़ी-थोड़ी देर में तो ठंड नहीं लगती थी?'' तो कहा ''जो परिक्षा करता है वही रक्षा भी करता है। अगर ठंड लगती तो शरीर ऐंठ जाता। थोड़ी देर में सूख जाता था। हाथों से रगड़ देती थीं। सब राखी ऐसा झर जाता था। फिर जाकर लोटा से भर कर लेस लेती थीं। ऐसा 20 बार करती थीं। हमें कोई कष्ट न होता था। देखने वालों को कष्ट होता था। वे बेचारे क्या जानें, इसमें कौन रहस्य है।" जब 12 की उम्र में मंत्र लिया था तो एक दिन रोटी बनाती थीं और मंत्र जपती थीं। मन कुछ विचलित हुआ तो चिमटा गरमा कर बाँये हाथ पर धर दिया तो छाला पड़ गया। कहा, "अब फिर भाग जाओ तो जानैं।'' लाला शम्भू दयाल ने एक दिन कहा, ''माता! हमारे घर न चलोगी'' तो पाँच मिनट बाद कहा, ''हम दुर्गा जी के साथ देख आईं। घर का सब जुगराफ़िया (नक्शा) बता दिया।''

31. श्री शुक्र शाह जी
देहली

यह हमारे ध्यान में 7 जनवरी 1974 को आये। पहिले यह पद सुनाया-

पदः- पाँचौं चोर बिलरिया लीन्हे भक्त की करैं परिच्छा ।।1।।
जो डिगि जाय उसे धरि धमकैं छीनै सुकृति कि भिच्छा ।।2।।
शाँति दीनता धारन करि कै सतगुरु से लै दिच्छा ।।3।।

तन मन प्रेम लगाय जाय जुटि सुर मुनि की यह सिच्छा ।।4।।
जियतै चेति करौ नर नारी पूरन होवै इच्छा ।।5।।
शुक्रशाह कहैं तब यह चुप ह्वै भागै छोड़ि के पिच्छा ।।6।।

वार्तिकः-

फिर कहा, "राम-जानकी, राधा-कृष्ण, विष्णु लक्ष्मी की झाँकी हमारे सामने हर समय रहती है। सब देवी देवता रोज़ दर्शन देते हैं। राम नाम की धुनी तमाम ब्रह्मांडों से और रोम-रोम ज़र्रा-ज़र्रा से होती है। हम राम नाम का जप बहुत किया। उसी से सब खुल गया। एक कौर गूलर की पाती व बेल की पाती रोज़ खाया और एक पाव पानी पिया। दो लँगोटी राखा। पेड़ के नीचे रहा। 12 वर्ष के बाद षट रूपौं ने अजर अमर कर दिया, सब लोकों में जाने की शक्ति दे दिया।

कुरुक्षेत्र रण भूमि में जहाँ कौरौ-पाँडौं का युद्ध हुआ था, वहाँ सूर्य्य ग्रहण में मेला होता है। वहाँ पर योगानन्द जी से और मियाँ चिश्ती से भजन की बातैं होती थीं। वहीं शुक्र शाह को उपदेश दिया गया था।

32. भदरसा का मेहतर
जिला फैजाबाद

आँख देखी बात है, 40 साल हुए (सन् 1934)। भदरसा में एक मेहतर हुआ है, यहाँ से शायद सात कोस हो। 11 की उम्र में कहीं सुना ''ईश्वर सर्वत्र है।'' तो कहने लगा कि कहाँ कहाँ आँखैं फैलावैं। उसने झाड़ू उठाया और कहा, ''रास्ता बुहारैं जिसमें भगवान को चलने में कोई तकलीफ न हो।'' तीन दिन बुहारा। राम-जानकी, लखन लाल प्रगट हो गये। हर समय साथ रहते थे। घर छोड़ कर घूमने लगा। चारौं धाम घूमा। रात दिन झाड़ू लगाता था। थकता नहीं था। जाड़े का महीना था। एक कपड़ा कमर में लपेटे था। 40 की उम्र में यहाँ (अयोध्या जी) आया। आठ दिन रहा। वह हर समय मुसक्याता था और झाड़ू लगाता रहता।

हमने पूंछा ''कौन भजन करते हो?'' तो बताया कि भजन नहीं जानते। ऐसा सुना, तब से झाड़ू लगाना शुरू कर दिया, 3 दिन बाद राम-जानकी, लखन लाल हर समय साथ रहते हैं। स्टेशन पर उतरैं तो बाबू पूंछैं ''तुम कौन हो?'' तो कहैं ''राम जी का मेहतर हूँ'' तो बाबू चुप रहैं। हँसते हँसते शरीर छोड़ा 40 की उम्र में।

33. जनकपुर की ब्राह्मणी

जनकपुर की माई ब्राह्मणी के तीन लड़के थे। वह थी और कुछ खेती थी। पति 12 साल से मौन रहते थे। माई को रामायण से प्रेम था। स्वत: पढ़ लिया। चारौं धाम घूमी थी। प्रयाग जा रही थी। हम भी उसी गाड़ी में बैठे थे। स्टेशन पर उतरे। वह भी उतरी। एक धोती फटी थी, एक कुछ ठीक थी। एक पुराने टुकड़े में पोथी बंधी थी। एक छोटी थाली एक लोटा था। किसी आदमी ने एक छटाँक गुड़ दिया। पानी लाई, पोथी खोला। राम जानकी एक एक फुट के अन्दाज़ निकले और राम जी ने कुछ पाया, फिर महारानी जी ने पाया। जल पिया राम जी ने, फिर महारानी जी ने पिया। कुछ परसाद छोड़ गये और उसी रामायण में समा गये। माई ने पुस्तक बाँध कर रख लिया। जो परसाद छोड़ गये थे उसे पाकर जल पिया।

हम देख कर मस्त हो गये, आँसू चलने लगे। ऐसे ऐसे प्रेमी भक्त संसार में हैं। कहाँ तक लिखैं। इन बातौं पर विश्वास सब को नहीं हो सकता। सैकड़ों में कोई मानैगा जो कुछ देखे होगा।

34. चित्रपट बोलते हैं
(एक अहीर का घर में, नीमसार से एक मील पश्चिम)

18 की उम्र में हम चार साल घूमे हैं। नीमसार से पश्चिम एक मील निकल गये। बृन्दावन जाते हुए दो साधू मिले। एक चमार था, एक अहीर था। दोनों सिद्ध थे। हमसे कहा "चलो दर्शन करावैं।"

एक अहीर घर के गरीब थे। उम्र करीब 70 के होगी। सब परिवार था। उससे पश्चिम हट कर थोड़ी दूर पर एक चौपारि थी। उसमें एक खटोला पर सफेद कपड़ा बिछा था और चारौं धाम के चित्र एक एक बीता के पधरे थे। चौपारि में कड़े में रस्सी बँधी थी। उसमें खटोला टँगा था। गुड़ का शरबत घोल कर भोग लगाते थे और बैठे झुलाया करते थे। हम साढ़े ग्यारह पर दिन में पहुँचे तो सब चित्रपट उनसे बोलते थे। सुन कर खड़े रहे फिर बैठ गये। दंडवति किया, वै उठे, चूल्हा जलाया, आटा भिजाया, घुइयाँ का साग, रोटी बनाया। दोनों साधून को खवाया, हम खाये। फिर कुछ देर रुक कर लौट पड़े। नीमसार को चले आये।

उनमें बड़ी दीनता और शान्ती थी। हर समय प्रसन्न चित्त रहते थे। पढ़े कुछ न थे। दया की मूर्ति थे।

35. श्री भरथरी जी से भेंट

मैगलगंज स्टेशन से दो कोस पर पारासर मुनि के पधराये पारासर महादेव हैं। केवाड़ रात दिन दोनों तरफ़ खुले रहते हैं। रात में कोई चौतरे पर नहीं रहता है। वहाँ सिद्धों की गुफा है। ऊपर मिट्टी से ढके हैं और कई तरह के पेड़ शिव जी से करीब ही हैं। सिद्धों की झुंडी उसे सब लोग कहते हैं। उन सब के गुरु एक हैं, चेला बहुत हैं। गुरु चेला अजर अमर हैं, शंकर जी के भक्त हैं। रोज़ पूजन करते हैं। चेला घोड़ा बन जाता है, गुरु सवार होकर आते हैं, नहा कर पूजन कर फिर उसी झुंडी में प्रवेश हो जाते हैं। बारी बारी चेला गुरु को घोड़ा बन कर नहवा ले जाते हैं। आज एक, कल दूसरा, परसों तीसरा, नरसों चौथा, इस प्रकार सब सेवा करते हैं। वहाँ पाराशर की मठिया बजती है। हर अमावस को मेला लगता है। फिर सब चले जाते हैं।

वहाँ हम दो माह रहे। बाबा टीका दास का कोई भक्त ठाकुरद्वारा बनवाया है। राम जानकी, लखन लाल पधरे हैं। थोड़ी दूर मंदिर गोमती किनारे है। औरंगजेब बादशाह ने शिव जी में एक लोहे की कील ठोकवाया था तो तमाम हाड़ा (बर्रैं) प्रगट हो गईं, फौज को काटने लगीं। भगदड़ पर गई। अमावस रही। वहाँ गोशाला है। दूध गौवों का था तो बाबा ने महाराज जी से कहा "खीर खाली बना कर साधुओं को व ब्राह्मण जो हैं उनको पवा दो।" हम शक्कर लेने गये हलवाई की दुकान पर तो भरथरी घूम रहे थे। बहुत गोरे गोरे थे, बाल दाढ़ी सुनहरे थे। मालूम होता था कि 25 साल के हैं। जनेऊ पहिरे थे। पुराना साफ़ कपड़ा लपेटे थे कमर में। जो कोई भीड़ में धक्का दे तो मुस्करा देते थे। महाराज जी हमें उनका भेद बता चुके थे, हम समझ गए। आकर बाबा से कहा। बाबा ने कहा "तलाश करने से मिलेंगे।"

सब को खीर बना कर पवाए तो शाम हो गई। मेरा चित्त न लगा। एक लड़की अहीर की थी। वह कुटिया पर से सब के साथ आई थी, दर्शन करती थी। बाबा ने कहा कि अपने परिवार के संग घर जाव तो कहा "नहीं।" दो कोस जाना था। बाबा ने हमसे कहा कि इसे इसके

घर भेज आवो। हम चल दिये। तब एक घंटे में चार कोस चलते थे। वह एक फरलांग पीछे रहती थी। हम उसके घर पहुँच गये। माँ बाप से कहा "तुम्हारी लड़की आ रही है, हम वापस जायँगे।" जब वह आ गई तो थक गई थी। बैठ गई।

हम चल दिये। दो कोस गए तो सूर्य बैठ गए। इधर से गये तो नाव उधर बाँधी थी। हम एक धोती रखते थे। उसे कमर में बाँध कर लँगोट चढ़ा कर कूद पड़े बीच में। एक तख़्त भर की मिट्टी की टेकरी रही उस पर दूब जमी थी। दोनों तरफ़ से पानी बहता था। ऊँची हमारे गले भर थी। उसी पर श्री भरथरी जी बैठे थे। हमसे महाराज जी ने कहा था कि कोई ध्यान में बैठा रहै तो बोलाने से बड़ी हानि होती है। हम चले आए, कुछ बोले नहीं।

आकर बाबा टीका दास से सब हाल बताये। वह कुटी पर कह रहे थे हमें कि वह चले आवेंगे, रुक नहीं सकते। वह आ रहे हैं। थोड़ी देर बाद हम पहुँच गए।

36. भक्त पूरन मल
स्याल कोट

जब स्याल कोट राजदानी में गोरखनाथ जी आए और आसन लगाया तो दो चेला संग थे–लक्कड़ नाथ जी और फक्कड़ नाथ जी। वह कुआँ में जल भरने गए तो उसमें पूरनमल की लाश पड़ी थी। शाम का समय था। कमण्डल छोड़ा तो लाश में अरझ गया। गुरु से जाकर कहा तो गोरखनाथ जी ने कहा, "पेल कर (घुस कर) निकालो, क्या है?" तो निकाला और गुरु के पास लाए। गोरखनाथ जी ने ध्यान किया, जान गए। मंत्र पढ़ा, फूंक मारा तो पूरनमल उठकर बैठ गए। फिर उनको मंत्र की दीक्षा दी। 12 साल के थे और लेकर संग में चार धाम घूमे। फिर गुरु के संग में 12 साल रहे। भजन सीखा अजर अमर हो गए। गुरु ने कहा, "बच्चा! तू जाकर अपनी मां को देख आ। वह रोते-रोते अंधी हो गई है।" पूरनमल दण्डवत करके चल पड़े।

वहाँ आये तो राजा के बागीचे में आसन लगाया। बिना ऋतु के फल फूल प्रगट हो गए, सूखे वृक्ष हरे हो गए। फूलों की महक से माली मस्त हो गए। माली राजा के पास गये और कहा, "एक साधू बागीचे में आया

है, बड़ा सुन्दर है, शरीर से बड़ा तेज चमकता है। उसके आने से बागीचे में फल-फूल फर गये, सूखे पेड़ हरे हो गए।" राजा और पूरनमल की दूसरी माता जिसने फाँसी दिलाया था, आकर देखा तो आश्चर्य में हो गए। पूरनमल ने पिता और दोनों माताओं के चरण छुए और हाल बताया। राजा रानी सब रोने लगे। पूरनमल ने पहले अपनी माता किछरा के नेत्र देखे तो कुछ सूझता नहीं था। मंत्र पढ़ कर जल का छींता नेत्रों पर मारा तो नेत्र शुद्ध हो गए। फिर माँ के पास बैठ गए। माँ ने गले से लगा लिया। सारा दुख शान्त हो गया। दूसरी माता से पूछा "मां! तुमने हमें फाँसी किस कारण दिलाया था।" तो कहा "हमारी इच्छा थी कि तुम्हारे ऐसा पुत्र हमारी कोख से जन्मै। तुमने हमारा कहा न माना इससे हमने फाँसी दिला दी। मैं काम के वश थी। तुमने हमको बहुत समझाया कि मैं आपका पुत्र हूँ, मैं ऐसा नहीं कर सकता, चाहे मेरा सर काट ले। पर उस समय मुझे कुछ ज्ञान न रहा।" तो पूरनमल ने कहा "माँ! तेरी मन्सा भगवान पूरी करैंगे। हमारे ऐसा ही पुत्र होगा।" तो दूसरी माँ चरनों पर गिर पड़ी और कहा, "हमारा अपराध बेटा क्षमा करो।" पूरनमल ने चट से उठा लिया और कहा, "तुमको धर्म के विरुद्ध न करना चाहिए। हमारे पैर छू लिया है। यह सब भगवान के यहाँ लिखा जाता है। हमसे पूछा जायगा तो हम क्या जवाब देंगे।" और कहा "भगवान ने तुम्हारा अपराध क्षमा कर दिया। हमारे गुरु जी ने इसीलिए यहाँ भेजा था सो सब पूरा हो गया।" फिर अपने पिता को उपदेश दिया–

दोहा:– जो सच्चे सतगुरु के चेला योगीबृन्द।
एक जगह रहना नृपति करते नहीं पसन्द ।।

चौबोला:– करते नहीं पसन्द ठैरना ज़्यादा योगी मन में।
ज्यों सरिता का नीर बहै त्यों तीरथ गन में ।।
काम क्रोध मद लोभ मोह ये ज़ाहिर दशौं दिशन में।
एक जगह रहने से नित यह डारत विघन भजन में ।।
साधू का भेष धारिकै, सकल कामना मारि कै,
दमन करि इन्द्रिन मन को, करै प्रभू का भजन,
प्रेम से पावै मुक्ति पद को।।

तब पूरनमल सत्य वादिन में शिरोमनि राजा हरिश्चन्द्र का वर्णन पिता को सुनाते हैं–

पद:– सत्य के मार्ग पर चलकर बशर जो दुख उठाता है।
वही फिर अन्त में जाकर बिला शक मुक्ति पाता है ।।
जहाँ है सत्य का बासा वहीं चारौं पदारथ हैं।
सर्व आनन्द देने का सत्य ही एक दाता है ।।
सहा दुख सत्य के पीछे हरीश्चन्द्र राव ने बेदम।
वो अब तक सत्य वादिन में शिरोमनि बर कहाता है ।।
सत्य ही सत्य सार है, नर्क का झूठ द्वार है।
अगर जो सत्य बोलैगा तो पावैगा मुक्ति पदारथ जग में न डोलैगा ।।

फिर राजा रानी सब की इच्छा पूरन करके कुछ समय बगीचे में रहकर पिता माता सब के चरन छूकर गुरु के पास आकर दण्डवत किया, सब हाल बताया। गुरु सुन कर बहुत खुश हुए। कहा, ''यह परउपकार बहुत ऊँचा हुआ। भगवान ने प्रेरणा करके हमारे मन में प्रवेश कर दिया। सब का भगवान समय निश्चित किये हैं।''

यह पूरन मल का चरित्र है। गोरखनाथ जी के यहाँ के सन्त बड़े मोटे, 75 साल की उमर, जटाजूट, काली अलफ़ी पहने आए। दो चेला बड़े गोरे-गोरे उमर 25 साल की होगी, संग थे। महाराज के दर्शन किया। भोजन कराये। करीब 2 घंटे रुके। हमने कहा, ''आप कुछ चरित्र जानते हैं सो हमें बताओ।'' तो वे सुनाने लगे।

वे बड़े जबर ज्योतिषी थे। महाराज का शरीर देख कर सब वर्णन कर दिया। ''आपका वीर्य ऊर्ध्व है। सीत उष्ण नहीं सताता। आपके सामने राम जानकी की छटा रहती है। आपको शिव जी ने 14 की उमर में ध्यान बता दिया, सब प्राप्त हो गया। फिर हनुमान जी ने उसी को दोहरा दिया। आपके पास तप धन बहुत है। आप स्वत: सिद्ध हैं।''

37. उपेन्द्र दत्त बंगाली
काशी

उपेन्द्र दत्त बंगाली ब्राह्मण काशी में पढ़ाते थे। फिर वह बदल कर फैजाबाद आये। 11 साल यहाँ पढ़ाया। हम से मंत्र राम जानकी का लिया। साधन करने लगे। जाड़े का महीना था। कृष्ण भगवान ने उनके लिहाफ़ पर एक पीताम्बर ओढ़ा दिया। वह मकान के आगे बरामदे में

थे। जब वह उठे और आवाज़ दिया तो उनकी धर्मपत्नी भीतर से जंजीर खोला। इन्होंने पूछा ''यह पीताम्बर हमारे लिहाफ़ पर कौन छोड़ गया?'' तो पत्नी ने कहा ''हम क्या जानैं, हम ने भीतर से जंजीर बन्द कर लिया था।'' हम और सरेसर के भक्त भवानी प्रसाद गये तो बताया और पीताम्बर देखाया। हमने कहा, ''यह पीताम्बर बैकुण्ठ का है।'' तब दत्त बाबू ने कहा ''कैसे मालूम हो?'' हमने कहा ''यह पानी में नहीं भीग सकता, नोचे से नहीं नोचा जा सकता, आगी में नहीं जल सकता और न काटे कट सकता है।'' यह परीक्षा की गई। कुछ न चली।

फिर भगवान ने कहा, ''अब किसी को न देखाना। लोग तुम को तंग करेंगे। तुम्हारे न रहने पर यह पीताम्बर अन्तरध्यान हो जायगा। जब तक तुम हो इसे पूजा में रखना।'' वैसा ही करते थे। फिर एटा बदली हुई, फिर मथुरा, फिर आगरा से रिटायर हुए। फिर मोदीनगर गये पाँच सौ (रुपये) पर, पाँच साल के लिये। फिर लखनऊ आए। उनका छोटा लड़का वहाँ पढ़ाता था। उसकी बदली काशी हुई तो वहाँ गये। वहाँ पर शरीर छूटा। वहाँ से पत्र आया। दो लड़के थे। बड़ा भी अच्छी नौकरी पर था। एक लड़की थी। कृष्ण भगवान चार भुजा के थे। हम से बड़ा लड़का ले गया था।

इनके पिता के कोई संतान न थी। एक संत जंगल में रहते थे। कहीं जाते न थे। इनके पिता तीन साल से रोज़ दर्शन को जाते थे। संत ने कहा ''किस काम के लिये तुम आते हो? कुछ कहते नहीं हो।'' तो कहा ''हमारे कोई संतान नहीं है।'' तो कहा ''शंकर जी का जो मंदिर है वहाँ रोज़ पूजन करौ'' इनके पिता जाने लगे। जब यह गर्भ में आये तो संत से हाल कहा। इनके पिता से संत ने कहा ''जब पैदा हो तो पता देना।'' जब इनका जन्म हुआ तो पिता गये। वह देखने आये और कहा ''यह बड़ा जबर भक्त होगा और परउपकारी।'' कुछ देर बाद जंगल को चले गये। फिर यह सयाने 5 साल के हुए, तो पढ़ने लगे। जो बताया जाय वह सब याद हो जाय। फिर लिखने लगे। कभी फेल न हुए। एम. ए. पास किया, वकालत पास किया। जो पढ़ने आता नाहीं नहीं करते, पढ़ा देते, पैसा नहीं लेते। फिर काशी में नौकर हुए। मंत्र लेकर साधन में लगे। रामायण से बड़ा प्रेम था। इनके संगी कई यहाँ हो गये। महाराज बहादुर माथुर, श्याम बहादुर अस्थाना, कृष्ण सहाय, नाथ परसाद, महादेव परसाद, सब मास्टर रहे।

जनौरा के जोती बक्स और इन सब ने हम से मंत्र लिया। दत्त बाबू पर भगवान की बहुत भारी दया रही। हर समय नाना प्रकार की लीला होती थी।

38. श्री खफ़ीफ़ शाह

अफ्रीका

आज रात (12-8-73) 3 बजे हम ध्यान में ऐसी जगह पहुँचे जहाँ नुमाइश सी लगी थी। तीन चार कोस का मैदान था जिसमें घास करीने से काटी गई थी। बीच में एक बड़ा पक्का कुआँ बना था। वहाँ सुन्दर घोड़े हाथी की दौड़ हो रही थी। फाटक पर दो मुसलमान पहरा दे रहे थे। एक मंडप एक किनारे बना था, जिसे चारों तरफ से कनातों से घेरा गया था। उसमें कसरत और कुश्ती हो रही थी। बड़ा मजमा था। तीन प्रकार के बन्दर, 12-12 मन के, वहाँ पर थे जिनके नाम बाद में हमें बताये गए (1) औरंगऊटन (2) गोरेला और (3) सिपैंजी। यह तीनों जाति के बन्दर अफरीका के जंगल में, दूसरे का नाम हम भूल गये, मिलते हैं। वहाँ पर सूती, ऊनी, व रेशमी कपड़े बिक रहे थे। वहाँ संसार के सब देशों से लोग आये थे–नैपाल, काश्मीर, अरब, अमरीका वगैरा वगैरा। सब मुसलमान ही मुसलमान नज़र आ रहे थे। सब बढ़िया बढ़िया कपड़े, साफा, पगड़ी व रकम रकम (भिन्न भिन्न प्रकार की) की टोपी पहने थे। वहाँ पर गाना बजाना हो रहा था। फाटक पर खड़े दरबान हमें अन्दर ले गये और सब ने हमें कायदे से बैठाया। एक बुजुर्ग ने कहा ''आप हमारे मज़हब को भी मानते हैं इस से आप को रोका नहीं। यहाँ हिन्दू नहीं आने पाते। हम एक घंटा तक वहाँ रहे। जब गाना बजाना हो चुका तो एक फ़कीर ने कहा ''हम अकेले एक झोंपड़ी में रहते हैं। हमारी फ़ौत हो तब हमारी लाश को दफ़न करा देना।'' सब ने ''हाँ हाँ'' कहा और हाथ उठाया। तब फ़कीर ने खड़े हो कर हाथ हिला हिला कर भाव बताते हुए नीचे लिखी शेर सुनाई। सब के आंसू गिरने लगे। फ़कीर का नाम खफ़ीफ़ शाह था।

शेरः– तन मन मुरीद मुर्शिद को देय,
तब मलक से फ़लक पर हो रहना ।।1।।

जियते में गोश औ चश्म खुलें,
तब साफ़ होय दिल का ऐना ।।2।।
हर वक्त खुदा का ज़िकिर करो,
यह सखुन सबों से कह देना ।।3।।
मेरी लाश ज़रा भी खराब न हो,
कच्ची कबर में दफ़न करा देना ।।4।।

39. करामत शाह

हमीरपुर

दोहाः– सरिता में जिमि मीन है वैसे जग में दीन।
बिन जाने जावैं गटकि रहते सदा मलीन ।।1।।
बिन मुरशिद दोज़ख पड़ैं छूटें नहिं गुण तीन।
कहैं करामत शाह भजि खोदा को लीजै चीन्ह ।।2।।

गजलः– क्या सान मान का है चसका मज़हब को मज़हब खाय रहे ।।1।।
त्यागे सब बैन बुजुर्गों के बस मन मानी खुद गाय रहे ।।2।।
दस झूँठी साँची एक कहैं ते जग हुशियार कहाय रहे ।।3।।
पढ़ि सुनि के कोरा ज्ञान कथैं मुरशिद बनि पाँय पुजाय रहे ।।4।।
धन ठगने हित चेला करते क्या कान में मंत्र बताय रहे ।।5।।
पत्थर की नाव बने बैठे औरों को संग डुबाय रहे ।।6।।
माया के चक्कर में परिके अपना परिवार बढ़ाय रहे ।।7।।
तन छोड़ि पड़ैं जब दोज़ख में सब के सब हाय मचाय रहे ।।8।।
झूँठे मुरशिद चेला झूँठे कहि मारैं जम दुख पाय रहे ।।9।।
अब ही तो ख्याल नहीं करते धोखे में उमिरि बिताय रहे ।।10।।
मुरशिद करि जियतै लखि लीजै घट ही में सुर
मुनि छाय रहे ।।11।।
असनान करो सब तीर्थ भरे अनहद धुनि मधुर सुनाय रहे ।।12।।
धुनि ध्यान प्रकाश समाधी हो सन्मुख सिय राम दिखाय रहे ।।13।।
सबमें हैं रमे नहिं भेद कोई सबको जल अन्न कराय रहे ।।14।।
नागिन षट चक्कर ठीक होंय सातौं क्या कमल फुलाय रहे ।।15।।

अजपा की जाप को जिन जाना सुखमन परि मौज
उड़ाय रहे ।।16।।
नहिं जीभ हिलै कर माल नहीं बस शब्द पै सूरति लाय रहं ।।17।।
जब नाम खुला तब क्या कहना अपनै अपनै को ध्याय रहे ।।18।।
तुमको अब कछु नहिं है करना आपै को आप रिझाय रहे ।।19।।
तन छोड़ि वतन को हो रुख़सत जहँ अगणित संत
दिखाय रहे ।।20।।
सब श्याम रूप औ चारि भुजा तन भूषन बसन सुहाय रहे ।।21।।
अनइच्छित बोलि नहीं सकते तहँ यानन बैठक पाय रहे ।।22।।
छबि यानन की को बरनि सकै क्या लहर लहर
लहराय रहे ।।23।।
पृथ्वी मणियों की भांति भांति क्या बृक्ष बिचित्र दिखाय रहे ।।24।।
हैं रंग रंग के फूल खिले तहँ मन्द सुगंधि उड़ाय रहे ।।25।।
अन्तर्गत प्रभु के महरानी लखि कोटिन मदन लजाय रहे ।।26।।
ऊँचा सिंहासन है सबसे पितु मातु उसी पर छाय रहे ।।27।।
कहते हैं करामत शाह सुनो सबके हित हम समुझाय रहे ।।28।।

शेरः– अभिमान जिस बशर के तन से हट नहीं सकता।
वह राम ब्रह्म के करीब अँट नहीं सकता ।।1।।
जैसे कि शालिगराम हों पय फट नहीं सकता।
वैसे ही सच्चा भक्त कभी हट नहीं सकता ।।2।।
कहता है करामत शाह करामात नाम की।
बेकार सिद्धियाँ हैं और कौन काम की ।।3।।
देंगी फँसाय जग में जाने न दें उधर।
कहते करामत शाह बस आशा लगी इधर ।।4।।

40. श्री भर भर शाह जी

पदः– मानो सब जन सखुन सुनि हमार चलो सतगुरु की शरन ।।1।।
शेरः– प्रेम तन मन से लगा निज को संभालिये भाई।
बृथा बातों में समय अपना न टालिये भाई ।।1।।
टेकः –यहाँ कोई नहीं है तुम्हार चलो सतगुरु की शरन ।।1।।

शेरः– ध्यान धुनि नूर समाधी में जहाँ जाओगे।
सारे पापों के ताप छिन ही में जलाओगे ।।2।।
टेकः–करैं सुर मुनि आय नित प्यार चलो सतगुरु की शरन ।।3।।
शेरः– साज अनहद की ताल घट में सुनौ बाजै जी।
राम सीता कि छटा सामने में राजै जी ।।3।।
टेकः–चखो अमृत मगन निशि बार चलो सतगुरु की शरन ।।4।।
शेरः– जागि कुण्डलिनी शक्ति चक्र घुमा लेवैगी।
कमल सातों को उलटि चट से खिला देवैगी ।।4।।
टेकः–खुशबू पाकर के हो मतवार चलो सतगुरु की शरन ।।5।।
शेरः– अन्त तन छोड़ि बास राम धाम होवैगा।
रूप रंग हरि सा मिलै फिर न गर्भ रोवैगा ।।5।।
टेकः–कहैं भर भर प्रभु सुमिरन है सार चलो सतगुरु की शरन ।।6।।

41. गंग कवि
दासापुर, जिला सीतापुर

कवित्तः–हो गया साँवरे तन पै आशिक अजब
इस गज़ब से न मंशा डिगाऊँगा मैं ।।1।।
चाहै कोई सज़ा मेरी काफिर करै
पर नहीं ज़ुल्म की जड़ जगाऊँगा मैं ।।2।।
जोड़ कर हाथ दिज गंग रफ़ते हैं
रफ़ते मोहब्बत से उनको पगाऊँगा मैं ।।3।।
छोड़ कर ऐश आराम दुनियाँ की सब
नन्द फ़रजन्द से दिल लगाऊँगा मैं ।।4।।

वार्तिकः–

दासापुर हमारे गाँव से 6 कोस है। जिला सीतापुर है। पं. बलदेव कवि हुए हैं उनके सात लड़के थे। सातौं की शादी हो गई थी। पंडित जी को हनुमान जी का इष्ट था। जहाँ कविता की एक कड़ी उनके पास आई, फौरन 3 कड़ी पूरी कर देते थे। लिखि दिये थे "अगर हम तुरन्त पूरी न करैं तो हमारा हाथ काट लिया जाय।" उनका लड़का छोटा 25 साल

का था। वह कृष्ण भगवान की चार कड़ी का कविता लिखा। भगवान प्रगट हो गए और कहा, ''चलो।'' फिर सब परिवार समेत बृज को गए और दर्शन किए। जमुना किनारे जा कर हँसते-हँसते शरीर छोड़ा। वहीं उनके बड़े भाई दाह संस्कार किये। दसवाँ तेरहीं सब वहीं हुआ। तब सब घर पर आये। यह बात दूर तक जाहिर हो गई। तब हम 12 बर्ष के थे। लड़के का नाम गंगा प्रसाद था। कविता में "दिज गंग" लिखा था।

42. सुचित्त शाह जी
पूना

सन्त रंगी राम शंकर जी के भक्त, उत्तराखंड से आये। हमारा (सुचित्त शाह जी का) प्रेम सन्तौं से रहा। एक पेड़ के नीचे बैठे थे। बूढ़े थे, गोरे रंग के, दाढ़ी केश थे। गर्मी का समय था। लंगोटी लगाए थे। एक साफी कमर में लपेटे थे। एक काठे की कठारी थी। दर्शन किया, हाथ जोड़ा तो कहा, ''क्या चाहते हो?'' हमने कहा, ''बाल भगवान राम के दर्शन की इच्छा है।'' तो कहा, ''अभी बताता हूं।'' तो हमसे कहा, ''तुम राम राम हृदय से जपौ।" हमने कहा, "कैसे जपैं? तो कहा, "हृदय पर सुरति लगाओ। थोड़े दिन में सुनने लगौगे। और एक बाल राम की परभाती बताता हूँ उसे सवेरे पाठ किया करो। गोस्वामी तुलसीदास की बनाई है। तुम्हारी इच्छा पूरी हो जायगी।'' हम कागज़ कलम लाये। आप बोलते रहे हम लिखते रहे। हम उर्दू पढ़े थे हिन्दी नहीं जानते थे। 10 दिन की जप और पाठ से पट खुल गये। सब देवी देवता दर्शन देने लगे, बाल लीला भगवान देखाने लगे। काक भुशुंड रोज आते, बाल राम मोदक खिलाते, सोने के कटोरे में जल धरते, पीते और भगवान की तरफ टकटकी लगाए रहते। जब भगवान हाथ का इशारा करते तब उड़ जाते।

एक दिन हनुमान जी ने कहा, ''तुम्हारी इच्छा अब पूरन हो गई। अब तो तुम राम जी के हो गये।'' तो कहा, ''हम जहाँ जहाँ जन्म लें वहाँ वहाँ बाल राम जी से प्रेम ऐसे ही बना रहे, यही जप याद रहे, किया करें, यही परभाती याद रहे, पाठ रोज़ सबेरे किया करैं।'' तो हनुमान जी ने कुछ देर बाद कहा, ''तुमने तो हमैं प्रेम से बांध लिया। भगवान की आज्ञा से हम तुम को अजर अमर का बरदान देते हैं।'' इतना कह कर हमैं छाती से लगाया और सर पर हाथ फेरा। हम चरनों

पर गिर पड़े और कहा ''हमको इन्हीं चरनों का भरोसा है।'' फिर हमैं उठाया, छाती से लगा कर उछंग में लिया, फिर दाहिने काँधे पर बैठाया और कुछ देर घुमा कर उतारा और कहा, ''तुम भगवान के सच्चे भक्त निष्कपट हो। इतनी दीनता शान्ती तुम में आ गई। ऐसा कोटिन में कोई भक्त संस्कारी होगा।'' फिर हमैं छाती से लगाकर अन्तर हो गए।

गोस्वामी जी की परभाती जो सवेरे गाई जाती है:-

ठुमुकि चलत रामचन्द्र बाजत पग पैजनियाँ ।।1।।
किलकत उठि चलत धाय, भूमि गिरत लटपटाय,
दौड़ि मातु गोद लेत दसरथ की रानियाँ ।।2।।
मेवा मोदक रसाल भावै सो खाहु लाल और देहौं,
रुचिर पान कंचन घुनघुनियाँ ।।3।।
विद्रुम ते अधर सुघर, बोलत मुख मधुर मधुर,
सुन्दर नासिका के बीच लटकत लटकनियाँ ।।4।।
ध्यावत सुर नर मुनेश, गावत शारद गनेश,
पावत नहिं पार शेष जाके सहस फन रसनियाँ ।।5।।
तुलसीदास अति आनन्द, निरखि कै मुखारबिन्दु
रघुबर की छबि समान रघुबर छबि बनियाँ ।।6।।

43. मियाँ करीम
लहरपुर, जिला सीतापुर

इनका प्रेम राम जानकी, राधे श्याम से था। पढ़े कुछ न थे। पढ़ने में मन नहीं लगता था। जहाँ जाते वहाँ हिन्दू मुसलमान डाँटते। कोई इनकी बात न सुनता। यह पयहारी जी को सुने कि जैपुर में पहाड़ की गुफा में भजन करते हैं। वहाँ पैदल गये तो पयहारी जी उस समय समाधि में थे। 3 दिन बाद समाधि टूटी। भक्त लोग दर्शन को आये, हाल बताया। एक भक्त ने बाजार से कुछ मीठा ला कर दिया। पाया और पयहारी जी की गंगा का कुण्ड है उसमें जल पिया। पयहारी जी से सब हाल बताया। वे बहुत खुश हुए और कहा, ''तुम इस कीर्तन (जो नीचे लिखा है) को किया करो। पूरे मुक्त भक्त हो जाओगे।" कीर्तन शुरु कर

दिया। दो माह जैपुर में रहे, कीर्तन करते और घूमते बाज़ार में। थोड़ा मीठा या फल, लाई चना जो मिल जाता, खा लेते। उनके पट खुल गये। फिर गुरु के पास आये। पयहारी जी ने उनका नाम कीर्तन शाह धरा और कहा, ''तीर्थ यात्रा करके वृन्दावन में रहौ।'' सब घूम कर वृन्दावन में रहने लगे। शरीर से साँवले रंग के थे। दाढ़ी केश थे। उम्र 40 की होगी। कद न लम्बा न ठामक था; मझे का था। अच्छे पहलवान भी थे। अब सब लोग उनकी खातिर करने लगे। एक बार चार कौर खाते थे। उस आनन्द में भूख प्यास नहीं लगती थी। लोगों की रुचि का पालन कर देते थे। बृज में घूमा करते, कीर्तन किया करते। रात्रि में मौन रहते। 2 बजे रात में उठते, डोलडाल, अश्नान करते। 11 बजे सैन करते नींद नहीं आती थी। 24 साल कीर्तन किया। भगवान ने कहा, ''तुमने बड़ा परिश्रम किया। अब तुम देवी देवता व ऋषियों का कीर्तन गाना बजाना सुना करो। मौन हो जावो।''

तब मौन हो गये। सब देवी देवता, ऋषी मुनी आने लगे, भगवान का जस वरनन करने लगे, राग-रागिनी नाच-गान भगवान का रहस सखा सखी प्रगट होकर देखाने लगे। दो लंगोटी रखते थे। सब उनको मौनी कीर्तन शाह कहने लगे। फिर जमुना जी के किनारे गए। पहले मुख्य मुख्य दर्शन करके 2 बजे दिन में राधाष्टमी को शरीर छोड़ा, हँसते-हँसते जमुना जी की दंडवति करके 126 की उम्र में। कुछ बीमार नहीं हुए। हर समय मुश्क्याया करते थे। जाड़ा घाम कुछ नहीं मालूम होता था। एक लोहे का लोटा जल के लिए किसी पंजाबी ने दिया था। अमृतसर की तरफ से आया था।

इनका भी चरित्र बहुत है। जब घूमे हैं बहुत घटना अद्‌भुत हुई हैं। हम थोड़ा लिखा है। फिर भक्तों ने उनका शरीर जमुना जी में प्रबाह किया था।

कीर्तन:– जै बोलो सीताराम की, जै बोलो राधेश्याम की।
सीता राम जै सीताराम, राधे श्याम जै राधे श्याम ।।
सीताराम कहौ, सीता राम कहौ।
राधे श्याम कहौ, राधे श्याम कहौ ।।

44. राधा लोहारिन
काशी

राधा लोहारिन काशी बासी शंकर जी को नेम से नहा कर जल चढ़ाती थी। एक दिन शंकर जी प्रगट हो गये कहा, ''माँग क्या चाहती है?'' तो उसने कहा, ''कृष्ण भगवान की भक्ती।'' तो कहा ''रैदास जी, रामानन्द जी के शिष्य, कृष्ण भक्त हैं। धर्मराज के अंश हैं। उनसे दीक्षा लो। तुझे सब प्राप्त हो जायगा।'' तब मैं रैदास जी के पास गई, दंडवति किया और शंकर जी का हाल बताया। रैदास जी ने दीक्षा दी। जप शुरु कर दिया। शंकर जी को जल नेम से चढ़ाती रही।

दो माह बाद हमारे पट खुल गये। नाम की प्राप्ति, रूप की प्राप्ति, परकाश की, लय की, शून्य समाधि की, सब देवता-सिद्ध सन्त दर्शन देने लगे। हर शै से महामंत्र र रंकार की धुनि होने लगी, शुभ लोकों से तार आने लगे, देवताओं के घर दिब्य भोजन को जाने लगी, कुण्डलिनी जग गई, छइउ चक्कर चलने लगे, सातौं कमल खिल गये, भाँति भाँति की सुगंध दोनों स्वरन से आने लगी, अनहद बाजा बजने लगे, घट में अमृत का पान होने लगा। फिर शंकर जी प्रगट होकर हृदय से लगा लिया और पारवती जी ने दिब्य भोजन, और शंकर जी पारवती जी ने एक एक हाथ पकड़ कर अजर अमर कर दिया। बहुत विस्तार है। थोड़ा लिखा है।

45. जनौरा के जोती बकस

जानकी नगर (जनौरा) अयोध्या से सीधे ढाई कोस है, सड़क से तीन कोस है। वहीं पर ठा. रामराज सिंह की पहली पत्नी से जोती बकस पैदा हुए। जब वह सयाने हुए, करीब 16 या 18 वर्ष के थे, तो पाप की तरफ मन लग गया। 40 वर्ष की उम्र तक बहुत पाप किया, जो लिखने वाला नहीं है। ऐसा पापी न हमने सुना था, न देखा था। इनके चाचा हरिहर बकस स्टेशन पर नौकर थे, माल बाबू। एक पैसा किसी से न लेते थे। अपनी कमाई से बसर करते थे। न किसी पर रंज होते थे। वे जब रिटायर हो गये तो अंजना के बाबा को 7 कोस सुबह रामायण सुनाने जाते। शाम को पैदल नंगे पैर लौटते। वे साधू पानी तक को न पूंछते थे। 12 वर्ष सुनाया।

एक दिन हरिहर बकस रामायण पढ़ते थे। जब कथा बन्द हुई तो जोती बकस ने कहा ''जैसे अन्न न खाय, दूध न पिये, सिर्फ जल पिये तो ज़िन्दा रहेगा?'' तो वे बोले ''भगवान की लीला भगवान जानै।'' तो कहा कि अगर हम अन्न खांय तो गऊ का माँस खांय, दूध पियें तो गऊ का खून पियें। सिर्फ जल पियेंगे। घर के सब औरत मर्द बोले कि अब क्षत्री हो कर कसम खाये हैं सिवाय जल के कुछ न पावैं।

हाता में एक कोने में छप्पर छवा दिया गया। एक कच्ची दीवार उठा कर उस पर रख दिया गया। एक पल्ला किवाड़ लगा दिया गया। उसमें बैठकर राम राम करने लगे। 40 दिन हो गए केवल जल पीते थे तो चार या पाँच दस्त होते थे। धीरे धीरे दस्त बन्द हो गये पेट साफ़ हो गया, तब भूख ने बहुत तंग किया। चाची से कहा ''कुछ हमै रात में चोरा कर खवा दो, नहीं तो प्राण निकल जायेंगे।'' महीना भादों का था। चाची रात को आलू का साग पूरी लेकर थाली में चलीं। कुछ बूँद पड़ते थे, अंधेरी रात थी, कौंधा लपकता था तब आगे बढ़ती थीं। जब करीब पहुँची तो दारोगा उनके यहाँ दो रहे, शायद भतीजे थे या चचेरे भाई थे। एक जने लघुशंका को उठे तो कौंधा लपका। उन्होंने देख लिया, बोले, ''क्षत्री ह्वै कर कसम खाये हैं, खाने को मत देना। मर जाने दो।'' बस वै लौट गईं। तब यह लेट गये। फिर भूख ने बहुत तंग किया परन्तु जल पीते रहे। 6 माह में भूख चली गई, राम राम करते रहे।

एक पत्थर हमने लम्बा चौड़ा बनवा दिया था। गर्मी में घाम में उस पर लेटते थे और इधर उधर करवट लेते। कई बार शरीर की खाल जल गई सारे बदन की और मदार का दूध दाँतों में लगा लगा कर सब दाँत निकाल कर फेंक दिये। जब 14 वर्ष हो गये राम राम करते तो कहा ''अब दहकते पत्थर के कोयला लावौ, हाथौं पर धरौ, देखैं पाप नाश हुए या नहीं। गोस्वामी जी ने लिखा है 'गोपद सिंधु अनल सितलाई'' तो दोनों हाथौं पर खूब लाल लाल दो कोयला बड़े बड़े, धरे गये देर तक। कुछ न मालूम हुआ। तो हमसे कहा ''अब पाप सब फूंक दिया।'' तो फिर हमारे फैजाबाद के भक्तौं ने उनका नाम कृष्णदास धरा, और उपेन्द्र दत्त, जिनको हम दत्त बाबू कहते थे, उन्होंने अचला-लँगोटी उनके बाँधा।

राम राम करते 14 कोस पैकरमा जाते, हर मंगल हनुमान जी जाते, पीछे कोई चल न पाता, इतना तेज चलते थे। छपरा बांदरौं ने तोड़ दिया, कई जगह बड़े बड़े छेद हो गये थे। पानी बहुत बरसा था। हम कई लोग

उसमें बैठे थे। एक बूंद न आया। पक्के मकान चूने लगे। फिर हम सब सामान मंगा कर छवा दिया और कहा ''अब 15 वर्ष न टूटैगा। राजा इटावा के कोई संतान न थी। वह इनके पास आया करते थे। दो ब्राह्मण राजा के पास रहते थे। जब कोई मित्र या नातेदार आते, राजा उनसे बात कराते। जहाँ 15 मिनट होते तहाँ ब्राह्मण चेता देते ''राजा साहब राम राम भूल गये'' बस राजा साहब राम राम करने लगते थे। इनको कभी कभी अपने घर ले जाते। महीनों रखते। वहीं पर इनका शरीर छूटा था। 22 साल (सन् 1951) शायद हो गये। हमारे पास पत्र आया था।

दसरथ जी से राजा जनक जी ने यह गाँव जनौरा (जानकी नगर या जनकौरा) मोल लिया था। एक शंख जवाहिरात सोने की सन्दूक में भर कर दिया। इसका नाम जानकी नगर धरा गया। दो माह यहाँ रह कर तब जनक जी जनकपुर गये थे। यह हमैं लिखाया गया है, किसी पद में, शायद 14 कोसी पैकरमा में होगा।

46. बाबा ध्यान दास (अपढ़)
अयोध्या

श्री महाराज जी बताते थे कि वह जाति के मुराऊ थे। पहले जब 30 की उम्र में आये तो मसताब बाग में रहे। लोगों ने झोंपड़ी छा दी। भोजन थोड़ा थोड़ा ब्राह्मण के यहाँ से आता था वह कर लेते। पूरी क्षत्री वैश्य के यहाँ की भी पा लेते। 12 बर्ष बाद आवाज़ आई ''प्रहलाद घाट पर चलो।'' यहाँ आये। भक्तों ने झोंपड़ी बना दी। राम मंत्र जानकी मंत्र कहीं ले चुके थे। थोड़ा जपते थे। बहुत कम बोलते थे। 12 बर्ष बाद महाराज महारानी सामने हो गये। राम राम कंठ से जप हुआ करता था। फिर कौशिल्या घाट के पास आये। वहाँ लोगों ने झोंपड़ी बना दी, रहने लगे। एक सेठ आया, कहा ''कुटी पक्की बनवा दें।'' तो कहा ''तुम्हारे पास पैसा है तो घाट बंधा दो, कुटी यही ठीक है।'' उसने घाट बनवा दिया। लोगों ने कहा ''बाबा, यहाँ एक टट्टी बन जाती'' तो कहा ''दारोगा सफ़ाई के आवैं तो बताना।'' दारोगा भक्त थे, आये। बस उनके पैर पकड़ कर सर धर दिया। दारोगा के पैरों पर देर तक सर धरे रहे। तब दारोगा ने बहुत प्रार्थना किया तब पैर छोड़े। फिर टट्टी बन गई। दारोगा का नाम लाल अम्बिका प्रसाद था। फैजाबाद के थे।

पं० श्री कृष्ण आये। कहा, ''बाबा, हमारी 500 वर्ष की बृत्य (जीविका) हलवाई लिये लेते हैं। हमारे लड़के भूंखौं मर जायेंगे,'' तो कहा, ''जब उनकी पंचायत मातगैंड पर हो तब बताना।'' पंचायत की बैठक हुई। पं० श्री कृष्ण आये। बाबा अपना चादर ले कर गये। सब के जूता बटोर कर गठरी बाँध कर सर पर धर कर खड़े हो गये। सब हलवाई हाय हाय करने लगे। तो बाबा ने कहा ''ब्राह्मण की बृत्य पुरखन की दी हुई तुम सब लोग हरे लेते हो। जब सखरोगे तब जूतों की गठरी सर पर से उतारैंगे।'' जब सब ने सखरा, तब सर पर से गठरी उतार कर छोर कर रख दिया और कहा ''अपने अपने जूता पहचान लो।'' फिर आ कर सरजू जी में नहाया, चादर धोया। फिर इस बात का हल्ला हो गया।

अयोध्या जी के साधू बड़े-बड़े विद्वान आने लगे। बाबा पहले ही दंडवति सर ज़मीन पर रखकर कर लेते थे और कहते थे ''मैं जाति का मुराऊ हूँ।'' सब लोग ज़मीन में बैठते थे। उनके पास कोई बिछाने का सामान नहीं था। कुछ पढ़े न थे। दो लंगोटी एक चादरा रखते थे, बारह मास। सब कुछ प्राप्त हो गया था।

उनका पद कनक भवन के महाराज महारानी जी का बताया है। जो कोई कुछ पूछता तो कहते ''बिना अपने को सब से नीचा माने दीनता शान्ती नहीं आती। इसी से पट नहीं खुलते हैं।'' 6 माह पहिले कहा था, जिस दिन शरीर छोड़ना था। समय 2 बजे दिन में 125 की उम्र में, राम राम करते हुए शरीर छोड़ा। तमाम साधू, पंडित, जनता आ गए। सब ने सरजू में पधराया।

कह दिया था कि कोई भंडारा करने की ज़रूरत नहीं है। राम नाम के परताप से गती होती है। बहुत विस्तार है। थोड़ा लिखा है।

पदः– राम सिया छबि निरखौ नयनन तन मन प्रेम से नर औ नारी ।।1।।
कनक भवन में राजत प्यारे बाम भाग में सोहैं प्यारी ।।2।।
अनुपम झाँकी वरणि सकै को सुर मुनि फणपति शारद हारी ।।3।।
ध्यान दास निशि बासर निरखैं जोड़ी जुगुल पै तन मन वारी ।।4।।

47. बाबा राम फल दास (अपढ़)
अयोध्या

बाबा ध्यान दास जी के पास एक मुराऊ, जिसकी उम्र 20 साल की थी और जिसका नाम रामफल था, आया। कहा, ''हमको शरण में रख लो, हम आपकी सेवा करेंगे।'' बाबा ने कहा ''पहले सेवा धर्म सीखो जैसे हम कहैं।'' तो कहा ''जैसा आप बतावेंगे वैसा करेंगे।'' बाबा ने कहा ''अवधपुरी में घूम कर पता लगाओ। जो बीमार कमज़ोर हो उसका मल-मूत्र साफ़ करो, कपड़े धो कर सुखा दो और मधुकरी माँग कर खाओ। कुछ भूखे रहो। एक बार खाने से आलस्य नहीं आता। पाचन शक्ति ठीक रहती है।'' रामफल दंडवति कर के खोज करने लगे। बीमार मिलने लगे। सेवा में जुट गये। एक दिन बाबा ने कहा ''कै रे राम फल, तेरे को घिना नहीं लगती।'' तो कहा, ''घिना कैसे लगे। जैसा अपना मल मूत्र है तैसे ही दूसरे का है।'' 12 वर्ष सब जाति का धोया। तब भगवान की आज्ञा हुई, ''अब इसे मंत्र बता दो।'' तब बाबा ने बताया।

एक मंदिर का पुजारी कहीं चला गया। किसी ने बाबा से कहा तो बाबा ने राम फल को भेजा, कहा ''पूजा करो, भोग जो अन्न का लगाओ उसे गरीब को दे दो। तुम दूब और तिपतिया की पत्ती पाना।'' राम फल वैसा ही करने लगे। चार वर्ष यही दूब और तिपतिया की पत्ती एक बार पाते। फिर बाबा को जो एक पारुसि आती थी, जाने हुए साधूओं और भक्तों के यहाँ से, उसमें से थोड़ा भेजा। रामफल ने पाया। कुछ देर में उलटी हो गई। फिर धीरे-धीरे पचने लगा।

एक साधू राम लला धर गया। कहीं बाहेर जाता था। कहा ''लौट कर आवेंगे तो ले जावेंगे।'' राम फल ने कहा ''अब तुम न जाना।'' फिर वह साधू न आया। रामफल ने कहा, ''महाराज! अपनी जोड़ी मिला लो'' तो एक साधू उतने ही बड़े राम लला धर गया, फिर न लौटा।

अब राम फल को फ़ैज़ाबाद के लोग जान गये। भक्तों ने मंदिर बनवाया। बड़ी बड़ी मूर्ति पाषाण की पधरीं। एक कुंवाँ और एक चौकुंठा हौज बना। उसमें लाली मछली पाली गईं। बाबा रामफल को गमलों की शौक हो गई। गमला आने लगे। रोज़ गमलों में पानी छोड़ते। एक पत्ती खराब न रहती। सावन में गमलों का झूला बनाते। साधू और भक्त दर्शनों को आते। उनको गमलों की झांकी में भगवान बड़ी शोभा देते थे। दूर

दूर झाँकी उतर गई। बारह मास भगवान को बाहर निकालते थे। एक बड़ा छत्र था लगा देते थे और गमले। एक फ़ौहारा चलता था। दर्शन करने वाले कहते थे कि ऐसी शोभा देखने में दूसरी जगह नहीं आती है। एक राम लला एक पाव के थे। एक नाव एक हाथ की थी। हौज में नाव पर जल-बिहार करते थे।

हम तीसरे चौथे दिन वहाँ जाते थे। सब समैया करते थे। फैज़ाबाद के लोग बड़ा प्रेम करते थे। बाबा जितना काम करते थे, चार आदमी थक जाते। पूजा करना, भोग लगाना, बरतन मलना, गमला सींचना, हौज भर कर तीन दिन बाद रोज़ का पानी बदल देना। एक दिन कुंवाँ पर चरखी चलाते थे। उसी समय उसकी डाँडी टूट गई। कुंवाँ में चले गये। निकाले गए तो होश न था। सर में जखम हो गया। खून बहुत निकल गया। लोग अस्पताल ले गये। जब होश आया तो कहा ''हमें मंदिर पर ले चलो। यहाँ नरक में लाये हो। हमारी दवा भगवान करेंगे।'' सब लोग मंदिर पर लाये। कहा ''सब लोग जाओ, हमें चुपके पड़े रहने दो।'' सब चले गये। भगवान ने कोई पत्ती पीस कर रख दी। सब घाव पूर (भर) गया। लोग फिर देखने आये तो बैठे रहे। कहा, ''किसी जन्म का भोग था, भगवान ने भोगा दिया।''

रामफल दास के दाहिने पैर में फोड़ा हुआ, गाँठ के नीचे। कुछ दिन बाद वह पक कर फूटा। उसे पानी से धो देते थे, सुबह, दोपहर, शाम के समय। हमने कहा ''हमारे पास मरहम है उसके लगाने से जल्द ठीक होगा।'' तो कहा ''इसकी हम सेवा करैंगे जब तक रहेगा, फिर जहाँ भगवान भेजैंगे वहाँ जायगा। भगवान के हुक्म से आया है। तीन समय नहाता है, फिर कहता है कि मूँह पर कपड़ा बांध दो नहीं तो मक्खी लगैंगी तुम्हारे काम में विघन होगा। रात को कपड़ा खोल दिया करो।" वैसा ही करते हैं। फोड़ा 6 माह रहा। पूजा करना, भोग बनाना, भोग लगाना, पाना, बर्तन मलना, गमला सींचना, हौज भरना जिसमें लाली मछलियाँ थीं-सब काम अपनै करते थे। फिर फोड़ा ठीक हो गया। हम से कहा, ''हमैं कोई कष्ट न हुआ, सब काम भगवान का करते रहे।"

"एक मूर्ति दुर्गा जी की कोई लाया, रख गया। एक बीता की थी। बड़ी सुन्दर थी। भगवान के साथ ही पूजा में धरी थी। हमारा बड़ा प्रेम था। वह बहुत दिन रही। एक बार साधूओं ने पूछा कि 'यह मूर्ति किसकी है?' हमने (बाबा ने) कहा कि दुर्गा जी की है। तो कहा, 'वैष्णवों को

देवी की पूजा न करनी चाहिए।' हमने कहा 'हमारा बड़ा प्रेम है।' तो एक साधू हाथ पैर धो कर मंदिर से उठा लिया, और हमैं डाँटा कहा, "तुम कैसे साधू हो, अपने मन का करते हो-जो साधू समाज कहै वह करना चाहिए।" वह मूर्ति ले कर चला गया। सब साधू चले गये। हमारा मारे दुःख के कलेजा जलने लगा। तब महारानी जी प्रगट हुईं, कहा, 'जितनी शक्ती हैं वह हमारे अंश से पैदा हुई हैं, तुम दुखी न हो। उसकी मौत आ गई थी। बुद्धि खराब (हो) गई। वह सरजू में जा कर गले भर पानी में फेंक दिया। उसके शरीर में इतना दर्द हुआ कि प्राण निकल गये। कछुआ शरीर का माँस खा गये। ठठरी नीचे जल में ज़मीन में बैठ गई। वह नर्क को गया। कल्पौं भोगैगा।'' महारानी जी ने उन के सारे शरीर पर हाथ फेर कर बाईं जाँघ पर सर धर कर सुला दिया। जब आँख खुली तो कहा, ''जो किसी देवी देवता से द्रोह करता है उसकी गती नहीं होती। मनुष्य से द्रोह न करना चाहिए जो जैसा करेगा वैसा पावैगा। जिसे भजन करना है वह चुप रहै। न किसी से बैर न किसी से मेल। अपने इष्ट में लगा रहे। मन में यह विश्वास कर ले कि ऋषि मुनि कह गये हैं। भक्तौं के भाव अलग अलग हैं। जिससे प्रेम है उसी से गती होगी। भगवान ने इसी से तमाम रूप धारण किये हैं। जब संसारी चीज़ की इच्छा नहीं है तो तुम को भगवान के धाम में भेज देंगे। राम, कृष्ण, नारायण सब देवी देवताओं को चार पदारथ देने का अधिकार दिये हैं। उनके पास बहुत घुनघुना हैं। जो मन से चाहता है वही देते हैं। जो घुनघुना नहीं चाहता केवल उनको चाहता है उसे गोद में ले लेते हैं।'' यह कह कर अन्तर हो गईं। बाबा का चित्त प्रसन्न हो गया।

जब एक माह जात्रा का रह गया तो हमने कहा ''आपका समय आ गया, इतने दिन बाकी हैं।'' तो हँसे कहा ''हम भी देख चुके हैं। सब तीर्थों का जल और महाराज जी (परमहंस बाबा बेनी माधव दास जी, गुरुदेव) का चरनोदक हमैं दे जाव।'' हम दो बोतलों में ले गये। रोज़ सुबह-दोपहर-शाम को लेते थे।

एक मास पहिले महाराज गये। सब देखा। हम से कहा ''ऐसी सेवा करने वाला कोटिन में कोई होगा, तप की मूर्ति हैं।'' जब एक दिन जाने का रह गया तो सब मूर्तिन के आँसू चलने लगे। बाबा ने कहा ''आप सब के आँसू चलते हैं।'' तो मूर्ती बोलने लगीं, कहा ''तुम्हारे ऐसा सेवा करने वाला प्रेमी कहाँ मिलेगा, तुम तो गुरु के पास जा रहे हो, इसी से

आँसू हमारे आ रहे हैं।'' तब बाबा मारे प्रेम के रोने लगे। भगवान ने प्रगट हो कर आँसू पोंछे। सब मूर्तिन के आँसू बन्द हो गये। फिर बाबा ने दंडवति किया आसन पर आये। सब गमलों के पेड़ उदास हो गये। मालूम होता था कि सबकी शक्ति निकल गई।

बाबा ने 80 के ऊपर शरीर छोड़ा था। बड़ी दीनता उनमें थी। जैसे गुरु वैसे चेला थे। फिर उनके भंडारे में हम भी भोजन को गये। महाराज जी ने कहा ''जाव।'' भोजन में बड़ा स्वाद आया। सब साधू कहते थे ''ऐसा स्वाद कभी नहीं आया। कितने भंडारों में भोजन किया है।''

राम फल दास ने भगवान की सेवा और दुखियों की सेवा जैसी की है वैसी कौन करेगा?

48. फुरसत शाह
रसूलाबाद

[1]

पदः– खजाना नाम का भक्तों कमा लो जिसका जी चाहे ।।1।।
जानि मारग को सतगुरु से गिना लो जिसका जी चाहे ।।2।।
गया धन चोरों से अपना छिना लो जिसका जी चाहे ।।3।।
दीनता शाँति का बीड़ा चबा लो जिसका जी चाहे ।।4।।
जियत ही गर्भ के रिन को चुका लो जिसका जी चाहे ।।5।।
निज को निर्बैर ओ निर्भय बना लो जिसका जी चाहे ।।6।।
बिधाता के लिखे अक्षर कटा लो जिसका जी चाहे ।।7।।
ध्यान धुनि नूर औ लय में समा लो जिसका जी चाहे ।।8।।
साज अनहद क सुन अमृत को पा लो जिसका जी चाहे ।।9।।
देव-मुनि संग कर बैठक बतला लो जिसका जी चाहे ।।10।।
गान औ कीर्तन सबसे करा लो जिसका जी चाहे ।।11।।
ताल दै दोनों हाथों पर कुदा लो जिसका जी चाहे ।।12।।
प्रेम में मस्त लखि आँसू बहा लो जिसका जी चाहे ।।13।।
नागिनी को जगा चक्कर लगा लो जिसका जी चाहे ।।14।।
कमल सातों उलटि सुन्दर खिला लो जिसका जी चाहे ।।15।।

छटा सिया राम की सन्मुख में छा लो जिसका जी चाहे ।।16।।
काल और मृत्यु को गहि कर रुला लो जिसका जी चाहे ।।17।।
लगा थप्पड़ उन्हें नीचा दबा लो जिसका जी चाहे ।।18।।
तब तो दुनियाँ के जीवों को सम्हालो जिसका जी चाहे ।।19।।
कहैं फुरसत बचन साँचे गुना लो जिसका जी चाहे ।।20।।

[2]

पताका कीर्ति की अपनी घुमा लो जिसका जी चाहे ।।1।।
पाय धन धर्म में सारा लुटा लो जिसका जी चाहे ।।2।।
दीन दुखियों को जल भोजन करा लो जिसका जी चाहे ।।3।।
सर्दी औ गर्मी के कपड़े पिन्हा लो जिसका जी चाहे ।।4।।
कराहते लखि उन्हें दारु पिला लो जिसका जी चाहे ।।5।।
मूत्र मल साफ़ कर उनका परा लो जिसका जी चाहे ।।6।।
अन्त बैकुण्ठ अपने को बिठा लो जिसका जी चाहे ।।7।।
कहैं फुरसत बचन सुनि मन बसा लो जिसका जी चाहे ।।8।।

49. बाबा हरी दास
बबुरिहा, जिला रायबरेली

बाबा हरीदास जी, बबुरिहा के संगी गुरुदत्त दास जी, और नाम हम भूल गए, कई मूर्ति थे, गंगा जी गये। वहाँ 18 दिन रहे, कुछ जल भोजन न किया। फिर आपस में कुश्ती लड़े। फिर चार कोस जा कर अहीरन के यहाँ दो दो भौरिन का आटा लिया, बना कर भोग लगा कर पाया। तब अपने अपने आश्रम पर आये। ऐसे शक्तिमान थे। सब के घर खाने पीने की कमी न थी। छोटे पर जब अच्छी चीज़ खाने को मन चलता था तो घोड़े की लीद या पाखाने के पास जाते और मन से कहते ''खाओ'' तो मन उधर न जाता तो कहते ''आज तुमको खाने को न देंगे।'' और उस दिन कुछ न खाते। जब सयाने हो गए, भोजन सवा सेर का हो गया तो आधा सेर आटा, माटी का बाँट बना कर तौल कर, अलोनी भौंरी बना कर खाते थे। फिर रोज़ तोला तोला मिट्टी का बाँट रगड़ते, एक छिटाँक रह जाता। तब फिर रोज़ तोला तोला मिट्टी उसमें लेस कर आध सेर पूरा कर देते।

जब कथा होती थी तो अर्थ बताते। जब तनिकौ नींद मालूम होती तो सब कपड़ा रख कर, खाली लंगोटी नीचे लगी रहती थी, खड़े हो जाते और ताल ठोंकते और कहते ''जब हम बैठे या लेटे हैं तब तुम आकर चढ़ बैठती हो। अब आओ खड़े खड़े तुम को लड़ कर हरा दें।'' तब नींद भाग जाती थी। इस तरह नींद को जीत लिया।

हम, राम सिंह, धनुआ के ठाकुर की ससुराल गए। उनके ससुर बीमार थे। गाँव पिचौरी उसका नाम है। साथ में राम सिंह, बद्री दास, दुर्गा दास थे। वहाँ तीन दिन रहे। उनको सब दवा बताया। चौथे दिन सुबह हनुमान जी छोटे रूप से आए, कहा, ''हरी दास की कुटी पर चलो।'' सब से कहा, ''हनुमान जी की आज्ञा हुई है।'' तो सबने कहा ''खिचड़ी बन जाय, भोग लग जाय।'' खिचड़ी बनी भोग लगा। बड़े बैल बाहर गए थे, छोटे बैल मचियाये गए। सब ने कहा ''यह कभी अद्धा में नहीं चले हैं। सड़क एक फ़रलाँग है। सामान रख लो तो शायद धीरे धीरे सड़क तक पहुंचा दें। फिर ताँगा करके चलेंगे, सवारी आती जाती रहती है।'' बस सामान धर कर चले। बैल मच गए। लेकर चले तो सड़क पर गए। बस दौड़ने लगे। बद्रीदास ने कहा ''क्या हनुमान जी बैलों में प्रवेश कर गए?'' बहुत तेज़ी से ले गये। 10 या 12 कोस है। वहाँ पहुँचे। औसान दास मिले, पूछा, तो हमने हाल बताया, तो कहा, ''यह हनुमान जी की लीला है।''

हरी दास जी की कुटी ऊँचा पाट कर मकान के करीब ही बनी है। कुटी के आस पास जगह है। महीना कार्तिक का था। पैरा बिछाया गया। कम्मल हमारा बिछाया गया। हम आसन पर लेट गए। हरी दास जी की सेज बिछी थी तो प्रकाश भया। मालूम हुआ कि उस पर से उठे। हमारे ऊपर हाथ फेरा, शरीर हल्का हो गया। अद्धा में बहुत शरीर तंग हो गया था। फिर औसान दास सब शरीर दाबने लगे। उधर हनुमान जी गदा फेरते थे। उम्र 12 साल की मालूम होती थी। हम कहे, ''औसान दास! शरीर न दबाना, हमें इस समय बड़ा आनन्द है। ऐसा खेल हनुमान जी ने गदा फेर कर आधा घंटा दिखाया जो वरनन नहीं कर सकते।'' औसान दास कहने पर भी न माने, दबाते रहे। फिर बाबा दुर्गा दास ने भोजन बनाया, भोग लगा कर थोड़ा पाया। फिर हरी दास जी का शंकर जी का मंदिर देखने गए। खूब सफ़ाई सब मिल कर किया। तीन दिन रहे। उनके सालिग्राम जी श्याम हैं। उनको नहला कर रोज़ चरनोदक लेते

थे। उनके चरण पादुका का चरणोदक लेते थे। चौथे दिन वहाँ से चले। राम सिंह वापस पिचूरी से घर चले गए थे। सुबह बैलों को खवा कर भेज दिया था। फिर औसान दास की गाड़ी से हर चरन दास की कुटी पर आए। फिर हर चरन दास की कुटी से त्रिभुवन दत्त के यहाँ, फिर अवध राज और एक मूर्ती के यहाँ, फिर गजोधर-मलूक के गाँव, फिर संत प्रसाद तिलोई के यहाँ।

सन्त प्रसाद तिलोई में पढ़ा कर रोज़ रात में हमारे पास रहते थे। वे जूता नहीं पहनते थे। रात भर जागते थे। फिर अपने गाँव को ले गए, वहाँ चन्दापुर के राजा के पाँच शिवाला पत्थर के थे। बीच के शिवाले में शंकर जी बड़े विशाल हैं। चार में, याद नहीं है कौन कौन मूर्ती हैं। सुबह दर्शन को गए। पुजारी पूजा कर के कहीं गये थे। शंकर जी के शरीर में चन्दन लगा था तो हमने कहा ''लोटा नहीं है, ताल पास में खुदा हुआ है, पानी खूब है कैसे इनको धो कर दर्शन करें।'' बद्री दास का अंगौछा पाँच हाथ का किनारीदार था। दो या तीन दिन का स्तेमाल किया हुआ था। वह ताल में धो कर फिर पानी से तर करके लाये। हमने शंकर जी को उससे पोंछा तो मूर्ति में बहुत तरह के चिन्ह देख पड़े। फिर चारों मंदिर देखा। एक में से निकलने पर बद्री दास के सिर में चोट लग गई। सिर में खून आ गया था। कार्तिक में उजेरी रात में चौपाल में पैरा बिछा था। हम, दुर्गादास, बद्री दास पहुढ़े (लेटे) थे। रात को दो बजा होगा। कृष्ण भगवान बाल रूप से प्रगट हुए। हमने विचार किया कि इनको गोद में ले कर खिलावैंगे तो हमारा गला पकड़ा ज़ोर से, मालूम होता था, प्राण निकल जायँगे। हमने प्रार्थना किया तो छोड़ा, कहा कि "तुम ने बद्री दास का अंगौछा इस्तेमाल किया, उससे शिवजी को पोंछा इससे बद्री दास को थोड़ी सज़ा दी गई। अब ऐसा काम कभी न करना। शंकरजी, हनुमान जी हमारे अति प्रिय हैं।" हमने हाथ जोड़ा, तब अन्तर हो गए। फिर वहाँ तीन दिन रहे, रोज़ दर्शन को जाते थे। फिर निगोहाँ गए, वहाँ चार दिन रहे। दोनों पैरों की अंगुली के नीचे जखम हो गए। कई कई मर्तबे (बार) पैर धोये जाते थे। दोनों पैरों की गलहरी में अढोली (गिल्टी) पड़ गई थीं, चल नहीं पाते थे। आवाज हुई ''गाय के घी में रुई भिगो कर फ़ीया दाबो।'' सन्त प्रसाद फुरसतगंज स्टेशन सवार करा कर घर गए, हम उन्नाव गए। वहाँ 10 दिन फ़ीया लगाये गए। सुबह के दोपहर को बदले जाते थे, दोपहर के शाम को। तब जखम पूरे हुए।

सन् 1938 में हरिद्वार के कुम्भ में रामदास एक बाँस का डन्डा लाये थे। उस डन्डे में नीचे एक लोहा लगा था जो किसी को लग जाय तो घाव हो जाय। रामदास बाबा दुर्गादास जी के साथ डन्डे को ले कर बाबा हरी दास के पलंग के पास दोपहर में सो रहे थे। बाबा जी ने प्रगट होकर राम दास से कहा ''इस डन्डे को कहीं रख दो नहीं तो किसी के पैर में लग जायगा।'' रामदास ने बगल में सोये हुए बाबा दुर्गा दास को जगा कर कहा कि अभी अभी एक गोल चेहरे के छोटे कद के गौराङ्ग शरीर वाले बृद्ध संत ने हम से इस डन्डे को रख देने को कहा है और इस को रखने के कई स्थान बताए हैं। यह बात सुन कर बाबा दुर्गादास ने कहा कि मैं उनके साथ बहुत दिन रहा, वह बाबाजी ही थे जो तुम्हें दर्शन दे कर डन्डा रखने की आज्ञा दी है। हमारे विचार से इस डन्डे को बाबा के पलंग पर ही धर दें। बाबा दुर्गादास की आज्ञानुसार रामदास ने डन्डे को बाबा के पलंग पर रख दिया। हमने रामदास से डन्डा देख कर पहिले ही कहा था कि यह डन्डा धरा लिया जायगा और वह डन्डा धरा लिया गया।

बाबा हरीदास के सालिग्राम भगवान के हमने दर्शन किया है। सालिग्राम बड़े ही अद्‌भुत नील मणि के हैं। उनके हाथ पर रखने से नील आभा हाथ में प्रगट होती है। बाबा जी अपने भगवान को जाड़े के दिनों में गुनगुने जल से अश्नान करा कर पूजन बन्दन के बाद खिले हुए कमल में पधरा कर धूप खिला रहे थे। अचानक एक कौवे ने आकर नीलमणि भगवान को चोंच में लेकर भग चला। भगवान सालिग्राम का आकार मटर के एक दाने बराबर था। वयोबृद्ध सन्त हाय हाय मचाने लगे। घबरा कर अपने पोता नाती औसान दास को आवाज़ देते हुए बोले कि दौड़ो, ठाकुर जी को कौवा ले गया। बाबा औसान दास दौड़े। कौवे का पता नहीं लगा। कुछ देर बाद लौट कर आये और बाबा से बोले कि कहीं पता नहीं लगा। बाबा ने उसी समय से अन्न जल छोड़ दिया। औसान दास ने बाबा से अश्नान आदि करने को बहुत आग्रह किया और कहा कि आप कहैं तो हम दूसरे ठाकुर ला दें। तो बोले कि हमारे वही ठाकुर जी मिलेंगे तो हम अश्नान ध्यान करेंगे। दूसरे दिन बाबा उसी स्थान पर बैठे थे कि कौवा आकर काँव काँव करने लगा। बाबा जी ने कहा कि तुम हमारे ठाकुर जी को बता दो नहीं तो हम तुम्हारे ऊपर शरीर छोड़

देंगे। इतना सुनते ही कौवा पूरब की तरफ़ उड़ा। कौवे को उड़ता देख बाबा ने औसान दास से कहा कि तुम इसके पीछे पीछे जावो, देखो कहाँ जाता है। कौवा धीरे धीरे उड़ता जाता था और मुड़ मुड़ कर औसान दास को देखता जाता था। औसान दास पीछे पीछे चले जाते थे। कौवा उड़ते उड़ते एक झील पर जो बाबा जी की कुटी और महाराजगंज तहसील के बीच में है, रुका और झील में उतरा। झील सूखी थी और उसमें दरार पड़ गई थी। उसी पर बैठ कर काँव काँव करने लगा। औसान दास जी के वहाँ पहुंचने पर कौवा उड़ गया। औसान दास ने जब दरार में देखा तो नीलमणि भगवान चमक रहे थे। औसानदास सालिग्राम ठाकुर को लेकर बाबाजी के पास लौटे। दूसरे दिन बाबा ने उन्हें (ठाकुरजी को) अश्नान कराया तब कुछ पाया।

हमने बाबा की कुटिया देखी है। कुटिया मिट्टी से पाट कर लगभग चार हाथ ऊँचे पर बनाई गई है। साधन काल में बाबा जी एक मुंडी कुरसी पर चबूतरे के कगार पर इसलिये बैठते थे कि निद्रा आने पर गिर जाने का भय बना रहे और निद्रा न आए। बाबा जी अपने मन को इतना वश में किये थे कि पाँच बर्ष लगातार अपनी बाग में रहे। बाग आम का था। आम चूते थे और सब लोग आम ले जाते थे। बाबाजी ने इन पाँच वर्षों में एक भी आम अपनी जबान पर नहीं रखा। अंत के 15 वर्ष बाबा जी के परमहंसी अवस्था में बीते। सारे काम छोटे बच्चों जैसे होते थे। गाँव के छोटे छोटे बच्चों को इकट्ठा कर पीली पीली आम की पत्तियों से बैल बना कर उन्हें मिट्टी की भुरकियों में सानी खिलाते, नंगे नंगे बच्चों के साथ खेलते। अपना घोड़ा बन जाते और बच्चों को अपनी पीठि पर सवारी कराते और कभी-कभी बच्चों की पीठि पर अपने सवारी करते। बच्चों के साथ हंसते थे। खेल में तुम जीतोगे कि हम जीतेंगे, उनसे पूछते। तो हंस हंस कर हरा देते। फिर कहते कि अच्छा! रो। फिर स्वयं रोते और रो रो कर हरा देते।

जब कोई सिद्ध संत आते तो उनके साथ ऐसी ज्ञान की बातें करते कि उनके होश उड़ जाते। 15 साल नंगे रहे। उनका बाल भाव हो गया था। जब कुछ दिन शरीर छोड़ने को रह गए तो अवसानदास ने कहा ''महाराज! अयोध्या जी चला जाय,'' तो कहा "अयोध्या क्या करने जाँय। राम जानकी हमारे सामने हर समय रहते हैं, नाम की धुनि रोम रोम से होती है, ज़र्रा ज़र्रा

से, सब लोकों से हा हा कार मचा है। गती भजन से होती है, शरीर कहीं छूटे। जो भक्त हैं वह भगवान के धाम को जाते हैं।''

हरीदास जी चेला मनीराम की छावनी के थे। बड़ी छावनी के महाराज जी से भजन की बिधि सिखे थे। जब आते तो वहीं रहते, महाराज को अश्नान कराते। एक दिन महाराज को अश्नान करा कर कमरी की लंगोटी को धो कर पानी पी लिया। महाराज ने देखा तो कहा ''यह तुमने क्या किया?'' हरीदास ने कहा ''अच्छा किया, "हमारे मन में ऐसा आ गया।'' महाराज ने कहा "तो अब तुम्हारा मुकाबला कोई न करेगा।'' बस उनके पट खुल गये। काशी में रामायण सभा हुई। वहाँ बुलाये गये। उनसे पूछा गया "मुद मंगल" का अर्थ तो कहो। तो कहा ''जब पट खुल जाते हैं तो भीतर बाहेर एक हो जाता है। वही ईश्वर भीतर बाहेर सब जगह देख पड़ता है। बिना आँखी कान खुले बोध नहीं होता।'' यह सुन कर सब चुप हो गए।

बाबा हरी दास का मकान व कुटी गाँव वल्ला के नवाब की ज़मींदारी में हैं। एक समय की बात है कि नवाब वल्ला महाराजगंज से जीती हुई दो बड़ी मछलियाँ लेकर अपने घर जा रहे थे। रास्ता कुटी के पास से था। बाबा ने नवाब साहेब को बुलाया और कहा ''थोड़ा बैठ लीजिये फिर जाइयेगा।'' बड़े संकोच के साथ नवाब साहेब पास आए। बाबा ने पूछा ''इस झोले में क्या लिये हो?'' नवाब साहेब बड़ी दबी ज़बान से बोले ''महाराज इसमें मछलियाँ हैं।'' बाबा ने कहा कि इन्हें इस गढ़य्या में डाल दो फिर बैठो। सतसंग की बातें होने लगीं। उसी सतसंग में बाबा ने निम्नलिखित पद नवाब साहब को सुनाया जिसको सुन कर नवाब साहब के मन पर ऐसा असर हुआ कि वह वहाँ से उठ कर कहीं चले गए, फिर वापस नहीं आए, किसी ने उनको न देखा।

पदः– बसे हैं नबी जो सबों हिय बिसे क्यों सिखे
जिय जबीं सो बुरी चाल को ।।1।।
जीभ के स्वाद को याद करता पलै सो खलैगा
गले फंद जब काल को ।।2।।
दर्द होती समय है सबै देह धरि मुर्द पोती कमै
नेह करि पाल को ।।3।।
नहिं खुशी है खुदा छल किये ज्ञान सों मान तू क्यों किये
जल पिये खाल को ।।4।।

बाबा दुर्गादास बताते थे कि बाबा हरी दास के पास उन्नाव ज़िला में तकिया गाँव है, वहाँ मोहब्बत शाह की मज़ार है, बड़ी इमारत बनी है, बड़ा मेला होता है कई दिनों तक। एक दिन मोहब्बत शाह बाबा हरी दास की कुटी पर गए और कहा ''हमारी मजार पर आओ।'' बाबा हरी दास कुटी पर से गए घोड़ी पर चढ़ कर। तीन दिन वहाँ रहे। मोहब्बत शाह रोज़ प्रगट होकर सतसंग करते थे। तीन दिन के बाद बाबा ने कहा ''अब हम अपनी कुटिया पर जायेंगे।'' तब मोहब्बत शाह ने एक थान नयनसुख का और कुछ रुपए दिये। बाबा ने कहा ''साधू की चीज़ न लेना चाहिये'' तो मोहब्बत शाह ने कहा ''पहले पहल आये हो, वहाँ सब को बाँट देना। और जब तक शरीर है साल में एक बार हमारे यहाँ आया करो।'' बाबा साल में एक बार जाते थे।

50. लाला राज नारायण
खजुहा, लखनऊ

राज नरायण इन्कम टैक्स के बाबू रहे। जब हम कानपुर गए तब वह वहीं नौकर थे। केराये के मकान में रामबाग में जहाँ हम रहते थे, वहाँ से आधा फरलाँग पर रहते थे। हमसे कहा ''हम दुर्गा जी के भक्त हैं। हमारे गुरु बाँदा जिले के पंडित हैं। वै ह्रीँ बीज अपने को बताए हैं, बीसों साल से चलते बैठे, ठाढ़े लेटे जपते हैं।'' हमने कहा ''बीज नहीं जपा जाता है।'' तो कहा ''बताओ।'' हमने कहा ''नानक जी ने जो सिद्ध किया है और उसी मंत्र को गुरु गोविन्द सिंह ने 10 दिन खड़े खड़े जपा है तब भगौती प्रगट भईं और किरपान, खाड़ा, दुधारा, चक्र दिये हैं तब मुसलमानों को परास्त किया है वही मंत्र तुम्हें बताते हैं। 10 माला रोज़ जपना।'' सब बिधी बता दिया। उन्होंने जपना शुरु कर दिया। दो माह जपने से मन्त्र के अक्षर प्रकाशमान सामने हो गए। हम से बताया तब हमने उनको ध्यान बताया। वह सच्चे बड़े थे। पहले नाम की धुनी खुली, तब फिर सात दिन बाद दुर्गा जी आसन पर साथ लेट गईं 11 बजे रात को। तब राज नारायण उठ कर भाग कर हमारे पास आए। आधे फरलाँग पर हम गुरु प्रसाद लाला के यहाँ बरामदा में थे, किवाड़ खटखटाया। हमने खोला तो हाल बताया। हमने कहा '' तुम बड़े भाग्यवान हो, भागे काहे?''

तो कहा ''उनकी आँखों से तेज निकलता था, नेत्र खुले थे, लाल वस्त्र धारण किये थीं, शरीर महकता था। नेत्रों का तेज हमारे मुख पर पड़ता था। हम इससे घबरा कर भाग आए।'' हमने कहा कि अब न डरना, जाओ। फिर गये, आराम किये। फिर रात दिन में कई बार दर्शन होने लगे। हमने कहा ''एक हमारी दंडवति कह दिया करो'' तब से रोज़ एक दंडवति कह देते थे। किसी पंडित ने उनको मारकेश बताया, पैर में कुछ तकलीफ़ हो गई थी। डाक्टर के पास गए। उसने एक बोतल में एक अर्क दिया। 4 रु० दाम लिया, कहा, ''रोज़ सुबह शाम दो दो तोला पीना।'' उसमें पीपरमेन्ट छोड़ दिया था और एक अंडा फोड़ कर छोड़ दिया था। हम यह दवा जानते थे। हमने बताया तो बोतल फेंक दिया। हमने कहा ''तुम दुर्गा जी के भक्त हो, तुम हनुमान जी का सवा लाख मंत्र जपा दो। दुर्गा जी हनुमान जी को पुत्र कहती हैं। किसी पंडित से करा देना, उसे 15 रुपया महीना दिया जायगा।'' तो कहा ''करा दीजिए।'' पंडित जी को बुला कर शुरू करा दिया। दर्द पैर की चली गई।

वह सच्चे बड़े थे। बज़ाज़ कपड़ों के कई-कई थान देते और पंसारी मसाला-मेवा देते तो कहते ''हम नहीं लेते हैं, फलाने बाबू लेते हैं उनको देना।'' जब बाबू लोग जाने तो सब ने मिल कर इनकी बदली करा दी। सात जगह बदले गए। हम से बताया। हमने कहा कि तुम सीधे आदमी हो। कुछ न कहा करो, इसमें बैर होता है। तब कहना बन्द कर दिया। फिर सब देवी देवतन की दया हो गई। रिटायर हो गए। उनके तीनों लड़के भी जिस देवता से प्रेम था सब जप या पाठ करते थे। हम इनके घर लखनऊ कई बार भोजन करने गए हैं और कानपुर भी कई बार भोजन करने गए हैं। बड़े भाव के जीव रहे। लखनऊ में बीमार हुए। अस्पताल में गए तो जगत नारायण ने हमें लिखा था कि आपके भक्त राजनारायण के शरीर छूटने के पहिले भगवान ने अपने दाहिने हाथ का अंगूठा मस्तक में लगा दिया। वह निशान बन गया। शायद 72 में शरीर छूटा है।

जगत नारायण बताते थे कि वै बड़े शान्त स्वभाव के थे। उनकी रहनी सहनी ऐसी थी कि कोई साधारणता यह नहीं जान सकता था कि वे ऊँचे भक्त हैं। अपना भजन रात में 10 बजे के बाद से करते थे। दिन में घर का काम और नौकरी। रिटायर होने के बाद घर की आर्थिक स्थिति

ठीक रखने के लिये वैद्यक करते थे। दुकान पर, घर पर मरीज़ देखते। न सेवा काल में और वैद्य की हैसियत से कभी अनुचित पैसा न लिया।

जगतनारायण उन्हें अपना प्रथम गुरु मानते हैं क्योंकि अध्यात्म में उन्हीं की प्रेरणा से मोड़ आया, नास्तिकपन छूटा। जगत नारायण का उनका संग संवत 1998 (सन् 1942) में कानपुर दफ़्तर इन्कम टैक्स से हुआ। तब जगत नारायण बिल्कुल नास्तिक थे। इनके साथ उठना-बैठना, बातचीत, हँसी-मज़ाक होता था। इनकी संगत से जगत नारायण को आस्तिकता का बोध हुआ, तब उन्होंने जगत नारायण से कहा ''भजन करना है तो कोई गुरु (योग्य जो हो) कर लो।'' फिर इन्हीं के बताने पर संवत 2000 (सन् 1944) में जगत नारायण हमारे पास उन्नाव में आए और मंत्र लिये। फिर दो माह बाद दोनों जने (राज नारायण व जगत नारायण) हमारे दर्शन को उन्नाव आए। तब हमने कहा ''राज नारायण दुर्गा जी के बड़े जबर भक्त हैं, रोज़ हमारी एक दंडवति कहते हैं।'' तब जगतनारायण को ज्ञान हुआ कि यह बहुत अच्छे साधक हैं।

जगत नारायण बताते थे कि यह बड़े दयालू थे। हम दोनों प्राणियों से बड़ा प्रेम रखते थे। एक समय संबत 2010 (सन् 1954) में जगत नारायण ने एक अनुष्टान अपने बड़े भाई राम नारायण की नौकरी के लिये शिवरात्रि पर करने का विचार किया। तब घर में एक आवाज़ आई कि जगत नारायण को मना करो कि अनुष्ठान न करे। यह आवाज जगत नारायण की स्त्री ने सुनी थी। पर जगत नारायण न माने और अनुष्ठान आरंभ किया तो जब आधे से ज्यादा हो गया तो पेट में बड़े ज़ोर का दर्द उठा। अनुष्ठान छोड़ कर टट्टी जाना पड़ा और बहुत जोर का बुखार चढ़ आया। तीन दिन दवा होती रही पर सुधार न हुआ तब राजनारायण को बुलाया। आदमी बुलाने शाम को गया तो उन्होंने कहलाया ''घबड़ायें नहीं, कल सुबह आवेंगे।'' दूसरे दिन सुबह आये। जब आए तो बुखार 101 था। आने के दो घंटा भीतर बुखार उतर गया। फिर दिन भर जगत नारायण के साथ लेटे रहे चारपाई पर, पेट कलेजे पर हाथ फेरते रहे। शाम को चलते समय कहा, ''आगे किसी के लिये अनुष्ठान न करना, तुम्हारे भाई के ग्रह बहुत खराब थे। यदि किसी के साथ करना ही चाहना तो रुपये-पैसे, हाथ-पैर से मदद करना। बगैर सोचे समझे अनुष्ठान नहीं करना चाहिए। करना ही था तो अपने गुरु से आज्ञा लेकर करते।

जगत नारायण की स्त्री बताती थीं कि अन्तिम समय वह बलरामपुर अस्पताल से सुबह 8 बजे घर पर ले आये गए थे क्योंकि उन्होंने कहा था कि अब हमें घर फ़ौरन ले चलो। घर आकर 10 बजे, दो घंटा बाद, शरीर छोड़ दिया, पर आँख पथराई नहीं थी। शरीर छोड़ने के पाँच मिनट पहले भगवान ने माथे में दाहिने अंगूठे से तिलक कर दिया था। वह निशान माथे पर बन गया था। यह अंतिम समय पर उनके पास थीं। आंखें खुली थीं। सब चलते फिरते उनकी आँख में दिखाई देते थे।

शाम को 4 बजे अंतिम संस्कार को कानपुर गंगाजी ले गए। उस समय तक आंख वैसी ही थी, खराब न हुई थीं। दो ढाई महीने पहिले जगत नारायण के घर गए थे, तब ही कहे थे कि अब दो ढाई महीना और रहेंगे। उन लोगों ने विश्वास न किया था।

51. अच्छन मियां तेली (अजर अमर हैं)
(ध्यान में आए थे, पूँछा नहीं, कहाँ के थे)

पदः—बजती दोनों हाथ हथेली ॥1॥
सतगुरु करि सुमिरन विधि जानै सो इस मार्ग में पेली ॥2॥
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि कर्म शुभाशुभ बेली ॥3॥
अनहद सुनै पियै घट अमृत सुर मुनि के संग खेली ॥4॥
सिया राम प्रिय श्याम रमा हरि शिव गिरजा अलबेली ॥5॥

हर दम सन्मुख दर्शन देवैं माया बन गई चेली ॥6॥
निर्भय औ निर्वैर रहै जग कौन सके तब ठेली ॥7॥
राम श्याम के सखा मनोहर संग में लिये सहेली ॥8॥
बिबिध भाँति के हार सुगन्धित गले में देवैं मेली ॥9॥
तन मन मस्त बरनि किमि पावै, आनन्द लेई सकेली ॥10॥

जो जाने सोई सुख माने है यह कठिन पहेली ॥11॥
गूंगे को जैसे दे दीजै खायै गुड़ की भेली ॥12॥
स्वाद बताय सकै नहिं नेकौ सूरति भई अकेली ॥13॥
अन्त त्याग तन निज पुर बैठे कहत अच्छन तेली ॥14॥

52. अंधे शाह
सीतामढ़ी, जिला मुजफ्फ़रपुर

दोहाः— सतगुरु से विधि जानि कै जपै मंत्र मन लाय।
तब फिर बैठे ध्यान में महा मंत्र खुलि जाय ॥

चौबोलाः— महामंत्र खुलि जाय तान सर्वत्र से आवै।
चल समाधि में जाय लेख कर्मन कटवावैं ॥1॥
उतर आय तन माहिं आलसै पता न पावै।
ज्यों का त्यों बल रहे जानि हिरदयँ हरषावै ॥2॥
सिया-राम प्रिय-श्याम रमा-हरि सन्मुख छावै।
अद्‌भुत छबि सिंगार छटा को बरनि बतावै ॥3॥
एक टक ताकत रहे बोल मुख से नहिं आवै।
गदगद होवै कंठ रोम सारे पुलकावैं ॥4॥

टपकै नैनन नीर तेज चम चम चमकावै।
तन होवै कम्पायमान अस मस्ती आवै ॥5॥
सुर मुनि आवै मिलन नाम जस कहि कहि गावैं।
निज कुल में अस भक्त मनै मन सबैं सिहावैं ॥6॥
जो इस रंग में फँसा गँसा सो बसा कहावै।
सरनि मरनि औ तरनि मुक्ति भक्ती बतलावै ॥7॥
सो जियतै ह्वै जात बात यह एक कहावै।
अंधे कह तन त्यागि यान चढ़ि निजपुर जावै ॥8॥

53. सन्तों का सीताराम ध्वनि करना

यहाँ अयोध्या में एक ठाकुर आते थे। वे बिदेही के मन्दिर में सरजू किनारे रहते थे वहीं कुछ परिचय था। वै सब देवी देवताओं को मानते थे और बड़े सीधे जीव थे। जो कोई उनको गाली दे या धक्का दे तो कहते थे, "तुम्हारा स्वभाव ही ऐसा है। जैसा मन चाहता है कहते हैं और करते हैं।"

वे मंत्र नहीं लिये थे। उनको बड़े-बड़े अनुभव होते थे। सभी देवी देवताओं के अनुभव होते थे। कभी दिन में कभी रात में बातचीत होती

थी। कोई रात दिन खाली नहीं जाता था। वे हमारे पास कभी 7 दिन कभी 15 दिन पर आते थे। भोजन करते, देर तक बैठते और वही बातों की चर्चा करते।

एक बार वह माघ में कल्पवास में पैदल गये, एक माह रहे। पैदल लौटे तो एक मैदान पड़ा। वह काफ़ी लम्बा-चौड़ा था। उसमें प्रवेश किया और खड़े हो गये। कुछ देर में सीता राम सीता राम की आवाज़ें होने लगीं। तब वे इधर-उधर ताके, कोई देख न पड़ा तो मारे प्रेम के रोने लगे। फिर वहाँ पर देखा कि लाखों सन्त, शरीर जैसे तपाया हुआ लोहा, लाल रंग, लैन की लैन बैठे हैं। तब एक सन्त ने कहा, ''हम सब कोटिन युग से सीता राम सीता राम करते हैं। न भूख है, न प्यास है, न नींद है, न थकते हैं। ऐसे ही बैठे रहते हैं।'' सिर्फ़ लंगोटी लगाए थे। सब 10-12 वर्ष की उम्र के मालूम होते थे, न दाढ़ी, न मोंछ। बहुत छोटे बाल सर में थे। 15 मिनट दर्शन हुए। साष्टांग दंडवति किये। फिर वह दृष्टि गायब हो गई। एक सन्त बोले थे और नहीं बोले। कहा था, ''तुम बड़े संस्कारी हो। तुमको भगवान 52 की उम्र में साकेत में बुला लेंगे।''

जब आए तो पहले यहाँ आये। भोजन किए फिर सब हाल बताए। शाम को बिदेही मंदिर में गए। हमने कहा ''भगवान की लीला भगवान जानें। कोई जान नहीं सकता। जितना जनावें उतने में विश्वास कर ले बस पार हो जाय। जिनके रोम-रोम में ब्रह्माण्ड हैं, श्वाँस निकलते, फिर भगवान में समा जाते हैं उनका हाल कोई जान नहीं सकता। हमैं ऐसी बातैं किसी ने कभी नहीं बताईं जैसा तुमने बताया, बड़े-बड़े सिद्ध मिले। तुम बहुत ऊंचे संस्कार के हो।''

54. पंडित गंगा प्रसाद

यह पहले जन्म में पासी थे। काम अच्छा करने से ब्राह्मण हुए थे। कूँड़े भार के करीब गाँव था। उनके पिता पुलीस कप्तान के नीचे अफ़सर थे इलाहाबाद में। तब यह 12 साल के थे। इनके ऊपर एक औघर आने लगा तो वह दोनों हाथों का माँस खा ले फिर पूर जाय। इनको तकलीफ़ न मालूम हो। वह बं शंकर बं शंकर करै और ब्रह्म जिन्न जिसको पकड़े हो उस पर कुल्ला कर दे तो वह छोड़ भागै। फिर

दुर्गा जी का आवेश आने लगा तो औघर भाग गया। दुर्गा जी, बिन्दबासनी, धमसा देवी तीन खुश हो गईं। दुर्गा जी ने ढोलक से बहुत गाना सिखाया। गंगा प्रसाद ने कहा, "माता जी! हम राम मंत्र लेने जाते हैं।" तो भगौती ने कहा, "उस जन्म के पासी हो। काम अच्छा करने से ब्राह्मण हुए। मंत्र ले आवो। राम मंत्र हम भी जपती हैं। हमारे सामने राम जानकी की छटा हर समय रहती है।''

गंगा प्रसाद आये। हमसे कहा ''हम माता से पूछ कर मंत्र लेने आये हैं।'' मंगलवार की शाम को आये थे। हम समझे अपनी माता को कहते हैं। सुबह बुधवार को 8 बजे इसी जगह बैठे रहे तो मन में विचार आया कि कल गुरुबार है और एकादशी है तो कल बताना ठीक है। बस इसी जगह दुर्गा जी प्रगट हो गईं लाल वस्त्र धारण किये, दस भुजा, दसौं में अस्त्र लिये, शरीर बहुत गोरा था। मुकुट में ऐसे नग जड़े थे जो प्रकाश होता था उससे नेत्र चौंध्याय जाते थे। दोनों नेत्र खुले थे, पलक नहीं पड़ती थी। पैर ज़मीन से एक बीता ऊँचे पर थे, शरीर महकता था। हमसे कहा, ''शुभ काम में कोई दिन की ज़रूरत नहीं है। रात दिन भगवान के हैं।'' फिर अन्तर हो गईं। हमने गंगा प्रसाद को बुलाकर राम-जानकी मंत्र बताया।

वै शुक्रबार को कहै ''हम जाते हैं।'' गंगा अश्नान को चले गये। रास्ते में एक बाग पड़ी। बारह बजे रात में बाग में बैठ गये। घोर अन्धेरा था। दुर्गा जी प्रगट हो गईं कहा, ''भजन बहुत करते हो, दर्शन करोगे'' तो कहा ''हाँ'' तो दाहिना हाथ उठाया फिर पूरब तरफ़ कर दिया। राम जानकी प्रगट हो गए। 15 मिनट दर्शन हुआ तब अन्तर हुए। भगौती ने कहा, ''तुमको 14 वर्ष राखौंगी। शादी करने नहीं दूंगी।'' गंगा प्रसाद गंगा नहा कर फिर आए। सब हाल बताया। जब तिबारा आये तो शाम को आरती का समय था। आधा घंटा बाकी था। कुछ लोग भगवान के मंदिर के समीप बैठे थे। हम भी थे। हमने बिन्दबासनी का ख्याल किया तो उन पर आ गईं और अपना माथा ज़मीन में गंगा प्रसाद ने ज़ोर से मारा। ज़मीन हल गई। हमसे कहा, ''तुमने हमारी याद किया। हम विन्ध्याचल से आ गईं।'' हमने कहा, ''अब आरती हो जाय, गाय के दूध को भगवान का भोग पाकर जाना।'' तो कहा ''अच्छा!'' फिर जो कोई कुछ पूछा सो बताया। फिर आरती हुई। पैकरमा दंडवति किया, दूध पिया।

फिर माथा गंगा प्रसाद ने ज़मीन में ज़ोर से मारा और कहा, ''हम जा रही हैं।'' फिर चली गईं। गंगा प्रसाद को बहुत लोग घेरे रहते थे। भूत वाले, जहाँ भगौती कहैं, वहाँ चले जाते थे। 26 की उम्र में मंत्र लिया। 14 वर्ष के बाद शरीर छोड़ा।

गंगा प्रसाद के साथ एक मुराऊ कई बार आया। उम्र 30 साल की होगी। उसे काली जी दस महीने मिठाई कई तरह की, अपने हाथ खिलाती थीं, जल पिलाती थीं। क्षत्र लगा कर आती थीं। कभी उनका पूजन, जप पाठ किया होगा तो जितने दिन का उसे अपने हाथ खिलाने का बचन दिया होगा उतने दिन खिला दिया। घर के लोग कहते थे कि तू खाता नहीं घर में। कहाँ से खा आता है? तो उसने कहा "हमें काली माता खूब बढ़िया मिठाई खिलाती हैं।" तो घर के सब आदमी कहने लगे कि यह क्या झूँठ कहता है। न पढ़ा है न कुछ किसी देवता की पूजा करता है। ऐसी बातें करता है। उसने कहा ''कल देखना।'' जब काली जी आईं तो खिला कर बहुत मिठाई छोड़ गईं। तो उसने कहा, ''देखो! यही मिठाई रोज़ खाता हूँ।'' सब लोगों ने देखा तो कहा, ''यह जिन्न लोगों का काम है कोई न छूना।'' जिसको खिलाती थीं वह एक हांडी लाकर भर कर घर में रख लिया। वह मिठाई फिर मय हांडी के गायब हो गई। जब दस माह पूरे हो गए, भोजन करा चुकीं तो उसने जो क्षत्र लगा कर भोजन कराती थीं उसे पकड़ा और कहा, ''यह हमें दिये जाव।'' बस अन्तर हो गईं। फिर न आईं। हमने कहा, ''तुम्हारी बड़ी ऊँची गती होगी।''

55. ब्रह्मचारी और रिटायर्ड दारोगा

बाँदा ज़िले में मऊ है। वहाँ एक हाफ़िज़ लखनऊ के रहते थे। लखनऊ से गये 80 साल हुवा था। थोड़ी ज़मीन किसी ने दे दी थी उससे बसर करते थे। अकेले थे। 10 बजे रात से अपनी कुटी पर किसी को आने नहीं देते थे। ब्रह्मचारी और दारोगा गये कहा, ''भजन करना बताओ'' तो कहा, ''तुम्हारे 100 जूता मारे जायँ तुम रंज न हो तब भजन सिख सकते हो।'' दोनों लौट पड़े। ब्रह्मचारी यहाँ कई माह रह चुके थे। वै नहीं आए। कहीं चले गए। दारोगा को एक सन्यासी मिले। शंकर जी का मंदिर बनवाते थे। उनसे दारोगा ने कहा, ''भजन बताओ''

तो वे बोले, ''कुछ मदद करो, शंकर जी का शिवाला बनवाते हैं।'' दरोगा ने घर जाकर 2200 रु० का इन्तजाम कर दिया। जब मंदिर बन गया तो दरोगा गये। संन्यासी ने कहा, ''हम भजन नहीं जानते हैं।'' तो किसी ने उन्हें यहाँ भेजा। हमसे सब बात बताई। हमने कहा, ''तुमने अच्छा किया, बाबा आदम के शिवाले में मदद किया।''

दारोगा की उम्र 68 साल की थी। जमींदारी थी। यहाँ आए तो पूस-माह दो महीने इसी बरामदे में उत्तर तरफ़ रहे। सात दिन बैठे रहे। कुछ न खाया न पिया न नहाया न उठे। आठवें दिन हम गाय का माठा एक कुल्हड़ में दिया तो उठे, अश्नान किया, उसे पिया। फिर धीरे-धीरे थोड़ा एक पहर खाते थे। हमने कहा, ''जन्म भूमि पर मसज़िद में शुक्रवार को मुसलमान नेमाज पढ़ने आते हैं वहाँ जाया करो।'' गये तो मुसलमानों ने पूछा, ''कहाँ रहते हो?'' तो कहा, ''गोकुल भवन में।'' तो सब ने कहा, ''यहाँ और कोई मुसलमानों को अपने यहाँ नहीं रख सकता है।'' फिर उन्हें कल्मा बताया, कंठ से उठावो, मूंह बन्द रहे, ज़बान न हिले। उनका प्रेम था। 10 दिन में कंठ का चक्र खुल गया। फिर स्वत: होने लगा। तब ध्यान बताया। बड़ा बैठने वाला था। बड़ी तरक्की की। 2 बजे उठकर डोलडाल, अश्नान करके बैठता। 10 बजे तक बैठता था। शाम को सूर्यास्त से साढ़े दस तक बैठता। 11 बजे रात सैन करता था। फिर भगवान की दया हो गई। सबेरे शाम आरती लेता, दंडवति करता। लगते फागुन 2 को उसको घर भेजा। घर से भाई का पत्र आया था।

56. पाराशर नाथ की मढ़िया
जिला हरदोई

पाराशर नाथ महादेव पाराशर जी के स्थापित किये हुये हैं। गोमती के किनारे मैगलगंज स्टेशन से दो कोस है। वहाँ पर अमावस को मेला लगता है। फिर शाम को उखड़ जाता है। शंकर जी को पूज कर अजर अमर हो गये हैं। वह करीब में सिद्धों की झुंडी बजती है। वहाँ कई प्रकार के पेड़ हैं। वहीं गुफ़ा है। ऊपर से मूंदे हैं। सिद्ध लोग मनौगती से निकलकर दो बजे रात में गोमती से नहाकर शंकर जी की पूजा करते हैं, फिर उस झुंडी में जाकर मनौगती से गुफ़ा में समा जाते हैं।

एक पंडित एक नौकर लेकर शंकर जी को भागवति सुनाने आए तो जो बाबा का ठाकुरद्वारा है, वहाँ के पुजारी ने कहा, ''यहाँ ठहरौ, वहाँ कोई नहीं रहता है। रोज भागवति सुना कर यहाँ भोजन बनावो, आराम करौ। वहाँ सिद्ध लोग नहाकर 2 बजे शंकर जी की पूजा करते हैं। पंडित ने कहा "हम किसी को नहीं डरते हैं। हम वहीं रहेंगे। इधर उधर रास्ता है। दोनों तरफ़ तीन तीन दर के कमरे बने हैं। पश्चिम तरफ़ पक्के हैं, पूरब तरफ़ कच्चे हैं। पंडित वहीं ठहरे। 2 बजे रात को एक चेला घोड़ा बना, गुरु सवार हुए। एक चेला पीछे घोड़े के था। हाथ में सोंटा था। नहा कर चले तो पंडित ने गाली दी "साले भूत होंगे। हम डरते नहीं हैं।" वह सब बोले नहीं। पूजन करके लौटे तो पंडित ने फिर गाली दी। जो चेला पीछे सोंटा लिहे था उसने पंडित के गाल पर एक तमाचा मारा। पंडित का मूँह पीछे घूम गया और जो पंडित के साथ रहा उसके एक सोंटा मारा। वह मर गया। वह गुरु चेला अपनी अपनी गुफ़ा में समा गये।

सुबह यह हाल मालूम हुआ। एक कोस एक गाँव है। ठाकुर आये अद्धा लेकर। उठा ले गये। पेड़ में बांधे थे। बाबा टीका दास के चेला राजाराम टीन लेने सीतापुर गये थे। ठाकुर जी के आगे बरामदा था उसके आगे छोड़ने को। जब आए तो सुना कहा "हम भी देख आवैं।" राजाराम चलने को तय्यार हुए तो सिद्धों की झुंडी से एक सन्त आ गये कहा "बाबा! हम भी चलेंगे।" भभूती लगाए थे। उम्र 25 की थी। एक झोली बगल में एक सिंगी हाथ में लिये थे। वहाँ पहुँचे। सिंगी बजाया। मूँह ठीक हो गया कहा "अब ऐसा काम न करना।" बस पंडित ठीक हो गये। बाबा राजाराम के साथ आए। राजाराम ने कहा "थोड़ा दूध गाय का पी लो" तो कहा "हम कुछ खाते पीते नहीं हैं।" बस अन्तर हो गए।

57. राधाकृष्ण नाऊ

मुकाम चमरहिया हमारे गाँव से दो फरलांग दक्खिन है। उसमें एक ब्राह्मण हमारे परिवार के अवध बिहारी, उनके दो लड़के बच्चू और गजोधर रहते थे। एक घर नाऊ का था। 3 भाई थे। सबसे बड़े राधाकृष्ण, मझले सरजू, छोटे द्वारिका थे। सबके परिवार था। बाकी चमार के घर थे। जो मरा पशू होता है उसका मास खाते, सुअर खाते। उस पुरबा (मुहल्ला) में बड़ी गंदगी थी। राधाकृष्ण किसी से द्वादश अक्षर का मंत्र लिहे थे।

पढ़े थे तो सबको बिश्राम सागर सुना सुना कर मास खाना छुटा दिये। सब घर पोत कर राम राम करने लगे। जो कोई उनसे पूछै तो कहैं "हम चेला नहीं करते।" गाँव भर में चिराइन्ध बनी रहती थी। वही सबसे प्रार्थना किया हाथ जोड़े। सब सुनने लगे। भगवान की कृपा से सब छोड़ दिये।

उनके दोनों भाई उनसे बहुत काम लेते थे। शाम को छुट्टी देते थे। वे हार में जाते, जप करते, फिर ध्यान करते। 4 बजे सवेरे घर आते। खेत जोतने जाते। सुबह आते तो बैलन को चारा-करवी-घास लाते उसे काटते, सानी करते, बैलों को खवाते। तब एक बार रुखा-सूखा खाने को पाते। कहते, "हमैं भगवान ने शक्ती दे दी है।" भाइन से कहा "जितना तुम्हारा सबका मन हो उतना काम ले लो। हम हट नहीं सकते। भगवान की दया से हमारे शरीर में बल हो गया है। नींद भाग गई, अपना नेम टेम से कर लेते हैं। हमैं कोई तकलीफ नहीं है। अहार शरीर का भगवान सब योनि में देते हैं और भगवान की प्राप्ति नर शरीर से ही होती है। हम इलाही के संगी हैं। उनके गुरु जी तो उन पर बहुत कसनी की। टरे नहीं। हम पर कोई बोझ नहीं है। सब प्राप्त कर लिया। घर का सब काम किया।"

जब महाराज राम घाट पर प्रह्लाद दास मंदिर में थे तब कुछ दिन के लिए आया। दो लड़के थे सयाने। उनसे कहा "खूब काम करना, किसी को तकलीफ़ न हो।" वह यहाँ इतना काम करता था – 12 मूर्ति थीं। सब जल भरै, आटा भिजावै, चौका-बरतन मलै, भगवान के दोनों समय पारखत मलै, गऊ की सेवा करै, हाता द्वारे तक बुहारे, दुखी हो उसका मल मूत्र साफ़ करै। उसे 6 माह बीत गये। पतरा पतरा लम्बा सांवला सा था। फिर घर के लोग लेने आए। महाराज से पूछा। महाराज जी ने कहा "जाओ।" ठाकुर जी की दंडवति, महाराज का चरनोदक लिया। सबके हाथ जोड़े। सब के आँसू आ गए। चल दिया काफ़ी दिन रह कर। कुछ बीमार न हुआ। भोजन करके 3 बजे गाँव के सब लोगों को बुलाया। इलाही एक फरलांग पर रहते थे। उनको बुलाया। कहा, "आज हमै बड़ी आनन्द आ रही है।" इलाही ने कहा "समय आ गया। विमान आ गया। शंकर जी हनुमान जी खड़े हैं। तुमको विमान पर बैठार देंगे।" बस सब के हाथ जोड़ा। इलाही से लिपट कर मिले। शंकर जी हनुमान जी की दंडवति की और कहा "जै जै सीता राम।" बस शंकर जी हनुमान जी ने विमान पर दिब्य शरीर को बैठार दिया। इस शरीर को इलाही ने साध

लिया। ले कर बैठ गए। 90 की उम्र में शरीर छोड़ा। उन्हें शंकर जी हनुमान जी से प्रेम था। इलाही को छोड़ कर सबके आँसू आ गए।

58. देवी दीन ब्राह्मण

उनके साथी ठाकुर बलदेव दास, ठाकुर जगशरण दास, हरीदास ब्राह्मण और सुन्दर दास अहीर थे। सबने साधन मान अपमान त्याग कर किया है। हम सब को जानते हैं। थोड़ी बातैं देवीदीन की लिखते हैं। सब की कथा लिख नहीं पावेंगे। सर में आवाज़ बढ़ जाती है। मालूम होता है सर फट जायगा।

हमारे गाँव से दो कोस भदेसिया गाँव है। बड़ा है, वहीं रहते थे। घोड़ा लादते थे। तब सब चीज़ बहुत मद्दी थी। कम से कम 6 या 7 मूर्ति बने रहते थे। अकेले थे। एक लड़की बेवा थी। वही भोजन बनाती थी। भगवान का जस, ध्यान, जप, कथा यही हुआ करता था। संसारी बातैं नहीं होती थीं। कुछ दूर पर एक गरीब हलवाई रहता था। वह भजन का प्रेमी था, शायद नत्थू नाम था या और कुछ था। हम भूल गये होंगे। वह रोज़ आता था।

एक दिन घर में कुछ काम था, अकेला था, कोई न था। अपने हाथ भोजन बनाता, सब काम करता, मिठाई बनाता, बेचता था। जब कथा बन्द होती तब एक घंटा सत्संग होता। जब हलवाई शाम को घर गया तो देखा कि देवीदीन वहाँ बैठे थे। तो फिर लौट आया तो यहाँ बैठे देखा। उसने कहा "बाबा! तुमको तो हम अभी अपने घर में बैठे देखा है और यहाँ भी बैठे हो'' तो कहा, ''भैय्या! तुम गरीब हो, मकान टूटा है। कुत्ते आकर मिठाई खा लें। इससे एक रूप से तुम्हारा घर बचाता हूँ जब से कथा होती है और तुम यहाँ आते हो तब से रखवारी करता हूँ भगवान के हुक्म से।'' सब भक्त देवी दीन की दंडवति गिरे। ऐसा भक्त उपकारी कहीं कोटिन में होगा। जब उनका शरीर छूटने के दो माह रहे तब हमने खद्दर की दुसूती भेजा तो सब से कहा, ''देखो! भगवान ने कैसी दया की है। पहले ही वस्त्र आ गया है। भुइधरा खोद कर बैठार कर यही कपड़ा ओढ़ा कर मिट्टी दे देना।'' फिर समय आने पर सब इकट्ठा हुए। भक्तों से कहा, ''अपने अपने इष्ट में अटल विश्वास रखना। भगवान के प्रेम में आँसू आवैं। वह अन्दर का शीशा साफ़ करते हैं। जीव मात्र पर दया रखना। द्वैत के ताग तूड़े बिना वहाँ पहुँच नहीं होती।'' फिर कहने

लगे कि "तमाम देवी देवता, ऋषी मुनी आ गये हैं, तरह-तरह के बाजा बज रहे हैं, अपसरा नाच रही हैं, कितने रंग रंग के झंडा-पताका-चँवर लिये हैं। बस देखतै बनता है, सुनतै बनता है। जो देखा है, जानता है वही इसका अनुभव कर सकता है।" फिर कहा, ''हमारी सब लोग प्रार्थना सुनकर अपने अपने इष्ट में लगे रहें। बड़ी भाग्य से नर शरीर मिला है। परस्वारथ करना, भगवान का भजन करना, अपने शरीर से किसी को दुख न देना, आप तकलीफ़ सह लेना। यही भक्त के लक्षण हैं।'' फिर बोले, ''सियाबर रामचन्द्र की जै, राधेबर कृष्ण चन्द्र की जै, रमापति विष्णु चन्द्र की जै, उमापति महादेव की जै, पवनसुत महाबीर की जै, सभी देवी देवतन की जै, सब ऋषिन की जै, सब सृष्टि की जै।'' फिर कहा, ''अब विमान आ गया।'' दोनों हाथ जोड़ कर ऊपर उठाया, शरीर छोड़ दिया।

उनकी समाधि कच्ची बनी है। साल में एक बार मरम्मत हो जाती है। 90 की उम्र में शरीर छोड़ा।

59. शुक देव जी का दर्शन
सीतापुर स्टेशन पर

श्री शुकदेव जी के दर्शन सीतापुर स्टेशन के करीब जो स्टेशन है जहाँ से लाइन श्यामनाथ महादेव होकर रामकोट मिसिरिख की तरफ़ जाती है उस स्टेशन के करीब हम भोजन बना कर भोग लगाया। हकीम भूधर दास कौम के तेली थे उनको परस दिया, हम पाया। सब काम से फ़ुरसत मिली तो एक सन्त कहीं से आ गये। नंगे थे। 12 बर्ष के मालूम होते थे। सारा शरीर मूंगे ऐसा लाल था और चमक थी। उनके दोनों फोता कंजे-कंजे के बराबर थे। इन्द्री बहुत छोटी पतली थी। जब बच्चे पैदा होते हैं तब देखा किसी किसी की ऐसी होती हैं। सिर के बाल एक-एक अंगुल थे। तो हकीम जी ने कहा ''कोई सन्त बहुत ऊँचे हैं काया कल्प किये हैं। इनके पैर जाकर छुओ।'' जब हम गये तो वे चट से हमारे पैर छू लिये और बैठ गये। तमाम भीड़ हो गई। बाबू लोग दोनों स्टेशन के आ गए। हम से कहा, "यह कौन हैं?" हमने कहा, "हम नहीं जानते। तुम ही बताओ।" तो कहा, ''कोई अमीर का लड़का है इसके मेद बढ़ गया है।'' हमने कहा ''अमीर का लड़का कहीं इस तरह नंगे घूमता है? उसके तो कोई संग नहीं है।'' तब सब चुप रहे।

हमने सन्त से कहा, ''कुछ खाओगे?'' तो कहा, ''हाँ।'' तब हम हलवाई की दूकान पर से अच्छी-अच्छी मिठाई कई किस्म की, दो सेर लिया दोनों में और एक छोटी हाँडी में पानी लिया। उनको अपने हाथ से खिलाने लगे। बीच-बीच पानी पिला देते थे। फिर मुंह धो दिया। फिर वै उसी जगह लेट गए। एक घंटा बाद उठ कर, एक पुल रहा उसमें चले गए। चारों तरफ गंदा था। फिर एक घंटा बाद हम गये कहा, ''अब आप दर्शन देंगे। हमारी गाड़ी का समय भी आ रहा है।'' तो निकले। हमारे आसन टाट पर बैठे। हमने कहा, ''खिचड़ी आपको बना कर खवावैंगे।'' तो उन्होंने कहा, ''तुम्हारा प्रेम है तो खा लेंगे वैसे तो हम कुछ खाते पीते नहीं हैं। प्रेमियों की इच्छा पूरी कर देते हैं जिसमें उनको दुख न हो।'' हमने हाँडी में खिचड़ी मसालेदार घी छोड़कर बनाया, पत्तल पर परसा, जल धरा। हम पवाने लगे। छोटे-छोटे कई बच्चे कुत्तों के, आ गए। खाने लगे तो उनसे कहा, ''कभी तुम्हारे बाप दादा ने ऐसा खाया था? तुम सब हमारे साथ खाते हो।'' फिर हम से कहा ''तुम भी खावो'' तो हमने कहा, ''हम नहीं खा सकते। अभी हममें इतनी शक्ती नहीं है। हमैं उल्टी हो जायगी।'' तो हमसे कहा, ''बिन हरि कृपा मिलैं नहिं सन्ता।'' फिर हम खवा कर मूँह पोंछ दिया। और सब बच्चों ने खूब खाया कम न पड़ा। बच्चों को जल परइन (प्यालियों) में अलग-अलग धरा। पीकर बैठ गये।

कोई विद्या हो सब पढ़ देते थे। फिर हमने कहा, ''हमारी गाड़ी का समय आ गया है। हम स्टेशन जा रहे हैं।'' तो हमारे साथ चल दिये। जब हम अपना और हकीम जी का टिकट लेकर गाड़ी पर बैठे तो संग ही बैठ गए। वहाँ हमारे पहले बेलहरे के ठाकुर शिव गंगा बक्स, रवि प्रसाद सिंह बैठे थे। उसी पटरी पर हम बैठ गए। तो बाबा ने हमारे सर पर से नया ऊनी टोपा, जो कोई आदमी सिला कर सुखा कर लाया था, फागुन महीना शुरू था, हमने उसे सर पर लगा लिया था, उन्होंने हमारे सिर से उतार कर अपने सर पर लगा लिया और हमारे जांघ पर सर धरा, दोनों ठाकुरों के ऊपर पेट-पैर धर कर लेट गए। उनको देख कर कोई बोला नहीं। बड़े सुन्दर थे। जब गाड़ी चली, दो कोस पहुंची तो हमने मन में विचार किया, ''इनको वहाँ ले जायँगे सब को दर्शन करावैंगे।'' तो कहा ''हम नहीं जायँगे लोग तंग करैंगे।'' सीतापुर स्टेशन से सरैयां स्टेशन 15 कोस है। वहाँ ठाकुर की सवारी सेज गाड़ी, हाथी

खड़ा था। उतारने लगे तो हाथ-गोड़ पटकने लगे। फिर चार जने हम थे। उतार न पाए। बड़ा बल था। एक ठाकुर दूसरी जगह के थे। उनसे कहा, ''लौटने पर बताना कि कहाँ उतरे।'' वे चौका घाट पर उतर कर अन्तर हो गए। हम से कहा, ''तुम से फिर मिलेंगे।''

महीना कुँआर शुकुल पक्ष में हम महसोनिया स्टेशन के पास एक लालमणि सेठ के दरवाज़े पर थे। वहाँ से दो कोस नदी है। उजिरिया रात में हम वहाँ 2 बजे पहुंच गये। डोलडाल अश्नान करके बैठे तो प्रगट हुए। हमारा मूंह बन्द कर दिए। हम हाथ जोड़े बैठे रहे। बड़ी देर तक टहलते रहे फिर अन्तर हो गए।

हमने अपना नेम किया। सुबह दो ब्राह्मण आए। हमने उनको पाव-पाव भर पेड़ा बर्फी दिया। दो डिब्बों में ढाई-ढाई सेर थे। उन्होंने हमसे कहा, "आप क्या रात में यहाँ रहे?" हमने कहा, "2 बजे रात आये थे। सब क्रिया कर्म करके नेम किया है।" तो कहा, "हम लोग 8 बजे रात को यहाँ खेत देख कर चले जाते हैं। यहाँ रात में मरहा आते हैं और मरी लाशें खाते हैं।" हमने यह नहीं पूछा कि मरहा कोई जानवर है या भूत है।

फिर गाँव 2 फरलांग फरीदपुर है। एक पंडित उम्र 40 की होगी, उनकी चौपारि कच्ची फूस से छाई थी। बड़ा तेज था। हमने पूछा, ''इसमें बड़ा प्रकाश है।'' तो कहा, ''12 वर्ष दुर्गाजी और हमारे पिता एक एक पलंग पर रहते थे। 12 वर्ष बराबर बातचीत होती थी।'' किसी समय बचन दिया होगा कि तुम्हारे साथ 12 वर्ष रहूँगी। वह पूरा हो गया होगा तो एक दिन पंडित के मन में काम बासना प्रगट कर दिया। पंडित उठे तो हुंकार कर दिया। बोल बन्द हो गया। सब नेम करते थे। बोलते न थे। पढ़ा देते, लिखकर साइत बता देते थे। भोजन करते, शयन करते थे, टहलने जाते। बड़े बड़े आदमी बुला ले जाते। जो पूछते साइत सब ठीक बताते। फिर शरीर 90 में छोड़ा। कथा इनकी भी बड़ी है। थोड़ी लिखा है।

एक समय पूरे ग्रहण थे। बड़गाँव के ठाकुर लोग काशी के कई पंडित बोलाए थे। सब ने कहा ''सर्व ग्रहण हैं।'' पंडित ने कहा ''नहीं हैं।'' तो दुर्गा जी ने कहा, ''तुमने ऐसी बात क्यों कही? ग्रहण तो पूरे हैं। अच्छा तुम्हारी बात भी रख दूंगी और काशी के पंडितों की भी रख दूंगी नहीं तो उन सबको दुख होगा।'' दुर्गाजी ने राहु को पकड़ कर पंडित के आसन के नीचे कर दिया। लगने का समय था। पंडित विचार करने लगे कि क्या गणित में गलती हो गई। गणित होने लगा। सब

पंडित जुट गए तो पता चल गया कि गणित सही है। यह किसी देवता की करामात है। तब पंडित से भगौती ने कहा, ''तुम्हारी बात भी रह गई। अब तुम अपना आसन हटा कर खड़े हो जाओ। ग्रहण लग जाँय। पंडितों की बात रह जाय।'' पंडित आसन हटा कर खड़े हो गये। ग्रहण लग गये तो काशी के पंडित, पंडित के पैरों पर पड़ गये और कहा, "इतनी हममें शक्ति नहीं है, आपै में है।" पंडितों ने यथा शक्ति पंडित को पूजा दिया। ठाकुर लोगों ने खूब धन दिया, कपड़ा, फल, मिठाई। तब पंडित लोग पूछे, "महाराज! इसका भेद हमें बताओ। "आपने क्या किया?" तो पंडित ने सब हाल दुर्गाजी की करामात का बताया। फिर पंडित लोगों ने चरण छुए और पंडित की स्तुति किये, माला पहनाये आरती धूप, मिठाई अर्पण किये, पैकरमा किये, दंडवति किये। फिर हम पंडित के यहाँ से हकीम जी के यहाँ चले गये। पंडित का भी चरित्र बहुत है। हम लिख नहीं पाते हैं। गर्मी बढ़ जाती है।

जब महाराज जी से नंगे सन्त का हाल पूछा तो बताया कि "शुकदेव जी रहे। वह ब्रह्म ज्ञानी ईश्वर के समान सर्वविद्या को जानने वाले हैं। यह नाना रूप धरि लेते हैं। ऐसे ही हनुमान जी का हाल है। वह भी बहुत रूप धरि लेते हैं।" तब हमारी उम्र 23 साल की थी।

60. रामदौर ब्राह्मण
देवरिया, गाँव गंभीर पुर

यह जब 12 साल के हुए तो इनको कुश्ती लकड़ी का शौक हुआ। बड़े संस्कारी थे। 12 साल में सब सीख लिया और दूसरों को सिखाने लगे। 24 की उम्र में बड़े-बड़े आदमी कुश्ती को बुलाने लगे। दूर-दूर के पहलवान लड़ने आने लगे। सब हार-हार कर चले गए। लाठी चलाने के लिये बड़े-बड़े आदमी बुलाते थे। जहाँ जहाँ गए सब हार गए। ऐसे संस्कारी नक्षत्र बली थे। 38 की उम्र में एक दिन मन में विचार उठा कि यह काम ठीक नहीं है। इस काम में दूसरे लड़ने वाले को और लाठी चलाने वाले को कष्ट होता है। बेचारे चोट खा जाते हैं। हमारे चोट नहीं लगती। नहीं तो हमको उसका अनुभव होता। एक हाथ हम लाठी का मारते हैं वह गिर जाता है। यह सुने थे कि दोबारा मारने वाले को नर्क होता है। वह अंगहीन हो गया तो उसे न मारना चाहिए।

वही सूरबीर है। मारने वाले से कह दे कि अपना दाँव कर लो। जब वह कर ले तो कह दे कि अब हम अपना दाँव करते हैं तुम बचाओ। तब अपना दाँव करै। हाथौं पर न मारै। जब हाथ चोट खा जायगा। तब लाठी न पकड़ सकैगा। यह घटेही का काम है। लाठी की हल कलेजे पर न मारै, बीच सर पर लाठी न मारै। सर फट जायगा प्राण निकल जायेंगे तो पाप लगैगा। उसके परिवार को कष्ट होगा। हमने जैसा सुना था वैसा ही किया। फिर हमने दोनों काम छोड़े दिये। एक दिन मन में आया कि यह मुगदर चिरा कर हर बना लिये जायं तो हनुमान जी ने प्रगट हो कर कहा, ''यह काम न करना। सुरक्षित धरे रहने दो नहीं तो हम तुम को पटकैंगे।'' तब रहने दिए। घर में खेती रही, भतीजा रहा। हमने कहा ''अब हम जाते हैं कहीं नौकरी करके अपनी कमाई खायेंगे।"

घर से चल कर बर्मा गए। वहाँ रेल में माल बचाने की नौकरी की 18 रुपये माहवार की। रात भर बैठते, ठहलते और खड़े रहते। बाबू लोगों ने शिकायत लिखी। जो अंग्रेज था उसने लिखा, ''वह हटाया न जायगा। जब से आया है माल नहीं काटा जाता है।''

फिर एक जगह भूत तंग करते थे। वहाँ भेजे गए। वहाँ भूत भाग गए। एक जगह डाकू तंग करते थे। वह भी शांत हो गए। तब इनका नाम हो गया। एक सेठ की चार लाख की पेटी रह गई। वह उठा कर रख लिये। बाबू लोगों से कहा ''पता लगावो उसे दी जायगी।'' बाबू लोगों ने कहा, ''लाओ देखैं तो क्या है।'' तो कहा, ''हम न देखावैंगे न खोलैंगे। जिसकी है वह जब आवैगा खोलैगा। तब सब लोग देखैंगे तुम भी देखना, हम भी देखैंगे।'' इस बात का दूर-दूर तक प्रचार हो गया। जब सेठ आया तो रामदौर ने कहा, ''तुम्हारी पेटी किस रंग की थी? उसमें क्या है?'' सेठ ने बताया, ''हरे रंग की है, चार लाख के नोट हैं।'' तब उसे दिया। उसने खोला तो सबने देखा। राम दौर ने कहा, ''अपने गिन लो।'' उसने कहा, ''हम का गिनी, किसी ने खोला नहीं है। हम तुम को दस हजार के नोट देते हैं। ऐसा ईमानदार आदमी कोटिन में कोई होगा।'' रामदौर ने कहा, ''हमैं रुपया लेना होता तो हम सब ले लेते। हम अपनी कमाई खाते हैं, किसी का पैसा नहीं लेते हैं।''

एक साधू चार कोस पर पहाड़ पर रहते थे। दर्शन को गए। जब प्यास लगी तो कहा, ''बाबा! पानी की प्यास लगी है'' तो बाबा ने कहा, ''यहाँ पानी हम को रोज़ लोग दे जाते हैं। यहाँ पानी करीब नहीं है। हम

किसी तरह थोड़े पानी में गुजर करते हैं। इस समय हमारे बर्तन में भी नहीं है।'' तो कहा, ''हम जाते हैं पानी का ठीक ठाक करेंगे।'' वहाँ से चल दिए अपनी जगह पर आए। जो लोग उनकी परिचय के वहाँ थे नौकर, उनसे कहा, ''हम को तुम सब को दिन भर छुट्टी रहती है, रात को काम करते हैं तो हमारे साथ चलो। एक धर्म का काम है। पानी साथ ले चलेंगे और भोजन। वहाँ एक कुवाँ बनाना है। चार कोस से लोग साधू को पानी दे जाते हैं।'' सब आठ मूर्ति संगी थे। टाँकी हथौरी लेकर पहुँच गये। पहाड़ के नीचे खोदना शुरू किया। पत्थर काटने लगे। डेढ़ महीने में कुवाँ तैयार कर दिया। फिर एक जगह लोगों को पानी की तकलीफ थी। वहाँ जाकर डेढ़ माह में कुआँ बना दिया। पानी कमर भर हो गया। बरमा के लोगों ने कहा, ''हम लोग कुछ न कर सके। यह लोग काला पोंगी दो कुआँ खोद कर पानी निकाल दिया।'' एक दिन दो बजे रात में एक बूढ़ा लकड़ी टेकते हुए आया। यह पहरे पर बैठे थे लाठी लिये तो कहा, ''बच्चा! भजन करौ।'' तो बोले, ''बाबा! हम भजन नहीं जानते हैं। एक माला ब्रह्मगायत्री जपते हैं और थोड़ी बिश्राम सागर पढ़ते हैं हम बहुत कम पढ़े हैं।'' तो कहा, ''तुम 2 बजे रात में पलथी मार कर गर्दन झुका कर चुप बैठो। दोनों हाथ गोफ़ा लगाकर आगे रख लो। कुछ दिन के बाद तुम्हारा शरीर 5 वर्ष के बालक के ऐसा गोरा नंगा सुन्दर तुम्हारे शरीर से निकलैगा। देखकर मस्त हो जाओगे और कुछ कहैगा फिर तुम्हारे शरीर में समा जायगा।''

7 दिन बैठे। वह बालक निकला और कहा, ''तुम अयोध्या जी जाव। तुम को वहाँ कोई मिल जायगा।'' यह न पूछे कि कहाँ जायँ। वह अन्तर हो गया। 3 वर्ष रहने से 3 माह की छुट्टी मिलती है। छुट्टी लेकर आए। पं. बासुदेव यहाँ गायत्री भवन में पढ़ाते थे। उनसे हाल बताया। वै हमारे पास लाए तो हमने दक्खिन तरफ़ कमरे में जगह दिया, फिर राम मंत्र जानकी मंत्र बताया, जप की बिधि बताया, ध्यान बताया। बड़ी सच्ची लगन थी। जुट गए। दो माह में बहुत कुछ देखा सुना। लय दशा होने लगी, शून्य समाधि होने लगी। भजन का साँगोपाँग जो ऋषि लिख गए हैं, वह सब प्राप्त हो गया। तब हमसे कहा ''अब हम नौकरी न करैंगे।'' हमने कहा, ''जब भगवान की आज्ञा हो जाय तब तुम छोड़ देना। समय-स्वाँसा-शरीर भगवान का है। अपना कुछ नहीं है। जो-जो कराया वह किया अब जो करावैंगे वह करना होगा।'' तो कहा, ''ठीक

है। वैसा ही करूंगा।'' 3 माह के कुछ दिन रहे तब फिर समय पर अपनी नौकरी पर पहुँच गए। अपने पहरे का काम करने लगे।

एक कहीं से ताँत्रिक आया। बरमा में आठ आदमियों को मार दिया। फिर इनके पास आया कहा, ''तुम डरते तो नहीं हो?'' तो कहा, ''नहीं।'' रात के 8 बजे थे कहा, ''हमारे साथ चलो।'' यह अपनी लाठी लेकर संग चल दिये। महीना गर्मी का था। वह अपना मंत्र जपने लगा। शेर, सर्प, बड़े-बड़े दैत्य प्रगट हो गए। इनके पास कोई नहीं आए तो कहा, ''हमने बहुत आदमियों को इस मंत्र से मार दिया। यह मंत्र कभी खाली नहीं गया। आज न मालूम इसकी शक्ति कहाँ चली गई।'' तो इन्होंने कहा, ''हम तो राम-राम करते हैं और कुछ नहीं जानते।'' तब वह चला गया।

हमको लिखा कि 'यहाँ खटमल बहुत हैं। रात भर पहरा देते हैं, दिन में एक बार भोजन करते हैं। चारपाई पर खटमल लेटने नहीं देते।' हमने लिखा कि 'ज़मीन में लेटौ। खटमल मारना नहीं।' एक दिन लेटे थे तो एक खटमल एक तोला का, आया और गर्दन के नीचे चिपक गया। इन्होंने उसे हाथ से पकड़ कर देखा तो अपनी संगी से कहा, ''इसे कहीं छोड़ आओ। देखो! कितना बड़ा है। हमने कभी इतना बड़ा नहीं देखा।'' वै लेकर चले तो गायब हो गया। फिर सब खटमल चले गए। हमैं लिखा। हमने कहा, ''वह खटमलों का बादशाह था। अगर तुम खटमल मारते तो खटमल कम न होते। किसी का बीज नाश नहीं होता। उसने आकर सब को दूसरी जगह भेज दिया।'' फिर वह वहाँ 3 साल रहे।

वहाँ बुद्ध भगवान के बड़े-बड़े मंदिर हैं। जब पानी नहीं बरसता है तब वहाँ की लड़कियाँ उनके ऊपर जल चढ़ाना शुरू करती हैं। जब बरसता है तब बन्द करती हैं। फिर भगवान की आज्ञा हुई कि अब तुम घर जाओ वहीं भजन करौ। वहाँ से चल कर पहले यहाँ आए। एक पासी बहराइच ज़िले का था। वह भी साथ आया। वह इनकी बातैं सुना करता था। सब अशुद्ध खाना छोड़ दिया। उसे ज्ञान हो गया। उसने हमको वहीं से देख लिया। सब हाल बता दिया कहा, ''हम चल कर मंत्र लेंगे। घर पर भजन करैंगे। घर खेती है, कोई तकलीफ़ नहीं है।'' उसका हाल रामदौर ने बताया। उसे राम जानकी का मंत्र बताया, जप की बिधि बताया, माला-कंठी, जप माली दिया। 7 दिन रहा। हमने कहा, ''कहीं दर्शन कर आवो'' तो कहा, ''हमैं आप में सब दर्शन पास ही से होते

हैं। कहाँ जायँ? कहीं जाने की इच्छा नहीं होती।'' हम उसकी दशा देख कर आनन्द में हो गए। आँसू चलने लगे।

नेत्रों में दो नदी हैं–एक दुख की, एक सुख की। दुख के आँसू गर्म होते हैं, सुख के ठंढे होते हैं। दुख के तो सब लोग जानते हैं कि गर्म होते हैं। सुख के आँसुन का अनुभव थोड़े लोग करते हैं।

फिर वह हम से आज्ञा लेकर घर गया। फिर राम दौर घर गए। वहाँ खेती का काम ठीक करा दिया। बुबा देते, सिंचा देते, खेत निरवा देते। जब अन्न पक जाता तो कटवा देते और जमा कर देते। नौकर दांय माड़ कर बसा कर (साफ़ करके) अन्न धर देते। भूसा अलग कोठरी में रख देते। जो गाय-बैल भैंस थीं। उनकी खूब सेवा होती। सब पुस्ट रहते। उनके ज़रिये से बर्मा में कई भक्त हो गए। खान पान शुद्ध करने लगे। यहाँ बिश्राम सागर सब को सुनाते थे। कोई मंत्र नहीं किसी को बताया। यहाँ घर पर करीब करीब गाँवों में कई अच्छे भक्त हो गए। हम से मंत्र दिलवाया। फिर जहाँ कहीं कीर्तन हो वहाँ बुलाए जाते थे। वहाँ एक-दो-तीन दिन रहते। अपने हाथ भोजन बनाते थे। फिर उनसे लोग बड़ा प्रेम करने लगे। संसारी बातें करना बंद कर दिया कहा "तुम सब साधक नहीं बन पावौगे बिना संसारी बातैं छोड़ें। अपने घर का काम करौ, सब पर दया करौ, अपने को सब से तुच्छ मान लो तो पट खुल जायँ।''

बड़ा बिस्तार है। थोड़ा लिखा है। 75 की उम्र में शरीर छोड़ा। बहुत लोग उनके न रहने पर सालों दुखी रहे। ऐसे शुद्ध जीव थे।

61. बाबा बसन्त राम
जिला बाराबंकी

इनकी कथा बहुत भारी है। हम सब लिख नहीं सकते। शरीर ठीक नहीं है। थोड़ा लिखते हैं। देवैं शरीफ़ में हाजी वारिस अली के पास गए कहा, ''हमारे पास पैसा नहीं है। हम सब तीरथ करना चाहते हैं।'' हाजी साहेब ने कहा, ''जो तुम करोगे सो कोई लाखौं में ऐसा करेगा।'' दंडवति करके चले। फिर 45 बार सब तीर्थों में घूमे। जहाँ जहाँ गए सब पगौं से नाप डाला। बहुत सरकारी मील खुदा डाले। कहा गलत हैं। सरकार ने नपाया तो उनकी बात सही मानी गई। पूछा कि तुम कैसे यह जान

गए? तो कहा, ''हम राम राम कहते चलते हैं। पगौं से नाप लेते हैं। रामेश्वर, द्वारिका, जगदीशपुरी, बद्रीनारायण, नैपाल, मुक्तिनाथ, जितने बड़े छोटे तीर्थ हैं सब नाप डारा है। सब हमारे पास लिखा है और कंठ है।'' तो अंग्रेज़ ने कहा, ''कुछ आप बतावैं तो हम सुनैं।'' बताने लगे ''इतने करोड़ पग द्वारिका जी हैं, इतने करोड़ पग पर रामेश्वर जी हैं, इतने पर जगदीश पुरी, इतने पर बद्रीनारायण, इतने पर नैपाल, इतने पर मुक्तिनाथ, इतने लाख पर मथुरापुरी, इतने लाख पर काशी, चित्रकूट, विन्दयाचल आदि हैं।'' जो हजारौं पग पर रहे वह सब बताया तो बहुत खुश हुआ। उसने कहा, ''तुम को हम पास दिला देंगे जहाँ तक रेलैं जाती हैं। चारौं तरफ बराबर तुम आया जाया करौ।'' उस साहेब ने पास दिला दिया।

वह 45 बार तीर्थों में घूमे थे। एक लाख 57 हजार तीर्थों की रज पत्थर इकट्ठा किए। एक बोरी भरे थे। रात में पम्पासर पर सर के नीचे धरे सो गए। चोरों ने समझा कि इसमें कुछ माल है। तो एक पत्थर सर के नीचे धर दिया। बोरी उठा ले गए। जब यह जागे तो पत्थर से कहा, ''अच्छा! अब तुम हमारे साथ चलौ।'' उसकी दंडवति किया कांधे पर धर कर चल दिये, जहाँ रेल न जाती थी तहाँ पाँच या सात कोस पैदल जाते थे। पत्थर भी 30 सेर से कम न था। इनके शरीर में बल था, कसरत करते, कुश्ती सिखे थे। कुछ तकलीफ़ न हुई। पाँच कोस पर रुके। भोजन बनाया, भोग लगाया, पाया। उस दिन वहीं रुके। चोरों ने सलाह किया कि उसे ढूंढ़कर उसकी छाती पर पटका जाय। यह सर के नीचे पत्थर धरे सोते रहे उतान। वै लोग इनकी छाती पर पटक कर भाग गए। फिर वह बोरी लाकर हमैं दिये। हम कानपुर ले गए।

एक कुम्हार कारीगर था। वही सीमेंट-मौरंग, बालू से शंकर जी और अरघा बनाया। कुछ कसर रह गई। वह सालौं का बीमार था, काम करता था। उसे टी. बी. हो गई थी। एकाएक मर गया। तब दूसरे कारीगर ने उसे पूरा किया। 65 सेर के शंकर जी और 65 सेर का अरघा बना। 2 माह गंगा जल में तर रहे। फिर नारदानन्द जी ने हमसे कहा, ''हमैं आप दे दें। हम बहुत आदमी इकट्ठा करैंगे। प्रतिष्ठा होगी।'' हमने दे दिया। पहले विचार था कि राजा राम अयोध्या गोमती के करीब हनुमान जी को पधारे हैं। दक्खिन मूँह मंदिर के बीच में जगह खाली है उसमें पधार देंगे। नैमिसारन में अयोध्या गोमती के पास ही है। फिर जब

नारदानन्द जी ने माँगा, तब उनको दे दिया। एक ठाकुर ठकुराइन इनके भक्त थे। उन्होंने चबूतरा बनवा कर प्रतिष्ठा कराई। दो हजार आदमी की भीड़ थी। हम भी गए थे। खूब कपड़ा-फल-रुपया चढ़ा था। फिर जो मंदिर बनवाने वाले ठाकुर थे उनका शरीर छूट गया। ठकुराइन न बनवा सकीं। बसन्त राम जी गर्मी, बरसात, जाड़े में जाते थे। ऊपर छाया का प्रबंध कर आते थे। फिर जब शंकर जी की कृपा होगी तब बनैगा या शंकर जी मैदान में रहना चाहते होंगे तो मैदान में ही रहेंगे।

कुछ दिन बसन्त राम गोरखपुर में एक अंग्रेज के यहाँ पहरे की नौकरी पर रहे। रात को पहरा देते थे। बहुत कम पढ़े थे। उनका आटा लोग चोरी कर लेते थे। जब वै पूछैं तो चोरी करने वाले कहैं, ''तुम झूठ कहते हो। कौन चोरी करता है। उसे पकड़ौ।'' तो कहा, ''भगवान ही इसका पता लगावैंगे।'' वह आठ आदमी थे। उनका भोजन एक ही में बनता था। बसन्त राम ने अपने आटे में सूखे धतूरे के बीजा पीस कर मिला दिये। जब लोगों ने आटा निकाला और अपने आटा में मिला कर रोटी बनाकर खाया तो सब को नशा चढ़ा, सब पड़ गए, बेहोश हो गए। तब बसन्त राम साहेब के पास गए और कहा, ''साहेब! हमने चोर पकड़ा। हमारा आटा रोज़ चोरी करते थे। हम पूछैं तो कहैं, झूठ कहते हो, चोर को पकड़ौ। अब देखौ साहब! आठ चोर पकड़ा है। सब आपके सामने बेहोश पड़े हैं।'' साहब बहुत खुश हुआ। फिर सब को अस्पताल भेजा। बसन्तराम भी संग गये। डाक्टर ने देखा तो कहा, ''यह लोग धतूरा खाये हैं। आँखौं की रंगत से ज़ाहिर होता है। कैसे खाये, कौन खिलाया?'' तब बसन्त राम ने सब हाल बताया तो डाक्टर भी बहुत खुश हुआ। 15 दिन गाय का दूध, फल दिये गये और कुछ नहीं। तब गर्मी शान्त हुई। फिर डाक्टर ने कहा ''अब जाओ। बकरी का दूध शुद्ध मिलै तो 15 दिन सामने का दुहा धारोष्न देसी शक्कर छोड़ कर दोनों समय पीना और 15 दिन फल ही खाना तब सब ठीक हो जायगा।'' डाक्टर हिन्दू भक्त दयावान था। बसन्त राम रोज़ देखने जाते थे। जब 15 दिन पूरे हो गए तब रोटी-चावल, मूंग की दाल-तरोई-लौकी-परवर-पालक-चौराई, जो डाक्टर ने बताया था, खाने लगे। एक साल संयम बताया था वैसा ही किया। शरीर चमक गया, ठीक हो गया। बसन्त राम के सब पैरों पड़े कहा, ''आपने अच्छा किया। हमारी चोरी की आदत

छूट गई नहीं तो हम फिर करते।'' जो अंग्रेज़ डिप्टी कमिश्नर था, उससे बसन्त राम ने कहा, ''साहेब! यह आठ आदमी हैं। अगर बरखास्त किये जायँगे तो इनके लड़के वाले भूखों मर जायँगे। अब वह चोरी न करैंगे।'' साहेब ने कहा, ''उनको बुलावो।'' बसन्त राम सब को बुला लाये। साहेब ने कहा, ''लिखौ। चोरी तो न करौगे।'' सब ने दस्तखत किया। वह कागज़ साहेब ने ले लिया और कहा, ''जाव! अपना अपना काम ठीक से करना।''

बसंतराम साहेब से छुट्टी लेकर नैपाल पशुपतिनाथ, मुक्तिनाथ के दर्शन को चल दिये। महीना फागुन का था। वहाँ शिवरात्रि में मेला होता है। दर्शन किए। 3 दिन बाद मुक्तिनाथ को चल दिये। वहाँ दर्शन किए। सालिगरामी नदी है उसमें सालिगराम जी की मूर्ति मिलती है। लोटा में डोरी बाँधकर नदी में फेंका कहा, ''महाराज! जो हमारा प्रेम हो तो इस लोटा में आ जाव।'' जब लोटा खींचा तो सालिगराम की कई मूर्ति आ गईं। उसमें कच्छ भगवान, मच्छ भगवान, शेश भगवान, विराट, एक काली मूर्ति में अर्द्ध चन्द्र बना था, राम जी का मुखारबिन्द बना था, एक में भरत जी की बताते थे, सब लोटा में आ गए। हमने भी कई बार दर्शन किया है। फिर वहाँ से चले। एक जगह ठहरे तो लोगों ने कहा, ''यहाँ से एक फरलाँग पर एक दानव रहता है, उसके सारे बदन में बाल हैं, नंगा, काला काला है। वहाँ जो कोई भी जाता है वह पकड़ के फेंक देता है, दूर गिरता है, मर जाता है।'' जब बसन्त राम गए तो वह पास आ गया और टाँग पकड़ कर फेंका तो जाकर दूर गिरे। वहाँ लोग खड़े थे कि देखैं बाबा के साथ वह क्या करता है जब गिरे तो बेहोश हो गए। लोग उठा ले गए। कंडी की राख में पाट दिया। धीरे-धीरे साँस चलने लगी। दूध देते थे। दो माह में ठीक हुए तो कहा, ''भगवान ने रक्षा की। कोई भोग था, वह निकल गया। अब हम फिर जाते हैं।'' लोगौं ने मना किया तो कहा, ''हम जरूर जायँगे।'' चल दिये। राम-राम करते हुए वहाँ पहुँचे तो वह न मिला। बैठ गए। कहा, ''देख लें, कहीं गया होगा।'' दो घंटे बैठे-बैठे राम-राम करते रहे। लोग दूर से देखते रहे। जब वह न आया तो बसन्तराम ने आवाज़ लगाई, ''दानव जी! हम दर्शन को आये हैं, आप दर्शन न देंगे। पहले तो टाँग पकड़ कर फेंका था, भगवान ने रक्षा किया। अब हम जाते हैं।''

फिर वहाँ से चल दिए। घर पर आए और हाजी साहेब के पास गए। एक मुसलमान ने रोका तो कहा, ''हाजी साहब ने हम से कहा है कि तुम जिस समय चाहौ चौबीस घंटे में आ सकते हो।'' तो उसने कहा, ''ऐसा नहीं हो सकता है।'' तब बसन्त राम ने कहा, ''तुम हाजी साहेब से पूछ आवो।'' तो कहा, ''हम न पूछैंगे और न तुमको जाने देंगे।'' और मुसलमान थे। सब ने कहा, ''तुम पासवर्ती हो तो तुमको पूछ आना चाहिए।'' उसकी बुद्धि कुछ उस समय बिगड़ गई। उसने सब मुसलमानों को भी डाँटा और बसन्त राम को धक्का दिया, कहा ''तुम को न जाने देंगे।'' 8 बजा था रात में। महीना गर्मी का था। बसन्तराम ने कहा, ''तुम हाजी साहेब की बात को काटते हो। तुमको हम दंड देते हैं। संभल जाओ।'' तो वह भिड़ गया। खूब देर तक भिड़ा। बसन्त राम ने उसे पटक दिया। चोट खा गया। तब और मुसलमान हाजी साहेब के पास गए, हाल बताया। हाजी साहेब ने कहा, ''उसे निकाल दो। ऐसे आदमी का यहाँ काम नहीं। बसन्त राम को हम कह चुके हैं कि 'चौबीस घंटे में जब चाहौ तब आ सकते हो। तुमको कोई रोक नहीं सकता है।' यह बात जितने भक्त यहाँ रहते हैं, सब जानते हैं। वह खुद जानता था जिसने रोका था। उसे भगवान ने दंड दिलाया है।'' बसंतराम आए। हाजी साहेब ने कहा, ''तुमने अच्छा किया। यह तो दंड भगवान के हुक्म से हुआ है। जो जानता है और मानता नहीं है उसे भगवान ऐसी सज़ा देते हैं। अब तुम क्या चाहते हो?'' बसंत राम ने नैपाल-मुक्तिनाथ के दर्शन का हाल बताया और दानव का हाल बताया तो बहुत खुश हुए। पीठि ठोकी। बसन्त राम ने कहा, ''हम यह चाहते हैं कि आपके साथ हम भी बाबा आदम के दर्शन कर आते परन्तु लोग कहते हैं कि वहाँ हिन्दू नहीं जाने पाता है।'' तो कहा कि 'तुम हमारे साथ चलो कोई रोक नहीं सकता है। हम हर शुक्रबार को वहाँ नमाज़ को जाते हैं, हर अमावस को नीमसार में गोमती और चक्र तीर्थ में अश्नान करते हैं भगौंती के दर्शन करते हैं। वहाँ भी बड़े-बड़े सतयुग-त्रेता-द्वापर-कलियुग के भक्त हैं। जिनके द्वैत नहीं है उनको दर्शन होता है। हम एक रूप से कुटी पर रहते हैं। हमारा तुम्हारा पुराना संग है।' बस हाजी साहेब के साथ बसन्त राम चल दिए। उधर बालू की ज़मीन है। ऊँट पर जाने से ठीक रहता है। वैसे चलने पर पैर पीछे को खसकने लगते हैं। ऊँट किराये पर चलते हैं। एक ऊँट पर आगे हाजी साहेब बैठे, पीछे हम बैठे। जब वहाँ पहुँचे तो तमाम मुसलमान हाजी साहेब के पैरों

पर पड़े। बड़ी भीड़ हो गई। एक अच्छी जगह ठहराय गये। फिर अश्नान और अपना-अपना नेम किया गया। फिर गंजी धोकर भोग लगाया, हाजी साहेब को दिया।

फिर उनके साथ बाबा आदम के दर्शन को गए। उनके ऊपर बड़ा कीमती कपड़ा पड़ा रहता है। उसी पर इतर लगाया, पाँच फेरी किया, दंडवति किया, फिर आसन पर आए। आते समय काफ़ी पैसा लोगों ने हाजी साहेब को नजर किया था। वह खैरात में दे दिया गया। वहाँ भी बड़े-बड़े कामिल भक्त हैं। हाजी साहेब के पास आते, सतसंग होता। उनमें ऐसे भक्त थे जो सुनते-सुनते रोने लगते थे और गिर पड़ते, बेहोश हो जाते, देर में होश आता। हम तो उनकी दशा देखकर ऐसे मस्त हो जाते कि बोल बन्द हो जाता, नेत्रों से आँसू की धार चलने लगती। बड़ी ठंढी-ठंढी धार निकलती थी। साफ़ी से कई बार पोंछते थे। साफ़ी तर हो जाती थी। सात दिन वहाँ रहे। हाजी साहेब को वहाँ बहुत पैसा मिला। उन्होंने कहा, ''सब खैरात कर दो। सिर्फ़ जाने भर का पैसा रख लो।'' सात दिन रहे। रोज दर्शन को जाते थे। जब हाजी साहेब के साथ चले तो हजारों मुसलमान दूर तक भेजने आए। यह किसी ने न पूछा हमसे, न हाजी साहेब से पूछा कि यह कौन भक्त आपके साथ आए हैं। जब हाजी साहेब की कुटी पर आए तो हिन्दू मुसलमान दर्शन को आए। मुसलमानों ने कहा, ''बसन्त राम! वहाँ का हाल बताओ।'' तब हम सब बताया। सब चुप रहे। किसी ने कुछ न कहा। फिर हम 3 दिन रहे। भोजन बनाते खाते थे। बाहेर हम जब जाते थे तो अन्न नहीं खाते थे। फल-गुड़ इसी से अपना बसर कर लेते थे।

रामेश्वर-द्वारिका की यात्राः-

जब यह तीर्थ यात्रा करते थे तब सब वस्तु मद्दी थी। गुड़-गंजी-आलू, घुइयाँ जिसमें अन्न से कम दाम लगैं उसी का भोग भगवान को लगाते थे। एक धर्मशाला में ठहरे थे। गाँव करीब था। एक ब्राह्मण आये। इनको देखकर प्रसन्न हुए। इनकी उम्र 30 की थी। शरीर खूब तन्दुरुस्त था। कसरत करते थे, कुश्ती लड़ते थे। उन्होंने कहा, ''महाराज जी! हमारे यहाँ चलौ। कुछ दिन वहाँ रहकर तब यात्रा करौ।'' यह उनकी प्रार्थना पर साथ गए। मकान तीन खण्ड का था तिमंजला। वहीं ठहराया। इनके अनुकूल जो फलाहार था, वह देते। बड़े धनी थे। रोज इसके पास आते तीन बार।

खूब धर्म की बातैं करते। जब सात दिन बीत गए। तब बसन्त राम ने कहा, ''अब हम यात्रा करने जायँगे।'' तो कहा, ''हमारे एक लड़की 20 साल की है। हम आपके साथ शादी कर दें। हम, हमारी पत्नी है। कोई सन्तान नहीं है। धन कई लाख का है। हमारे पिता बाबा का कमाया। खूब धर्म करते हैं। आपको सब लिख देंगे। शादी कर लो, फिर तीर्थ यात्रा को जाव।'' तो बसन्त राम ने कहा, ''हमारी शादी हो गई है। एक लड़का है 5 साल का। माता है, थोड़ी खेती है।'' तब ब्राह्मण ने कहा, ''हम शादी तुम्हारे साथ ही करना चाहते हैं।'' बसन्त राम को 15 दिन हो गए जानें न दें। सौ कदम पर सड़क थी। गोरों की पलटन आ रही थी। बसन्त राम ऊपर के सब किंवारा दो मंजिला के, बन्द कर आए। सिलेटन से छाया था जिसमें रहे। उसमें से स्लेट के पटरे निकाल कर तोड़ कर गोरों के घोड़ों को मारने लगे, जिसके लग जाय वह चोट खा जाय। गोरे लोग मकान में घुस गए और ऊपर के किवाड़ तोड़ कर बसन्त राम की कमर में रस्सा लगा कर चल दिए। बसन्त राम ने ब्राह्मण से कहा, ''अब हम जाते हैं जेल को। शादी कैसे करोगे?'' बसन्त राम को ले जाकर जेल में बन्द कर दिया। कोर्ट ने पूछा, ''तुमने ऐसा काम क्यों किया?'' बसन्त राम ने सब हाल बताया और कहा, ''साहेब! अगर हम ऐसा न करते तो हमको घर से जाने न देते। पड़ोस के 6 आदमी इनके सलाहकार थे। जब हम पलटन आते देखा तो कहा, 'अब हम फौज में खबर करैं तब सुनवाई होगी। तब हम स्लेट फोड़-फोड़ कर तार देने लगे। सुनवाई हो गई। जेल आ गए।''

एक बंगाली वकील भक्त था। उसे हाल मालूम हुआ। वह गया। कोर्ट का मित्र था। कोर्ट ने उससे सब हाल बताया। फिर मुकदमा चला। बंगाली भक्त वकील बन गया। कोर्ट ने सब हाल बता दिया था। बसन्त राम से पूछा गया। सारा हाल बताया और कहा, ''हम राजा राम नगर के उदित नारायण के राज्य में रहते हैं। हमारी माता है, एक लड़का 5 साल का है, औरत है।'' वहाँ पर सरकार की तरफ़ से लिखा गया। राजा ने ठीक-ठीक लिखा दिया। फिर दूसरी पेशी पर छोड़ दिये और उन सब को सात-सात साल की सज़ा दी गई। जिनकी लड़की थी और 6 आदमी उनके पड़ोस के थे।

फिर बसन्त राम चल दिए। जहाज़ पर बैठ गए बिना टिकट के। कुछ दूर जहाज़ निकल गया तो टिकट लेने वाला आया। पूछा तो कहा, ''हमारे पास टिकट नहीं है।'' तो कहा, ''तुम उतर जाव।'' इन्होंने पूछा,

''कहाँ उतर जाँय? पानी में।'' तो कहा, ''हाँ।'' बसन्त राम बाहेर जब जाते तो एक सालिगराम, एक गोमती चक्र, एक नर्बदेश्वर रखते थे। तो एक साफ़ी में तीनों मूर्ति बांधकर गले में बाँध लिया और समुद्र में कूद पड़े। फिर तोप दगी और बड़े-बड़े गोल-गोल गेंद ऐसे छोड़े गए जिनमें जंजीरें लगी थीं। उधर जहाज़ दो कोस निकल गया था, रोका गया। बसन्त राम को जहाज़ के कायकर्ता लोगों ने पकड़ा। तो बसन्त राम ने कहा, ''हमें तुमने कहा कि उतर जाव तब हम पानी में तुम्हारे कहने से कूद पड़े। हम इसी तरह बहते तैरते चलें जायेंगे। जो मौत होगी तो कोई जानवर पारसल कर लेगा। नीचे जाते हैं, तो साँस साध लेते हैं, ऊपर आते हैं तो साँस लेते हैं। पानी बहुत खार है। देह नमक से चटर-चटर होती है।'' तब सब लोगों ने जबरदस्ती लाकर जहाज पर बैठाया। जिसने उतारा था, उसने कहा, ''अगर आप न आते तो हमारी नौकरी छूट जाती।'' जब जहाज़ से उतरे तब उनको आने जाने का जीवन भर का पास दिया गया।

रामेश्वर-द्वारिका दर्शन करके लौटे, तब यहीं तमाखू खाने वाले साधून की सभा की। तमाखू बड़ी अशुद्ध है, न खाई जाय। जहाँ पानी मीठा है वहाँ हिन्दू मुसलमान सब घर में एक कच्चा हौज बनाकर उसमें पानी भर देते हैं। फिर घर भर सात दिन उस हौज में पेशाब करते हैं तब वह पानी खारा हो जाता है। उस पानी से सींचते हैं तो तमाखू तेज हो जाती है। इस बात पर एक पहलवान बिदेही मंदिर में था, बसन्त राम बुरजा पर बैठे, भजन करते थे, महीना सावन का था, सरजू जी बहुत बढ़ी थीं, बुरजा के एक गज नीचे पानी था, उस पहलवान ने इनको उठाकर सरजू में फेंक दिया। नीचे चले गए। जब ऊपर आए तो एक पीपल बहता जाता था। उसकी एक डार टूटी थी। वह इनके गाल में घुसर गई। अंगुली ऐसी मोटी थी तमाम खून निकल गया। यह बहते-तैरते बड़ी पुरानी छावनी पहुँचे। वहाँ कई कुवाँ थे। एक का ऊपर का गोला एक बीता खुला था। उसे साध लिया। उस पर दूसरी तरफ़ एक काला सांप बैठा था। एक बड़ी मछली जाती थी। उसकी थपेड़ लगी। वह साँप गिर कर बह गया। उस समय कई नाव जहाँ तहाँ घूम रही थीं। एक नाव एक गोड़िया लाया। बैठार कर इनको जहाँ रहे उतार गया। साधूओं ने जाना तो कहा, ''हम समझे थे, मर गए।'' वह दुष्ट फिर आ गया। बहुतों ने बात मान कर तमाखू खाना छोड़ दिया। उन्हें दुःख भया कि हम लोगों कै लिए इतना कष्ट सहा है। बहुत न माने, खाते रहे।

फिर बसन्त राम चित्रकूट गए। वहाँ एक जगह बैठे थे। जप करते थे। एक खनखजूर पुराना एक बीता का अंगुली ऐसा मोटा, उसे कहीं-कहीं गोजर कहते हैं, बंगाल में कंसुला कहते हैं, सौ पैर होते हैं। पुराने को हमारे यहाँ बेनि कहते हैं, चपटा ऐसा होता है पीला-पीला, इनके दाहिने पैर में चिपट गया। बसन्त राम ने देखा तो कहा, ''भाई! तुम्हारा जो हक हो उसे चुका लो।'' वह दिन में तीन बार खाता था। तब यह अपने सर पर हाथ फेरते थे। 21 दिन खाया। ऊपर एक अंगुल रह गया और सब अन्दर पैठ गया। घाव पक गया तो नीचे गिर गया। एक डाक्टर कलकत्ते से आया था, दर्शन करने। उसने उठा लिया। 3 साल जिलाया। फिर उसकी मौत आ गई, मर गया। उसे खून देता था। सबेरे-दोपहर-शाम को नीम का तेल लगा देते थे। मक्खी नहीं बैठती थीं। 3 बर्ष में घाव पूरा था। यह अपना नेम करते। चलते बैठते लेटते थे। शरीर में बल था। भोग पूरा हो गया।

फिर बसन्त राम रामेश्वर-द्वारिका की यात्रा को गए। तो कहा, ''ससुराल में भी देख लें कि क्या हाल है।'' वहाँ पहुँचे। लड़की मर गई थी। उसकी माता तथा पिता ने बड़ी खातिर की। एक सोने का मोहन माला दिए। जिसमें एक सोने का एक मूंगे का दाना होता है, उसे मोहन माला कहते हैं। बसन्त राम ने कहा, ''माला हम क्या करैं। हमारे काम की नहीं है।'' 3 दिन रहे। चलते समय रुपये दिए तो बसन्त राम ने 51 रु० लिए, कहा, ''सब चीज़ मद्दी है। इतना बहुत है। हम कम दाम का फलाहार करते हैं।'' तब ब्राह्मण ने कहा, ''हमारे कोई ग्रह खराब थे, बुद्धि खराब हो गई। आपका कहना न माना। सात वर्ष की सजा काटे, लड़की भी मर गई।'' तब बसन्त राम ने कहा, ''होनहार जैसा होता है वैसी ही बुद्धि हो जाती है। तुम्हारा दोष नहीं है। किसी जन्म का भोग था, वह पूरा हो गया। जिस देवता से प्रेम हो उसका भजन करौ। तुम्हारे पास पैसा है खूब गरीबों की सेवा करौ। जो दरवाजे पर आवे वह भूखा न जाय। बड़ी ऊँची गती होगी।'' तो कहा ''ऐसा ही करेंगे। हमारा प्रेम शंकर जी से है।'' बसन्त राम ने कहा, ''ठीक है। तन मन से जुट जाव।''

फिर बसन्त राम घूम कर आए तो हमसे हाल बताया। धर्मशाला इनके मकान के पास था, छाया हुआ पटा न था। आग लग गई। इनकी मूर्ती चार सौ सालिकराम, गोमती चक्र, नर्बदेश्वर थे। एक महाराज ने उठा लिया। और रेल तथा जहाज के पास जल गए। वह यहाँ अवध में

थे। जब गए तो कहा, ''कोई जरूरत नहीं है पासों की। 30 की उम्र से 75 की उम्र तक तीर्थों में घूमे। "पास" जल गए तो अच्छा हुआ। अब शरीर कमजोर हो गया है। भगवान ने जाना बन्द कर दिया।'' फिर 12 मूर्ती रखते थे। बाकी बाँट दिए।

गर्मी में कोरी हाँडी पानी भर कर मूर्ती शाम को रख देते थे। सुबह मूर्ती निकाल कर वह जल पीकर, तब डोलडाल जाते, नहाते, फिर भगवान को नहवाते। जो कोई पूछै तो कहैं, ''पहले पीकर जाते हैं। शरीर का कोई ठिकाना नहीं। अगर शरीर छूट जाय तो चरनोदक न मिलैगा। इससे ऐसा करते हैं।''

जाड़े में पानी गुनगुना करके सालिगराम को नहवाकर तब डोलडाल जाते थे। फिर नहाकर भगवान को नहवाकर धूप, दीप पुश्प आरती भोग लगाकर गुड़ का, फिर भोजन बनाकर भोग लगाकर सैन करते थे।

जब बाहेर जाते तो सामान थोड़ा रखते थे – 1 सालिगराम, 1 नर्बदेश्वर, 1 गोमती चक्र रखते थे छोटे डिब्बे में। फिर गले में बांधकर डोलडाल जाते थे। जो कोई पूछे तो कहते थे ''कहाँ धर दें? कोई उठा ले जायगा तो चरनोदक न मिलैगा। सामान ले जाय तो फिर मिल जायगा। हमारे भगवान न मिलैंगे। घोड़ा हगा करता है, सवार उस पर चढ़ा रहता है।'' तब पूछने वाले चुप हो जाते थे।

जब बनवास का आवेश आता था तो सिर्फ़ पानी पीते थे और रोते हुए रात दिन ठहला करते थे। जंगल में राम जी, महारानी जी, लखन लाल को बड़ी तकलीफ होती होगी, काँटे-कंकड़ गड़ते होंगे, जाड़ों में जाड़ा लगता होगा, बरसात में भींजते होंगे, पेड़न के तले, झाड़िन के नीचे बैठते होंगे, पेड़ों के तले खड़े होते होंगे, पत्थर ऊपर से गिरते होंगे, पाला पड़ता होगा, पानी पीने की तकलीफ़ होती होगी, भोजन कौन वहाँ बनाकर देता होगा, कन्द मूल से कैसे पेट भरता होगा, गर्मी में लू चलती होगी, पियास खूब लगती होगी, मूँह सूखता होगा, छिन छिन में पानी कौन भरकर देता होगा। यही बातैं कह कर कर रोते थे। तो कोई न कोई हमसे आकर बताता था। हमारे सामने कई आवेश आ चुके हैं, दो-दो महीने के। तब हम उनको बुला कर समझा कर खिलाते थे। शरीर सूख जाता था। रात में शंकर जी को अश्नान करावैं, दिन में मंदिरों में दर्शन करैं, छिन-छिन पर आँसू पोंछा करैं। 45 वर्ष तीर्थों में घूमे हैं। जो देवी देवता जहाँ पधरे हैं सब के दर्शन हुए, सब प्रसन्न रहे और दाहिना हाथ उठाया।

आखिर में बसन्त राम, जब होबार्ट साहेब, फैजाबाद के डिपुटी कमिश्नर होकर आए जो बड़े भक्त थे, उनके पास गए और कहा, ''साहेब! सप्त सागर पर टट्टी बनी हैं। राम जी के पुरखन का बनवाया है। इसमें सातों समुद्रन का जल पड़ा है। इसका बड़ा महत्व है। राम जी के पुरखों के बिवाह के मौर राम जी के, भरत जी के, लखन लाल के, शत्रुहन जी के बिवाह के मौर इसी में सिरवाए गए हैं। राम जी के बाद जितने राजा हुए हैं सब के मौर इसी में सिरवाये गए हैं।'' तब साहेब ने कहा, ''तुम यहाँ के साधू, भक्त, बड़े-बड़े आदमिन के दस्तखत करा लावो तो हम तोड़वा दें।'' बसन्त राम महन्तों के पास गए हाल कहा तो वे बोले, ''कब से पगलाने हो। 48 साल टट्टी बने हो गया।'' तो बसन्त राम ने कहा कि 'अभी बताते हैं सुनो। "मोटे चूतर, लम्बे पेट, नहीं भई सतगुरु से भेंट। जब से तुम महन्त बने तब से हम पगलाने हैं।"

फिर बसन्त राम फैजाबाद गए। बड़े-बड़े आदमियों से हाल बताया। बहुतों ने दस्तखत किया और कहा, ''साधूओं में भाव नहीं है। इस पुनीत कार्य में सब को मदद करना था।'' फिर सुलतानपुर, परतापगढ़, गोरखपुर, बस्ती, बहराइच, गोंडा गए। 2200 दस्तखत करा दिए। साहेब ने तोड़वा दिया। सब ने जाना, कुछ बोल न सके।

फिर बसन्त राम हमसे कहे कि 'अब हम जाते हैं। हमारा शरीर लोधेश्वर महादेव के मंदिर में छूटेगा। उम्र 85 की हो गई है।' कुछ समय रहकर शरीर छोड़ा। हमारे पास पता आया। बहुत बड़ा विस्तार है। हम बहुत थोड़ा लिखे हैं।

62. अधना के सर्वजीत

इनको शरीर छोड़े शायद 45 साल हुए होंगे। वे 40 आदमी मारे थे। जब फाँसी बोली गई तो कहा, ''हम 40 आदमी मार चुके हैं, फांसी बोली गई तो ठीक ही है। हमैं कोई फाँसी न लगावै, हम खुद लगा लेंगे। एक अभिलाषा रह गई। बाबा की कुटी हम न बनवा सके।'' बाबा एक मील पर रहे। एक राजा के मंदिर में अधना के ठाकुर लोग और आदमी करीब ढाई सौ पीनस पर अपने यहाँ ले गए, गेहूं के खेतों में होकर। गेहूँ में सावाँ पर रहा था। हम भी थे। 3 दिन बड़ी भीड़ रही। खूब पूरी-कचौड़ी-दूध शक्कर का भोजन हुआ। बंगला बने थे, कुआँ बन गया था। कहा, ''हमारी लाश को

बाबा के दर्शन करा देना।'' इतना कहकर फाँसी लगाकर कूद पड़े। प्राण निकल गए। 15 कोस गाँव है। बैल गाड़ी पर लाश आई। पास बाग है। वहीं रात भर लोग रहे। सुबह बाल बने, जनेऊ बदला गया, कफ़न ठीक किया गया। एक फरलाँग पर बाबा राम लगन दास ब्रह्मचारी रहते थे। आये। लाश दहिना (परिक्रमा) कर खड़े हुए। पहले बाईं आंख खुली, फिर दाहिनी खुली। कुछ देर बाबा की ओर देखता रहा। फिर आँखें बन्द हो गईं। प्राण निकल गए। अब पाप कहाँ रह गए।

ऋषि लोग लिख गये हैं, ''एक नीच को मारे दस हजार गऊ की हत्या लगती है। वैश्य को मारे पचीस हजार की, क्षत्री को मारे पचास हजार की और ब्राह्मण को मारे एक लाख गऊ की हत्या लगती है।'' उसे 40 की उम्र में फाँसी बोली गई थी। हम अपने चाचा के नौकर को बाबा के पास रख आए थे। दयाल दास नाम था। अहीर कई साल वहाँ रहा। फिर यहाँ आया। कई साल रहा। उसने हाल बताया था। फिर उसे सिंग्रहणी हुई। घर भेज दिया। वहाँ उसका शरीर छूट गया। हम बाबा के पास जाया करते थे। ऊँचे खेरे गाँव के करीब मंदिर में रहते थे। अच्छे सन्त थे।

63. चार चमारों का पुण्य

एक ठाकुर बजरंग दास कानपुर जिले के थे। वै यहाँ कई बर्ष रहे। बूढ़े थे तब। यहीं शरीर छोड़ा। उनके गाँव के एक ठाकुर बड़े धनी थे। बड़ी दया थी। गाँव में कोई भूखा नहीं रहने पाता था। उनकी दया का हाल लिखाते हैं।

पूस माह का महीना था। चार चमार थाने से लाश अस्पताल पहुँचा कर लौट रहे थे। सरदी के मारे काँप रहे थे। उनके दरवाज़े पर होकर रास्ता था। ठाकुर ने छत पर से सिपाहियों से कहा, ''फाटक खोल कर इनको तपावो'' और कमरे में पैरा बिछवा दिया। दो-दो नये कम्मल ला दिए। ठकुराइन ने पूरी साग-दूध शक्कर नई थालियों में धरवाया। नये लोटा सबको दिए। प्रेम से सब को खवाया। रात भर आराम किया। सुबह सब रख कर चले तो ठाकुर ने कहा, ''ले जाओ।'' सब सामान वे लोग ले गए।

कुछ दिन बाद एक बनिये की बहू को एक ब्रह्म ने पकड़ा। बहुत रुपया खर्च किया। बड़ी खुशामद लोगों ने किया तो उसने कहा, ''ठाकुर को बुलावौ हम छोड़ देंगे।'' ठाकुर आए। ब्रह्म ने कहा, ''हमैं चार चमारौं

को जो भोजन आदि कराया है, उसका पुण्य दे दो तो छोड़ दें।'' ठाकुर ने कहा, ''हम कौन बड़ी पुण्य किया है?'' तो ब्रह्म ने कहा, ''आधी पुण्य दे दो।'' तो ठाकुर नहीं बोले। तब कहा, 'तिहावा दे दो।'' तब भी ठाकुर नहीं बोले। फिर कहा कि चौथियाई दे दो। तो ठाकुर ने कहा, ''दीन।'' बस विमान आ गया। ब्रह्म दिब्य रूप से चला गया।

एक दिन ठाकुर पूजा कर चुके तो ठकुराइन से कहा, ''हम जाते हैं।'' ठकुराइन ने कहा, ''रुकौ, अश्नान कर लें।'' अपना श्रृंगार करके बाईं तरफ बैठ गईं। विमान आया। दोनों एक ही में बैठ कर चले गए। भगवान की लीला भगवान जानैं। एक विमान पर एक ही धर्मात्मा या भजन करने वाला जाता है, दूसरा नहीं जाता।

64. औघर बाबा
जिला बस्ती

एक ठाकुर के तीन लड़के, एक भाई, माता और औरत थी। यहाँ से हरैया तहसील 14 कोस है। वहाँ से दो कोस उनका मकान है। वे बड़े भक्त, धर्मात्मा और रामायण के प्रेमी थे। दक्खिन तरफ़ कमरा में ठहरते थे। उनके 3 लड़के थे। मुसलमानों के गाँव में दो गोशाला बनवाये थे। उधर कहीं भगौती का मंदिर था। वहाँ बकरा चढ़ते थे, मेला होता था शायद नवरात्र में। वहाँ गए कहा, ''भगौती जक्त (जगत) माता हैं। क्या बकरा उनका बैरी है? बकरा न चढ़ना चाहिए।'' किसी आदमी ने मंदिर के पीछे काट दिया। किसी ने आकर कहा तो जा कर उठा लाए और सबसे कहा, ''भगौती जिला दें तो बकरा न चढ़ै। न जिलावै तो चढ़ै।" दारोगा आए, बात हुई। दारोगा ने कहा, ''ठीक बात कहते हैं।'' सबेरे से शाम तक बकरा पड़ा रहा। तब ठाकुर ने पानी मंगाया, उसके ऊपर छोड़ा, सर धड़ जोड़ा, चारा धरा, मंत्र पढ़ा, पैकरमा किया। बकरा उठ कर चारा खाने लगा, पानी पिया। तब से बकरा चढ़ना बन्द हो गया। कोई नहीं चढ़ाता था। उनको औघर स्वत: मिला। वै माँस-मछली, लहसुन, प्याज नहीं खाते थे। औघड़ राजा के यहाँ जा कर कह आता था, ''यज्ञ होगी सामान भेजो।'' सब सामान आ जाता था। कई यज्ञ बड़ी-बड़ी कराया। बाबा ने कहा, ''देखौ! भगौती बकरा खाती होतीं तो न जिलातीं। यह पाप तुम लोगों को भोगना पड़ैगा।''

बहुत गरीब लड़कियों की शादी कराया, लड़कों के जनेऊ। और भी बहुत शुभ काम कराए। जब उनके राज रोग हो गया तब यहाँ आए, दवा किए, ठीक हो गए। संयम बताया, करते रहे। 6 माह बाद माँ से कहा,'' हमारा मन बरा भात खाने का है।'' मां ने बरा भात बनाया। उन्होंने खाया। शाम को कफ़ ने घेर लिया। सुबह मोटर लेकर भाई आया। 16 कोस है। हम गए देखा। तब तीर्थों का जल, महाराज का चरनोदक पिलाया। कहा, ''अब समय आ गया। आज रात में शरीर छूट जायगा।'' हमने कहा, ''कोई आश्रम में नहीं है। महाराज से पूछ कर आए हैं। आप हमैं बैकुण्ठ में मिलैंगे।'' फिर उनकी माता ने पूरी बनाया, दही गाय का, काली मिर्च नमक से, खाया। घर वाले शक्कर दूध पूरी परसादी ले कर खाया। 3 बजे रात को शरीर छूट गया। फिर हमैं बैकुण्ठ में मिले।

औघर बाबा बड़े पर-उपकारी थे। उनके न रहने से चारौं तरफ़ के गाँवों के लोगों को बड़ा दुख हुआ।

65. मानसरोवर कैलाश से आये एक सन्त

एक यहाँ सिद्ध रहते हैं। अरसा 50 साल का हो गया। तब वे 250 वर्ष के थे। अब इनकी उम्र 300 बर्ष की है। एक साधू ने एक ठाकुर को बताया था उनके चिह्न और रंग रूप। रंग बहुत गोरा है, शरीर मोटा है। उनके दोनों पैरों में अंगुलियाँ नहीं हैं। अँगुली उनकी बर्फ़ में गल गई थीं। ऐसा मालूम होता है कि किसी आरी से काट डाली हैं। उनको जाड़-घाम और भूख प्यास नहीं लगती। सिर्फ़ एक लंगोटी व सोंटा एक मोटा अपनी मुट्ठी भर का है। उसमें लोहे की मुंदरी लगी है। ठाकुर सन्तों के प्रेमी थे। वे आए। कई दिन सरजू के किनारे-किनारे सवेरे, फिर 2 बजे, फिर सूर्यास्त तक तलाश किए। और फिर कहा ''जब तक दर्शन न होंगे, तब तक घर न जायंगे।'' एक बूढ़े पंडा ने पूंछा, ''तुम क्या कई दिन से तलाश कर रहे हो?'' तो ठाकुर ने हाल बताया। पंडा ने कहा, ''हमने देखा है। इस रंग रूप के हैं पर हम यह नहीं जानते कि वे सन्त हैं। भीड़ में सरजू में घुसकर उस पार चले जाते हैं। तुम्हारा भाव होगा तो ज़रूर मिलेंगे। हम से भी बताना जब मिलें। तब बताना सन्त हैं या नहीं। पूछने पर बतावैंगे तब पता चलेगा।'' उनका मन उन पर लग गया।

एक दिन 3 बजे सरजू किनारे बैठे थे। अपने पैर धो रहे थे। ठाकुर ने पैर छू लिया तो उन्होंने कहा, ''अरे! राम राम!! तुमने हमारे ऐसे अपाहिज के पैर छू लिया।'' तब ठाकुर ने कहा, ''हमैं एक साधू ने बताया था।'' तो उन्होंने पूछा, ''तुम क्या चाहते हो?'' तब ठाकुर बोले, ''जब हमारी इच्छा हो तब हमैं दर्शन हो जाया करैं।'' तो कहा, ''ऐसा ही होगा, जाओ।'' फिर पंडा से ठाकुर ने बताया। वह पंडा उम्र 70 की होगी हमारी परिचय का था। दुर्गाजी का भक्त था। हमसे उसने बताया। हम गए तो उनके पैर छुए तो हँसे, कहा, ''तुम तो सिद्ध सन्त के कृपापात्र हो। तुम्हारे पैर हमैं छूना चाहिए।'' हमने कहा, ''सन्त भगवान को जान कर उनका रूप हो जाते हैं इससे हमने छुआ है। सन्त भगवान में कोई अन्तर नहीं है।'' तब हम से कहा, ''अयोध्या सिद्धों की सराय है। यहाँ लाखों युग के सन्त हैं—राज योगी, सहज समाधि वाले, प्रेम योगी, लय समाधि वाले, शून्य समाधि वाले। जड़ समाधि वाले कम हैं। हम मानसरोबर कैलाश के पास से चले आए हैं। यहाँ सिद्धों से राजमार्ग का भेद पाकर साधन करके सहज समाधि प्राप्त किया, प्रेम समाधि जाना। रात 2 बजे बहुत सन्त अश्नान को आते हैं। उनके सतसंग से सब प्राप्त हो गया। सरजू जी में एक दूध की तरंग आती है। सन्त जो पीते हैं वै अपना-अपना पात्र भर लेते हैं। मानसरोबर कैलाश तिब्बत की तरफ़ हठयोगी बहुत हैं। राज योगी नहीं हैं। हठ योग हमने सीखा। एक सन्त वहाँ 850 वर्ष के हैं। नंगे रहते हैं बर्फ पर और बर्फ खाते हैं। हठयोग में हमैं कोई आनन्द नहीं मिला। एक दिन की समाधि से 10 दिन की आयू बढ़ जाती है। तमाम सिद्धी प्राप्त हो जाती हैं, भगवान की प्राप्ति नहीं होती है। शरीर अजर अमर हो जाता है। यहाँ पर शुद्ध भाव से रहे, किसी से द्वेष न करै, अपना तकलीफ़ सह ले, दूसरे को आराम दे, जप-पाठ पूजन कीर्तन कुछ न करै तो चौथे बैकुण्ठ में पहुँच जाय। यह सब पुरिन में श्रेष्ठ है। भगवान, भरत जी, लखन लाल, शत्रुहन जी का औतार यहाँ हुआ है। चारौं शक्ती साथ में हैं। चौरासी कोस में हर जगह विराजमान हैं। अपना मन शुद्ध हो तब भाव शुद्ध हो जाय। वही दृष्टिगोचर कर सकता है। इस पुरी का प्रभाव जानने वाले शंकर जी, हनुमान जी, शेष, शारदा, गणेश जी, काली जी, दुर्गा जी, ने बहुत विस्तार से कहा है। उसके लिखने में महीनों लग जायेंगे। तुम लिख नहीं सकते। शरीर कमज़ोर है, सर में गर्मी बढ़ जाती है। इसी से हम थोड़ा कहकर बन्द करते हैं।''

66. ठाकुर बद्री सिंह

ठाकुर बद्री सिंह ज़िला रायबरेली के, मुकाम पूरे दूंदी पठान पुरवा के, अहमदाबाद में पुलीस में नौकर थे। जब रिटायर हो गए तो घर आए। उनके पास चाँदी के राम जानकी थे, शायद एक-एक पाव वजन था, या कुछ कम हो। हमने देखा वहाँ पधारे थे। चेला मनीराम छावनी के थे। यहाँ रहे। महाराज जी से भजन की बिधि जानकर साधन करने लगे। हमसे कहा, ''हमें भोग लगाना बता दीजिए।'' हमने सब बिधि बता दिया। महीना जाड़े का था उनके हाथ खूब ठंढे थे। भगवान को कौर बना कर देखाया तो भगवान ने जीभ निकाल कर देखाया उसमें छोटे-छोटे छाले पड़े थे, तो बाहर रोते निकले। हमसे कहा। हम गए तो दाल में हाथ लगाया। अँगुली जल गई। हमने कहा, ''दाल बहुत गर्म है।'' दूसरे दिन कहा, ''आज भोग नहीं लगता है।'' हम गए। पलाकी की सगपहता उर्द की दाल में बना था। उसमें खोज किया तो लाल लाल गुजिया मिली। हमने कहा, ''भोग कैसे लगै। देखो! यह गुजिया इसी में मर गई।'' तब फिर कहा, ''अब हम भोग न लगावैंगे।'' हमने कहा ''मूर्ति अपने गुरुद्वारे में पधार आवो। यहाँ चाँदी की मूर्ति की ज़रूरत नहीं है। यहाँ बाबा राम प्रसाद जी के पुजारी की छोटी-छोटी हैं जैसी बाबा राम प्रसाद जी की चारौं भाई चारौं महारानी हैं।'' तब वहाँ पधार आए।

हम से कहा, ''एक लंगड़ा औघड़ अहमदाबाद में है। धोबी का बालक है, उम्र 40 साल की है, गोरा-गोरा है, दाढ़ी केश हैं। एक टाँग से लंगड़ाता चलता है। वह मार भी देता है, जिला भी देता है। बड़े आदमी का लड़का मरता है तो खूब पैसा मूँह माँगा पाता है। तमाम औघड़ लुच्चे-गुंडे बुला कर मास-शराब, पूरी-साग बहुत चीज़ैं खिलाता है।''

तब हमारा सिर नहीं टूटा था। सुरति लगाया, आ गया। उसे गर्मी में फाटक के पास नीम थी, पत्थर लगा था, उस पर रात में रखते थे। दिन में लू चलती थी तो सुरंग में रखते थे। तब हमने कहा, ''मारने से बड़ा भारी पाप है। चमार पासी को मारने से दस हजार गौ मारने की हत्या लगती है, वैश्य-अहीर, कुर्मी-मुराऊ, गड़रिया जिनके हाथ का पानी पिया जाता है, उनके मारने से पचीस हजार गऊ मारन की हत्या लगती है। क्षत्री को मारने से पचास हजार गऊ मारने की हत्या लगती है। ब्राह्मण को मारने से एक लाख गऊ मारने की हत्या लगती है। औरत

को मारने से चार लाख गऊ की हत्या लगती है। बिना पैसा पाये तुम जिलाते नहीं हो। मारन न करौ। जो जवान या लड़का मरै उसे जिला दिया करौ। अपने खाने कपड़े भर का ले लिया करो। पैसा लेकर फिर तुम पापिन को खिलाते हो। और पाप चढ़ता है। ऐसा करते रहने से तुम को मरने पर घोर नर्क होगा। कौन बचावैगा। एक दिन मरना ज़रूर है।'' बहुत कहा, 15 दिन राखा, हाथ जोड़ा। उसका समय आ गया तब हम से कहा, ''यह मंत्र ऐसे हैं कि पेट में काटने लगते हैं। जब किसी को मार देते हैं तब शान्ती आ जाती है। कोई आया कहा, 'हमैं एक आदमी तंग करता है।' हमने कहा कि क्या दोगे? उसने कहा, 'जितनी हमारी सामर्थ है–40 या 50 रुपया।' कहा 'धरौ।' वह चाहे हजार कोस पर हो मंत्र पढ़ा, कहा, ''वह भोजन करने उठा था मर गया।'' हमने कहा, ''उसके बाल बच्चे कैसे जियैंगे? वही घर में कमाने वाला था। सब भूखे मरेंगे। यह तो बड़ा ही पाप हुआ।'' हमसे कहा, ''औघड़ को सिद्ध किया था। वह कैसे हमैं छोड़ैगा?'' हमने कहा, ''तुम उससे कह दो कि बीच समुद्र की मिट्टी एक मुट्ठी ला दो, तो वह ला नहीं पावैगा तब छोड़ देगा।'' तो कहा, ''आपकी बात उससे कहूँगा। अब के उसे छोड़ दूँगा। मेरे मन में यह आपकी बात बैठ गई है।'' कसम खाया और पता लिख कर ले गया। औघर से जाकर यह बात कहा तो वह बोला नहीं। फिर न आया। हमने कहा था ''राम राम करना सारे पाप नाश हो जायेंगे।'' राम राम करने लगा। पत्र भेजा, कहा, ''औघड़ से आपकी बात कहा। फिर वह लौटकर न आया।''

67. एक वाममार्गी ब्रह्मचारी

गोविन्द की गति, गोविन्द जानै। एक ब्रह्मचारी आते थे यहाँ कभी-कभी। 3 या 4 माह रहते थे। दुर्गा जी भैरव जी से प्रेम था। अरसा हो गया। लखनऊ में एक लोहार के दरवाजे शरीर छोड़ा 52 की उम्र में।

वह लोहार चाचा भतीजे थे। भतीजा त्रिशूल का मंत्र जानता था। चाचा जंजीर का मंत्र जानता था। मंत्र दोनों शंकर जी के थे। त्रिशूल और जंजीर से बड़े-बड़े मकान या पेड़ों में यदि लगा दें तो जंजीर गिरा दें। फिर त्रिशूल छोड़ दें तो जंजीर को काट देवै। चाचा कहता था, ''लोहे का घोड़ा बना दें और चाभी लगा दें तो दो कोस जाकर, सवार चढ़ा रहे,

मारकर लौट आवैगा।'' हम से कहा, ''आप चलैं तो हम देखावें।'' हमने कहा ''कौन भजन है जो देखने चलें। यह तो दुनियावी खेल है।'' फिर हम से कहा, ''विन्ध्याचल में नौ रात्रि में हम नौ मूर्ती नौ दिन बैठे रहे। गाय के घी की ज्योति रात दिन जलती रही। उसे ताकते रहे। कुछ न हुआ। एक अहीर आया जवान। वह भगौती के सामने पेट के भल लेट गया। माता-माता करता रहा। सुबह से 2 बजे दिन तक। उसके पट खुल गए। वह उठकर हंसने लगा। भगौती की दंडवति किया। फिर चला गया। कुछ पढ़ा न था।'' हमने कहा, ''उसका प्रेम सच्चा था। तुम्हारा सब का कच्चा। एक औघड़ वहाँ रहा। वह राम राम करता था। दाल-भात-रोटी-साग माँस जो कोई देता था, वह खाता था। किसी ने कहा, 'तुम राम-राम करते हो और माँस खाते हो' तो कहा, 'अन्न फल सब में जीव होता है। तुम पीस कर, उबाल कर, फल साग काट कर, उबाल कर या बिना उबाले जो खाते हो वह सब मुर्दा खाते हो। जीव निकल जाता है। हम मारने नहीं जाते, न मोल लाते हैं। किसी ने बनाकर दे दिया तो खा लेते हैं। नट्टी नांघै सब मिट्टी हो जाता है।' एक दिन कमलासन से बैठकर गंगा जी में घुस गए। बीच धार में पहुँचकर कहा, ''हम जाते हैं।'' और उसने प्रणायाम किया। सर फट गया। लाश बही चली गई। उसने खूब अभ्यास की थी। सब देखते रह गए।''

ब्रह्मचारी एक दिन आधी रात को प्रह्लाद घाट पर चावल चुराते (पकाते) थे एक खोपड़ी में। दातून जो लोग करते हैं वही सूखी-सूखी थी। उजेरी रात थी। नंगे बैठे चुरै रहे थे। महीना गर्मी का था। हम स्वाभाविक पहुँच गए तो पूंछा, ''क्या करते हो?'' तो कहा ''वशीकरण उच्चाटन के लिये चावल बनाता हूँ।'' हमने कहा ''कैसे बनते है?'' तो कहा ''जब पक जायँगे तो पीपल में छोप देंगे। जितने गिर जायेंगे वह अलग राखैंगे। जो चिपके रहेंगे उन्हें अलग राखैंगे। सुखाकर धरेंगे। एक चावल पीसकर पान में खवा देने से औरत हो या मर्द वश में हो जाता है। इसी तरह से खवाने से उच्चाटन हो जाता है। एक एक चावल के सौ रुपये लेंगे। तेली की खोपड़ी मंगल इतवार को लाई जाती है और मंगल इतवार को ही चावल बनाए जाते हैं। बड़ी मुश्किल से मिलती है।'' हमने कहा, ''तुम को खाना कपड़ा भगवान देते हैं तो रुपया क्या करोगे?'' तो कहा, ''गरीबों की सेवा करेंगे।'' हमने कहा, ''जिसे खिलावेंगे, उसकी क्या गती होगी? ऐसी गन्दी चीज खाने खवाने वाले दोनों को नर्क होता

है। तुम से दुर्गा जी भैरवजी ने यही भजन बताया है?'' तो चुप रहे। हमने कहा ''यह सब काम वाममार्गी करते हैं। उनको घोर नर्क होता है।'' तब सब सामान फेंक दिया। धोती पहनकर हमारे साथ आए।

दिवाली के दिन एक छुरी हमारे पास से ले गए। एक घुघुआ कहीं से लाये थे। उसे उल्लू भी कहते हैं। उसे रात्रि में काट कर कलेजा जलाकर काजल बनाया हम सुबह गए तो पंखना पड़े थे। हमने नौकर से पूछा, ''यह पंखना कैसे हैं?'' तो कहा, ''ब्रह्मचारी ने घुघुआ मार कर कुछ बनाया है।'' ब्रह्मचारी आए। भोजन किया। हमने पूछा ''क्या बनाये हो?'' तो कहा ''काजल। बड़े आदमी के सामने जाये माथे में एक लकीर लगा लें तो वशीकरन हो जाय।'' हमने कहा, ''तुम्हारे मन में वही खराब बातें घुसी हैं।'' कहा, ''परीक्षा करते हैं।'' हमने कहा, ''बड़ा पाप है।'' तब फिर फेंका। हमसे कहा ''हम एक खोपड़ी पराग (प्रयाग) से उठा लाये हैं गंगा जी से। तब से हमारे पैरों में बड़ी बड़ी फुरियाँ निकलती हैं।'' हमने कहा, ''लावौ देखैं।'' लाये तो हम जाकर सरजू में बालू भर कर छाती भर पानी में छोड़ दिया। तब फिर फुरियाँ निकलना बन्द हो गया।

फिर मिलकीपुर गये। वहाँ परिचय था। ब्राह्मण के परिवार में एक लड़के को मंत्र दो अक्षर का, बता दिया। आपस में झगड़ा हुआ। उसने 12 घंटे में सवा लाख जप लिया। वह लड़का जिससे झगड़ा हुआ था, मर गया। उम्र 20 साल की थी। औरत रांड़ हो गई। हमसे आकर बताया। हमने कहा, ''बड़ा भारी पाप किया।'' जब हमने बहुत समझाया और कहा, ''यह पाप, बिना राम-राम जपे, मिट नहीं सकता है। हम यह सब देख चुके हैं। जिन-जिन पंडितों या और लोगों ने मारन किया है सब की गती बहुत खराब हुई। हमारे पं. भवानी प्रसाद, शंकर जी के भक्त, गायत्री भवन में पढ़ाते थे। उनके गुरु जैपुर में पढ़ाते थे चार सौ रुपये माह वार पर। घर पर चोरी हुई। लड़के ने पत्र लिखा तो लिख दिया, 'सरजू जी के किनारे जाकर सवा पाँच सेर बकरे का माँस भैरव जी के मंत्र से हवन कर देना।' लड़के ने जाकर करा दिया। सब चोर मर गए। एक बार जैपुर से वे नेपाल को गए। वहाँ जो पंडित बाहर से आवै, जै शास्त्र पढ़े हो तै बार डंका बजा दें। वह पंडित भैरव जी के बल से कई डंका बजा दिया। वहाँ पंडित बहुत जमा हो गए। नैपाल के राजा ने कहा, 'ऐसा पंडित कभी नहीं आया जो ऐसी बात किया हो।' पंडित से कोई बात न कर सका। सब के मुंह कील दिये। राजा ने प्रार्थना किया तब मुँह सब के

खुले। पंडित लोग चरनों पर पड़े। राजा ने बहुत धन दिया। बड़ा नाम हुआ। फिर जैपुर से रिटायर होकर आए तो 200 रुपये माहवार मिलता था। अंधे हो गए। तब भी लालचवश मारन करते और रुपया कमाते थे। जो कोई आया कहा 'पंडित! फलाने हमें बहुत तंग करते हैं?' तो कहें 'तुम क्या दोगे?' सौ से कम नहीं लेते थे। धनी लोग हजारौं देते थे। मंत्र पढ़ा और कहा ''जाओ!'' भोजन करने उठा था मर गया। खूब रुपया पुजाया। मरने पर घोर नर्क हुआ। जिसने जिसने उस रुपये का अन्न व वस्त्र इस्तेमाल किया उसे नर्क हुआ। आपने घर बार छोड़ा फिर ऐसा काम करने लगे। परमार्थ न सधै तो परस्वारथ ही करे। इससे चौथे बैकुण्ठ को पहुँच जाय।'' तब कसम खाया। राम-राम करने में जुट गये। दीनता आ गई। भगवान ने अपना लिया।

68. पंडित कैलाश
गाँव बेसरवा, ज़िला रायबरेली

पंडित कैलाश ने 12 की उम्र में अवध में किसी से मंत्र लिया था। भागवत और कई ग्रंथ पढ़े। फिर भागवति बाँचने जाने लगे तो राम का नाम लेते थे, कृष्ण भगवान का नहीं लेते थे। शंकर जी का शिवाला बना था। फूल चारौं तरफ लगे थे। बाबा दुर्गा दास की कुटी पर अपनी दूसरी पत्नी को मंत्र दिलाये थे। फिर हम धनुहा चले गए। सुबह आए और कहा, ''मंत्र लिख दो पत्नी को याद करा दें।'' शारदा बक्स ने कहा, ''न लिखना, इनको मंत्र याद नहीं है, छोटे पर लिये थे, चेला करते हैं। न मालूम क्या बताते हैं। इसीलिए अपनी पत्नी को मंत्र दिलाये हैं।' हमने कहा, "तब तो हम ज़रूर लिखेंगे।" लिख दिया। तब कहा, "हमारे घर भोजन तैयार है। आप, दुर्गादास, बद्री दास चलैं।'' हम तीनों वहाँ गए, भोजन किया। फिर बैठक हुई। हमने कहा, ''उम्र 70 की हो गई। हमसे कई लोगों ने कहा है, 'पंडित भागवति बाँचते हैं तो राम का नाम लेते हैं कृष्ण भगवान का नहीं लेते।' शंकर जी, हनुमान जी का नाम लेते हैं और किसी देवता का नहीं लेते। भगवान राम-कृष्ण-विष्णू के बहुत नाम हैं। जिस नाम से जिसका प्रेम हो उसी से उसकी गती होती है। परन्तु जहाँ जो नाम है वही कहा जाता है।'' तो कहा, ''हमारा

प्रेम राम नाम से है।'' हमने कहा, ''भागवति में कृष्ण भगवान का नाम नहीं है क्या? जिस जगह ब्यास जी ने कृष्ण भगवान का नाम लिखा है वहाँ उसी की शोभा है।'

हमने कहा–''सुनौ! दो आदमी पढ़े न थे। भगवान में प्रेम था। किसी साधू से पूछा कि हमें कुछ बता दो तो हम भी जपैं। साधू ने भगवान का नाम बता दिया। यह नहीं मालूम कौन नाम बताया था। वे भूल गए। एक जपता था 'गपकुआ-गपकुआ।' एक जपता था। 'उछरौं बूड़ौं, उछरौं बूड़ौं।' नदी के किनारे आँखें बन्द किहे जपते थे। देवता संसार की सैलानी देखते हैं कि कौन क्या करता है। नारायण जी से लक्ष्मी जी ने कहा, "यह किसको जपते हैं?' भगवान ने कहा, 'पूछ आओ।' लक्ष्मी जी पास गईं और तीन आवाज़ दिया कहा, 'किसको जपते हो?' तो आँखैं खोल कर कहा, 'तुम्हारे खसम (पति) को जपते हैं। तुम हमें यहाँ भुलाने आई हो।' तब लक्ष्मी जी भगवान के पास गईं कहा, 'इन दोनों ने हमसे कहा, तुम्हारे खसम को जपते हैं, तुम हमैं भुलाने आई हो। यह आपका नाम हमने सुना नहीं है।' भगवान ने कहा, 'कृष्णा अवतार में जब हम सखौं के साथ खेलते थे तो भोजन करने को भूल जाते थे। पाँच की उम्र में खेल बड़ा अच्छा लगता था। जसोदा जी दाल भात गाय का घी मिलाकर कौर बनाकर दिखाती थीं और कहती थीं, 'आओ, मेरा गपकुआ यह कौर गपकि ले।' तब हम कौर मूँह फैलाकर ले लेते और खा जाते थे। तब का यह नाम जपता है।' फिर कहा, 'दूसरा जो जपता है 'उछरौं बूड़ौं' वह कौन नाम है?' भगवान ने कहा, 'छोटे पर सखौं के साथ जमुना जी में डुबकी सीखते थे। नाक दाब कर नीचे जाते, फिर ऊपर उछल आते। तब नाक छोड़ देते थे 'उछरौं-बूड़ौं' तब का नाम है।'"

हमने कहा, ''बहुत दृष्टान्त हम जानते हैं।'' तो कहा–''ठीक है। हम भी एक देख चुके हैं–"एक अहीर जंगल में गाँव वालों की गाय भैंस चराता था। एक साधू बैलगाड़ी पर सामान लदा कर ऊपर बैठे थे और कई चेला पैदल चलते थे। उस अहीर ने गाड़ी के आगे खड़ा होकर कहा, "बाबा! हमें भी कुछ बताओ।" बाबा ने कहा, "हम पाँचों बर्तन-कपड़ा-रुपया लेते हैं, हवन कराते हैं, परसाद भोग लगाकर बाँटते हैं। तब मंत्र बताते हैं।" तो वह गाड़ी के आगे हाथ फैलाकर खड़ा हो गया, कहा, 'बाबा! हमारे पास कुछ नहीं है। हम गाँव के लोगों की गाय

भैंस चराते हैं उससे बसर करते हैं। घर के अकेले हैं। सब घर वाले मर गए। अपने हाथ से बनाते खाते हैं।' तब बाबा ने कहा, "जा साले! 'भैंसी का सींघ-भैंसी का सींघ' जप जा कर।" उसने सब काम यानी गाय भैंस का चराना छोड़ दिया। जंगल में बैठकर जपने लगा। तीन दिन के बाद गाँव के लोग बना बनाया भोजन देने लगे। महीना गर्मी का था। झोंपड़ी बन गई। फिर लोग जंगल चारौं तरफ से काट कर मंदिर बनाये, भगवान पधर गए। सिंगा दास नाम पड़ गया। उनके पट खुल गए। साधू आने लगे, सेवा होने लगी।''

तब हमने कहा, ''जब आप देख चुके हो तब काहे नहीं मानते हो? इस फुलवारी में शंकर जी पधरे हैं। अब जुटकर भजन करौ।'' तो मान गए। शायद 5 साल रहे तब शरीर छूटा।

69. राम नाम की महिमा
(श्री महाराजजी की बताई)

एक सन्त बृद्ध थे। पराग राज का कुम्भ था। चेले ने कहा ''महाराज! हमारी इच्छा है कि अश्नान कर आवैं।'' बाबा ने कहा ''कई माह में पहुँचोगे, हमैं कष्ट होगा, बृद्ध शरीर है।'' तो कहा ''हम उसी दिन अश्नान करके आ जायंगे।'' बाबा ने कहा ''इतनी शक्ति हो गई?'' तो कहा ''हाँ''। फिर बाबा ने कहा ''बच्चा, सम्हरे रहना, राम नाम को कोई कोटिन (करोड़ों) में जानता है।'' चेला चल दिया। आकाश मार्ग से अश्नान करके लौटा। आधी दूर आया था तो क्या देखता है कि बहुत लोग हिन्दू जाति-अहीर या कुर्मी या मुराऊ जाति में पंचायत हुई, फिर खान पान हुआ। बिदा होते समय सब लोग आपस में कहने लगे ''भाई राम-राम, भाई राम राम।'' उसने आकाश मार्ग से सुना तो मन में आया ''महाराज तो कहते थे कि राम नाम कोई कोटिन में जानता है। इस जगह तो सैकड़ों राम राम करते हैं।'' बस तप नाश हो गया, नीचे गिरा तो गुरु के तप बल से बच गया। फिर चला तो तीन माह में आया। गुरु की दंडवति किया तो गुरु ने कहा,'' बच्चा, इतने दिन कहाँ लगाया? हमें बहुत कष्ट हुआ।'' उसने सब हाल बताया। तब गुरु ने कहा ''हमने तुमसे कह दिया था। तुमको विश्वास दिलाने के लिए भगवान ने ऐसा किया है।''

गुरु ने कहा ''एक पत्थर का टुकड़ा उठा लाओ।'' वह ले आया तो उसे छू दिया। वह पारस हो गया, गुरु ने कहा ''इसे बाज़ार ले जा। साग वाले, मिठाई वाले, अन्न वाले, कपड़े वाले और जौहरी के पास ले जाकर हाल बताना कि कौन क्या देता है।'' साग वाला थोड़ा साग देने लगा, मिठाई वाला थोड़ी मिठाई देने लगा, अन्न वाला थोड़ा अन्न देने लगा, कपड़े वाला थोड़ा कपड़ा देने लगा। फिर जौहरी के पास गया तो उसने कहा ''यह पारस है, तुम जितना मन हो हमारे पास से रुपया ले जाओ, हम इससे तमाम सोना बना लेंगे।''

बाबा ने उससे कहा ''जाकर राजा के खजाने में रख आवो।'' चेला रख आया। बाबा ने कहा ''देखा, राम नाम अनमोल है। जो भगवान का बनाया पत्थर है उसकी कीमत कोई नहीं जानता तो भगवान के नाम की महिमा तो अपार है, अकथ है, अलेख है, अगम है। जो दीनता, शान्ति और अपने को सब से तुच्छ मान ले, उसे एक अणू भर मिल जाता है, उसी से वह भगवान का हो जाता है।" बहुत बिस्तार है थोड़ा लिखा है।

70. मास्टर लाला महाराज बहादुर
लाल बाग, फैजाबाद

यह रानू पाली बाबा नरायण राम के शिष्य थे। अपना मंत्र जपते थे। फिर महादेव प्रसाद अस्थाना और दत्त बाबू तथा नाथ प्रसाद के साथ यहाँ आने लगे। यह सब संगी कालेज में पढ़ाते थे। हमसे कहा कि हमैं भी भजन की बिधि बताओ। हमने कहा "अपना मंत्र 5 माला सुबह पूरब मूँह और 5 माला शाम को पश्चिम मुख बैठकर जपौ। मंत्र बड़ा है, एक बार में मन नहीं लगेगा। एक माह बाद फिर बतावेंगे।'' उनको प्रेम भगवान में था, जुट गये। कुछ अनुभव होने लगा। एक माह बाद आए तो छत पर बैठकर सब विधि, खान पान भजन की बताया।" 10 पर सैन करना, 3 पर उठना, नित्य क्रिया करके नेम करके ध्यान करना। रोज बाहेर का बरामदा धोकर बन्द करके बैठने लगे। फिर उनको बाजों की आवाज सुनने में आने लगी, नाम की धुनि होने लगी, लय दशा होने लगी। एक दिन केवाड़ बन्द करना भूल गए, केवल उड़का दिया था। जनौरा के कृष्ण दास आए, किवाड़े में हाथ लगाया तो

खुल गया। बैठ गए। इनको लय दशा हो गई थी। दो घंटे बाद उतरी तब देखा तो पैर छुए कहा ''आप कब आए?'' तो बोले ''तुम बैठे सोते थे।'' फिर हम गए तो बताए। हमने कहा ''इसमें बड़ा धोका होता है, अब ऐसा न करना।'' फिर इनके फोता में तकलीफ़ हुई तो डाक्टर को बुलाया और कहा ''हम घर के अकेले हैं, अपनी फीस ले लो। आपरेशन कर दो।" डॉक्टर ने कहा कि कल आवैंगे। उनको फीस दिया तो कहा ''बिना काम किये फीस न लेंगे, हम भी भगवान के भक्त हैं।'' फिर दूसरे दिन गये तो मास्टर ने कहा ''हमें दवा न सुंघाना न सुई लगाकर सुन्न करना।'' तो डाक्टर ने कहा, ''फिर कैसे करेंगे?'' तो कहा, ''तुमको कितना समय लगैगा?'' डाक्टर ने कहा ''एक घंटा।'' तब मास्टर ने कहा ''हम सांस खींचि कर चढ़ाते हैं, तुम अपना काम करौ।'' बस सीधे लेट कर स्वाँस खींचि कर ब्रह्माण्ड में चढ़ा लिया। डाक्टर ने अपना काम करके टाँके लगा दिये। तब डाक्टर ने कहा ''ऐसा रोगी हमने आज देखा।'' जब स्वाँसा उतरा तो डाक्टर ने कहा कि आपने तो ऐसा कमाल किया कि जो हमने कभी देखा न था। फिर मास्टर को कुछ कमज़ोरी मालूम हुई तो भगवान से प्रार्थना किया ''महाराज, जब हमारा शरीर कुछ ठीक हो जाय, जब तक नाम की धुनी और बाजों की आवाज और नाना प्रकार की लीला जो होती हैं बन्द कर दी जायँ। आँखें चौंधिया जाती हैं, धुनी इतनी तेज़ होती है मालूम होता है सर फट जायगा।'' फिर सब दो माह बन्द रहा। जब शरीर मज़बूत हो गया तब फिर होने लगा। हमें बुलाया, बहुत सामान भोजन का बना था, भोग लगाया। चारौं धाम पहले हो आये थे। सब के चित्रपट लाये थे। जब हम बताया तो दिखाये।

जब भोग लगाया तब एक बड़ा बन्दर आकर दो मालपुआ लेकर छत पर चला गया और बैठकर खाने लगा। फिर हम पाये, फिर घर के सब पाये। जब मास्टर नातेदारी में जाते तो वहाँ खाने से भजन में बहुत कमी होती, तो हमसे कहते ''महाराज! बड़ी हानि होती है।'' फिर रोने लगते। हमने कहा ''जाना बन्द कर दो। कह दो कि हम घर के अकेले हैं। कालिज जाते हैं, घर का सौदा बाज़ार से लाते हैं, हमें फ़ुरसत नहीं मिलती है।'' इनके ऊपर जो अफ़सर रहे वह साल में एक बार सब मास्टरौं का निमंत्रण करते थे। माँस वाले, पूरी साग वाले, मिठाई वाले,

फल वाले सब को खिलाते थे जो जौन खाता था। यह फल लेकर घर लाते, धोकर बाँट देते थे, खाते न थे।

भजन में बैठे कमरे में जप कर रहे हैं, कोई पापी बाहेर से निकलै तो शरीर झझक जाता था, कमरा बन्द है, किसी ने देखा नहीं कि कौन निकला है। वहीं से, जहाँ घड़ी टंगी है घर में, देख लेते थे, बस उठ जाते थे। 2 या 3 पुत्र कुछ समय रह कर मरे। मरते समय बड़ा प्रकाश हुआ। हमसे बताया। एक बार हमको मालूम हुआ कि एक संत खूब गोरे गोरे, जटा दाढ़ी सफ़ेद, सफ़ेद धोती पहिने हमसे कहा कि मास्टर को जब लड़का हो और 6 माह बीत जाँय तो गायत्री भवन में 40 ब्राह्मण और विद्यार्थियों को गाय के दूध की खीर खिला कर लड़के के हाथ से दक्षिणा दिला देना तो दो लड़के जियेंगे। तब यह बात हमने मास्टर से कही तो मास्टर बड़े प्रसन्न हुए।

जब लड़का पैदा होकर 6 माह का हुआ तब गायत्री भवन के पंडित व विद्यार्थियों को, जो भगवान की कृपा से कुल 40 ही थे, उन्हें गाय के दूध की खीर खिलाने की व्यवस्था की गई। भंडारी बूढ़ा प्रचंडानन्द था जिसने खीर बनाई थी। मास्टर ने सब के चरण धोये फिर खीर खवाई गई। लड़के को चाँदी का रुपया छुआ कर सब को एक एक रुपया दिया और लड़के को सब के चरनों पर पड़ाया गया। फिर पान इलायची दिया। मास्टर व उनकी पत्नी यहाँ भोजन किये तब घर गए। फिर एक साल तक पंडित ने शंकर जी के मंत्र "ओँ क्लीँ जूँ स:" की 11 माला रोज़ का जप किया। उनको जलपान, भोजन दक्षिणा सब दिया गया।

यहाँ कई साल (शायद 12 या 15 साल) फैजाबाद कालिज में रहे। तब बाँदा तबादला हो गया। वहाँ कुछ समय रहकर शरीर छोड़ा। हमने थोड़ा लिखा है। इनका अनुभव बहुत था।

71 बजरंग बक्स सुपुत्र शिवदान सिंह
रियासत वजेहरा, बिलहरा, सीतापुर

शिव दान सिंह के चार लड़के थे। बड़े बजरंग बक्स, फिर गजोधर बक्स फिर शिव गंगा बक्स, फिर रवि प्रताप सिंह। शिवदान सिंह जब पैदा हुए थे तो पाँच दिन बकरी का दूध दिया गया था। फिर छठ्ठी पूजन

हुआ, माता का दूध पिया। 6 माह पर अन्न परासन हुआ तो गाय के दूध की खीर असरफ़ी से मूँह में लगाई गई तो बेहोश हो गए। फिर माँ का दूध पीने लगे। 3 बर्ष माँ का दूध पिया। फिर गाय के दूध का खोवा और गुड़ मिला कर खाने लगे। उम्र भर यही एक बार भोजन रहा। जब शादी हुई तो भात के दिन बरा, चने की दाल, उसे पढोरा कहते हैं, उर्द की दाल धोई उसे काँड़ा कहते हैं, कटवा, भटवा, खरिका, रसाजै यह सब सालन बनते हैं, तो सब थोड़ा थोड़ा उनके सामने धरा गया। ससुर ने कहा कि कुछ पावो। तो कहा ''हम खोवा-गुड़ एक बार पाते हैं, हमारे पास जनवासे में धरा है।'' मंगाया गया तो सब चीज हाथ से छूकर हाथ धोकर खोवा गुड़ का भोग लगाने बैठे। वह आँख बन्द करके घंटौं भोग लगाते थे। गुड़ की महक से चींटा चींटी आ जाते थे। फिर जल दिखाते थे तब पाते थे। फिर कलेवा के दिन पूरी, दही, शक्कर थार में धरा गया। यह अपना खोवा गुड़ ले गये थे। सरहज ने एक कौर पूरी और दही शक्कर मिला कर होंठ में लगा दिया। बस बेहोश हो गए। फिर मूँह धोया गया। जब होश हुआ तो कहा ''हम छोटे पर से नहीं पाते हैं, अन्न से हमैं बेहोशी हो जाती है।'' तो सरहज ने कहा ''हमने बड़ा अपराध किया।'' तो कहा ''कोई अपराध नहीं, जो नहीं जानता उसे अपराध नहीं लगता है, जो जानता है उसे लगता है।'' फिर अपने खोवा गुड़ का भोग लगा कर पाया। तब दो कलेवा होती थीं–एक पक्का, एक कच्ची कही जाती थी। दोनों कलेवा में शिष्टाचार होता है। गुलाब जल गुलाब पाश में भर कर छिड़कते हैं, इतर लगाते हैं, पान इलायची देते हैं–जो जिसके रिवाज है, करते हैं। 5 दिन पर बरात बिदा होती थी। फिर बिनती होती है, दोनों तरफ़ से।

शिवदान सिंह का हनुमान जी से प्रेम था। मंगल के दिन थाल में लड्डू भर कर एक टाँग से खड़े होते थे। जंगल में गढ़ी थी। चारौं तरफ़ खाँवां बड़े गहिरे थे। एक तरफ़ निकास था। थनिहाँ की वेटर लगी थी। जब लंगूर बन्दर आकर खा लेता था तब थार रखते थे जो बचता था वह परसाद बंटता था। उनकी खरीदी मूर्ती बड़ी बड़ी पत्थर की हैं। सब की पूजा होती है। जंगल में एक सन्त पाँच हजार बर्ष के रहते थे। वै उनको भजन की बिधि बताये थे। किसी को नहीं मिलते थे। उनकी धूनी की भभूति कहीं कहीं झालिन के नीचे पाई जाती थी। हमको भी मिली है।

जिसको चुटकी भर दे दें उसकी भूत व्याधि छूट जाय। कभी कभी चरवाहा बाँसुरी की आवाज सुनते थे। और कुश की आसनी बनाते थे फिर छोड़ देते थे, वह मिलती थीं। पंडितों को दे दी जाती थीं।

बड़े लड़के का नाम बजरंग बक्स था। वै पढ़े नहीं थे। उनका प्रेम सब जीवों पर था। सब जाति के आदमी बड़े छोटे को दादा कहते थे। तीनों भाइन को, भतीजौं को, नातेदारों को, सराध में सब जातिन को मिठाई खवाते थे। चींटी चींटन को आटा घी शक्कर मिलाकर बहुत जगह धराते थे, बन्दर, कुत्ते सब को खवाते थे। बकरी-बकरा जो दाम बकर कसा देते वही दाम देकर ले लेते थे। सब जंगल में चरवाहा चराकर लाते। मकानों में रहते थे। बुढ़ा कर मरते थे। जंगल में कई जगह पेड़ा धराते थे सियारों के लिये। एक बार सरजू लाला और पराग दत्त ब्राह्मण के हाथ भेजा तो वे लोग जहाँ तहाँ दो दो पेड़ा धरकर घर ले गए। जब आये तो कहा ''दादा, दो दो पेड़ा धरकर घर उठा ले गए हो। हम उनके लिये धराते हैं।'' जहाँ जहाँ शंकर जी चौतरन पर या मंदिर हो कोई, देवी देवता के लिये वहाँ जाड़े में रजाई भेजते थे, गरमी में हल्के कपड़े।

गढ़ी के पीछे एक गढ़ा था। उसी से मकान बने थे। हमसे (बजरंग से) गंगा जी ने कहा ''हम आई हैं, तुम अच्छी मिठाई छोड़वा दिया करो।'' एक बार मौला पहलवान ने मिठाई छोड़ते देखा। जब छोड़ने वाला चला गया तब वह बुड़की लगाकर कुछ निकाल लाया। खोवा की मिठाई हाल गलती नहीं है, शक्कर की गल जाती है। जब मिला तो कहा ''दादा, उसमें गंगा जी आई हैं, हमसे कहा था कि मिठाई छुड़ावो। तुम बुड़की लगाकर निकाल लाए हो।'' तब से फिर नहीं निकाला। इलाके गैर इलाके की बेवा औरतों के खाने कपड़े का इन्तजाम करते थे। जब बाज़ार जाते सामान खरीदने और पैसा चुक (समाप्त हो) जाता तो किसी से उधार ले लेते थे, फिर उसको चुकाते रहते थे जब भी देने वाला मिलता, हालाँकि वह कहता था कि पैसा हमैं मिल गया है पर वह हर बार जब वह मिलता तो यह भूल जाते कि इसका पैसा दे चुके हैं, फिर उसको पैसा देने लगते और यदि वह न कहता कि मिल गया है तो देते ही रहते थे। उनको यह याद न रहता था कि चुका चुके हैं।

उनके पास साधू आया करते थे। जाड़े में कम्मल-कपड़ा-रजाई, गर्मी में गर्मी के कपड़े और रुपया तीर्थ जाने के लिये लोगों को देते थे, यहाँ तक कि कितने जो वह आढ़े रहते थे ले लेते थे, कितने पहिनी हुई आधी धोती चिरा लेते। ऐसी परिक्षा करते, जाड़े का ओढ़ना उतार लेते। रात भर उनकी धूनी के पास बैठे रहते, दिन में जब कम्मल मंगाया जाता तब ओढ़ते थे। ऐसी कसनी होती थी। भांग, गाँजा, चरस, अफीम, खानी पीनी तम्बाकू, फलाहार, जो मांगता सब देते थे। दो लड़की कुँआरी मरी थीं, 12 की 15 की। उनका दसवां, तेरहीं सब धूमधाम से किये। पंचौं, पंडितौं ने कहा कि कुँवारे लड़की लड़कों का यह नहीं होता। तो कहा ''यही बहाने से ब्राह्मण भोजन और महापात्रों को कुछ मिल जायगा।'' वह अपनी पत्नी या भतीजी कुँआरी का बनाया खाते थे। पत्नी मरीं तो उसका काम धूमधाम से किया। बीमार न हुए, भोजन के दो घंटे बाद यानी दो बजे दिन में शरीर छोड़ा। हम भी उनकी अरथी के साथ थे। जब उनके शरीर को जलाया गया तो सब बन्दर कुत्ते, हाथी रोते थे चिता को घेरे। जब उनका शरीर जल गया तो सब बन्दर पेड़ों पर जंगल में चले गये कि अब उनको कौन भोजन देगा? नातेदारी, भाइयों के लड़कों की शादी में नहीं जाते थे। कहते थे कि साधू-ब्राह्मण कोई गरीब आवेगा तो उसे कौन देगा? जब टहलते तो दोनों हाथ हिलाते और हँसते, कहते, "क्या भगवान की लीला होती है, बड़ा आनन्द आ रहा है।" हरदम मुसकराया करते थे। जिधर देखो, उधर ही सब भगवान के साथ देवी देवता देख पड़ते थे।

उनके पट सेवा से खुल गए थे। 80 की उम्र में शरीर छोड़ा था, तब हम 16 के थे।

जब बंदरौं को खिलाते थे तब बंदरियाँ अपने बच्चों को उनके पास रख देती थीं, तब फिर चने खाकर अपने अपने बच्चे लेकर पेड़ों पर जाती थीं। पास में बाग था, तालाब था, कुत्ते भी कई थे, वह बन्दरौं से नहीं बोलते थे, बैठे रहते थे। फिर उनको भोजन दिया जाता था। बड़ा बिस्तार है। थोड़ा लिखा है।

72. गजोधर बक्स

बजरंग बक्स के छोटे भाई गजोधर बक्स की कुछ बातैं लिखते हैं। वह मंझले थे। वह ब्राह्मणों को बहुत मानते थे। कहते थे कि हमारे पुरखा बिष्णू भगवान के हृदय में दाहिना चरण मारा था, परीक्षा किया था कि कौन सतोगुणी है। तब बिष्णू जी पास हो गए और कहा ''हमारी छाती बड़ी कड़ी है, आपके चरण बड़े कोमल हैं, चोट लग गई होगी।'' भगवान भाव में आकर चरण सोहराने लगे और आँसू आ गए। तब भृगू जी चुप हो गए। भगवान ने उनका स्वागत किया कहा ''आप हमारे कुल पूज्य हैं।'' फिर जब भृगू जी आए लौट कर, तो ऋषिन से कहा कि बिष्णू भगवान सतोगुणी हैं।

जब हमारे पुरखा ब्राह्मण को माने तो हमारा धर्म है कि हम भी मानै। इससे जो सेवा सधती है हम भी करते हैं। ब्राह्मणों को बुलाते, उनके चरण धोते, बहुत अच्छी मिठाई, दही, अचार, मीठा खिलाते। गर्मी में पंखा करते, दक्षिणा देते, झूठी पत्तल उठाते, पान देते। खिलाते समय कहते कि आप सब कम खाते हैं, और खाओ। खूब परसते। जब छक जाते तब भी कहते, और खाओ-खाओ।'' तब सब उठ भागते, तब हँसने लगते कहते ''वाह भाई! ऐसे खाया जाता है।'' अपने तीनों लड़कों की शादी में, छोटे भाई के लड़कों की शादी में जाते तो वहाँ गरीब आदमी थोड़ा-थोड़ा साग कई किस्म का करीब पाव भर-आलू, घुइयाँ या भांटा, कटहल, कुमढ़ा, सेमी, लौकी, तरोई, चौराई, पालक, मरसा, मटर, बेर जो होता बहुत लोग लाते। उनको रुपया देते, परजन को देते, जो उधर के परजा होते भाड़ा दिलाते, रुपया लुटाते। जब घर आते तो सब परजन को, नातेदारों को बिदाई देते। भोजन अपने हाथ बनाते थे कंडों के अरहा पर, हंडी में दाल-चावल साग छोड़कर। रखवारे देखते रहते थे कि ऊपर से चिड़िया न निकले, नहीं तो अशुद्ध हो जायगा। तब हंडी उठाकर जमीन पर छोड़ देते तो फटकर एक टुकड़ा अलग हो जाता। उसमें आधा सेर घी रखकर, भोजन सानकर आगी में छोड़ते। पाँच-सात कौर खाते। वही पिंडा बनाकर मूँह में फेंक देते। हाथ मूँह में न लगाते, जल पी लेते, जै बार थूकने उठते तै बार नहाते।

सवा सौ रुपये के ऊपर सालिग्राम की मूर्ती रखकर अश्नान कराते। देवताओं को जब जल चढ़ाते तो डेढ़ सौ घड़ा से कम न चढ़ाते। कहार भरते भरते थक जाते थे। एक ही कहार भरता था।

हमारा गाँव इसरवारा इनकी गढ़ी से एक कोस है। घोड़े पर सवार होकर चलते थे। कोचवान घोड़े की बागडोर साध लेता था। दोपहर भोजन करके चलते, शाम को पहुँचते, थोड़ी देर ज़मीन पर बैठते। जो ब्राह्मण होता उसके चरन छूते। बाकी और सब जाति से जै राम जै राम करते। फिर चल देते, देर में पहुँचते। लम्बा अंगरखा बन्द दार पहनते, दुलंगी धोती पहनते, सर में एक कपड़ा बांध लेते। जब कभी बीमार होते तो 16 कोस सीतापुर है वहाँ से सिविल सर्जन को लड़के या भाई लाते, तब कहते "इनकी फीस दे दो, दूर खड़े रहें हमारे पास न आवैं। यह गंदी चीजें खाते हैं। दवा हम नहीं करैंगे।'' डाक्टर लोग उनका हाल जानते थे। फीस दिला देते। कभी किसी से शरीर न छुआया न दवा खाई। वैसे ही ठीक हो जाते थे। 75 की उम्र में शरीर छूटा।

73.श्यामा माई हठयोगी (250 वर्ष) की और एक रुस्तम हठयोगी (400 वर्ष) की कथा

यह बहराइच में थे। श्यामा माई वैश्य जाति की थीं। रुस्तम मुसलमान थे। यह दोनों संगी थे। कभी कभी आते थे। एक बार अरसा हुआ, तब महाराज जी थे, कुछ सुस्त थे, तो श्यामा आईं, उजेरी रात थी। अन्दर प्रवेश हो गईं, साँवली थीं, मालूम होता था कि 25 साल की हैं। एक सफ़ेद धोती, सफेद सलूका आधी बाँह का था, हमसे कहा कि एक हठयोगी कई जुगों के आए हैं। हमने कहा ''यहाँ लाओ'' तो कहा ''यहाँ वै छोटे रूप से आ सकेंगे। वह करीब 40 हाथ के होंगे।'' तो हम लोटा डोर लिया, शायद महाराज जी पानी पीवेंगे, तो लेते आवेंगे। महाराज ध्यान में पड़े थे। हम श्यामा के साथ गए तो वै कुआँ पर जहाँ चरखी उत्तर मूंह लगी थी, सर धरे थे और यहाँ के खम्भों के बीच पत्थर पर पैर धरे थे, उठ कर खड़े हो गए। सर बहुत बड़ा था, लँगोटी लगाए थे, सर के बाल सुनहरे थे, दाढ़ी थी, आंखैं लाली लाली थीं।

एक झोरी बहुत बड़ी थी, उसमें दो गाड़ी मिट्टी आ जाय। शरीर में भभूती लगी थी। शरीर चमकता था। उनके शरीर में हमारा शरीर देख पड़ता था जैसे शीशे में देख पड़ता है। हमने दंडवति किया। बड़े शान्त थे। हम उनकी बांह की मुटाई भर थे। हमने कहा ''हठयोग से आयू बढ़ती है। एक दिन की समाधि से 10 दिन की बढ़ती है। 21600 स्वाँसैं रोज़ निकलती हैं साधारण रीति से दौड़ने से, मेहनत से अधिक निकलती हैं। समाधि से अन्दर रुक जाती हैं। जो खेचड़ी मुद्रा लगाकर बैठ गए या लेट गए उन्हें गगन से अमृत जीभ को मिलता है। उसी से अजर अमर हो जाते हैं। यह समाधि संकल्प से होती है। जितने दिन की लगाओ उतने दिन पर उतरती है। अगर समाधि सिद्ध हो गई तो आजन्म के लिए लगाओ तो न उतरेगी तुम्हारे उतारे। जो जानता है सो उतार सकता है। समाधि सिद्ध होने पर तमाम सिद्धी प्राप्त हो जाती हैं। मंदिर मकान रच देगा, रुपया अशर्फ़ी, जवाहरात प्रगट कर देगा, सब जीवौं का रूप धारण कर लेगा, हर तरह के भोजन प्रगट कर देगा, कटे को जोड़ देना, सड़ी लाशों को सजीव कर देना आदि, पर इस हठ योग से भगवान की प्राप्ती नहीं होती। सेवा, सुमिरन, पूजन, कथा, कीर्तन, पाठ तन मन प्रेम से करने से भगवान मिलते हैं।''

हमने कहा कि 'सीताराम सीताराम जप के अजर अमर हो गए, राधेश्याम राधेश्याम जप के, रमा बिष्णू रमा बिष्णू जप के, गौरी शंकर गौरी शंकर जप के, राम राम जप के, श्री राम जप के, हरे राम जप के, जय जय राम जप के, हरे कृष्ण जप के, हरे बिष्णू जप के, काली, दुर्गा, शारदा, गणेश, हनुमान, भैरव जप के, पाठ से, सेवा से, जिसका जिस नाम से प्रेम हो। सीताराम जी, राधे-श्याम जी, लक्ष्मी नारायण सब देवतन को सब कुछ देने का अधिकार दिए हैं। हम भी बहुत देख चुके हैं। बिना हठ योग किए अजर अमर हैं।, उन्होंने कहा ''बात सही है। भगवान सर्वशक्तिमान हैं। उनकी लीला वही जानते हैं। जिनके जौन संस्कार में होता है वही उसे नीक (अच्छा) लगता है और वही वह कर पाता है। सुनो, इस शरीर पर कितने रंग चढ़े। जब तक वै रंग रहे अपने रंग में रंगे रहे। बालपन खेल में, फिर पढ़ने में, गाने में, बजाने में, लड़ने में, विषय में। बुढ़ापे में लगे भजन में। हमसे कहा "बहुत ठीक है।" फिर कहा "कुछ पावोगे।" हमने कहा ''कुछ इच्छा नहीं है।'' जब हमने

दंडवति किया तब सर पर हाथ धरा। शरीर महकता था। ऐसा शांत योगी एक मिला था और नहीं मिले। फिर अन्तरध्यान हो गए। एक घंटा खड़े खड़े बात हुई। श्यामा माई भी खड़ी-खड़ी सुनती थीं। हमसे कहा ''आपने देखा, कैसे सुन्दर योगी थे?'' हमने कहा कि ऐसे कोटिन में कहीं एक होते हैं। कुछ पुराना हमारा सुकृत था जो दर्शन हो गए।

74. महात्मा गांधी जी से भेंट, राम मंत्र पर चर्चा एवं उनका महाप्रयाण की यात्रा का प्रसंग

जब जलयान बाग पर आए थे तो संग में शौकत अली, मोहम्मद अली थे। बहुत लोग थे फैजाबाद अयोध्या के। तब हम भी गए थे। उस समय मोहम्मद अली का उपदेश द्रौपदी पर हुआ था देर तक। दो घंटे बाद हम लौट आए थे। रात में बैठे थे तो गांधी जी तथा दो सन्त और बैठे थे हमारे बुरजे में। राम मंत्र पर बात हुई। एक ने कहा कि राम मंत्र में ओँकार लगा कर जपा जाय तो ठीक है। हमने कहा कि 'महाराज जी कहते थे कि राम मंत्र षड़ाक्षर है। उसमें ओँकार न लगना चाहिए। शंकर जी ने बताया है।' तो दूसरे ने बताया कि ओँ क्लीँ लगा कर जपा जाय तो फिर हमने कहा कि ओँ क्लीँ लगा कर जपने से धन, जश (यश), पुत्र, संकट पर चलता है। ऐसा महाराज जी बताते थे।'' तो कहा, ''ठीक है।''

"महाराज जी यह भी बताते थे कि मंत्रराज षड़ाक्षर तारक असुर को मारने के लिए पारबती के गर्भ में आए। जब पैदा हुए और सयाने हुए तो तारक असुर को मारा। उसकी मृत्यु षड़ानन जी से ही रही। और कोई उसे मार नहीं सकता था।" और कोई बात न हुई। फिर हमने दंडवति किया। सब अन्तर हो गए।

जिस दिन गांधी जी के गोली लगना था उस दिन हमारा शरीर सुस्त होने लगा। जब गोली लग गई तब हमारा शरीर बहुत सुस्त हुआ। रात में जूड़ी बुखार हो गया। भोर समय नहीं याद है उनकी यात्रा देखा, तब शान्ती हुई।

एक बहुत बड़ा विमान आया। उस पर राम जानकी, राधेश्याम, विष्णु लक्ष्मी, गिरिजा शंकर बैठे थे। आ कर गाँधी जी का दिव्य शरीर निकाल, विमान पर ले चले। कैलाश में गिरिजा शंकर उतर गए। छोटे

बैकुंठ में बिष्णु उतर पड़े, गोलोक में राधेश्याम उतर पड़े, राम जी महारानी जी साकेत लिहे चले गए। ऐसी यात्रा हमैं देखने में कभी नहीं आई। इस से मालूम होता है कि कई तरह की यात्रा होती हैं। हमने भी कई तरह की यात्रा देखा है। तब हमारे चित्त में शान्ती आ गई। भगवान की लीला भगवान जानैं।

पुराने बदले चुकाना अवश्य पड़ता है। त्रेता में रामजी ने बाली को एक बाण से मारा। द्वापर में बाली बहेलिया हुआ और एक बाण से कृष्ण भगवान को मारा। भीष्म जी ने 101 जन्म पहले एक सर्प को लाठी से मारकर बबूल की काँटेदार झाड़ी में फेंक दिया था। काँटे उसके सारे बदन में बिंध गए थे। उसने 52 दिन तड़पकर शरीर छोड़ा था। भीष्म जी भी 52 दिन बाणों से बिंधे पड़े रहे, तब शरीर छोड़ा। गाँधी जी ने एक कष्ट से तड़पते हुए बछड़े को गोली मरवा दी थी। इसी जन्म में स्वयं भी गोली से मारे गये। राजा चित्रकेतु के यहाँ चीटियों के 400 अंडे कंडे में जले थे। वही 400 राजा की रानियाँ हुई और राजा को ज़हर दे मारा।

75. महन्त सीता सरन

दरबार लाल साहेब (कनक भवन के अन्दर)

इनका हाल श्री महाराज जी बताते थे। इनका प्रेम महारानी जी से था। अवध में एक मेहतर था महारानी जी का प्रेमी। उसके पट खुल गये थे। उसने सुना कि यहाँ एक साधू सीता सरन हैं जिनका कुछ प्रेम महारानी जी से है। दर्शन करने आया। भगवान की कृपा से सीता सरन बाहेर निकले। उससे पूछा ''तुम कौन हो?'' उसने कहा ''मैं महारानी जी का मेहतरि हूँ।'' तो सीता सरन ने उसकी साष्टांग दंडवति किया। उनके पट खुल गए। तब सीता सरन ने हाथ जोड़कर कहा ''आप हमारे यहाँ से भगवान का परसाद रोज़ ले जाया करो। आपकी दया से हमारा सब काम हो गया। हम इतने दिन से पूजा पाठ जप करते रहे कुछ न भया।'' उसने कहा ''भगवान के दरबार में दीन का आदर है जो अपने को सब से छोटा मान ले, जीवौं पर दया करै। बिना दीनता के शान्ति नहीं मिलती। भगवान के प्रेमी जितने भये हैं वह इसी रीति से चलकर महा सुखी हो

गये हैं।'' अब वह रोज़ समय पर आता, भोजन ले जाता। सीता सरन रोज़ दंडवति करते। महारानी जी ने सीता सरन से कहा कि उसका प्रेम हममें इतना है कि हम उसके साथ हर समय रहती हैं। उसे खाने पीने का कोई शौक नहीं है, तुम्हारा प्रेम देख कर वह ले जाता है।

सब से पहले महाराज शीलनिधि, इनके शिष्य महन्त सीता सरन, इनके शिष्य महन्त राम दास, इनके शिष्य बर्तमान महन्त जानकी जीवन सरन हैं।

महन्त सीता सरन बड़े महाराज श्री स्वामी रघुनाथ दास जी के समकालीन थे। सीता सरन का शरीर 100 बर्ष के ऊपर छूटा।

76. अवध राम राज सिंह

अवध राम राज सिंह राम बाग, सरजू के किनारे उस पार एक गाँव में जिमींदार के यहाँ पहरे पर नौकर रहे। 5 रु० माहबार पाते थे तब गेहूँ 1 रु. का 2 मन था। यहाँ से 20 कोस है। वै राम राम मन ही मन करते थे। किसी से मंत्र न लिये थे। जब घर जाते तो कहकर नहीं जाते। भगवान उनके रूप से पहरा देते। एक दिन ठाकुर से कहा ''तुम्हारे घर कालिका भगौती हैं, तुम डरौ नहीं, तो हम बुला कर दर्शन करा दें।'' ठाकुर ने कहा ''डरैंगे नहीं'' तो बुलाया। ठाकुर ने दंडवति किया। भगौती फिर अन्तर हो गईं। तब ठाकुर ने कहा ''अब आप भजन करैं, पहरा न दें, हम आपकी सेवा करैंगे।'' तो ठाकुर से कहा ''सरजू जी के किनारे एक झोंपड़ी डला दो। एक बार भोजन भेज दिया करौ।'' ठाकुर ने सब ठीक कर दिया। रोज भोजन जाता रहा, जाड़े, गर्मी के कपड़े भेजते रहे। सात दिन पर दर्शन करने ठाकुर जाते रहे। एक दिन ठाकुर ने कहा ''आप कौन भजन करते हैं हमको भी बतावो'' तो कहा, ''हम तो राम राम करते हैं, हमारा इसी से प्रेम है।'' ठाकुर भी करने लगे। तब कहा ''भगवान जानैं तुम जानौ दुनियाँ न जानै तब फलीभूत होता है। अपनी रात्रि का इन्तजाम ठीक राखौ, जीवौं पर दया करौ, जो कोई दरवाजे पर आवै श्रद्धा माफ़िक (अनुसार) सतकार करौ तब सुखी हो जाओगे।'' ठाकुर ने वचन सुन कर हृदय में रख लिया। राम राम करने लगे, सेवा सतकार करने लगे। कुछ दिन बाद देखने सुनने लगे। 60 की उम्र में नौकरी किया 14 बर्ष तक। तब ठाकुर से कहा ''हम

84 की उम्र में चले जायेंगे। हमारी समाधि सरजू के किनारे बनवा देना। वहाँ कुछ रोज़ गरीबों के लिये चढ़ जाया करेगा और सरजू जी एक हजार बर्ष बाद समाधि काट देंगी। तुम चार मूर्ती लेकर 3 बजे आना। सरजू में शरीर को प्रबाह कर देना।'' ठाकुर समय पर पहुँच गये आदमी लेकर, टिकठी, कपड़ा, फूल माला। तब ठाकुर से कहा ''राम राम करौ। राम जानकी, राधेश्याम, बिष्णु कमला, शंकर जी पारवती जी, गनेश जी, हनुमान जी, दुर्गा जी, काली जी, सब देवी देवता आ गए, विमान आ गया, हम जाते हैं।'' राम शब्द कह कर शरीर छोड़ दिया।

ठाकुर ने सरजू लाभ कराकर, नहाकर घर गए। फिर उनका भंडारा बड़े धूम धाम से किया। ठाकुर जब ज़िन्दा रहे, सात दिन पर समाधि के दर्शन को जाते थे, पैकरमा करते, दंडवति करते। बहुत अच्छे भक्त हुए। हम थोड़ा लिखा है। बहुत विस्तार है।

77. बाबा कमल दास अहीर (अपढ़)

विद्या कुण्ड, अयोध्या

बाबा कमल दास अहीर के बालक थे। विद्या कुण्ड मन्दिर में रहते थे। भंडार के बर्तन मलते, पानी भरते, चौका चूल्हा साफ़ करते। अपना राम मंत्र, जानकी मंत्र जपते, फिर मन ही मन राम राम किया करते। सूर्य न उदय होते, क्षीरेश्वर में झाड़ू लगा आते। कई साल हो गए नियम करते करते। एक दिन शंकर पारबती प्रगट हो गए कहा ''क्या चाहता है?'' तो कहा ''महाराज महारानी के दर्शन।'' शंकरजी पारबती जी ने कहा "अब तेरा मन निर्मल हो गया है, दीनता आ गई है, तेरे सामने हर समय महाराज महारानी रहेंगे।'' यह कहकर अन्तर हो गए। फिर कमल दास के सामने छटा छबि सिंगार की शोभा महाराज महारानी की छा गई। एक दिन कनक भवन दर्शन को गए तो महाराज-महारानी ने कहा ''तुम रोज़ जब तक शरीर काम दे, शंकर जी के यहाँ झाड़ू लगाया करो और कभी-कभी यहाँ आया करो।'' तब से फिर झाड़ू का नियम न छोड़ा। कनक भवन महीना में चार बार जाते थे। क्षीरेश्वर में रात को बड़े बड़े सिद्ध आते हैं दर्शन करने।

110 बर्ष की आयू में शरीर छोड़ा। उनका पद कनक भवन के वर्णन का है।

पद:– राम सिया की झाँकी बाँकी कनक भवन में राजि रहे हैं ।।1।।
निरखत बनै कहै छबि को कवि मनसिज रति बहु
लाजि रहे हैं ।।2।।
बाजत साज गान नित प्रति हो मुद मंगल तहँ छाजि रहे हैं ।।3।।
कमलदास कहैं दर्शन करिये सब में यही विराज रहे हैं ।।4।।

78. बाबा मुरारी दास

तुलसी बाड़ी, अयोध्या

यह चार गुरु भाई थे–प्रह्लाद दास, तुलसी दास, रघुनाथ दास वैश्य जो विश्राम सागर लिखे हैं। मुरारी दास का प्रेम रामजी के बिवाह में था। इनके भक्त कुर्मी हरदोई ज़िले में धनी थे। वे लोग कहा ''महाराज! मंदिर बन जाय। हमारे यहाँ शीशम के पेड़ बहुत बड़े बड़े हैं, आप चलकर देख लें। फिर हम लोग कटाकर, चिरा कर सब सामान ले आवैं।'' संग गए, देखा तो कहा ''पेड़ तो बहुत भारी भारी हैं, सब हरे हैं। उनको काटने में बड़ा पाप है।'' तब लोगों ने कहा ''फिर मंदिर कैसे बनेगा बिना कटाये। ऐसा तो सनातन से चला आता है। गोस्वामी जी ने कहा है– ''सन्त विटप सरिता गिरि धरनी। यह सब पर-उपकार के लिये हैं।" तो बाबा ने पेड़ों से हाथ जोड़कर कहा "हम हरे पेड़ न कटवावैंगे। जिसको अवध बास करना हो वह चले।" यह शाम को कहा। सुबह फिर सब देखने गए तो कई पेड़ मुरझा गए ज़रूरत भर के लिए। फिर वह सब काटे गए। किवाड़ा, दरवाजा, झांप, कड़ी-तखता-चौकी बनकर आ गए। ईंटा चूना सब आने लगा, मंदिर बनने लगा, कुवाँ बना, सब तैयार हो गया। ऊपर की डारैं जलाने के काम आ गईं।

भगवान पधर गए। इस हिसाब से पेड़ सूखे थे कि लकड़ी फ़ाजिल (फालतू) न बची। राम जी के बिवाह के दिन खूब उत्सव किया, गाना सुनाया। सब लोग भोजन कर चुके तो कहा ''अब हम जा रहे हैं।'' बड़ी प्रसन्नता से चले गये। शायद 90 की आयू में गए हैं। महाराज जी बताते थे।

79. जगन्नाथ दास जी के गुरु

जालौन

जालौन ज़िले के एक गाँव में जगन्नाथ दास जी के गुरु (बद्री दास) रहते थे। उनके एक लड़का था और उनकी पत्नी थीं। वह घर पर कह कर आए कि हम अवध जाते हैं, तुलसी चौरा पर एक साल मासपरायण मानस सुनाकर आवेंगे। यहाँ आए। आधा सेर कच्चा गाय का दूध दोपहर को भगवान का भोग लगाकर पाते थे। जब एक साल हो गया तब गोस्वामी जी प्रगट हो गए कहा ''इसका अर्थ जो जान जाय उसके पट खुल जाँय। फिर उससे अनर्थ न होगा। जो कोई तुम से पूछे उसको बता देना कि जितनी देर मन लगे उतनी देर पाठ करै।'' फिर घर गए। जो पाठ पूछता था उसे यही बताते थे, ''हमें गोस्वामी जी की आज्ञा है कि जितनी देर मन लगे उतनी देर पाठ करो।'' उनके पट खुल गए थे। उनके दो भक्त सिद्ध हुए थे–प्रह्लाद दास जी तथा ब्रह्मानन्द जी। जगन्नाथदास जी उनसे मंत्र लिये थे। बद्री दास जी का शरीर छूटने का समय करीब था तो भक्तौं से कहा ''जमुना के करीब पीपल का पेड़ है वहीं समाधि बना देना। 12 बर्ष बाद जमुना जी समाधि काट ले जायँगी।'' वैसा ही किया गया। फिर समय पर जमुना जी काट ले गईं।

जगन्नाथ दास जी की पत्नी बीमार भईं। कानपुर ससुराल में थीं, किशुन लाल पंडित की बहन थीं। यहाँ लाए। दवा कराते थे। एक दिन भगवान से प्रार्थना किया कि आप इनको अच्छा करना हो तो अच्छा करो नहीं तो शरीर छुटा दो तो हम आपका भजन करैं। फिर दूसरे दिन शरीर छूट गया। गंगा जी के किनारे जो मरघट है वहाँ उनका दाह किया गया। सब कार्य ठीक रीति से हुआ। फिर घर गए। गाँव का नाम निहोरा है। रुपया चौबीस हजार था। सब परिवार के ब्राह्मण गरीब थे उनको दे दिया। एक हनुमान जी का मंदिर बनवाया था। उसमें हनुमान जी को रामायण सुनाते थे। ताखे में एक छेद था। एक मूस रोज़ आकर उसमें बैठता था। कथा बन्द होती तब चला जाता। फिर जगन्नाथ दास जी ने हनुमान जी का अनुष्ठान किया। कहा ''हमारे गुरु का स्वर्गबास हो गया है। हमैं ऐसा गुरु मिलै जिससे हमारी गती हो जाय।'' तब हनुमान जी ने स्वप्न दिया, कहा ''जाओ! एक सन्त अवध में हैं। सिर्फ लंगोटी

लगाते हैं, गोरे-गोरे दोहरी देह के हैं। उनका राम नाम सिद्ध है। उनके सामने राम जानकी की झांकी रहती है, जाड़ा गर्मी नहीं लगता, वीर्य उर्द्ध (उर्ध्व) है, जाड़े में पसीना निकलता है, एक कमंडल लौकी का हाथ में रखते हैं। मनीराम की छावनी में कथा सुनने जाते हैं, फिर हनुमान जी होकर राम घाट प्रह्लाद दास के मंदिर में रहते हैं। उनका नाम परमहंस बेनी माधौ दास है।'' जगन्नाथ दास घर से चल दिये। सच्ची लगन थी। जब स्टेशन पे उतरे तो लोगों से पूछा। उन्होंने बताया कि तपसी जी की छावनी के आगे करीब ही प्रह्लाद दास का मंदिर है। उसमें रहते हैं। जब तपसी जी की छावनी के पास आए तो महाराज हनुमान जी के यहाँ से आ रहे थे। देखा तो पहचान गए। दंडवति किया। महाराज के साथ आश्रम पर आये, आसन धरा। फिर डोलडाल गए, शुद्ध होकर सब हाल बताया। महाराज उनका प्रेम देखकर मस्त हो गए। फिर उनको ध्यान बताया, जप-पाठ की बिधि बताया। फिर महाराज की सेवा के लिए रुपया भेजते थे। हनुमान दास मंदिर के महन्त थे, वै ही भोजन बनाते थे। फिर हनुमान दास जी के मंदिर की महाराज जी के ज़रिये से तरक्की खूब हुई। कई साल रहे। जब वहाँ अधिक भीड़ होने लगी तब राम घाट राम किंकर दास जी के मंदिर के पीछे एक कमरा बनाया गया 12 हाथ लम्बा 7 हाथ चौड़ा। ईंटा गाड़ा से जोड़ा गया। फिर जब हम आये तो उसे मिट्टी से भीतर बाहेर लेसा। अन्दर ज़मीन बराबर करके ठीक किया। कच्चा मकान कच्ची ज़मीन गरमी में ठंढाती है, जाड़े में गरमाती है। पक्की ज़मीन मकान गरमी में गरमाते हैं, जाड़े में ठंढाते हैं। फिर दो चबूतरा एक आगे एक पीछे पाटा ऊँचा जिसमें अन्दर पानी न जाय नहीं तो बरसात में पानी अन्दर जाता क्योंकि जमीन नीची थी।

जो कोई भक्त आते रहे वह प्रह्लाद दास के मंदिर में ठहरते थे। जगन्नाथ दास के परिचय के लोग बहुत थे। जगन्नाथ दास ने तन-मन-धन से महाराज की सेवा की है।

जब महाराज एक मास के लिए ऋषीकेश गये तो हरद्वार में एक मास का भोजन का सामान खरीदा गया। वह चुका नहीं, एक मास हो गया। तब 14 मूर्ती साधू आ गये तो महाराज ने कहा ''कनस्टर उलट दिया जाय। सात मूर्ती साथ की थीं, चौदह बाहेर की थीं तब भी न चुका।

एक मुट्ठी दाहिने हाथ से निकाले अन्नपूरना लक्ष्मी का नाम लेकर। यही हाल प्रयाग के कल्पबास का हुआ। सात मूर्ती महाराज के साथ रहीं, और आ जाती थीं।

आगे ऋषी लोग सेवकों को बताते थे कि शाम को 5 मिनट अन्नपूरना देवी, लक्ष्मी जी का नाम लेकर दिया बाल दे, हाथ जोड़ दे। सुबह अश्नान करके अन्नपूरना, लक्ष्मी जी का नाम लेकर दाहिने हाथ से सामान निकाले तो 10 दिन का सामान 15 दिन का हो जायगा।

80. लाला गया प्रसाद

इलाहाबाद

थान गाँव के लाला हजारी ने इलाहाबाद के लाला गया प्रसाद का हाल बताया था। हजारी लाल इनकी सेवा में रहे थे।

लाला गया प्रसाद, इलाहाबाद निवासी, तीन भाई थे। सरकारी नौकरी करते थे। कुछ समय बाद इनके वैराग्य हो गया। घर से चल दिये। एक काली कमरी को चीर कर बीच में गले में डाल लिया। एक हंडी लेकर घूमने लगे। जो कोई मिले उससे कहते थे ''भाई, सीता राम कहो।'' घूमते घूमते थान गाँव आये। वहाँ एक आदमी के दरवाजे पर गए। शायद वह ब्राह्मण था। दो भाई थे। आपस में झागड़ा हुआ था इससे दोनों क्रोध में बैठे थे। यह एक से बोले, ''भाई, सीता राम कहो।'' तो वह उठकर मारने लगा। कहा, ''साले! सीता राम कहते हैं।'' बहुत मारा, बेहोश हो गए। कुछ लोग आए देखा तो वह बैठ गये। जब होश हुआ तब लोग उनको, एक बट का वृक्ष बहुत पुराना था, कोई महापुरुष हुए हैं उनके नाम पर समाधि पर लगाया गया है, वहाँ ले गए। उनका मन प्रसन्न हो गया। लोगों ने छप्पड़ छा दिया। उसमें रहने लगे। बरसात में बाढ़ आ गई। बड़ी नदी, चौका नदी का मिलान हो गया। पानी का बड़ा बेग था। वह बह गए। इस बात का हल्ला हो गया। राजा सूर्य विक्रम सिंह ने सुना। नाव दौड़ाई गई। उस पर उठा लाए। पानी से शरीर सरदी खा गया था। धीरे धीरे बोलते थे। कहा ''हम इसी जगह रहेंगे।'' तो राजा ने मिट्टी पटाकर ऊँचा करा कर बंगला छवा दिया। राजा के यहाँ से दो सीधे (भोजन की कच्ची सामग्री) रोज़ आने लगे। लाला हजारी उनका

काम कर देते थे–पानी भर देना, आटा भिजा कर रोटी हाथ से बना देना। गया दास रोटी अपने हाथ से सेंकते थे। दाल बटुली में चुरती। उसे उठाकर कहते ''तुम चुरती काहे नहीं हो?'' हाथ से दाल चुरते में डुलाते और हंसते। जब बन जाता तो दाल थाली में धरते, रोटी गिनते और हम (हजारी) से कहते ''देखो, दुर्गा दो रोटी उठा ले गईं।'' फिर कहते देखो, "धर गईं।" फिर हंसते। भोजन करके लेटते तो हम उनके पैर दबाते, कहते, "हमको भी कुछ बताओ" तो कहते ''हम तो राम राम करते हैं और कुछ नहीं जानते हैं। तुम को सन्तौं के पद सुनावैं।'' गोस्वामी जी के, सूर जी के, कबीर जी के, रैदास जी के, मीरा जी के पद सुनाते। बहुत संतौं के याद थे। फिर उठकर बैठ जाते। हम से कहे ''हमैं 40 वर्ष हुए इस जंगल में आए, तब से खड़े नहीं हुए।

एक बार चगदहा गाँव में एक सिद्ध संत का शरीर छूटा तो हज़ारौं साधू, ब्राह्मणों का भंडारा था। सबने कहा "आज परमहंस गया दास न आवैंगे तो हम सब भोजन न करैंगे।" हमारे कान में आवाज़ आई। फिर एक मूर्ती आए और हमसे कहै कि हम राजा के पास जाते हैं, पीनस पर तुम को ले चलेंगे। राजा के पास जाकर हाल कहा। राजा ने पीनस भेजा। गया दास को ले गए। गया दास जी ने सब के हाथ जोड़ा और कहा "वाह गुरु साहेब, राम राम। अब आप सब परसाद पावैं। आप सबका प्रण भगवान ने रख दिया, हमैं भेज दिया, हमैं भी सब के दर्शन हो गए।" फिर कहा, "वाह गुरु साहेब, हम अब जाते हैं।" बस पीनस में बैठ गए। कहार आश्रम पर उतार कर पीनस राजा के यहाँ ले गए। हमारे यहाँ से 10 कोस होगा।

हम पता लगाया करते थे कि कहाँ पर साधू रहते हैं। हम 15 की उम्र से उनके पास जाया करते थे। तुलसी के माला बनाते। गाय के घी में तर करके बाँटते थे गांठी लगाकर। जो माँगता उसे देते थे। एक बार परमहंस के पास ले गए, तो देखा, और उससे राम-राम करने लगे, फिर कहा ''राम नाम के बीच बीच में गाँठ न लगाना चाहिये। जो पहना जाता है उसमें गाँठ लगती है। जप करने वाली माला में गाँठ नहीं लगती है। वह माला जप माली में रखकर जपा जाता है। उसे गोमुखी भी कहते हैं। माला कोई देखै नहीं।'' हम पहले घर पर नौकरी पर वैसे ही जपते थे।

तब से हमने जप वाले मालौं में गांठी लगाना बन्द कर दिया। जो कोई पूछता था तो कहते थे कि परमहंस गयादासजी ने हमैं मना किया है। हम जो पहनने वाला देते हैं उसमें गाँठी लगाते हैं।

जिन के हाथ का पानी पिया जाता है उनके यहाँ से पूरी आती थी। जो घर के सब आदमी प्रेम से बनाकर भेजते थे तो ले लेते थे। अगर कोई घर का अरसाये तो बापस कर देते थे, कहते, "भगवान न पावैंगे। एक चाहता है, और नहीं चाहते। उन सबका हिस्सा है, इससे भगवान न पावैंगे।"

उनके पास साग, फल, रुपया, पैसा आता था तो साग फल अलग धरा रहता और रुपया पैसा अलग रहता। जो कोई दर्शन को आते गरीब तो उनको साग, फल, रुपया, पैसा देते बराबर। रखते न थे। उसी जंगल में डोलडाल जाते, डोलडाल में बालू छोड़कर गोला बनाकर टटिया के किनारे रख देते। इस जगह एक हाथ लम्बी चौड़ी टटिया की खिड़की बनी थी। उस बालू के गोला को लोग बाहर धर देते थे। जब अधिक हो जायँ तब उसी जगह पाट देते थे। उन का मल-मूत्र गंधाता नहीं था। हाथ पाँव शुद्ध करके, दातून करके, धोती बदलते थे। धोती सलीते की मोटी पहनते थे। धोती हज़ारी धोकर सुखा देते, बरतन माँज देते। हज़ारी से कहते ''तुम अपने मतलब भर को रुपया, पैसा, फल, साग ले लिया करौ। फ़ाज़िल न लेना। तुम ग़रीब हो। भगवान के यहाँ हिसाब लिखा जाता है।'' वैसे ही हजारी करते थे।

छिन छिन भर पर हंसते थे। हम ने कहा ''आप दिन में कई बार हंसते हो।'' तो कहा ''भगवान राम जानकी, राधे श्याम, लक्ष्मी नारायण, शंकर पारबती, गनेश, षटमुख, सरस्वती, भरत-माण्डवी, लखन-उर्मिला, शत्रुहन-श्रुति कीर्ति, चतुरानन शारद, हनुमान जी, काली, दुर्गा, भैरौं, बीरभद्र और तमाम देवी देवता, राग रागिनी गान बजान करते हैं और भगवान कृष्ण, सखा सखी, रहस होता है तो बीच बीच में जै जै कार होती है, तब उसमें बहुत आनन्द में कितने देवी देवता प्रेम से ताली बजा बजाकर कूदते हंसते हैं। रात में बहुत लीला होती है। हमारे पास कितने बैठते हैं, लेट कर शरीर सोहराते हैं, कोई कोई गुदगुदाते हैं, कोई कहते हैं 'कुछ खावगे।' हम कहते हैं 'एक बार हम भोजन करते हैं।'

जब घर में भाई मर गए तब ग़रीबी आ गई। पंडित ने लड़के से कहा ''उनका जथा शक्ति कुछ दसवाँ तेरहीं कर दिया जाय,'' शायद

कुछ बढ़ती होने लगे। जब दोनों भाइन का हो गया तब इनका भी करने लगे, तब शब्द होने लगा ''हम-हम का''। पर कोई समझे नहीं और संस्कार पूरा कर दिया। भाई का लड़का 60 बर्ष का था उसे स्वप्न में किसी ने कहा ''गया प्रसाद साधू ज़िन्दा थान गाँव में हैं, जिला सीतापुर है। तुम जाओ देख आओ।'' तो वे आए। तब परमहंस ने कहा ''तुम तो हमारा दसवाँ-तेरहीं सब कर दिये।'' वह बोले कि हम नहीं जानते थे कि आप अभी ज़िन्दा हैं। पंडित के कहने से तीनों भाइन का दसवाँ-तेरही की गई।

दो माह रहे। तब बाबा ने कहा कि अब तुम घर को जाओ वहाँ का काम संभालना और राम राम करना। धीरे-धीरे सब घर का काम ठीक हो जायगा। भगवान हर काम का समय बाँधे हैं। फिर दंडवति करके घर चले गए।

परमहंस एक माह पर बाल बनवाते थे, तब सिर से नहाते, जनेऊ बदलते थे। गरमी के मौसम में गरमी के कपड़े, जाड़े के मौसम में जाड़े के कपड़े राजा सूर्य विक्रम सिंह देते थे। बहुत बिस्तार है। हम थोड़ा लिखा है।

उनका शरीर दोहरी देह का, गोरा खूब चमकता था। 125 बर्ष की आयू पर शरीर छोड़ा। वहीं उनकी समाधि बना दी गई। समाधि की पूजा होती है।

81. पूरन दास पासी

जब हम 18 की उम्र में घूमते थे तो गोमती के उस पार एक गाँव लोहार खेरा (जिला हरदोई) एक कोस पर है वहाँ का पासी पूरन दास, गोरा-गोरा, उम्र 40 की होगी, पंच केश रखाये, एक सहोर के पेड़ के नीचे एक झोंपड़ी में रहता था। जहाँ किसी को आता देखे तो एक टाँग से खड़ा होकर हाथ जोड़ कर कहे ''मैं जाति का पासी हूँ, आप परसाद बनाकर पावें।'' एक दूसरी झोंपड़ी में बर्तन, आटा, दाल, चावल, घी धरा रहता था। गाँव के लोग (हिन्दू) सब इन्तज़ाम किये थे। कोई सामान चोरी नहीं करता था। हम गए तो बात हुई, पूछा ''तुम अपना हाल बताओ।'' तो कहा ''हमारी धर्म पत्नी की उम्र 22 साल की थी और

हमारी उम्र 25 साल की थी। जब एक लड़का हुआ एक साल का तब हमने कहा, "तुम्हारा बन्स चल गया, अब हम चारौं धाम घूमकर गोमती के किनारे भजन करेंगे।" तो उसने कहा, "बहुत ठीक है आप के भजन का आधा फल हमें मिलैगा।" खाने पीने की कमी नहीं है। खेती रही। वह उर्दू, फ़ारसी, हिन्दी पढ़ा था। गाँव के तमाम लड़कों को पढ़ा देता था। जब साधू हो गया तब भी जो लड़के पढ़ने आते थे पढ़ा देता था। इससे गाँव वाले उसे बहुत मानते थे। उसकी खेती-जुताई-बुआई सब करा देते थे, कटा पिटाकर घर धरा देते। ''आप खुशी से तीर्थ जायँ।'' गाँव में सब से मिलकर दण्डवति प्रणाम करके तीर्थ यात्रा को चल दिया। चार बर्ष घूमा। घूमकर जब बापस आया तो एक सहोर के पेड़ के नीचे बैठ गया। गाँव वालों ने झोंपड़ी छवा दी। गाँव के लोग बारी-बारी भोजन दे जाते थे। हम से कहा ''महाराज! लड़के यहाँ भी पढ़ने आ जाते हैं।'' तो हमने कहा कि 'बड़ा अच्छा है। विद्या दान हो जायगा। कोई दोष नहीं लगेगा।'

फिर हमने पूछा कि 'तुम भजन किसी से सिखे हो?' तो कहा ''नहीं, जय देव जी कृष्ण भगवान के जबरदस्त भक्त हुए हैं। उनकी बनाई गीत गोविन्द का हम पाठ करते हैं। उसी से पट खुल गये।" वह अपनी झोंपड़ी से कहीं जाते न थे। साल में एक बार नीमसार की परिक्रमा को जाते थे। बस और कहीं नहीं जाते थे।

नीमसार की परिक्रमा में बड़े-बड़े गंधर्व आते थे। वहीं पर यह गीत गोविन्द के पद सुनाते थे। गान बहुत अच्छा सिखे थे इससे जितने गाने वाले साज बजाने वाले थे इनसे बहुत प्रसन्न रहते थे। हमसे कहे ''महाराज! जिससे प्रेम हो-सेवा, सुमिरन, कीर्तन, पाठ, कथा, पूजन-जाहे से प्रेम हो उसी से पट खुल जाते हैं। गीत गोविन्द का गान बहुत बढ़िया करता था। गान से भगवान बहुत प्रसन्न होते हैं।''

बड़ा संस्कारी था। बाल सुनहरे थे, शरीर चमकता था। हमसे कहा ''जब हम गीत गोविन्द के पद का गान करते हैं तो भगवान सामने नाचने लगते हैं तब मस्ती में ऐसी दशा हो जाती है कि गला बन्द हो जाता है नेत्रों से शीतल जल चलने लगता है, पलक नहीं पड़ती। फिर जब अन्तर हो जाते हैं तब होश ठीक होता है। अब तो हरदम जुगुल जोड़ी सामने

रहती है और सब देवी देवता दर्शन देते हैं। रात में 2 बजे अश्नान करते हैं, 3 बजे से रहस होता है। अब गान बन्द हो गया। सिर्फ जो लड़के आते हैं उनको पढ़ा देते हैं। 11 पर शयन करते हैं, नींद नहीं आती है, नाम की धुनी का हा हाकार मचा रहता है। नाना प्रकार के साज़ सिर में बजते हैं, नासिका से तरह-तरह की सुगन्धैं निकलती हैं। बस देखते सुनते बनता है कहते नहीं बनता जो आनन्द है। यह आनन्द वही जान सकता जिसे भगवान जनावैं।'' बहुत बिस्तार है। थोड़ा लिखा है।

82. राम दीन लोहार

स्टेशन के बाबू ब्राह्मण टिकट बाँटते थे, रिटायर हो गये। वै रामदीन लोहार के समीप के थे। वे बताते थे कि राम दीन परिवारदार आदमी हैं, खेती है, उमर 70 की होगी। भाई से कहा कि हमैं साल में एक धोती दे देना और शाम को भोजन। हम गाँव से थोड़ी दूर पर मैदान में रह कर भजन करेंगे। कहकर चला आया, बैठ गया। शाम को भाई या लड़का भोजन दे आता है। एक मिट्टी के घड़े में पानी रखता है, एक लोटा। वहाँ करीब ज़मीन में, कुछ निचाई पर, गढ़ा खोद दिया जाता है। पानी ले लेता है। अपनी क्रिया कर लेता है। और भगवान का स्मर्ण करता है। लोग दूर दूर से आते हैं। कोई चीज़ ले जाव-फल, मिठाई, कपड़ा, रुपया-कुछ नहीं लेता है। 12 साल हो गए हैं, मैदान में रहता है। उसमें बड़ी दीनता है। मालीपुर स्टेशन से चार कोस है। वहाँ से पैदल, साइकिल का रास्ता है। उसकी रहनि, सहनि, गहनि बड़ी ही उत्तम है। देखते ही बनती है। ऐसा स्वभाव कहीं लाखों में किसी का होगा, तप की मूर्ति है। जो देख आये हैं वै हम से बताए हैं। शरीर से पुष्ट हैं।

83. पं० बली राम

एक पंडित, महाराज बताते थे कि अवध में भागवत बाँचने आये थे। अरसा हो गया। एक मुसलमान फ़कीर वली शाह आया, लंगोटी लगाये था, कमरी पास थी, सांवला, दाढ़ी केश थे। खड़ा हो गया। जब कथा में पंडित भगवान के स्वरूप का वर्णन करने लगे तब वह मस्त

होकर नाचने लगा। जब वर्णन हो गया तब पंडित से कहा कि अब आपकी कथा कहाँ होगी? पंडित ने कहा ''लखनऊ में'' पता बता दिया। वहाँ गया। अध्याय समाप्ति के बाद पंडित से कहा ''हमें वह कथा सुनाओ जहाँ भगवान के स्वरूप का वर्णन है।'' पंडित ने सुनाया तो मस्त होकर नाचने लगा। फिर पूछा कि अब कथा कहाँ होगी? तो पंडितजी ने कहा ''गोबर्धन पर।'' वहाँ गया तो फिर अध्याय समाप्ती के बाद पंडित से कहा ''हमैं वही कथा स्वरूप के वर्णन की, सुनाओ।'' पंडित ने सुनाया तो फिर मस्त होकर नाचने लगा। पंडित के मन पर बड़ी चोट लगी कहा ''हम बहुत दिनों से कथा बाँचते हैं, अन्दर से भगवान में भाव नहीं है, पैसा कमाते हैं और सब सामान घर पर देते हैं, मान बड़ाई में पड़े हैं। यह फ़कीर भगवान के स्वरूप का वर्णन सुनकर मस्त होकर नाचने लगता है।'' पंडित आसन से उठ कर फकीर के पैरों पर गिर पड़े, रोने लगे। फकीर ने उठा कर छाती से लगा कर पंडित के अंगौछे से पंडित के आँसू पोंछे और कहा ''भगवान दीन दयाल हैं। तुम में दीनता आ गई। अब तुम पंडित वली राम हो जाओ।'' बस पंडित के पट खुल गये। सब सामान छोड़ दिया। फकीर ने कहा ''अवध चले जाओ। भिक्षा करके अवध में रहना।'' पंडित सब छोड़ कर अवध पैदल आए। जो कपड़ा पहने थे वही पास रहा। जिस गाँव से निकलते थे सब लोग उनकी दशा देखकर बड़ी खातिर करते थे। अवध आए। सब लोग पहचान गए। थोड़ा परसाद एक बार पाते थे। अवध में मंदिरौं में जाते, सरजू नहाते, मुसकराया करते और कोई कुछ पूछे तो हाथ हिला देते थे। प्रमोद वन में शरीर छूटा था 98 की उम्र में। वहीं समाधि बनाई गई थी। सब लोग पं० वली राम कहते थे। फकीर का नाम वली शाह था। पंडित को शरीर छोड़े 150 बर्ष हो गया होगा।

वली शाह का पद कथा नं० 152 पर है।

84. बाबा राम सरन दास

भैंसाना, जिला सीतापुर

महीने जाड़े का था। शारदा बक्स के यहाँ दालान में पैरा बिछा था। हम बद्री दास व बाबा दुर्गा दास वहीं पहुड़े थे। रात का 2:30 या 3

बजा होगा। एक सन्त आए तो एक पद कृष्ण भगवान का सुनाया। फिर अन्तर हो गए। अपना नाम पद में कहा है। हम मूँह मूँदे थे, मूँह नहीं खोला था। किस रंग का शरीर था। सुबह बाबा दुर्गा दास से बद्री दास ने बताया। बद्री दास ने कहा, ''हमने कुछ बातें उनकी सुनी हैं, बतावैंगे। पहले उनकी कुटी पर चलौ। वहाँ गोबरधन महाराज उनके चेला हैं, औरत है, लड़की है और शायद एक लड़का बताया। वहाँ गये तो गोबरधन एक थलिया में परसाद लाए पेड़ा, बताशा, दो रुपया। पेड़ा बँटवा दिया, रुपया वापस कर दिया। वहाँ भगवान दास के माता पिता की कच्ची समाधि बनी है। दो घंटा रहे तब धनुआ लौट आये। भोजन हुआ।

दो घंटा बाद बद्री दास से कहा ''अब जो तुमने सुना है वह बाबा का हाल बताओ।'' तब वै बताने लगे–''22 की उम्र में बाबा बिन्द्रावन गये। वहाँ भगवान ने खूब परिक्षा की। अपने हाथ भोजन बनाते थे। सब बर्तन सामान बेच खाये कुछ न रहा। आधी रात में गले में ठाकुर जी बाँध कर जमुना जी में गले तक पानी में पहुँचे तब जमुना जी एक बुढ़िया के रूप में प्रगट हो गईं। जल गाँठ भर रह गया। एक हंडी जिसमें दो या ढ़ाई सेर जमाया दही था, वह दिया, कहा ''बच्चा! लौट जाओ।'' उसे लेकर चले। एक बूढ़े ब्रह्मचारी का मंदिर था। फाटक बन्द था आवाज़ दिया। ब्रह्मचारी बोले ''का जमुना जी से भेंट हो गई?'' फाटक खोला। तब सब हाल बताया। वहाँ कई मूर्ती थीं। सो रही थीं। सब को जगवाया और दही दिया। बूढ़े ब्रह्मचारी ने तब इनसे कहा ''तुम भी पाओ'' तो कहा ''पहले आप पावें उसके बाद हम पावैंगे।'' बाबा ने पाया फिर इनको दिया। सब मूर्ती पाकर छक गए। वह दही महकता था। हंडी धोकर बूढ़े ब्रह्मचारी ने रख लिया। ये रात में वहीं रहे। सुबह अश्नान करके नेम किया। कहीं के राजा ने रामायण की सभा किया। किसी चौपाई का अर्थ पूछा। कोई न बताया। ये भी देखने गए थे। सब भगवान की दया से बता दिया। राजा बहुत खुश हुआ। चरन छुआ हाल पूछा। ये सब उसे बता दिये। उसने बर्तन, कपड़ा, चारौं धाम के आने जाने का इन्तज़ाम कर दिया।

चारौं धाम गए। सब जगह दिब्य दर्शन हुए। फिर अमर कंटक गए। लौटने पर रास्ता भूल गए। करीब जंगल था। वहाँ गए तो देखा कि एक सन्त पल्थी मारे, आंखें बन्द, काले-काले बैठे थे। यह आसन धर कर

दंडवति किए तब वै आँखैं खोले और हाथ का इशारा किया। वह वहाँ गए। एक कुण्ड था उसमें निर्मल जल भरा था। लोटा लेकर जल लिया, डोलडाल गए, अश्नान किया, अपना नेम किया। भगवान का चरनोदक परसाद सन्त के पास ले गए। उन्होंने मूँह फैला दिया तब चरनोदक मूँह में छोड़ दिए, परसाद छोड़ दिया। फिर देखा कि चौका लगा है, चूल्हा धरा है, कढ़ाई में घी धरा है, पूरी बेली धरी हैं, चूल्हे में आग धरी है, लकड़ी धरी है, साग धरा है। बाबा ने इशारा किया, सब बनाया, भोग लगाया। बाबा के पास ले गए। वे मूँह फैला दिये, पाँच कौर खवाकर फिर जल पिलाया, फिर भोजन किया। बर्तन धोने का विचार किया तो बाबा ने हाथ हिला दिया। कुछ शयन किए। उठे तो देखा कि बर्तन-चूल्हा सब गायब हो गया। फिर शाम को ठाकुर जी की आरती किया। बाबा को परसाद ले गए। वै मूँह फैला दिये तो मूँह में छोड़ दिया। रात में शयन किया। 2 बजे उठे, डोलडाल अश्नान नेम किया। सुबह सालिग्राम को अश्नान करा कर परसाद चरनोदक दिया। फिर सब सामान प्रगट हो गया। फिर बनाकर, भोग लगाकर बाबा के पास गए। पाँच कौर खवाकर जल पिलाया। फिर आप पाया। फिर सब बर्तन सामान अन्तर हो गया। बाबा से आज्ञा माँगी तो वै इशारा कर दिए। आसन बाँधा, दंडवति किया और चल दिये। पीछे घूम कर देखा तो वहाँ कोई नहीं था। फिर उनको रास्ता मिल गया। अपनी कुटी पर आए।

फिर पाटन भगौती के दर्शन को गए। नवरात्रि के एक दिन पहले सुबह भगौती को दुर्गा पाठ सुनाया। भगवती ने एक हरे पत्तलौं के दोना में सवा सेर बर्फ़ी रसीली आकर धर दिया। पाठ पूरी हुई, भोग लगाया, सब पंडितों को दिया, तब आप थोड़ा पाया। 9 दिन बराबर भगौती एक दोना मिठाई रख देती थीं। भोग लगा कर सब को देकर तब पाते थे। पंडितों ने कहा ''ब्रह्मचारी जी! आप की बदौलत यह दिब्य पदारथ हमको भी मिलता है। हम सब अपने को भी धन्य समझते हैं। यह पदारथ भगौती के हाथ का आप भगवान को भोग लगा कर हम सब को देते हैं। इससे विश्वास हो गया कि हमारी सब की गती हो जायगी।'' फिर भगौती से आज्ञा लेकर दंडवति किया। भगवती ने दाहिना पैर सिर पर रख दिया। उठे तो पीठ ठोक कर कहा, ''तुम सच्चे भक्त हो। जिसके मन में द्वैत है वह भगवान के दरबार का भिखारी नहीं हो सकता।'' फिर ब्रह्मचारी

चल दिये, कुटी पर आए। एक घोड़ा राखे थे। उसको घास छोल कर खवाते, खूब सेवा करते। भगवान उस पर सवार होते थे। बड़े भाव के भक्त थे। जो कोई जाता उसे दो लड्डू परसाद देते थे।

एक दिन भगवान से कहा ''महाराज! अब उम्र 94 की हो गई है, कुछ काम सधता नहीं है। अब हमैं संसार से भेज दो।'' भगवान ने कहा ''अभी 12 बर्ष रहना पड़ेगा तब तुमको अपने पास राखैंगे।'' तो कहा ''जैसी आपकी मर्ज़ी हो वैसा हमैं भी मंजूर है। शरीर कमज़ोर है इससे कहा था।'' भगवान ने कहा ''हम सब काम का समय बाँधे हैं। तुम्हारा सब काम हो गया। तुम बहुत निरछल भक्त हो, सब देवी देवताओं से प्रेम है। भक्त को ऐसा ही होना चाहिए। भक्तों के लिये हम तमाम रूप धारण किये हैं। दूसरा कोई नहीं है। जीव की गती भाव और विश्वास से होती है।'' फिर भगवान सिर पर हाथ रख कर अन्तर हो गये।

जब समय आ गया तब विमान आया। तमाम देवी देवता आए। झंडा-पंखा-चँवर-बाजा अपसरा नाच गान जै जै करते हुए बाबा राम सरन जी को ले गए। धन्य नर शरीर है। इसी से गती होती है। ऐसे ऐसे भक्त संसार में हुए, और हैं, और हमेशा होते जायँगे। यह कर्म भूमि है। यहीं की कमाई शुभ से गती होती है और अशुभ कमाई से नर्क होता है।

पद:- सतगुरु बचन भजन से बढ़ि कै ।।1।।
सुर मुनि सब हमसे यह भाख्यो हम न कहैं कुछ गढ़ि कै ।।2।।
ध्यान धुनी परकाश दशा लय श्याम प्रिया मिलैं कढ़ि कै ।।3।।
जियतै ठौर ठेकान बनावो होब न सुनि लिखि पढ़ि कै ।।4।।
राम सरन कहैं अन्त त्यागि तन चलौ सिंहासन चढ़ि कै ।।5।।

85. अजब दास के पुत्र

इनका नाम जानकी दास था। जब 8 साल के हुए तब अजबदास जी ने यज्ञोपवीत किया तो एक पंडित जी आए कहा ''इनको हमैं चार साल के लिए दे दो। हम इन्हें ब्रह्म गायत्री सिद्ध करा देवैंगे।'' अजब दास ने कहा, ''ले जाओ।'' पंडित ले गए। एक जड़ी पीस कर एक गोली बनाकर रोज़ देते थे। गायत्री का जप बताया, जप शुरु करा दिया। पहले एक बार पूरी गायत्री, फिर दूसरी बार, फिर तीसरी बार। इसी तरह

बढ़ाते बढ़ाते 21 माला हुआ। फिर एक एक माला बढ़ाते 210 माला पर पहुँचे। फिर 10 माला रोज़ का नियम रहा। जड़ी में बड़ा बल था। भूख प्यास न लगती थी। शरीर खूब पुष्ट हो गया था। अजब दास जी गए और कहा ''पंडित जी! चार साल पूरे हो गए अब हम ले जायँ।'' तो कहा ''ले जाओ।'' घर ले आए। तब पहले मूँग की दाल दी। फिर धीरे-धीरे अन्न, भात, रोटी साग देने लगे। फिर राम मंत्र-जानकी मंत्र बताया, जप की विधि बताया-एक माला ब्रह्म गायत्री, दस माला राम मंत्र, पाँच माला जानकी मंत्र। जब मंत्रों के अक्षर सामने प्रकाशमान आ गए तब ध्यान बताया। एक साल में सब प्राप्त हो गया। तब उनके समय में जितने सिद्ध सन्त थे उनको बुलाया, उनका स्वागत किया। जानकी दास से सब के चरन छुआ कर सब का चरनोदक उतार कर पिलाया, आप ने पिया, घर को ले आए, सब को दिया, घर में छिड़का। बाद में बैठक हुई। उनका मतलब यह था कि हमारा पुत्र हम से श्रेष्ट हो। पुत्र को पास बैठा कर पहले अजब दास जी ने एक पद कर्म पर कहा-

पदः- कर्म के फन्द में मन्द मन बाँधिया,
लेत मृगराज जिमि आय घेरी ।।1।।
मस्त गजराज को जोर तब का भयो,
देत जब डारि पग लोह वेरी ।।2।।
सन्त के संग में बैठ ले यार तू,
बात तू खूब यह मान मेरी ।।3।।
अजब दास राम के नाम को गाय ले,
फेरि नहिं जक्त में होत फेरी ।।4।।

अब जानकी दास जी ने कहा-

पदः- चिन्ह करतार का मूढ़ क्या भटकता,
और ऊपाय नहिं पार तेरा ।।1।।
गुरु के शब्द की ज़िकर लागी रहे,
रैन औ दिवस नहिं तार तोरा ।।2।।
कर्म और भर्म की नाश जियतै भई,
सुरति से गगन गढ़ करत फेरा ।।3।।
जानकी दास तब काल शिज़दा करै,
लिया जब सन्त की शरण डेरा ।।4।।

अजब दास जी ने फिर कहा-

पदः- साँस ऊसाँस का भेद यह सार है,
नाभि और नासिका एक लावै ।।1।।
बार ही बार अनहद उच्चार कर,
पवन ब्रह्माण्ड के खण्ड जावै ।।2।।
बीन मृदंग गति भेरि तहँ बाजती,
शब्द रंकार लै राग छावै ।।3।।
अजब दास ध्यान धरि चीन्ह ले आप में,
फेरि संसार में नाहिं आवै ।।4।।

तब जानकी दास जी बोले-

पदः- सोधि ब्रह्माण्ड को गैब आसन करै,
त्रिगुन के परे तहँ ध्यान लावै ।।1।।
जाप आजाप की वहाँ कछु गम्य नहीं,
ब्रह्म पद निरखि ह्वै ब्रह्म जावै ।।2।।
दारु औ अग्नि का भिन्न सारूप है,
परस्पर दारु ह्वै अग्नि जावै ।।3।।
वेद कूरान पूरान के परे मत,
कहन औ सुनन में नाहिं आवै ।।4।।
जानकी दास यह अकह की बात है,
सन्त कोई महरमी भेद पावै ।।5।।

फिर सब सिद्ध सन्त उठकर जानकी दास की पीठि ठोका। उस समय जानकी दास 13 साल के थे। आगे चल कर जानकी दास जी बहुत ऊँचे सन्त हुए। उनके बहुत पद हैं।

जब जानकी दास जी अयोध्या में आए तो नज़रबाग में साधू जमा हुए। बहुत साधू उनको जानते थे। बड़ा स्वागत हुआ। जो कोई जो कुछ पूछता उसे बताते। एक साधू कहीं बाहेर का था उसने कहा ''यह कैसे साधू हैं कि न तिलक है न कंठी है, कौन भजन करते हैं?'' यह बात उनके कान में भी पहुँची। जब साधू उठकर चले गये तो उस साधू को बुलाया कहा ''तुम इधर सुरति लगाओ।'' उसने लगाया। पाँच मिनट में उसके पट खुल गए। उसने चरनों पर पड़ कर कहा, ''अब हम जाते हैं, एकान्त में रहेंगे, जो भगवान भेजेंगे वह पावेंगे।'' यह कह कर चला गया।

86. हड्डी हड्डी से जल जाने पर भी नाम की धुनि निकलती थी

एक ब्राह्मण साधू सरजू पार से आए थे। यह बड़े महाराज के पहले के हैं। महाराज जी बताते थे कि वे अयोध्या जी में घूमा करते, छोटी जाति के यहाँ से रोटी माँग लेते, सरजू जल में धोकर खा लेते और जहाँ मौका लगता वहीं रात को पड़ रहते। लोगों ने उनसे कहा ''तुम ब्राह्मण होकर छोटी जाति वालों के यहाँ की रोटी खा लेते हो? क्या रोटी में भी राम हैं?'' उन्होंने कहा "हाँ।" रोटी तोड़कर दिखाई। हर टुकड़े में राम नाम चमकता था। यह देखकर सब चुप हो गये और बोले ''इनसे कुछ कहो नहीं।'' वह बराबर घूमते रहे। और राम राम करते रहे। जब शरीर छूटा तो घर वाले आ गये थे। लाश जलने के बाद छोटे छोटे हड्डी के टुकड़ों से नाम की धुनि निकलती थी। ऐसा उन्होंने नाम जपा था। वै धन्य थे।

87. जानकी कुँवरि
ज़िला रायबरेली

यह मंझिले महाराज की चेली थीं। उम्र 16 साल की थी। बचपन से राम जानकी जी से प्रेम था। एक दिन पिता ने कहा ''अब तुम शादी के योग्य हो गई हो। हमारे पास पैसे की कमी नहीं है। अगर शादी नहीं करेंगे तो कहेंगे कि इतनी बड़ी लड़की हो गई, पैसा पास है, शादी नहीं करते, तो हमारी बदनामी होगी।'' तब जानकी कुँवरि ने कहा ''आपकी आज्ञानुसार शादी कर लूंगी। फिर पति की दूसरी शादी करा कर जब बंश चल जायगा तब मैं भजन करूँगी। इसीलिए संसार में आई हूँ। विषय भोग के लिए नहीं आई हूँ। विषय भोग सब योनिन में है, भगवान इसी शरीर से प्राप्त होते हैं।'' पिता ने खुशी से शादी कर दी। खूब धन दिया। फिर जानकी कुँवरि ने अपने पति से सब हाल बताया। वै मान गए। दूसरी शादी हो गई। जानकी कुँवरि ससुराल में 12 बर्ष रहीं। जब उनके बंश चल गया तो पती से कहा ''अब हम अवध जायँगी भजन करने।'' वहाँ से सामान लदाकर बैलगाड़ी पर सवार होकर आईं। उनके पती साथ आए।

मँझले महाराज से मंत्र लिया, भंडारा किया, कुटी छाई गई, पती को मंत्र दिलाया, फिर सब दर्शन करने गईं। कुछ दिन बाद पती को घर भेज दिया। 11 बजे शयन करना, 2 पर उठना, सरयू अश्नान करना, सनातन भगवान के दर्शन करना, सब साधून की कुटी की पैकरमा करना, देखना, उनसे प्रार्थना करना कि आप घर बार छोड़ कर भगवान की प्राप्ती के लिए आए हो तो उधर जब लगोगे नहीं तो गती कैसे होगी? यह कर्म भूमि है, जैसा करोगे वैसा पावोगे। रोज़ कुछ दिन तक यही नियम रहा। फिर साधू उनकी बात पर चलने लगे, अपना नेम कायदे से करने लगे। महाराज बताते थे कि उनके बड़ा बल था। गाड़िन में गल्ला आता था तो कहतीं ''एक एक बोरा हमारी बगल में दे दो।'' साधू लोग दे देते। जहाँ रखने की जगह थी जाकर रख देती थीं। ऐसा ब्रह्मचर्य का बल था। कहतीं ''आप देखते रहो हम सब रख देंगी। हम तो सेवा के लिए आई हैं। इस शरीर से अच्छे काम करने से ही भगवान मिलते हैं।''

फिर एक दिन हनुमान जी के दर्शन हुए। ध्यान बता दिया। कुछ दिन बाद पट खुल गए। फिर शंकर जी के दर्शन हुए। पीठ ठोक दी कहा ''तुम धन्य हो। कलिकाल की हवा तुम को अब न लगेगी। जीवन मुक्त होकर सच्ची भक्त हो गई हो।" साल में चार बार ससुरारि को जाती थीं। वहाँ से सामान गाड़ी पर लाती थीं–चैत रामनौमी, कार्तिक अक्षय नौमी में उनके पती आते थे। अपनी सौत के बच्चों की बड़ी खातिर करती थीं। एक बार उनकी कुटी में आग लग गई। अन्दर राम लला थे। सब हाय हाय करने लगे। मंझले महाराज बड़े महाराज का स्मर्ण करके कुटी में पहुँच गए। किसी साधू की हिम्मत न पड़ी। राम लला को उठा लाए। आग स्वतः बुझ गई। सब साधू सन्न हो गए। फिर कुटी छाई गई। जानकी कुँवरि ने बड़ी सेवा सबकी की। कुत्ता, बन्दर, गऊ सब पर दया करती थीं। उनको सब मानते थे। शरीर छूटने पर सब साधू बड़ी धूम से सरजू जी ले गए। उनकी बड़ी ऊँची गती हुई। उनके पती जब आए तब भंडारा हुआ।

88. दादू बेहना

महाराज जी बताते थे कि काशी जी में दादू बेहना जिनको यहाँ धुनियाँ कहते हैं, पति-पत्नी रहते थे। उनका नेम यह था कि जब कोई

अतिथि आ जाय तो उसे भोजन करा कर तब जल पीते थे। सात दिन हो गए, कोई न आया तो पत्नी ने कहा, ''सात दिन बीत गए अब कुछ बनावैं'' तो कहा ''एक दिन और रुक जाव।'' भगवान साधू भेष में आए। दादू ने कहा, ''आप हाँड़ी में खिचड़ी बनावैं। हम दोनों प्राणी भी आपका भोग पावैंगे। सात दिन से राह देखते रहे कोई नहीं आया।'' भगवान दाल-चावल हाँडी में लेकर गंगा जी में धोकर, उसमें जल छोड़ कर लाए। एक कोरे घड़े में जल लाए। खिचड़ी बनाया, पत्ते पर परसा, भोग लगाया, पाया, फिर दादू दोनों प्राणियों ने पाया। फिर भगवान प्रगट हो गए कहा ''माँगौ'' तो कहा ''अपनी भक्ती दीजिए।'' बस सामने महाराज महारानी की झाँकी छा गई, नाम की धुनी खुल गई, प्रकाश हो गया, समाधि हो गई, छइऊँ चक्र चलने लगे, सातौं कमल खिल गए, नासिका के दोनों स्वरन से भांति-भांति की सुगंधैं आने लगीं, कुण्डलिनी जाग कर शुभ लोक दिखा दिया, शुभ लोकों से आकाश बानी द्वारा दिब्य भोजन की खबर आने लगी, सब देवी देवता सिद्ध सन्त मिलने लगे। भगवान ने मारकंडे की ऐसी लीला दिखा दी थोड़ी देर में। निरगुन-सगुन का बोध हो गया।

यह बात ज़ाहिर हो गई। दूर-दूर से सन्त दर्शन को आने लगे। सुन्दर को भी पता चला। वह विद्वान थे। उनमें विद्या-धन-बल-रूप का मद था। घोड़े पर सवार हुए। मन में विचार किया कि जाति का धुनियाँ, सुना है, बड़ा ब्रह्मज्ञानी है। उसे देखना चाहिए। काशी में जिस तरफ से घोड़े पर आते थे उसी तरफ दादू जी कमरी की लंगोटी लगाए एक हंडिया लिये डोलडाल जाते थे। रास्ता कुछ शिकस्त था तो दादू दबि कर निकले जिसमें उनको तकलीफ न हो। सुन्दर ने यह नहीं जाना कि दादू हैं। वह समझे कोई नीच आदमी है। घोड़े पर से एक चाबुक मारा, कहा ''हट साले!'' दादू के चाबुक लगा खाल छिल गई। कुछ बोले नहीं। सुन्दर आए। बट के तरे घोड़ा बाँध दिया और बैठे। वहाँ सैकड़ों आदमी बैठे थे। जब दादू आए तब बहुत लोग उठकर खड़े हो गए, कोई माटी कोई पानी ले गया। हाथ पाँव शुद्ध किया, लंगोटी बदली, अश्नान किये तब काठ की चौकी पर बैठे। सुन्दर ने मन में विचार किया कि इनके तो हम एक कोड़ा मार चुके हैं तो दादू ने पास बुलाया और कहा ''जो हंडी खरीदी जाती है वह ठोक बजा कर ली जाती है, फूटी नहीं ली

जाती है। जो कसर रह गई हो वह फिर मिटा लो।'' तो सुन्दर पैरों पर गिरकर रोने लगे। तब दादू ने उठा कर छाती से लगा लिया। पट खुल गए। धन मद, बल मद, विद्या मद और रूप का मद चूर हो गया। फिर सुन्दर सुन्दर हो गए। सुन्दर बिलास में दादू की महिमा लिखी है।

दादू जब डोलडाल जाते थे तो चार या छह वर्ष पर जब कभी हाथ से गिर कर हाँडी फूट जाती थी तो रोने लगते। लोग पूछते कि क्यों रोते हो? तो कहते ''अब हमारी आबरू और हंडी (दूसरी हंडी) देखैगी, इससे रोते हैं।''

फिर सुन्दर घर वापस गए। सादा भोजन, सादे कपड़े, एक बार पाते थे। कुछ भूखे रहते थे। जीवों पर दया थी। दरवाज़े पर से कोई भूखा नहीं जाता था। खूब धर्म किया। भजन में तो पहले ही मस्त हो गये थे। कई ग्रंथ लिखे। बड़ी दीनता आ गई, अपने को मिटा दिया।

सुन्दर सार ग्रंथ है उसमें का एक पद निम्नलिखित है-

पदः- सतसंग नित प्रति कीजिए,
मति होय निर्मल सार रे ।।1।।
रति प्राणपति सो ऊपजे,
सुख लहे अमित अपार रे ।।2।।
मुख नाम हरि हर उच्चरै,
श्रुति सुनै गुन गोविन्द रे ।।3।।
रटि ररंकार अखण्ड धुनि जहँ,
प्रगट पूरन चन्द्र रे ।।4।।
सतगुरु बिना नहि पाइये,
यह अगम उल्टा खेल रे ।।5।।
कहैं दास सुन्दर होय तब हीं,
जीव ब्रह्महिं मेल रे ।।6।।

89. बाबा हरि चरन दास
पाकर गाँव, जिला रायबरेली

हरि चरन दास जी, बाबा जानकी दास के शिष्य थे। गाँव के बाहर आश्रम था। एक लड़का था, बहू थी। लड़के का स्वर्गबास हो गया और बाबा का स्वर्गबास हो गया। तब बहू, तपसी जी जो अयोध्या जी, रामघाट

पर रहे, उनके शिष्य, पाकर गाँव के करीब कुटी पर रहते थे, सिद्ध सन्त थे, उनसे मंत्र लेकर वहाँ रहने लगी। कुटी पर एक साधू, राम लोटन दास, लोहार के बालक, तपसी जी के चेला रहते थे। जब हम गए तो तीन दिन उस कुटी पर रहे। वहाँ वह झाड़ू-बुहारू, भंडार का काम कर देती थी। शरीर दोहरी देह गोरा गोरा था। हमें वहाँ दर्शन हुए, बातचीत हुई। बड़े भाव की रही। तपसी जी ने राम लोटन दास को एक मंत्र बता दिया था। चौका लगाने पर जो चींटी मर जाती थीं वह मंत्र पढ़ने से जी जाती थीं। कुछ समय बाद राम लोटन दास ने वह मंत्र इनको बता दिया। एक दिन तपसी जी से माई ने कहा ''महाराज जी! वह मंत्र गुरु भाई ने हमें बता दिया है'' तो तपसी जी ने राम लोटन को बुलाकर कहा ''तुमने बिना हमसे पूछे मंत्र कैसे बता दिया?'' और कहा ''जा तू पागल हो जा।'' वह पागल हो गया। एक साल पागल रहे। तब सब गाँव लोग के तपसी जी की प्रार्थना किए तब फिर धीरे धीरे सुधर गए।

एक साल पाकर गाँव तथा और गाँवों में हैजे की बीमारी कुछ हो गई। बाबा हरिचरन दास को कई दस्त आ गए। गाँव के लोगों ने जाना तो बाबा के पास आए कहा ''आप को हैजे की बीमारी हो गई है।'' तो बाबा ने कहा "हैजा हमारा क्या करेगा?" हनुमान जी के सामने बैठ गए, समाधि हो गई। तीन दिन बाद प्राण उतरे। हैजा भाग गया। सिद्ध सन्त थे।

फिर हम बाबा का आश्रम देखने आए। वहाँ एक कुवाँ है। जल खारी है। दो पेड़ पीपल के हैं और कई पेड़ कैथा-फरेंदा-महुआ तथा एक बड़ा पेड़ आम का है और याद नहीं है कि कौन कौन पेड़ थे। मकान गिर गया था, खंडहर था। उसमें हनुमान जी दक्षिण मूँह खड़े थे। बाबा ने गोबर और मिट्टी को मिलाकर अपने हाथ बनाए थे। मूर्ती सुन्दर तो नहीं बनी है पर उनका भाव शुद्ध था। ज़मीन शायद 6 या 7 बिगहा होगी। कुछ पोत नहीं पड़ता है। कई बरसात बीत गईं, मूरती भीगती रही पर बिगड़ी नहीं थी। हमने कहा ''सब का समय है। समय पर बन जायगी।'' फिर भगवान की इच्छा से बनवारी दास पहुँच गए। वहाँ के पेड़ काटने लगे, ईंट का प्रबंध हुआ, बनने लगा। बाहर गाँवों से खर्चा माँग लाते थे मज़दूरों कारीगरों के लिए। कुछ लोग कहते थे कि यह माँग माँगकर गुरुद्वारे में भेजता है। बनवारी दास कई साल पत्र यहाँ नहीं भेजे। फिर बनकर तय्यार हो गया, भंडारा हुआ। तब हम गए, देखा तो हनुमान जी पर सीमेन्ट का प्लास्टर हो गया और मजबूत हो गया। फिर उधर

चारौं तरफ़ के गाँवों के लोग बनवारी दास को मानने लगे, चन्दा देने लगे। कई भंडारा हुए। कुटी जो बनी उसके पीछे थोड़ी दूर पर कुवाँ बना। जल अच्छा निकला है। जगह एकान्त है। बनवारी दास ने उधर बहुत काम किया है। पहले शुरु शुरु में तिलोई में कोई मंदिर में, वहाँ का काम बहुत बिगड़ा था उसका सुधार करवाया। फिर बाबा हरि चरन दास जी की कुटी बनवाया, फिर चिलौली की कुटी बनवाया गिरवाकर। कुछ समय बाद एक पेड़ करीब बट का था गिर पड़ा। मंदिर टूट गया। दुबारा बनवाया। फिर त्रिभुवन दत्त के गाँव के करीब शंकर जी का मंदिर टूटा पुराना पड़ा था उससे कुछ हटकर बनवाया और जो मंदिर पाकरि गाँव में बना है वहाँ कुवाँ नया बनवाया। दो कोठरी पाटने को ऊपर हैं और पलस्टर करने को हैं। हरि चरन दास जी की कुटी से शायद एक कोस पर एक पुरानी समाधि गोसाईं बाबा की है। वहाँ से कुछ दूर एक पुराना मंदिर शंकरजी का है। वहाँ पहले कुछ इमारत बनी थीं। आसार बने हैं। बनवारी दास वहाँ रात में पहुढ़े थे, शंकर जी को पकड़े। गोसाईं बाबा रोज़ रात 2 बजे पूजन करने आते थे तो इनके हाथ हटाये, कुछ कहा तो यह छाती पर चढ़ बैठे, शायद कुछ मारा भी। वे अन्तर हो गए तो मंदिर से सुगन्ध आई तो यह समझे कि कोई सिद्ध सन्त था। तो समाधि पर गए, हाथ जोड़ा तो बाबा ने कहा ''हम रोज़ पूजा करने आते हैं, पानी की तकलीफ है। यहाँ कुवाँ है खुदा दो।'' तो यह खुदाये। लखौड़ी ईंट का कुंवाँ निकला और मंदिर में किवाड़ लगवाय। कई दिन काम किए, चौतरा पाटे। हम जब गए तो देखने गए। हम से हाल बताया। कहा, ''हम जीत गए।'' हमने कहा ''वह महात्मा थे, हुंकार कर देते तो तुम जल जाते। तुम से देखो कैसा शुभ काम कराया। जल दान का बड़ा महात्म है। इसके बिना कुछ काम नहीं चलता है।'' पाकरि गाँव में एक ब्राह्मणी ने कई बिगहा ज़मीन मंदिर में लगा दी है। बहुत बातें हम छोड़ दिए। थोड़ा लिखा है।

[1]

पदः- नाम का अमल चढ़ै जब भाई ।।1।।
रोम रोम रग रग सब हाड़न हर शै से सुनि पाई ।।2।।
सतगुरु करि सुमिरन बिधि जानै ता को यह सुख आई ।।3।।

ध्यान प्रकाश समाधी होवै सुधि बुधि जहाँ भुलाई ।।4।।
अमृत पियै सुनै घट अनहद सुर मुनि संग बतलाई ।।5।।
नागिन जगै चक्र सब बेधैं सातौं कमल फुलाई ।।6।।
सियाराम प्रिय श्याम रमा हरि सन्मुख में छबि छाई ।।7।।
अन्त त्यागि तन हरिपुर राजै कह हरि चरन सुनाई ।।8।।

[2]

पद:- जानत भक्त जगत का खाता ।।1।।
सतगुरु करि तन मन को तायो सब दृष्टी में आता ।।2।।
नाम अमल उतरत नहिं नेकौं एक तार भन्नाता ।।3।।
ध्यान प्रकाश समाधी होवै जहाँ रूप नहिं बाता ।।4।।
अनहद सुनै पियै घट अमृत सुर मुनि संग बतलाता ।।5।।
नागिन जगै चक्र षट घूमैं कमल खिलैं क्या साता ।।6।।
सिया राम प्रिय श्याम रमा हरि सन्मुख लखि मुसक्याता ।।7।।
कह हरि चरन छोड़ि तन निजपुर चढ़ि सिंहासन जाता ।।8।।

[3]

पद:- नाम क नशा जौन कोइ पावै ।।1।।
चढ़ै अमल कबहूँ नहिं उतरै तन मन प्रेम मिलावै ।।2।।
ध्यान धुनी परकाश दया लय जहाँ पवन नहिं जावै ।।3।।
अमृत पियै सुनै घट अनहद सुर मुनि हंसि उर लावैं ।।4।।
नागिन जगै चक्र सब नाचैं कमलन महक उड़ावै ।।5।।
सिया राम प्रिय श्याम रमा हरि हरदम सन्मुख छावैं ।।6।।
सतगुरु करै मिलै यह मारग जियतै भव दुख जावै ।।7।।
कह हरि चरन त्यागि तन हरि ढिग जाय न जग चकरावै ।।8 ।।

90. मैनपुरी का ब्राह्मण लड़का

मैनपुरी में एक ब्राह्मण का लड़का था। माँ बाप थे। वह बड़ा संस्कारी था। 5 साल का हुआ तो लड़कों को बुलाकर ''राम-राम'' कराता था। जब 7 साल का हुआ तब सब के घर जाता बुलाने, जो न आता उसे डांटता और हाथ पकड़कर घसीट लाता। एक दिन एक

लड़के को घसीट लाया तो उसके पिता ने कहा ''तुम ज़बरदस्ती घसीट लाते हो। जो खुशी से आवै उससे राम-राम करावौ।'' वह न माना तो उसके पिता ने उसे कोठरी में बंद कर दिया तो देखा कि वह बोहर खड़ा है। इस बात की चरचा गाँव में फैल गई। सब लोगों ने उसके पिता से कहा कि इससे कुछ न कहो, कोई खराब काम नहीं करता है, सब से राम-राम कराता है। वह फिर सबके घर जाने लगा, सब खुशी से आने लगे। माँ बाप धनी थे। सब को मिठाई खवाता था। सुबह एक घंटा, शाम को एक घंटा कराता और आप बीच में खड़ा होकर ताली बजाता, राम राम करता और कूदता था। तब सब ताली बजाते और कूदते थे। जब 12 साल का हुआ तो आकाशबानी हुई ''तुम पटना जाव, तुम को वहाँ गुरु मिलेंगे।'' चल दिया। वहाँ पहुँचा तो किसी से पूछा तक नहीं।

खुरासान के बादशाह थोड़ी उम्र में भाग आये थे, उनके वैराग हो गया था, छिपे भजन करते थे। हिन्दुन के यहाँ से थोड़ा माँगकर एक बार पाते थे, चुप बैठे रहते थे। वहाँ स्वत: पहुंच गया। वै देखकर उठे, उसे छाती से लगाया, कहा ''तुम को भगवान ने हमारे पास भेजा है।'' वह भी थोड़ा हिन्दुन के यहाँ से माँगकर एक बार पाता और राम राम करता। उसे बड़े-बड़े अनुभव होने लगे। 16 की उम्र में खुरासान के बादशाह ने कहा ''तुम को हुक्म हो गया है कि तुम उन्नाव ज़िले में तकिया है वहाँ राम भक्त मोहब्बत शाह की मज़ार है वहाँ भजन करना। वहाँ तुम को शादी करना होगी। तुम्हारे भजन में कोई बाधा न आवैगी।'' उनकी दंडवति किया। उन्होंने छाती से लगाया, पीठ दाहिने हाथ से ठोंका, सर पर हाथ फेरा, कहा, ''जाव।''

वहाँ से चलकर मजार पर आया, पाँच फेरी किया, दंडवति किया। मोहब्बत शाह ने प्रगट हो कर उसे छाती से लगाया, कहा, ''तुम तो बेटा सच्चे राम-भक्त हो, स्वत: सिद्ध हो।'' फिर एक दोना में रसीली बर्फ़ी दिया, कहा ''इसे पाकर पानी पी लो, कुआँ मौजूद है।'' उसने पानी पिया।

एक मुसलमान भक्त औरत मर्द थे। उनके एक लड़की थी। वे लहसुन प्याज नहीं खाते थे। मुसलमान लोग कहते थे कि लड़की की शादी कैसे करोगे? ऐसा लड़का कहाँ मिलैगा जैसा तुम चाहते हो?'' उसने कहा ''भगवान की जैसी इच्छा होगी वैसा होगा। हम तुम सब

भगवान के हैं।'' उसे मोहब्बत शाह ने स्वप्न दिया कि 'एक भक्त लड़का ब्राह्मण का हमारी मज़ार पर आया है। उसकी शादी तुम्हारी लड़की से होगी। तुम कल आकर देख जाना।' वह सुबह आया, देखा, तो लड़का बड़ा गोरा सुन्दर था। देखकर अपनी औरत लड़की को लाया। माँ बाप, लड़की सब राजी हो गए। माँ-बाप और लड़की भी बड़े सुन्दर थे। शादी खुशी से हो गई। देखने वाले भी खुश हो गये। रहने का इन्तज़ाम हो गया। लड़की भोजन बनाने लगी और राम-राम करने लगी। एक बार मूंग की दाल छिलकेदार, गेहूं या जौ की रोटी दोनों खाते थे, हल्का नमक। फिर यह बात दूर तक फैल गई। हिन्दू मुसलमान आने लगे। सतसंग होने लगा। मिठाई, फल कपड़े जो आते सो सब बटा देते थे। सादा कपड़ा अपने काम भर का दोनों रखते थे। लड़के से लोग पूछते तो कहता ''हम न हिन्दू हैं न मुसलमान हैं, जैसा भगवान ने बनाया है, वैसे बने हैं। राम, रहीम, करीमा, केशौ, अलख नाम सब एकै हैं। कोई कहे करवा, कोई कहे बधना एकै हैं।'' लड़का पढ़ा न था, परन्तु अनुभवी था। सब हिन्दू मुसलमान दूर-दूर से आते थे। मोहब्बत शाह की मज़ार भी प्रसिद्ध है। उसके दर्शन कर के, लड़के से सतसंग कर के कहते, ''यह तो बड़ा कामिल फक़ीर है। हर एक मज़हब के लोग उसकी बानी सुन कर खुश होते हैं।" लड़की जब 22 साल की हुई लड़का 25 का हुआ तब उसके एक लड़का पैदा हुआ। वह भी संस्कारी हुआ। फिर धीरे-धीरे सयाना हुआ उसकी शादी हुई। उसके माता पिता काफ़ी उम्र में भगवान के धाम को गये। जब लड़का 60 साल का था उसकी लड़के लड़की थे। हमने ठाकुर विन्धेश्वरी सिंह से कहा ''तुम्हारे यहाँ से तकिया करीब है। तुम उनके लड़के से जान आवो" तो गए, पूछा। जो बात महाराज जी बताए थे, सब सही थी। हमने ठाकुर से कहा था ''उनकी जीवनी जो लिखी गई हो वह लाना'' तो लड़के से ठाकुर ने पूछा। उसने कहा ''जीवनी लोगों ने उर्दू में लिखी थी सब चपट गई।'' देखाया, खराब हो गई थी।

जिसकी लड़की की शादी हुई थी उससे मुसलमान लोग कहे कि लड़के की मुसलमानी होनी चाहिये। यह हमारे यहाँ की रसम है। तो मोहब्बत शाह ने लड़की के बाप को स्वप्न दिया कि 'मुसलमानी छोटे पर की जाती है। यह लड़का कामिल फकीर स्वतः सिद्ध है। तुम्हारी दोनों की बड़ी ऊंची गती उसके भजन के प्रताप से होगी। मुसलमानी

न की जायगी।' तब लड़की के पिता ने मुसलमानों से कहा ''हमैं मोहब्बत शाह का यह आदेश है।'' तब सब लोग चुप हो गये और कहा ''मोहब्बत शाह के सखुन को हम लोगों की ताकत नहीं है जो टाल सकैं। वह औलिया दर्वेश थे हमारे अपराधों को छिमा करैंगे।'' फिर सब मुसलमान मज़ार पर गए। 5 तवाफ़ किए, पैरों के पास माथा धरा, फूल माला, रेवड़ी परसाद, सफेद लोबान की धूप दिया। इतर की फुरहरी धरी, हाथ जोड़ कर खड़े हुए। अन्दर से आवाज़ आई कि 'तुम लोगों का कसूर माफ़ हो गया, अपने अपने घर जाव।' तब सब चले गए।

91. औघड़

ज़िला बस्ती

बस्ती ज़िले के जिन ठाकुर ने सीताराम की धुनी जो कई जुगों से पराग के रास्ते में कर रहे हैं, सुनी थी, उन्होंने ही एक औघड़ की कथा बताई थी। वह लिखते हैं:-

बस्ती ज़िले में एक जंगल है। वहाँ एक औघड़ और 5 मूर्ती साधू रहते थे। औघड़ बृद्ध थे। राम जानकी लखन लाल पधारे थे। वै माँस, मछली, लहसुन, प्याज, शराब आदि कुछ नहीं खाते थे। साधारण भोजन बनता था। भगवान का भोग लगता वही सब मूर्ती पाते और राम राम करते थे। उनकी इच्छा हुई भागवति सुनने की। कुछ दूरी पर एक पंडित भागवती रहते थे। पहिले सब (सामान) ठीक करा लिया – आटा, दाल, चावल, घी और फलाहार का सामान। भागवति के लिए अलग बंगला बन गया। तब एक साधू को पंडित के पास भेजा। पंडित ने कहा ''हम भागवति बाँचने औघड़ के यहाँ न जायंगे।'' साधू लौट आया, हाल बताया। बाबा को कुछ दुख मालूम हुआ तो भगवान के पास से आवाज़ आई कि यह पंडित बड़ा अहंकारी है, उसका अहंकार मिटाना हमारा काम है।

भगवान ने बाबा से कहा ''तुम्हारे ऊपर औघड़ स्वतः खुश हो गया है, उससे तुमने कुछ काम नहीं लिया है।'' बाबा ने कहा ''हम ब्राह्मण हैं, हमारा धर्म है पर-उपकार करना, अपने शरीर से किसी को कष्ट न दे। ब्यास जी ने कहा है 'पर-उपकार के समान कोई धर्म नहीं है।' भगवान ने कहा 'यह बात ठीक है। परन्तु तुम हमारे भक्त हो जैसा

हम कहैं वैसा करना तुम्हारा धर्म है।" बाबा ने कहा ''जो आज्ञा हो हम करेंगे।'' भगवान ने कहा ''पंडित की पूजा का सामान और पंडित को औघड़ से कहो ले आवै तब उसका अभिमान चूर हो जायगा, और दीनता आ जायगी, उसका भला हो जायगा।'' बाबा ने औघड़ से कहा ''भगवान की ऐसी आज्ञा है, हमने तुम से कोई काम न लिया।'' औघड़ बड़ा खुश हुआ, कहा ''जाता हूँ अभी लाऊँगा।'' पंडित के घर गया दिन में 2 बजे। पंडित भोजन करके आराम कर रहे थे। सामान पूजा की लिया, उनके कपड़े ज़रूरत वाले और पंडित को बोल बन्द करके बाँधकर लेकर कुटी पर पहुँचाकर पंडित को छोड़ दिया। फिर पंडित का मूँह खुला और उठे, ठाकुर जी की दंडवति किया। फिर बाबा की दंडवति किया। बाबा से कहा ''हमारे सिर का भूत उतर गया।'' बाबा ने कहा ''अब अपना काम शुरू करौ, गोबरधन बनाओ।'' पंडित ने काम शुरू किया। फिर उसके भोर सब काम हो गया। शाम से भागवति शुरू हुई। फिर फलाहार बना, भगवान का भोग लगा, सब भक्त और पंडित पाये।

एक माह भागवति हुई। बराबर फलाहार ही होता रहा। पंडित को पूजा में तीन हज़ार रुपया नगद मिला। कपड़ा, बर्तन, अन्न सब सामान मिलाकर पाँच हजार हो गया। पंडित गरीब थे उनकी गरीबी शान्त हो गई। दीनता आ गई। बाबा ने कहा ''भगवान सब का समय बाँधे हैं।'' फिर पंडित की सब सामान बैल गाड़ी में धरा कर बिदा किया। आस पास की जनता ने बड़ी मदद किया।

फिर दो दिन भंडारा हुआ। एक दिन पूरी साग, हलुआ; एक दिन दाल, भात, रोटी, साग। हजारौं आदमियों ने भोजन किया। बाबा के भगवान की आरती सबेरे शाम होती थी। आरती में साँप ज़हरीले बिषखोपड़ा, गोहैं, खरगोश, लोमड़ी, सियार, भेड़िया आते थे। सर्पों, बिषखोपड़ों और गोहौं को आटे की गोली दी जाती थी और नदोला गाड़े थे, पानी भरा रहता था। एक में साँप बिषखोपड़ा पीते थे, एक में गोहैं। एक नाँद गड़ी थी उसमें सब जानवर पीते थे। सुबह का पानी शाम तक काम देता था, फिर निकाल दिया जाता था। और सब जानवरों को भिगोये चना दिये जाते थे। दोनों पहर आरती में एक एक घंटा लगता था। ठाकुर शाम को जाते, रात भर रहते, सुबह आरती ले कर चना खाकर चले आते थे। कहते थे कि बड़ा आनन्द आरती में आता था।

औघर बाबा मरने से पहले एक ठाकुर से कहे रहे कि हमारा शरीर छूट जाय तब ठाकुर जी को अपने मंदिर में रख लेना, तुम्हारा सब काम यहाँ वहाँ का भगवान संभार देंगे। बाबा का शरीर 126 में छूटा। बीमार नहीं थे। कमलासन से बैठ कर प्राणायाम करके शरीर छोड़ा। चेलों से कह दिया था कि 'राम राम करना, हम जाते हैं।'

ठाकुर ठाकुर जी ले गये। फिर एक साल के अन्दर 5 चेला बिदा हो गए। सिर्फ़ छप्पड़ बने थे। एक कच्चा कुवाँ था।

92. बाबा गुलज़ार शाह
मोहल्ला मगरहिया बाज़ार नाका, बिसवाँ, ज़िला सीतापुर

यह 60 की उमर में 50 गाँव छोड़कर, तमाम परिवार रहा, एक लोटा डोरी लंगोटी लेकर आये। एक पुरानी इमली थी। उसकी डारैं कटी थीं, छाया मामूली थी उसी के नीचे बैठ गए। जब पानी बरसता था तो इमली में खोखल में बैठते थे। वैसे इमली के नीचे ही रहते थे। बहुत दुबले थे, दाढ़ी केश थे। सर में बीच में बाल न थे। तब हम 16 साल के थे।

पता चला कि एक फकीर आए हैं, इस तरह रहते हैं। हम गये। बात हुई। हम से कहा ''हम देवाँ शरीफ़ के हाजी साहेब के मुरीद हैं जिनका ''फ़ना फ़िल्ला'' सिद्ध था। हमारे यहाँ यह कौल (तरीका) है कि सात दिन चुप बैठे रहो, किसी से न बोलो। आठवें दिन नहाकर थोड़ा माँग कर, मुख में डालकर थोड़ा जल पी लो। हम बाज़ार से मीठा या मेवा या फल लाते तो कुवाँ करीब था, नहाकर सबको बाँट देते, आधी छिटाँक मुख में डालकर दो घूँट पानी पी लेते।'' हमने कहा ''जाड़ा-घाम-भूख-पियास नहीं लगती'' तो कहा ''जो सिर्फ़ मालिक के सहारे रहता है, सुरति उसी में लगी रहती है, उसे कुछ नहीं सताता, मालिक शक्ती दे देता है। वह भक्त की हर वक्त याद रखता है।''

फिर बाबा का हाल दूर तक ज़ाहिर हो गया कि ऐसी तपस्या करते हैं। मुसलमान प्रेमी हिन्दू दर्शन को आने लगे। इतनी बृद्ध अवस्था में इतना कड़ा साधन किया है, कि कोई लाखों में कर सकता है। हमसे कहा ''जब

सुरति शब्द में लीन हो जाती है तो मालिक को हेरते हेरते अपनै हेरा जाता है। उसे ब्रह्मलीन कहते हैं। जब समाधि उतरती है तब फिर नाना प्रकार की लीला खुले नैनन से देखने लगता है। कानों से नाम की धुनी सुनते सुनते फिर ज़र्रा ज़र्रा, रोम रोम से, सब लोकों से हा हा कार मचा है, उसका नशा सवार हो जाता है, फिर वह नशा उतरता नहीं है। उसे नाम की खुमारी कहते हैं, हर एक बात मालूम होती है। बिना मालिक के हुक्म के, किसी से न कहे। उससे कहने की जब ज़रूरत है जब वह मालिक की तरफ़ लग जाय। तब मालिक खुद हुक्म देता है कि इसे हमारे मिलने का सरल उपाय बता दो, यह छटपटा रहा है। जिससे जिस की लगन लग जाती है वही उसके दुख को जानता है।" बहुत बातें हम से बताया करते थे। बहुत कम बोलते थे। दर्शन को लोग आते। हिन्दू दंडवति कहते, मुसलमान सलाम कहते। बाबा का शरीर 100 में छूटा।

बिसवाँ स्टेशन के करीब 100 बिगहा मैदान है उसमें उनकी मज़ार बनी है और पूस में आठ दिन मेला होता है। 24 घंटा दो आदमी वहाँ पहरे पर रहते हैं। सरकार बहुत मानती है। बड़ा बिस्तार है—हमने थोड़ा लिखा है।

पदः— [1]

शेरः— वारिस अली जी हाजी देवैं शरीफ़ के।
जो फ़ना फ़िल्ला जानिगे बेते सरीफ के ।।1।।
गुलज़ार शाह कहते, मुर्शिद मेरे वही थे।
जिनकी दया से हमहूँ इस राह पर सही थे ।।2।।

चौपाईः— बिसवाँ नगर हाट मगरहिया। पूरव नाके पर हम रहिया ।।1।।
इमली का एक पेड़ पुराना। खोखल वा में एक दिखाना ।।2।।
वा के तले बास मन माना। जब चाहैं तब बैठक ठाना ।।3।।
पानी बरसै आँधी आवैं। तब उठि के खोखल में जावैं ।।4।।

[2]

पदः— गुलशन तुम्हारा तन है चमनौं पै ठहलो भाई ।।1।।
सतगुरु से जानि सुमिरन मन से करो मिताई ।।2।।
धुनि ध्यान नूर लय हो सब में वही दिखाई ।।3।।
सुर मुनि मिलैं लिपटि के अनहद सुनो बधाई ।।4।।
अमृत पिऔ मगन ह्वै सोता चलत सदाई ।।5।।

नागिन जहाँ जगैगी सब लोक दे घुमाई ।।6।।
षट चक्र सोधि नाचैं सातौं कमल फुलाई ।।7।।
तन त्यागि निज वतन लो गुलज़ार शाह गाई ।।8।।

93. पाँचू धोबी
यज्ञ वेदी, सीता कुंड, अयोध्या

अयोध्या यज्ञ वेदी, सीता कुंड, के समीप पाँचू धोबी रहता है। घर के माता पिता औरत सब मर गए, अरसा हुआ। वह राममंत्र लिहे हैं। प्रेम दुर्गा जी से भी है। छोटा मंदिर बनाए है। मूर्ति पधारे हैं। सबके कपड़े धोता है, राम मंत्र जपता है, पूजन करता है, मंदिर में कीर्तन करता है, भोग लगाता है।

हम अरसा हुआ तब से कमज़ोर हो गए, नहीं जाते हैं। पहिले जाते थे। हमारे साथ स्टेशन के बाबू जाते थे। एक दिन शाम को हम कई लोग और स्टेशन के बाबू गए तो आरती का समय था। पाँचू किसी दिन आरती पीतल की बनी है उसमें करता है। किसी दिन दाहिने हाथ पर धर कर कपूर जलाकर करता है, किसी दिन कपूर बार कर मुंह फलाकर मंदिर के आस पास घूमता है। जब आरती हो गई, दंडवति हो गई, परसाद बंटा गया तब एक चोर 40 साल की उम्र का आया, अंधा था। उसका 12 साल का लड़का था जो बाँह पकड़ कर लाया था। चोर ने पाँचू से कहा ''भगौती से कह दो कि हमारी आँखें अच्छी हो जायँ।'' तो पाँचू ने कहा ''तुम अब चोरी न करो तो हम कह दें, आंखी अच्छी हो जायें।'' बड़ा ज़बर चोर था। वह कुछ न बोला। लड़का बाँह पकड़कर घर ले गया। सब लोग कहने लगे ''देखो, अंधा रहना मंजूर है, चोरी छोड़ना मंजूर नहीं है।

पाँचू नाम का एक धोबी पासी और हुआ है। वह अपढ़ था। उसका पदः—

चौपाईः— मान अपमान से जो कोइ न्यारा।
वही भक्त है हरि का प्यारा ।।1।।
वा की सेवा प्रभु के मन की।
ऐसा नहीं तो नर्क में भिनकी ।।2।।

मेरी बात सुनो नर नारी।
हरि को सुमिरौ हो सुख भारी ।।3।।
समय स्वाँस अनमोल बिलैहौ।
अन्त समय पछितैहौ रोइहौ ।।4।।

दोहाः– या से तन मन प्रेम से हरि सुमिरौ निशि बार।
नैन श्रवण खुलि जायँ तब पाँचू कहै पुकार ।।

94. नज़र अली शाह
लखनऊ

श्री नज़र अली शाह लखनऊ में हुए हैं। एक मुसलमान के यहाँ हमारे चाचा आगामीर की डेवढ़ी पर नील गाँव के ठाकुर दुर्गा बक्स की कोठी में रहते थे। वहाँ नौकर थे। उनसे शहर के लोगों ने बताया था। यह अकेले एक ही माँ बाप के थे। जब सात वर्ष के थे तो माता पैसा देतीं और तेल लाने का बर्तन मिट्टी का देती तो वे जाते, पैसे से मिठाई खा लेते और मिट्टी के बर्तन में मूत भरकर लाते तो वह तेल हो जाता। लोगों ने देखा तो उनके माँ बाप से कहा। एक दिन बाप ने इस बात को जानने के लिये छिपकर देखा। बात सही निकली तो कोठरी में बन्द करके ताला लगा दिया, कहा, ''यह कौन है जो ऐसा करता है?'' तो वै बाहर खड़े थे। तो फिर दौड़े पकड़ने को तो नज़र अली शाह भगे। पकड़ न पाये। लखनऊ से भगे बक्शी तालाब में कूद पड़े, फिर मछरेहटा के एक कुँए में पहुँच गए। लोग पानी भरते थे तो समझे कोई बाहेर का लड़का है। उनको निकाल लिया। यहाँ एक जंगल धधारी बन है। यह बन मछरेहटा और मिसरिख की सड़क पर है। वहाँ बहुत दिन रहे। जंगल में चरवाहा गाय भैंस चराने जाते थे। वै गाँव में बताते थे कि एक लड़का जंगल में रहता है। पता नहीं क्या खाता है। लोग देखने जाते, पूछते तो कहते ''जौन पाती कड़ू नहीं है, वह खा लेते हैं।'' फिर वहाँ बहुत दिन रहे। भीड़ होने लगी, तब वहाँ से चलकर कासिमापुर नदी के किनारे बाग है, सीतापुर से दो कोस होगा, वहाँ चले आये। यहाँ भी भीड़ होने लगी तब हाथ पैर खराब कर लिये। उससे फिर लोगों का आना कम हो गया। उस पार

कासिमापुर नदी के किनारे लोग नाव पर आते जाते हैं। हम भी कासिमापुर गये हैं। लोग भोजन दे आते थे। नदी के किनारे खाते थे। फिर एक झोंपड़ी बना दी गई उसमें रहने लगे। एक कुत्ता, एक बिल्ली कहीं से आ गए। वह भी वहीं रहने लगे। उनको भी लोग भोजन देते थे।

जब बाबा का शरीर छूटा तो छोटा मंदिर समाधि बनाकर ऊपर बना दिया गया और कुत्ता बिल्ली का छूटा तो उनकी भी समाधि बना दी गई। वहाँ एक बाग थी। एक हठयोगी पाँच हजार वर्ष के रहते थे, सब को नहीं देख पड़ते थे। कोई सिद्ध संत हों उसे देख पड़ते थे। अब बाग कट कर सरकारी मकान बन गया है। वहाँ कार्तिक में बड़ा मेला नज़र अली शाह का होता है। 100 के ऊपर शरीर छोड़ा था।

95. कुदऊ सिंह
लखनऊ

प्रचन्दानन्द भंडारी, गायत्री भवन में भंडार कई साल बनाये। हमारे भक्त थे। यहीं शरीर छूटा 70 की उमर में। पहिले वै लखनऊ में पिता के साथ रहते थे। पिता पंडित थे, चाचा भी पंडित थे। फिर चाचा संन्यासी हो गये। प्रचन्दानन्द ठाकुर कुदऊ सिंह का हाल बताते थे–

एक राजा के नौकर थे। सबेरे शाम गान होता था तो वै मृदंग बजाते थे। कोई गंधर्व आ गया। राजा ने इनको मृदंग बजाने को बुलाया। कुदऊ सिंह ने कहा ''हम सुबह शाम बजाने के भगवान के नौकर हैं।'' राजा को रंज आ गया, कहा, ''इसे मस्त हाथी के पैर में बांध दो, वह इसे मार दे।'' बाँध दिये गये। अपना मृदंग लेते गए। फिर गणेश ताल बजाने लगे। हाथी चुप खड़ा रहा, तब छोड़े गए। राजा ने माफी माँगा तो कहा ''गणेश जी ने हमारी रक्षा की, नहीं तो हम मरकर तुम्हारा बंश नाश कर देते, ब्रह्म राक्षस होकर। हम तुम्हारे यहाँ न रहेंगे।'' राजा ने बहुत कुछ कहा, हाथ जोड़ा, पैरों पर पड़े पर यह न माने। लखनऊ में कालका बिन्दा मशहूर गाने वाले, सिखाने वाले थे। बहुत लोग सीखने आते थे। वहाँ आए। बड़ी खातिर हुई।

एक लड़का ग्वालियर से आया था, 16 साल का। गाने वाला नाचने वाला था। उसके साथ कोई साज न बजा सका। तब कुदऊ सिंह

ने मृदंग उठाया और गणेश जी का सुमिरन किया। ब्रह्मा जी, लक्ष्मी जी, रुद्र जी – यह सब चारौं ताल के मालिक हैं। गणेश जी गणेश ताल के, ब्रह्मा जी ब्रह्म ताल के, लक्ष्मी जी लक्ष्मी ताल की और रुद्र जी रुद्र ताल के मालिक हैं। गुदा चक्र पर गणेश जी के साथ गणेश ताल है, इन्द्री चक्र पर ब्रह्माजी के साथ ब्रह्म ताल है, नाभी चक्र पर लक्ष्मी जी के साथ लक्ष्मी ताल है, हृदय चक्र पर रुद्र जी के साथ रुद्र ताल का बास है। कुदऊ सिंह चारौं ताल के ज्ञाता थे। बजाने लगे, लड़का गान करके नाचने लगा, वहाँ से फाटक तक नाचता तेज़ी से गया। कुदऊ सिंह ने ठौर (उसी स्थान पर) बैठे शब्द मृदंग में भरकर उसके पीछे लुढ़का दिया। जहाँ पर लड़का कूदा, वहीं पर मृदंग के शब्द समाप्त हुए। लड़का आकर कुदऊ सिंह के गले में लिपट कर अपनी गुंज सोने की उनके गले में छोड़ दिया। वै अपनी और उसकी लड़के के गले में छोड़ दिया, कहा, ''इतनी उम्र में ऐसा नाच गान करने वाला हमने आज देखा। हमारी उम्र 70 की हो गई।''

सभा तब दोनों की जै जै कार, धन्य धन्य करने लगी।

96. पं० सफालू
महाराज-नगर, जिला सीतापुर

जिला सीतापुर, तहसील बिसवाँ, मुकाम बिसवाँ, गंधर्व पाटन दीन जोशी मृदंग बजाने वाले और गाने वाले; अमीर अली थवई-ढोलक बजाने वाले– यह हमारे यहाँ से चार कोस पर रहते थे।

मुकाम खंडसार पंडित मथुरा दत्त गंधर्व गाने वाले, मृदंग बजाने वाले; उनके भाई पं० तेज किशुन डंड ताल बजाने वाले और गाने वाले; मुकाम सदरपुर माधौ स्वनार ढोलक बजाने वाले–हमारे यहाँ से चार कोस; घसीटे जागा खोली एक कोस मजीरा बजाने वाले। कसबा महाराज नगर हमारे यहाँ से 6 कोस पं० सफ़ालू गंधर्व-गाने वाले मजीरा बजाने वाले।

पंडित जी रोज़ भगवान को गान सुनाते थे। माता-पिता थे, एक लड़का था, सयाना था, बीमार हुआ। कई दिन दवा हुई मर गया। पंडित जी ने उसका क्रिया कर्म किया, फिर मृदंग लेकर भगवान को गान सुनाने

लगे। माता पिता ने मना किया कि अभी दसवां तेरहीं तक नहीं हुआ है और आज ही दाह कर्म हुआ। अकेला लड़का था, तुम को कोई दुख न हुआ। ऐसा कोई नहीं करता है। पंडित जी ने कहा ''भगवान की वस्तु रही अपनी ले लिया। जितने दिन हमको सौंपा था जो हमसे हो सका वह हमने किया, फिर उनको सौंप दिया। कबीर जी ने कहा है:–

मेरा मुझको कुछ नहीं जो कुछ है सो तोर।
तेरा तुझको सौंपता क्या लागे है मोर ।।

अगर हमारे रोने से तुम सब को मिल जाय तो हम जै दिन कहौ खूब रो दें। अगर हम भगवान को गान सुनाते हैं, तेरह दिन न सुनावैं या शरीर छूट जाय तो गती न होगी। फिर हमारा नाम खाता से काट दिया जायगा।'' तब माता पिता चुप हो गए। फिर एक समय बंगाल बोलाये गए। वहाँ गए। गाने वालों की सभा लगी। एक मृदंग ताड़ भर यानी चार हाथ का बनवा रखा था। धरा गया। पंडित ने कहा ''इतना बड़ा मृदंग हमने कहीं नहीं देखा कैसे बजावैं?" तो सबने कहा ''फिर आप कैसे गुनी माने जाओगे? इसी परीक्षा के लिए बनाया गया है'' तो कहा ''अच्छा! अपना अपना साज ठीक करौ।'' सबौं ने ठीक किया। फिर पंडित जी ने गणेश जी की बंदना की:–

श्लोक:–गजाननं भूत गणादि सेवितं कपित्थ जम्बू फल चास भक्षनं ।
उमा सुतं शोक बिनासकारकं नमामि विघनेस्वर पाद पंकजं ।।

फिर शंकर जी की वंदना किया:–

मुक्ति जन्म महि जान ज्ञान खानि अघ हानि कर ।।1।।
जहँ बसैं शम्भु भवानि सो कासी सेइय कस न ।।2।।
जरत सकल सुर बृन्दु विषम गरल जेहि पान किए ।।3।।
तेहि न भजत मति मन्द को कृपाल शंकर सरिस ।।4।।

फिर गंधर्व लोगों ने कहा ''पहले गणेश ताल, फिर ब्रह्म ताल, फिर लच्छिमी ताल, फिर रुद्र ताल आप इस मृदंग से बजाकर देखावैं।'' तब पंडित जी लेटकर नेत्र बंद करके, मृदंग आगे दोनों हाथौं से और पैरौं से बजाने लगे। दो घंटे तक चारौं ताल बजाकर दिखा दिया। तब सब लोगौं ने जै जै कार किया, फूल बरसाया। गणेश जी, शंकर जी, पारबती जी प्रगट हो गए। पंडित जी ने चरन छुए। तीनों देवताओं ने सर पर हाथ

फेरा फिर अन्तर हो गए। पंडित जी ने कहा ''अब आप सब अपना अपना साज बजाकर जिस राग का समय हो हमै भी सुनावैं।'' सब ने कहा ''हम सबमें न इतनी शाक्ति बजाने की है, न गाने की है। जैसा सुना था वैसा देखा।'' सबने चरन गहे। पंडित जी का बड़ा स्वागत हुआ। 7 दिन रहे। उनके आगे न कोई गाय सका न बजाय सका।

97. मौलाना रूम

इनके दो लड़के थे, औरत थी। इनका नेम था कि हमारे शरीर से किसी को तकलीफ न हो। यही भजन था। भगवान इनके संग रहते थे। लड़कों और औरत को भी यही उपदेश दिया था। सब ऐसा ही करते थे। एक दिन पड़ोस में शादी थी। दो दिन रात ऐसा हुआ कि कुवाँ न खाली हुआ तो लोटा डोरि लिए चुप बैठे रहे। जब खाली हुआ तब पानी भरकर घर को गए। सब लोग जाने तो बड़े दुखी हुए। आपस में सलाह किया कि जब यह जल भरने आवैं तो सब जल भरने वाले जहाँ के तहाँ खड़े रहैं। जब वह जल भरकर चले जाँय तब जल सब भरें। लोग ऐसा करने लगे। मौलाना ने कहा ''आप ऐसा काहे करते हो?'' कहा, "हम सब भरैंगे तो आप को देर हो जायगी। तुम्हारे लड़के औरत सब को तकलीफ होगी पानी की। तुम्हारे लड़कौं-औरत का भी यही प्रण है। हम सब को पाप लगैगा और कोई कुवाँ कोई करीब नहीं है जो हम सब या आप पानी के लिये जाँय। आपको हमारी सब की प्रार्थना मानना चाहिए।'' तब मौलाना ने सब की बात मान लिया। सब के घर जाते थे। कोई दुखी हो उसकी सेवा कर देते थे, खाने, पीने, कपड़े का इन्तज़ाम कर देते थे।

तुम्हारे घर जाने की सीधा रास्ता है, रास्ते में कुत्ता सो रहा है, रास्ता चौड़ा नहीं है, तो वहीं बैठ जाते थे। अगर वह जागकर रास्ता दे तो तुम्हारे घर जायँ नहीं तो चक्कर से जाते थे। उसे जगाते नहीं थे। गरीब माँगने वाले आते उनको देते। कोई कामिल फ़कीर आ गए, सब को खिला देते, घर भर ऐसे ही रह जाते। फ़कीर लोग पूछते कि आप ने कुछ नहीं खाया हम सब को खिला दिया तो कहते ''हमारा सब का पेट भर गया। भगवान का हुक्म है कि जो दूसरे को खिलाता है वही अपना खाता है। जो अपना खाता है दूसरे को नहीं खिलाता है। वह घूरे (कूड़े कर्कट का

ढेर) में जाता है।" तो फ़कीर लोग चुप हो जाते थे। एक फ़कीर ने कहा ''आप किस के मुरीद हैं? आपका मुर्शिद कहाँ है?'' तो कहा, ''हमैं एक आवाज़ अन्दर से आई कि तुम को सब से सरल तरीका भगवान से मिलने का बताया जाता है– अपने शरीर से किसी को कष्ट न हो। अपना तकलीफ़ सह ले दूसरे को आराम दे। इसी से हम ऐसा करने लगे। तब भगवान प्रगट होकर हमें छाती से लगा लिया। पट खुल गए। यही तरीका हमने दोनों लड़कों को बताया और औरत को। सब जुट गए, सबके पट खुल गए।''

मौलाना जी की तब भी परीक्षा होती थी। 7 दिन, 10 दिन, 15 दिन पर फ़कीर लोग आते सब को खिला देते। उस पुण्य के परताप से उनको भूख-प्यास कुछ न सताती। बल वैसे ही बना रहता था। आपने लिखा है प्रेम के महातम में "भक्त हजारौं बार छाने जाते हैं तब अनमोल हीरा हो जाते हैं।"

एक बात ईसा की लिखी है:- ''एक जंगल में होकर निकले तो गाय भैंस चराने वाले कई थे। एक चरवाहा बैठा आँखैं बन्द किहे कहता था 'हे भगवान! आप के सर में पाका निकलता, पक जाता, उसमें कीड़े पड़ते तो हम कीड़े निकालते, दवा लगाते।' तो ईसा ने उसे डाँटा कहा, 'क्या बकता है? भगवान के कहीं पाका निकलता है।' तो उसने कहा 'तुम बताओ वैसा करैं।' ईसा ने उसे ध्यान बताया। उसका मन न जमा। जब ईसा कुछ दूर निकल गए तो आकाश वाणी हुई 'तुम ने हमारे भक्त को बका दिया, उसका ध्यान उसमें लगा था, थोड़ी कसर थी। अब वह यह ध्यान न कर सकैगा।' ईसा लौट आए कहा, 'तुम अपना वही ध्यान करौ जो करते थे।' उसी दिन चरवाहा ध्यान करने में जुटा, लय दशा हो गई थी। जब दशा उतरी तब भगवान प्रगट हो गए कहा 'अब तुम ध्यान न करना, तुम्हारे सामने हम हर समय रहैंगे।' फिर सर पर हाथ फेरा, सामने हो गये। सब काम घर का करता, पर-उपकार करता। अन्त में भगवान के धाम को सिंहासन पर गया। ऐसा ध्यान हमने न सुना था, न देखा था। भगवान की लीला भगवान जानैं।

मौलाना का चरित्र बहुत बड़ा है। वै सब घर के, राम धाम को गए। हमैं लिखने में तकलीफ़ होती है, आवाज़ (अनहद) बाजौं की तेज हो जाती है, गाना ज़ोर से होने लगता है, मालूम होता है सर फट जायगा।

98. बस्ती ज़िले की ठकुराइन

बस्ती ज़िले में महाराज एक ठाकुर के यहाँ गए। 3 दिन रहे। चार लड़के और वह थीं। पती न थे। बूढ़ी गोरी गोरी थीं। सालिक राम पूजती थीं। थोड़ा फलाहार हल्का एक बार लेती थीं सुबह। बहुअन से कहती थीं ''आज चार मूर्ती साधू आवैंगे खूब अच्छा अच्छा भोजन बनाना'' तो बहुएँ कहतीं ''बुआ! तुम से को कहता है?'' तो कहैं ''जिन को हम पूजती हैं वही करेऊ कह देते हैं।" तो बहुएँ जान गईं फिर वै कुछ न पूँछतीं। जो बूढ़ी कहतीं वैसा भोजन तैयार करतीं, साधून को पवातीं, कपड़ा न हो तो देतीं। गाँव में बजाज़ कई थे। दक्षिणा देती थीं। जहाँ खातिर होती है वहाँ साधू ब्राह्मण जाया करते हैं। मरने के समय लड़कों बहुओं से कहा ''जैसी हमारे सामने साधून की सेवा करती हो वैसे ही करना। हमने सबके लिये बैकुण्ठ का फाटक खुला दिया है। अब हम जा रही हैं, विमान आ गया है।'' एक बार हाथ जोड़ कर कहा ''जै श्री स्वामी सालिक राम की।'' बस शरीर छोड़ दिया 90 की उम्र में।

दोहाः– तुलसी पक्षी के पिये घटै न सिंधु का नीर।
धर्म किहे धन न घटै जो सहाय रघुबीर ।।

99. गजोधरपुर की ठकुराइन
ज़िला सीतापुर

गजोधरपुर हमारे यहाँ से एक कोस है। वहाँ छोटे सिंह ठाकुर रहते थे। उनकी माता, पत्नी और एक लड़का सात साल का था। पिता का शरीर छूट गया था तब से उनकी माता अन्न छोड़ दिये थीं। 2 बताशा खा कर पानी पी लेती थीं। उनके दरवाजे पर एक बरहर का पेड़ था। उसमें किसी न किसी डार में एक बरहर बारह मास पका मिलता था। थोड़ा ले लेती थीं। यही फलाहार 12 वर्ष किया। बड़ी गोरी, पतरी-पतरी थीं। उनके पती बड़े धर्मात्मा थे। खेती थी, पुराने धनी थे। ठाकुर जिनके 24 गाँव थे उनके कार्यकर्ता थे। वही ज़मीन दिहे थे। दरवाज़े पर जो कोई आता उसका स्वागत होता था, कोई भूखा न लौटता था। उनके बाद बूढ़ी माता ने काम धर्म का और बढ़ाया। मनै मन राम राम करतीं, सब बर्त करतीं। सफ़ेद धोती, सफेद सलूका बाँह कट्टा पहनतीं। उनका

शरीर महकता था। एक बार हमारे पिता उनको घर लाए 8 बजे दिन में फिर 4 बजे पहुँचा आए। तब हम 10 साल के थे। हमैं सब याद है। गाँव में कोई बीमार हो उसे देखने जाती थीं, दवा के दाम देतीं, भोजन का ठीक ठाक करतीं, कपड़ा गर्मी हो तो गर्मी के देतीं, जाड़ा हो तो जाड़े का देती थीं। इस तरह खूब सेवा किया। जब समय आ गया तो लड़के बहू से कहा ''कोई दरवाज़े पर आवै भूखा न लौटे। इससे तुम सुखी रहौगे। अन्त में बड़ी अच्छी गती होगी।'' उनके पट खुल गए थे। राम जानकी सामने हो गये थे। फिर लड़के, बहू पोता से कहा "सब लोग राम राम करौ, रोना नहीं, क्या सब के माता पिता हमेशा ज़िंदा रहते हैं? यह तो मृत्यु लोक है। जो जितने दिन को आया है, उतने दिन रहेगा। नेकी करने वालों की अच्छी गती होती है, बदी करने वालों की खराब। यह तो मोटी बात है। जिसे चार आदमी अच्छा कहते हैं उसको बैकुण्ठ मिलता है, जिसे खराब कहते हैं उसे नर्क मिलता है। देखो, विमान आ गया। शंकर जी, पारबती जी, गणेश जी, हनुमान जी खड़े हैं। विमान चालक कहते हैं "चलौ! चलौ! चलौ!" चारौं देवतन के हाथ जोड़ा और जै जै सीताराम कहकर शरीर छोड़ दिया 80 की उम्र में।

दोहाः– आरा कुल्हाड़ा कुटिल है मिला जुदा करि देंय ।
सोन सोहागा सुजन हैं जुदा मिला करि लेंय ।।

100. सोमदत्त ब्राह्मण की माता
मुकाम सनगवाँ, जिला कानपुर

उनका प्रेम विष्णू भगवान लक्ष्मी जी से था। 4 लड़के थे। उनके दया बड़ी थी। गाँव में कोई बीमार हो तो देखने जाती थीं। गरीब हो तो दवा के दाम देती थीं, खाने को न हो तो उसका प्रबंध करती थीं। रोज़ देखने जाती थीं। जब वह ठीक हो जाता तब उनको शाँति मिलती। जब हम जाते तो पहले उनके घर जाते। देर तक गोद में बैठारतीं फिर भगवान के दर्शन का हाल बतातीं। बताने में नेत्रों से आँसू चलने लगते। यह दशा देख कर हमारे भी आँसू जारी हो जाते थे। वै हमारे आँसू पोंछतीं, हम उनके आँसू पोंछते।

नेत्रों में दो नदी हैं–सुख की नदी के आँसू बड़े ठंढे होते हैं। दुख की नदी के गर्म होते हैं। सुख के आँसुन का अनुभव भक्तन को होता

है, दुख के आँसुन का संसारी जीव जो दुनियाँ की परेशानी में फंसे हैं, उनको होता है। जैसी उनमें दया थी वैसी लाखौं में किसी के होगी। फिर भोजन बनाती थीं। हम भोग लगाते तो विष्णू भगवान लक्ष्मी जी को ही देखते थे कि पा रहे हैं। फिर अपना उसी थाली में पाती थीं। 80 के ऊपर शरीर छूटा था। हमने थोड़ा लिखा है।

101. बाबू बाँके बिहारी की धर्म पत्नी
गोकुल भवन, अयोध्या

बाबू बाँके बिहारी की धर्म पत्नी की कुछ संक्षेप में बातैं लिखते हैं। यह याद नहीं है, यह तीसरी शादी थी, या चौथी। यह पता परतापगढ़ से लग जायगा या भोला बाबू फैजाबाद से लग जायगा तब ठीक कर लेंगे।

जब से यहाँ आईं तब से भगवान की दया से उनकी बुद्धि पलट गई। कृष्ण भगवान राधा जी का मंत्र लिया और हमसे बाल कृष्ण की मूर्ती ली। उधर लग गईं। शायद दो वर्ष बाद कुछ काम परतापगढ़ रहा तो थोड़े दिन को जाना पड़ा। फिर लौटीं तो बाबू जी भी संग थे। मूर्ति सिंहासन में थी, कपड़ा नया था रेशमी पास ही धरें थीं, कुछ सोने का सामान–मुकुट, कुंडल, जंजीर भगवान को पहिनाये थीं। किसी ने ताड़ा उठा लिया। देख न पाया। जब फैजाबाद उतरीं तो सब सामान उतारी गई। याद आई रोने लगीं। यहाँ आईं। हम को लिपट कर रोने लगीं। हम पूछा तो बाबू ने हाल बताया। उस दिन कुछ न खाया। रात में भगवान कृष्ण प्रकट हुए, कहा "तुम भजन करौ, सर पर हाथ फेरा, हम तुम्हारे पास हर समय रहैंगे। मूर्ति जो ले गया है वह पूजेगा, सेवा करैगा।" तब उनको शान्ती आ गई। हमसे कहा कि ''हमारे अन्दर से बार बार यह उठता है, तुम हमारे पुत्र हो।'' हमने कहा, "पता नहीं, कितने बार पुत्र हुए हम और तुम माता हुईं। यह श्रृष्टि का हाल सिवाय भगवान के कोई जान नहीं सकता है। राम दास नागा ने कहा है:–

दोहाः– एक एक चींटी भई, अगणित बार सुरेश।
राम दास नागा कहैं, वरन सकत नहिं शेश ।।

किसी ने लिखाया हैः–

उन्चासि कोटि पृथ्वी पर हम सब अगणित बार मरे जन्मे।
नहिं योनि कोई छूटी बाकी तिल तिल घूमे सब जल थल में ।।2।।

सतगुरु कि कृपा श्रुति नयन खुले, फिर आय गए अपने दल में ।।3।।
है वक्त मुकर्रर धीर धरो, बिगड़ी हरि ठीक करैं पल में ।।4।।
धुनि ध्यान प्रकाश समाधि मिलै, फिर काहे गिरो दुख के नल में ।।5।।
सब दिशि झाँकी नैनन सन्मुख, सरिता गिरि पेड़ पान फल में ।।6।।
बनि दीन रहौ तब होय गुजर, कबहूँ मत भूलौ निज बल में ।।7।।
नहि ख्याल करौ तो होय नरक, यम छौड़ैं कसि गन्दे मल में ।।8।।
ऊपर से खूब मरम्मत हो, हर दम रोओ उस खल भल में ।।9।।
तँह कौन सहायक हो तुम्हरा, अबहीं माते जल हल चल में ।।10।।

वे हमारे पास बैठती थीं तो पीठ सोहराया करती थीं। हमसे कहा "हमैं ध्यान बतावो।" हमने कहा "अच्छा।" जब बताया तो जुट गईं, देखने सुनने लगीं। हमसे बताने लगीं। हम कहा, "हम सब से बतावैंगे तुम्हारा अनुभव", तो कहा "फिर हमारे भजन में बाधा पड़ेगी, सब तंग करैंगे, समय हमारा खराब जायगा'' आँसू चलने लगे। हम कहै कि ''हमैं यह जानना था कि तुम क्या कहौगी, तुमने ठीक कहा कि बताने से सिवाय हानि के लाभ नहीं होता है। फिर उनका काम बढ़ता गया। हमसे कहा ''हमारे क्रोध बहुत था, जब आता तो हम उस दिन कुछ न खातीं, फिर शाँत हो जाता था।''

फिर उनके राधे श्याम सामने हो गये, नाम की प्राप्ती, प्रकाश, लय दशा, शून्य समाधि, सब देवी देवतन के दर्शन, भगवान का रहस, नाना प्रकार की लीला, खेल, कमल चक्र कुंडलिनी जाग गई, सब लोक देख आने लगीं, बाजा हजारौं तरह के बाजते थे। फिर नीमसार गईं, वहाँ सब दर्शन किया। वहाँ गनेशगंज के लाला इनके पती के साथ नौकर थे, रिटायर होकर नारदानन्द से सन्यास लिया, वह वहाँ बास करते थे। हम उनके घर गये हैं, नाम भूल गये, अच्छे जीव थे, यहाँ आया करते थे। बाबूजी से उनकी पत्नी ने कहा "महाराज जी से दण्डवति कह देना अब हम जा रही हैं। यहाँ का खेल खत्म हो गया, विमान आ गया, सब देवी देवता जै जै कार कर रहे हैं'' बस शरीर छोड़ दिया, फिर लालाजी ने बड़ी मदद किया। सब आदमियों को बुलाकर गोमती पर ले गये उनका प्रबाह किया।

हम आज यह लिख रहे हैं। किसी से उनका अनुभव नहीं बताया था। वै मना कर दिहे थीं। हम थोड़ा लिखा है। साकेत गईं।

102. पं० उमा पति और उनके भतीजे बब्बन पति

महाराज जी बताते थे कि यह बड़े महाराज बाबा रघुनाथ दास जी के और जुगुलानन्द शरण जी के समय हुए हैं।

पंडित जी का भाव भगवान में पुत्र का था। पूजन जप पाठ करते समय आकाश बानी हुई ''तुम्हारा भाव ठीक है तुम दशरथ जी का अंश हो। जीव की गती भाव से होती है।'' उनका और अटल विश्वास हो गया। भाव बढ़ता गया। एक दिन नेम कर चुके थे कि चारौं भाई प्रगट हो गये। बहुत बढ़िया पोशाकें पीत और पीत धोती, सर पर ताज धरे, कानों में कुण्डल, उम्र 12 साल की। जो उपरना पीत कांधा, सोती छोड़े थे उनमें दोनों तरफ़ मोती हरे, लाल, पीले, सफेद, श्याम लगे थे। सब चमकते थे, धनुष बायें काँधे पर डाले थे। तीर तरकस में भरे दाहिने काँधे पर थे। धनुष चमकते थे, तरकस और तीर चमकते थे। पंडित जी के मन में आया हम सब के चरण छू लें, तो चारौं सरकार बोले ''क्या पिता जी आप भूल गए? तुमको तो देव बानी हुई थी कि तुम्हारा भाव ठीक है, तुम दशरथ जी के अंश हो तो हमारे सब के चरन कैसे छू सकते हो।'' इतना कहकर चारौं सरकार धनुष, तरकस, ताज निकाल कर बाहर धर कर पंडित के चरनों पर गिर पड़े, कहा ''हमारे सिर पर हाथ फेर दो। आप ब्राह्मण कुल में अब तो हमारे कुल पूज्य हो गए। जब तक सर पर हाथ न फेरोगे। हम सब ऐसे ही पड़े रहेंगे।'' तो पंडित जी ने सर पर हाथ फेरा। आँसू चलने लगे। भगवान ने कहा ''आप का रोज़ दर्शन करने हम भाइयों के साथ आया करेंगे।'' फिर अन्तर हो गए। जब पंडित जी का नेम पूरा हो जाता था तब प्रगट हो जाते, नित्य नया सिंगार रोज़ रोज़ का रहता था, उसी रीति से दंडवति करते थे।

पंडित जी रोज़ 16 रुपये के पैसा विद्यार्थियों को बाँटते थे। जिस दिन पास रुपया न हो तो उनकी धर्म पत्नी अपने जेवर गिरवीं रखकर रुपया देती थीं। पंडित जी ने काफी उम्र में शरीर छोड़ा। विमान पर राम धाम गए। धर्मपत्नी की भी गती अच्छी हुई। वह पतिब्रता थीं। हमने थोड़ा लिखा है।

॥ बब्बन पति ॥

यह सरयू अश्नान करके जल में खड़े खड़े ब्रह्म गायत्री जप करते थे एक घंटा, एक घंटा हरे कृष्ण हरे कृष्ण जप करते थे, फिर दोपहर को भोजन करते। इधर नवाबगंज की तरफ़ फ़ैज़ाबाद के कसाई जाकर गौवें खरीद कर ले जाते थे। उनके आदमी लगे रहते, हाल बताते तो उनकी खुशामद करके कुछ पैसा अधिक देते। वे मान जाते थे।

शाम के समय सरजू बाग तक टहलने रोज़ जाते। वहाँ कृष्ण भगवान अकेले पधरे हैं। उनके दर्शन करते। फिर बड़ी छावनी होकर घर आते। एक दिन कृष्ण भगवान प्रगट हो गए। उन्होंने भगवान का चरन छूने का विचार किया तो भगवान ने छाती से लगाकर कहा ''आप हमारे कुल पूज्य हैं। देखो, हमारी छाती में भृगु जी का चरन बना है। हम को आप का चरन छूना चाहिए। हमारी गौवों की तुम रक्षा करते हो। हम तुम्हारे दर्शन को रोज़ आया करेंगे'' भगवान ने चरन छुआ और अन्तर हो गए।

फिर भगवान रोज आते और चरन छू कर अन्तर हो जाते। जब शरीर छूटने के दिन करीब आ गए, बृद्ध हो गए, तो भगवान ने कहा ''अब तुमको अपने धाम ले चलेंगे, समय आ गया। विमान पर भगवान थे, उतरे। जहाँ शरीर छूटा, तुरन्त विमान पर बैठाकर अपने धाम को ले गए। ऐसे ऐसे भक्त हो गए हैं, और अभी हैं, आगे भी होंगे।

103. जगन्नाथ वैश्य की धर्म पत्नी रायगंज, अयोध्या

उसकी माता मर गई थी, पिता भीख माँगते थे। 7 साल की थी, पिता के साथ रहती थी। जब 16 साल की हुई तो जगन्नाथ के साथ पिता ने शादी कर दी। पिता भी वैश्य थे। वह लड़की भक्त दयावान थी। साल बाद हम पं. परभू दयाल के पास धर्मशाला में गये। कुछ धर्म की बातें होने लगीं। वह उधर सड़क के करीब सामने मकान में थी, सुनने लगीं। जब हम चले आए तो दोपहर में आई। हमने कहा, ''कैसे तुम आई?" तो कहा ''हमारा मन न माना। हमें पूजा के लिये मूर्ती दीजिए, और बिधी बता दीजिए।" हमने कहा ''कल जगन्नाथ को लावो, तब ठीक होगा। सुबह लाई। सालिकराम, नर्वदेश्वर, गोमती चक्र, राधेश्याम दिया, विधि बताया। पारखत बताया। पारखत मंगाया, भगवान की इलेमारी में

जाली लगवाई गई। पोशाक बनीं। वहाँ मुकुट कुंडल सब ठीक हो गये। पूजा करने लगी। भगवान रीझ गए। वह अशुद्ध अवस्था में भी पूजा करती थी, भोग बनाती, भोग लगाती थी। भगवान खुश रहते थे।

एक दिन 6 माह पर हम गए तो पंडित ने कहा ''महाराज जी! हम पास ही रहते हैं। 4 दिन को हमैं भगवान दे दिया करैं। अशुद्धता में पूजन करना, भोग लगाना, ऋषि मुनी कह गये हैं कि न करना चाहिए। शास्त्र के विरुद्ध है।'' तो उसने हम से कहा ''महाराज जी! भगवान कहते हैं, 'तुम हमैं अश्नान कराओ, धूप करो, मीठा या फल का भोग लगाओ, आरती करौ, फिर दोपहर को भोग बनाकर हमें खवावौ तो हमारा पेट भर जाता है। ऐसा न करोगी तो हम भूखे रह जायेंगे। फिर शाम को कुछ खवा दिया करो, हमें रात में रहस करना पड़ता है।' तो हम क्या करैं? जो भगवान कहते हैं वैसा करती हूँ।'' तब हम पंडित से कहा "अब हम तुम्हारी बात मानैं और इनको रोक दें तो हमें पाप लगेगा।'' पंडित के आँसू आ गये। हमने कहा, ''भगवान भाव के भूखे हैं।" पंडित ने हमारे पैर छुए कहा, ''महाराज! आज हमें ऐसा सुनने में आया, हम तो पोथी पंडित हैं। जो शास्त्र में लिखा था वही हमने कहा था।''

स्टेशन पर एक मशीन आई थी। एक साल से वह रात दिन खट-खट खट-खट करती थी। हम से कहा "यह मशीन भजन में मन नहीं लगने देती है।" हमने कहा "जब मन अन्दर समा जायगा तब कुछ पता न चलेगा।"

एक दिन उसके मन में आ गया कि 'यह कहीं उठ जाती तो ठीक रहता।' वह उठ गई। एक साधू 2 बजे रात को बड़े जोर से सीताराम सीताराम करता था। उसने कहा "तुम बड़े जोर से हल्ला मचाते हो धीरे धीरे कहा करो" तो उसने कहा "हमारे गुरु ने कहा है कि जोर जोर से किया करो जिसके कान में पड़ेगा वह तर जायगा।" फिर इनके मन में आया कि 'यह कहीं चला जाता तो ठीक रहता।' वह चला गया।

एक दिन दोपहर को आई। हमने कहा, कैसे आई? जगन्नाथ कहाँ हैं? तो कहा ''आज बाज़ार बन्द है, सो रहे हैं। हम बाहर से ताला लगा आई हैं और भगवान से कह आई हैं कि जब तक हम न आवैं तब तक बाबू को सुलाना।" हमने कहा, यह काम भगवान से नहीं लिया जाता है।" फिर यहाँ से 4 बजे गई, अश्नान किया, भगवान को जगाया, तब

उनकी नींद खुली। फिर उनके साथ भगवान रात में बहुत खेल करते थे, दिन में कम।

एक दिन शुद्ध जल लोटा में धर कर पिंडोर मिट्टी छोड़ कर, कपड़ा पोतने का रोज़ धोकर सुखा कर रखती थीं, वही लोटा में छोड़ा। पहिले चूल्हा साफ़ करके, चौका बुहार कर बरतन मलकर, जूना धो चुकी थी। भोजन जगन्नाथ करके दुकान चले गए थे। सिर्फ चौके का काम रह गया था। लोटे को लेकर गई, बैठी तब 5 वर्ष के कृष्ण भगवान प्रगट होकर गुदगुदाने लगे फिर पीठि पर गले में गोफा डालकर चपट गए तो यह उठने का विचार किया तो छोड़कर बाहर खड़े हो गए। तब अधिकारी ने पोले हाथ से एक चाँटा मारा कहा ''तुम चूल्हा चौका पोतने न दोगे।'' भगवान लिपटि गए, आँसू आ गए। तब अधिकारी भी रोने लगीं। भगवान गोद में बैठकर हंसने लगे। तब अधिकारी के आँसू बन्द हो गए। भगवान ने फिर उनको गुदगुदा कर हंसा दिया। फिर अन्तर हो गए। चूल्हा चौका किया, अश्नान किया। दूसरे दिन हम गए तो लिपट कर रोकर हाल बताया। हमने कहा ''तुम उनकी कोई सखी होगी इसी से भगवान तुम्हारे साथ ऐसा करते हैं। जब भगवान बहुत साखिन के साथ दुलार करते थे तब सखी ऐसे पोले हाथ से प्रेम का चाँटा लगाती थीं।" हमसे कहा कि लीला में कोई कमी नहीं है। हम को हर समय याद रहता है कि हमने चाँटा मारा तो हमको लिपटि गए और हमारी तरफ़ देखने लगे। उनके आँसू आ गये यह भूलता नहीं है। हमने कहा कि 'तुम राम मंत्र जानकी मंत्र जपती हो कभी झलक नहीं होती। अगर सखी न होती तो भगवान ऐसा न करते ज़रूर कोई सखी हो।'

एक दिन रात को जगन्नाथ जागते थे। 1 बजे भगवान से इनसे कुछ बातें होती थीं तो वै इनकी बातैं सुनते थे भगवान की नहीं, तो भगवान ने कहा ''तुम को 2 बजे उठना है हम अब जायेंगे" तो कहा ''और थोड़ी देर हम पैर दाबते" तो कहा ''नहीं''। तब भगवान अन्तर हो गए। वह प्रेम में रोने लगीं। तब जगन्नाथ ने इनके पैर छूने का विचार किया, कहा ''अब हम तर जायँगे, तुम्हारे ऊपर भगवान की बड़ी दया है।" अधिकारी ने कहा ''पैर न छूना हमें दुख होगा।''

अधिकारी के बड़ी दया थी। जब हम कभी दुखी हों तो फौरन जगन्नाथ भेज देते थे। 10 दिन, 15 दिन, एक महीना बराबर रहती थीं। मल-मूत्र धोने में उसके घिना न थी। कोई जाति का हो। पंडित के एक

रिश्तेदार बूढ़े आए। उन्हें पेचिस होती थी। जाड़ा था, पैरा भरे में मल पड़ा था कोई धोता न था। हम गए देखा बड़ी बदबू थी। अधिकारी से कहा। उसने आकर पैरा तक साफ़ कर दिया और सुखा दिया। गरीब आवै तो फौरन कपड़ा दे दे अपना पुराना पहन लेती थी और हर समय खुश रहती थी।

जब हम जाते थे घंटों लग जाता। भगवान की लीला बताती थी, उठने को मन नहीं होता था। 11 पर सैन करती, 2 पर उठती थी। एक घंटा अश्नान डोलडाल में लगता था, फिर जप, पाठ करती, भगवान की पूजा आरती करती, फिर कुछ मीठे का या फल का भोग लगाती। फिर 11 पर भोजन का भोग लगाती, फिर सैन कराती, फिर 3 पर नहाती, भगवान को जगाती और मीठे का भोग लगाती। फिर शाम को भगवान को ताजा भोजन बनाकर पवाती और सैन कराती। इसी में अपना समय बिताती। 38 की उम्र में शरीर छोड़ा। बिजुली बिगड़ी थी। उसका कोई भोग बाकी था। जानती थी। उसने उसे जलाने के लिये छू दिया। होनहार बलवान होती है। बिजुली ने पकड़ लिया शायद 11 बजा था। दो बार बाबू-बाबू कहा बस प्रांण निकल गए।

जगन्नाथ एक दिन आये हम से कहा ''रात 2 बजे अधिकारी आईं, बहुत सुन्दर शरीर 12 साल का मालूम होता था। कपड़े चमकते थे, सब जेवर सोने की नग जड़ी उसमें प्रकाश निकलता था हम चिन्ह नहीं पाया। उसने कहा ''बाबू! तुम चलौ। तुम्हारे वास्ते जगह वहाँ ठीक है। हम चौथे बैकुण्ठ में हैं।'' कह कर अन्तर हो गईं। हम उनकी बोली से पहिचाना। फिर कुछ दिन बाद जगन्नाथ का शरीर छूट गया। शायद 40 के ऊपर छूटा है। बहुत विस्तार है, हम थोड़ा लिखा है।

104. श्यामा माई ब्राह्मणी
गोलाघाट, अयोध्या

यह महन्त बलम्भाशरन की चेली थी। यह कई माई मेरठ की तरफ़ से आई थीं। मंत्र लिया अवध बास करती थीं। श्यामा ने भगवान का मंदिर बनवाया। और सब को हम नहीं पहिचानते हैं। मंदिर या मकान बनाया था। केराये पर रहती थी। तब हम दवा करते थे। पास में किशोरी शरन साधू रहता था उसकी दवा करते थे। दूसरे दिन देखने जाते

थे। उसी ने बता दिया। तब श्यामा की उम्र 28 साल की थी, बेवा थी, दुहाजू पुरुष के साथ ब्याही गई थी। घर का धनी था। कोई सन्तान न थी। सब हाल श्यामा ने हम से बताया। हमने कहा ''जो हम बतावैंगे वह यहाँ साधू नहीं जानते हैं किसी से न कहना'' तो कहा ''न कहूँगी।" हम ने कहा ''10 माला राम मंत्र 5 माला जानकी मंत्र का जप करौ और हजारा माला रख दो। रामायण का पाठ इस दोहा से उस दोहा तक करौ और चलते ठाढ़े, बैठे, लेटे अपनी सुरति जहाँ बताया गया है, लगाये रहो। टट्टी में बैठो तब भी सुरति लगी रहे। न मालूम किस समय में खुल जाता है। 10 पर सैन करो 3 पर उठो, डोलडाल अश्नान करौ, जप पाठ करौ। जब आधे घंटे पर जप आ जाय तब मंत्र के अक्षर प्रकाश मै (मय) सामने देख पड़ेंगे फिर जप के बाद रोज़ सुबह ध्यान किया जायगा। आठ बजे के बाद भोजन बना कर भगवान को 10 बजे भोग लग जाय। चौका बासन करके थोड़ा सैन कर लो और शाम को भगवान को कुछ ताजा परसाद बनाकर धूप आरती करके सैन कराकर ध्यान में पच्छिम मुख बैठ जाव। 10 पर सैन करौ।'' जुट गई। उसका प्रेम बाल भगवान से था। नाम की प्राप्ती, अनहद बाजौं की प्राप्ती हो गई। फिर बाल भगवान जहाँ सैन किया बस आ गये। छाती पर लेटकर दूध पीने लगे, रात भर पास रहते, खूब हँसाते, बहुत तरह का खेल करते सोने नहीं देते, नींद नहीं आने देते। जब वह डोलडाल को उठती, तब अन्तर हो जाते। किसी दिन कहती ''तुम को जाने न दूंगी, सबको बुलाकर दर्शन कराऊँगी।'' गोदी में लेकर कहती "अब कैसे जाओगे, पकड़े रहूंगी।'' तो हँस कर कहते, ''सबको न मिलेंगे। जो सच्चा प्रेमी है, उसी से हम मिलते हैं जाति कोई हो। जो हमें चाहता है तो हम उसे चाहते हैं।'' तीन वर्ष बड़ा सुख हुआ।

एक दिन संग वाली माई गांसि कर बैठ गई कहा ''तुम क्या करती हो? पहिले हजारा माला फेरती थी, पाठ करती थी।'' तो सबसे बता दिया। भगवान ने आना बन्द कर दिया। दुख से शरीर जलने लगा। मन्दिर गुरु भाई को लिख दिया। हमारे पास आई फाटक के पास बैठी थी, कमजोर हो गई थी दुख से। साँवली थी, हम पहचाना नहीं। हाथ का इशारा किया तब आई, हाल बताया। हमने कहा कि ''होनहार बुद्धि घुमा देती है, अपना तप धन जिव (जीव) बहुत कम हैं जो बचा सकते हैं।'' हम से कहा ''हम को अनहद बाजा, नाम की धुनि में वह आनन्द नहीं

है जो बाल भगवान का सुख रहा। कलेजा जल गया है। मालूम होता है अन्दर कुछ नहीं है।'' फिर जनकपुर गई, दो वर्ष रही। महारानी जी ने कहा ''तुम्हारी गती अच्छी होगी। भगवान के बिरह में शरीर जल गया। 40 में शरीर छूट जायगा। भगवान धाम में पहुंच जाओगी।'' फिर दो वर्ष बाद आई तो शरीर सूख गया था, हाल बताया। महारानी जी ने जो कहा था। "परन्तु हमें जो सुख बाल भगवान ने दिया उसके सामने सब देवी देवताओं के दर्शन, लीला, खेल में वह सुख नहीं आता है। हम क्या करैं, वह सुख भूलता नहीं है। छिन छिन भर पर आग अन्दर जलने लगती है।'' फिर समय आ गया। शरीर अगर यहाँ छूटता तो हमैं पता मिलता। जनकपुर में ही दुबारा जब गई, तब छूटा है।

105. आगरे की बुढ़िया कुरमिन

बुढ़िया का पति रेल में झंडी दिखाने पर नौकर था, दो लड़के थे। बुढ़िया को वैराग हो गया। रेल की पटरी पर से छोटी-छोटी पत्थर की बटिया चार दो दो तोला की होंगी, उठा कर एक छोटी डोलची में रख लिया और पति व दोनों लड़का और दोनों बहुओं से कहा ''हम अयोध्या जी जाती हैं, वहाँ मंत्र लेकर चारौं धाम घूमकर आवैंगी।''

सब घर के खुशी होकर कहे, ''जाओ।'' यहाँ स्वत: पहुँच गई, काली काली थी, दुबरी दुबरी, केश इधर उधर खुले थे।

हम ने राम मंत्र जानकी मंत्र बताया। पढ़ी न थी, याद हो गया। कंठी, माला, जपमाली दिया। कई दिन रही। यहाँ छोटी छोटी मूरती राम जानकी, राधेश्याम की कहीं से कई जोड़ी आ गई थीं। हमसे राम जानकी, राधे श्याम की लिया। महीना गर्मी का था। कहा, ''चार धाम घूम करके लौटूँगी।'' भगवान और हमारी दण्डवति करके चली गई। जै दिन रही तै दिन रोज सरजू नहा कर जन्म भूमि, जन्म स्थान, रतन सिंहासन, कनक भवन, हनुमान गढ़ी, क्षीरेश्वर महादेव के दर्शन करके आती थी। उसके पास 2 धोती थीं, 4 लंगोटी, एक लोटा डोर, कटोरा, एक कपड़ा एक गज का था। उसी में भगवान की डोलची, कटोरा रखती थी। एक छोटी कमरी काली 3 हाथ की थी। जहाँ जहाँ जाती थी, उसे भगवान भोजन का प्रबंध कर देते। कोई तकलीफ न हुई। 4 साल

पर लौटी। सब हाल बताया। उसके पास एक पैसा न था। भगवान की सच्ची भक्त थी। उसका जप से ही सब काम हो गया।

शंकर जी ने कहा, ''षड़ाक्षर राम मंत्र के जप से ही पाँचो चोर छठा मन शान्त हो जाते हैं। कोई मन लगाकर जपै तो उसके पट खुल जायँ।'' बुढ़िया ने शंकर जी की बात को अपने हृदय में रख लिया। सब प्राप्त हो गया। जब यहाँ आई तो हम से सब हाल बताया। हमने कहा, ''बात सही है। सारा खेल मन का है। जप पाठ पूजन कीर्तन, सेवा सब मन शान्ति के लिये किया जाता है। जहाँ मन लगा, बस जीव पार हो गया।''

फिर वह हमारे साथ 3 बजे रात्रि से 8 बजे तक बैठी रहती थी एक आसन से। जात्रा में सब मूर्ती कटोरा में धरकर नहवाकर, धोती पर मूरती धर कर, चरनोदक पी कर कटोरा धोकर रख लेती थी। फिर डोलची में धरती थी। डोलची में कोई बिछौना न था। उसका प्रेम देखकर हम कुछ न कहते थे।

जब आई थी तो उम्र 60 की थी। फिर 4 साल घूमी। हमसे कहा ''घर जाकर पति को लाऊँगी। मंत्र दिलाकर भगवान की तरफ लगाना है। लड़के काम करने वाले हैं।'' घर गई, पति को लाई। मंत्र हमने बताया। वह पढ़े थे। जप की विधि बताया, कंठी, माला, जपमाली दिया। सात दिन रहे।

बुढ़िया से हनुमान जी ने कहा ''एक तुम्हारी परीक्षा भगवान करैंगे, घबड़ाना नहीं।'' वह हम से बताया। हमने कहा, ''भक्तौं को सब प्राप्त हो जाता है तब भी कभी-कभी परीक्षा होती है। भक्त मजबूत हो जाते हैं।''

एक दिन राम जी, एक दिन कृष्ण भगवान बुढ़िया के साथ रात के समय खाट पर लेटते थे, रोज बुढ़िया से बातें होती थीं। एक दिन बड़ा लड़का बुढ़िया से कहा ''तुम माई! रात में किससे बात करती हो?'' तो कहा, ''किसी से नहीं।'' तो वह पैर पकड़ लिया, कहा ''हम दो माह से तुम्हारी बात सुनते हैं जिससे बात करती हो, उसे न देखते हैं न सुनते हैं। आज बिना पूछे पैर न छोड़ेंगे।'' तो बुढ़िया ने बता दिया। तब रामजी कृष्णजी ने आना बन्द कर दिया। हमारे पास पत्र आया। हमने कहा, ''बिना भगवान के हुक्म किसी को बताना न चाहिए। कान पकड़ौ, उठौ बैठौ।" जब यहाँ से पत्र गया तब बुढ़िया कान पकड़ा, उठी बैठी माफ़ी माँगा। फिर नहाया, कुछ खाया–नहाना, भोजन सब छोड़ दिया था। जब पत्र गया तब ऐसा किया। फिर भगवान राम कृष्ण रोज

आने लगे, और घर वालों को ऐसा सुला देते थे कि सुबह आँख खुलती थी, ऐसा बुढ़िया का प्रेम था।

बुढ़िया ने 75 में शरीर छोड़ा। जानकी जी राधा जी ने बुढ़िया से कहा ''तुम्हारा समय आ गया, 3 दिन बाकी हैं।'' बड़ी खुश हुई, दण्डवत किया, दोनों महारानी सर पर हाथ धरा, अन्तर हो गई।

जब समय आ गया, बुढ़िया ने सबसे कहा कि भोजन बन जाय, भोग लग जाय 10 बजे, फिर हमैं भगवान के यहाँ जाना है। सब तैयार हो गया, भोग बुढ़िया ने लगाया, सब ने पाया, चौका बरतन सब हो गया। 2 बजे विमान आया। शंकर जी हनुमान जी प्रगट हो गये। दण्डवति किया घर में सब से कहा ''रोना नहीं, यह मृत्यु लोक है। क्या हमेशा किसी के माता-पिता जिन्दा रहते हैं? जिसका जिस देवता से प्रेम हो, जितनी देर मन लगै उतनी देर जप पाठ पूजन कीर्तन करै। हमारे भगवान की खूब सब मिलकर सेवा करना तो यहाँ भी सुखी रहौगे। फिर कहा देखो "शंकर जी हनुमान जी खड़े हैं, अब हम जा रही हैं।'' फिर बोलीं ''जै जै सीता राम की, जै जै राधे श्याम की'' शरीर छोड़ दिया। शंकर जी दाहिनी बाँह पकड़ी हनुमान जी बाईं बाँह पकड़ी विमान पर बैठा दिया, विमान चालक ले गये। सब घर के लोग खुश रहे। भगवान ने सब का मोह खींच लिया था, सब चुप रहे। ऐसी बुढ़िया सच्ची भक्त थी। हमारे पास उसके पति ने पत्र लिखा था। हमने थोड़ा लिखा है।

106. जालवन (जालौन) जिला की बूढ़ी ठकुराइन

यह बड़े धनी के यहाँ विहाई (बियाही) थीं। भगवान से प्रेम था, मकान के पीछे सड़क थी। दो मंजिल पर ऊपर रहती थीं। साधू ब्राह्मण सड़क से निकलते तो हाथ जोड़ती झरोखा से और भगवान से प्रार्थना करतीं "हम को कब साधू, ब्राह्मण के दर्शन अच्छी तरह होंगे।" कोई संतान न थी। पति इनके भाई भतीजों की जिमींदारी में आसक्त थे, किसी देवता से प्रेम न था।

60 की उमर में अवध आईं। प्रह्लाद दास के मंदिर में ठहरीं। जालवन के और आस पास के भक्त वहाँ के सेवक थे। वहाँ नीचे बड़ा

सर्द है। महन्त हनुमान दास ने कहा, ''ऊपर मकान के बनवावो तो ठीक रहेगा।'' ऊपर बड़ा लम्बा कमरा है उस पर बनवाया, जीना लगाया गया। साधु, ब्राह्मण भोजन किये। सरीर साँवला था दोहरी देह की मोटी, बल बड़ा था, रहने लगीं। पति आ गये। वे सावन, कातिक चैत में आते थे, थोड़े दिन रहते थे। फिर महाराज जी और हम पूरब आधे फरलाँग पर रहते थे।

जगन्नाथ दास ने ठकुराइन से सब बता दिया था। महाराज के पास आई, महाराज से सब हाल बताया। महाराज ने कहा, ''कल भोजन करके 3 बजे आना।'' जब महाराज ध्यान में रात्रि में बैठे, तब आवाज आई, "यह ठकुराइन बड़ी शुद्ध सच्ची जीव है। आप इनको जप ध्यान संधै बता देना।" जब दूसरे दिन आई तब महाराज ने उनको जप ध्यान बताया। शाम को पश्चिम मुंह बैठी। सात दिन बाद नाम खुल गया, फिर पाँचौ तत्व दरसने लगे। बाजा सुनने लगी, लै दशा होने लगी। सब देवी देवता दर्शन देने लगे। सातौं कमल खिल गये, नासिका से सुगंध आने लगी। छइऊ चक्र चलने लगे। कुंडलिनी जग गई, शुभ लोक दिखा लाई। जहाँ जौन देवता बैठे हैं सब देख लिया।

महाराज जी से रोज-रोज सब बताती थी। शाम को आती दो घंटा रुकती। महाराज रोज कथा में जाते थे। दो घंटा कथा मनीराम की छावनी में होती थी। महाराज जी से नाना प्रकार की लीला बताती थी। आंसू चलने लगते, फिर मस्त हो जाती, तो बोल नहीं पाती। जब चित्त की बिरती उतरती तब बोल पाती। दो माह के अन्दर ही राम जानकी की छटा छबि सिंगार सामने छा गई। उस सोभा में दसा विचित्र हो गई। पलक बहुत कम पड़ती थी, टकटकी लगी रहती थी। 5 साल वहाँ रोज आती। हम 6 माह पहिले उनसे आए थे। फिर महाराज यहाँ आये तो रोज इक्का पर आती। महाराज के पास बैठती। वही भगवान की लीला बरनन करती, भोजन करती, शाम को जाती। यहाँ भी 5 साल से ऊपर शायद आई। फिर एक दिन न आई। हमें बुलाया, 3 बजे हम गये, तख्त या पलँग पर बैठी थी। दंडवति किया। हम स्वत: महाराज का चरणोदक और सब तीर्थों का जल लेते गये थे, दिया। कहा ''गुरु भाई जी! क्या लाये हो?'' हमने बताया तो बहुत खुश हुई1 एक छटाक था, सब पी गईं। हमने पूछा "आज आप गोकुल भवन नहीं गईं'' तो कहा, ''आज हमारी जात्रा रामधाम की है, इसी से नहीं गईं। उनके पती भी करीब बैठे

थे। हम से कहा देखो इनको किसी देवता से प्रेम नहीं है। इनका मन भाई भतीजों में और जिमींदारी व धन में आसक्त रहता है। यह सब नाशवान चीजें यहीं रह जायंगी। इनकी कौन गती होगी।'' वै सब सुनते थे, बोले नहीं। हम से कहा विमान आ गया, महाराज जी आ गए, सर पर दाहिना हाथ धरे हैं। हमारी दाहिनी बाँह पकड़ा, कहा, ''हम जा रहे हैं, महाराज की खूब सेवा करना।'' फिर बड़ा प्रकाश हुआ 5 मिनट तक कमरा में रहा। आँखें चकाचौंध हो गईं। बाजों की आवाज सुना और प्रकाश के मारे और कुछ न देख पाया। दिवाल के भल थी, देखा पलथी लगाये बैठी थी, सरीर में उदासी न थी। फिर हमने उनको सीधे लिटा दिया। सब आश्रम के लोग जो पास परोस थे, आ गये। सब सामान ठीक हो गया। 5 बजे सब लोग मिलकर सरजू ले गये, घड़ी शंख बजाते, पैसा मखाना लुटाते। हम भी कँधा लगाये, सब दाह कर्म कराकर तब देर में गोकुल भवन आए। फिर उनका दसवाँ तेरहीं हुआ बादि में भंडारा हुआ। वे रुपया एक हजार भंडारे का पहिले जमा कर दिये रही। तब बड़ा मद्दा था। 20 सेर पक्का गेहूँ एक रु. का था, घी एक सेर का था, दूध 10 सेर का था, किशमिश 5 सेर, छोहारा 6 सेर का था। किशमिश, छोहारा, मसाला आम की कली भिगोकर पीसकर तब चीनी पुदीना धनियाँ अदरख, काला नमक और जीरा भूनकर यह चटनी बनी। तसमई, खस्ता, कचौड़ी, पूड़ी, मालपुआ बहुत अच्छा भंडारा हुआ, बड़ा स्वाद आया था। हम भोग लगाये थे। तब यहाँ हम दयाल दास अहीर, पं. राम किशोर रोज भोजन को आते थे और कोई न था।

70 या 72 साल की उम्र में शरीर छूटा था।

107. पंजाब के अमीर का लड़का (का) विराग

वह 20 साल की उम्र में अवध में आया। सरजू किनारे झोपड़ी बनाया। महीना बैशाष का था। उसमें रहने लगा। एक लोटा-डोरि कटोरा, एक गज कपड़े की झोरी बना ली थी। उसमें कटोरा रखकर मधुकरी मांग लाता था। थोड़ी एक बार पाता। 2 टुकड़े कपड़े के पहिनने में गांठि तक होते। चार लंगोटी थीं। एक टुकड़ा बिछाने का कपड़े का था, 3 हाथ लम्बा। पंजाब में किसी साधू से राम जानकी का मंत्र लिया था। जप

बहुत करता था। अपने गुरु से कहा ''हमें बाल राम के रूप का ध्यान बता दो।'' तो गुरु ने कहा'' हम ध्यान नहीं जानते। तुम अवधपुरी जाव वहाँ बहुत साधू हैं। पूछना, शायद तुम्हारा काम हो जाय।''

सबेरे सरजू नहाकर जप करता, 11 पर मधुकरी को जाता। दूसरे समय जन्म भूमि, जन्म स्थान, रतन सिंहासन, कनक भवन, हनुमानगढ़ी, क्षीरश्वेर जाता। साधून से पूछता तो कहते ''हम जुगुल सरकार के उपासक हैं बाल भगवान के नहीं।'' एक दिन हमारे पास आया। शायद किसी ने बताया हो या स्वतः आया हो। हाल बताया। हमने कहा, "जप बहुत न करो। एक माला ब्रह्म गायत्री, 10 माला रामजी के, 5 माला महारानी जी के। 11 बजे सैन करौ, 2 पर उठो। अस्नान करके अपना नेम करौ, फिर ध्यान करो। किसी से कुछ न कहना। जो देखना, सुनना हमसे बताना। यहाँ यह मार्ग कोई नहीं जानता है। फिर गया। नेम टेम से करने लगा। तीसरे दिन बाल राम प्रगट हो गये। ध्यान में आँखें बन्द किये बैठा था तो भगवान ने उसके गाल चाट लिया। बस ध्यान टूट गया। भगवान गोद में बैठ गये। वह श्याम रूप परम सुहावन देख कर मस्त हो गया। आँसू गिरने लगे। फिर एक घंटे बाद भगवान अन्तर हो गए। 15 दिन भगवान ने बड़ा खेल किया जो अलेख अकथ है। एक दिन उधर नहाने रामबालकदास, बड़ी छावनी के गए। उनसे बता दिया। वे बोले ''तुम रामायण का पाठ किया करो।" फिर उसी दिन एक नामी साधू पंडित हैं उनसे बता दिया। उन्होंने कहा "तुम राम मंत्र जपा करो।'' भगवान ने आना बन्द कर दिया। हमारे पास आया रोने लगा। हाल पूछा तो बताया। हमने कहा ''तुम से कहा था कि किसी से न बताना" तो कहा, ''मारे खुशी के हम से रहाइश न हुई। हम नहीं जानते थे कि भगवान नाखुश हो जायेंगे।" हमने कहा ''यह तप धन है। इसी की बदौलत भगवान के यहाँ पहुँच होती है। जो नाशवान धन है संग नहीं जाता। उसे लोग छिपा कर रखते हैं किसी से नहीं बताते। तो वह सुनकर और रोने लगा। हम से कहा ''हम चित्रकूट चले जायँ शायद भगवान वहाँ मिल जायँ।" हमने कहा ''हम रोकते नहीं हैं हो आवो।'' गया। 15 दिन रहा। दुख से दुबला और हो गया, सारा शरीर पीला हो गया। हमारे पास आया। हमने नीम पर की गुर्च का काढ़ा बना कर मिश्री छोड़ कर दोनों समय एक-एक चम्मच (1 तोला) देने लगे। मूंग की दाल

छिलकेदार, पुराना चावल, गाय का घी, गाय का दही देना शुरू किया। 15 दिन में ठीक हो गया। परन्तु भगवान का दुख उसे बहुत हो गया। 3 बजे रात को महाराज जी हम ध्यान में बैठे थे। गोस्वामी जी प्रगट हो गए। कहा ''उस लड़के को भगवान का बिछोह शरीर जला रहा है। उसे घर भेज दो। कह दो कि जो नेम जप का बताया है वह करै, और मानस का पाठ मास परायण करे और सुबह जो स्तुति होती है– 'भये प्रगट कृपाला दीन दयाला' वाली स्तुति करै। शाम को 'श्री राम चन्द्र कृपाल भजु मन' वाली करै। मास परायन दो माह करके वही ध्यान सुरति शब्द का शुरू कर दे। फिर भगवान आ जायेंगे।'' हमने उसे 50 रु० देकर घर भेज दिया। वहाँ जाकर सब शुरू कर दिया। उसके पिता बहुत खुश हुए। कहा ''भय्या! हमने कहा था यहीं भजन करौ। बहुत बड़ा मकान है, सैकड़ों आदमी रह सकते हैं। तुम्हारा अन्न जल रहा जाना पड़ा। अच्छा हुआ जो अच्छे भक्त की संगति भगवान ने दिला दी।

पत्र उसके पिता का बड़ी दीनता का था। फिर दो माह बाद लड़के का पत्र आया। जो गोस्वामी जी ने कहा था भगवान प्रगट होकर लड़के को खुशी कर दिया। रोज़ बाल खेल दिखाने लगे। जब लड़के को यहाँ से भेजा था तब वहाँ उसने सब हाल बताया था तो पिता ने 100 रु० हमारे पास भेजा था। तब हम राम घाट पर रहे।

108. कलूट की स्त्री
दुराही कुआँ अयोध्या

चौराहा मालिन के मंदिर के पीछे बकर-कसाव रहते हैं, हमारे यहाँ चिकवा कहते हैं। कलूट की औरत बीमार पड़ी थी। 7 बजे शाम को आया, कहा ''आप देख लें बहुत तेज बुखार है। हम गये तो देखा, कहा ''आज ही आया है तुरन्त दवा देना ठीक नहीं है कल देंगे।" वहाँ से आकर हम नहाना भूल गए, हाथ पैर धोकर हम भगवान की आरती करने लगे। भगवान बड़े खुश देखा, फिर महाराज से कहा ''आज हमने बड़ी भूल की, अश्नान न किया, रोगी को देखकर, फिर हाथ पांव धोकर आरती किया। भगवान को खुश देखा।" महाराज ने आँखें बन्द करके कहा ''गेहुँवा रंग है, मुंह गोल है, निरछल है। भगवान ऐसे जीव से खुश रहते हैं।

गोस्वामी जी ने कहा है–

"निर्मल मन सो जन मोहिं पावा।
मोहिं कपट छल छिद्र न भावा ।।"

फिर हम गए, दवा दिया, परहेज बताया। वह दोनों प्रांणी माँस मछली नहीं खाते थे। उनका छोटा भाई भलूट खाता था। बाहेर बकरा एक जगह कटते थे। वहाँ से माँस लाता, बेचता, खाता था। कलूट ने कहा ''अब माँस बाहेर ही बेच लिया करो, घर न लाना। तुम अलग घर में रहते हो, बनाने से उसका असर घर भर में जाता है।'' उसका भाई मान गया, घर लाना बन्द कर दिया। कलूट कलकत्ते में किसी सेठ के यहाँ कपड़ा बेचने पर नौकर था। साल में 3 या 4 बार आता था। हमारे लिये दो किसिम के दो टुकड़े दो दो गज के रेशमी लाया। हमें दिया। हमने लाकर महाराज को देखाया। महाराज ने अवध बिहारी, शिव प्रसाद को बुलाकर दिला दिया।

कलूट की औरत की उम्र 26 साल की थी। हमसे कहा ''हमैं कुछ बतावो।'' हमने कहा ''तुम सुभान अल्ला का जप 10 तसवी जपौ।" धीरे-धीरे मन लगाकर जुट गई। भोजन हल्का चैत से क्वांर तक मूंग की दालि, गेहूं या जौ की रोटी साग तरोई, टिन्डा परवर, पालक, जीरा घी से दाल साग छौंक दिया जाय। वैसा करने लगी। वह सरल चित्त थी। फिर ध्यान बताया। उसे राम जानकी, राधे-श्याम, विष्णु-लक्ष्मी, गिरिजा शंकर, हनुमान जी, गणेश जी, षटमुख, काल भैरव के दर्शन होने लगे। सब बताने लगी। हमारे लिए एक छप्पर छवाया। एक दीवाल थी, एक और बनवाई गई, किंवार लगाया गया। एक कमरी धोकर सुखा कर एक बांस मंगा कर बँधा दिया, उस पर कमरी टाँग दिया। जब हम जाते तो ताला खोल कर उसी कमरी पर बैठते तो खूब भगवान की लीला बताती और हंसती। कहती ''देखतै बनता है थोड़ा कह पाती हूँ। सब बात बताने की शक्ती नहीं है जो बता सकूँ।'' हम 15 मिनट को जायं तो घंटों लग जाता था, उठने का मन न होता था। ऐसी-ऐसी लीला बताती थी। उसके भाई फ़ैज़ाबाद से आये कहा ''चलौ'', तो कहा ''हम नहीं जायंगे, तुम कूड़ा कबाड़ खाते हो, मारते, बेचते हो'' तो भाई ने कहा ''क्या तुम भगत हो गईं? तो कहा ''हाँ'' फिर सब भाई और घर के भक्तिन कहने लगे।

''भरथ जी, लखन लाल, शत्रुहन का खेल, कृष्ण भगवान के साथ होता था तो कृष्ण भगवान दौड़ धूप में सब को हरा देते थे। भरत जी

की पीली धोती की किनारी में सोने का गोटा लगा था। भरत जी आँख बन्द किये बैठे थे। लखन लाल, शत्रुहन लाल जी भी बैठ गए तो मुरली धर ने चुपके से एक हाथ गोटा चीर कर बंशी में लपेट लिया। भरत जी ने आँख खोलीं तो देखा कि खड़े हँस रहे हैं, मुरली में गोटा लपेटे हैं तो भरत जी उठकर दौड़े, फिर लखन लाल, शत्रुहन जी भी दौड़े। मुरलीधर चक्कर काटते ऐसे ढंग से निकल जाते थे कि कोई पकड़ न पाते। कभी दौड़ में कहते कि पकड़ौ तब तुम को जानैं कि बड़े बहादुर हो। सब देवता हँसते, बड़े खेल दिखाते।

सीता जी, राधा जी लक्ष्मी जी ने एक दिन हम से कहा, 'तुम को कुछ लोक दिखावैंगे।' रथ लाईं उसमें तीन खंड थे, रथ वाला ताज लगाए बड़े सुन्दर वस्त्र धारण किये था, 4 भुजा, 4 सफेद घोड़े मचे थे। हमारे सूक्ष्म शरीर को निकाल लिया, हमैं कुछ सुधि न रही। लेकर चारौं बैकुण्ठ, गोलोक, साकेत, काली-दुर्गा लोक, इन्द्रपुरी, कैलाश, ब्रह्माजी का लोक, बहुत कुछ दिखा कर फिर शरीर में प्रवेश कर दिया। हम उठ कर बैठ गईं। फिर दुर्गा जी, काली जी आईं। सोने के जेवर थाल में लाईं। देने लगीं। कहा, 'इन्हें पहिनो', तो हमने कहा, 'हम नहीं लेंगी। तो अन्तर हो गईं।' दूसरे दिन एक थार में कई किसिम की मिठाई लाईं कहा ''खाव''। हमने कहा, 'हम नहीं खायेंगी। महाराज ने मना कर दिया है।' फिर अन्तर हो गईं। फिर एक दिन मूंग की दाल चावल की खिचड़ी लाईं और कई कौर खिला दिया। हम कुछ बोल न सकीं। बड़ा स्वाद था। पानी भी लाई थीं, पिला दिया, कहा, 'खूब भजन करौ,'" जब हम गये तो बताया। हमने कहा ''तुम परिच्छा में पास हो गईं। अगर ज़ेवर या मिठाई पर मन चलता तो फेल हो जातीं।''

फिर हमने कहा ''अब तुम हमारा कुछ काम कर दिया करौ। हमें पूजा-भंडार-रोगिन का काम पड़ता है, सब जाति की औरतें आती हैं, उनकी देखभाल सिख लो,'' बता दिया। प्रेम से करने लगी। उसके भजन में और तरक्की होने लगी। एक दिन हमें बुलाया, शायद सुबह 9 बजा होगा या शाम को 3 बजा हो, ठीक याद नहीं है। (बताया), ''हमसे आकर मोहम्मद साहेब ने कहा 'तुमने तो ऐसा भगवान से प्रेम किया है कि ऐसा कोई कोटिन में कर सकता है हमने न सुना था न ऐसा देखा था।' सर पर हाथ धरकर अन्तर हो गए। फिर हनुमान जी आए कहा 'तुम्हारे ऊपर

ऐसी कृपा हुई जो इतने देवी देवता हर समय सामने रहते हैं। ऐसा किसी युग में न हुआ है, न होगा। तुम्हारी भाग्य का बरनन कोई नहीं कर सकता है।' फिर अन्तर हो गये'' जब हम गये तो खाट पर बैठी थी। हमैं देखा तो आँसू चलने लगे। हमने पूछा-''काहे आँसू चलते हैं?'' तो कहा ''हमारा समय आ गया है हमैं आप कब कहाँ मिलौगे?'' हमने कहा, ''तुम्हारा भाव बहुत हम पर है। जहाँ रहौगी वहीं मिलैंगे?'' हमने आंसू उसकी धोती से पोछ दिया और कहा ''अपनी सुरति लगावो जहाँ बताया है'' तो मुसकरा कर कहा ''महाराज जी का चरनोदक, सब तीर्थों का जल जो आपने दिया है रोज़ लेती हूँ। हमैं पिला दो।'' हमने लाकर पिला दिया। बस सुरति लगाया और शरीर छोड़ दिया। हमने खाट पर लिटा दिया। और फिर लोग आ गये। सब ठीक करके मनी पर्बत पर ले गए। वहाँ सब ज़मीन उनकी है। बहुत कबरें हैं। हम भी साथ गए। माटी सब दफ़न की बेरा थोड़ी देते हैं। 30 की अवस्था में शरीर छोड़ा था।

इलाही चाचा ने हम से कहा था कि 'बेटा! नाम की धुनि जब खुल जाती है तो वह तार हर समय जारी रहता है। जो कोई मन को संभारते हैं वहीं सुनते हैं। परमात्मा के यहाँ जीव हवा रूप होकर तार पर सवार होकर वहाँ पहुंच जाता है और फिर रूप धारन कर लेता है। विमान इतनी जल्दी नहीं जा सकता है। फिर भगवान उसे अपने ऐसा रूप बनाकर सिंहासन पर बैठारते देते हैं।'

कलूट की पत्नी नाम की धुनी पर सवार होकर गई। उसका नाम खुला था और तमाम देवी-देवता देखने लगी। नाना प्रकार की लीला देखती थी। फिर देवी देवता हर समय अपने सामने देख पड़ने लगे।

हमने थोड़ा लिखा है, भूल जाते हैं। कहती थी, "छोटे-छोटे सफेद हाथी आते हैं एक सूंढ़ि के। वै हमारे कान के पास सूंढ़ि लगाकर आदमियों की तरह बोलते हैं और बड़े-बड़े हाथी कई सूँढ़ि के आते हैं, तीन सूंढ़ि के, पांच के, सात के। सब बातें करते हैं भगवान की।

शेरः- खूब खूबा में पड़े हो धन के मद में यार तुम।
तन बशर जब छूटिहै होगे गरद गुब्बार तुम ।।

एक दिन शंकर जी ने कलूट की इस्त्री से कहा था जब उसका सब काम हो गया "अब तुम एक माला राम मंत्र जपा करो।" उसने हमसे बताया तब हमने उसे राममंत्र बताया।

109. फिक्कू चिकवे की पत्नी
ग्राम घैला, जिला सीतापुर

हमारे गांव से पश्चिम एक मील पर घैला गांव है। वहाँ उसका मकान है। उसके शायद दो लड़के और एक लड़की थी। उम्र 30 या 35 की होती। बहुत गोरी पतली पतली थी। उसके वैराग हो गया। वह घर से नैहर चली गई। पूरब की तरफ चार कोस बाबूपुर उनवाय है, वहाँ उसका घर है और गुरुद्वारा है। गुरु का नाम झल्लर शाह है। हम उनको जानते हैं। 2 घंटा बातचीत हुई। वै नूर को मानते हैं। निरगुन का प्रकाश स्वरूप को नहीं मानते हैं। सिर्फ पढ़ कर सुनाते हैं, साधन कुछ नहीं जानते हैं। वह वहाँ जाकर एक मसजिद है और इधर-उधर कबरे हैं, वहीं मसजिद में बैठ गई। उसे समाधि हो गई। एक माह बाद उतरी तो झल्लर शाह आए, कहा, "अब तुम हमारे यहाँ चलो, भोजन बनावो। हम भी खायँ तुम भी खाव। लोग जहाँ तहाँ से दर्शन को आने लगे। 12 वर्ष रही। बड़ा लड़का आता जाता था। एक बार कहा, "आप अब वहाँ चलो। गांव के लोग बाग में झोपड़ी बना देंगे और सब दर्शन करेंगे। भगवान की प्रेरना से वह गांव में आई। सब हिन्दू लोगों ने प्रेम से झोपड़ी बनवा दिया और बारी-बारी भोजन देने लगे। एक बार थोड़ा खाती थी और अपने इष्ट में सुरति लगाए रहती थीं। लोग दर्शन को जाते तो सब के हाथ जोड़ती थी, कहती, "जिसका जप पाठ पूजन कीर्तन सेवा में मन लग जाए उसके पट खुल जायं। बिना मन लगे शुद्ध-अशुद्ध काम नहीं होता है। पहिले नेम टेम से अपना काम करौ फिर जब प्रेम आ जायगा तो नेम टेम छूट जाएगा, शरम भरम भाग जाएगी।"

नानक जी ने कहा है:-

दोहा:-नानक नन्हें ह्वै रहौ जैसी नन्ही दूब।
आई गौवैं चर गईं, दूब खूब की खूब ।।

सबै पदारथ तुम्हारे पास हैं। तुम उस रीति से चलते नहीं हो।

पद:- पिया तेरे पास भुलानी कहूँ अन्ते ।।1।।
परगट देखि कूप मंह परते, भूलि पहाड़े चढ़ते ।।2।।
बिना प्रतीति प्रीति साहब सों, कोटि जन्म पचि मरते ।।3।।
मूरख दूध दुहै चलनी मां, पीटि कपारे करते ।।4।।

बिरथा दोष करम का लावैं, अपनी भूल न तकते ।।5।।
है कस्तूरी पास मृगा के, मृग ढूँढत कहुं अन्ते ।।6।।
गुरु बिना पशु भरम भुलाने, पार न पाव शब्द ते ।।7।।
गुरु नानक दया सतगुरु की, साधु सन्त के बल ते ।।8।।
जनन माँझ उबरै सोइ प्रानी, सुरति लगी चरनन ते ।।9।।

चौरासी लाख योनि में मरने पैदा होने का चक्र जारी रहता है। सब मनुष्य देखते हैं तिस पर भी कुछ ध्यान नहीं देते हैं, बृथा कर्म का दोष देते हैं। दूसरों को समुझाते हैं, भाई अच्छे काम का अच्छा फल होता है। खराब का खराब फल मिलता है। आप उस पर अमल नहीं करते हैं। यह पुरानी कहावत है :-

"चकई कि चक धम, चकई की चक धम, चकई की चक धम।"
(चौरासी के चक्कर का अर्थ है)

परमारथ-परस्वारथ दोनों में दया-धर्म-विश्वास-सच्चाई की जरूरत है।"

12 या 18 साल गुरुद्वारे में रही। फिर शायद वहाँ से ससुराल को आई। 12 या 18 तक रही। 70 के अन्दर ही शरीर छोड़ा है। बड़ा कड़ा साधन किया है। बड़ा विस्तार है। हमने थोड़ा लिखा है।

110. बिहारा सिंह की धर्म पत्नी
गोकुल भवन, अयोध्या

73 की उम्र में हम से राम जानकी का मंत्र लिया। रोज जप करती थीं और मन ही मन सीताराम सीताराम किया करती थीं। उनके सबलबाई बहुत बिगड़ गई थी। हमारे सामने एक आंख खदर खदर चुरती थी। और ऊपर उतरती थी। वह फट गई। एक बची। भगवान की दया से हमारे पास दवा थी । सेवन-परहेज किया, रुक गई। फिर उनके दो माह बाद चारों भाई चारों महारानी, हनुमान जी सामने हो गए। वह ध्यान नहीं कर पाती थीं। शिर दर्द करने लगता था। हमने कहा कि कोई हानि नहीं होगी। तुम सरल चित्त हो। तुम्हारा प्रेम भगवान में अटूट है। गोस्वामी जी ने कहा है:-

"रामहिं केवल प्रेम पियारा।"

हर साइत प्रसन्न चित्त रहती थीं। जब छोटी गोकशी हुई थी तब हम चार साल गोस्वामी जी के चबूतरे पर कथा गोकशी के तीसरे दिन बैठार दिया था। पं. राम किशोर से भागवति, गीता, रामायण, दास बोध, गौरांग चरित्र, एकनाथ का, तुकाराम का, गोरख जी का, ज्ञानेश्वर का, नरसी मेहता का, स्वामी (रामानंद) जी का, शंकराचार्य जी का, 108 उपनिषदों का, कई संगिताओं का, 18 पुराणों का, और याद नहीं है। 4 साल कथा खूब ठीक तौर से हुई थी। वह वहाँ रोज आकर कथा सुनती थी। बिहारा सिंह भी आते थे। उनको फिर बड़े-बड़े अनुभव होने लगे। सब देवी देवता दर्शन देने लगे। भगवान कृष्ण का रहस देखने लगीं। अकेले में हमसे खूब बताती थीं। साल बाद जो झाँकी सामने रहती थी वह बन्द हो गई 15 दिन तो बहुत दुखी थीं। हमने कहा, "भक्तों की परिक्षा होती है। तुम अपने काम में जुटी रहो। मौलाना रूम ने कहा है:-

"भक्त हजारौं दफे छाने जाते हैं तब अनमोल हीरा हो जाते हैं।"

फिर जब झाँकी वैसे ही हो गई तब हमसे कहा "आपने ठीक कहा था, वही बात हुई।" एक दिन हम से कहा कि हमारा शरीर आपके सामने छूटता तो हमारी गती हो जाती। हमने कहा, "गती तो जियतै में हो गई। चारौं सरकार, चारौं महरानी, हनुमान जी हरदम सामने रहते हैं। जो हजारौं वर्ष तप करते थे उनको कहीं झलक होती थी, ऐसा नहीं होता था। तुम बड़ी भाग्यवान हो।" 77 की उम्र शुरू हुई तो पेचिश शुरू हुई। हमें बुलाया। हम इक्का लेकर गए। कंचन भवन में थीं। बिहारा सिंह की कई हजार की जेवर थी। साल भर पहले दे दिया था। सोने के कड़ा पिता के दिये थे। मुलायम सोना था। बिहारा सिंह ने हाथौं से निकाल लिये। हम से कहा, "देखो यह हमारे पिता के दिये हुए थे।" हमने कहा, "तुमको अब जरूरत नहीं है। हम यहीं लाये और दक्खिन के कमरे में रक्खा। गंगा जल कानपुर से आ गया था। एक टब में भरा था करीब ढाई मन होगा। वह सिर्फ जल लेती थीं। और दिन में 10 या 12 दस्त आते थे। रात में नहीं आते थे। उनका सब काम हम करते थे। अपना से कुछ नहीं कर पाती थीं। जिस दिन शरीर छूटना था हमसे कहा, "हमैं मूंग की दालि पुराने चावल की खिचड़ी थोड़ी खिला दो।" हमने बनाकर अपने हाथ खवाकर जल पिलाकर मुंह पोछकर तखत पर लिटा दिया। फिर कहा कि एक पान हमैं खवा दो। चौराहे से मंगाकर खवा दिया। फिर बिहारा सिंह को पता दिया। आये, उनके साथ कई लोग आए। 3 बजे वे नेत्र

खोलकर राम राम करने लगीं। हम तखत पर उनके सामने बैठे थे, तो बिहारा सिंह ने कहा, तुम जाती हो हमैं भी ले चलो। हमने कहा, "तुम वैसा काम करौगे तो वहाँ पहुंचोगे।" बस राम राम करते करते शरीर छोड़ दिया। फिर तुरन्त बली भगत के यहाँ से बांस कटाकर सब ठीक करके सरजू ले गए। हमने भी कांधा लगाया था। फिर उनका दसवां, तेरहीं यहीं किया। भंडारा अच्छा हुआ। 6 मन गेहूं, रामजानकी मोहल्ला वालों का कार्ड लेकर पिसा दिया और 200 रु० दिया। 400 रु० रतलाम का एक भक्त बिहारा सिंह का था, दिया। पूरी कचौड़ी-खस्ता लड्डू, साग, सब बना, भोजन सब को कराया और कोढ़िन को भेजा। सौ कोढ़ी औरत-मर्द थे। सब पदारथ भेजा था। फिर बरसी यहीं हुई। लाला अर्जुन लाल जी फैजाबाद के सात सौ रुपया नारायण के यहाँ उनके धरे थे। वे लाकर हमें दिये। बरसी ठीक हो गई। भंडारे और बरसी के भंडारे में बड़ा स्वाद आया, बड़ी बरक्क़त हुई।

111. बाबा राम प्रसाद तथा भक्त ब्राह्मण
बड़ी जगह, अयोध्या

महाराज जी बताते थे कि बाबा राम प्रसाद जी और दो मूर्ती साधू किसी भक्त के यहाँ जाते थे। रास्ते में एक सत्यनामी ब्राह्मण के गांव में निकले तो वे रोक लिये। हाथी पर थे, उतरे, चौपारि में आसन लगाया गया। फिर पूरी, साग, दूध, शक्कर का भगवान का भोग लगाया गया और बाबा के भगवान उनके यहाँ धर दिए गए। हाथी था उसके चारे का प्रबंध किया गया। बाबा, उनके संग के साधू भोजन किये, फिर घर के लोग भोजन किए। शाम को बाबा साधू भोजन नहीं करते थे। दूध शक्कर का भोग भगवान का लगा। आरती हुई, फिर भगवान वहीं शयन हो गए। सुबह बाबा साधू नहा कर नेम किए। सालिकराम ब्राह्मण ने नहवाकर, भोग लगाकर आरती किया। फिर दोपहर को पक्का भोजन बना। भगवान का भोग लगा। फिर भगवान, जहाँ ब्राह्मण के ठाकुर जी थे, वहीं पधारे गए। बाबा साधू भोजन किये। महीना गर्मी का था। घर के लोग भोजन किये। बाबा चौपारि में शयन किये। वे महाराज बाबा के पंखा हाकने लगे। 4 बजा तो बाबा ने कहा, "अब हम दूसरी जगह जायेंगे।" हाथी आया। उस पर गादी कसी गई, गलीचा छोड़ा गया।, जब सब ठीक हो गया फिर

बाबा हाथी पर बैठे और कहा "हमारे सालिकराम जी लाओ।" महाराज जाकर लाए, तांबे का गोल डिब्बा था। उसमें कई छेद थे, हवा जाने के लिए। साफ़ कपड़े में बाँधकर दिया। बाबा ने भगवान को दाहिन हाथ से लिया और कहा, "अब जाते हैं।" ब्राह्मण ने दंडवति किया, बाबा को बिदाई सफेद वस्त्र दिया। साधुन को बिदाई कपड़ा दिया। हाथी उठाने से भी नहीं उठा तो बाबा ने कहा, "यह भगवान की लीला है, यह ब्राह्मण की सेवा में रीझ गए। इसी से हाथी नहीं उठता है।" बाबा ने ब्राह्मण को भगवान का डिब्बा दे दिया, कहा, "अब यह तुम्हारे घर रहेंगे। तुम्हारा भाव हमसे अधिक है इसी से हाथी नहीं उठता है। ब्राह्मण भगवान को ले कर घर आए तब हाथी उठा। बाबा फिर चले। महाराज पीछे, और दोनों साधू चले। महाराज जब एक फरलाँग गए तो बाबा ने कहा, "बच्चा! तुम लौट जाओ। तुमसे भगवान बहुत खुश हैं। जब तक तुम्हारा परिवार रहेगा, तब तक भगवान तुम्हारे घर रहेंगे।" बहुत कहने पर महाराज घर लौटकर गए।

जब अवध आए आश्रम में गए तो पुजारी रामचरनदास, जिनको सब करुणासिंधु कहते हैं, जानकी घाट पर उनका मंदिर है, पूछा "महाराज जी! सालिकराम जी कहाँ हैं? क्या आप भूल गए।" तो बाबा के आँसू गिरने लगे। कुछ देर बाद बाबा पुजारी से बताने लगे तो पुजारी रोने लगे। यह बात अवध में फैल गई। बाबा के पास साधू आने लगे। बाबा ने सबको जो भगवान ने लीला की, सुनाई। सब के सब चुप हो गये। बाबा ने कहा, "जिसका अटूट प्रेम है, उसी के भगवान हैं। मन काबू हो गया, माया चोर शान्ति हो गये, दीनता आ गई, प्रेम की नदी उमड़ पड़ी, ज्ञान ध्यान भान सब उसमें मिल गये, लै दशा हो गई, जियतै मुक्ति भक्ति हो गई, यानी जियतै सब हो गया। पट खुल गये। जियति तरनि हो गई, जियति मरनि हो गई, जियति सरनि हो गई। देखो, बड़े-बड़े घर बारी परिवारदार भक्त हो गये, और हैं। आगे भी होंगे जो धन-मकान जमीन होते हुए उसमें लवलीन नहीं हैं। भगवान में प्रेम है, जीवों पर दया है, वही माता-पिता के पुत्र सच्चे हैं। वही भगवान की गोद में खेलैंगे। तुम सब साधू भेष धारण करके अपने इष्ट में प्रेम नहीं करते हो, इसी से दर्शन नहीं देते हैं। जप, पाठ, पूजन, कीर्तन, कथा, सेवा जिसमें मन लग जाए उसी से गती हो जाए। मान अपिमान से अलग भये बिना भक्त नहीं हो सकता है, संसारी सौक भक्त को गिरा देती हैं। भजन की बहुत शाखा हैं।

जो सच्चा जीव है तुम्हारे दरवाजे पर आया, पियासा है, एक गिलास पानी पिलाया तो वह हमेशा ख्याल राखैगा। उसकी जान में तुम्हारा कोई नुकशान न कर पावैगा, अगर भोजन तुमने करा दिया तो मौके पर सर कटा देगा, तुम्हारी हानि न होने देगा। इन सबकी बड़ी ऊंची गती होती है। जो लोग घटिहा होते हैं वे तुम चाहै तैसी नेकी करौगे, वे घाटि काम नहीं छोड़ते हैं। जिस पतरी में खाते हैं उसी में छेद करते हैं। जिस डार पर बैठते हैं, उसी को काटते हैं। वे ऐसे नक्षत्र में पैदा हुए हैं उनसे शुभ काम नहीं होता है उनके माता-पिता भी नर्क जाते हैं। संगति का परभाव बड़ा खराब है। अच्छी संगति से अच्छी बुद्धि हो जाती है, वह सीधे बैकुंठ जाता है। खराब संगति से बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है। वह नर्क जाता है। उसका भजन उपरी है। दुनियाँ क्या जानै, इसी से गती नहीं होती है। ईश्वर सबके मन का हाल जानते हैं।

हमारे ऊपर चारौं महाराज, चारौं महारानी बड़ी दया किया। महारानी ने माथे पर बेंदी लगाई जिस पर सत्यनामी ब्राह्मण के यहाँ से न आये। वह ब्राह्मण हमसे बहुत ऊँचे भगवान के प्रेमी हैं। यहाँ आवैंगे।" बाबा ने पत्र लिखाया। वह आए। तब सब साधूओं को खबर दी गई। ब्राह्मण ने सब की दंडवति किया। बाबा के ठाकुर जी भी संग लाये थे। सब ने दर्शन किया। छै दिन रहे। बाबा ने कहा, "चैत-सावन-कार्तिक में आया करो जब तक तुम्हारा शरीर है।" फिर वे आज्ञा के अनुसार आते रहे। संग भगवान लाते थे। बाबा के भगवान के साथ रहते। पूजन पुजारी करते थे। जब जाते तो साथ ले जाते और जहाँ जाते संग ही ले जाते थे। भगवान की बहुत बड़ी दया उन पर थी। गांव का नाम और उनका महाराज जी बताते थे, हम भूल गए। पचासौं साल की बात है।

112. गोकुल भवन में राधा कृष्ण की प्रतिष्ठा

अयोध्या

जब महाराज रामघाट से यहाँ (गोकुल भवन) आये तो भंडारा हुआ। थोड़े दिन बाद लाला कन्हैयालाल अपने राधा कृष्ण दे गए। एक-एक फुट के थे, और जानकी घाट का साधू राम लाल दास राम जानकी दे गया। वै बाबा राम प्रसाद दास जी के पुजारी थे। राम प्रसाद

दास जी के चारौं सरकार, चारौं महारानी जहाँ के बने थे वहीं के राम चरनदास के उतने ही बड़े बने थे। उनको लोग करुणासिन्धु कहते थे। जानकी घाट पर उनका मंदिर है। हम मज्जन करके पूजा करने लगे। फिर पौशाकें बनी। लाला के ठाकुर यहाँ तीन साल रहे। फिर अपने ले गए। उनको रोज़ भोजन हम देते थे, कई पोशाक हम बनवा दिये।

एक दिन महाराज बैठे थे तो छोटे स्वरूप उनके सामने आ गए कहा, "हमारी मूर्ति बनवाकर पधार दो।" महाराज जी ने हम से कहा, "जाओ, मूर्ती बनाने वाले को बुला लाओ।" हम गये, साथ लाये। महाराज जी ने उससे बताया कि इतनी इतनी बड़ी हों। वह बनाकर महाराज जी को दिखाने लाया। एक एक हाथ में एक एक मूर्ती बीच में साधे था। दोनों महाराज के सामने गिर पड़ीं तो उसने उठाया। नाक-मूंह पर कुछ चोट न आई, खरंजा लगा था। महाराज जी ने कहा, "वशिष्ठ जी की दंडवति किये हैं, चोट कैसे लग सकती है।" उसने फिर महाराज को दिखाया और कहा, "राधा जी कुछ अधिक भगवान से वज़न में हो गई हैं।" महाराज जी ने कहा, "महाराज से महारानी वजन में कम होना परमान है।" हमसे कहा "चावल लावो' हम चावल लाए। कहै, "सवाचौं सवाचौं (यानी तौलौ)।" तौले गए तो राधा जी न उठीं, भगवान उठ गए। तब महाराज जी ने फिर कहा, "सवाचौं।" तब राधा जी आधा पाव कम हो गईं। सब लोग देखकर चुप रहे।

पं० शिव दयाल आए, प्रतिष्ठा हुई। सब को भोजन दिया गया, दक्षिणा और कपड़ा। सब काम खुशी से हुआ।

113. लाला सूरज प्रसाद
जिला उन्नाव

उन्नाव में लाला सूरज प्रसाद के यहाँ भागवत बहुत दिन की मानी पड़ी थी। हमसे कहा तो हमने कहा, "हम पंडित अपने भक्त को धर्मपुर से बुलाते हैं, आश्रम से दो कोस है।" पत्र लिख दिया। पं. सहदेव आ गए। हम, पं० राजेन्द्र दास, सहदेव, राम जानकी, अध्यापिका, सूरज प्रसाद घर भर, रामापुर उनकी ससुराल को चले। उनको सब उनके ससुर लिख गये थे। मकान पक्का, बाग, खेती काफ़ी है। वहीं से गल्ला आता है। जाकर दुमंजिले पर ठहरे। सब सामान ठीक हो गया।

अध्यापिका के कृष्ण भगवान, जो यहाँ हैं, वह भी साथ गए। अध्यापिका उन्नाव में लड़कियों के स्कूल में पढ़ाती थीं। वहीं से साथ गए थे।

भागवत शुरू हुई। उनके यहाँ एक ब्रह्म रहते थे। वह रोज़ भागवत सुनने आते थे। 18 दिन वहाँ रहे। रोज़ परसाद पीपल के नीचे धरा देते थे। अवध बिहारी की पत्नी भी गईं थीं। सब खुशी से हो गया। ब्रह्म की गती हो गई। भंडारा हुआ।

वहाँ से उन्नाव आए। फिर कानपुर से सखा जी आए, उनके पिता छोटे लाल आए। इतवार था। स्कूल गए, भगवान के दर्शन उनको कराने। राम जानकी साथ थीं। भगवान को देखकर सखा ने कहा, "बड़े सुन्दर हैं।" फिर वहाँ से आसन पर आए। दूसरे दिन अध्यापिका आई और कहा, "आप ने हमारे भगवान का तेज खींचि लिया है।" हमने कहा, "हम तो कुछ नहीं कहा, दंडवति करके चले आए।" तो कहा, "हम से कहते हैं कि अब हम गोकुल भवन में रहेंगे, छोटे रूप से तुम्हारे पास रहेंगे। तुम ले जाओ। तब हमने पं० राजेन्द्र दास से कहा, "अब भगवान को ले जाकर, राधा जी बनवाकर, उनकी प्रतिष्ठा कराकर पधार देंगे।" पंडित जी ले आए। कारीगर को दिखा कर राधा जी बनवाये। कारीगर ने कहा, "राधा जी भगवान से वज़न में अधिक हैं।" पंडित जी ने कहा, "हमने तुम से कहा था कि कुछ कम होना चाहिये।" उसने कहा, "गलती हो गई।" तब पंडित जी ने कहा, "अब तौले जायँ तो पता चले।" भगवान के सामने दोनों खम्भों में जो सरियाँ लगी हैं, उसमें तराज़ू बाँधा गया। एक तरफ़ राधा जी एक तरफ़ भगवान बैठाय गए तो राधा जी उठी नहीं। तब बाँट, सेर, आध सेर, एक पाव, आध पाव, एक छटांक, आधी छटांक चढ़ गये तब भी राधा जी न उठीं तो दोनों मूर्तियाँ उतार ली गईं। कुछ देर बाद पंडित जी ने कहा, "ऐसा कौतुक हमने नहीं देखा, फिर तौले जाँय।" तौले गए तो राधा जी एक पाव घट गईं। फिर प्रतिष्ठा हुई, भगवान के साथ पधारी गईं।

पंडित ने हमको लिखा। हमने कहा, "गोविन्द की गति गोविन्द जानैं।" फिर हमने कारीगर से बाल कृष्ण बनवाकर एक सिंहासन बहुत बढ़िया मिल गया था, उसमें बैठाकर भेजा। लिख दिया। "भगवान छोटे रूप से आ रहे हैं। तुम्हारे पास छोटे रूप से रहेंगे, तुम से कह दिया था।" फिर उनकी पूजा (अध्यापिका) करने लगीं। बड़े सुन्दर हैं।

114. पंजाब के ब्राह्मण

उनके सात लड़के, एक लड़की थी। उनकी पत्नी भजन करती थीं। उसने कहा, "अब थोड़ा घूम कर तुम भजन कर लो नहीं तो रह जाओगे।" वै घर से चल दिये। 7 वर्ष घूमे। चारों धाम घूमे। बड़ा कष्ट उठाया। नेम नहीं छोड़ा। भगवान की दया हो गई।

उनका प्रेम राम जी से था। कहीं मंत्र नहीं लिया था। सब प्राप्त हो गया। यहाँ आए। दो माह रहे। हमने जो जो पूछा सब भगवान ने बताया था तब बता दिया। फिर गीता प्रेस गए। वहाँ से ग्वालियर गए। हमको लिखे। हमने कहा कि 'अब तुम घर चले जाओ। तुम्हारा काम हो गया है।' तब घर गए।

कानपुर प्राग नारायण के मंदिर में जो ब्राह्मण मैनेजर थे, शायद तीन भाई थे। सब की पत्नी, मैनेजर की माता हनुमान जी का पाठ करती थीं। उनके पट खुल गए थे। उनकी दशा विचित्र हो गई थी। उनको हमारे पास उन्नाव लाए तो कहा, "यह तो हंसती हैं, कभी रोती हैं। पागल हैं, क्या बात है?" तो वह भजन का सब हाल बताने लगीं। जहाँ शरीर में जो देवता बैठा है सब बता दिया। किसी से मंत्र नहीं लिहे थीं। हमने कहा, "इनकी सेवा करौ, हनुमान जी की दया से इनके पट खुल गए हैं।" तब फिर ले गए।

115. बलरामपुर का एक ब्राह्मण
राजा दिग्विजय सिंह के समय का हाल

बलरामपुर का एक ब्राह्मण रोज़ पाटेश्वरी देवी के दर्शन को आता था, शायद सात या आठ कोस है। बहुत दिन रहा।

एक बार जब जा रहा था तो रास्ते में पैर में ठोकर लग गई, गिर पड़ा और चोट लग गई। करीब 60 की उम्र थी। उसने सोचा कि आज दर्शन का नेम छूट गया अब दर्शन न होंगे। तब भगवती प्रगट हो गईं कहा, "अब तुम्हारे दरवाज़े पर जो बरगद का पेड़ है, उसमें हमारी जोति जगमगावैगी, तुमको वहीं दर्शन हुआ करेगा।" तब फिर धीरे-धीरे लौट गया। वहीं दर्शन होता रहा।

जब पेड़ गिर गया तो राजा ने उसी जगह पत्थर के पाँच शिवाला बनवाये। बीच के शिवाले में भगौती का गोलाकार बनवा दिया। और

शिवालों में और देवता पधरा दिये। चारों तरफ़ चहार दिवाली है। दो शेर पत्थर के बड़े-बड़े सामने खड़े हैं जैसे पाटन भगौती में है। भगौती का नाम बिजुली देवी है। जो लोग पाटन भगौती को जाते हैं मुंडन कराने वह लौटकर यहाँ दर्शन करके जब घर जाते हैं।

राजा ने बहुत अच्छी इमारत बनवाई है। हम दो बार वहाँ गए हैं, परसाद चढ़ाया है। बड़ी मान्यता है।

116. माता दीन ब्राह्मण

ज़िला सीतापुर, गाँव वजेहरा हमारे गाँव से 4 कोस पूरब है। वहाँ पर एक मातादीन ब्राह्मण रहता था। वह बदमाश व भँगेड़ी था। 40 की उम्र में बदमाशी छोड़कर एक धोती के दो टुकड़े पाँच-पाँच हाथ के, एक लोटा, एक कमरी पांच हाथ लम्बी ढाई हाथ चौड़ी, जो तब एक रुपये की अच्छी मिलती थी, लेकर आया। महीना गर्मी का था। उसे किसी ने महाराज जी को बताया था। हम से हाल कहा। महाराज जी से राम जानकी का मंत्र लिया। दो माह रहा।

फिर चारौं धाम घूमा। फिर आया, तब एक माह रहा। फिर चित्रकूट गया। वहाँ कामता नाथ की परिकरमा लोग करते हैं। यह लंगोटी लगाए लम्बी परिकरमा पेट के बल पहुढ़ (लेट) कर करता था। कामता नाथ पर से एक शेर उतरा। लोग भागने लगे। वह शेर मातादीन के पास आकर आँखों से आँखे मिलाकर लौट गया। राजा पन्ना ने सुना तो 3 रुपया रोज़ भाँग का बंधान कर दिया, मंदिर बनवा दिया, भगवान पधर गए, दस मूर्ती रहने लगीं।

मातादीन शरीर में राम रज लगाए, दाढ़ी बाल थे, सिर्फ लंगोटी पहने टहला करते थे। जो कोई आता उसके लिए गुफ़ा साफ़ कर देते, सेवा कर देते थे। एक गुफ़ा साफ़ करने गए तो जब तिबारा आए तो बताते थे कि उसमें चार चरन बने थे। देखा तो कहा, "मालूम होता है कि यह चरण रामजी व लखन लाल के हैं। हम नहीं साफ़ करेंगे।" दूसरा गुफ़ा जाकर साफ़ किया।

एक दिन पन्ना नरसिंह के चोला चढ़ाने गए। एक साधू साथ गया। मंदिर में साधू चोला चढ़ाने लगा। तो बाहेर शेर गड़गड़ाने लगा। मातादीन ने कहा कि तुम केवाड़ बन्द कर लो, हम बाहेर जाते हैं। साधू ने बन्द कर

लिया। यह बाहेर आए। शेर इनके पास आकर लौट गया। अब इस बात का शोर हो गया कि भूरिया बाबा को शेर दो बार मिला और लौट गया।

फिर सतयुग-त्रेता-द्वापर के बड़े-बड़े संत, देवी-देवता दर्शन देने लगे। इनका शरीर 64 में छूटा था। बड़ा पापी था पर भगवान ने अपना लिया।

117. लाला हरगोविन्द प्रसाद सक्सेना रिटायर्ड जेलर, टकसाल, फैजाबाद, तथा उनकी धर्मपत्नी

लाला हरगोविन्द प्रसाद सकसेना की धर्मपत्नी हनुमान जी की भक्त थीं। चैत शुदी 7 शाम को भगवान की आरती करके जप करने बैठ गईं। पीछे जलती हुई बाती उनकी धोती में लग गई। जब जलने लगीं तो खड़ी हो गईं। जेलर करीब के कमरे में थे। आवाज दिया तो आये और कुछ बुझाया। उनके हाथों में कुछ तकलीफ़ हो गई। छोड़ दिया। वै बैठ गईं, खूब जलने लगीं, बोली नहीं, न चिल्लानी, बेहोश हो गईं। सुबह अष्टमी को शरीर छूटा। पता आया।

अष्टमी की रात को जेलर ध्यान में बैठे तो देखा उनको और उनसे कहा "तुम कहाँ चली गईं हमैं छोड़कर?" तो उन्होंने कहा, "भगवान लेने आए तो चली गईं।" तो जेलर ने कहा, "हमारी कौन दशा होगी?" तो कहा "तुम्हारा भी इन्तज़ाम ठीक हो जाएगा।"

जेलर का प्रेम गायत्री से था। उसके जप ध्यान से उनको बोध हो गया था। फिर जेलर की पत्नी का दसवाँ तेरहीं क़ायदे से किया गया। उसके बाद जेलर शायद तीन या चार साल पर अपने लड़के रमेश के पास धनबाद गए। वहीं कुछ बीमार हुए। फिर शरीर छूटा। उनको पहले फ़ैजाबाद लाए, फिर यहाँ लाए, फिर सरजू किनारे ले गए, जहाँ उनकी दाह क्रिया हुई।

सीतापुर से रिटायर हुए थे। ईमानदारी से काम करते, किसी से पैसा न लेते और न कैदियों पर सखती करते। मरने के पहले अपने लड़के रमेश से कहा, "जो आया है सो जायगा। हमैं मरने की चिन्ता नहीं है।" शरीर 85 की उम्र में छूटा। सब काम काज उनका कायदे से किया गया।

118. लाला राज नारायण सकसेना, कानपुर, की बहन मालती

कानपुर रामबाग में लाला राजनारायण सकसेना मय परिवार के रहते थे। उनकी बहन मालती 18 साल की थी। उसकी शादी के लिए सब सोच रहे थे। वह हमारे पास लखनऊ आई। तीन दिन रही। वह शंकर जी की भक्त थी। हमसे कहा, "हमारी शादी के लिए घर के लोग सोच रहे हैं। रुपया है नहीं, कर्ज़ा लेना चाहते हैं। हम क्या इसीलिए पैदा हुई हैं कि हम सब को कष्ट पहुँचावैं। हम शादी न करेंगी। हमैं बहुत दुख हो गया है।" हमैं अवध आना था। स्टेशन पर हमैं सवार कराकर कानपुर गई।

वहाँ भगवान के कपड़े जल गए थे। सबसे पूछा कि कैसे जले? तो कहा कि शायद आरती की बत्ती गिर गई हो, इससे जले हों। किसी ने ठीक न बताया।

एक दिन राजनारायण की लड़की से कहा, "हम ऊपर ध्यान करने जाती हैं लौट कर तुमको पढ़ावैंगी।" ऊपर भगवान पधरे थे तो जाकर कुछ दूर बैठकर ध्यान करने लगी। अशुद्ध थी। किवाड़ उड़काये थी। उसके गर्भाषय से अग्नी प्रगट हो गई, कपड़े जलने लगे। कुछ समय बाद राजनारायण की पत्नी गईं। जब किवाड़ खोला तो देखा कि बैठी जल रही है। धुवाँ कमरे में भरा है, तो सब को आवाज़ दिया। घर भर दौड़े आए। जब ध्यान छूटा तो कहा, "महाराज जी आ गए।" उसके गर्भाषय में कपड़ा लगा था। उसे उसकी माँ या राजनारायण की पत्नी ने खींचि लिया। अन्दर से आगी की लपक निकलती थी। उसे योग अग्नी कहते हैं। फिर लय दशा हो गई। सब लोग उसे अस्पताल ले गए। वहाँ चित्त की बिरती उतरी तो कहा "महाराज आ गए।" सुई लगाई गई। फिर शरीर छूट गया। गंगा में पधारा।

राजनारायण आए हाल कहा। हमने कहा, "वहीं जलने देना था अस्पताल काहे ले गए?" तो कहा, "लोग कहते कि हम लोगों ने जला दिया इसलिए ले गए। शादी की चरचा लोग जान गए थे। बदनामी होती।" हमने कहा, "जैसी भगवान की मरज़ी होती है वैसा होता है। हमारे सामने बहुत सी सती हुई हैं, पर कुँवारी सती एक यही हुई। शायद किसी युग में हुई हों।"

हमसे कहा था कि 'हमारा नाम मालती ठीक नहीं है और नाम रख दीजिए।' हमने कहा "तुम्हारा नाम मातेश्वरी हमने धरा है। इसमें सब देवी आ गईं।" बहुत खुश हुई।

119. सन्त दूलन दास जी
जिला रायबरेली

सन्त दूलन दास जी का कुछ हाल लिखते हैं। वै अपने घर से रोज़ जगजीवन साहेब के दर्शन को जाते थे। 30 मील कोटवा है। दर्शन करके रोज़ लौट आते। शरीर से बड़े बली थे। सीना उठाकर चलते थे।

एक दिन जगजीवन साहेब ने कहा, "बच्चा! भक्त को सीना उठाकर न चलना चाहिए न इधर-उधर देखना चाहिए। गर्दन झुकाकर नीची निगाह से चलना चाहिए।" वै यह सुनकर गर्दन झुकाकर बैठ गए। 6 माह बैठे रहे, न तो उठे, न कुछ खाया पिया। उनके पट खुल गये, राम जानकी सामने हो गए। जितना भजन का सांगोपांग है सब प्राप्त हो गया। भगवान ने शक्ति दे दिया। जगजीवन साहेब ने पीठ ठोंका उठाया, अश्नान किया, प्रसाद पाये।

पहले यह तमाखू खाते थे तो जगजीवन साहेब ने पूरन दास के हाथ एक गड़िया (एक गड्ड) तमाखू भेजा। वे ले गए। उन्होंने पूछा, "क्या लाए हो?" तो कहा, "साहेब ने परसाद भेजा है।" तो लेकर सब तोड़-तोड़कर खा गए। महीना जाड़े का था। जगजीवन साहेब के पसीना चलने लगा। भक्तों ने कहा, "महाराज! क्या बात है?" तो बोले "हमने जो तमाखू भेजा था उसे वह परसाद भाव से तोड़ तोड़ कर निगल गए। उसी के कारण गर्मी चढ़ गई है।" तब से उनका नाम दूलन दास धरा गया। पहले का नाम दुलारे दास था।

उनके अनुभव के बहुत पद हैं। बहुत ऊँचे सन्त हुए हैं। जगजीवन साहेब के घराने में 164 सिद्ध हुए हैं।

120. श्री सन्त भगवान दास
भैंसाना, जिला रायबरेली

यह भैंसाना के थे। इनके माता-पिता की समाधि कच्ची बनी है। यह जानकी दास जी के शिष्य थे। अपने गुरु के साथ अवध आए। सरजू अश्नान को गए। सरजू जी दिब्य रूप से निकलीं कहा "बच्चा! तुम बद्रीकाआश्रम को जाओ।" गुरु के पास आए, पूछा, तो उन्होंने कहा "जाओ।"

यहाँ मुख्य-मुख्य दर्शन करके चल दिये। महीना जेठ का था। वहाँ पहुंचे। मंदिर में खड़े होकर हाथ जोड़ा, लम्बी दंडवति करना चाहते थे पर खड़े पर ही शरीर छूट गया। वहाँ के पंडों ने कहा, "ऐसा कोई भक्त हमारे सामने नहीं आया न आगे आया होगा। अगर आता तो वह पुरानी बात छिपी न रहती।" सबने बड़े प्रेम से उठाकर जल में प्रबाह किया।"

भगवानदास जी के कुछ पद हमारे पास हैं। इनकी हनुमान ग्यारहीं (स्तोत्र) बताई हुई है। हनुमान जी से इनका बड़ा प्रेम था। जब यह ज़िन्दा थे तो किसी पर कष्ट आए और वह कहै "दुहाई भगवान दास जी के हनुमान जी की।" तब हनुमान जी प्रगट हो जाते थे और उसका संकट दूर हो जाता था। हनुमान जी को सब देवी देवता मानते हैं।

121. बलदी दास औघड़

पिपरौला, जिला हरदोई, के बलदीदास औघड़ धोबी के बालक ज़िन्दा समाधि लिया है। हकीम भूधर दास तेली जब 15 साल के थे तब बलदी दास 25 की उम्र में समाधि लिया है। हकीम ने 98 की उम्र में शरीर छोड़ा। शरीर छोड़े 30 साल हो गए। बलदी दास का थोड़ा हाल हमसे बताया था:-

जो कोई मुर्दा जलाने जाता तो कहते, "साले! दाहिनी टाँग न जलना हम खायेंगे।" तो सब जल जाता टाँग रह जाती। फिर जाकर उसे खाते। नदी में मुर्दा बहा जाता हो तो कूद पड़ते। उसे घसीट लाते। कुछ खाकर नदी में छोड़ देते। हकीम जी ने कहा, "बाबा! यह खाने में कैसा लगता है?" तो कहा, "मंत्र से जो इच्छा होती है वही बन जाता है। गन्दी चीज़ हम नहीं खाते हैं। मालपुआ, पेड़ा, बर्फ़ी, रसगुल्ला, गुलाब जामुन, खाजा, इमरती, जलेबी, मोतीचूर के लड्डू, मलाई, रबड़ी, माल दही आदि। तुम

लोगों के देखने में नहीं आता है। शंकर जी को अर्पण करके खाते हैं। शंकर जी राम जानकी जी को अर्पण करते हैं। राम जी पाते हैं, फिर महारानी जी पाती हैं, फिर शंकर जी पारबती जी। फिर परसाद भैरव जी और गणों को बटता है। तब हम पाते हैं।"

किसी ने उनसे पूछा, "आप कौन दूध हैं?" कहीं कहीं दूध जाति को कहते हैं। तो कहा, "दूध तेरी हेठि में है।" तो उसे रोज़ तीन दस्त दूध के आने लगे। जीवन भर तीन दस्त दूध के आते रहे।

शाहबाद गए तो, लोगों से कहा, "यहाँ राजा बलि का तालाब है।" तो खोदा गया। तालाब निकला। उसमें पत्थर लगा था। एक राजा के संतान न थी तो उसने अपने पंडित को भेजा। पंडित आए कहा तो उनको बहुत गाली दी। वै हाथ जोड़े खड़े खड़े रहे तो कहा, "तुम रानी के पेट में पैठोगे।" तो पंडित ने कहा, "हाँ।" तब कहा, "जाओ अपनी औरत से पूछ लेना। तुम्हारे दो लड़के हैं।" पंडित गए और औरत से पूछा। उसने कहा, "राजा के यहाँ से घर भर का खाना कपड़ा मिलता रहे तो कोई हर्ज नहीं है। बाबा ने जैसा कहा है तुम वैसा करो।" पंडित का शरीर छूट गया। रानी के गर्भ रहा। पंडित से बाबा ने कहा था कि राजा से कह देना कि लड़का होने के 15 दिन पहले रानी को लेकर आ जायँ। उसी समय राजा रानी को लेकर आए। पंडित की औरत व दोनों लड़के साथ आए। जब पंडित पैदा हुए नार सुधा बाबा उन्हें गोद में लेकर बैठे और बोले, "पंडित! रानी के पुत्र हो गए?" तो पंडित हंसने लगे। बाबा ने पंडिताइन से कहा, "तुम को मर्द की जरूरत नहीं है। तुम्हारे दो पुत्र हैं।" राजा से कहा, "इनको काफ़ी ज़मीन रुपया दे दो, मकान बनवा दो जिसमें तुम्हारे न रहने पर इनका काम कई पुश्त तक चलता रहे। अगर ऐसा न करोगे तो यह पंडित मर जायगा।" राजा ने सखर लिया।

फिर बाबा ने रानी का दूध पिया और कहा, "सिर के बाल बनवा दो।" किसी के बाल छोटे होते हैं, किसी के बड़े। नाऊ आया तो उसने कहा, "बाल हम न बना पावेंगे।" बाबा ने कहा, "बीच में एक रुपया भर छोल दो, फिर एक माह बाद बाल पूरे बन जायेंगे।" उसने छोल दिया। उसके बाद नार काटा गया। बाबा ने कहा, "शहद सारे बदन में लगाकर गर्म पानी से नहला दो। कोई रोग न होगा।" वैसा ही किया गया। फिर लड़के को पांच दिन बकरी का दूध दिया गया छठे दिन छठी हुई। माता का दूध दिया गया। फिर राजा ने घर पर बरहा किया खूब धूम से।

जब लोग बहुत तंग करने लगे तो कहा, "हम समाधि लेंगे। समाधि पक्की बनी। जब सूख गई तो शाहजहाँपुर के सेठ आए, नाऊ आए। शंकर जी गुप्त रूप से बैठे थे। सिर में अस्तुरा लगा दिया। फिर नाऊ ने मूँड़ दिया। अश्नान किया। विमान पर बैठे, चारों तरफ़ घुमाया, रुपया अशर्फ़ी लुटाया। फिर समाधि पर आकर बैठ गए। शंकर जी ने अजर अमर कर दिया, सब कहीं जाने का बरदान दिया। फिर चुन दिए गए। अब तो मंदिर बन गया है। जब हम 18 साल के रहे तब समाधि रही।

हमने पूछा था, "अघोड़ मंत्र कौन है?" तो कहा, "राँ-यह बीज मन्त्र है। इसी में सब शक्ति-शक्तिमान आ गए। शंकर जी इसे बीज मन्त्र कहते हैं। महिम्न स्तोत्र शंकरजी के सब स्तोत्रों से अच्छा है।

पद:-आपै अपना खेल पसारा ।।1।।
आपै देखैं आप देखावैं आपै करत विचारा ।।2।।
आपै निर्गुण आपै सर्गुण आपै ध्यान समाधि को धारा ।।3।।
आपै नाम रूप हैं आपै आपै मातु पिता पति दारा ।।4।।
आपै मित्र भ्रात सुत भगिनी आपै सुता नात परिवारा ।।5।।
आपै राम रावणौ आपै आपै आप को करत संहारा ।।6।।

आपै कृष्ण कंस हैं आपै आपै शिखा पकरि के मारा ।।7।।
आपै आवैं आपै जावैं आपै आप को करत उबारा ।।8।।
आपै काल अकाल आप ही आपै ज्ञान भानु उजियारा ।।9।।
आपै अगम अपार आप ही आपै अकह अकथ संसारा ।।10।।
आप अथाह अलेख आप ही आप अनूप अमित सुख सारा ।।11।।
आपै स्वामी आपै सेवक आपै दाता औ भिखियारा ।।12।।

आपै शिष्य आप ही सतगुरु आपै भव औ खेवन हारा ।।13।।
आपै पूजा पाठ यज्ञ जप आपै कहैं करैं परचारा ।।14।।
आपै अपने रूप पै आशिक तन मन प्रेम करत एक तारा ।।15।।
आपै अपने नाम को सुमिरैं आपै बने शब्द रंकारा ।।16।।
आपै बाजा आप बजावैं आपै गाय रिझावन हारा ।।17।।
आपै ताल धुनी स्वर आपै आपै खुशी करैं जयकारा ।।18।।

आपै साँकरि आपै कुण्डी आपै ताली कुलुफ़ किंवारा ।।19।।
आपै सुख दुख आपै सहते आपै जान अजान उदारा ।।20।।

आपै मुक्ति भक्ति तप आपै आपै मुद मंगल करतारा ।।21।।
आपै नर्क स्वर्ग बनि बैठे आपै तामें करत बिहारा ।।22।।
उत्पति पालन परलय आपै आपै सब कुछ नीक बिकारा ।।23।।
बल्दी दास कहैं बिन जाने मानि लेंय ते बड़े लवारा ।।24।।

122. नारायणदास कुर्मी
गाँव हतिमापुर, जिला सीतापुर

यह बाबा रामप्रसाद जी व पल्टू जी के समय में हुए हैं। हमारे यहाँ से सात कोस है। बड़े परिवारदार थे। ज़मीन बहुत थी। हनुमान जी का मंदिर है। साधू, ब्राह्मण, गरीबों की सेवा करते थे। सेवा धर्म से नाम हो गया था। दूर दूर से साधू आते थे। जब तक मौज होती थी तब तक रहते थे। हनुमान जयन्ती बड़ी धूम से होती थी। नदी करीब थी। उस पर नाव से सब आते। एक पैसे में दो आदमी। एक दफ़े मेला के समय केवट ने कहा, "पैसा मूर्ती लगेगा।" नारायणदास को पता मिला तो गए। केवट से कहा, "जैसे हमेशा लेते, वैसे पैसा ले लो। एक पैसे में दो मूर्ती पार होती हैं।" तो केवट ने कहा, "नहीं, पैसा मूर्ती लेंगे।" तब नारायण दास ने नदी के हाथ जोड़े और कहा, माता! तुम मेला के समय गाँठ भर हो जाया करो।" बस इतना कहकर नदी में हल गये तो जल गाँठ भर रह गया। सब से कहा, "नारी-नर उतर आवैं।" दस वर्ष के लड़के-लड़की और सौ वर्ष तक के गाँठ भर पानी हलकर मेला करने गए। हर बार मेला के समय गाँठ भर पानी रह जाने लगा।

साधूओं ने कहा, "आप गुरुमुख हो जाओ। इतनी सेवा करते हो। अब 60 की उम्र हो गई है, अभी तक गुरुमुख नहीं हुए।" तो कहा, "भगवान सब का समय बाँधे हैं। समय पर गुरु मिल जायेंगे।" एक बूढ़े साधू आए। नारायण दास से कहा, "हैजा की बीमारी ज़ोर से फैल रही है। कोई जवान मरे तो बताना। हमारी तरफ़ हैजा-शीतला के मरे हुए लोग जमीन में गाड़े जाते हैं। जब बीमारी बन्द हो जाती है तब उसका कर्म दसवाँ तेरहीं की जाती है।" एक ठाकुर का लड़का 22 साल का मरा। नारायण दास खेत देखने आए थे। लोग मिट्टी देकर चले गए तब नारायण दास ने बूढ़े साधू से बताया। बूढ़े साधू नारायण दास के साथ चार आदमी लेकर गए। मिट्टी हटाई गई। नारायण दास से कहा,

"आपने हमारे साथ बड़ा उपकार किया। अब हम भजन कर लेंगे। विधि हम जान आए हैं।" बस बूढ़े साधू अपना शरीर छोड़कर मुरदा के अन्दर समा गए और बाहेर आकर कहा, "इस बूढ़े शरीर को मूँद दो।" फिर नदी में नहाकर नारायण दास के यहाँ आए और भौंरी लगाया, भाँटा भूना, भरता बनाया, नमक, काली मिर्च मिलाकर भोग लगाकर खाया। कुछ देर आराम किया, हनुमान जी के दर्शन किया, फिर नारायण दास से मिले और कहा, "हम जाते हैं। खूब भजन करेंगे।" नारायण दास ने चरनों पर सिर धर दिया। तो बाबा ने कहा, "हम तो तुम्हारे रिणी हैं हमेशा के लिये।" बस चल दिये।

एक दिन नारायण दास खेत देखने जाते थे तो एक तुलसी का नया हीरा वहाँ किसी का गिर गया था, झोरी में से या किसी तरह गिरा हो, तो उसे उठाकर "जै रघुनाथ" कहकर गले में बाँध लिया। उनके यहाँ साधू रोज़ ही आते जाते थे तो बोले, "आप कहाँ गुरुमुख हुए। हीरा गले में दीखता है, तिलक नहीं है।" तो कहा, "हीरा हमें रघुनाथ जी ने दिया है।" साधू बोले, "सब को गुरु देते हैं। इसको रघुनाथ जी का दिया बताते हैं। इसका निर्णय अवध में होगा।" नारायण दास सब को भोजन कराकर संग चल दिये, सामान सब भोजन का बँधा दिया, अपना बाँध लिया। महीना गर्मी का था, पैदल चल दिये। दस कोस रोज़ चलते थे। जहाँ रुकते थे लोग भोजन का आग्रह करते तो कहते, "सब के पास बँधा है।" सिर्फ लकड़ी लेते थे। जब अवध आए तब सरजू अश्नान किया, भोजन बनाया, पाया, फिर आराम किया। 4 बजे दर्शन जन्म-भूमि, जन्म-स्थान, रतन सिंहासन, कनक भवन, हनुमान गढ़ी, क्षीरश्वेर जी के किये।

फिर संग के साधू कई जगह गए हाल इनका बताया, तो राम प्रसाद पल्टू जी ने कहा, "जिसकी खुशी हो वह जाय हम किसी का अपमान करने नहीं जायेंगे। भगवान उसी के हैं जिसे विश्वास है।" तब अवध में 400 साधू थे। करीब 100 साधू गए कहा, "इनका हीरा जिधर सरजू की धार है उधर फेंका जाय। अगर इनके पास आ जाए तो ठीक समझा जाए। कहते हैं कि रघुनाथ जी ने दिया है। कभी भी ऐसी बात सुनने में न आई थी। आज देखैं सच है या झूठ।" एक साधू को हीरा नारायण दास ने गले से छोर कर दिया कहा, "धार में छोड़ आओ।" साधू ने जाकर धारा में फेंक दिया। नारायण दास किनारे पर बैठ गए। हाथ जोड़कर प्रार्थना किया और कहा:

पद:- सरजू फेरि देव मोर हीरा ।।1।।
यह हीरा हम माँगे पायन सूर्य बंश के तीरा ।।2।।
जो माता तुम हीरा न दैहो विनय करब हरि तीरा ।।3।।
दास नारायण की यह अर्ज़ी तब धरिहै मन धीरा ।।4।।

फिर ऐसी तरंग आई कि हीरा पास आ गया। उठाकर बाँध लिया। सब साधू लज्जित होकर चल दिये।

नारायण दास को प्रेम समाधि हो गई। सरजू जी ने प्रगट हो कर त्रिकुटी पर दाहिने हाथ का अंगूठा रख दिया। प्रेम का बास नेत्रों में है। समाधि टूट गई। उठकर दंडवति किया। नेत्रों से शीतल जल गिरने लगा। सरजू जी ने अपने दिब्य वस्त्रों से जल पोंछा। पट खुल गए। कहा, "तुम्हारा सब काम हो गया। लोक रीति को मानना चाहिए। तुम राम प्रसाद जी से गुरु दीक्षा ले लेना और अपने भाई-भतीजे लड़कों को भी गुरुमुख करा देना। वै सच्चे सन्त हैं। उन पर भगवान की बड़ी दया है। इतना कह कर सर पर हाथ फेर कर अन्तर हो गईं। फिर नारायण दास बाबा राम प्रसाद जी के पास आए। सब हाल बताया और कहा, "हम जल्द आवैंगे।"

फिर घर गये। वहाँ जाकर सब सामान ठीक किया-आटा-घी-बेसन साग-खांड-अचार-लकड़ी-पत्तल-मसाला-नमक-बर्तन। घर के भाई-भतीजे अपने 12 आदमी चार गाड़ीवान चले। बैल बड़े बलवान थे। रोज गुड़-घी-आटे की लोई पाते थे, दाना चने की दाल का। 84 भैंसे थीं, 40 गौवें, पाँच सौ बिगहा खेती। 20 बिगहा खेती पर दो बैल मस्त रहते थे। भूसा-चारा-दूब धोकर नांदों में माठा की सानी दी जाती थी। बड़ा कारोबार था। दो दिन में आ गए। राम प्रसाद जी के यहाँ ठहरे। सब सामान उतारी गई।

नारायण दास ने कहा, "हलुआ, खीर, बुंदिया, पूरी, साग, आलू, घुइयाँ, कोंहड़ा का, अचार नींबू आम का खट्टा-मीठा बने। पूरी एक सेर आटे में चार बनें जो हमारे यहाँ पुरानी प्रथा है।" साधू कई जगह के आए। सब को जलपान कराया गया। सब अपने अपने काम पर जुट गये। सब तैयार हो गया। भगवान के लिए एक सेर आटे में 125 पूरी बनती थी। वै बनीं और थाल गया। एक थाल हनुमान जी के यहाँ भेजा गया। 3 पारुस सरजू जी को भेजी गईं। साधू सब आए। नारायण दास घर भर मिलकर सब के चरन धोए, फिर नए कपड़े सुखाए हुए थे,

उनसे पैर पोंछे। फिर सब पंगत में बैठे। निमंत्रण पत्र नारायण दास एक साधू के साथ शाम को दे आये थे। प्रसाद फेरा जाने लगा। जब फिर गया तब बाबा ने चारौं भाई, चारौं महारानी, हनुमान जी का जय कहकर सबसे कहा, "अब सब सन्त प्रसाद पाओ।" सब पाने लगे। भगवान ने बदरी कर दिया। ठंढी हवा चलने लगी। सब पा चुके तो फिर सब के चरन धोए गए। सब को दो-दो अचला (कोई 7 हाथ के, कोई 6 हाथ के) चार-चार लंगोटी, साढ़े तीन-तीन हाथ की साफ़ी, एक-एक चदरा 6 हाथ का लम्बा और 4 हाथ का चौड़ा और 1000 रुपये चाँदी के दिए गए। चार सौ मूर्ती थीं। सब को बाँटे गए। लौंग, इलाएची, सौंफ से सत्कार किए। फिर सबके पैर छुए और आस-पास गाँव के गरीबों को खिलाया गया। इसके बाद नारायण दास के परिवार के लोग तथा गाड़ीवान भोजन किए। बैलों को खिलाया। सामान चुका नहीं। भोर समय सब साधुन को दो-दो पारुस दी गईं। फिर सबेरे आश्रम के और नारायण दास के संगी सब पाए।

बाबा से नारायण दास ने राम मंत्र जानकी मंत्र लिया और सब संग वालों को दिलाया गाड़ीवान सहित। नारायण दास ने 1000 रुपया चाँदी का सब की गुरु दक्षिणा में दिया। फिर प्रेम समाधि हो गई। दो घंटा बाद उतरी। तो बाबा से कहा, "चारौं भाई, चारौं महारानी जी, उनके पीछे शंकर जी दाहिनी तरफ़, बाँई तरफ़ हनुमान जी गदा लिहे, त्रिशूल लिए हमारे सामने खड़े हैं। फिर शीतल जल नेत्रों से चलने लगा तब बाबा ने अपनी साफ़ी से पोंछा, कहा, "तुम धन्य हो। यह सब तुम्हारी सेवा का फल है।" घर जाने की आज्ञा ली। परसाद काफ़ी बचा था। बाबा ने कहा "ले जाओ।" गाड़ी पर बर्तन और परसाद रखकर दंडवति करके चल दिये। चरनोदक साधुओं का दो घड़ा ले गए। फिर घर गए। सैंकड़ों घर में छोटे-बड़े थे। सब ने परसाद खाया, सब पशुन को दिया गया। चरनोदक सब घर में छिड़का गया और खेतों में। जो बचा उसमें गंगा जल मिलाकर रख लिया। उसमें गंगा जल छोड़ते रहे, सब रोज़ लेते रहे। जब तक नारायण दास रहे चरनोदक चुका नहीं। 125 पर शरीर छोड़ा।

फिर कुरमी लोग जान गए, दूर-दूर से आने लगे और बाबा राम प्रसाद के चेला होने लगे। हमारे पास के मसेवा मऊ में जो एक कोस है, वहाँ कुरमी धनी हैं। उनके यहाँ लड़का पैदा होता है तो छठी के दिन माँ का दूध पीता है, पूजा होती है। उसी दिन बाबा की कंठी पहना देते

हैं। फिर जब सयाने होते हैं तब मंत्र लेते हैं। कंठी सब घर में धरे हैं। फिर हजारौं धनी कुरमी आ आकर बाबा के यहाँ मकान बनाने लगे। धीरे-धीरे सब बन गया। बड़ी जगह में कुर्मी ही अधिक चेला हैं।

हमारे यहाँ से पश्चिम बालपुर दो कोस है। बाबा बलदेव दास के दो लड़के थे। वह भजन करते थे। 125 बर्ष पर शरीर छोड़ा था। तब हम 16 बर्ष के थे। तब बहुत भक्त थे। उन्होंने नारायण दास की कथा सुनाई थी। जब भंडारा हो गया, सब खा पी चुके तब जूठे बर्तन घर के लोग और अपना उठा कर, झाड़ू लगा कर चौका लगाया, बर्तन मले। सब घर से लाए थे। जहाँ गरीब लोग खाये थे, वहाँ झाड़ू लगा कर जल छिड़ककर कर साफ़ किया। सब घर के लोग एक रस थे। कोई दरवाजे पर से भूखा नहीं जाता था। भीड़ लगी रहती थी।

123. पं० राजेन्द्र दास

जिला दरभंगा

हमारे भक्त पं० राजेन्द्र दास एक सम्भ्रान्त परिवार के उद्भट विद्वान व भाव प्रधान हृदय के थे। हमारा बिछोह उनसे सहा न जाता था।

राम दास ने बताया था कि एक बार जब हम बाहेर कानपुर जाने के लिए स्टेशन गए तो वह हमैं अन्य भक्तौं के साथ गाड़ी में बैठाने स्टेशन गये। गाड़ी के चले जाने के बाद सब लोग तो आश्रम पर लौट आये पर वै रेल की पटरी पकड़े पकड़े गाड़ी के पीछे फ़ैज़ाबाद की ओर चल दिये। आश्रम पर एक दो दिन भक्तौं ने उनकी प्रतीक्षा की। जब नहीं आये तो उन्हें ढूंढने के लिए राम दास निकले। खोजते खोजते गुप्तार घाट पहुँचे तो देखा सरजू तट पर सीढ़ियों के नीचे बड़े भावावेश में बैठे हैं।

रामदास को देखकर अपने भाव छिपाने की चेष्टा करने लगे तब तक राम दास उनके पास पहुंच गए, देखा, आँखें, भाव से भीनी, सुर्ख और चेहरा लाल था। बड़े गद्‌गद स्वर में हंसकर बोले "भैया, तुम कैसे यहाँ आ गए?" तब राम दास कहैं, "आप के आश्रम पर वापिस न पहुँचने से सबको बड़ी चिन्ता हो गई, दो दिन इन्तज़ार करने के बाद आप को खोजने निकले, खोजते खोजते यहाँ पहुंचे।" तो वै बोले, "मैं

क्या करूँ गुरुदेव के विछोह से अशान्त चित्त होने के कारण एकान्त में चला आया हूँ।" तब राम दास उन्हें साथ आश्रम पर ले आये।

एक दिन हमने कहा, "पंडित! जानकी बाग में कलन्दर शाह ने भजन किया है, वह बड़ा सिद्ध स्थल है, तुम जा कर उस गुफा में बैठ कर अभ्यास करौ।" आज्ञा सिरोधार्य करके चले गये, भजन में लग गये, भोजन सूक्ष्म कर दिया। सोते भी बहुत कम थे। थोड़े ही दिनों में सब कुछ प्राप्त कर लिया। फिर हमारे पास आये, हाल बताया। कुछ दिन रहे। तब दरभंगा जिले के महमदा नामक ग्राम को चले गए।

बाबू जगन्नाथ प्रसाद के मंदिर में रह कर भगवत चिन्तन में लग गये। सन् 1942 श्रावण शुक्ला एकादशी के दिन गुरु भाइयौं से कहैं, "आज मैं अपना शरीर छोड़ूँगा, तुम लोग बड़े मधुर स्वर में 'श्री सीता राम नाम' का संकीर्तन करो।" फिर एक विद्यार्थी से बोले, "तुम गीता के पांचवें अध्याय का पाठ सुनाओ।" वै स्वयं कुश की चटाई पर बैठ गए। इधर पाठ कीर्तन हो रहा था कि कुछ भक्त पूसा रोड से एक डॉक्टर बुला लाये। डॉक्टर ने आकर आला लगाया तो कहा, "हमारी समझ में नहीं आता कि यह कैसे जिन्दा हैं, आले में दिल की हरकत कुछ नहीं मालूम देती, न नब्ज़ का कुछ पता लगता है।" तो वै डॉक्टर से बोले और कहे कि आप अपनी फीस ले लो और जाओ।

सब भक्तौं को सम्बोधित करते हुए बोले कि दो घड़ा मिट्टी के ले आओ, मिट्टी भर कर, इसी चटाई में शरीर को लपेट कर घड़े कमर से बांध कर बागमती नदी के बीच में नाव से जाकर छोड़ देना, शरीर डूब जाएगा। इतना कहकर बिछी कुश की चटाई पर अपने प्रिय गेय ग्रन्थ कठोपनिषद को हृदय से लगाकर, ठाकुर जी के सामने साष्टांग दण्डवत पड़ कर जीवन लीला समर्पण कर दिया।

भक्तौं ने जब शरीर विसर्जन की तय्यारी की तो क्या देखा कि मस्तक के मध्य भाग में एक गहरी लाल रंग की लकीर सी उभरी है। जैसा वै कहे थे उसी रीति से बागमती लाभ कराया। हमने आश्रम पर लोगों से कहा, उसी समय जब शरीर शान्त हुआ, कि पता लगावो, लगता है, पं० राजेन्द्र दास का शरीर छूट गया है, रामदास को न बताना, अभी बीमारी से उठे हैं, नहीं तो बीमारी उलट जाएगी।

उनका भाव भगवान में बहुत था। हमारी सेवा तन, मन, प्रेम से करते थे। रोज़ दो बजे राति तक हमारे कमरे में आकर बदन दाबते, पैर दाबते,

भगवान के किवाड़ बन्द करना भूल जाते, केवल पल्ला उड़का देते, तो हमें आवाज आती कि किवाड़ बन्द नहीं है। तो हम कहते, "पंडित, क्या तुम भगवान से पहरा दिवाते हो?" तो जाते, किवाड़ बन्द करते रोते प्रेम में। एक बार बिल्ली उधर से घुस आई, घी उलटि दिया, घी नाली में बह गया। उन्हें पता ही न चला। बहुत घटना है। कहाँ तक लिखें।

124. भूपाल की बूढ़ी बेगम

रतलाम के राजा के खजानची वासुदेव खत्री जब रिटायर हो गए 60 की उमर में तब यहाँ आये। उनका मकान सरगद्वार में था। उनके पुरखा कई पुश्त के बासिन्दा (रहने वाले) यहाँ के थे। बहुत धनी थे। हज़ारौं जुलहा कपड़े बनाते थे। दूर दूर कपड़े जाते थे। उन्होंने यहाँ आकर महाराज से मंत्र लिया। आध पाव आटे की रोटी खाते थे। एक छिटाँक चाय पीते थे। हमारे साथ 6 घंटा बैठते थे। सब प्राप्त कर लिया। दिली शौक था। पहले उन्होंने किसी साधू से प्राण खींचना सिखा था। प्राण तुम्हारे खींच कर फिर प्रवेश कर दें, तो किसी साधू ने कहा, "यह तो ढोंग है, इससे गती न होगी, दुनियाँ में मान होगा। यहीं मर मर के पैदा होना पड़ेगा। यह सब सिद्धी भगवान के यहाँ न जाने देंगी। तमाम सिद्धी हैं, यह सब त्रिगुण में हैं। भजन त्रिगुण से परे है।" तो महाराज जी से हाल बताया। महाराज जी ने कहा, "बात ठीक है" तब छोड़ दिया। 77 में शरीर छोड़ा।

उन्होंने हमसे भूपाल की बुढ़िया बेगम का हाल बतलाया था। धर्म की मूरत रहीं। हिन्दुओं पर बहुत दया करती थीं। मसजिद में चार फाटक थे। एक पर पैसा बँटता था फी (प्रति) आदमी को खाने भर के लिये। एक पर लाई, बताशा, गुड़, भुने चना। एक पर गरीबों को आटा, दाल, चावल, साग, नमक, लकड़ी, घी, तेल। एक पर रोटी, दाल, चावल, साग बना बनाया बँटता था। सब को खाने भर को दिया जाता था। जाड़े में गरीबों को कम्बल और पहनने के कपड़े।

जो हिन्दू तीर्थ यात्रा जाते थे, रामेश्वरम्, जगदीशपुरी, द्वारिका, बद्री नारायण, काशी, प्रयाग, चित्रकूट, विन्ध्याचल, नैपाल, मुक्तिनाथ, कोई तीर्थ हो तो बुढ़िया बेगम के पास जाते और हाल बताते। वह चार डलियों में कपड़ा ढाँके रहती थीं—एक में कौड़ी, एक में पैसा, एक में रुपया, एक में अशर्फी। जात्रा वालों से कहतीं कि चार डलियाँ धरी हैं। चारौं में यह यह सामान है। तुम एक को खोलो, देखो, तुम्हारा जो हक होगा वही मिलेगा, तो जात्रा वाले खोलते। एक-एक को बुलाती थी।

जो झूँठ कहता था तो कौड़ी की डलिया खोलता था तो कहती थी "तुमने झूँठ कहा। अच्छा तीरथ का नाम लिया है, तुमको खरचा दिया जाएगा। तुम्हारे बाल बच्चे खायेंगे" तो उसको खरचा देती थी। जो अशर्फी की डलिया खोलता था तो कहती थीं "तुमने बिल्कुल सत्य कहा है।" उनको देती थी। जो रुपये की खोलता था, तो कहती, "तुम ने आधा सच कहा है।" उनको भी देती थी। जो पैसे की खोलता था तो कहती थी कि तुमने एक पैसे भर सच कहा है।" उनको भी देती थी।

सैंकड़ों गाड़ी गल्ला आता था। छड़ी को टेक कर जाती, खड़ी होकर हिन्दुनं को बुलाती, पूंछती, "तुम्हारे साल में कितने अन्न का खर्च है।" जो बताते उतनी गाड़ी उनके यहाँ भेजती। इस तरह बाँटती थीं। तमाम शादी जनेऊ वालों को देती थी। जो जिस हेतु आता खाली नहीं लौटता था।

जब बीमार होती तो नौकरों की दूनी तनखाह कर देती जब तक बीमार रहती। जब ठीक हो जाती तो सब देखने जाते तो कहती, "तुम्हारे सब के आशीर्बाद से हम अच्छी हो गईं।" जब जब बीमार होती थीं तब तब दूनी तनखाह कर देती थी। मरने के समय कुछ दिन पहिले कहा, बीमार न हुई थी, "हमारी कच्ची कबर बनाई जाय, यह सब बड़े बड़े मकबरा बेकार बनाये गए। यही पैसा गरीबों को दिया जाता तो सब की गती हो जाती।" जब समय आ गया तो कहा, "तमाम देवी देवता आ गए हैं, झंडा चँवर पंखा लिये हैं, बाजा बाजते हैं, अपसरा नाचती हैं, जै जै कार हो रहा है, विमान आ गया है, मोहम्मद साहब भी खड़े हैं। अब हम जा रही हैं।"

दोनों हाथ जोड़कर शरीर 101 वर्ष पर छोड़ा। ऐसी धर्मात्मा और दयावान थीं।

125. सरसैया घाट (कानपुर) के एक राम नाम लिखने के उपासक साधू का आनन्द

एक साधू कानपुर सरसैया घाट पर कहीं से आए थे। अरसा 30 साल (सन् 1945) का हो गया होगा। उम्र 40 की मालूम होती थी। नंगे

थे। कोई कपड़ा न था न जल पात्र था। वै ज़मीन में अंगूठे के पास की अंगुली से राम राम लिखते फिर बिगाड़ देते थे। किसी से बोलते नहीं थे। हम उनके पास बैठ गये। पैर छुए तो हंसे। हमने कहा, "कुछ हमें बताओ।" तो कहा, "हम क्या बतावैं? राम नाम के अन्तरगत सब है। सिर्फ़ मन लग जाय।" हमने कहा, "आप लिखते हो तो क्या देखते हो? क्या सुनते हो?" तो कहा कि "राम-नाम से चारौं भाई, चारौं महारानी, हनुमानजी, शंकर-पारवती, गणेश, षटमुख, ब्रह्मा, विष्णू, कमला, शारदा, सरस्वती, काली, दुर्गा, भैरों-तमाम देवी देवता प्रगट हो जाते हैं। राग-रागिनी, कृष्ण भगवान, सखा सखी नाच गान होता है। हम एक हजार नाम लिखते हैं। वह आनन्द रहता है, हर समय सब दृष्टिगोचर रहता है और राम नाम की धुनी सब लोकों में गूंज रही है। उसका नशा हमारे ऊपर हर समय, देखना सुनना बना रहता है। शंकर जी ने कहा था, 'अपना नेम एक हजार नाम का रोज़ लिखना न छोड़ना।' हमने (शंकर जी से) कहा 'हम हर समय देखते-सुनते हैं तो कैसे लिखेंगे?' तो कहा, 'वही राम जी कृपा सागर तुम से लिखवा दिया करेंगे।' तब से भगवान की कृपा से लिख पाते हैं। हम तुम से बोलते हैं, किसी और से नहीं बोलते। बहुत लोग हमें डाँटते हैं, बहुत धक्का देते हैं। बहुत लात से मारते हैं, बहुत तमाचा घूंसौं से मारते हैं और कहते हैं, "साले! लिखने का ज्ञान है, लंगोटी लगाने का ज्ञान नहीं है। औरतें भी डाँटती हैं और कहती हैं, 'बदमाश नंगे, बैठा लिख रहा है।' शंकर जी ने कहा, 'तुम चुप रहना, इससे तुम्हारा भला ही हो रहा है। भगवान भक्त को ही अनमोल हीरा बनाते हैं। वही परीक्षा कराते हैं।' फिर भीड़ हो गई तो उठे और गंगा तट पर गए, और साष्टांग दंडवति किया। कूद पड़े और पैर कर उस पार निकल गये।

नंगे संत कहते थे कि, "साधू कहते हैं कि तुम किस पंथ के साधू हो-विरागी, उदासी, शैव, कबीर पंथी, दादू पंथी-कोई भेष की चिन्ह नहीं है। हम हाथ हिला देते हैं, तब कहते हैं "साला! मन मुखी है, किसी भेष में नहीं है", तब और मारते हैं।' हमने कहा, "चोट नहीं लगती?" तो कहा, "चोट नहीं लगती है, भूख पियास नहीं लगती, नींद नहीं, जाड़ा-गरमी भी नहीं मालूम होता है। जब नदी के किनारे बैठते हैं तब कछुआ मगर आते हैं, पास बैठते हैं। मछली पानी में ही रहती

हैं, खूब ऊपर मूँह फैलाती घूमती हैं। जब जंगल में आते हैं तो शेर, भालू, तेंदुआ, लकड़बग्घा, भेड़िया, बड़े-बड़े सर्प आते हैं। सब पास बैठते हैं, सर्प ऊपर चढ़ते हैं। हम सब को सोहराते हैं, लेट जाते हैं, तो सब जानवर शरीर चाटते हैं। जब हम बैठ जाते हैं तब फिर नहीं चाटते। मोर नाच दिखाते हैं। जब चलते हैं तब सब कुछ दूर तक साथ आते हैं। जब हम इशारा हाथ का कर देते हैं तो लौट जाते हैं। भूत भी मिलते हैं। वह दूर से हाथ जोड़ कर चले जाते हैं।

तमाम लोकौं में जाते हैं। कैसे भगवान हमें दूर-दूर भेजते हैं। उनकी अपार महिमा है। जैसा चाहें वैसा सुनावें और दिखावें। यह मनुष्य की समझ के बाहर है। जब शारदा- शेष वरनन नहीं कर सकते तब हम क्या वरनन करैं। सब देवी-देवता ऋषी मुनी भक्त भगवान के आधीन हैं।" बहुत विस्तार है। हम थोड़ा लिखा है।

126. ईश्वर विश्वासी ठठेर

अयोध्यापुरी में एक ठठेर ने नज़रबाग माधुरी कुंज के उत्तर लाइन में भगवान का मंदिर बनवाया। जब बनने में कुछ कसर थी, तब घर से तार आया कि लड़का, एक ही था, बीमार है। उसने जवाब दिया, "हम मंदिर बनवा कर भगवान को पधार कर आवैंगे। लड़के हर एक योनि में मिलते हैं। पर भगवान मनुष्य योनि में ही मिलते हैं।" मंदिर बन गया। फिर तार आया कि लड़का मर गया। उसने जवाब दिया, "भगवान का था, अपना ले लिया। उसकी मिट्टी ठिकाने लगा दो। मंदिर बन गया है, हम स्थापना कराकर आवैंगे।" ठठेर की उम्र 40 की होती। स्थापना हो गई, भंडारा हो गया। हम भी भोजन करने गए थे। उसका हाल सुना था कि ईश्वर विश्वासी है। भंडारे में बड़ा स्वाद आया।

फिर एक दिन आकाशबाणी हुई, "तुमको साकेत धाम मिलैगा। तुम हमारे सच्चे भक्त हो।" फिर एक दिन चारौं भाई, चारौं महारानी 4 बजे दिन में प्रकट हो गए। शंकर जी, हनुमान जी साथ थे। उसने चारौं भाइन की, चारौं महारानिन की दंडवति किया। फिर शंकर जी हनुमान जी की करने का विचार किया तो शंकर जी हनुमान जी ने कहा, "हाथ खड़े-खड़े जोड़ लो। चारौं सरकार, चारौं महारानिन के सामने हमारी

दंडवति न करना। हम सबके सेवक हैं। तब उसने हाथ जोड़ लिया। दंडवति करते समय सबने अपना अपना दाहिना पैर उसके सिर पर धर कर तीन-तीन बार, अन्तर हो गए। तब शंकर जी हनुमान जी ने कहा, "तुम निरछल भक्त हो, तुम्हारी आसक्ती संसारी चीज़ में नहीं है। संसारी वस्तु सब नाशवान हैं।" उसके सर पर हाथ फेर कर शंकर जी, हनुमान जी अन्तर हो गए।

जब चारौं सरकार चारौं महारानिन ने सर पर पैर धरा था तभी उसके पट खुल गए थे। फिर सब सामने हो गए। रात दिन सामने रहते। फिर घर गया। वहाँ सब लोगों ने कहा, "तुम्हारे तनकौ (जरा भी) दया नहीं है। अकेला लड़का था मर गया। अब यह कौन संभालैगा? धन मकान सब क्या होगा।?" उसने कहा, "यह सब भगवान का है। जब तक हम हैं सब रुपया पैसा धर्म में लगावैंगे। फिर भगवान जैसा चाहैंगे वैसा होगा।"

ऐसा जीव लाखौं में एक होगा। हमसे सब बताया था। हम थोड़ा लिखा है।

127. पंडित भगवान दास

पं० भगवान दास बड़े महाराज के शिष्य फौजी साधू हो गए हैं। छावनी में रहे। दवा भी जानते थे। बीमार साधून की सेवा करते, मल-मूत्र साफ करते, सौंचाते, अपने हाथ भोजन कराते। भोजन रोगिन का अलग बनता था। बड़े गोरे रंग के ऊँचे डील डौल के पहलवान थे। अपनी झोपड़ी में दिया नहीं जलाते थे। जाड़े में बोरा में पैरा भर उस पर रहते। दोहरी अलफी रखते, गर्मी में खाली टाट का आसन। एक हरी अलफ़ी रखते। रंगा कपड़ा मिले तो साधून से कहते कि धो कर साफ करके पहनना। सब उनकी बात को बहुत मानते थे। बड़े महाराज की उन पर बड़ी दया थी। रोगी, जो जानते कि यह अच्छा नहीं होगा, तो पूछते, "क्या खाओगे?" जो कहता वही देते जिसमें उसका मन न लगा रहे। मरने पर उसे नहवा कर, लंगोटी लगाकर, तिलक-कंठी जनेऊ सब पहनाकर, कफ़ना कर, टिकठी कर सैन करा कर, साधून को संग ले कर राम-राम करते हुए सरजू लाभ करा आते थे।

अवध में जो साधू बीमार होते तो छावनी में आ जाते। पंडित जी बड़ी सेवा करते थे। जब अच्छे हो जाते तब अपने आश्रम को जाते। पंडित जी को सेवा धर्म से बड़ा प्रेम था। उसी से उनको बड़ा अनुभव होने लगा। यह उन्हें मालूम हो जाता था कि यह रोगी अच्छा होगा, यह नहीं अच्छा होगा तो उसके ऊपर बड़ी निगाह रखते। दिन रात में उसे कई बार देखते पूछते, "क्या तुम्हारा मन खाने को कहता है?" जो कहता, वही देते थे। रोगी को गीता-रामायण और अच्छे-अच्छे ग्रंथ सुनाये जाते थे। बड़े विद्वान थे। साधू बहुत पढ़े थे। वह रोगिन को उनकी आज्ञा से सुनाया करते थे। रोगिन के पास बड़ी सफ़ाई रहती थी, धूप दी जाती थी। गन्ध का नाम न रहता था। यह हाल मँझले महाराज तक, जब तक पंडित जी रहे, बना रहा। हमारे महाराज से मँझले महाराज बताते थे।

पंडित जी बीमार न थे। 100 की उम्र में शरीर छोड़ा था। मंझले महाराज से कहा, "भगवान का चरनोदक हमें दे दो। महाराज जी के चरण पादुका हमारे मस्तक में छुला दो, छाती पर स्पर्श करा दो।" कहा कि "विमान आ गया अब हम जाते हैं।" तब मंझले महाराज के आँसू चलने लगे और जितने साधू थे सब रोने लगे कहा, "ऐसी सेवा दुखी जीवों की कौन करेगा?" फिर सब साधू और मंझले महाराज सरजू लाभ कराने ले गए। छावनी में उदासी छा गई। फिर पंडित जी का भंडारा खूब धूम धाम से मंझले महाराज ने किया और बड़े महाराज की दया से साधू सेवा भी खूब किया।

गादी की सेवा ऐसी की कि कभी एक माछी बैठने न पाई। सुबह से शाम तक गर्मी में पंखा और जाड़े में हल्का मुरछल सफ़ेद करते थे। जब नहाने या भोजन करने या भगवान की पैकरमा दंडवति करने जाते थे तो दूसरा साधू करता था। कहाँ तक लिखें, बहुत बिस्तार है।

128. ठाकुर राम चेतन दास ब्रह्मचारी

ठाकुर रामचेतन दास ब्रह्मचारी, गाँव सेमरदहा, जिला सीतापुर के, हमको मिले, ऊँचे खैरगाँव बाबा राम लगन दास की कुटी पर। तब हम 17 साल के थे। वे 25 साल के थे गोरे गोरे पतले पतले। वे एक पहर

एक पाव भोजन करते, अपने हाथ जल भरते नहाते। किसी के हाथ का भरा पानी नहीं पीते। एक लौकी का कमंडल, एक तुलसी का माला, एक अलफ़ी और नीचे लंगोटी। बस इतना सामान रखते थे। हमें पानी भरने नहीं दिया। एक घंटा झगड़ा हुआ। उन्होंने हमारा भाव जान कर कबूल किया। हमने तीन दिन रोका।

हमने कहा, "आप छड़ी नहीं रखते।" तो कहा, "क्या करें? जिस जानवर को तमाचा मार दूँ वह गिर पड़े।" नक्षत्र बली थे। जो लट्ठा 40 आदमी उठावैं उसे वह अकेले उठा दें। 4 बैल की भरी गाड़ी गल्ला की चहला (कीचड़, दलदल) में फंस जाय तो अकेले जुआ पकड़ कर खींच दें। छोटी लाइन की रेल की पटरी एक हाथ से उठा देते थे। पत्थर जो पड़ते हैं उनको कहीं-कहीं ओरे या ओला कहते हैं। वै मंत्र से एक खेत में गिरा देते थे। सब ढेर हो जाता था और कहते "तुम्हारे सब के खेत बच गए। इस खेत में पूरा नुकसान हो गया है। सब मिलकर इसका दाम दे दो।" तो सब मान जाते थे। अगर कोई कहता कि बाबा! कुछ अज़मति दिखाओ तो हम जानैं कि तुम साधू हो। तो मंत्र पढ़ें सब लोग अंधे हो जाँय। जब फिर दूसरा मंत्र पढ़ें तो सबको सूझने लगै। मंत्र पढ़ैं तो गांव में आग लग जाय, जब दूसरा मंत्र पढ़ैं तो बुझ जाय। तब सब कहैं कि बाबा बड़ा सिद्ध साधू है। इस बात को सब लोग जान गए तब फिर कोई कुछ नहीं कहता था।

हमने कहा, "इससे जितनी देर लोगों को कष्ट होता होगा, कैसे घर का काम चलता होगा, घर के लड़के और अन्य जीव जो उनके जरिये जीते हैं, अब भूखे मरेंगे तो उसका सौ गुना दंड भगवान के यहाँ मिलेगा। आग लगने में तमाम जीव मरते हैं। एक आदमी के कहै से हजारौं का नुकसान होता है। इसका दंड बहुत बड़ा मिलैगा। कल्पौं नर्क भोगना पड़ैगा। आपने घर बार छोड़ा, साधू भेष बनाया, अभी क्षत्रीपने का अर्थ न जाना। पाँचों चोर छटे मन काबू हो जाँय तब वह छत्री कहा जाता है। तुम कैसे साधू हो गए?" तो कहा, "हम फोनोग्राफ़ बजाते थे। हमने माता से कहा, 'हम भजन करने जाते हैं।' बड़े भाई थे, उनका परिवार था, उनकी जुम्मेदारी है ही। खाने पीने की कोई कमी नहीं है। माता ने कहा, जाओ। साल में दो मर्तबा आया करना जब तक हम जिन्दा रहें। तो हम साल में दो मर्तबा जाते हैं। पाँच साल से घूमते हैं।"

हमने कहा, "तुम ने माता से बताया है कि हम मंत्र से अंधा कर देते हैं, फिर दूसरा मंत्र पढ़ते हैं तो सूझने लगता है और आग मंत्र से लगा देते हैं, सब का नुकसान होता है, फिर दूसरा मंत्र पढ़ते हैं तब आग बुझ जाती है।" उन्होंने कहा, "यह सब हमने माता से नहीं बताया।" तब हमने कहा, "तुम भजन नहीं कर सकते। न इधर के रहे, न उधर के रहे।" फिर हमने पूछा कि "किस देवता से प्रेम है?" तो कहा, "शंकर जी से व पारवती जी से।" हमने कहा, "मंत्र बताओ।" तो कहा, "शिवजी पर लोग जल चढ़ाते हैं तो कहते हैं – 'ॐ नमः शिवाय।' और मंत्र हम नहीं जानते न किसी से लिया है।" हमने पूछा, "कितना जपते हो?" तो कहा, "एक माला।" हमने कहा, "अंगहीन मंत्र नहीं जपा जाता है। राम जानकी, राधा कृष्ण, बिष्णु लक्ष्मी, गिरिजा शंकर– इनके जुगुल (जोड़े के) मंत्र हैं।" तो कहा, "पारबती जी का हमैं बता दो।" हमने कहा, "एक माला ब्रह्मगायत्री, 10 माला शंकर जी और 5 माला पारबती जी के जपौ तो बता दें।" तो कहा "जपैंगे।" हमने कहा, "हम पहले यही मंत्र जपे हैं 10 बर्ष की उम्र से 15 बर्ष की उम्र तक। दीन बन जाओ। यह भोला नाथ हैं, बड़े दयालू हैं। उन्हीं से रामजी की भक्ती मिलती है। जानकी जी ने पहले शंकर जी को भजन बताया है। वै राम तत्व के ज्ञाता और दाता हैं।" हमने कहा, "वै दोनों मंत्र छोड़ दो। वै मंत्र भक्ती की हानि करते हैं।" तब उन्होंने कहा, "नहीं करेंगे।" फिर उनको मंत्र की बिधि बता दिया। फिर चौथे दिन भोजन करके, भगवान की दंडवति करके और बाबा की दंडवति करके चले गए।

129. मूर्ति पूजन के प्रेमी एक परम भागवत साधू

एक साधू का हाल महाराज जी बताते थे कि वह एक छोटे डिब्बे में शालिगराम रखते थे। गंगा जी करीब थीं क़रीब एक फ़रलांग पर। वे रोज़ अश्नान करते, ठाकुर जी को नहवाते, फिर अपनी झोंपड़ी में आते तो बाटी बनाते अलोनी, भोग लगाते, भगवान को सैन कराते, आधा घंटा लेटते फिर जप में लग जाते। शाम को कुछ न खाते। गाँव के लोग बारी-बारी आटा एक पाव देते थे जिससे आटे की बाटी बन जाय।

एक दिन भगवान ने परीक्षा किया कि देखैं, इनका प्रेम हम से है कि कुछ भोजन में भी है। भगवान ने कहा, "रोज़-रोज़ अलोनी भौंरी हमें खवाते हो, तुम भी खाते हो, थोड़ा नमक मिलाकर बनाया करो, तो भौंरी खाने में ठीक रहेगी।" तो बाबा ने कहा, "तुम्हारी ज़बान चटोरी हो जायगी। फिर कहोगे कि साग बनाओ, दाल बनाओ। तुम को पाना हो तो पावो हमें इतनी फुरसत नहीं है। हम तो पेट भर लेते हैं एक बार। आपको भी वही देते हैं, हमारा भजन का समय खराब जायगा। अब हमसे ऐसी बात कभी न कहना। जो आटा हमें लोग देते हैं, उसी की बाटी बनाकर आपको पवाते हैं, हम भी पाते हैं। क्या आप कमज़ोर हो गए हैं? जैसा हम शुरू से देखते हैं वैसे ही आज देखते हैं।"

यह बात सुनकर भगवान प्रगट हो गए। सन्त को गोद में उठा लिया और कहा, "तुम हमारे अति प्रिय निश्चल भक्त हो। ऐसे भक्त संसार में बीज मात्र हैं। हम तुम को खुद लेने आवेंगे।" साधू का शरीर कुछ सुस्त न हुआ। भोग लगाकर भगवान को पवा कर पाया। 125 की उम्र थी। भगवान विमान पर आ गए। एक भक्त को अपने शालिगराम दे दिया, कहा "इनकी पूजा करना भगवान के धाम में पहुंच जाओगे।" भक्त ने बड़े प्रेम से ठाकुर जी को ले लिया। जब शरीर छूटा, भगवान विमान पर बैठा कर ले गए। गाँव के लोगों ने बाबा का शरीर गंगाजी में जाकर प्रवाह कर दिया।

130. एक फ़कीर श्री अहमद

बाबू प्राग नारायण खत्री, उन्नाव वालों ने बताया कि अहमद नंगे घूमा करते थे। भगवान संग रहते थे। एक जंगल में होकर निकले तो किसी पेड़ के सूखे पत्ते बड़े-बड़े पड़े थे। उनको उठा कर पतली सूखी लकड़ी से छेद कर एक दोना बनाकर सिर पर लगा लिया तो भगवान ने कहा, "अहमद! अपनी टोपी बेचोगे।" तो बोले, "क्या दोगे?" भगवान ने कहा, "धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष।" तो अहमद ने कहा, "तुम्हारे पास चार ही चीजें हैं। हम नहीं बेचेंगे।" फिर भगवान ने कहा, "भाई! बेच डालो!" तो बोले, "हमैं तंग न करो नहीं तो हम तुम्हारा भंडा फोर देंगे।" भगवान ने कहा, "क्या भंडा फोड़ दोगे?" कहा, "हम घूम-घूमकर कहैंगे, भगवान सर्वशक्तिमान करुणा सिन्धू होकर हमें परेशान करते हैं,

तो कोई तुम्हारा नाम न लेगा।" भगवान ने कहा, "तुम हमारा भंडा न फोड़ना, हम टोपी नहीं लेंगे।"

एक जगह नेवाज़ होती थी तो मुसलमान पकड़ ले गए, कहा, "इसे बैठारो। इधर-उधर घूमता है।" वै बैठे नहीं, खड़े रहे। जो नेवाज़ पढ़ाते थे उनका मन रुपये पर था तो अहमद तीन बार बोले, "तेरा खुदा मेरे पैर के नीचे! तेरा खुदा मेरे पैर के नीचे!! तेरा खुदा मेरे पैर के नीचे!!!" तो लोगों ने पीट कर बाहेर किया और कहा, "क्या बकता है?" तो बोले, "जहाँ हम खड़े थे वहाँ खजाना गड़ा है। मौलवी का मन उसी में लगा था। उसी से हमने कहा, 'तेरा खुदा मेरे पैरों के नीचे है। तुम लोग सच बात कहने पर हमें मारते हो।'" खोदने पर वहाँ खजाना निकला तब सब ने कहा, "यह मस्त फ़क़ीर है, इससे मत बोलो।"

131. हीरा लाल कुर्मी

यह पहले मांस मछली खाते थे। घर के धनी थे। समय आ गया। किसी से मंत्र लेकर घर से निकल पड़े। गले में एक तुलसी का हीरा बाँधे थे। आम की फसल थी। सादतगंज के एक बाग में बैठ गए। आम चूते, ऊपर गिरते, पर छूते न थे। कोई दे दे तो खा लेते थे। बेचने वाले कोई दयावान होते हैं तो दे देते हैं, सब नहीं देते।

फिर वहाँ से उठे। जिसमें नजूल का दफ़्तर है उसके बीच बड़े-बड़े दर हैं। वहाँ कुछ कंकड़ रोड़ा रख कर एक हाथ जगह में दीवाल के बल बैठ गए। वहाँ कौन खाने को पूछता है। बैठे रहे। थोड़ी-थोड़ी देर में पेट पीटते। इधर से हम गए, देखा तो पूछा, कौन भजन करते हो?" तो बड़ा हल्ला किया, "हम भजन नहीं जानते।" हम बैठ गए और कहा, "बताओ, अन्दर कहाँ से बैठा जाता है।" तो इधर-उधर देखकर बताया। समझ गए कि यह रास्ता जानते हैं इसी से पूछते हैं। फिर पेट को दोनों हाथ मुक्का बाँध कर पीटने लगे। हमने कहा, "क्यों पीटते हो?" तो कहा, "यह सबर क्यों नहीं करता, साला खाना माँगता है।" हम जल्द-जल्द जाया करते थे, भोजन ले जाते थे।

एक गूंगी माई चमारिन थी, एक करीम शाह थे, एक नंगे कचहरी की तरफ रहते थे। फिर हमारे जरिये से बहुत लोग जान गए। कोई न कोई ज़रूर खाने को लाता तो थोड़ा ले लेते थे।

एक दिन हम सादतगंज अस्थाना के यहाँ जाते थे। गृह प्रवेश था तो हीरा लाल से कहा, "यहाँ आवो, तुमको इक्का पर ले चलेंगे, एक जगह जा रहे हैं। भोजन कराकर फिर साथ लावेंगे।" महीना जाड़े का था। किसी ने एक कथरी पुरानी दिया था, उसमें बड़े-बड़े छेद थे, तो वह जब उठे तो कथरी एक पैर में फंस गई थी, हाथों से पैरों को खूब पीटा तो पैर को छोड़ दिया। हमने कहा, "तुम बैठो हम उधर से लौटेंगे तब खाने को लावेंगे।" जब हम लौटे तो कई किस्म की चीज़ें थीं, धरा, कहा, "खाओ।" तो देखा और कहा, "अच्छा-अच्छा खाने को आया। घर खूब खाते थे यहाँ भी तुम वैसा ही चाहते हो। अरे मन बदमाश! तेरे जै संगी हैं उनको थोड़ा-थोड़ा देंगे।" दो छटाक कौर खाकर मुट्ठी बाँधकर दोनों तरफ के गालों पर कई मुक्का मारा। हमने कहा, "यह क्या किया?" तो कहा, "यह साला हाली-हाली क्यों खाता है?"

लाट साहेब की अवाई (आना) थी। वहाँ जहाँ हीरा लाल बैठे थे साफ करना था तो कोतवाल आए। वे समझे कोई मामूली आदमी है तो कहा, "उठ जाऔ, तुम यहाँ से। लाट साहब आ रहे हैं। कचर जाओगे।" तो कहा, "ले अपनी जमीन।" उठकर एक नीम के तले बैठ गए। बरसात भर वहीं बैठे रहे। हम गए तो पूछा। कुछ लोगों ने बताया कि कोतवाल ने ऐसा कहा था तो चले आये। हम ने कहा, "हीरा लाल! चलो वहीं बैठो।" तो कहा कि "बरसात बाद चलेंगे।" हमने कहा, "यहाँ कुछ तकलीफ है?" तो कहा, "कोई तकलीफ नहीं है।" एक फटा कपड़ा कमर में लपेटे हैं वह सूख जाता है। हम जाया करते थे।

जब बरसात बीत गई तब हम ने कहा, "अब बरसात बीत गई चलो।" तब उठ कर साथ आकर बैठे। फिर जब कोतवाल को मालूम हुआ तो भोजन भेजने लगा। छोटे छोटे लड़के कंकड़-ईंट के टुकड़े मारते थे। शरीर पर गुल्लम उठ जाते। अपना वही उठा कर लड़कों को मारते तो लड़कों को नहीं लगता। कोतवाल ने सुना तो सिपाही भेजा। जहाँ लड़के मारने आवैं तो सिपाही लड़कों को भगा दें और उनके घर जाकर कह आवैं कि यह साधू जो दरा में बैठा है, उसे सब जाकर कंकड़ों से मारते हैं तब घर के लोग लड़कों की पिटाई करें। तब कंकड़-पत्थर फेंकना बन्द हुआ।

हम बाहर गए थे। हीरा लाल का शरीर पचास की उम्र में छूटा था। 50 रुपया कोतवाल ने दिया और भक्तों ने दिया। विमान बनाकर बहुत लोग सरजू ले गए थे।

एक दिन गर्मी का महीना था उजेरी रात थी, ऋषी टोला-उसे सब रस्सी टोला कहते हैं, आधी रात के वक्त लाला मुकुन्द लाल को दवा का कुछ काम था तो हमारे पास यहाँ आए, हाल बताया।

सत्यनामी बाबा लाल बाग़, गूंगी माई, हीरालाल, कचहरी की तरफ के नंगे साधू, करीमशाह बैठे बातें करते थे—कचहरी में जो-जो सजा पावेंगे उनका नाम लेते थे, जिनको जुर्माना होगा उनका नाम, जो छूटेंगे उनका नाम, जिसको फांसी होंगी, उसका नाम-हमसे हाल बताया। हमने कहा, "यह औलिया लोग हैं। हर एक शहर में रहते हैं और कमेटी करते हैं।"

मुकुन्द जब कचहरी गए तो वहाँ जो जो बातें वह लोग करते थे वह सब ठीक मालूम हुईं। फिर आकर हम से बतलाया। मुकुन्द लड़कों को टाइप सिखाते थे और शायद कचहरी में टाइप करते थे। अपने भक्त थे। एक लड़का था, औरत थी, बड़ा भाई कानपुर नवाबगंज में किराये पर रहते थे। उनका परिवार साथ था, नौकर थे।

132. गूंगी माई चमारिन
फैज़ाबाद

गूंगी माई चमारिन फ़ैज़ाबाद के एक चमार की लड़की थी। 5 या 6 कोस पर बिवाह हुआ था। जब एक लड़का हुआ तो कुछ समय बाद वैराग हो गया। फैजाबाद को चली आई। नंगे रहती थी। यह पहले (जन्म) की योग भ्रष्ट थी। इस जन्म में अपना काम पूरा किया। एक लोहे का खम्भा था उसे 8 बजे रात को पकड़ कर बैठती गर्दन झुकाकर फिर 8 बजे सवेरे उठती। उसके पट खुल गए। राम जानकी सामने हो गए। उसका एक पद है। पढ़ी न थी। हमसे बोला करती थी। वैसे चुप रहती थी। जब हम जाते अलफ़ी पहनाते, कभी धोती पहनाते तो उसकी माँ छोर ले जाती थी। हमने लोगों से पूछा तो कहा, "इसकी मां छोर ले जाती है।" फिर लोगों से कहा, "यह ऐसे ही रहेगी, रहने दो। कपड़ा माँ ले जाती है। कोई पहिराने की जरूरत नहीं है।"

लाला महादेव प्रसाद के छोटे भाई गिरिराज की लड़की सात साल की थी। बहुत बीमार थी। महादेव प्रसाद ने हमसे कहा। हमने कहा, "गूंगी माई के पास जाओ।" तो गए और हाल कहा। बोली नहीं। रात 3 बजे गई तो खड़ी हो गई। दाहिना हाथ उठाया फिर अन्तर हो गई। लड़की धीरे-धीरे ठीक होने लगी। जब हम गए तो महादेव प्रसाद ने हाल बताया। हमसे कहा, "हम समझे थे, यह पागल है।"

एक दिन हम गए कहा, "हमारे साथ चलो हम तुम्हारे बाल बनवा कर साबुन से शरीर धोवा कर अलफ़ी पहनावेंगे। महाजनी टोला में चलो।" कुछ दूर चलकर लौट पड़ी। हम समझ गए कि यह जान गई कि काम न बनेगा। हम महाजनी टोला महादेव प्रसाद के यहाँ गए। वह घर में ताला बन्द कर चुके थे कहा, "महाराज! हम लोग रिश्तेदारी में जा रहे हैं।"

एक बार उसकी कमर पर मोटर निकल गई तो कमर टूट गई। ढाई साल बैठे-बैठे चलती थी। हम बाहर गए थे तब शरीर छूटा। लोग उसे खूब धूमधाम से उठा कर सरजू ले गए। फिर चन्दा लगाकर भंडारा किया गया। गरीबों को खूब खिलाया। हमारे जरिये से लोग जान गए थे। खाने की तकलीफ नहीं होती थी। थोड़ा खाती थी। जो बचता वह कुत्ता खाते थे। बाल भाव हो गया था। हम थोड़ा लिखे हैं बहुत विस्तार है।

गूंगी माई की शव यात्रा में कोतवाल ने स्वयं कन्धा लगाया था और पुलीस वाद्य के साथ अयोध्या लाया था। साथ में चौक के तमाम लोग आए थे। बड़ी धूम धाम से सरजू में शरीर पधारे थे। बाद में चन्दा लगा कर बड़ा भंडारा किया था।

पद:- करो सतगुरु मिलै दर्शन पास ही राम सीता जी ।।1।।
प्रेम तन मन से जँह लागै सत्य के हैं वह मीता जी ।।2।।
देव मुनि पाठ करते नित सुनौ मानस औ गीता जी ।।3।।
कहैं गूँगी नाम रस पी वही जग आय जीता जी ।।4।।

133. पगली माई कहारिन
अयोध्या

यह कटरा मोहल्ला अयोध्या में रहती थी। एक लड़का हुआ। जब साल भर का हुआ तब घर छोड़कर इधर-उधर अवध में घूमने लगी। पुराने

कपड़े लोग दे देते थे उनसे बसर करती थी। कभी एक मुट्ठी चना पा गई तो उसी को खा कर रह गई, कभी कोई थोड़ी रोटी या भात दे दिया तो उससे बसर कर लिया पर पेट नहीं भरता था। यह भी योग भ्रष्ट पहले जन्म की थी अब की पूरा कर लिया। शरीर साँवला था और शरीर की खाल मोटी हाथी की ऐसी हो गई थी, तमाम जुआँ पड़ गए थे।

एक दिन हमको तुलसी चौरा के पास मिली, कच्चे चना चबा रही थी। एक कटोरा सिलवर का पुराना किसी ने दे दिया था। उसमें बीच में छेद था। हमने कहा कि पानी पिओगी तो कटोरा हमारे सामने धर दिया। हमने कहा, "इस छेद में अंगुली लगाओ नहीं तो पानी बह जायगा।" तो अंगुली लगाया। हमारे कमंडल में चार सेर पानी था। हमने कटोरा भर दिया। तीन पाव पानी पिया। हमसे कहा, "जो तुम लिखते हो वह हम सब जानती हैं।"

महीना फागुन का था। एक कपड़ा सूती पाँच रुपये का, हम ले गए थे कहा, "इसे ओढ़ना।" रख कर चले आए। महतारी कथा सुनने जाती थीं तो कहा, "ले, तेरा बेटा धर गया है।" महतारी ने हम से कहा, "एक बुढ़िया चिथरा पहने बैठी थी। उसने हमसे कहा, "ले तेरा बेटा धर गया है, ले जा।" हमने महतारी से कहा, "हाँ, हम ही धर आए थे।" फिर वह वहाँ से उठी, चली गई। कपड़ा कोई उठा ले गया होगा।

हमारे ज़रिये से अब लोग उसे जान गए। कोई फल दे जाता तो वह हमें भेजती थी, कहती थी कि यह दादा को दे आओ। तो हम उनको धोकर भोग लगाते थे। उस दिन बड़ी लीला भगवान की होती थी। एक दिन किसी ने भात बासी दिया था, खा रही थी तो राम लखन दास साफा बाँधे, चौबन्दी पहिने कमंडल लिए आ रहे थे तो कहा, "ले।" वह हाथ में लेकर मुट्ठी बाँधे आए और हम से हाल कहा। हमने कहा, "वह किसी को जूंठा नहीं देती है। तुम्हारा मन कहता हो तो पा लो नहीं तो फेंक दो।" तब वह फेंक कर कुआँ पर कपड़ा धोकर नहाया।

लखनऊ से एक आदमी आया कहा, "पगली माई! मेरे कोई सन्तान नहीं है।" तो कहा, "देख! मेरे पेट में है?" तो हाथ जोड़ा। कहा "जा।" उसके लड़का हुआ। उसने एक करधनी और दोनों पैरों की पायज़ेब लाकर बाँध दिया। हम उधर गए देखा तो लोगों से पूछा। उन्होंने

बताया कि एक आदमी बाँध गया है। फिर हम और एक साधू (जन्म स्थान का) एक दिन गए तो कुछ न था। फिर सब से पूछा तो लोगों ने बताया कि हनुमानगढ़ी का एक साधू छोर ले गया। वह अपनी तन्मयता में पड़ी थी उसे पता नहीं। तब हमने जन्म स्थान के साधू को जो हमारे साथ गया था, भेजा। वह ढूँढ़कर लाया। हम दो घंटा बैठे रहे। तब उस साधू से फिर बंधाया।

एक दिन साधू अश्नान को जा रहे थे नये घाट, तो पगली माई ने कहा, "अपने हाड़ सरजू में बोरने से कुछ न होगा, अपने अन्दर नहाओ।"

एक दिन एक साधू ने पूछा, "माई! हमैं अजपा जाप बताओ।" तो माई ने कहा, "राम मंत्र तो जपते नहीं हो। अजपा क्या पूछते हो?"

हम एक बार कानपुर गए थे। वहाँ गुरु प्रसाद के यहाँ ठहरे थे। तबियत बहुत खराब हो गई। ऐसा लगता था कि कान से, आँख से, नाक से लौ निकलती थी। हमने सब भक्तौं से कहा कि 'हम से बोलौ मत। हम तीन दिन एक कमरे में बन्द रहे, बाहेर न निकले, न किसी से मिले।' एक दिन पगली माई प्रगट हो गई। एक लोहे की छोटी बालटी में एक सेर सरजू जल था, वह उसने हमें दिया और कहा, "इसे पिओ।" हमने पिया तब कुछ तबियत शाँत हुई। तब हमने बूढ़ी से कहा (बूढ़ी गुरु प्रसाद की स्त्री को हम कहते थे) कि थोड़ा फल का रस हमैं दो। फिर वह सेब का रस लाईं, वह पाया। दूसरे दिन मूंग की दाल, फिर खिचड़ी, फिर दाल-भात-रोटी खाने लगे।

राम शंकर दास कहते हैं कि एक दिन वह और एक साधू भोजन लेकर रूपकला से पगली माई को देने जाते थे। एक दिन जब पहुँचे तो बासी भात पगली माई के पास रक्खा था। उसने कहा, "इसे सड़क पर डाल दो बन्दर खा लेंगे।" "पर हमने तथा साधू ने सड़क पर न फेंका बल्कि खा लिया। ऐसा लगा कि खाली घी का लोंदा है। रात भर घी की घुआइन्द आती रही।"

रघुबंस जी रूप कला के, जान गए तो भेजने लगे। फिर हम कहा, 'माईं! तुम रूपकला में जगह है, वहीं रहा करौ इधर-उधर घूम कर।" तो जीना जो रूपकला में है उसके पास रहने लगीं। कुछ थोड़ा सुस्त हो गई थी। पलथी मारकर बैठ गई, दोनों मुट्ठी बाँधकर। कहती थी "हम सब लिए जाइत है तुम सब खाली हाथ जैहौ।' मुट्ठी बाँधकर शरीर

छोड़ा। यहाँ पता आया तो हम कई आदमी गए-रामदास, हनुमन्त सिंह, मगन और याद नहीं है कि कौन कौन थे। यहाँ से कफ़न, टिकठी बाँधकर ले गए। माई का पती व लड़का जो 22 साल का था, वह वहाँ गए। कपड़ा-चुनरी ले गए। हमने कहा, "21 साल हुए घर छोड़े तब लड़का एक साल का था। तुम जला नहीं सकते।" फिर सरजू करीब थी, ले गए, वहाँ अश्नान कराकर सरजू लाभ कराया और चाँदी की करधनी, पायजेब उसके पती को दिया कहा, "तुम गरीब हो, ले जाओ। बेच लेना या बहू को दे देना।"

यहाँ आए तो 125 रु० दो भक्तौं ने दे दिया-मगनलाल, हनुमन्त सिंह थे। यही दिये होंगे, हमैं ठीक याद नहीं कि किसने कितना दिया।

पगली माई शंकर जी की भक्त थी। उस सवा सौ (रु०) का भंडारा गोकुल भवन में हुआ। चार सौ से ऊपर आदमियों ने पाया, बड़ी बरक्कत हुई।

रामदास से एक दिन कहा था कि दादा से कह देना कि हनुमानगढ़ी वाला हमैं बहुत तंग करता है खाने-पीने सोने तक नहीं देता।

उसके निमित्त रूपकला कुंज में गरीबौं के लिये उर्द की खिचड़ी रामदास, बनवारी दास बनाए थे। खिचड़ी की सुगंध पाकर साधू-सन्त पत्तल ले कर आ गए। खिचड़ी खूब खाए।

पदः- निरगुन सगुन सरकार एकै दुइ कहैं ते मूढ़ हैं ।।1।।
सतगुरु बिना पैड़ा मिलै नहिं ज्ञान यह अति गूढ़ हैं ।।2।।
तन मन से प्रेम लगाये कै जे नाम में आरूढ़ हैं ।।3।।
कहती बचन पगली वही दोनों जहाँ में बूढ़ हैं ।।4।।

134. बिशेश्वर दास पासी
रायगंज, अयोध्या

कानपुर जिले का एक पासी था। 12 वर्ष की उम्र में मंत्र लिया। फिर गाने का शौक हुआ। कानपुर में गाना सीखा। फिर सितार बजाने लगा। 12 वर्ष सीखकर फिर इधर-उधर जाने लगा। गला बहुत सुरीला था। पैसा कमाने लगा। बर्मा गया वहाँ खूब कमाया। 30 की उम्र में अयोध्या जी आया। रायगंज में मंदिर बनवाया। रोज़ कथा सुनने जाता, अपना नेम राम जानकी मंत्र का करता, सवा लाख राम-राम जपता,

ठाकुर सेवा, भोग बनाना, भोग लगाना, बर्तन धोना, सब काम अकेले करता था। फिर सफ़ेद खरगोश पाला। 36 मन चना साल में खरगोश खाते थे। कथा 40 वर्ष सुनी, नाम जप किया, कुछ न हुआ।

एक दिन कबीर जी का पद किसी के पास देखा जो सुरति शब्द पर था तो भगवान से कहा, "अब तुम्हारी पूजा तब करूँगा जब असली रूप से मिलोगे।" किवाड़ बन्द कर दिया, सब जप छोड़ दिया, इधर-उधर घूमने लगा। काशी गया, वहाँ किसी ने न बताया। अवध में तलाश किया, कोई न बताया तो उसे अभिमान हो गया। बिहारा सिंह के पास गया तो वै बोले, "महाराज का शरीर छूट गया है, उनके चेला हैं, उनके पास जाओ।" तब तक हम पहुँच गए। तो बिहारा सिंह ने कहा, "देखो! आ गए। जिनको हम कहते थे। अब पूछो।" हमसे कहा, "राम नाम क्या है?" हमने कहा, "राम नाम ही में सब ब्रह्माण्ड सब सृष्टी है।" तो कहा, "कैसे जानैं?" हमने कहा, "बाद बिवाद छोड़ दो तो बतावैं। तुम्हारे मन में अभिमान हो गया कि कहाँ कहाँ हम गए, न किसी ने काशी में, न अवध में बताया। बड़े-बड़े विद्वान हैं, भजन का मार्ग नहीं जानते।" और हमने कहा कि "इसके पाठशाला नहीं खुलते। कोटिन में कोई जानता है, सब जान जायँ तो यह सृष्टी वहीं चली जाय। दुनियाँ दो से बनी है–आस्तिक और नास्तिक से। इसमें श्रद्धा-विश्वास-प्रेम की जरूरत है।" हम समझ गए थे कि कबीर दास जी की बानी यह कहीं पा गया है और इसके चोट लगी है, व्याकुल है। तब हमने तीन पद कबीर जी के सुनाए और कहा, "चार दिन 10 माला रामजी के और 5 माला महारानी जी के मन लगाकर जपना। फिर आना।" गया, जप किया। शाम को आया। उसे कुछ अनुभव हुआ। कहा "कल सवारी भेजूँगा और मंदिर खोलकर पूजा करूँगा।

जब हम गए तो मालूम हुआ कि उसने यह प्रण करके मंदिर बन्द किया था कि जब असली रूप से मिलोगे, तब मंदिर खोलूँगा। 9 साल बन्द रखा। इतने समय मंदिर बन्द रहने पर भी न कहीं जाला लगा, न भगवान की पोशाक जो पहने थे, मैली हुई। भगवान वैसे ही चम चम करते थे। मालूम होता था कि तुरत ही मंजन किया गया है। तब पूजा किया। जाड़े का महीना था। कम्बल-अचला धुला कर सुखा कर धरा था। 21 रुपया था। परसाद एक थाल में पेड़ा काफ़ी था। तब मद्दा था।

एक ठठेर से कम्मल कपड़ा धुलवाया था। उसी के थाल में परसाद था। उसी का लोटा-गिलास जल से भरा था। हमने भगवान का भोग लगाया, कहा, "आप अच्छे भक्त के पाले पड़े हो।" परसाद बटा कर तुलसी दल हमने ले लिया और सब सामान वापस कर दिया। फिर सब चले गए तो उसे भजन की विधि बताया।

तीन दिन के बाद नाम की धुनि खुली और बाजा सुनने लगा। चौथे दिन ठठेरन में झगड़ा हुआ, इनके मित्र थे। यह समझाने गए तो एक ने इनको बहुत गाली दिया और कहा, "तुम भाग जाओ नहीं तो दाढ़ी-जटा नोंच कर खूब मारूँगा।" तो इनको क्रोध आ गया। सब काम बन्द हो गया। हमारे पास आए। हमने कहा, "कैसे बन्द हो गया? बिना किसी कारण के कोई काम नहीं होता।" तो हाल बताया। हमने कहा कि साधक ऐसी जगह न जाय जहाँ लड़ाई-झगड़ा दुनियाँ की बातैं होती हों नहीं तो माया लूट लेती है। तप धन से बढ़ कर कोई धन नहीं है, नर तन से बढ़कर कोई तन नहीं है। इसी शरीर से भगवान की प्राप्ती होती है, परस्वारथ होता है। अब तुम अपने काम में लग जाओ।" फिर जुट गया। काम चालू हो गया।

एक दिन ध्यान में बैठा था। बाहेर के किवाड़ खुले रहे गए थे, उसे लय दशा हो गई थी। एक काला साँप कहीं से आ गया और गले में लपट गया। फन ऊपर किए फन-फन करता था। सबने सुना पर मारैं कैसे? एक घंटा बाद सांप उतरकर चला गया। तब तक सब लोग भी चले गए और उनकी चित्त बृत्ति उतर गई तो हमारे पास आए और हाल बताया।

फिर कुछ दिन बाद बुखार आया तब रिक्शा भेजा। हम गए तो कहा, "इतनी आवाज़ होती है कि मालूम होता है कि उड़ जाएँगे और इतनी लीला होती है कि आँखी चकाचौंध हो जाती हैं।" हमने कहा, "जब शरीर कमज़ोर हो जाता है, बुखार आदि से तब आवाज़ बहुत होती है, लीलाएं बहुत दिखाई देती हैं। तुम संस्कारी जीव हो, अभी तुम्हारा पूरा साधन नहीं हुआ तब तो यह हाल है।" तब उनसे कहा कि जो खरगोश राखे हो, वह सब बाँट दो, वरना मरते समय मन इन्हीं में लगा रहा तो चौघड़ा (खरगोश) हो जाओगे।" तब फिर कहा कि एक समय भोजन थोड़ा किया करो। कबीर जी ने कहा है:–

आशिक होना तब सोना क्या है, लोना और सलोना क्या है ।।

तब वह रोज़ यहाँ आने लगा। तब हमने कहा कि सात दिन पर आया करो, फिर कहा कि 15 दिन पर आया करो, फिर कहा कि महीना पर आया करो, फिर कहा कि साल में दो बार आया करो। अपना काम करो यहाँ आने की ज़्यादा ज़रूरत नहीं है।

तब वह कहीं आता जाता न था, सिर्फ़ बाज़ार जाता था, ज़रूरत का सौदा ले आता था, किसी से ज़्यादा बोलता न था, मुसकियाया करता था। 80 में शरीर छोड़ा।

135. गंगा के करीब के एक साधू
(इस शरीर से किसी को कष्ट न दे)

महाराज जी बताते थे, "जब भक्त बीमार हो जाय, जप, पाठ, पूजन, कीर्तन न कर सके तो भगवान के यहाँ हाजिरी में लिखा जाता है, पर जब तन्दुरुस्त है तब न करै तो गैर हाजिरी में लिखा जाता है।"

एक साधू गंगा के करीब एक फरलांग पर जंगल था वहाँ झोंपड़ी में रहते थे। गाँव करीब था। भिक्षा मांग लाते कई घरौं से। झोंपड़ी में रखकर गंगा जल छिड़क देते तब पाते। लौकी का कमंडल था, उसी का कटोरा था। उसी में जो कुछ लाते सानकर पाकर, कटोरा धोकर रख देते। मरने के समय गंगाजी पर गए बीमार न थे। उनको मालूम हो गया था। वहाँ जाकर गाँठि भर पानी में बैठ गए। बैठने में पानी गले तक रहा। ध्यान लगाया। फिर ध्यान छूटा। तब शरीर छूट गया। गंगा के कछुआ-मछली मांस खा गए। वे यह विचार करके जल में अन्दर गए कि अगर बाहेर शरीर छूटेगा तो लोगों को तकलीफ़ होगी-लकड़ी काटौ, टिकठी बनाओ, बांधौ, लै कर गंगा में प्रवाह करौ। जहाँ बाँस नहीं होते वहाँ आम-पलाश की टिकठी बनाते हैं। इस से ऐसा किया। इसके बाद लोगों को खबर लगी। सब लोग पछिताकर रह गए।

136. मिथिला के सन्त

पं. राजेन्द्र दास जी बताते थे कि मिथिला में एक सिद्ध सन्त थे। वै शरीर छूटने के पहले सोरिन (सुअर) के भारा में घुस गए। फिर

उनका विष्टा (टट्टी) सारे बदन में लेस लिया जिससे लोग घिना करैं। मेहतरि को बुला कर पैरों में रस्सी बाँध कर घसीटते हुए मेहतरि विमला नदी में छोड़ दें। बाबा ने यह लीला किया। भक्तौं को मालूम हो गया। सब आ गए, भारे में से निकाला, अश्नान कराया, विमान बना, वस्त्र पहिनाया, इतर लगाया, फूल माला पहिनाया, शंख घड़ी बजाते सैकड़ों भक्त विमला ले गए, प्रबाह किया, अश्नान किया। सब भक्तौं ने कहा, "इतना बड़ा सन्त होकर यह लीला किया। हम सब जानते थे, कुछ सेवा न कर पाए। अगर हमारा भाव होगा तो भगवान जरूर कुछ फल देंगे।" आकाश बानी हुई कि "तुम्हारी सब की बहुत अच्छी गती होगी। तुम सब बहुत काम किया। अगर जानते हुए ऐसा न करते तो कुछ न मिलता। तुम्हारे भाव बहुत ठीक हैं। जीव भाव से तरता है।" देखों एक सन्त के भाव से सैकड़ों तर गए। धन्य उनके माता पिता थे।

137. सत्यनामी बाबा
लाल बाग, फैजाबाद

यह कौम के कुर्मी थे। लाल बाग में कमरौं के आगे बरामदा बने थे। एकान्त एक कोने में रहते थे, बहुत दिन से। तुलसी के साखा कानों में लटकते थे। लंगोटी लगाते थे। बाज़ार में आते। किसी ने एक छटाँक गुड़ दे दिया बस लौट गए। कोई एक मुट्ठी चना दे दिया बस लौट गए। इसी तरह बसर करते थे और हनुमान जी से प्रेम था, इसी से पट खुल गए थे। एक बार हम यहाँ लाए। 7 दिन रहे। हमसे कहा, "हम किसी से सेवा नहीं लेते। हमको वहीं भेज आवो।" हम भेज आये। हम से कहा "चौथे दिन चार चना मिलैं खाकर रह जाय। भगवान में सुरति लगी रहे वही भगवान की गोद में खेलेगा। हम यहाँ भोजन थोड़ा ले लेते हैं। वहाँ कभी किसी के यहाँ खाते नहीं हैं। हनुमान जी ने कहा है "अशुद्ध भोजन न करना नहीं तो अंधे हो जाओगे।"

एक पारसी आए कहा, "हम कर्जी हो गए हैं।" हमने कहा "कोई शुद्ध भक्त हो उससे भोजन बनवाकर भेज दिया करो।" हम फिर जाकर बाबा से कह आए तो कहा "आपके कहने से ले लेंगे। हमने किसी के यहाँ आज तक भोजन नहीं किया है। हमारे यहाँ जग जीवन साहेब

हनुमानजी को धूप देकर भजन करते थे, उनके चेला भी सब ऐसे ही धूप देकर करते थे।"

जब वह भक्त ले गया तो कहा, "बड़ी सफ़ाई से लाना। अगर तुम रास्ते में किसी को छू जाओगे तो हम न लेंगे। हनुमान जी का हुक्म है।" शायद 7 दिन लाया तो थोड़ा ले लिया। फिर लाया तो लौटा दिया कहा, "हम न लेंगे। तुम सब को छू कर लाते हो। हम अंधे हो जायेंगे।" वह लौटा ले गया। फिर दूसरे दिन लाया। फिर बाबा ने कहा "तुम्हारे हाथ जोड़ते हैं अब न लाना।" वह फिर लाया, कहा "हम पारसी के नौकर हैं हमसे नाराज होंगे" तो कहा "हम भगवान के नौकर हैं। हनुमान जी का हुक्म नहीं है।" वह फिर न माना तो हनुमान जी उसके घर बड़े रूप से प्रगट हो गए। उसका लड़का 14 साल का था। डर कर फ़ौरन मर गया। वह आदमी हमारे पास आया। हम बाबा के पास गए। बाबा ने हम से हाल बताया। पारसी ने जाना। नौकर से कहा "इसमें तेरा कसूर है। इसी बहाने उसकी मौत थी।" पारसी को बहुत लाभ हुआ था। कुछ कसर रह गई थी। एक दिन हम गए तो हम से कहा "महाराज! उस सुख के आगे भूख प्यास नहीं लगती है। देखो हाँड़ हाँड़ है। शरीर में बड़ी फुरती है। शरीर से देवता निकलते हैं तो प्रगट होकर खूब भगवान का यश वर्णन करते हैं, फिर अन्दर समा जाते हैं। नाक से ऐसी सुगंध निकलती है कि सारा शरीर महकने लगता है। हम कुछ पढ़े नहीं हैं। हनुमान जी की दया से सब भक्ति हम को मिल गई है।" 90 में शरीर छोड़ा था। सब यहाँ के लोग गुप्तार घाट ले गए थे। एक मुसलमान दर्जी उसी बरामदे में था कुछ दूर पर। उसने कहा, "यह पगला आप से क्या कहता है?"

138. बाबा राम हर्ष दास
मुकाम भाऊ कुवाँ

यह जाति के लोहार थे। छोटे पर से पूजा करते थे, भोग लगाते, शंख बजाते, पाठ करते। ब्राह्मण लोग गाली देते पर यह नहीं मानते। फिर यह सुनारी सिखे। पचासों हजार रुपया कमाया, तमाम परिवार बढ़ गया। 50 की उम्र में घर छोड़ दिया। करीब में एक जंगल था। वहाँ चले गए।

लौकी का कमंडल था। आँख बन्द करके बैठते थे। लोग कमंडल उठा लेते तब तालाब पर सौच जाते, पानी पीते, तीन तीन दिन कुछ न खाते, बैठे रहते। बहुत लोगों ने तंग किया डटे रहे। फिर तंग करने वाले बंगला बनवा दिए, प्रेम करने लगे। एक दफ़े मूँग की दाल, गेहूँ या जौ की रोटी अपने हाथ से बना कर पाते थे। खूब साधन किया। लाला भिखारी दास की परिचय थी। 3 बार यहाँ आये, बात हुई। हमसे सब अपनी कसनी का हाल बताया। हमने कहा "बिना कसनी पड़े भक्त पास नहीं होता है।" फिर हमने कहा "किस स्थान से साधन करते हो? कहाँ सुरति लगाते हो?" तो कहा "नाभी पर।" फिर दोबारा आए तो कहा "अब नाभी से स्वतः त्रिकुटी पर आ गई, प्रकाश होने लगा, बाजा सुनने लगे।" फिर तीसरी बार आए तो कहा, "रोम रोम, रग रग, हाँड़-हाँड़, जोड़ जोड़-हर जगह से राम नाम की धुनी होती है। आपको हम गुरु मानते हैं। किसी से नहीं बताया है। सारी सृष्टि में अपने को देखते हैं और अपने में सारी सृष्टि देखते हैं। बाजों में हमको भगवान की मुरली सब से अच्छी लगती है, सब देवी देवताओं के दर्शन होते हैं। हम चार किताब हिन्दी पढ़े थे, रामायण का पाठ करते मास परायन, गीता के श्लोकों का अर्थ पढ़ते थे।" फिर पंडित लोगों ने एक पुस्तक लिखी, उसमें पलटू साहेब के कुछ पद लिखे, सन्त रघुनाथदास जी का उपदेश लिखा और कुछ उपनिषदों की बातें लिखीं, कुछ हमने सुनाया वह लिखा और जहाँ तहाँ की बातें लिखा। फिर भिखारी दास ने पुस्तक छपाया।

84 या 85 में शरीर छोड़ा। इसमें भी विस्तार है हमने थोड़ा लिखा है।

139. ठाकुर शुकदेव दास
बिशुनपुर

यह अच्छे पढ़े पंडित थे। पं० राजेन्द्र दास जी बताते थे। फिर साधू हो गए। गांव के लोग मानते थे। सबने कहा कि यहाँ पास में कुटी बन जाय तो कहा, "आप सब बना कर ठीक करौ। कुटी पर सामान मतलब भर का जाय बाकी यहीं जमा रहे। सब मान गए। कुटी बन गई, रहने लगे। बहुत लड़कों को पढ़ाया। उनको भगवान की प्रतिष्ठा का मंत्र

मालूम था। मूर्ती पाषाण या धातु की हो मंत्र से उसके सर के बीच में तुरंत के पैदा हुए बच्चे के जैसा पुलुर पुलुर हो वैसे होने लगता था। वे राम जानकी लषण लाल के बिना प्रतिष्ठा नहीं कराते थे। कहते थे "महाराज महारानी की सेवा के हित शेष जी ने यह रूप धारण किया है।" वह प्रतिष्ठा का सामान नहीं लेते थे, कहते थे कि "हम क्षत्री हैं हमारा हक नहीं है, यह पंडित का है। ब्राह्मण की लड़की की शादी में या लड़के के जनेऊ में दे दिया जाय।"

शुकदेव दास जी कुछ शरीर से सुस्त हुए तो अवध आए। सबसे कहा "हम अवध जाते हैं वहीं शरीर छोड़ेंगे। फिर आए हमैं बुलाया, दंडवति किया आसन दिया कहा "महाराज! हमैं भगवान का दर्शन नहीं हुआ है। हमको विश्वास है हमारी गती ठीक होगी।" हमने कहा कि "आपने बड़ा पर-उपकार किया है, विद्या दान दिया है, भगवान की प्रतिष्ठा कराई है एक पैसा नहीं लिया, गरीब ब्राह्मणों की लड़किन की शादी और लड़कों के जनेऊ में सब सामान दे दिया है। आप की बड़ी ऊँची गती होगी।" कई जगह से पत्र आए थे। सब का जबाव अपनै लिख कर शरीर निरमोचन पर छोड़ा था।

फिर हम जब कुटी पर गए तो खपड़ा का मकान बना था। पंडितानी से कहा, "इसको तुड़ाकर पक्का बनवा दो" तो पंडित ने कहा कि यह तुड़ाने में तमाम जीव मरेंगे, पाप लगेगा। हमने कहा "नहीं, यहाँ साधु सेवा होगी, पाप न लगेगा।" तब पंडित जी ने बनवाने का प्रबंध किया, ईंटा पकाया गया, भट्टा लगा। ईंटा अच्छा पका। बनने लगा। बन कर ठीक हो गया तो पंडित जी आए हाल बताया कि एक मूर्ति राम लला की है, तीन सालिकराम हैं। हमने कहा, "सालिकराम कितने चाहिए" तो कहा "जितने मिल जायँ।" हमने बड़े छोटे पचासौं दिया और कहा "कहौ तो सवा सौ कर दें" तो कहा "नहीं, नहवाने में ठीक न बैठेगा।" फिर हम गए तो सब ठीक था, सिर्फ कुवाँ बिगड़ा था। गोरख प्रसाद सिंह ने कहा कि हम बनवा दें। तो जिनका बनवाया था उनके घराने वालों ने कहा कि हम बनवावेंगे। उसका समय बनने का न था। समय पर सब काम होता है।

फिर भूकम्प देखने गए। नदियों में जहाँ तहाँ पानी रह गया, सब बालू हो गई। एक तालाब 40 हाथ गहरा जल से भरा था सब बालू हो गया। जहाँ तहाँ तालौं में पानी न था उनमें पानी भर गया और मकान गिर

गए। खोदे गए तो कितने ही जीवित औरत मर्द निकले 10 दिन 15 दिन पर, कितने मर गए। मंदिर कहीं नहीं गिरे। बाकी बड़े नुकसान हुए।

रामदास बताते थे कि सीतामढ़ी में महारानी जी का मंदिर फट गया था। फिर नया बन गया। हम भूकम्प दो माह बाद देखने गए थे तब शायद सीता मढ़ी में महारानी जी का मंदिर बन गया हो। जो कभी राम नाम नहीं लेते थे, वे भी राम राम करते थे। मुसलमान अल्लाह-अल्लाह खुदा खुदा करते थे। थोड़ा लिखा है।

140. समी माता की कृपा

गंगवल जिला बहराइच में है। वहाँ पं० जनार्दन रहते हैं। शायद 3 साल हुआ घर से 1 कोस पर कथा बाँचने गये थे। लौटने पर देर हो गई। 1 मील जब आ गये तो समी माता के करीब एक पीपल का पेड़ है और खंदक खेत से लगी है, उसमें एक बुढ़िया पड़ी थी। आवाज दिया "भैया! मुझे लेते चलो। लड़कों ने ढीलौं से मारा है।" पंडित ने जाकर बाँह पकड़ कर उठाया और बाँह साध कर ले चले। कुछ दूर चली तो पंडित से कहा "तुम अपने लड़के का मुंडन कराने पाटन जाना चाहते हो।" पंडित ने कहा, "हाँ माता" तो कहा "अच्छा मुंडन करा लावो।" जब पंडित का घर करीब आ गया तब कहा "अब हम काली जी की तरफ जायेंगी।" पंडित ने बाँह छोड़ दिया तो बूढ़ी माता ने पंडित के कान की लौर छू दिया और काली जी की तरफ़ चली गई। पंडित घर आये। दूसरे दिन भरत सिंह से बताया कि कान की लौर से 3 दिन तक इतर की खुशबू आती रही। पंडित जी दुर्गा जी का एक पाठ रोज़ करते हैं। एक दिन भगौती ने कहा, "तुम हमारा एक पाठ रोज़ करते हो। हम तुम्हारा दोनों तरफ का काम संभारे रहैंगी।"

141. कनक भवन के मैनेजर अयोध्या

अरसा तीसों साल का हुआ होगा। कनक भवन में एक मैनेजर वैश्य आये थे। वै शौकिया नौकरी किहे थे। बड़े विचारवान थे सिर्फ़ भगवान

का चरनोदक लेते थे और अपने पास से कुछ दे देते थे। उनको 18 की उम्र में तपेदिक हो गई थी। दोनों फेफड़ा गायब हो गये थे। भोजन काफी करते थे तो डॉक्टरों ने कहा "बड़े ताज्जुब की बात है यह कैसे जीता है?" वह महीने में दो बार हमारे पास आते थे। बहुत कम बोलते थे। साल में एक बार कनक भवन पुताते थे 600 रु० में, और (दूसरे) मैनेजर 1000 रु० में पुताते थे। उनके पास घी, शहद, तेल, चीनी और कई सामान रहते थे। जो कोई माँगने जाता तो जिसमें से खर्च किहे होते उसमें से नहीं देते थे। जो शुद्ध धरा होता उसमें से देते कहते "तुम भगवान के काम में लावोगे तो हमैं दोष लगेगा।" हमारे भक्त गिरधारी से भी उनकी परिचय रही। कनक भवन के रहने वाले लोग कहते थे, कैसा आदमी है, चुप रहता है, बहुत कम बोलता है। उनसे महारानी जी से बातैं होती थीं जैसे हम तुम आपस में बातैं करते हैं। साधारण आदमी, डाक्टर, बैदों को क्या मालूम कि कैसा संस्कारी जीव है। हमसे कहा "हम भगवान का काम सच्चाई से करते हैं। इसी से हमारी गती होगी। यहाँ के लोग जितने हैं कोई भगवान के सच्चे प्रेमी नहीं हैं, जूता पहिने आते हैं। फिर पग नहीं धोते, चौखट के पास जाकर बैठते हैं पुजारी मना नहीं करते। अगर हम कहैं तो नाखुश हों इससे हम कुछ नहीं कहते। पुजारी कहीं उठ कर चले जायं तो साधू लोग आकर अपने हाथ चरनोदक लेकर फिर जो जाता है उसे देने लगते हैं। हाथ तक नहीं धोते। कोई विचार नहीं करते। चरनोदक बाँटना पुजारी का काम है सब का नहीं।"

एक माह पहले हमने उनसे कहा "तुम्हारा समय आ गया।" तो कहा कि हम भी देख चुके हैं। बैकुंठ हम डंके की चोट पर लेंगे। हमने अपनी जान में कोई पाप नहीं किया है। लोगों ने कहा शादी कर लो। तो हम से कहा "हमारा मन शादी करने को नहीं चाहता था इससे नहीं किया।" फिर हमसे कहा "हरद्वार जाकर शरीर छोड़ेंगे।" यहाँ से गया। उसके हिस्से के 22 गाँव थे उसका मुनाफ़ा गरीबों को देने को लिख दिया। हम को लिखा कि हमारी इच्छा थी कि रामायन गान करके कोई साज बजाकर सुनाता। हमने लिखा दिया कि यहाँ कोई नहीं जाने वाला है। फिर अपनी इच्छानुसार दान किया और हंसते हंसते शरीर छोड़ा। ऐसा सच्चा जीव लाखों में कोई एक मिलेगा।

58 या 60 की उम्र में शरीर छोड़ा।

142. ठाकुर दामोदर सिंह
बस्ती

जिला बस्ती में ठा. दामोदर सिंह 40 की उम्र में अवध आये। स्वभाव के बड़े खराब रहे। सीढ़ी पर मन्दिर में महन्त से मंत्र लिहे थे। महन्त बूढ़े थे। नाम हमें याद था। हम उनको जानते थे। इस समय नाम भूल गये हैं। फिर उनका नाम दामोदर दास ही रखा गया। कुछ दिन बाद भंडार-कोठार का काम सौंपा गया। करने लगे। उनका स्वभाव था कि दुखी को देखकर हंसते थे। हम जहाँ रहते थे उसी जगह से सरजू नहाने को सब जाते थे। हमारे पास रोगी आते थे। हमने कहा, "तुम रोगिन को देख कर हंसते हो। तुम्हारे कभी कोई रोग नहीं हुआ है, क्या जानौ कैसे तकलीफ़ होती है? जब तकलीफ़ होगी, तब पता चलेगा।"

थोड़े दिन बाद दाहिने फ़ोता में मांस बढ़ा, दर्द भई। हमने उनको फ़ैजाबाद अस्पताल में भेजा। डाक्टर ने वह फ़ोता निकाल दिया। 8 दिन बाद आये। महीना जाड़े का था। नाभी पर से नस नहीं निकाला था। वह पक गई। सुबह माँझा गये। रंडा का कूर, ताल की काई, साँप की केचुल, अजवाइन इन सबको पीस कर पकाकर बाँधा तीन दिन। फिर मवाद निकलने लगी। दो मंजिल पर कमरा था। गंधा गया। फिर धीरे-धीरे ठीक होने लगे। तब बायें फोते में एक फोड़ा निकला, उसे पकाया, चीरा और घर से 10 सेर गाय का घी मंगाया। तब एक रुपया सेर का था और 5 सेर मीठी किसमिस फ़ैज़ाबाद से मंगाया। धो कर सुखा कर एक तोला सन्दल उसमें मसला, 5 सेर देशी शक्कर घी गाय का छान कर उसमें किसमिस-शक्कर मिला कर, हमारे पास कई रस थे, उसमें छोड़ा। हमने सब सामान ले जाकर उनके कमरे में धर दिया कहा, "सुबह शाम तोला तोला खाकर कुल्ला कर लेना। एक घंटा तक पानी न पीना।" दो माह में ठीक हुए। खूब संजम कराया।

फिर दया की मूर्ति बन गये। जहाँ रोगिन को देखैं वहाँ आँसू गिरने लगैं। पशुन के कीड़े पड़ जाते हैं उनको निकालें। कोई जाति का औरत-मर्द हो उनकी बीमारी में सहायता करैं मल मूत्र साफ़ कर दें। हम दाम दें तो सामान लेकर उसके घर दे आवैं, कपड़ा लेकर दे आवैं। रोगी देखने जायँ, हम से हाल बतावैं, दवा कूटैं, अपने यहाँ धरैं, हमारे यहाँ

जगह बहुत कम थी और सर्द बहुत रहा। हम चरही भराते थे कुवाँ पास था। जब कूड़ी खाली हो तो हार में कुवाँ था कच्ची चरही बनाकर पानी भरते थे। सरजू जी के किनारे नहाने जाते तो दूर तक झाड़ू लेकर सफ़ाई करते, कूची सब उठाकर जहाँ कूड़ा होता वहाँ छोड़ आते। कूची दातून को कहते हैं। उनको सेवा से अनुभव होने लगे थे। तन मन से सेवा करते थे। निमंत्रण में जाते तो काली मिर्च नमक पीस कर ले जाते उससे पूरी खाते थे। साग में साधू मिर्चा छोड़ते हैं। इससे नहीं खाते थे। खूब परहेज किया। दवा कई माह खाया था। शरीर गोरा गोरा दोहरी देह का था चमक गया। फिर रोगिन की सेवा खूब किया और हम से कहा, "सेवा से हमारे बल बहुत बढ़ गया है हम थकते नहीं हैं। मन कहता है कि रात दिन सेवा मिलै तो किया करैं", हमने कहा कि "सब के आशीर्वाद से मन स्वच्छ हो गया, बल बढ़ गया। जो पाप घर पर किया वह सब नाश हो गए।" तो कहा "सत्य है, पाप तो हमने बहुत किया था।"

72 की उम्र में दामोदर दास कुछ बीमार हुए। हमैं बुलाया हम गये तो लेटे थे हमारी तरफ दोनों हाथ उठाये आँसू आ गए। हमने आँसू पोंछा और कहा "अब सूरति उधर लगावो।" बस थोड़ी देर में शरीर छूट गया। कुछ दिन बाद देखा बैकुण्ठ में दिव्य रूप से।

143. सन्त घनश्याम शरण

लछिमन किला पर एक सन्त घनश्याम शरण रहते थे। वै राम जानकी के भक्त थे। महाराज जी से बड़ा प्रेम करते थे। साल में कई बार महाराज जी को बुलाते, भोजन कराते। हमने उनके दर्शन किये हैं। बूढ़े थे गोरे गोरे। रँगा कपड़ा पहनते थे। एक बार वै बीमार हुये तो उनके एक बड़े आदमी भक्त थे उनका लड़का उम्र 16 साल की होगी, आया, सेवा करने लगा। कई माह सेवा की, अपने को मिटा दिया। वह भी बहुत बीमार हो गया। बड़े भाई को तार दिलाया, वह आए! कहा "महाराज जी को सम्हालना, हम जाते हैं। शरीर छोड़ दिया। यह बात अवध में जाहिर हो गई। जो साधू या भक्त दया धर्म को करते, जानते हैं वै धन्य धन्य करने लगे। उसकी बड़ी ऊँची गती हुई। ऐसा भक्त सेवा करने वाला लाखों में एक मिलेगा। उसके माता पिता भाई सब धन्य थे

जो जानकर दुखी नहीं हुए। उनकी गती भी ऊँची हुई। फिर घनश्याम शरण अच्छे हो गए। बहुत समय रहकर शरीर काफी उम्र में छोड़ा। बड़े सरल निरछल थे। महाराज जी को अवध के हिन्दू मुसलमान सन्त सभी मानते जानते थे परन्तु हनुमति निवास के भगवान दास और जानकी घाट करुणा सिन्धु के मन्दिर के अवध शरण बहुत मानते थे। साल में कई बार आते, पकवान अपने हाथ खवाते, जल पिलाते, मुँह पोंछते, कपड़ा ओढ़ाते और प्रेम से रोते छाती में लगाकर, कहते हमारी बहन महारानी जी का सच्चा बच्चा है। महाराज जी चारों धाम घूमे थे। वहाँ के साधू और भक्त पूछते थे "क्या अवध में ऐसे ही सन्त हैं" तो महाराज जी कहते "सब से छोटे हम ही हैं।"

144. कई युग के सन्त का आगमन

जिस कमरे में राम सिंह हैं वह छप्पर से बहुत अच्छा बना था। काफी ऊँचा था, ईंटा के पावा थे डबल दो-दो ईंटा के। खूंटी लगी थी। करीब 45 साल हुए महाराज जी का शरीर सुस्त था लेटे रहे। हम और पंडित राजेन्द्र दास बैठे थे। दो बजे रात का समय था। एक सन्त बहुत काले थे और नंगे थे, दाढ़ी केश थे, हाथ में बीना था, प्रगट हो गए। बैठने पर उनके सिर के जटा बड़ेर में लगते थे। सितार बजाने लगे। हमने कहा कि सितार न टुनटुनाओ, हमको कोई भजन की विधि बताओ। तो वे अपनी ज़बान निकाल कर मस्तक ऊपर लगा कर फिर अन्दर कर लिया। तो हमने कहा, "हम जानते हैं यह खेचरी मुद्रा है। इसको खोपड़ी के अन्दर बीच में छेद है उसमें सटा देने से अमृत जो गगन से टपकता है वह रसना आता है। उससे आयु बढ़ती है। एक दिन की समाधि से 10 दिन की आयु बढ़ जाती है। स्वाँसा 21600 रोज़ नासिका से निकलता है। इसी तरह धीरे-धीरे बढ़ाते-बढ़ाते योगी अजर-अमर हो जाते हैं।" फिर हमने कहा, "जब अन्दर तरह-तरह के बाजे बजते हैं तो इसकी क्या रखने की जरूरत है। यह ऊपरी शौक है, अभी छूटा नहीं। हमें कोटिन युग के हठयोगी मिले, ऐसा योगी कोई न मिला जो नंगा हाथ में सितार लिए हो। जितने मिले सब लंगोटी लगाए मिले, कोई भभूत लगाते लंगोटी लगाए थे।" तो कुछ न बोले।

तब हमने कहा कि "इस योग से तमाम सिद्धि हो जाती है, सब जीव का रूप धारण कर लेते हैं, मंदिर मकान जवाहिरात के छिन भर में रच देते हैं। पर भगवान की प्राप्ति नहीं होती।" फिर हमने कहा कि "एक नट कला करने वाला एक साधू से 2 माह की समाधि सिखा और एक राजा के दरबार में गया। राजा से कहा कि मैं एक साधू से समाधि सिख आया हूँ। राजा ने कहा, 'क्या इनाम लोगे?' तो कहा, 'एक घोड़ा एक धोती का जोड़ा।' बस बैठ गया। राजा से यह नहीं कहा कि हम 2 माह की समाधि करते हैं न मन में संकल्प किया। गरीब था मारे खुशी के, स्वाँसा खींचि लिया। ब्रह्म रंध्र में समा गया। 3 दिन के बाद राजा ने जाना कि मर गया। उसे मट्टी का गहरा गड्ढा खोद कर गड़ा दिया। हजारों वर्ष बीत गए। सब गाँव डीह हो गया। उधर से तीन हठयोगी निकले तो दिव्य दृष्टि से देखा। अड़ोस पड़ोस के लोगों को बुलाया। वे फरुहा कुदारि लेकर आए। बड़ी मेहनत की। उसे निकालकर बाहेर लाये। एक हठयोगी ने उसकी गर्दन के पीछे की नसें दाबीं। समाधि भंग हो गई तो कहा, 'घोड़ा, जोड़ा।' तब तीनों हठयोगी बोले कि तेरा मन घोड़ा जोड़ा में लगा रहा। हजारों वर्ष बीत गए, न राजा है न रानी, न गाँव में कोई है। सब डीह हो गया। तेरे घर का पता नहीं। जा देख ले कोई तेरे बाद में है।"

तब पंडित राजेन्द्र दास जोर से हँसे। महाराज जी उठकर बैठ गए, कहा "पंडित! क्या बात है?" तब पंडित ने कहा, "एक हठयोगी बैठे हैं, आपके दर्शन को आए हैं। इनकी बात है।"

तब हठयोगी ने कहा, "यह सब संस्कार से होता है।" फिर महाराज जी की दंडवति करके अन्तर हो गए।

145. हुसेन शाह जी (अपढ़)

बलख बुखारा

पद:- अजर अमर कर दिया सिया के पिया ।।1।।
राम नाम जप किया सिया के पिया ।।2।।
जोड़ी जुगल सामने हरदम निरखत हर्षै जिया।। सिया०।।3।।
नाम कि धुनि परकाश समाधी बिधि गति छेकि दिया।। सिया०।।4।।
अमृत पियों सुनों घट अनहद सुर मुनि जै जै किया
।।सिया० ।।5।।
कहत हुसेन शाह सुनौ भाई बहिनौं नर तन का फल लिया
।।सिया० ।।6।।

वार्तिक:-
मैं नादिया शान्तिपुर के श्री गौराँग जी का शिष्य हूँ। राम राम कंठ से करने को बताया था। दो माह बाद कंठ से जप स्वतः चालू हो गया। हर समय हुआ करता है। महा मंत्र की धुनी जिसे बीज मंत्र कहते हैं, मंत्र परम लघु कहते हैं, उसकी आवाज़ सब लोकों से ज़र्रा-ज़र्रा से हो रही है तरह-तरह की लीला देखने में आती है और भूख-पियास-जाड़ा-घाम कुछ नहीं सताता। जहाँ इच्छा हो तहाँ पहुँच जाता हूँ। देखते सुनते बनता है कहते नहीं बनता है। भगवान सबका समय बाँधे हैं। हम तो महान पापी थे। कोई अच्छा काम 40 की उम्र तक न किया। जो अपने अवगुन बताऊँ तो एक बड़ी पुस्तक हो जाय। पापों का भोग पूरा हो गया तब महाप्रभू के दर्शन मिले, उपदेश दिया और अपना लिया। जियतै में सब प्राप्त हो गया।

146. मस्त शाह जी

पद:- हम तो खुश रहते तेरे मिलने से प्यारे रात दिन ।।1।।
छटा छबि सिंगार शोभा निरखते हैं रात दिन ।।2।।
मुरली अधर पर राजती बजती है छिन छिन रात दिन ।।3।।
सखा सखियाँ नाचतीं संग राधिका जी रात दिन ।।4।।
नूपुर छमा छम बाजते अरु गान होते रात दिन ।।5।।
सुर मुनि दरश देने लगे उर में लगाकर रात दिन ।।6।।
हर जगह से नाम धुनि रं रं की होती रात दिन ।।7 ।।
देखते सुनते ही बनता मस्त रहते रात दिन ।।8।।

दोहा:- सुखानन्द का शिष्य हूँ मस्त शाह है नाम।
ग्राम निघासन जानिये ज़िला है खीरी नाम ।।1।।
अजर अमर तन है मेरा भूख प्यास गई भागि।
बारह बरस का रहत तन सूरति शब्द में लागि ।।2।।

गुरु में जा को भाव हो ता को हो कल्यान।
मस्त शाह की विनय यह जियति लेय सो जानि ।।3।।

एक मुट्ठी हरी दूब खाते थे।

147. डाक्टर अखिलेश्वर नाथ श्रीवास्तव
गोलागंज लखनऊ, वरदानी हनुमान जी के मन्दिर की प्रतिष्ठा
(बसन्त पंचमी सम्वत् 2030, दिनांक 28 जनवरी 1974)

डाक्टर अखिलेश्वर नाथ श्रीवास्तव, गोलागंज, लखनऊ के हनुमानजी की, गणेश जी की, शंकर जी, पारबती जी, नन्दीश्वर, जगदीश, बद्रीनारायण, द्वारिकानाथ की प्रतिष्ठा का हाल लिखते हैं।

उस फारम का नाम रघुबीर बाटिका है। अभी तो गेहूँ-चना बोये हैं। फिर पेड़ लगाये जायंगे—आम, अमरूद, नींबू, नारंगी, अनार मीठा, लीची, नासपाती, फूल खुशबूदार। जो सड़क ठाकुरगंज से हरदोई गई है उसी सड़क पर है। गोलागंज से दो या ढाई कोस होगा। सड़क पर साइन बोर्ड लगा है – "महाबीरपुर।"

प्रतिष्ठा में पांच पंडित थे। तीज-चौथ-बसंत पंचमी पूजन हुआ। पंचमी को पधर गए। भक्तों की भीड़ भी अच्छी रही। सब के जल भोजन का ठीक प्रबंध था। सब प्रसन्न रहे। बड़े प्रेम से कार्य हुआ। सब देवी देवता विमानन पर चढ़े जै जैकार अखिलेश्वर के माता-पिता की (बैकुण्ठ बासिन की) की और अखिलेश्वर की, कर रहे थे। हम मंदिर में पौने घंटा खड़े रहे, आरती भोग लगा। वस्त्र पहनाए गए, इतर लगाया गया, बड़ी सुन्दर दृष्टि देखने में आई जो वरनन के बाहर है। थोड़ा लिखा है।

जब प्राण प्रतिष्ठा हुई तो सब देवताओं में प्राण आ गए और मुसकियाने लगे। हनुमान जी का नाम 'वरदानी हनुमान जी' धरा गया। बीर आसन से बैठे हैं। गदा पास में धरा है। दाहिने हाथ की हथेली से बरदान दे रहे हैं। वजन में आठ मन के हैं। अभी तो शुकुल रूप है, हाथ की हथेली सिन्दूर से रंग दी गई है। अब सुनहरी पालिश लगा दी जायेगी।

अखिलेश्वर नाथ के सब परिवार की जै जैकार देवी देवताओं ने किया और जितने भक्त, रिश्तेदार, मित्र आदि थे सब का जै जैकार किया। 11 बजे रात तक सब का स्वागत हुआ। पूजन 3 दिन पंडितों ने किया। उनको पहले ही दही-बर्फी-केला खिला दिया जाता था जिससे पूजन में मन लगे और भक्तों को भी जलपान करा दिया जाता था। भोजन के समय सब को भोजन कराया जाता था। पंडितों को हमारे हाथ से धोती, अंगोछा, लोटा, खड़ाऊँ, आसनी, माला, जनेऊ, दक्षिणा दिलाया। सबने डाक्टर को आशीर्बाद दिया। बड़ा आनन्द रहा।

थोड़ा हमने लिखा है।

148. सावित्री देवी
धर्मपत्नी बृज किशोर नारायण,
पटना

श्रीमती सावित्री देवी धर्म पत्नी श्री बृजकिशोर नारायण सिंह निवासी पटना, का निधन दिनांक 16-12-73 को जमशेदपुर अस्पताल में हुआ। मिट्टी मोटर द्वारा जमशेदपुर से अयोध्या 17-12-73 को सुबह 8 बजे गोकुल भवन लाई गई। कारण यह बताया गया कि सावित्री ने दो माह पहले अपने पति से कहा था कि यदि हम अयोध्या के बाहर मरें तो हमारी मिट्टी अयोध्या ले जाई जाए और यदि मरने के एक दो दिन पहिले मालूम हो जाय तो हमारी हालत चाहे जितनी खराब हो हमें गुरु महाराज के पास ले जाना। चार घंटा पहिले डाक्टर ने कहा अब यह न बचेंगी तो विचार हुआ कि इसी हालत में अयोध्या ले चलो। पर डाक्टर और मित्रों ने कहा कि यदि रास्ते में मर गईं तो पुलीस बहुत तंग करेगी। अत: मरने के बाद मृत्यु का प्रमाण पत्र प्राप्त करके उस पर कलेक्टर, पुलीस अधिकारी, जमशेदपुर, के दस्तखत लगा कर मोटर में लाए। साथ में उनके पति, लड़का तथा पति की बहन आये। दो ड्राइवर थे-रास्ता 900 किलोमीटर था।

बृज किशोर नारायण सिंह ने बताया कि उनकी स्त्री की सुरति महाराज में लगी रही। चरनोदक की शीशी हाथ में थी। 2-4 घंटे पर चरनोदक मूँह में लेती रहीं। मरने के दो घंटे पहिले बोल बन्द हो गया।

तब कान में हम लोग राम धुनि सुनाते रहे। थोड़ी देर बाद उन्होंने भी राम राम कहना शुरु कर दिया और साँस छोड़ दी। दाह संस्कार राम घाट पर किया 17-12-73 को बारह बजे दिन में।

जब घर में उनका सामान देखा गया तो कपड़ों में 100 रुपये का एक नोट रखा था और एक परचे पर लिखा था "मरने के बाद यह रुपया श्री महाराज जी की सेवा में भेज दिया जाय।" उनके पति ने बड़ी श्रद्धा से वह पैसा मनीआर्डर द्वारा यहाँ भेज दिया जिसका यहाँ सदुपयोग किया गया।

149. राम जानकी राम जानकी जपने वाला ब्राह्मण

एक ब्राह्मण राम जानकी राम जानकी जपता था। पं० राम किशोर ने पूछा, "और लोग सीताराम, सीताराम जपते हैं तुम रामजानकी जपते हो।" तो कहा, "हमारा शरीर छूटा तो जमदूत लेकर चले। हमारे मूंह से निकला 'राम जानकी राम जानकी।' तो जमदूतों ने कहा, 'साले! कभी नाम लिया। अब हम नर्क को लिहे जाते हैं कैसे तुझको छुटावैंगे?' उसी समय एक सिंहासन आसमान से बड़ी तेज़ी से आ गया। उस पर राम जानकी बैठे थे। रामजी उतरे और जमदूतों के कई साँटी मारा। वह भाग गए। रामजी ने कहा, 'जा अपने शरीर में प्रवेश हो जा और जिस गाँव में जाना एक बार ब्राह्मण के घर में भोजन करना, एक दिन रहना और राम जानकी राम जानकी जपना। फिर शरीर छूटैगा तो हमारे पास आवौगे।' हम अपने शरीर में प्रवेश हो गए। तब से इसी तरह विचरते हैं और राम जानकी राम जानकी जपते हैं।"

पंडित जी ने हमसे कहा "भगवान की लीला भगवान जानैं।" इस बात को बताये 50 वर्ष हो गए। (सन् 1925)।

150. गोविन्द साहेब
जिला फैज़ाबाद

गोविन्द साहेब की कुटी यहाँ से 30 कोस दूर है। जब नवाब ने पिटवाया और वह बेहोश हो गए तो तमसा नदी में फिकवा दिया। वहाँ

से बहते-बहते जो पुल बना है, भरत कुण्ड से दक्षिण तमसा में, वहाँ शरीर आया। होश न था। बरसात का महीना था। महाराज जी बताते थे कि लोगों ने देखा। पुल के किनारे शरीर लग गया था। खटिया पर घाटिया (घाट वाला) भरत कुण्ड पर लाया। कुछ साधू और भक्तों ने सेवा करना शुरु किया। गाय का दूध देते थे। फिर भोजन देने लगे। दो माह में बोलने लगे, फिर खड़े होने लगे, कुछ चलने लगे।

फिर नवाब आया, पैरों पड़ा, माफी माँगा तो हँसे, कहा, "भरत जी का हुक्म है कि एक साल यहाँ रहो तब कुटी पर जाओ। तुम्हारा पुराना भोग पूरा हो गया।" फिर नवाब महीने-महीने आता था। जब एक साल हो गया तब पीनस लाया। बड़ी धूमधाम बाजा बजवाते कुटी पर ले गए।

गोविन्द साहेब बेंतों से मारे गए थे। बेंत से हड्डी नहीं टूटती खाल कट जाती है, मांस कट जाता है, नहौं से खून आता है। तकलीफ़ बहुत होती है।

गोविन्द साहेब के पास एक मुसलमान बूढ़ा फ़क़ीर रोज़ आता था। सुबह से शाम तक रहता था। वहीं भोजन करता था और शाम को अपनी झोंपड़ी में चला जाता था। उसने नवाब से जाकर कहा, "वह सच्चे सन्त हैं, उनको कुछ न कहना।" होनहार ने नवाब की बुद्धि घुमा दी।

भीखा साहेब के शिष्य गोविन्द साहेब थे। गोविन्द साहेब के शिष्य पलटू साहेब थे। भीखा साहेब चोबे थे। गोविन्द साहेब दुबे थे। गोविन्द साहेब पलटू साहेब के गाँव के पास के रहने वाले थे। गोविन्द साहेब और पलटू साहेब फैजाबाद ज़िले के थे। भीखा साहेब गाज़ीपुर जिला, भड़कुड़ा के थे।

151. पीतम सिंह
ज़िला सीतापुर

पदः- समय जब ठीक आ जाता तभी बुद्धी सुधरती है ।।1।।
बिना शुभ कार्य के कीन्हे बृथा आयू गुज़रती है ।।2 ।।
कहैं पीतम सुनौ भक्तौं ए बातैं तो कुदरती हैं ।।3।।
शरनि सतगुरु की चलि लीजै वही जग से उबरती है ।।4।।

वार्तिक:

मैं जाति का ठाकुर ज़िला सीतापुर का था। गाँव का नाम याद नहीं है। अरसा 90 साल का हुआ। औरत थी। कोई संतान न थी। एक रंडी भी रही। कुछ समय के बाद रंडी ने हमें बहुत खराब शब्द कहा। हमै गुस्सा आ गया। हमने तलवार उठाया। एक हाथ गर्दन पर मारा। उसका सर अलग हो गया। हम तुरत सीतापुर चले गए। जज की इजलास पर सब हाल ठीक ठीक बताया। सब लिख लिया गया। कुछ दिन बाद पेशी हुई। छोड़ दिए गए। हमै वैराग्य हो गया। एक साधू दरवाज़े पर आए। उनका स्वागत किया। सब हाल बताया। वै बोले, "राम राम करने से सारे पाप नाश होते हैं।" हम जुट गए। अन्त समय हम चौथे बैकुंठ भेज दिये गए।

ठाकुर घर में कहकर गये थे, "हम सीतापुर जज के पास जा रहे हैं ब्यान देने।" जब पुलिस आई तो ठाकुर ने सब हाल बताया तो दारोगा ने लाश निकला कर लोगों को बुलाकर गड़वा दिया। वहाँ पर ज़मीन धुलवा दिया। शाम को ठाकुर आए। सुबह मकान पोतने को आदमी आए। दो दिन में मकान पोता गया, गंगा जल छिड़का गया, हवन हुआ, ब्राह्मण भोजन तथा गरीबों को भोजन दिया गया। रंडी के कपड़े ज़ेवर गरीबों को बाँट दिये गये।

ठाकुर राम राम करने में जुट गए। एक बार सादा भोजन, सादे कपड़े पहनते थे। किसी से बात न करते थे। खेती का काम नौकर करते थे। थोड़ी जमींदारी थी। ठाकुर खुद इन्तज़ाम ठीक करते थे। जब तक रहे खूब धर्म में पैसा लगाया।

152. श्री वली शाह जी

पद:- बैर करै जो कोई तुमसे तो तुम उसकी खैर करौ ।।1।।
इस प्रकार संसार में रहकर अपने तन में सैर करौ ।।2।।
देखो सुर मुनि दर्शन देवैं सब के खुश ह्वै पैर परौ ।।3।।
सिया राम प्रिय श्याम रमा हरि सन्मुख राजैं जियति तरौ ।।4।।
शुभ कारज करिये तन मन से दुख आवै तबहूँ न डरौ ।।5।।
नाम कि धुनि पर लगी रहे लौ निर्भय हो टारे न टरौ ।।6।।

यह बिधि जानि श्री सतगुरु से अपने हिरदय माहिं धरौ ।।7।।
वली शाह कहैं भिच्छा करिकै भक्तौं अपना उदर भरौ ।।8।।

153. लाला अमबिका प्रसाद

फ़ैजाबाद

लाला अमबिका प्रसाद, रिटायर्ड सफ़ाई के दारोगा, अयोध्या, दर्शन नगर, फ़ैजाबाद में रहे। किसी से एक पैसा न लिया। घर ही पर काम करते थे। उनको सब हाकिम मानते थे। सच्चे बहुत थे। जब शहर में देखने जाते थे ताँगे पर तो लोगों से कहते "भाई! अपना अपना पानी का हौज, नाली साफ़ कर लिया करौ तुम्हारे हाथ जोड़कर प्रार्थना करते हैं। मरने पर हमसे हिसाब लिया जायगा तो हम क्या जवाब देंगे और यहाँ के लोग भी हमारी शिकायत करेंगे कि कैसे सफ़ाई के दारोगा हैं ठीक काम नहीं करते, तो हमारे यहाँ वहाँ दोनों तरफ से मूँह में कारिख लगैगी।" यह सुन कर लोग सब अपना-अपना हौज नाली साफ़ रखते थे। जब गश्त को न जाते तो लिख कर भेज देते थे कि आज हम गश्त को नहीं गए, हमारा मन नहीं चहा। बस फिर उनसे कोई पूछता न था कि काहे न चाहा, तुम नौकर किस बात के हो।

जब महाराज जी राम घाट रहे तो हर इतवार को जाते थे, देर तक रुकते थे। जब महाराज जी यहाँ आए तो यहाँ आते थे। यहाँ के मेला में अफ़सर बनाये जाते थे।

एक दिन महाराज जी से कहा, "हम मोटेपन की वजह से कुर्सी पर बैठ पाते हैं ज़मीन पर नहीं, तो ध्यान कैसे करैंगे?" तो महाराज जी ने कहा "कुरसी पर से हो सकैगा।" फिर छोटे पावा की कुर्सी बनवाकर ध्यान में बैठने लगे। मंत्र रानूपाली के बाबा नारायण राम से लिये थे। महाराज जी ने कहा, "मंत्र दोनों समय में पांच-पांच माला जपा करौ। सुबह पूरब मुंह बैठ कर और शाम को पश्चिम मुख।" उनका नेम सूर्य उदय के पहले हो जाता था। हर समय प्रसन्नचित्त रहते थे।

तीन दिन पहले हमैं बुलाया। हम गए तो हमसे कहा, "अब चलने का समय आ गया। 72 की उम्र हो गई। हमारा मन स्वरूप पर डटा

दीजिए।" हमने कहा, "नाम की धुनी पर ही ठीक है। 'राम न सकैं नाम गुन गाई'। नाम की महिमा बहुत ऊँची है। गोस्वामी जी, कबीर, जगजीवन, सूर, सुन्दर, मीरा, पलटू, तमाम सिद्ध संत, शंकर भगवान, हनुमान जी, शेश, शारदा, गणेश जी, चारौं युग, वेद शास्त्र–सब ने राम नाम ही श्रेष्ठ कहा है।" तो हमसे कहा, ठीक है।"

हम नानकजी का, महाराज जी का चरनोदक ले गए थे। बड़े भाव से लिया। कुछ पाया बाकी रख लिया। शरीर छोड़ने के दिन इतवार पड़ा था। सब से कह सुन कर शरीर छोड़ा। साथ में बहुत लोग अयोध्या आए। सरजूजी के किनारे उनके पुत्र रिखेश्वर ने दाह कर्म किया। ऐसी मृत्यु कोटिन में किसी की होती है।

154. बाबा फक्कड़ दास
मढ़िया, ज़िला हरदोई

फक्कड़ बाबा कुम्हार के बालक थे। जब हम गए मढ़ियन पर तो देखा गाँठि भर पानी में खड़े झुके गोमती की बालू पानी के सहारे से खा रहे थे। हम ने पूछा, "यह कब से खाते हो और किस वास्ते?" तो कहा, "हम यहाँ एक गोशाला बनवाना चाहते हैं।" हमने कहा "अब न खाओ, भगवान चाहेंगे तो बन जायगा।" उन्होंने बालू खाना बन्द कर दिया। गुरु पर्व का समय आ गया। मढ़िया से शायद डेढ़ कोस बाबा टीका दास की कुटी बहादुर नगर से आधा फरलाँग है। वहाँ गुरु पर्व पर पांच हजार आदमी आ गये। हम गोशाला की गोलक फेर दिया। तीन हजार रुपया आ गया। ठाकुर लोग अपनी ज़मीन नदी के पड़ोस 75 बीघा पक्की दे दिया। गौवन के लिये ठाकुरद्वारे के करीब ही जगह ठीक हो गई। पहले बाँस फूस से बनने लगा। गौवें आने लगीं। फिर आस पास के गाँवों के लोग चन्दा देने लगे। 400 गाय, बैल, बछड़ा बछियाँ हो गए। फिर पक्का बन गया।

कुछ दूर पर एक नवाब की बाज़ार है। वहाँ पशू बिकते हैं। कसाई भी खरीद ले जाते हैं। किसी ने फक्कड़ से आकर हाल बताया तो फक्कड़ एक ठाकुर का हाथी माँग कर गए, लंगोटी लगाये, हाथ में बाँका था। फाटक पर हाथी पहुँचा। फाटक बन्द था। फक्कड़ हाँक दिया

कहा, "फाटक खोल दो।" नवाब कहीं गये थे, उनकी औरत आई, कहा "फक्कड़ बाबा, क्या हुक्म है?" कहा, "बाज़ार में पशू न बिकें, कसाई ले जाकर काटते हैं, हमारे गौशाला में कर दिये जायँ। वही दाम हम देंगे जो कसाई देते हैं।" नवाब की औरत ने कहा, "पशू की बाज़ार बन्द हो जायगी। जो हिन्दू बेचते हैं उसे आप बन्द करैं यहाँ न लावैं।" फक्कड़ ने कहा, "हम हिन्दुन को बन्द कर देंगे।" बाज़ार के दिन फक्कड़ बाँका लेकर चारौं तरफ घूमने लगे और कहा "हम जान पर खेल रहे हैं। मारैंगे और फांसी ले लेंगे। जो दाम बाज़ार में कसाई या हिन्दू देते हैं वह हम देंगे।" फिर सब मान गए। फक्कड़ ने कह दिया था, "नवाब न थे उनकी औरत थी, उसने कहा 'हम बाज़ार में पशू न आने देंगी, तुम हिन्दुन को मना करौ।'" यह बात सब जान गये।

फक्कड़ की उम्र 60 साल की थी। बड़ा बली और सच्चा जीव था। हमसे कहा "हम कुदारि से एक बीगहा पक्के में 20 मन गेहूँ पैदा करते थे, साधुन–ब्राह्मण–गरीबों को खिलाते थे। दुबला–दुबला काला था। बोल बहुत तेज़ था। बाबा के किसी चेले का चेला था। हमने कहा "अब हम अयोध्या जाते हैं" तो रोने लगा। हमने कहा कि महाराज की सेवा में कोई नहीं है। बाबा का हुक्म हो गया है। हम चले आए। फिर दो बार आया, कहा, "एक बार आप चलते, राम राजा कुम्हार है रामेश्वर की तरफ, तो हम वहाँ से बहुत रुपया लाते, शुभ कामों में लग जाता।" हमने कहा, "अब हम नहीं पहुँच सकते।" एक बार बाबा टीका दास के साथ आया। एक बार अकेले पहले आया। कई दिन रहा।

155. मंजारी माई (लंगड़ी)
जनकपुर

ध्रुपदः- [1]

बन्दौं श्री पवन पूत राम दूत बाँको ।।1।।
बज्र अंग गदा संग नाम रंग छाको ।।2।।
महाबीर समर धीर भव की पीर हाँको ।।3।।
भजिये तजि कपट ख्याल, पल में कर दें निहाल,
भागै लखि मृत्यु काल, बिधि की लेख आँको ।।4।।

बाजा घट बजै खास, सुनि सुनि मन हो हुलास,
अमृत से बुझै प्यास, प्रेम भाव पाको ।।5।।
सुर मुनि नित मिलैं आय, बिहंसैं उर में लगाय,
सिर पर कर दें फिराय, बोलौं किमि ताको ।।6।।
सन्मुख श्री सीता राम, निरखौ तब अष्ट याम,
जारी धुनि बीज नाम, ऐसो पितु माँ को ।।7।।
सुनिए नर नारि बैन, सुमिरन में रहौ पैन,
तन तजि निज धाम शयन, छूटै जग चाको ।।8।।

[2]

पदः- जे जन बसैं मिथिला नगर ।।1।।
जाप बिधि सतगुरु से जानै मिलै तब सुख डगर ।।2।।
ध्यान धुनि परकाश लय हो मिटै असुरन रगर ।।3।।
सुनै अनहद मिलैं सुर मुनि चखैं अमृत गगर ।।4।।
सामने सिय रहैं हरदम परै प्रेम का लँगर ।।5।।
अन्त तन तजि लेय निज पुर छोड़ि जग जिमि कगर ।।6।।

[3]

पदः- बिहरत श्री जनक लली सखिन संग बिहार सर ।।1।।
दिव्य नाव जगमगात घूमत सर में
दिखात उठत शब्द छर छर छर ।।2।।
बरनै को छबि अपार शारद औ शेष हार
जिन सम को कर कर कर ।।3।।
सुर मुनि नभ रहै छाय जय जय की धुनि सुनाय
गिरत फूल फर फर फर ।।4।।
सतगुरु करि लखौ भाय तन मन तब तो जुड़ाय
करते क्यों बर बर बर ।।5।।
ध्यान धुनि लय प्रकाश जियतै लहि होहु पास
आखिर तन त्यागि जाव अपने चलि घर घर घर ।।6।।

156. लाला सत्य नारायण लाल
फैजाबाद

लाला सत्य नारायण लाल, लालबाग, फ़ैज़ाबाद के, रेल में नौकर थे। एक पैसा किसी से न लिया। अपनी कमाई का अन्न खाते थे। मकान अच्छा बना है। 3 लड़की थीं। 2 की शादी हो गई। 1 बाकी है। जिसे पैसे की ज़रूरत पड़ी फ़ौरन दिया। फिर कभी माँगा नहीं। कई हजार रुपया डूब गया। परस्वारथ न छोड़ा। सब देवी देवताओं से प्रेम रहा। जिसका काम हो, भूखे प्यासे भी हों, फ़ौरन जाते थे। यह नहीं कहते कि हम भूखे प्यासे हैं। अगर किसी ने जलपान करा दिया तो कर लिया नहीं तो घर आकर खाते थे। हम से कहते रहे कि पर-उपकार से बड़ा बल और अनुभव होता है। एक ठाकुर कई साल किरायेदार रहे। कुछ न दिया, चले गए। दो लड़किन की शादी हुई। कुछ भक्त इकट्ठा हुए। हम खंभा बनाये गये। सवा सेर का हवन हुआ। लड़की लड़का सात बार हम को घूम लिया। सबको भोजन करा कर उसी दिन हंसी खुशी बिदा कर दिया।

एक दिन बुखार आया तो पेशाब करने उठे। पेशाब कर रहे थे कि उसी में कृष्ण भगवान प्रगट हो गए। लालाजी ने हाथ जोड़ा और कहा "महाराज! अच्छी जगह में दर्शन देना चाहिए। यह कैसी बात है जो आप गन्दी जगह पेशाब में प्रगट हो गए।" भगवान ने कहा, "हम भक्तों के लिए हर जगह मौजूद हैं। जिनका मन शुद्ध है वही हमारा है, हम उसके हैं।" फिर अन्तर हो गए।

157. बाबू सम्मन लाल, वकील
फैजाबाद

यह कौम के कायस्थ श्रीवास्तव थे। इनके दो लड़के हैं – कैलाश नाथ जो वकालत करते हैं। बाबूजी ने इनको फ़ैज़ाबाद में मकान खरीद दिया है। आप भी यहीं वकालत करते थे। छोटे लड़के को लखनऊ में मकान खरीद दिया है।

जब बीमार हुए तो लड़के लखनऊ ले गए। हम देखने गए। बाबू बाँके बिहारी संग गए। आकर मिले। हमसे कहा, "महाराज जी! लड़कों

के कहने से हम आ गए नहीं तो इनको दुख होता। हमारी इच्छा आने की न थी।" हमने कहा, "जहाँ का अन्न जल होता है वहाँ उतने दिन को भगवान भेजते हैं। न कोई जा सकता है, न कोई ले जा सकता है। फिर जहाँ मौत होनी है उसी जगह होती है, जहाँ दाह होना है उसी जगह होता है। जहाँ जल में प्रवाह होना है, उसी जगह होता है, जहाँ दफ़न होना है उसी जगह होता है। सब काम भगवान के हुक्म से होता है। समय-स्वाँसा-शरीर भगवान का है। अपना कुछ नहीं है। जो अपना माने है वह मौत और भगवान को भूला है।" यह बात सुन कर खूब हँसे, कहा, "महाराज! यह उपदेश बहुत ऊँचा है। अन्दर समा गया है।"

उन्होंने बताया कि हम से जो हो सका दोनों के साथ कर दिया। अपना-अपना खाते कमाते हैं, अपने अपने परिवार का पालन करते हैं। हमै कोई चिन्ता नहीं है। हमैं अब सीता राम जी अपने चरनों में लगा लें। यही हमारी इच्छा है।

हमने कहा, "तुम धन्य हो जो ऐसा विचार तुम्हारे मन में आ गया है। वैसा ही होगा। तुम्हारा प्रेम हनुमान जी से था। एक पाठ रोज़ हनुमान बाहुक का करते थे। उसी का फल हनुमान जी तुमको देंगे। राम भक्तन में सबसे श्रेष्ट हनुमान जी हैं।" तो हमसे कहा, "हमारा प्रेम छोटे पर से था। वह दिन पर दिन बढ़ता गया। उन्हीं की कृपा से हमने वकालत की, लाखों रुपया कमाया, सब अफ़सर हमें मानते थे। उनका हुक्म था 'बहुत धीरज से बात करना।' वैसा ही हमने किया। उसी से हमैं बड़ा लाभ हुआ।"

हमने कहा, "अब तुम चुप हो जाओ। मन ही मन राम राम करौ। किसी से बात न करना।" तो कहा, "ठीक है।" घर में सब से कह दिया, "सब लोग हमारे मरने के समय न हमैं बोलकारना और न रोना।" वैसा ही हुआ। शायद 72 में शरीर छोड़ा है। चौथे बैकुण्ठ को गए।

158. एक चमार
फ़ैज़ाबाद

अरसा 150 बर्ष का हुआ, फ़ैज़ाबाद में एक चमार हो गया है। वह जूता गाँठता था। सारा जूता टूटा हो तो एक पैसा लेता था अथवा एक टाँका लगाना हो तो भी एक ही पैसा लेता था। भजन करता था। जो कुछ कोई माँगे नाहीं

नहीं करता था। लड़का, लड़की, औरत, मकान, रुपया, पैसा, कहता था कि हमारा शरीर प्राण जीव सब भगवान का है। ले जाव। दूर-दूर से लोग सुनकर आते थे। सब उसकी बातें सुन कर चुप हो जाते थे। हमारे गांव के एक लाला हो गए हैं वह गांव में बताते थे। वह देख गए थे।

हमें 52 साल यहाँ हो रहा है। आज याद आई उसकी उदारता और भजन की। उसके माता-पिता धन्य थे।

159. फिकिर शाह
बंगलौर

यह बहुत ऊँचे कृष्ण भक्त हुए हैं। नानक जी के वक्त के हैं। शरीर से अजर अमर हैं। रहने वाले दूर के हैं। शायद बंगलौर बताया था। यहाँ से डेढ़ हजार मील है। बहुत काया कष्ट किया है। एक टुकड़ा मोटी रोटी का बजन में एक छिटाँक का खाते थे एक बार शाम को। फिर भगवान ने इच्छा पूरन करके अजर अमर कर दिया। 25 की उम्र में तीन माह का फाँका किया। जब गला सूखने लगता तो एक घूँट पानी पीते थे। शरीर सब सूख गया था। ऐसा तीब्र वैराग था।

फिर भगवान ने कहा, "जैसे शुरु में टुकड़ा खाते थे वैसे शुरु कर दो। कुछ दिन में खाना पीना बन्द हो जायगा।" 40 की उम्र में अजर अमर हो गए। भूख प्यास बन्द हो गई। शरीर 12 बर्ष का हो गया।

160. ईश्वर विश्वासी एक ब्राह्मण विद्यार्थी
जिला सीतापुर

सीतापुर जिला, गाँव ऊँचखेर, बाबा राम लगन दास ब्रह्मचारी की कुटी पर एक ब्राह्मण विद्यार्थी पढ़ता था। उम्र 15 या 16 साल की थी। महीना गर्मी का था। बाबा से कहा, "हम बद्री नारायण जाना चाहते हैं।" बाबा ने कहा "जाओ।" 2 पैसे उसे दिए। वह सिर्फ़ एक धोती पहिरे था और कोई कपड़ा न था। पाँव छूकर चल दिया।

जहाँ जहाँ रुकता सब भोजन का ठीक हो जाता। फिर उधर हरिद्वार में ठंडक होती है, वहाँ ओढ़ना-बिछौना, भोजन मिल जाता था। जहाँ से

चलता ओढ़ना बिछौना वहीं छोड़ देता। आगे फिर मिल जाता। इसी तरह लौटने में मिलता। दर्शन करके आया तो बाबा की दंडवति करके 2 पैसा वापस किया। बाबा ने हाल पूछा तो उसने सब बताया।

हम भी वहाँ थे। सब चुप रहे। बाबा ने कहा, "ऐसा सच्चा जीव ईश्वर प्रेमी कोटिन में कोई होगा।" उसका भाव सच्चा था।

भाव पर हमें ध्यान में अजर अमर संत सफाई शाह जी और खैरियत शाह जी ने निम्नलिखित पद लिखाये थे:

161. सफाई शाह जी (अजर अमर हैं) (ध्यान में आये थे)

पदः- भाव सब में मुख्य है जो भाव की गहि ले लता ।।1।।
भाव से सुमिरन करै प्रभू गोद में नित खेलता ।।2।।
परकाश धुनि औ ध्यान लय में भाव ही लय पेलता ।।3।।
भाव ही विधि गति को छेकै फिर न भव में ठेलता ।।4।।
भाव सतगुरु करिके करिये भाव तन मन मेलता ।।5।।
कहता सफाई शाह मानुष भाव बिन दुख झेलता ।।6।।

162. खैरियत शाह जी (अजर अमर हैं) (ध्यान में आये थे)

भाव से भगवान मिलते भाव से मुनि देवता ।।1।।
भाव सब में है शिरोमणि भाव भव से खेवता ।।2।।
भाव से परकाश लय हो भाव नाम क धेवता ।।3।।
भाव ही से ध्यान होवै भाव विधि गति छेवता ।।4।।
भाव से अनहद क सुख लो भाव अमृत पेवता ।।5।।
भाव सतगुरु करि के जानो भाव भावक लेवता ।।6।।

163. लाला गुरु प्रसाद के पिता सोहनलाल व माता

समय, स्वाँसा, शरीर भगवान का है। सब का समय बाँधे हैं हर एक काम का।

गुरु प्रसाद लाला के पिता उन्नाव में थे। शंकर जी के भक्त थे। रोज़ दर्शन को जाते थे। उनका नाम सोहन लाल था। बहुत लोगों ने पूछा, "तुम को दर्शन हुए कभी? इतने दिन से जाते हो।" तो कहा, "हमैं दर्शन जरूर होगा। हमारा शंकर जी पर अटल विश्वास है।"

जब 3 दिन शरीर छूटने के रह गए तब शंकर जी पारबती जी प्रगट हो गए। तब सब से कहा, "देखो, सुनो! जो हम कहते थे हमें दर्शन जरूर होंगे। अब हर समय शंकर जी पारबतीजी रहते हैं।" शरीर छूटने पर कैलाश विमान पर चले गए।

गुरु प्रसाद की माता हनुमान चालीसा के 11 पाठ और 11 माला हनुमान जी के मंत्र का जप करती थीं। जब हम उन्नाव जाते, भोजन करते उस समय सब लीला बताती थीं। बहुत देवी देवतन के दर्शन होते थे। बहुत सीधी थीं। खाली जप-पाठ बताया था। उनको जप से ध्यान हो जाता था। बहुत ऊँची गती हुई।

164. बड़े महाराज जी द्वारा बताया एक छत्री का हाल

एक क्षत्री के वैराग्य हो गया। उम्र 60 की थी। तमाम परिवार था। घर से चले आए। जन्म स्थान में मंत्र लिया। उस समय बड़े महाराज थे राजा मान सिंह थे। गुरु से कहा, "हमैं बतावौ जिससे जल्द भगवान के दर्शन हों।" गुरु ने कहा, "जन्म स्थान के दरवाजे से तपस्वी जी की छावनी तक झाड़ू लगावो। सरजू जी वहीं पर हैं। चारौं भाई रोज़ नहाने जाते हैं, घोड़ों पर। तुमको मिलैंगे।"

वै 2 बजे रात उठ कर नहा कर झाड़ू लगाना शुरू कर दिया। अपढ़ थे। 3 दिन बाद चारौं भाई नहा कर लौटे, दंडवति किया।

एक दिन रात को 3 बजे मान सिंह चार घोड़े मचे सवारी पर कहीं जाते थे। उधर चारौं भाई नहा कर आ रहे थे तो ठाकुर ने कहा, "हट जाओ, राम जी चारौं भाई घोड़ौं पर आ रहे हैं।" वै कुछ समझे नहीं, मुठभेड़ हो गई। मान सिंह के चारौं घोड़े गिर पड़े, चोट नहीं आई और न मान सिंह के चोट लगी।

जब चारौं भाई चले गए तब ठाकुर ने कहा, "हमने कहा था तुमने न माना। राम जी की दया से तुम, घोड़े, कोचवान बच गए।" तब लोग जान गए। जब वै झाड़ू लगाते थे तब लोग सड़क की बगल से निकलते थे।

30 बर्ष झाड़ू लगाया। रोज़ दर्शन होते थे, दंडवति करते थे तो चारौं भाई दाहिना हाथ उठा देते थे। 91 की अवस्था में शरीर छोड़ा।

165. बाबा हरनाम दास जी

अयोध्या

बाबा हरनाम दास जी, मणी पर्बत के राम कुमार दास रामायणी के गुरु रोज़ 12 बजे रात को पाँच पैकरमा करते थे। चाहे पानी बरसे या पत्थर पड़ै, नेम नहीं छूटता था।

महाराज जी के पास सरजू नहा कर आते थे तो बताते थे कि पैकरमा करने में सिद्धों के दर्शन होते तो हम हाथ जोड़ते तो वह सीता राम बोलते हैं। उनकी आवाज़ आसमान की तरफ़ जाती थी। 14 हाथ के, 21 हाथ के, 25 हाथ के, 30 हाथ के–हजारों सिद्ध मनी पर्वत पर हैं।

जब बाबा 80 वर्ष के थे तब हम 29 के थे। पैकरमा में हमारे साथ चलते। हम एक घंटा में 4 कोस चलते थे। उनके आगे नहीं निकल पाते थे। बड़े बलवान थे। शरीर से ऊँचे दोहरी देह के थे। उनके गुरु भाई राम रज दास भी वैसे ही डील दौल के थे। दोनों बली थे। मनी पर्बत से रानूपाली के कोट के कोने तक दोनों गुरु भाई कुश्ती लड़ते आते थे। गिरते नहीं थे।

राम रज दास रामायण भी कहते थे कि और गान भी करते थे। हमारी परिचय दोनों गुरु भाइन से थी। बृद्धावस्था में भी अच्छा बल था। राम रज दास उनकी बराबर चल नहीं पाते थे।

बाबा का नेम सरजू अश्नान का था और फिर अधिक समय भजन में बीतता था।

166. साँई दाता

परतापगढ़

यह जाति के कायस्थ थे। परतापगढ़ से 10-12 मील पर एक गांव है (नाम भूल गया) वहाँ इनका जन्म हुआ था। घर में पूजा पाठ हुआ करता था। इनको रामायण से प्रेम था, नियम से रोज़ पाठ करते थे। साधू सेवा होती थी। परतापगढ़ कचेहरी में नौकरी करते थे, रहते गांव में थे। कचेहरी रोज़ बस से आते जाते थे।

एक दिन बदली छाई हुई थी। जाड़े के दिन थे, साँई कचेहरी जाने के लिये गाँव से आ कर सड़क पर खड़े हो गए बस के इन्तज़ार में। एक साधू उनके पास आया, कोपीन लगाये था, कहा, "बच्चा! तू किसी की बाट देख रहा है। वह तो अभी देर से आएगी, तू हमें एक चिलम पिलाएगा।" दाता ने कहा, "हाँ" और गाँव जा कर तम्बाकू और चिलम लाए। साधू एक पेड़ के नीचे बैठ गये। छोटी-छोटी लकड़ियाँ बीन कर आग बनाई गई फिर चिलम सुलगा कर साधू को दी। साधू से बात करने में इतने तल्लीन हुए कि बस आई, रुकी और चली गई, इनको पता न चला। थोड़ी देर बाद जब ध्यान आया तो फिर चिन्ता करने लगे और सड़क पर चलने वालों से पूछने लगे कि क्या आज बस न आवेगी? तो एक ने बताया, "बस को गये बहुत देर हो गई, शहर पहुँच गई होगी।" तब दाता को बड़ी परेशानी हुई कि आज गैरहाजिरी होगी, साहब नाराज़ होगा। तो साधू बाबा ने कहा, "बच्चा! क्यों घबराता है। साँई सब भला करैंगे।" और कहा "तूने हमारी बहुत सेवा की है, हम तुम से बहुत खुश हैं, तुम को एक मंत्र बताते हैं और भगवान का ध्यान बताते हैं, तेरा इसी से भला हो जायगा।" यह कह कर साधू बाबा चले गये और यह अपने घर लौट आये। रात भर बहुत बेचैन रहे।

दूसरे दिन दाता फिर कचेहरी जाने के लिए घर से सड़क पर आये। आते ही बस मिल गई और टाइम से अपनी नौकरी पर पहुंच गये, फिर डरते डरते साहब के पास कल की गैरहाजिरी की क्षमा मांगने गये। जब साहब से कहा "हज़ूर कल की गैरहाज़िरी माफ़ की जाये" तो साहब बहुत हैरान हुआ, बड़े प्यार से कहा, "क्या तुम कुछ नशा कर के आये हो, जो ऐसी बात बोलते हो, तुम तो कल नौकरी पर आये थे

ठीक वक्त पर और तुमने अपना सब काम ठीक ठीक किया"। तब दाता को साधू बाबा की बात याद आई "साँई सब भला करैंगे।"

शाम को घर आकर साधू बाबा के बताए मंत्र व ध्यान में जुट गए, न नींद, न भूख, न पियास, न घर की चिन्ता और न नौकरी की फिकर। इस्तीफा भेज दिया। कुछ दिन घर में ही रहे, भजन में जुटे रहे। फिर एक दिन घर से निकल पड़े और सई नदी के किनारे जंगल में जा कर बैठ गये। कई दिन तक वहाँ से उठे नहीं। यह स्थान परतापगढ़ शहर से एक डेढ़ फरलांग होगा। सई नदी के तीर (किनारे) देवी का मंदिर है। नदी पर रेल का पुल है। इसी के पास है। जब दाता यहाँ आकर बैठे तब यहाँ बेरियों का घना जंगल था और जंगली जानवर लगते थे। आस पास काम करने वाले अपने अपने घरों को सूर्य बैठने के पहिले ही चले जाते थे। बताया जाता है कि अब जंगल साफ हो गया है। दाता की समाधि मोज़ेक की बनी है। रास्ता अच्छा बना है, चाहे परतापगढ़ की तरफ से जाओ चाहे चिलबिला स्टेशन की तरफ से जाओ।

कई दिन बाद एक आदमी आने लगा और खाने को लाने लगा। धीरे-धीरे बात आस पास के गाँवों में फैल गई और लोग दर्शन को आने लगे। बेरियों का जंगल साफ करके झोंपड़ी डाल दी गई। दाता का नाम दिनों दिन बढ़ने लगा, आने जाने वालों की भीड़ होने लगी। जंगल साफ कर के स्थान बन गया। सामान, बर्तन आने लगे, साधू सेवा होने लगी, आने जाने वालों को परसाद दिया जाने लगा।

डा. सुरेन्द्र दुबे पशु-पालन विभाग से 1972 में सुलतानपुर से रिटायर हो कर अवध में वास करने आये। कंचन भवन, निरमोचन घाट पर, किराये के कमरे लेकर रह रहे हैं, हमारे भक्त हैं। वै बताये कि बाबा को लोग दाता के नाम से पुकारते थे। जब उन्होंने दाता के दर्शन किये, तब दाता काफी बूढ़े थे, रंग गोरा, कद लम्बा, एकहरे जिस्म के पतले दुबले, आँखों से दिखाई नहीं देता था। सिर घुटा हुआ और सफेद दाढ़ी थी। बहुत ही भव्य मूर्ति थे। लाठी का सहारा लेकर चलते थे। अपनी कुटी से दिन में केवल दो ही बार निकलते थे-एक बार सुबह और दूसरी बार शाम को, मैदान (डोल-डाल) के लिये। ज्यादा समय लेटे रहते थे, मुँह ढके हुए, कुटिया के दरवाजे के पास धूनी के सामने एक पतली सी कथरी बिछाए और एक चादर ओढ़े। सब को आवाज़

से पहिचानते थे। जो कोई जाता बन्दगी करता, तो पूँछते "को है?" फिर हाथ जोड़ कर लेटे लेटे कहते "साँई तेरी बन्दगी"। कभी बैठ जाते तो ज़मीन में माथा टेक कर दोनों हाथ जोड़ कर कहते "साँई तेरी चरण बन्दगी करते।" दीनता की साक्षात मूर्ति थे। फिर पूँछते "सब भला है?" फिर कहते "अच्छा बैठो।"

आश्रम में नीरवता छाई रहती थी, बहुत ही शान्ति। कोई ज़ोर से नहीं बोलता था। दाता से ही बात करते। आपस में बात दाता के पास बैठ कर न करते। साँई मत में चिलम का विशेष महत्व है। चिलम (गाँजा की) सुलगा कर दाता से परसादी बनवा कर पीते। दाता किसी को निराश न करते।

दुबे जी ने फिर बताया कि वहाँ के भक्त बताते थे कि अंतिम समय के कुछ साल पहिले दाता अपनी कुटिया का दरवाजा बन्द कर लेते थे, सात दिन दस दिन खोलते ही न थे और न कुटी से बाहर आते थे दिशा मैदान को और न भोजन को। दाल का पानी दरवाजे के पास बाहर मिट्टी के बर्तन में ढक कर रख दिया जाता था, कोई दरवाजे पर आवाज नहीं लगा सकता था। जब दाता की इच्छा होती दरवाजा खोलते, उठा लेते, नहीं तो वैसा ही रखा रहता। भक्तौं और दर्शन करने वालों को दोपहर में भोजन कराया जाता। जाने वालों को चलते समय बताशे व पेड़ों का प्रसाद दिया जाता था। हाँडी में बताशे हमेशा भरे रहते थे।

कहा जाता है कि दाता के शरीर शान्त के समय आश्रम में पैसा बिल्कुल न था। भक्तौं को चिन्ता हुई कि सारे काम और भंडारा कैसे होगा। तो समाधि के लिये ज्यों ही गड्डा खोदा जाने लगा कि हजारौं आदमी आ गये और समाधि हेतु गढ़ा में पैसा फेंकने लगे। थोड़ी देर में गढ़ा रुपयों पैसों से भर गया। तब सब काम बड़ी धूमधाम से हुआ। समाधि पक्की मोज़ेक की बन गई।

दुबे जी ने हम से बताया कि एक बार जब वह अपनी पत्नी और पुत्र सहित दर्शन को गये तो बाबा (दाता) मुँह ढके लेटे थे। इन्होंने बन्दगी की, पूछा "को है", कहा "हम डाक्टर"। तो कहा "अच्छा बैठो" फिर पूछा "क्या बच्चा भी आया है?" बताया, "जी आया है" तो बहुत खुश हुए। तब इनके मन में यह बात आई कि सन्त सब जानते हैं पर बहुत निर्मोही और कठोर होते हैं और दाता से कहे "मेरे मन में

एक बात आ रही है", तो दाता बोले "कह दो"। तो इन्होंने दाता से कहा "सन्त बहुत निर्मोही और कठोर होते हैं, वह अपनी दौलत किसी को आसानी से नहीं देते। शराबी के पास बैठ कर शराब पीना आ जाता है जुआरी के पास बैठ कर जुआ खेलना आ जाता है, इन दोनों से बरबादी होती है। संत के पास बैठो तो कोई नशा नहीं आता, उल्टा मन का उच्चाटन हो जाता है। बहुत आदमी देखे जो पहले अच्छे रास्ते पर थे, फिर ऐसे बदले कि पहिचानने में नहीं आते थे कि यह वही भक्त जी हैं।" यह सुन कर दाता लेटे थे उठ कर बैठ गये और बोले, "डाक्टर, तुमको ऐसा कोई नहीं मिला जो तुम्हें कुछ देता।" इन्होंने कहा, "अभी तक नहीं" तो बोले, "अच्छा! एक बात है कि तुम्हारा हँसना बोलना सब छूट जाएगा।" तो इन्होंने कहा "दाता, एक दिन तो छूटना ही है।" ऐसा लगा कि दाता कुछ दया करना चाहते हैं तो पत्नी बोल उठी कि "दाता, दीजिये तो दोनों को एक साथ ही दीजिये, अकेले इनको मत दीजिये, जिससे दोनों का जीवन एक-सा हो जाय, नहीं तो मैं घाटे में रह जाऊँगी।" यह सुन कर दाता लेट गये कहा, "डॉक्टर कोई बात नहीं सब मिला ही हुआ है।" उनके चेहरे पर बहुत जलाल था।

साँई दाता के पास हम कई बार गये हैं। हमैं निर्गुण ब्रह्म के पद सुनाते थे। मस्त हो जाते थे। वहाँ सब मजहब के भक्त आते थे। कीर्तन राम जानकी, राधेश्याम, विष्णु लक्ष्मी, शंकर पारवती, हनुमानजी, दुर्गा जी की करते थे और चित्र टाँगे थे, राम जानकी राधेश्याम के। सब की खातिर होती थी। हमें यहाँ कोई आता तो इलाइची, किशमिश परसाद भेजते थे। उनके भक्त साँई का नाम लेते थे। अपने इष्ट में अटल विश्वास था। हमैं पास बैठाते थे। बड़ा प्रेम करते थे।

167. खैराबाद के रिटायर्ड लाला

अरसा हुआ एक लाला गोरे गोरे खैराबाद से आए थे। उम्र 70 की थी। दाढ़ी केश थे। सरकारी नौकर थे, बहिरे थे, सच्चे थे। सरकार उनको बहुत मानती थी। रिटायर हो गए। एक पंडित खैराबाद में थे उनसे ओँकार का जप सीखा था। एक घंटा स्वाँसा चढ़ाते थे। पेंशन 200 रु० (माहवार) पाते थे, अपनी कमाई खाते थे। हमारे यहाँ दक्खिन के कमरे में रहे। फिर हम से कहा "हमैं एकान्त जगह बताओ।"

एक पंडित अकबरपुर की तरफ़ से आया करते थे। उनका लड़का गायत्री भवन में पढ़ता था। वे जगह बताए। वहाँ गये। एक बंगला फूस का अच्छा बनवाया, एक कुवाँ बनवाया। रहने लगे। दो बार वहाँ से आए, बात हुई। हमने कहा, "उम्र अधिक हो गई, अब स्वाँसा खींचने से आयू नहीं बढ़ सकती है। ओँकार का जप करो और सुरति लगावो तो ओँकार की धुनी सुनने लगो श्रवनन से, रोम रोम से, हर जगह से यह सब से आसान है।" मान गए। फिर 82 में शरीर छोड़ा।

168. रोजा शाह जी (अपढ़ हैं)

जिस देवी देवता का तुम जप, पाठ, पूजन, कीर्तन मन लगाकर करोगे तो सब शब्द उनके पास पहुँच जावेंगे। तुम्हारा काम हो जायगा। सारा खेल मन का है। मन के ज़रिये से गती होती है, मन के ज़रिये से कुगति होती है। मनुष्य वही है जो मन को वश में कर ले। जो शब्द भगवान की प्राप्ति के मूँह से निकलते हैं, साधक को बताये जाते हैं वह शब्द भगवान के लेखपाल चित्रगुप्त लिख लेते हैं, और मन में जो विचार उठते हैं वह भी लिख लेते हैं। वह पहले आकाश मंडल में रहते हैं। वे सतोगुणी हैं। जो पर उपकार के शब्द हैं वे रजोगुणी हैं, दूसरे मंडल में रहते हैं। खराब शब्द तमोगुणी हैं तीसरे मंडल में रहते हैं। सतोगुणी शब्द शुकुल वस्त्र धारण किए हैं, परस्वारथ वाले रजोगुणी लाल पीले हरे वस्त्र धारन किये हैं। तमोगुणी काले रंग के नंगे रहते हैं। सतोगुणी सतयुगी हैं, रजोगुणी त्रेता-द्वापर के हैं, तमोगुणी कलियुग के हैं। हर एक युग में चारौं की साखा रहती है, जैसे पाँचौं तत्व में साझा रहता है। सतगुण से मुक्ति, भक्ति, ज्ञान प्राप्त होता है। रजोगुणी परोपकार करके चारौं बैकुण्ठों में जाता है। तमोगुणी नर्क जाता है। हर एक विद्या के शब्द जिस तरह निकलते हैं सब वहाँ मौजूद हैं। उनसे पूछा जाता है वह सब बताते हैं। उसी रीति से कर्मानुसार दुःख सुख भोगना पड़ता है। इस, ज़बान से सुगति और कुगति होती है। इससे मनुष्य का अर्थ यह है कि मन को रोके और तब मन को रोकने से जबान रुक जाय, खराब शब्द मूँह से न निकलैं।

झूँठ का बाप पाप है, पाप का बाप लोभ है, लोभ का बाप आलस्य है। यह दोनों तरफ़ की किसनई (खेती) नाश करता है। यह भगवान के

यहाँ से माफ़ नहीं है। पाप का रूप काला, नंगा, बड़े-बड़े दाँत, भयानक रूप, दाढ़ी, केश, बड़े-बड़े चार भुजा, चारौं में दुधारा अस्त्र धारन किये हैं। जितने खराब शब्द हैं उनका परिवार है। यह नर्क को ले जाते हैं।

जो जीव सतोगुणी हैं उनके लिए सतयुग है, जो रजोगुणी हैं उनके लिए त्रेता-द्वापर है, जो तमोगुनी हैं, उनके लिये घोर कलियुग है। श्रद्धा, विश्वास से भजन करने से मन स्वत: स्वच्छ हो जाता है।

॥ श्री महाराजजी के लिखे अनमोल रत्न ॥
(किसी ने कान में सुनाया था। नाम याद नहीं है।)

खराब शब्दों के रूप काले होते हैं और नंगे होते हैं। जहाँ तुम्हारे मुख से निकले कि रोकर कहते हैं "तुम अन्मोल नर शरीर पा कर अपने मूँह से हमें ऐसा बना कर निकाला।" श्राप देकर अन्तर होते हैं। शुद्ध शब्द सिंगार किहे बड़े सुन्दर होते हैं। जहाँ मूँह से निकले तो हँसते हुए आशीर्बाद देते हुये अन्तर होते हैं। यह लिखाया गया है कि अशुद्ध शब्द जो साधक सुनता है वह उसके अन्दर प्रवेश हो जाते हैं और उसकी बुद्धि उलट देते हैं, दिमाग खराब कर देते हैं क्योंकि वह साधक कच्चा है। अगर साधक सिद्ध हो तो उसके अन्दर जा नहीं सकते।

शुद्ध शब्द सुनने से साधक के हृदय में बल बढ़ता है। वै सब बड़े पवित्र हैं। अन्दर पहुँच कर अपना प्रभाव जमा देते हैं। नीचे गिरने नहीं देते। इस पर बहुत लिखाया गया है। जो इतने पर अमल करै तो सुधर जावै। जहाँ अशुद्ध शब्द कोई कहता हो वहाँ से साधक उठ जाय नहीं तो साधक गिर जायगा। अभी उसके आँखी कान नहीं खुले हैं। वह दूसरे से सुनी बात कहेगा। जिसकी बातें होंगी, वह कसूर नहीं किहे है तो उसे दुख होगा। कहने वाले पर असर आवैगा, बस वह गिर जायगा।

169. शंकर जी और भरथरी

शंकर जी के शरीर में सुगंध आती है। गले में 84 मुण्डमाल हैं। अंगों में 27 शेष लिपटे हैं। राम नाम की धुनि को सुनते हैं। वह भभूति योगबल से महकती है। पालन, उत्पत्ति, संहार सब उनके करतल है।

उनका एक शरीर लाल, एक शुकुल, एक सोने कैसा, एक काला देखा है। जब यह शक्ति आ जाए तो भभूति लगाने से दोष नहीं है।

भरथरी का हाल शंकर भगवान ने पारवती से कहा है कि हम इससे हार गए। वह जो चाहे फौरन प्रगट हो जाए, वह खेल करता है। पारवती परिक्षा को गईं तो देखा कि चिता के ऊपर जो हमारे यहाँ मुरदा पर पिंडा पारा जाता है, सेंकते थे। पारबती को देख कर मूँह फेर कर खड़े हो गए। पारबती ने कहा "पिंडा हमें दे दो।" तो पीछे हाथ करके दे दिया। पारबती ने कहा "माँगो" तो कहा, "हमें कुछ जरूरत नहीं है।" तो फिर पारबती ने कहा, "न माँगौगे तो श्राप दूँगी।" तो बोले, "हम यही माँगते हैं कि जो हम किसी से माँगें तो वह हमैं न दे।" तो पारवती अन्तर होकर आईं और शंकर जी से कहा। शंकर जी बोले कि हम उससे हार गए। कहा था, तुमने न माना।

170. डा० लुम्बा जी
गणेशगंज, लखनऊ

लुम्बा की पत्नी और लड़की विद्या, अविनाश हमारे पास कानपुर गए। हम लाला गुर प्रसाद के यहाँ रामबाग में थे। हम से पूछा "महाराज जी! लुम्बा कहाँ हैं?" हम ने कहा "बैकुण्ठ में हैं। तुम हूलागंज जाव। छोटे लाल गुप्ता का लड़का सुरेश 10 या 12 बर्ष का है। उसके साथ कृष्ण भगवान रहते हैं, संग खाते पीते हैं। वह बतायेंगे। वहाँ गये पूछा तो सखा ने भगवान से कहा। भगवान ने अपने खलीता से बैकुण्ठ निकाला। बहुत छोटा करीब आधी छिटाँक का रख दिया। वह बढ़कर बहुत बड़ा हो गया जिसमें लाखों आदमी समां जायँ। लुम्बा जी निकले, कुरसी पर बैठे। सुरेश ने सब से कहा "लुम्बा जी कुर्सी पर बैठे हैं।" बहुत देर तक बैठे रहे। फिर अन्दर जाते समय अविनाश के हाथ जोड़े। सुरेश ने कहा, "देखो, अविनाश! लुम्बा जी तुम्हारे हाथ जोड़ कर बैकुण्ठ में चले गये।" जब अविनाश, लुम्बा की पत्नी, लड़की रामबाग आए तो हम से कहा "हम उनसे पढ़ते थे। कभी-कभी वे हमारे हाथ जोड़ते थे। हम शर्मा जाते, लड़के हँसने लगते थे। वैसा ही वहाँ पर किया।"

171. सुरेश, पुत्र छोटेलाल गुप्ता का, हूलागंज, कानपुर

एक दिन हम बैठे थे और कई आदमी थे। भगवान का फोटू ऊँचे टंगा था तो शायद नीचे गिरा था। ऊपर ही से शीशा तड़का, भगवान निकल गए। उसमें शायद हल्दी लगाई गई। फिर भगवान एक दिन समा गए। शीशा जुड़ गया।

भगवान की दो सखी उनके घर पैदा हुईं। अच्छा अनुभव बताती थीं। भगवान का पान दान सखा के घर में धरा रहा। एक दिन शायद बर्तन मांजने वाली या और किसी औरत ने देखा। उसमें एक साँटी मारी तो झनकार हुई, फिर अन्तर हो गई। पान का भोग लगाया तो कहा "हम पान यह नहीं खाते, हमारा पान दान तुम्हारे घर धरा है।"

एक दिन दही का भोग लगाया तो कहा "यह दही ठीक नहीं है।" फिर अपना दही दिया। उसमें महक आती थी।

भार्गव जज ने बताया। वह गोपाल जी की झाँकी बनाते थे। एक आदमी शायद गीता प्रेस का, उनके यहाँ केवल झाँकी बनाने को रहता था। कई थाल मिठाई खर्च करते थे। अच्छे अफसर आते सब भोग पाते।

सखा ने कहा "तुम्हारे भगवान में शक्ती नहीं है। तुम्हारा प्रेम नहीं है।" तो जज ने कहा "तुम्हारे घर आवेंगे।" तो कहा "तुम्हारे साथ मुकदमा रूप धारण करके आवेंगे इसलिए तुम न आना। तुम्हारी धर्मपत्नी आ सकती है।"

172. चतुरभुज दास

महाराज जी बताते थे कि चतुरभुज दास साधू सेवा करते थे। भंडारा था। साधूओं को भोजन फेरते थे, और साधू भी फेरते थे, तो पीछे से लंगोटी खुल गई। सब साधू हंस पड़े तो पीछे से दो हाथ प्रगट हो गए, लंगोटी बाँध कर अन्तर हो गए। तब सब साधू उनकी दंडवति करने लगे। उनका नाम चतुरभुज दास कहने लगे। तब बोले "भगवान ने द्रोपदी की लाज रक्खी बहुत बड़ी सभा में चीर बन गए। हम तो साधू भेष में हैं, साधूता कोई नहीं है, झूठे भक्त हैं। तिनकी लाज भगवान ने

साधून के बीच राखी। ऐसे दीनानाथ हैं। उनका तन मन प्रेम से सुमिरन करे। जो चाहे वह तुरन्त देते हैं। हमैं इस बात का विश्वास है।"

काफी उम्र में शरीर छोड़ा है।

173. रामसिंह ज़िला रायबरेली

ज़िला रायबरेली, गाँव धनुआ में ठाकुर जगदम्बा बक्स का पोता राम सिंह, उम्र 10 या 12 साल की थी, अब शायद 50 साल का होगा, कौड़ी भंजा कर एक डलिया में सिर पर धरे आ रहा था। उन कौड़िन की डलिया में न मालूम कहाँ से शंकर जी की मूर्ति आ गई। किसी पेड़ के नीचे से निकला होगा, वहाँ ऊपर से गिरी होगी। भगवान जानें, उनकी लीला कौन जान सकता है।

जब घर आया तब सर पर से डलिया उतारी। उसमें शंकर जी की मूर्ती निकली। वह ठाकुर जी के सिंहासन में रख दी गई। 12 या 14 साल पूजा हुई। जब राम सिंह के पिता का शरीर छूटा तो जगदम्बा बक्स ने कहा "मालूम होता है यह मूर्ती नहसी (नसूड़ी) है।" उसे नर्वदा जी में भेज दिया।

दो महीने बाद फिर शंकर जी आ गए ठाकुर जी के सिंहासन में। तब काशी जी गंगा में भेजे गए, तो दो महीना बाद फिर आ गए। फिर कुवाँ में छोड़े गए तो दो माह बाद फिर आ गए। फिर दुबारा कुआँ में छोड़े गए। कुछ दिन बाद हम गए। शारदा बक्स ने हम से सब हाल बताया। हमने कहा कि अगर वह खेल खत्म कर दिये होंगे तो फिर न आवेंगे।" फिर न आए।

आर्या लोगों ने जाना तो कहा "ऐसी मूर्ती का पूजन करना चाहिए।"

174. बाबा विंध्या दास सांगीपुर, ज़िला रायबरेली

जिला रायबरेली, पोस्ट तिलोई, मुकाम साँगीपुर के बाबा विंध्यादास पहले राजा तिलोई के नौकर लिखा पढ़ी करते थे। 65 की उम्र में नौकरी

छोड़ा। बड़े बलवान थे। एक दिन राजा ने दो कुत्ते हँसी में छोड़ दिये। वे करीब आए तो दोनों की गर्दन पकड़ कर लड़ा दिया। दोनों मर गए। राजा से कहा, "बोलोगे तो तुम को भी मारेंगे।" एक हाथी खेत में बैठा था उसे लाठी से पीट कर भगा दिया। फिर एक दिन घर के बीच आँगन में खड़े होकर सीता राम सीता राम करने लगे। 40 दिन खड़े रहे। पानी तक न पिया तो अन्दर गर्मी बढ़ गई। दस्त से खून जारी हो गया। सबने कहा, "आपके खून जारी हो गया है।" तो कहा "नहीं, अन्दर की सफ़ाई हो रही है, गंदगी निकल जायगी तब राम जानकी हृदय में बास करेंगे।" फिर खून बन्द हो गया। 40 दिन बाद अश्नान किया, भोजन किया। पट खुल गए। एक गेरुहा झगला गर्मी में, एक हरा दोहरा जाड़े में पहनते थे। हाथ में माला, सिर खुला और लंगोटी–इतना सामान रखते थे। जब लड़के बनवा देते तो पहनते थे, कहते नहीं थे चाहे फट जाय। एक बार भोजन करते थे। जब हम गए तो पास आए, दंडवति किया। हम उधर गांवों में जाते थे। एक मील घर से शायद तिलोई होगी। एक कोस, डेढ़ कोस, दो कोस हम जाते तो हमारे पास जरूर आते। देवता उनसे कहते "तुम हमसे माँगो।" तो कहते "तुम से क्या माँगें। तुम भी सीता राम का भजन करते हो, हम भी करते हैं। भाग जाव, हम कुछ नहीं चाहते हैं।"

100 के ऊपर शरीर छोड़ा।

175. नादिर गुलाब सिंह

अरसा हो गया तीसौं साल का एक नादिर गुलाब सिंह उन्नाव में हमारे भक्त थे। उनके छोटे भाई उम्र 32 की थी पुलीस में थे। यह हम भूल गए कि कहाँ पर थे। आपस में झगड़ा हो गया। इधर 3 आदमी थे उधर 7 आदमी थे। इधर के तीनों ने बन्दूक से सातौं को मार दिया। तीनों जेल गए।

गुलाब सिंह हमारे पास आए हाल कहा। हमने कहा "उनसे कह देना कि 11 पाठ हनुमान चालीसा के मन लगा कर करें। हनुमान जी प्रगट हों तो कुछ न माँगें, देवता सब जानते हैं मन का हाल।" 15 दिन पाठ किया हनुमान जी प्रगट हुए कहा "क्या चाहते हो?" तो कहा "अगर हमने आपका पाठ मन लगा कर किया और आप प्रगट हुए तो

हमें राम जी के पास भेज दो हम यही चाहते हैं।" तो हनुमान जी अन्तर हो गए कुछ बोले नहीं।

इनको ऐसा ज्ञान हो गया कि माता-पिता, भाई, औरत सब देखने गए। भाई से हाल बताया तो भाई ने कहा–"तुमने क्या माँग लिया?" तो कहा "हमने बहुत अच्छा माँगा। बड़ा पाप किया था। अगर छूट माँगते तो और पाप करते। ब्यान दे दिया था कि हमने मारा है, यह दो आदमी नहीं मारे हैं।" भाई ने कहा "यह बात तुमने गलत कहा है।" तो बोला "किसी की जीविका-जीव जाता हो तो झूँठ बोलने में हानि नहीं है। फिर इनके खेती भी नहीं है। नौकरी से बाल बच्चे सब घर के बसर करते हैं। हमारे यहाँ तो खेती है, खाने-पीने की तकलीफ नहीं है।" गुलाब सिंह चुप हो गए।

फाँसी पर गए जहाँ सिविल सर्जन, जेलर, फाँसी लगाने वाला रहता है। फाँसी लगाई गई तो पता न चला कि कैसे शरीर छूटा। बहुत लोगों को तकलीफ़ होती है, गर्दन फूल जाती है। आँखें निकल आती हैं, फटकते हैं। कुछ न हुआ। जेलर और अंग्रेज सिविल सर्जन चुप हो गए। ऐसी फाँसी किसी ने कभी नहीं देखी। वह दो आदमी छूट गए। ऐसी हनुमान जी ने लीला की। उसे राम धाम भेज दिया। गुलाब सिंह आए हमसे सब हाल बताया और हनुमान जी के जप पाठ में लग गए खूब भजन किये।

176. श्री झन्नझू शाह जी

उपदेशः-

"जिसका पूजन, कीर्तन, जप, पाठ करते हो वही ध्यान, प्रकाश, लय, शून्य में व्यापक है, फिर सब से न्यारा भी है। तुम सब से अपने को नीच मान कर दीन नहीं बनते हो तब शान्ति, सन्तोष कैसे हो। जब तन मन से जुटि जाव तब प्रेम आ जाय, केंवार खुल जायँ, निर्गुन और सर्गुन का बोध हो जाय। वाक्य ज्ञान में प्राण नहीं है। उपदेश ऊपर के देश का करते हो। इससे जनता इकट्ठा होती है, तुम्हारी तारीफ़ करती है, तुम खुश होते हो, तुम्हारा करा धरा चोरों से कह कर माया छिना लेती है। अगर तुम्हारी कोई बुराई करता है तो तुम नाखुश होते हो तब भी चोर

सब लूट लेते हैं। यह तो भूसा का पछोड़ना है। सूप में धर कर पछोड़ने से सब उड़ जाता है । जब तक मान अपमान से अलग न होगे तब तक कोरे के कोरे बने रहोगे। अन्त में जम गण जमपुरी में तुम को कल्पौं भोग भोगावैंगे। समय, श्वाँसा, शरीर अनमोल जा रहा है। अब फिर ऐसा समय न मिलेगा।"

इनका नाम झन्नझूशाह है। बुलंदशहर के रहने वाले थे। स्वामी जी (स्वामी रामानन्द जी महाराज) के समय के हैं। यह मियाँ खुशरू से मिले। खुशरू निज़ामुद्दीन औलिया जो दिल्ली में थे, उनके शिष्य थे। उनसे कहा "हमैं आप कुछ बतावैं तो हम उस कूचे (रास्ते) से चलने की कोशिश करैं।" खुशरू ने कहा "तुम पहले सुभान अल्ला का दस तसबी (माला) जप करौ और मौताजों की सेवा, जो दुखी हैं, कर दिया करो। फिर कुछ आगे बताया जायगा। तुम्हारे पास पैसा नहीं है, मांग कर खाते हो, तो तन मन से सेवा करौ। देखो इसी से तुम्हारे अन्दर का शीशा साफ़ होकर चमकने लगेगा।"

यह जुट गये। साल के अन्दर ही सब काम तै हो गया तब फिर खुशरू से मिले हाल बताया। खुशरू ने कहा "अब हम क्या बतावैं, सब कुछ तुमने हासिल कर लिया। खुदा की तुम पर बड़ी मेहरबानी है।"

फिर यह चल दिये। जहाँ मौज हो वहाँ बैठें, लेटें या घूमैं। भगवान ने एक दिन प्रकट होकर कहा "तुम को हम अजर अमर कर दिया।" 12 वर्ष के हो गए। भूख, प्यास, नींद सब शान्त हो गई।

177. लाला हठी परसाद
बस्ती

लाला हठी परसाद, शहर बस्ती, मोहल्ला पका बाजार, के रहने वाले थे। पन्ना के राजा के खजानची थे। जब रिटायर हो गए तब यहाँ आए। बहुत दिन रहे। बड़े सच्चे जीव थे। पेंशन अपने साधारण खर्चे भर को रखते थे बाकी बेवा (विधवा) औरतों, विद्यार्थी लड़कों को दे देते थे।

इनकी रिश्तेदारी की एक लड़की 16 साल की बेवा हो गई। वह एक साल अपने हाथ से कुछ न खाती थी। घर के लोग कुछ मीठा या फल ज़बरदस्ती खिला देते थे। फिर भगवान उसे पति रूप से मिलने

लगे। जो फलाहार भगवान कहते कम दाम में वह बनाती थी और भगवान को भोग लगाकर पाती थी। एक बार ज़मीन पर सैन करती थी। अयोध्या सरग द्वार पर कोई परिचय था वहाँ आई। हठी परसाद को बुला कर सब हाल बताया। हठी परसाद जाया करते थे। वह न तो सरजू जी नहाने जाती, न कहीं दर्शन को जाती। चुप जहाँ रहती बैठी रहती। फिर सब लाला लोग उसकी नौकरी स्कूल में करा दिये। यहाँ कई साल रही।

एक दिन शाम को मन में आया कि घड़ी बिगड़ी पड़ी है, कल इसे बनवा कर रख दें। सुबह देखा वह नई बनी धरी है और चल रही है। फिर एक दिन विचार उठा कि हारमोनियम बनवा कर धरा दें। सुबह देखा कि वह बिल्कुल नई बनी धरी है। तब हठी परसाद से बताया। हठी परसाद ने सब हाल हमसे बताया।

फिर वह काशी तरक्की पर गई। जो माहवार मिलता था गरीबों को बाँट देती थी। थोड़ा फलाहार भर का और साधारण कपड़े भर का रखती थी। बड़ी सत्यवादी थी। फिर काशी से पता नहीं, कहाँ भेजी गई हो। हठी परसाद का शरीर छूट गया था नहीं तो पता मालूम होता कहाँ है।

गाँधी जी ने कहा है:-

"सत्य ही सार है।"

कबीर जी ने कहा है:

दोहा:- सांच बरोबर तप नहीं झूँठ बरोबर पाप।
जा के हिरदय साँच है ता के हिरदय आप ।।

178. सीता कुण्ड के हनुमान जी

सीता कुण्ड के राम दास साधू की उम्र अब 90 की होगी। 45 साल हुए इनका प्रेम हनुमान जी से विशेष था। महीना जाड़े का था। चेतन दास हनुमान जी के पैर दाबने लगा। हनुमान जी को मामूली कपड़ा ओढ़ाये थे तो हनुमान जी कांपते थे। उसने सुबह आकर हम से कहा सब हाल कि जब हम पैर दबाने लगे तो सारा शरीर काँपता था। हमारे लिये काश्मीर से निगम जी एक ओढ़ना ऊन का लाए थे जो 6 हाथ लम्बा 4 हाथ चौड़ा था। हमने धो कर सुखा कर रख दिया था।

हमने कहा कि किसी को दे देंगे हम इसे न ओढ़ेंगे अधिक दाम का होगा। फिर उस कम्मल को हमने साधू को दिया। उसने जाकर हनुमान जी को शाम को ओढ़ाया और पैर दाबने लगा। तब फिर शरीर नहीं काँपा। तब आकर हम से कहा।

179. पंडित भगवत दास जी
लखनऊ

यह पं० राम किशोर और बाँके बिहारी के मित्र थे तो हमारे पास आया करते थे। अरसा शायद 40 साल (लगभग सन् 1935) का हुआ होगा। वे रामायण के प्रेमी थे। साल में एक बार रामायण का जलूस निकालते थे। हजारों आदमी संग लेकर खूब खर्च करते थे।

एक दिन अपना हाल हम से बताने लगे कहा "हमारे मन में यह आया कि आज हम 11 बजे रात में दो सुई लेकर बैठेंगे। अगर भगवान न मिले तो दोनों आँखों में सुई भोंक लेंगे। ठीक बारह बजे, घड़ी धरी थी, हमने सुई उठा कर एक एक दोनों हाथों में ले लीं और आँखों में भोंकने को चाहा। बस, भगवान प्रगट होकर गोद में बैठा लिया। दो घंटे गोद में बैठारे रहे। हम से कहा, "क्या चाहते हो?" हमने कहा "यह सड़क पास की हमने बहुत कोशिश किया परन्तु छिड़की नहीं गई।" भगवान ने कहा "कल से छिड़की जायगी।" हमने संसारी 5 बातैं माँगा सब दिया। तब से फिर दर्शन न हुए।

हमने कहा "तुम्हारी जो इच्छा थी पूरन हो गई। तुम्हारी गती अच्छी होगी। तुम भगवान की गोद में 2 घंटे बैठे रहे। चार बैकुण्ठ हैं। किसी में भेज देंगे। वहाँ का हिसाब पक्का है।"

शायद 80 के ऊपर शरीर छूटा है। जब यहाँ आते थे तो 60 के अन्दाज़ थे।

180. गौरा गांव, कुसुम्भी की ब्राह्मणी

लखनऊ से कानपुर जाने के रास्ते में कुसुम्भी स्टेशन पड़ती है। कुसुंभी गांव के करीब गौरा गांव है। वहाँ एक ब्राह्मणी रहती थी। वह दुर्गा जी का पूजन जप पाठ करती थी। भगौती प्रगट हो गईं कहा "माँगौ

क्या चाहती हो?" तो कहा, "हमारे भूख प्यास न लगै।" देवी ने "एवमस्तु" कह दिया। भूख प्यास बन्द हो गई। बहुत लोग जान गए, चेला होने लगे। बहुत चेला हो गए। कानपुर में बहुत हैं।

हम उनके चेलों के यहाँ जाते थे। उनके एक लड़की थी कहीं शादी कर दी थी। उसको बहुत धन कमा कर दिया है। एक सेर बतासा रख लेती, बाँटती, चुकते न थे। इस तरह पैसा बहुत कमाया था। काफी बूढ़ी होकर शरीर छोड़ा।

भगवान के पास बहुत घुनघुना हैं। जो माँगो वही देते हैं। न माँगो तो अपनी गोद में ले लेते हैं। जैसे माता बालक को घुनघुना देती है।, बालक उसे बजाता खेलता है, माता घर का काम करती है। अगर बालक मचल गया, घुनघुना फेंक दिया तो माता गोद में लेकर घर का काम करती है। यह भगवान की लीला है।

181. ज्योतिषी श्याम सुन्दर लाल मिश्र
आगरा

यह कुछ समय कानपुर अपने चचेरे दो भाइयों के साथ रहे हैं और एक चचेरे भाई लखनऊ में रहते थे, वहाँ भी रहते थे।

मास्टर रहे। हिन्दी का लेख बहुत अच्छा था। ज्योतिष अच्छी जानते थे। कवाइद और ड्राइंग और गणित यानी मास्टरी के सब काम में अव्वल थे। जब रिटायर हो गये तब पत्नी मर गई। एक लड़का 22 साल का, मर गया। तब अपने तीन चचेरे भाई थे उनके साथ रहने लगे। कानपुर में हम से कहा, "हमारे बाबा नारायण जी को दुर्गा जी का इष्ट था। हमैं भी दुर्गा जी का मंत्र ध्यान बता दो।" हमने मंत्र बता दिया, कहा "पहिले एक माला ब्रह्मगायत्री जप कर माता के 10 माला दो माह जपौ, तब ध्यान बताया जायगा।" जप शुरू कर दिया। दो माह बादि ध्यान बताया, कहा "जो कुछ देखना सुनना किसी से न बताना, हम से बताना।" ध्यान में जुटे। थोड़े दिन बादि भगौती प्रकट होकर उनके पलंग पर लेट गईं। पहिले बायाँ स्थन पिलाया, फिर दाहिना पिलाया।

हम से कहा, "दूध बहुत मीठा था, उसमें महक भी आती थी, बड़ा स्वाद था, लाल वस्त्र धारण किये थीं, उनमें बेल बूटे बने थे, नग

जड़े थे। सब महर महर महकते थे। शरीर जैसे लोहा तपाया हुआ ऐसा लाल था। सब स्वर्ण के भूषण पहिने थीं। हमसे कहा "मुँह फैलावो", हमने फैलाया, बस अन्तर हो गईं।

यह बातैं, संग सात आदमी कानपुर से लेकर रेल पर आये और गोपाल भवन में बहुत लोग बैठे थे, उन्नाव में पंडित महेशवल वकील के मकान पर, सब के सामने सुनाया। हमने कहा "तुम्हारी गती अच्छी होगी, परन्तु अब न मिलैंगी। हमने तुम से कह दिया था किसी के सामने मत कहना।"

एक बात हम भूल गये, स्टेशन से उतरे तो अकड़ते चले आते थे, संग वालों ने कहा, "आज क्या बात है जो इस तरह चलते हो।" यह बात उनके संगी हम से बताये थे।

कानपुर मंझले भाई की पत्नी बीमार थी, हनुमान जी का जप कराया गया था, हवन बाकी था। हमने कहा "हवन दूसरे समय हम कराते हैं। जब नातेदार, मित्र, घर के सब भोजन कर लें तो सब का मन शांति रहता है, देवता खुश रहते हैं, सब में भगवान हैं। उनके पास पैसा था, पर होनहार बलवान होती है, किसी को जलपान न कराया, सूर्य बैठे हवन समाप्त हुआ, बांदरौं को लड्डू ले गये, धरे, बांदरौं ने उधर देखा भी नहीं, उठा लाये, हमारे पास आये, हाल बताया। हमने कहा "सब गरीबौं को बाँट दो।" बाँट दिया। फिर मंगल को हवन हुआ। सब को जलपान भोजन करा कर तब बंदरौं के लिये ले गये। धरा, बंदर दौर दौर कर आकर खाने लगे। हमारे पास आये। हमने कहा, "तुम से पहिले कह दिया था भूखे में कोई काम ठीक नहीं होता है। मन नहीं लगता है। सारा खेल मन का है।"

ज्योतिषी जी यहाँ हमारे पास 20 साल से ऊपर रहे, जन्म पत्र बनाते थे और विचार ग्रहों का करते, दान कराते, हवन कराते, साइत बताते, जप करने वाले पंडित कई थे। यहाँ के, लखनऊ के, कानपुर के, दिहाति के, उनके पास दूर-दूर के जन्म पत्र आते थे बनने को, विचारने को। इसी से उनका काम चलता था। उनके छोटे चचेरे भाई अम्बिका प्रसाद मोदी नगर चले गये थे, लड़की की शादी वहीं से करना था, उनका शरीर छूट गया था, औरत स्कूल की साइकिलौं का ठेका ले लिया था। हमारे एक भक्त बंगाली सब से बड़े मास्टर थे। उनको लिख दिया था, वै उसे लगा दिये थे।

ज्योतिषी शादी में कुछ दिन पहिले गये। जब तीन दिन शादी के रह गये तब खांसी बुखार पकड़ लिया, बेहोश हो गये, तो करीब एक मकान था वहाँ पलंग पर उठा कर लिये जाते थे। रास्ते में पलंग पर शरीर छूट गया। उमर 75 की थी, वहीं उनका सब काम हुआ, शादी भी हो गई।

वह अरिष्ट कुंडली भी बनाते थे 60-70 साल वालों की, जो मुहल्ले में लड़के लड़की पैदा होते थे, उनकी उमर जान कर, किसी रिषी का यह अरिष्ट बनाने का जोग उनको मालुम था। पूरा घटित हो जाता था।

हुगली से एक सेठ उमर 48 की थी मारवाड़ी था, कार्तिक में आया, जन्म पत्र दिखाया। ज्योतिषी जी ने कहा "अगर कुंडली ठीक है तो अगहन में कोई तिथि और समय बताया, तुम्हारा शरीर छूट जायगा और बैकुण्ठ मिलैगा।" तो वह रोने लगा। अपने दोनों भाइयों से कहा, "हमारे चाचा का गुरुद्वारा है, हम भी यहाँ के चेला हैं। दो कमरे यहाँ बनवा देना। फिर घर चला गया। जब को बताया गया था उसी समय शरीर छूट गया। उनका काम भाई लोग कर दिये थे, और कमरा नहीं बनवाये, लालच में पड़ गये।

ज्योतिषी जी 10 साल प्रेत योनि में रहे। जन्म अष्टमी सम्बत 2032 को दुर्गा जी ने बैकुण्ठ भेज दिया है।

182. महाबीर सिंह की धर्म पत्नी
कानपुर

कानपुर प्रेम नगर, महाबीर सिंह वकालत करते थे। एक बड़ी कोठी बनवाया था। उनकी स्त्री, लड़की और आप रहते थे। उनका मकान कानपुर से 10 कोस के अन्दर था। उनकी पत्नी राम जानकी जी, हनुमान जी का चित्र राखे रहीं। उनका पूजन करतीं भोग लगाती थीं। भगवान में भाव सच्चा था। एक दिन परोस में किसी लड़की की शादी थी, उनके घर से बोलाने कोई आदमी या औरत आई तो महाबीर सिंह से कहा-"भोग बना धरा है तुम आज लगा देना। हम उनके घर हो आवैं।" कहकर चली गईं। जब लौटीं तो भगवान ने कहा "हम भोग नहीं पाये हैं इनका प्रेम हम में नहीं है, सब पूजा, पाठ, जप देखाऊ है। तुम अपने हाथ भोग लगाया करो।

जब हम कानपुर जाते थे तो वे हमें बोलातीं भोजन कराती थीं। हमें बोलाया और रोने लगीं। हमने पूछा, "क्या बात है?" तो सब बताया और कहा "हम समझती थीं यह इतना नेम, जप, पाठ करते हैं तो इनको दर्शन जरूर होते होंगे। जब भगवान ने हम से खुद कहा तो बड़ा दुख हुआ।"

फिर लड़की की सादी हुई, बादि में महाबीर सिंह बीमार हुये तो कोठी कनक भवन भगवान के नाम लिख दिया, उसमें किराया काफी आता है। तब उनकी पत्नी घर चली गयीं। वहाँ जमीन जरूरत भर को है। वहीं भजन करतीं और धर्म करती हैं।

महाबीर सिंह लक्ष्मण किला पर के चेला थे। जब आते थे तो यहीं ठहरते थे। शायद 50 या 52 में शरीर छोड़ा था।

183. बदमाश भी तर जाते हैं

मौजा माहमदा, जिला मुज़फ्फ़रपुर में एक मंदिर में भगवान दो मंज़िले पर पधरे थे। एक आदमी उम्र 40 साल की थी रोज़ घड़ी बजाने सुबह शाम आने लगा। नेम नहीं छोड़ा। भगवान की चौखट पर रोज़ कसरत करता था। कहता था कि माता-पिता के सामने कसरत करना चाहिए। बड़ा जबर बदमाश था। हमसे कहता था "भगवान पतित पावन हैं, न मालूम कितने पापियों को तारा है। क्या मुझे न तारेंगे? हमने सुना है, पढ़ा है और मुझे विश्वास है। डंके की चोट पर बैकुंठ लूंगा।"

पं० राजेन्द्र दास और मुझसे अच्छी अच्छी बातें करता था। उसकी बड़ी ऊँची गती हुई। सदैव प्रसन्न चित्त रहता था।

184. भरतकुंड, अयोध्या
फैज़ाबाद

भरत कुंड अयोध्या से दक्खिन 6 कोस प्रयाग वाली सड़क पर है। इस स्थान का प्राचीन नाम 'नन्दी ग्राम' है। भरत जी ने 14 वर्ष इसी स्थान पर बैठ कर अयोध्या का राज किया था। तमसा नदी, जिसे मडहा भी कहते हैं, थोड़ी दूर पर है।

भरत कुंड पर एक विशाल कुंड है, जिसमें कमल ही कमल हैं।

इस कुंड के उत्तर में भरत मिलाप का मंदिर है, इस मंदिर के और उत्तर में नन्दी ग्राम भरत जी के तपस्या का स्थान है, तथा मंदिर व भरत कूप है, जिसमें सब तीर्थों का जल डाला गया है। कुंड के दक्खिन में एक बारादरी बनी है, जिसमें बैठ कर यात्री पिंडा पारते हैं। चौक फैजाबाद से भरत कुंड जाने के लिये सिटीबस, टेम्पो, टैक्सी, ताँगा मिलते हैं।

बारादरी बहुत पुरानी बनी है। इसकी छत टपकने लगी थी तो हमारे विचार में तुड़वा कर दुबारा मजबूत छत बनवाने की इच्छा हुई ताकि गरीब यात्रियों के कपड़े व खाने का सामान बरसात में जब वै पिंडवान को कुवाँर में आते हैं खराब न हों। शिष्यों के सहयोग से दुबारा छत बनवाई गई सन् 1972 में, लगभग पांच हजार रुपया खर्च हुआ।

इस बारादरी के बगल में एक शिवाला जीर्ण अवस्था में देखा तो विचार उठा इसे भी ठीक करा दिया जाय। पता लगवाया कि इस शिवाले में क्या था तो कुछ बात ठीक ठीक न मालूम हुई। किसी ने कहा शंकर जी की मूर्ति थी, किसी ने कहा जिसने बारादरी बनवाई थी उसकी समाधि थी, तब हम कुवाँर सन् 1972 की अमावस को रानी साहेबा इंटौजा, महाबीर प्रसाद श्रीवास्तव, वकील कचेहरी रोड लखनऊ, रानी साहेबा जसदन व रानी साहेबा ताल के साथ पिंडदान कराने भरत कुंड गये। जब यह सब बारादरी में पिंडदान कर्म कांड कर रहे थे, हम ध्यान मग्न हो गये तो एक बालक 5 साल के करीब खूब गोरा गोरा हमारे सर पर हाथ रख कर कान में बताने लगा "बाबा! जो सेवाला है, वहाँ पर विष्णू पद पधरा था। गोस्वामी जी के भक्तौं ने बनवाया था, पहिले भरत जी गया कुंड कायम किया और विष्णूपद पधराया और कहा जो भाव से अपने पुरखों को श्रद्धामाफिक पिंडदान करैगा उनकी गती हो जायगी, पहिले गया वेदी पर पिंडा पारा जाय और गया कुंड में एक पिंडा छोड़ दे। तब विष्णूपद पर पिंडा पार कर भरतकुंड में छोड़ा जावे।" यह विधान बताया। फिर कहा "गरीब आदमी गया दूर है नहीं जा सकेंगे। फिर कृष्ण-भगवान तीर्थों का जीर्णउद्धार कराया, फिर राजा वीर विक्रमादित्य ने कराया, विष्णूपद वही चला आता था, सफेद पत्थर का 10 सेर वजन था। वह गोस्वामी जी के शरीर छूटने के बाद भदरसा

के मुसलमानों ने निकाल कर तोड़ कर गुप्तारघाट सरजू में फेंक दिया। गोस्वामीजी का शरीर काशी में 126 वर्ष पर छूटा था। कुछ तीर्थ गोस्वामी जी ने नैमिषारण्य में भी सोधवाया था, पिंडा पारे जाते थे।" यह बता कर दोनों हाथों से मूड़ (सर) हिला कर कहा हम जाते हैं। बस अंतर हो गया। हमारा मन शिवाला में क्या था जानने का लगा था सो भरत जी ने स्वयं बालक रूप में आ कर बता दिया। हमें शान्ती हो गई।

तब विचार किया कि फिर से विष्णू पद की स्थापना कर दी जाय। तो भरत कुंड फिर गये, साथ में मास्टर हरनाथ सिंह, जगत नरायन, महाराज कृष्ण, फैजाबाद बिजली कम्पनी के इन्जीनियर और फैजाबाद मिलिट्री के करनल ग्रेवाल (सिक्ख) थे। सब का विचार हुआ कि कुंड की सीढ़ियों पर एक छोटा सा खुला मंदिर नया बनाया जाय। हमने भी पसंद किया। बैसाख कृष्ण 7 सं. 2030 (25-4-73) को हमने नींव धर दी। बाबा राम दास गोकुल भवन के, गया जा कर विष्णू पद गया के ही काले पत्थर पर, गया के ही कारीगर से, जैसा विष्णूपद गया में है वैसा ही बनवा कर भेजे। मंदिर राजवंसी, इन्जीनियर, फैज़ाबाद मिलिट्री की देख रेख में बनाया गया।

विष्णूपद की स्थापना असाढ़ सुदी द्वितीया सं. 2030 तदनुसार 2-7-73 को हुई। पांच पंडितों ने विधिवति पूजा की दिन में 12 बजे से शाम 4 बजे तक। उसके बादि ब्राह्मण भोजन डोगरा पलटन के करनल शेर सिंह ने कराया, पूरी, आलू का साग और हलुआ था। बड़ी भीड़ रही। जगत नरायन अपना स्टोव चाय, दूध, मिठाई, नमकीन, लैया चन्ना तमाम ले गये थे। दो बड़े टोकरा भरे देसी आम, हजार के ऊपर रहे होंगे ले गये। एक मेला ऐसा लग गया। कोई चाय पीता था, तो कोई लाई चन्ना चबाता था। लड़के लड़की तमाम शहर की और आस पास के गाँव की ताल के पास घूम घूम कर आम चूसते थे, जो आम गये थे उन्हें बाँटे गये थे। बड़ा आनन्द रहा। देखते ही बनता था। इस तरह भरत जी की कृपा से पुनः विष्णू पद स्थापित हो गया है।

हमने बारादरी में एक पत्थर लगवा दिया है, जिसमें समर्थ राम दास गुरु की बताई पिंडदान विधि लिखी है।

कुंड के उत्तर में जो स्थान तपस्या का है उस मंदिर से सटे चार कमरे पुख्ता बनवा दिये हैं, ताकि जो यात्री या साधू वहाँ जायँ उनको

असुविधा न हो। इन कमरों के बनवाने में भी दस हजार के ऊपर लगा होगा। इसके निर्माण में भी हमारे भक्तौं का ही सहयोग रहा है। भरत जी की मूर्ती के ऊपर बृज बिहारी टंडन, लोहारबाग, सीतापुर ने पंखा लगवाया है।

185. भगवान बुद्ध

भगवान की प्राप्ति और जीवों पर दया-दीनता, शान्ति की मूर्ति थे।

जब बर्मा गये तो वहाँ पर दूर तक बिछौना बिछे थे। बीच में एक काठे की चौकी पड़ी थी उस पर भी कीमती वस्त्र बिछा था। सब हटा दिया और सब से कहा, "छोटे-छोटे जीव हैं वह मर जायेंगे।" अपने कपड़े से उन्हें हटाया जिससे चोट न लगे। तब अपना कपड़ा बिछा कर बैठे, थोड़ी जगह में और कहा, "तुम सब छोटे छोटे जीवों की रक्षा नहीं करते तो बड़ों की कैसे करोगे। भगवान के यहाँ सब लिखा जाता है जो मन में विचार होता है। सब जीवों में भगवान हैं। जीवों पर दया करना ही भगवान की सेवा है। इसी से पट खुल जाते हैं।"

महीना गर्मी का था। बुद्ध जी एक पीपल के नीचे 2 माह रहे। बहुत बड़ा पेड़ छायादार था। कुछ दूरी पर गाँव था। एक पंडित रोज आते। खराब खराब गाली देते। 2 माह जब बीत गये तब पंडित ने कहा, "हम रोज़ आते हैं और सैंकड़ों गाली देते हैं।" आप बोलते नहीं हैं। इसका परिनाम क्या होगा?" बुद्ध जी ने कहा, "जैसे कोई तुम्हारे लिए भोजन लावे और तुम्हारे भूख न हो तो क्या करोगे?" पंडित ने कहा, "वह अपना भोजन वापस ले जायगा।" तो बुद्ध जी ने कहा, "इसी तरह तुम अपनी गाली वापस ले जाते हो।"

पंडित के अन्दर बड़ा दुख हुआ। सारा बदन जलने लगा। साष्टाँग दंडवति कर गिरे और त्राहि त्राहि करने लगे, छिमा माँगने लगे, कहा, "महाराज! बचाओ! प्राण व्याकुल हैं। जी नहीं सकते।" बुद्ध जी ने उठा कर शरीर पर हाथ फेरा। शाँति आ गई। दीन बनि गए। दोनों चरन गहे। पट खुल गये।

186. पंडित चन्द्र नाथ पाण्डे
मुबारिज नगर, जिला उन्नाव

इनके कुल पूज्य गणेश जी हैं। परन्तु मूर्ती नहीं थी। तब हम गणेश जी की मूर्ती ले गए, दिया। पूजा होने लगी। फिर पं० शिव अधार ने मूर्ती दुर्गाजी की माँगी। उनको दिया। तब पाँडेजी ने सालिकराम माँगा तो सालिकराम, नर्बदेश्वर, गोमती चक्र दिया, कहा, "जैसे तुम्हारे जाड़ा, घाम लगता है, उसी तरह इनके लगता है। यह भाव होना चाहिए।"

महीना जाड़े का था तो गद्दा, ऊपर रजाई ओढ़ाते थे। एक दिन भूल गए। जब सैन करने गए तो पलंग पर पैर धरे और लिहाफ ओढ़ना चाहा तो भगवान ने लिहाफ़ खींचि लिया। ऐसा हाल शायद कई बार हुआ। उन्होंने पड़ाइन से कहा, "आज हमारा लिहाफ़ कोई खींचि लेता है। तुम देख आवो कि भगवान को हम ओढ़ाये हैं कि नहीं।" पड़ाइन गईं तो देखा कि भगवान खुले पड़े थे। आकर कहा, "खुले पड़े हैं।" तब उठे। हाथ पैर धोकर भगवान को रजाई ओढ़ाया। फिर पलंग पर आए, सैन किया। तब फिर भगवान ने लिहाफ नहीं खींचा।

तब फिर पांडे जी ने छत पर मंदिर बनवाया और हमने एक रामलला दिया। वजन हम भूल गए कि कितने हैं। उनकी सेवा करने लगे। एक पंडित वृद्ध सूर (अंधे, सूरदास) थे। उनको भोजन कपड़े की तकलीफ़ थी। पांडे जी रोज़ घर बुलाकर भोजन, कपड़े का इंतजाम कर दिया। पंडित के पास एक हनुमान जी की मूर्ती थी पीतल की वह भी मंदिर में रख दी गई।

फिर पंडित का कई साल पर शरीर छूट गया।

187. कीर्तन करने वाली बुढ़िया धोबिन

कटरा मोहल्ला, अयोध्या, में एक बुढ़िया धोबिन रही दुबरी-पतरी। वह रोज़ कीर्तन घर पर शाम को करती रही। एक साधू शाम को आया। एक घड़ा में दालि, एक में चावल दे गया, कहा, "रोज़ कीर्तन किया करो, तुम्हारा प्रेम कीर्तन में है।" बुढ़िया दालि चावल बनाती, खाती, कीर्तन करती। 6 माह हो गए।

एक दिन हमसे कहा, "महाराज! एक साधू कहीं का आया था तो एक घड़ा में चावल, एक में दालि भर कर दे गया, कहा, तुम इसे बना

कर खाया करौ और कीर्तन किया करौ।' 6 माह हो गये हैं चुकता नहीं है।" हम गये देखा फिर चले आए। 3 माह पर फिर मिली। पूंछा तो कहा, "वैसे ही भरे हैं।" हमने कहा, "अब तुम दूसरे बर्तन में धरौ तो शायद चुकने लगै नहीं तो न चुकैगा। तुम चाहती हो कि चुक जाय?" तो कहा, "हाँ।" तब दूसरे बर्तन में धरा। तो तीन माह में चुक गए।

188. शुकदेव दास जी की पंचायती कुटी, बिष्णुपुर, तथा राजा मुर्शिदाबाद के छोटे भाई

गोरख प्रसाद सिंह को दिन समय बता दिया था। वै सड़क पर बैलगाड़ी लिये खड़े थे। हम, गिरधारी, बाबू प्रयाग नारायण, हरी नारायण बाबू के छोटे भाई, रघुबंश भूषण आये, सड़क पर उतरे बस से। गोरख प्रसाद बैलगाड़ी लाये थे कुटी पर पहुंचा दिया। रोज़ आते थे, चौथे दिन अपने यहाँ ले गये, बड़ी सेवा की। दो लड़के थे। बड़े के एक लड़का चार साल का था। छोटा 16 साल का भाई था। वह कुटी पर पढ़ता था जहाँ हमें ठहराया था उस जगह का हाल हमने पूछा कि यह जगह कैसी है कि रात दिन कैलाश मालूम होता है, तो कहा, "हमारे भाई शंकर जी के भक्त थे। जप-पाठ-पूजन इसी जगह करते थे। डोलडाल, अश्नान करके भोजन सैन भी इसी जगह। उमर बीता दी। एक बार भोजन सादा और सादा कपड़ा। और कहीं न गए। किसी से बात न करते न रुपया, पैसा, जिमीदारी से मतलब रखते। इसी जगह शरीर छोड़ा।"

तीन दिन के बाद वहाँ से चलना जरूरी था। पानी बहुत बरस गया था। हमने कहा कि, "काम बहुत है, बिना गये ठीक न होगा, राम नौमी आ रही है, सफ़ाई करना है।" तो बैलगाड़ी में सब को बैठा कर, पानी गाँठ भर कहीं-कहीं अधिक था, लेकर चल दिये। कई आदमी थे। सड़क पर आये। तब तक बस आ गई। सब को बैठा दिया। जब हम एक फरलांग निकल गये तब बैलगाड़ी पर बैठकर घर गये। ऐसे भाव के थे।

यहाँ आये तो देखा कि न तो पुताई हुई न सफ़ाई हुई। हाता में घास, मकानों में जाला लगा था। हमने कहा, "पानी तब पियेंगे जब सब

सफ़ाई हो जायगी।" 40 आदमी बाहेर से आ गए थे। हमने कहा कि जलपान खूब कर लो। हमने खुरपा उठाया। सब लोग जुट गए। सफ़ाई और कमरों का जाला साफ़ हो गया, सब धो गए। 9 बजे रात हमने अश्नान किया।

एक जैकुमार सिंह, राजा बंगाल (मुर्शिदाबाद) जैन के छोटे भाई, राजा ददुआ के यहाँ ठहरे थे, नाम हम भूल गये। कई सिपाही, औरत, एक लड़का दस साल का था। वै शंकर जी के भक्त थे। उम्र 36 साल की थी। एक गाढ़े का टुकड़ा ओढ़े थे, एक पहिने थे गांठ के बराबर था। वह शाम को आ गये थे, बैठे रहे।

जब हम नहा चुके तब पास आये। बात हुई। हमसे कहा, "हम 14 साल हठ योग सिखा। उसमें कोई आनन्द न मिला।" हमने कहा, "हठ योग से भगवान की प्राप्ति नहीं होती है। तमाम सिद्धी प्राप्त हो जाती हैं। शरीर अजर-अमर हो जाता है। एक दिन की समाधि से 10 दिन की आयु बढ़ती है। फिर जिसका जैसा संस्कार होता है उसे वही अच्छा लगता है। हमने ढाई सौ वर्ष, चार सौ वर्ष, आठ से (सौ) वर्ष के हठ योगिन का समझा कर छुड़ा दिया। भगवान की दया हो गई। छोड़ दिया। राज मार्ग पर आ गये। नाम की प्राप्ति, रूप की प्राप्ति, प्रकाश की, शून्य समाधि की, कुण्डलिनी जग गई, सब लोक देख आये, छै चक्र सोध गये, सात कमल खिल गये। जितनी पंखड़ी कमल में हैं उतने किसिम की महक स्वरों से आने लगी, अनहद बाजा सुनने लगे, घट में अमृत का पान होने लगा, सब लोकों से तार आने लगे, सब देवी देवताओं के यहाँ दिब्य भोजन को जाने लगे, सब देवी देवता प्रगट होकर दर्शन देने लगे, सारी सृष्टि में अपने को देखने लगे, अपने में सारी सृष्टि देखने लगे।

राजा के भाई जैन थे, कहा, "हमारे यहाँ 24 सिद्ध सन्त हुए हैं। सब जैन उन्हीं को मानते हैं।" हमने कहा, "रिषभ देव जी तो बिष्णु भगवान का औतार हैं।" हमसे कहा, "हमैं शंकर जी का जप-ध्यान बतावो।" तब हमने शंकर जी का व पारबती जी का मंत्र बताया, जप-ध्यान की बिधि बताया। शंकर जी की मूर्ति नरबदेश्वर की छोटी थी, दिखाया, कहा, "एक साधू ने बताया है कि इनको गाँठी और जाँघ के अन्दर दबा कर बैठना, ध्यान हो जायगा।" हमने कहा, "गलत है। सब में भगवान हैं। वै पसीने से तंग हो जायेंगे, साँस न ले पावेंगे। तुम्हारी

कुगति होगी।" फिर उनको पूजन बताया। झँझरीदार डिब्बा में कपड़ा बिछा कर राखौ। जैसे तुम्हारे जाड़ा घाम लगता है वैसे ही इनके लगता है। समय पर भोग लगावो। जुट गया।

ददुआ राजा के यहाँ से आकर कटरा जैन मंदिर में आ कर ठहरे। 1 माह रहे। रोज़ आते थे। बड़ी सहन शक्ति थी। मान अपमान से अलग हो गए थे पहिले ही। फिर बड़ी तरक्की किया।

उनके पास माला कई किस्म के थे दिखाया। हमने कहा, "सब ठीक है। जिससे तुम्हारा मन हो, जपो। मूंगा, मोती, रुद्राक्ष, कमलाक्ष, बैजंती, तुलसी, स्फटिक, सब छोटे दाने के थे। जपने में सभी ठीक हैं। कहते थे कि हमारे यहाँ कई पुश्त की मूर्ती सोने की हैं 24 औतार जो जैन हुए हैं।

189. एक भक्त राजा और अभिमानी गुरु

अरसा 40 साल के ऊपर हुआ उम्र 40 की होगी, एक राजा शायद बाँदा जिला के थे आए। उनके गुरु जी साथ थे और कई नौकर थे। गुरु साँवले पतले थे, भभूती लगाए, सफेद रेशमी अचला पहने थे। उम्र 60 की होगी। चाँदी का लोटा जिसमें पानी 3 सेर आता, चाँदी का कटोरा जिसमें पानी दो सेर आता, चाँदी का गिलास जिसमें पानी सवा सेर आता, चाँदी की खड़ाऊँ, चँवरी चाँदी की मूठ मढ़ी और छड़ी की मूठ नीचे ऊपर चाँदी से मढ़ी थी। सब को आसन दिया गया। राजा प्रेमी था, दण्डवति किया, सब नौकरों ने दण्डवति किया। हमने उनके गुरु की दण्डवति किया। गुरु जी सीधे अकड़े बैठे रहे आँख बंद किये। सब को प्रसाद दिया गया। सब ने पाया, जल पिया।

राजा ने कहा, "हमैं बाल राम से प्रेम है, उनका ध्यान बताओ।" हमने कहा, "आपके गुरु जी ने क्या बताया है?" तो गुरु जी ने न प्रसाद लिया और न कुछ डोले। तब हम समझ गये कि यह इस अभिमान में चूर हैं कि राजा हमारा चेला है, यह न समझे कि हम राजा के चेला हैं।

राजा सादे कपड़े पहने था, जैसे साधारण लोग पहनते हैं। गुरु का राजसी ठाट था। हम राजा को अलग ले गए। उनको तब शब्द का भेद बताया और कहा, "यह ध्यान निर्गुण, सर्गुण दोनों का बोध कराने वाला है। जानकी जी ने प्रथम शंकर जी को बताया है। शंकर जी ने महाराज

जी को बताया था। इसी से सब प्राप्ती हो जाती है। इससे आसान और कोई तरीका नहीं है। एकान्त एक कमरा होना चाहिए, उसमें कोई न जा सके। उसी में अपना नियम करना।"

4 घंटा बैठक रही। गुरुजी ने कुछ न कहा। हम दण्डवति किया तो मत्था तक न झुकाया। फिर अपना लोटा, कटोरा, गिलास बाँध कर झोले में रख लिया। राजा नौकर सब साथ लेकर के चले गए।

भगवान के पास बहुत घुन घुना हैं। जो जौन चाहता है उसे वही देते हैं। जो घुनघुना नहीं चाहता भगवान को चाहता है उसे गोद में लेते हैं। कबीर जी ने कहा है "अपने लड़के को माता घुनघुना देती है। वह उसे लेकर बजाता खेलता है, माता घर का काम करती है। अगर लड़का घुनघुना फेंक देता है, मचल जाता है तो माता उसे गोद में लेकर काम करती है। वही हाल है। जो चीज जीव भगवान से मन से चाहता है, वही पाता है। सारा खेल मन का है। बन्ध मोक्ष का कारण मन ही है।"

190. ठाकुर रघुनन्दन सिंह
बनारस ज़िला

रघुनन्दन बनारस जिले के थे। उनके एक हजार आदमी साथी थे– 2 ठाकुर, 2 ब्राह्मण और बाकी सब अहीर थे। उनका प्रेम दुर्गा जी व हनुमान जी से था।

कोई उनके पास आता और कहता कि हमें फलाना आदमी बहुत परेशान करता है। तो वे अपने साथिन को बुला कर कहते कि "सब लोग भोजन कर लो तब चलें।" भोजन करके जाते दिन में। उस आदमी का दाहिना हाथ कटा कर चल देते थे। पटवारी के दाहिने हाथ का अँगूठा कटा लेते थे। सब हाकिम जानते थे।

एक बार बाज़ार में नये दारोगा कहीं से बदल कर आये थे। वे रघुनन्दन सिंह से कहे, "सुना है कि तुम ऐसा काम करते हो।" तो कहा, "हमें भगवान के यहाँ से हुक्म है कि तुम ऐसे लोगों को दण्ड दिया करो। सब हाकिम जानते हैं। कोई कुछ नहीं कहता है। तुम नये अभी आये हो, जानते नहीं हो। अब फिर बोलोगे तो बीच बाज़ार में तुमको मारेंगे।" तब दारोगा चुप हो गए।

फिर उन्होंने 60 की अवस्था में सब छोड़ दिया। हमारे एक शिष्य महाबीर दास अहीर हैं गाज़ीपुर ज़िले में, उनसे मंत्र लिया। यहाँ भी आया करते थे। पतले-पतले लम्बे थे। कहते थे कि 3 सेर की हमारी गोजी थी। उसे उनका दामाद पूजता है। फिर उनका नाम राघौ दास रखा गया। रामजानकी, दुर्गा जी का मंत्र जपते थे। दुर्गा जी व हनुमान जी का मंत्र हमसे पूछा था। रामायण का पाठ करते थे।

एक बार यह प्रयागराज गए थे। वहाँ बाँध पर जो तुलसीदास जी का अखाड़ा है, मेले का समय था, रामदास उसी अखाड़े में ऊपर के कमरे में थे। राघौदास उनसे मिलने गए। चट्टी (चप्पल) पहने हुए थे। उन्हें नहीं मालूम था कि चट्टी पहन कर ऊपर नहीं जाना होता। वे चट्टी पहने हुये ऊपर चढ़ने लगे। किसी साधू ने जब उन्हें चट्टी पहने देखा तो मारने को चला। ये चुप बैठ गये। साधू ने इन्हें खूब पीटा। हमसे कह रहे थे कि महाराज, आपकी बात का ख्याल आ गया नहीं तो नीचे फेंक देते तो चूर हो जाता। हमने कहा, "बड़ा अच्छा किया। तुम सँभल गये।"

इधर राघौदास कई सालों से नहीं आये। लगता है उनका शरीर छूट गया है।

191. एक डाकू ठाकुर (मस्तराम)

भगवान पतित पावन हैं। अरसा हुआ एक ठाकुर अच्छे धनी जिमीदार, उम्र 60 की थी, डाकू थे। 500 आदमी संगी थे। जवारि के लोग परेशान थे। वै सब छोड़ि के तपसी जी की छावनी में मंत्र लेकर भजन करने लगे। राम मंत्र, जानकी मंत्र, रामायण का पाठ करते, हनुमान जी का दर्शन करते। साँवले दोहरी देह के थे, भाँग खाते थे।

तब हम राम घाट पर रहते थे। कूंढ़ी-सोंटा पास रहा। पल्थी मार कर भाँग घोंटते, खूब लाल श्री मत्थे में लगाते और जहाँ-जहाँ लगाई जाती है, तहाँ-तहाँ लगाते। हमारे पास से सरजू नहाने का रास्ता है, जाते थे। हर समय खुश रहते थे।

हमने उनका नाम मस्तराम धर दिया था। सब लोग मस्तराम कहने लगे। उनके बड़े भाई को पता चला। वै आए तो देखा। बड़े खुश हुए। महन्त जी और 25 साधून को साथ अपने घर ले गए। 15 दिन सेवा की और महन्त

जी से कहा, "महाराज! यहाँ दूर तक के लोग तबाह थे। यह साधू हो गया बड़ा अच्छा हुआ। वह सब के सरदार थे। घर को एक पैसा नहीं लाते थे। जो वस्तु, रुपया, पैसा, जेबर, बर्तन मिलता उसे सब को कहते आपस में बाँट लो। इनके नक्षत्र में यह काम पड़ा था। समय आ गया। फिर सब साधून को आने जाने का खर्चा दिया और बिदाई दी। पांच सौ रुपये महन्त जी को और दोनों तरफ का खर्चा दिया। सब आश्रम पर आए और हाल बताया।

मस्तराम फिर मस्त हो गये। खूब भजन किया। इनका शरीर 75 में छूटा था।

192. श्याम अंडे से प्रगटा बालक

अरसा हो गया जब राम घाट साढ़े पांच साल रहे तब की बात है। महाराज के पास रात में ध्यान में बैठे थे 3 बजे, तो एक श्याम अंडा प्रगट हो गया एक छटाक का था। फिर वह बढ़ने लगा। एक हाथ लम्बा बढ़ा। डेढ़ बीता चौड़ा होता। फिर वह बीच से दरक कर दो पल्ला हो गया। उसमें से एक श्याम बालक निकला और अंडे के दोनों टुकड़े गायब हो गए। फिर वह बालक जैसे छै माह के लड़के होते हैं, वैसा हो गया। रंग श्याम ही रहा। सीधा लेटा था, हाथ पैर हिलाता था, हँसता था। हमने कहा, "तुम्हारे माता पिता कहाँ हैं?" तो कहा, "हमारे कोई माता-पिता नहीं हैं।" हमें माया में भुला दिया। हम उठा करके पलथी लगा कर उनको आगे रख लिया। ध्यान हो गया। वहाँ बहुत आदमी थे। धनुष यज्ञ थी। हम उनको लेकर मेला में घूमने लगे तो वे पांच साल के हो गए। पीत बसन धारन किए, कानन में कुंडल, शिर पर मुकुट, नाक में नासामणि लगी थी। सब वहाँ कायदे से बैठे थे। साधू समाज एक जगह, गाने बजाने वाले एक जगह, माता सब एक जगह, गृहस्त लोग एक जगह। बीच में मंच था। सिंहासन पर विश्वामित्र जी, दूसरे पर रामजी, एक पर लषन लाल, इस तरह सब बैठे थे। हमने सब जगह घूम कर देखा। लोग कहते थे, "तुम कौन हो? साधू कि बाबू?" हमने कहा, "न हम साधू हैं, न बाबू हैं।" फिर कोई कुछ न कहा।

फिर विश्वामित्र ने राम जी को धनुष तोड़ने की आज्ञा दी। भगवान उठ कर गुरु के चरण छुए और धनुष के पास गए। उसे दहिनाए और ताका, उठा कर, तोड़ कर छोड़ दिया। गुरु के पास आकर दंडवति करके बैठ गए। फिर गाने बजाने वाले एक लावनी फरुखाबाद के पंडित

गणेश प्रसाद की बनाई बहुत बुलन्द आवाज़ से सुनाई। हमें थोड़ी याद है सो बताते हैं:

क्या श्याम गौर गुल बदन मदन का जोड़ा ।।1।।
जिन शिव शंकर का कठिन सरासन तोड़ा ।।2।।
क्या बाँकी झाँकी अदा अवध नन्दन की ।।3।।
लोचन विशाल मुख चन्द खौरि चन्दन की ।।4।।
गले सोहैं हीरा लाल माल मुक्तन की ।।5।।
छबि जिन्हैं दई करतार मोहनी मन की ।।6।।
प्रभु हो सवार बाजार नचावत घोड़ा ।।7।।
जिन शिव शंकर का कठिन सरासन तोड़ा ।।8।।
मुलकों में चारौं तरफ गये परवाने।
नृप रचा जनकपुर जज्ञ मचे घमसाने।
रावन बानासुर लगे सभा में आने।
जिन उठा लिया कैलास बड़े बलवाने।
तहँ दसकंधर ने धनुष देखि मुख मोड़ा ।।9।।

फिर हम विचार किये कि अब चलना चाहिए। तब जिनको हम गोद में लिहे थे, वह बोले, "हम विमान मँगाते हैं, उस पर चलना।" हाथ ऊपर उठाया। एक सिंहासन आसमान से आया। उसके आगे चलाने वाला बैठा था। सिंहासन जमीन से एक बीता पर ऊपर टंगा था। हमसे गोद वाले महाराज ने कहा, "बैठो।" हम उनको लेकर बैठ गए। सिंहासन उठा, फिर काफी दूर पर जाकर सर सर सर सर चलने लगा। बस आश्रम आ गए। और विमान पर से उतरे, कोठरी में गए तो गोद के महाराज अन्तर हो गए। महाराज से कहा। तो कहा "भगवान ही थे।" मारकंडे की ऐसी लीला तनिक देर में दिखा दिया। हम थोड़ा लिखा है। बहुत विस्तार है।

193. भगवान श्री राम जी और भगवान श्रीकृष्ण जी ने खेल दिखाया

अरसा 45-46 साल (सन 1930) का हुआ होगा। तब हमारे पास छोटे स्वरूप बाबा राम प्रसाद जी के पुजारी राम चरन दास, जिनको सब

करुणासिंधु कहते थे, कुछ रामायण का टीका भी किहे हैं, शायद सातौं काण्ड का या कुछ कम, हमें ठीक याद नहीं है।

जब हम यहाँ आए भंडारा हो गया तो गायत्री भवन के समीप राम लाल सरन जानकी घाट के रहते थे, कुरमी के बालक थे। वे मूर्ती छोटी राम जानकी जी की दिये थे, कहा, "इतनी ही बड़ी मूर्ती बाबा राम प्रसाद की थीं चारौं सरकार, चारौं महारानी जी की। वह साथ में लेकर चारौं धाम घूमे थे। उन्हीं के बराबर यह पुजारी की राम जानकी की हैं। नैपाल की बनी हैं सब सिंगार (श्रृंगार) बना है।" हमने लेकर महाराज जी को दिखाया। बहुत मैल चढ़ा था। महाराज जी ने कहा, "धीरे-धीरे कई दिन में साफ करो, तपाई नहीं जायँगी, यह प्रतिष्ठा की हुई हैं।" सात दिन लगे। पकी इमली से साफ किया। फिर कपड़ा पीत रंग का सिलाया। भगवान की सेवा पूजा करने लगे। कुछ दिन बाद लाला कन्हैया लाल अपने राधाकृष्ण की मूर्ती रख गया। उम्र 70 की होगी। हम उसको पधार कर सेवा पूजा करने लगे, एक एक बीता की थीं। पोशाकैं कई बनवाया। लाला को रोज भोजन देते थे। कई साल भगवान रहे।

एक दिन 3 बजा होगा। हम महाराज नहा कर बैठे। महाराज ध्यान में हो गए। बड़े महाराज आए। बहुत गोरे थे, लम्बे थे, शरीर चमकता था। मंदिर आप से आप खुल गया। राम जानकी तीन तीन वर्ष के हो गए, राधेश्याम 2-2 वर्ष के हो गए। जल ताजा भरा धरा था। सब सामान भोग की धरी थी, पूजन किया, धूप दीप किया। फिर मीठा का भोग लगाया आरती किया। फिर बाहर आकर बैठ गए। फिर मंझले महाराज आए। यह भी गोरे गोरे थे, ठमके डील के, दोहरी देह के। जैसे बड़े महाराज जी ने पूजन किया था उसी तरह करके बाहर आकर बैठ गए। फिर एक सन्त काले काले पंच केश राखे आए, अन्दर गए, पूजन करके धूप-दीप करके भोग लगाकर भगवान को जल दिखा कर गडुई से कुल्ला कराने लगे तो गडुई की धार जो कुल्ला का पात्र था, उसकी दाँती पर पड़ने लगी तो वह छीटें पोशाकों पर पड़ने लगीं। हमने रोक दिया। गडुई लेकर बताया कि "निगाह बीच पात्र पर रहे तब जल बीच में गिरता है। अभी तुम पूजा सेवा में कच्चे हो। उम्र तुम्हारी 40 की होगी। किस से पूजा-सेवा सिखा था? तुम्हारे न कंठी है, न तिलक है, सिर्फ कमर से

साफी बांधे हो।" तो कुछ न बोले। बड़े महाराज मंझले महाराज अन्तर हो गए थे।

हमने कहा, "देखो! अब मूर्ती कितनी-कितनी बड़ी हैं?" तो कहा, "छोटी-छोटी शायद 6-6 अंगुल की राम जानकी हैं, एक-एक बीता के राधेश्याम हैं।" हमने कहा "जब तुम मंदिर में गए थे तब कितनी-कितनी बड़ी थीं?" तो बताया "राम जानकी 3-3 साल के राधेश्याम 2-2 साल के।" हमने कहा, "ठीक है। बड़े महाराज के आते ही सब इतने इतने बड़े हो गए, मंझले महाराज के समय तक, और तुम को भी दर्शन हो गए। फिर जितने-जितने रहे हो गए।" तो कहा, "बड़े महाराज तो भरत जी का अंश थे, हम से काल भैरव जी ने बताया था। हम भैरों जी के भक्त हैं।" हमने कहा, "भैरों जी की बंदना हमैं मालूम है। किसी ने बताया है। हमें याद है। हम सुनाते हैं" कहा, "सुनाओ।"

दोहा:-ओँ श्री भैरव नमः काली तनय विशाल।
चक्र दंड तिरशूल कर राजत कलित कपाल ॥

चौबोला:-राजत कलित कपाल ब्याल यज्ञोपवीत गले धारत।
महाकाल विकराल भेष धरि दैत्य दलन संहारत ॥
नासत तम अज्ञान ज्ञान रूपी रवि किरण पसारत।
कोतवाल काशी कृपाल कुरु भक्त जनन प्रण तारत ॥

तब बहुत खुश हुए। हम से लिपट गए कहा, "हमैं याद हो गया। बहुत सुन्दर विनय है।" हमसे कहा, "और कुछ सुनाओ।" हमने कहा "हम दो किताब पढ़े हैं। हमारा प्रेम सब देवी देवताओं में है। सब भक्तौं के लिए भगवान ही सब रूप धारण किहे हैं। जिसका जिस से भाव हो उसी से गती हो जाती है। संसारी वस्तु की इच्छा हो तो देते हैं, न हो तो भगवान के पास भेज देते हैं।"

हमने कहा कि "अपना भाव विशाल बनाने से गती होती है। महाराज बड़े, मंझले और हमारे महाराज के द्वैत भाव न था, नहीं तो बड़े महाराज तुम को मंदिर में न जाने देते। भैरों जी, शंकर जी के कैलाश का काम काशी की कोतवाली करते हैं। शंकर जी को वेद ब्यास भगवान ने कहा, "वैष्णवानाम यथा शंभू।" जो विष्णु की माया से भिन्न हो वही वैष्णव है। हम तो विष्णु के पुत्र हैं, माया से परे नहीं हैं। शंकर जी सर्वदा सच्चिदानन्द हैं।"

फिर हम कहा, "महाराज जी कहते थे कि मूर्ती खाती-पीती, चलती-बोलती हैं। जिसका भाव है उससे।" हमने कहा, "अगर महाराज जी की बात सही होगी तो तुम अभी देख लो" कि सामने एक पत्थर मोटा सा लगा था। हम राम जी को कृष्ण भगवान को उठा कर पत्थर पर रख दिया। राम जी 3 साल के, कृष्ण भगवान 2 साल के हो गए।

रामजी ने कृष्ण भगवान से कहा, "नन्हू! तुम बैठ जाव, हम कुछ खेल इनको दिखा दें।" सामने देसी गुलाब सब खेत में फूला था, तो कृष्ण भगवान पहिले ही कूद कर फुलवारी में पहुंच कर दौड़-कूद-चक्कर काटने लगे। फिर रामजी पहुंचे। तब दोनों औतार खेत दो बिगहा का है, बहुत खेल किया। पीत झँगुली पहने थे। काँटा कपड़ों में एक न लगा। फिर आकर पत्थर पर खड़े हो गए। कुछ देर बाद दौड़ कर सिंहासन पर पहुँच कर मूर्ती हो गए।

हमने साधू से कहा, "मीरा से कौन लीला की है, नामदेव से, पीपा से, भानु, दास से, एकनाथ से, जगजीवन से, दादू से, कबीर से, नानक से, करमा से, मलूक से, बड़े महाराज से, तपसी जी से, चतुरभुजी से, सीता सरन से, राम प्रसाद जी से, मुरारी दास से, पलटू से, पं० वलीराम से, हम बहुत बता सकते हैं।" तो सन्त ने कहा, "तुम तो दोनों दीन के हितकारक हो गए।" हमने बहुत मुसलमानों के नाम बताये, नीच जाति जिनके लोटे में पानी नहीं पिया जाता है।

फिर वे दंडवति करके अन्तर हो गए। कहाँ तक लिखें। थोड़ा लिखा है।

194. धूरिया बाबा
जिला बहराइच

इन का शरीर कुर्मी घर का था। यह थोड़ी नीम की पत्ती और घीक्वार (गुवारपाठा) थोड़ा खाते थे। बहराइच से चार कोस पर एक ऋषिहा नदी है। ऋषियों के हाथ धोने से यह नदी यहाँ से निकली है। धूरिया बाबा शरीर में पिंडोर मिट्टी लगाते थे। इसी से लोग उनको धूरिया बाबा कहते थे। जूनागढ़ के शिष्य थे। गोरा शरीर ठमके बदन के, मत्थे पर जटा जूट था, काली अलफी पहनते थे और "गोविन्द गोविन्द"

जपते थे। जो कोई उनसे पूछता तो कहते कि हम जाति के कुर्मी हैं, हमें गुरु ने "गोविन्द गोविन्द" जपने को बताया है। "गोविन्द गोविन्द" जपने से उनके पट खुल गए थे। बहराइच के बलदेव पाण्डे वकील के दरवाज़े पर कटहल के पेड़ के नीचे शरीर छोड़े हैं, वहीं समाधि बनी है। मंदिर ऋषिहा नदी के किनारे बना दिया है। उनकी मूर्ति सीमेन्ट से बनवाई है, वहीं पर हवन कुंड, शंकर जी का शिवाला और कई जगह अच्छी अच्छी बनी हैं।

एक समय हम, भरत सिंह, रामकृष्ण सिंह कोतवाल और कोई दो आदमी थे, मोटर से गए। मोटर फ़ौजी थी जो बालू में चली गई। नदी में पानी गाँठ भर था। मोटर पानी पार कर गया था। जब वहाँ गए कुवाँ पर जल भर कर हाथ पाँव धोया, फल मिठाई थार में ठीक करके बैठे, राम मंत्र से भोग लगाया, जल दिखाया और कहा, "धूरिया बाबा! अवध से हम आए हैं कुछ सुनाओ। तब दो दोहा की आवाज़ आई:-

दोहा:- धूरिया कह गोविन्द भजो गोविन्द हैं सब ठौर।
अन्त काल पछिताओगे काल करे जब कौर ।।1।।
काल कलेवा ह्वै रहा यह असार संसार।
धुरिया कह गोविन्द भजो सुर मनि वेद पुकार ।।2।।

तब हमने भरत सिंह से कहा कि दोहा लिख लो। वे लिख लिए। फिर बहराइच के कई भक्त आए। दोहा सुन कर वे भी लिख ले गए।

195. भागलपुर की यात्रा

अरसा हो गया जब भागलपुर गए थे। बाबू प्राग नारायण, हम और गिरधारी थे। रघुबंश भूषण रुपकला के ले गए थे। वहाँ माड़वाड़ी धर्मशाला में 5 दिन का अखंड कीर्तन था। 14 मंडली बिहार की थीं। एक बृज की थी। हमारा शरीर ठीक न था। अन्न जल था जाना पड़ा। वहाँ जाकर धर्मशाला में ठहरे। रात दिन के कीर्तन में सब के कानों में शब्द मृदंग के भर गये। कोई दूसरी बात सुन नहीं पाता था। भोजन का बड़ा इन्तजाम था। सब सामान था। पूरी, खस्ता कचौड़ी, लड्डू, साग, चटनी सब खूब खाते थे। हम सामान ले गये थे-मूँग की दाल, हाथ का

पिसा आटा था। हमारा सब का भोजन अलग बनता था। सुबह हरे छीले चना एक सेर लेते थे। वहाँ सवा सेर मिलता था। वहाँ मन 50 सेर का माना जाता था। वह सवेरे जीरा घी से छौंक दिया जाता। काली मिर्च नमक छोड़ कर जल पान होता था। एक बार भोजन दाल, रोटी, तरोई का साग बनता था। सुबह नाव पर गंगा जी जाते, उस पर नहाते, नेम करते, फिर आते। शाम के समय फिर जाते, नहाते, और नेम करते। वहाँ गंगा किनारे मंदिर है। लंगूर बंदर बहुत हैं। एक दिन एक पिटारी में हम काफी पूरी ले गये। बन्दर न लिये तो प्रार्थना किया। तब उतरे तो एक एक पूरी हम अपने हाथ से निकाल कर दिया तब ले कर शिवालों पर चले गए। लोगौं ने कहा, "यह पत्ती जो खाने वाली है वह जानते हैं, वही खाते हैं। पियासे हों तो तुम्हारे घर पेड़ से उतर कर पानी पी लेते हैं। अन्न धरा हो, नहीं खायेंगे। गंगा जी जब दोनों समय जाते थे तो कटाव बन्द कर देती थीं। जब चल देते तो फिर काटने लगती थीं।

जो लाला कीर्तन कराए रहे वह 35 साल के करीब थे। आधा सेर गाय का कच्चा दूध 24 घंटे में पीते थे। रेल पर काम करते थे। राम राम करते थे। बड़ा बल था। ऐसा साधन किया था कि चार आदमी काम में हार जाते थे। हम से कहा, "महाराज, भगवान में प्रेम हो तो वै शक्ति दे देते हैं। भक्तौं की रक्षा के लिये जैसी जहाँ ज़रूरत है वैसा रूप बना लेते हैं। अगर ऐसा न करैं तो संसार का काम कैसे चलै। वै सर्व शक्तिमान हैं, उनके अनन्त रूप नाम धाम हैं, जो मानता है उसे कर्मानुसार देते हैं, जो नहीं मानता उसे भी देते हैं। संसार दो से बना है—आस्तिक और नास्तिक से। भजन करने वाले इन बातौं को अपने अन्दर नहीं जाने देते। तभी पार हो सकते हैं। यह ध्यान राखै सब में राम हैं, सब में राम हैं। बस चुप रहे।"

कीर्तन धर्मशाला में होता था। फिर 4 बजे फुलवारी में उपदेश होते थे। बाबू प्राग नारायण सभापति बनाये जाते थे। खूब उपदेश करते थे। सब जनता खुश रहती थी। वहाँ एक माड़वाड़ी कृष्ण भक्त था। 65 साल की उम्र थी। लड़के पोते थे। बहू औरत थी। उससे सब देवी देवता मिलते थे, बातचीत करते थे। बाकी 15 मंडली थीं। कोई ऐसे न थे। हम तो वहाँ लय दशा में हो जाते। जब चले आते। हमैं गिरधारी हिलाते, जान जाते कि मन बटुर गया है। वह भी चले आते। जब चित्त की बृत्ति उतरती तब हम आसन पर आते थे।

फिर वहाँ से बिदाई हुई। सब के आने जाने का खर्चा दिया गया। हम लोग नहीं लिये। तब हम जाना कि यह सब दोनों तरफ का खर्चा पाते हैं जिसकी जैसी हैसियत होती है। फिर एक लाला मास्टर जलालपुर के आए थे। पौहारी जी के शिष्य थे। वै अपने यहाँ मोटर से ले गये। 20 कोस होगा। वहाँ जान्हवी जी का आश्रम है। बड़ा भारी पहाड़ बीच में है। आस पास गंगा है, उस पर अजगैबी नाथ महादेव हैं और दो संतौं पर शंकर जी पधरे हैं। पहाड़ खोद कर बैठ गये। ऊपर से जोड़ कर शंकर जी पधारे गये हैं। बहुत बरसैं हो गई हैं जब भागीरथी जी गंगा लाए थे, तब महादेव जी के ऊपर फूस की मंडली छाई थी। वह बह चली तो रिषी ने देखा। नाखुन से जाँघ को फाड़ कर गंगा जल उसमें छोड़ा। बस गंगा वहीं रुक गईं। तब भागीरथ ने प्रार्थना किया, "महाराज, हम तप कर के संसार के कल्याण के लिए लाये हैं आपने जाँघ में रख लिया।" तो रिषी ने जाँघ से निकाल दिया। गंगा जी बह चलीं। बीच में पहाड़ है। चारौं तरफ़ गंगा है। नाव लगी रहती है माड़वारिन की। आने जाने वालों को कुछ नहीं पड़ता है। बंधान है सब के भोजन का। जिसका मन हो सामान ले कर बाहर बनावै, खाय।

वहाँ के साधू सब चर्स पीते, भांग ठंढाई गान बजान करते हैं। हमने वहाँ अजगैबी नाथ महादेव पर जल चढ़ाया और एक संत पर शंकरजी हैं उन पर चढ़ाया। एक पर शंकर जी हैं उस पर नहीं चढ़ाया। हम ने कहा, "यहाँ पर नहीं रहेंगे, दिन में दर्शन को आवेंगे। यहाँ के साधू यहाँ डोलडाल जाते हैं, वह सूख जाता है, जब पानी बरसता है तब सब गंगा में जाता है।" हम गिरधारी, रघुबंश भूषण चले आये। बाबू जी वहाँ रहे। वह नाव से दो बार डोल डाल बाहेर जाते, नहाते थे। वै साधू हमारे सारे बदन में दर्द पैदा कर दिये। सुबह से शाम तक दर्द बढ़ती गई। शाम को धीरे धीरे गंगा किनारे गए तब कुछ मालूम हुआ। फिर नाव पर वहाँ गये और कहा, "अब आप जितना चाहे दर्द पैदा करो। तुम्हारे मन में यह आ गया कि हमारे ऊपर जल नहीं चढ़ाया। मान अपमान अभी घुसा है। यही हठ योग के लक्षण हैं। जब समाधि उतरती है तब ऐसा विचार होता है।" तब दर्द बन्द हो गया।

हम ने लाला जी से कहा, "पहाड़ के नीचे तो ऐसा बना है कि तमाम फूल लगे हैं किसिम किसिम के। वहाँ पर मनुष्य सोने के रंग के

हैं। जप, पाठ, पूजन, कीर्तन होता है। तरह तरह के बाजा बजते हैं। लाला ने कहा, "एक मुसलमान बूढ़े फ़कीर सिर्फ़ लंगोटी लगाए, दुबले दुबले दाढ़ी केश हैं, हर शुक्रवार को आते हैं। जल में घुस जाते हैं और कई घंटे में निकलते हैं।" हमने पूछा तो जो आपने कहा है सब बताया। कहा "अगर तुम चलौ तो हम दिखावैं।" लाला ने उनसे कहा "हम नहीं जा सकते, अगर हम डूब जायँगे तो हमारे लड़के औरत भूखौं मर जायँगे। नौकरी करते हैं और कोई ज़रिया नहीं है।" लालाजी स्कूल के मास्टर रहे। 150 रु० पाते थे। तो हमने कहा "ठीक तुम ने कहा जो समझ में आया। हमारे साथ सब लोग हैं। अगर हम जाना चाहें तो यह लोग भी तैयार हो जायेंगे। अगर कोई खतरा हो जाय तो ठीक न बैठेगा। अगर अकेले होते तो हम ज़रूर जा कर देखते। फिर 3 दिन बाद वहाँ से चल दिये। अवध आ गये।

लाला बड़े प्रेमी थे। उनके यहाँ ठहरे थे। हम से बताया कि एक औरत आई थी। उम्र 40 की होती। वह ब्रह्मचारनी थी। शरीर गोरा लाल लाल था। भजन करती थी। उसका अनहद बाजा बहुत ज़ोर का बजता था जो सौ हाथ पर से सब लोग सुन लेते। ऐसे शरीर के पुर्जे़ मज़बूत थे। सिर्फ़ कच्चा गाय का दूध आधा सेर पीती थी। 12 की उम्र से साधन किया था। जाति ब्राह्मण की थी। शादी नहीं किया था। भगवान की लीला भगवान जानें। एक से एक भक्त नर नारी इस पृथ्वी पर पड़े हैं। बड़े भाग्य से दर्शन मिलते हैं।

फिर जलालपुर से चल कर आश्रम में आये।
नानक जी ने कहा है:

सन्त सरनि जे जन परैं ते जन उबरन हार।
सन्त की निन्दक नानका बहुरि बहुरि औतार ।।

196. जगदीशपुरी की यात्रा

जगदीशपुरी की यात्रा बहुत बड़ी है। थोड़ी लिखते हैं। हम, निगम, उनकी पत्नी, भंडारी ब्राह्मण पुरी में पहुँचे तो एक धर्मशाला में रुके। वहाँ एक दिन रहे। वह भगवान के यहाँ से एक फरलाँग था तो पंडा से कहा "दूसरा करीब हो तो बतावो।" वह ले गया। वहाँ एक दिन रहे। फिर भगवान के सामने एक बिगहा पर बागड़िया का धर्मशाला है। वहाँ बीच में शंकर जी का

मंदिर है और चौखुंटा कुआँ है। वहाँ बहुत ठीक है। दो मंजिल पर ठहरे। सुबह, फिर दो बजे, फिर शाम को दर्शन करने जाते थे। सोंटा भगवान की चौखट से टेक देते थे। भोजन धर्मशाला में जाता था। बैसाख का महीना था। एक आम देसी, मूंग की दालि अलोनी हमारे लिये आती थी। चावल बहुत बढ़िया और कई चीज़ें घी की बनी आती थीं। मतलब भर का लेकर और वापस कर देते थे। हम दालि में नमक मिला लेते थे। अलग से आता था। ऐसी भगवान की दया थी। मालूम होता था सब हमारे पुराने संगी हैं। सब कहीं दर्शन कर आये। सब के दर्शन दिब्य हुए। सब कहीं बड़ी उदारता से निगम ने सब का सत्कार किया।

जब गौरांग जी के मंदिर में गये तो जहाँ वह छै भुजा से विराजमान हैं तो लम्बी दंडवति करने का विचार किया तो बड़ा प्रकाश हुआ। मालूम हुआ कि सारा संसार प्रकाशमान है। फिर लय दशा हो गई। ज्ञान, ध्यान, भान, भूल गया। सीधा काठ ऐसा शरीर खड़ा रहा। तब भगवान ने अपना दाहिना चरण हमारी छाती पर लगाया। हम होश में आ गये। हमने चरण को माथे में लगा कर छोड़ दिया। वहाँ पर कबीर जी, मलूक साहेब, कर्मा माई, हरीदास, नित्यानन्द जी, रघुनाथ, अद्वैताचार्य और श्री बास के दर्शन हुए। सबने कहा, "महाराज! कृष्णावतार का यह सखा आप का सुखदेव है।" भगवान मुसकिरा दिये। हमारे आँसुओं की धारा चलने लगी। वै प्रेम के आँसू बर्फ जैसे ठंढे होते हैं। यह प्रेम की नदी से बहते हैं। दुख की नदी के आँसू गर्म होते हैं। दो नदी आँखों में हैं।

निगम जी व उनकी पत्नी ने पूजा चढ़ाया, चरनोदक परसाद लिया। वहाँ से चले। निगम ने कहा "महाराज जी, बड़ी देर हुई खड़े रहे। क्या बात हुई।" हमने कहा, "आप राधेश्याम के भक्त हैं, आपकी दया से जो हुआ सही हुआ, फिर बताऊँगा।" सात दिन रहे। चलते समय पुजारी जी ने भगवान के दाहिने हाथ का धागा तिरंगा हमारे दाहिने हाथ में बाँधा। हमने कहा, "हम यहाँ आए हैं कि संसार के बंधन से मुक्त हो जायं आप बाँधते हैं।" तो आवाज़ आई "यह धागा राम, श्याम, नारायण नाम का है। तुम तीनों शक्तिमान को सम मानते हो। इससे यह धागा बाँधा जाता है। अवध में राम जानकी मंदिर बहुत हैं, राधे श्याम के कम हैं, लक्ष्मीनारायण के सब से कम हैं।" फिर रात में धर्मशाला की चौक में भगवान का कीर्तन सुना। बड़ा आनन्द आया।

समुद्र के दर्शन हुए बृद्ध भगवान के रूप में, कहा "तुम तीनों मूर्ती सुस्त हो। गाँठ भर जल में खड़े होकर लहरें ले लो। जल बहुत खारी है।" वैसा ही किया। थोड़ा ऊपर छिड़क लिया, थोड़ा मूंह में डाला, बड़ा खारी था। फिर निगम से कहा, "हमैं जाना जरूरी है।" तो कहा, "हम थोड़े दिन रुक कर आवैंगे।" एक मील स्टेशन होगी। भंडारी साथ आया, टिकट कटा कर चला गया। थोड़ी देर में शंकर जी, हनुमान जी, गणेश जी, भैरव जी के दर्शन हुए। यहाँ आये।

अब जब जाने का समय करीब है तो यह लिखाया जाता है। पहिले कृष्ण भगवान ने बन्द कर दिया था। अब कहा, "कुछ भक्तौं के लिये लिख दिया जाय।" तो लिखना पड़ा नहीं तो हमैं लिखने की इच्छा न थी। भगवान ने कहा था, "हमारे अन्दर से जो नाम की धुनी होती है उस पर सुरति लगाये रहो।" लिखने से तो इतनी आवाज़ बढ़ गई है कि मालूम होता है कि सब लोकों से हा हा कार मचा है। अब जै दिन का हुक्म होगा वैसा करना पड़ेगा।

जगदीशपुरी से जब जनकपुर गये तो मंदिर में जानकी जी अकेली बैठी थीं तो हमने मन में कहा "महारानी जी! अकेली कैसे बैठी हैं?" हमें उदास मालूम हुआ। फिर देखा तो राम जी पास में बैठे देख पड़े। आवाज़ आई "राम जानकी, राधे श्याम, बिष्णु लक्ष्मी, गौरी शंकर पृथक नहीं रहते, साथ ही रहते हैं।"

197. काशी होकर जनकपुर की यात्रा

अरसा 35 साल का हुआ होगा। यहाँ से हम, गिरधारी, रघुबंश भूषण, बाबू प्रागनारायण, उनके छोटे भाई हरिनारायन संग चले। हमसे कहा कि हम दोनों भाई आज जाते हैं, आप कल आना, बनारस स्टेशन पर हमारा दामाद मोटर लेकर आ जायगा। वे चले गए। हम तीन जने रह गए।

दूसरे दिन सात बजे की गाड़ी से चले। 11 पर स्टेशन पहुँचे। उनका दामाद कृष्ण चन्द्र के यहाँ से होकर आया था। कृष्ण चन्द्र ने पूछा तो बता दिया। वै संग आए। कृष्ण चन्द्र ने अपने यहाँ उतार लिया। वै चले गए। सब इन्तज़ाम किया। दो भंडारी ब्राह्मण थे। सब सामान पक्की बनवाया। भोग लगा। सबने पाया। हम से कहा, "कल रात में हमने चारों भाइन का बिवाह देखा।" फिर एक माई बूढ़ी गोरी-गोरी प्रगट

हुई, सफ़ेद धोती पहने, एक सफ़ेद कुर्ता पहने। हमसे कहा, "कल इतने समय का ख्याल रखना।" हमने जब बाबू के दामाद आए तो पूछा, "कहाँ जाते हो?" तो बताया। हम साथ-साथ चले गए और सब को यहाँ उतार लिया। फागुन सुदी 14 को 11 बजे स्टेशन पहुँचे थे। वहाँ से मोटर से थोड़ी देर में कृष्णचन्द्र के बंगले पर पहुँचे। 2 बजे तक बैठक रही। फिर चरनोदक उतारा। हमने कहा, "यह काम सुबह का है।" तो कहा "हम नगद का काम रखते हैं। सुबह शरीर छूट जाय तो चरनोदक न मिलै। इस शरीर का कोई ठिकाना नहीं है।" फिर घर गए, सबको दिया।

सुबह हम ने कहा, "शंकर जी के दर्शन को जायँगे।" तो कहा, "आज होली है। कोई बचता नहीं है। मोटर गाँस लेते हैं।" हमने कहा, "जो कुछ शंकर जी चाहेंगे वही होगा।" हम गिरधारी, रघुबंश भूषण, ताँगा पर बैठे। एक पंडित मास्टर परिचय के थे। वै सायकिल पर साथ चले। 8 पर यहाँ से गये और 4 पर लौटे। रंग का बड़ा ज़ोर था। कोई बचता न था। हम सब उनके बीच में होकर सब दर्शन करके शंकर जी के अश्नान कुण्ड से लोटा-भर कर खूब पिया। एक लोटा वहाँ लाये। 4 बजे आय तो सब अफ़सर रंग से तर थे। हम से कहा, "कैसे बचे?" हमने कहा, "शंकर जी ने बचाया।" एक छींट भी किसी पर न पड़ी। तमाम आदमी झुंड के झुंड संग में बाजा बजाते, एक गुड़वा हाथ में लिये दूकान-दूकान घूमते। नाम दूकान वाले का लेते।

कृष्ण चन्द्र के यहाँ एक आदमी 4 माह से था। वह पैरों से चल नहीं। पाता था। बैठे-बैठे चलता था। हलवाई की दूकान पर गया। भूखा था। मिठाई माँगने लगा। हलवाई पैसा माँगने लगा। यह कचहरी जाते थे। देखा, मोटर से कोठी पर करके भोजन करा कर तब कचहरी गए। वह संस्कृत पढ़ा था। दूसरे देश का था। हिन्दी नहीं बोल पाता था। भगवान की लीला। उसे कौन गाड़ी पर चढ़ा देता था, कौन उतारता था। यह नहीं पूछा। कृष्णचन्द्र उसे डोलडाल कराते, सौंचाते, नहवाते। सिर्फ़ वह भोजन कर लेता था। बाकी सब काम कृष्णचन्द्र करते थे। हमसे कहा, "जो आनन्द मेहतर के पाखाना उठाने में है सो माला फेरने में नहीं है।" लड़का बहुत बीमार था। डॉक्टर वैद्य लगे थे। तीसरे दिन चलते समय अन्दर ले गये। हमसे कहा, "हमें विश्वास था कि मरेगा नहीं। इसी से आपसे नहीं बताया।" ऐसे भाव के जीव हैं।

फिर काशी से बिदा होकर चले। मुजफ़्फ़रपुर आये। नदी के करीब एक रामजी का मंदिर है वहाँ रुके। दूसरे दिन चल दिये। सीतामढ़ी गए। वहाँ 2 दिन रहे। दर्शन किया। एक आश्रम सिद्ध बाबा का है, वहाँ गए। फिर चल दिये। मधुबनी में रघुवंश भूषण के साढ़ू, डिपुटी बड़े स्कूलों के, द्वारिका प्रसाद थे। वहाँ तीन दिन रहे। वहाँ से चले। जै नगर तक रेल थी। फिर बैलगाड़ी पर हम, गिरधारी, रघुवंश भूषण, द्वारिका बाबू, प्राग नारायण, हरि नारायण, बाबू के छोटे भाई, ललई बाबा सन्यासी जो उन्नाव नहर पर रहते थे, जनकपुर आए। तब स्टेशन बन गई थी, रेल नहीं चली थी। जैपुर धर्मशाला में 7 दिन रहे। वहाँ से सब जगह दर्शन को गए। दो दिन बिहार कुण्ड पर गए। देर तक ठहरे।

एक दिन वहाँ इकादशी थी। फलाहार बनाया। सब ने पाया। धर्मशाला के पास दो सरोबर बड़े-बड़े हैं। हम हाथ पाँव शुद्ध करते थे। एक लंगड़ी माई छड़ी टेकती हुई आई एक टुकड़ा पुरानी दरी का कमर में लपेटे, एक चिट बंधी थी गाँठ के इधर तक, एक टुकड़ा ओढ़े थी। सरोबर में हल गई, नहाया, ऊपर का धोकर कमर में लपेटा, नीचे का धोकर ऊपर डाल लिया। हमने उसके शरीर के तीन रंग देखा। पहले काला, फिर लाल, फिर सफ़ेद। हम समझ गए कि कोई सिद्ध है। फिर हम धर्मशाला में दौड़ कर गए और खद्दर की नई दुसूती लाए। ओढ़ा नहीं था। उसे ओढ़ा दिया। हमारी तरफ़ देख कर हँसी। फिर खड़नजा पर ध्यान में बैठ गई।

हम अपने आसन पर गए, नेम करने लगे। फिर भोजन बना, भोग लगाया सब भक्तों ने भोजन किया, फिर सब ने आराम किया। 3 बजे से दर्शन को गए। वहाँ सरोबर बहुत हैं। रतन सागर पर जो साधू रहते हैं एक मिथिला के परमहंस कहे जाते थे। साँवले रंग दोहरी देह के। उनको हम जानते थे, आया करते थे। उम्र 60 की थी। एक 40 की उम्र के गोरे-गोरे थे। वै कम बोलते थे। नासिका के अग्रभाग का ध्यान करते थे, शाँति मूर्ति थे।

फिर बहुत साधू रतन सागर और जहाँ तहाँ के नई रंगी साफी, नये रंगे जनेऊ, कंठी हाथ की बनाई, सब में सीता राम पटरिन में लिखा लायें। हमने कहा, "हम क्या करैं? हमारे पास 2 अचला, 2 साफी, 4 लंगोटी हैं। क्या हमारी महतारी हम को यहाँ नचावैंगी रंगे कपड़ा पहना कर। वहाँ सब रंगे कपड़े पहनते हैं और महारानी जी को बहिन मानते हैं।" तो सब हँसने लगे। हमने कहा, "आप सब हमारे मामा और नाना हैं। आपको ऐसा न करना चाहिए।

फिर माई रात में 2 बजे प्रगट हुईं। सब लोग सो रहे थे। दो पद बताया—एक महारानी जी बिहार सर में नाव पर 10 हजार सखी जो संग अवतरित हुई थीं ब्राह्मण-क्षत्री-वैश्य के घर में उनके साथ जल बिहार करती थीं। एक हनुमान जी का पद भी बहुत ऊँचा है। फिर अन्तरध्यान हो गईं। सुबह हमने उसे लिखा।

फिर वहाँ से बस से चले। सड़क ठीक न थी। लोग घूस देकर मुजफ़्फ़रपुर तक पहुंचाते थे। उस सड़क में शायद पंडित जी की कुटी एक कोस थी। सब उतर कर गए। पंडित वहाँ सवारी लाये थे। गोरख प्रसाद एक भक्त थे। पंडित की कुटी से शायद एक मील पर गाड़ी से पहुंचा गए। कुटी पर 3 दिन रहे। फिर गोरखप्रसाद के यहाँ 3 दिन रहे। बड़ी खातिर हुई। जिस जगह में हम रहे उसका वरनन किया जो देखा था। गोरख प्रसाद ने कहा, "हमारे भाई इसी जगह रहे कहीं नहीं गये। इसी जगह शंकर जी का पूजन, जप, पाठ करते। सिर्फ भोजन कपड़े से काम था। यहीं शरीर छूटा।" वह जगह कैलाश कैसी दृष्टि मालूम होती थी। गोरख प्रसाद के यहाँ इतना पानी बरसा कि बैल गाड़ी पर भक्त लोग बैठे और वै तीन आदमी एक मील तक कमर भर, गाँठ भर पानी में पैदल आए चल कर सड़क पर। जब बस आ गई तो सब को बैठा कर जब सब चार फरलाँग निकल गए तब बैल गाड़ी पर बैठ कर घर गए।

गोरख प्रसाद के दो लड़के थे। बड़े लड़के के एक लड़का था तीन साल का। छोटा पंडित की कुटी पर स्कूल है वहां पढ़ता था। घर भर एक रस भक्त थे। वहाँ दही जमाया, चूरा-चीनी केला और अगर आम की फसल हो तो कल्मी आम मिलाते हैं। पहले गर्म दूध में भिजा कर चूरा, फिर दही-आम-केला-चीनी मिला कर खाते हैं। हम तो चूरा पानी से धोकर, गाय का दही नमक मिला कर खाते थे और सब वही खाते थे। आठ दिन खाने से सब शरीर मोटा हो जाता है। आम-केला-चीनी-भैंस का दूध-दही सब बादी होते हैं।

वहाँ का चावल मशहूर है। पुराना चावल छोटा-छोटा पंडित बनाते थे। वह बड़ा बड़ा हो जाता था सूत के डोरे के समान। जहाँ मूँह में धरौ, मूँह डोलावो बस मक्खन-सा गले में चट से उतर जाय। दाल केसारी की होती है बड़ी बादी।

फिर मुजफ़्फ़रपुर की गाड़ी पर शाम को सवार हुए। 8 बजे सुबह लकड़मंडी आ गए। बहुत बातें छोड़ दिया। वहाँ कन्द-मूल बहुत होते हैं। एक गोल मीठा, एक लम्बा फीका, सोथनी मखाना, कोका बेली अनार जो तालों में होता है उनकी गुजरी पक जाती है वह हजारौं मन होता है—काले काले दाने जैसे सरसों। फलाहार बनता है। लावा भूनने पर सफेद होते हैं, हलवाई लोग बनाते हैं, पान ऐसे बनाते हैं, बेचते हैं। साधू लपसी बनाते हैं, पूरी बनाते हैं। पकौड़ी-रोटी दस्त बाँध देते हैं। हमने खा कर देखा है।

[श्री मंजारी माई (लंगड़ी), जनकपुर, के दोनों पद कथा 155 में लिखे हैं।]

198. एक निरछल जीव विश्वासी (अपढ़)

जगन्नाथ दास जी बताते थे कि उसने किसी साधू से मंत्र लिया तो कहा, "हमको भजन करना बताओ।" गुरु ने कहा, "भजन की बिधि एकान्त में बताई जाती है। तब तक जो बताया गया है उसे जपो" थोड़े दिन जपा।

फिर एक दिन गुरु को देखा कि कमंडल लिये डोलडाल को जा रहे थे। लंगोटी खोल कर बैठने के लिए झुके तो दौड़ कर पहुंचा, कहा, "महाराज! यहाँ कोई नहीं है, एकान्त है। आप ने कहा था कि एकान्त में बतावैंगे"। तो गुरु बोले, "दुबरचोद!" "वक्त बेवक्त नहीं समझता है।" तो उसने इसी बात को अपने मन में पकड़ लिया। मन ही मन जपने लगा और गुरु भाइन से कहा, "हम चारौं धाम करने जा रहे हैं। लौट कर जब आवैंगे तो गुरु महाराज और आप सब के दर्शन करैंगे।" तब तक गुरु आ गए, अश्नान किये, लंगोटी बदली। तब गुरु की दंडवति किया और कहा, "तीर्थ यात्रा से लौटेंगे तब आपके दर्शन करेंगे।" गुरु ने कहा, "जाओ।" बस चल दिया।

जाने आने में अरसा लग गया। अपना मंत्र जपता रहा। उसके पट खुल गए। शब्द शब्द में राम रमे हैं, मन लग जाय तो अनुभव होने लगे। जब गुरु

की कुटिया चार कोस रह गयी तो एक गाँव से होकर निकला। एक राजा का लड़का जवान मरा था। सब रो रहे थे। उसने पूछा, "क्या बात है?" तो लोगों ने बताया। साधू ने मन मे कहा, "देखें हमारा मंत्र सिद्ध हो गया या नहीं।" उसने लड़के के सिर में पैर धीरे से लगाया और कहा, "दुबरचोद।" लड़का उठ बैठा। साधू खुश हो कर चल दिया। मन ही मन कहता था "हमारे गुरु का बताया मंत्र थोड़े ही दिन में सिद्ध हो गया।"

राजा के चार सिपाही साधू के साथ चले। कुटी पर आए। बाबा ने पूछा "क्या बात है?" तो सिपाही लोग कहने लगे कि 'यह राजा के लड़के को जिला आये हैं।' राजा ने कहा है—"जो गुरु कहैं—ज़मीन, मकान, रुपया, कपड़ा हम देंगे। जितना खर्च लगैगा हम बंधान करा देंगे।"

तब गुरु के चेला उन पर बिगड़े। हम सब बहुत दिन से रहते हैं हमैं कुछ न बताया। इसको साले को, थोड़े दिन का चेला, उसे आपने ऐसा मंत्र बताया जो राजा सब कुछ देने को तैयार है। गुरु ने कहा, "सब के सामने बता दे जो हमने तुझे बताया है।" उसने सब बता दिया तब सब चुप हो गये। फिर बाबा ने चारों सिपाहिन को भोजन करा कर भेजा और कहा, "हमारा काम आकाशबृत्ति से चलता है। जब तक हम हैं धन, जमीन, मकान में अगर मन मरती समय लग जाय तो हम यहीं रह जाँयेंगे।" फिर सिपाही गए। राजा से हाल बताया। राजा दर्शन को आए। तब राजा से साधू ने कहा, "हम इस बंधन में नहीं पड़ना चाहते हैं। एक साधू सुआ (तोता) पाले था मरते (समय) में मन सुआ में लग गया तो सुआ हो गया। एक हिरन पाले थे तो हिरन हुए। एक गाय पाले थे तो उसके बछड़ा हो गए।" तब राजा समझ गए। बाबा ने राजा को जलपान कराया। फिर राजा दंडवति करके चले गए। जहाँ आशा तहाँ बासा।

यह चरचा विश्वास पर रथ यात्रा में जगदीशपुरी में एक साधू से जगन्नाथ दास से हुई। साधू के 10 चेला थे। सब पढ़े थे। वह चेला अपढ़ सीधा था, निरछल था, तब उसके पट खुल गये। बाबा ने सब से पूछा, "तुम लोग इस शब्द को जपो तुम्हारे पट खुल जायँ तो सबों ने कहा, 'यह कोई मंत्र नहीं है। हम नहीं जप सकते। हमें इसमें विश्वास नहीं है,' तो बाबा ने कहा, "एक विश्वास कच्चा होता है एक पक्का। उसका पक्का है। तुम्हारा सब का कच्चा है। तो कैसे हो?" तब सब ने कहा, "आपकी बात सत्य है।"

199. राम नाम की महिमा का प्रतक्ष प्रमाण

राम नाम की महिमा अपार है, अगम है, अलेख है अकथ है।

हमारे पड़ोस परिवार के एक चाचा नन्द किशोर एक सन्यासी से मंत्र लिये थे। मांस मछली खाते थे। दवा करते थे। 77 की उम्र में बीमार हुए तब हम 12 साल के थे। हमारी छत से छत मिली थी। हम उनके घर गये तो चारों तरफ़ घर के लोग खड़े थे। उनकी आँखों से आँसू चलते थे। हमने पूछा "क्या है?" तो कहा "बड़े बड़े भयानक रूप घेरे अस्त्र लिये खड़े हैं।" तो हमने कहा "रामायण लाओ।" जुगुल काका का लड़का रामायण लाया। हमने कहा "सुनावो", वह सुनाने लगा। हमने सबसे कहा, "श्री राम जै राम जै जै राम करौ।" सब लोग औरत मर्द करने लगे। कुछ देर बार हमने पूछा "अब क्या हाल है?" तो कहा "अब कोई नहीं देख पड़ता है।" हमने पाठ करने वाले से कहा "तुम सुनाते रहौ।" और सबसे कहा "सब लोग जो कर रहे हो करते रहो" एक घंटे तक सब होता रहा। बस हमने आँख पोंछ कर गंगा जल सालिकराम जी का चरनोदक दिया और गंगाजल शरीर पर छिड़का। बस शरीर छोड़ दिया।

200. बूढ़ी माता
राम बाग, कानपुर

शुरू-शुरू में जब हमैं कानपुर जाना पड़ा तो भक्त लोगों ने आपस में सलाह किया कहाँ ठहराये जायं? यह बात बूढ़ी माता के घर में हुई, वै बोलीं "हमारे घर में ठहरेंगे।" सब ने कहा, "तुम से कौन परिचय है?" तो कहा, "देख लेना।"

जब हम गये, शायद 9 बजे राति को घर पहुँचे, भीड़ हो गई, डाक्टर ने कहा था खड़ी न होना तो खड़ी रही, आरती हुई, परसाद बटा, 2 बजे सब लोग गये। तब वै कोई तेल लाईं और हमारे सर पर लगाने लगी, अपनी जाँघ पर हमारा सर रख लिया, तब कृष्णा 6 या 7 साल की थी, तो उनके अस्थनौं से दूध की धारैं चलकर हमारे मुँह पर आ गईं, मुंह तर हो गया। हमने कहा, "क्या बात है? तो कहा, "तुम हमारे

तीसरे जन्म के पुत्र हो। फतेहपुर शहर में मकान था, आगे बरामदा था, हम पलका पर लेटी थीं, पूरब मुँह, तुम हमारे पैते पच्छिम मुंह खड़े थे, तब तुम्हारी अवस्था 16 की थी, हमैं यादि है, तुम को देखते-देखते हमारा शरीर छूटा था। अब हमारी इच्छा है हम अपने हाँथ तुमको भोजन बनाकर खवावैं।" तब हम एक ब्राह्मण विजपुरी का था, कामता सिंह के यहाँ का बूढ़ा था, उससे कहा तुम अपने हांथ बना लो।

फिर अपने हांथ भोजन बनाने लगी और खिलाने लगी, अपने हाथ से जल पिलाने लगी, मुँह धोकर पोंछ देती थी। शाम को 10 पर जब सब शयन करते, तब हमारे पास ही रहती, फिर 4 बजे उठती, पाखाने जाती, अस्नान करती, भगवान के पारखत धोती, पूजा हम करते। फिर फल या मीठा अच्छा भोग लगाते, आरती करते, घड़ी बजाई जाती, हमें कुछ परसाद खवा कर सब को बाँटती। दोपहर में भोजन-दाल, भात, रोटी, साग बनाती, हम भोग लगाते। फिर कई भक्त आते, ब्राह्मण, लाला, बनियाँ, ठाकुर, सब परसाद लेते। फिर शाम को अधिकतर मुनक्का का भोग लगाते थे। सवा तीन सेर 1 रु० का काला काला मिलता था। 10 रु० का लेकर धर देते थे। जप वाले पंडित को आधा आधा सेर बीज निकाल कर देते थे तो पंडित कहते, बड़े मीठे हैं, खाये नहीं जाते हैं।"

यहाँ से राम, लक्ष्मण, जानकी जी की बड़ी-बड़ी मूरती ले गये थे। एक शंकर जी ढाई सेर के बड़े विशाल, एक सिंहासन गिलट का, उसमें सालिकराम, नरवदेश्वर, गोमतीचक्र था। पूजा के सब बरतन ले गये थे। वहाँ ताँबे के दो घड़ा भगवान के लिये लिया था। भगवान के सिंहासन सागौन का 4 चौकी, 2 तखत, 4 आसन तखत ऐसे चौड़े उनमें गोड़ लगवाया था, साधू आवै उन पर आसन लगावैं। भगवान के सैन की चौकी उसमें डंडे लगे थे, गद्दा, तकिया, मसहरी, भगवान की पोशाकैं, मुकुट, कुंडल, फूल, बत्ती, यहाँ से बनवा ले जाते थे।

यहाँ दो साधू – एक जन्म स्थान का, एक सीताकुण्ड का, एक एक हजार रोज बनाते थे, 3 हजार फूल बत्ती ले जाते थे। मंजन भगवान का एक सेर सिंदूर, गोपी चंदन सम भाग मिला कर और सबके लिये कम से कम 12 सेर मंजन टिन के डिब्बे में, कई ताँबे की जीभी, चंदन, मूठा, धूप, इतर, गाय का घी घर से मंगाते थे। सब सामान डेवढ़ा रहता था जिसमें कम न परै। फगुई, दिवारी, रामनौमी, जन्म अष्टमी, शिवरात्रि यानी जितनी समैया है, कायदे से होती थीं।

पहिले बीमार हुईं तो लखनऊ में अस्पताल में रहीं, वहाँ इनके पिता सब खर्चा करते थे। साढ़े तीन सौ सुई लगी, सब खून काला पड़ गया, देही भर में जलन हो गई, सर दर्द, आँखों से कम देख पड़ता था, तब कानपुर आई हमसे हाल बताया। हम भेड़ का घी मंगा कर 101 पानी में धोया, हाँथ पैरों में मला दो माह कुछ न हुआ। त्रिफला गाय के घी सहेद से खवाया दो माह, कुछ न हुआ। तो ध्यान में देखा सब खून काला हो गया। तब रोटी गली में एक मुसलमान हकीम है गरीबों को मुफ्त दवा देता है और फस्थ खोलता है। उसके पास गये, हाल बताया, साथ लाये। हमने कहा, "बायें हाथ की नस में लगाने से सारे बदन का खून निकल जाता है।" उसने लगाया तो काला खून बहुत निकला। हमसे कहा, "तीन हिस्सा खून काला हो गया, एक हिस्सा शरीर में ठीक रह गया। हमने इतना खून किसी के न निकाला था। आपने कैसे जाना?" हमने सब हाल बताया।

जब जिन्दा खून निकला, तब रोक कर पट्टी बाँध दिया। बेहोश हो गई, तब सहेद का शरबत बनाकर नाक दाबा, मुंह खुल गया। करीब आधा सेर शरबत पिलाया, तब ठीक हुई, ऊपर छत पर उठा ले गये, पलंग पर लिटा दिया, कहा, "पेशाब लागे तो हमैं आवाज देना, अगर तुम उठोगी तो पट्टी हट जायेगी, ताजा खून चलने लगेगा।

हम भोजन करके उठे। वे पेशाब को उठीं, आवाज न दिया, पट्टी हट गई खून चलने लगा। जब तक हम पहुंचे 1 पाव खून निकल गया था। हमने कहा, "हमैं आवाज देना था" तो कहा, "गलती हो गई।" फिर हम पट्टी बांधा। हकीम ने कहा था, "इनको 2 माह हलुआ गाय के घी का, हाथ का पिसा आँटा गेहूँ का, मुनक्का पीस कर, सीड़ा बना कर खिलाना, नमक न देना। 1 माह खिलाया। तब गुरु प्रसाद अविनाश ने दालि भात रोटी खिला दिया। हमने कहा, "हकीम ने कहा था दो माह यही खिलाना, नमक न देना।" फिर हम सर दर्द की गोली खिला कर नहास देते तो कफ निकलती छीकैं आती तो कफ को अंगुली से अंगूठा से खींच लें तो वह रस्सी की तरह लम्बी-लम्बी निकलती। 21 दिन गोली सुबह सुबह दिया, नहस दिया, सुबह हलुआ दिया तब दर्द सर की गई। 10 सेर गाय का घी घर से मंगाते थे और दो अंधी माई थी उनसे आँटा पिसाते, उनकी मजूरी देते थे। तब शरीर ठीक हुआ।

फिर जब दूसरा गर्भ रहा तो लेडी डाक्टर उन्नाव की, ने कहा, "हम बच्चा जिन्दा पैदा करके दिखावेंगी।" हम साल में यहाँ तीन बार आते, 4 दिन रह कर फिर लौट जाते। जब गये तो देखा पैंते पलंग के पांवों के नीचे ईंटा धरे हैं, सर की तरफ नीचा है। पूंछा, तो कहा, "लेडी डाक्टर ने ऐसा बताया है। गर्भाशय खून फेंकता है।" हमने कहा, "यह भगवान की लीला भगवान जाने, जो लेडी ने कहा है वैसा करौ। जब कुछ दिन पैदा होने के बाकी रह गये, तब उन्नाव अस्पताल गईं। कुछ दिन बाद लेडी ने कहा, "बच्चा पेट में मर गया, अब हम कुछ नहीं कर सकती।" तब बूढ़ी माता ने मगन को बुलाया, कहा, "जाव, महाराज जी को लाव, उनके सामने शरीर छूटै और हमैं कोई चिन्ता नहीं है।" मगन आये हाल बताया, हम चल दिये, कुछ दूर गये होंगे लड़का मरा पैदा हो गया, बहुत खराबी बदबूदार निकली, सब सफाई की गई। हम पहुँचे तो चादरा ओढ़े उतान परी थी।, हम पेट पर हाँथ धरा तो मुँह फैला दिया, पेट फूला था, कहा, "बेटा! बड़ी दर्द है।" हमारे आँसू आ गये।

बूढ़ी माता के पिता थे, हमने कहा, "हम इन्हें कानपुर ले जायेंगे।" तो कहा, "हम अपने लड़के रामेश्वर चन्द्र को बुला लें, वह भी डाक्टर है, सलाह हो जाय तब बतावैं।" 8 दिन हम रात भर कुर्सी पर बैठे रहते थे, तब बनवारी लाल (बूढ़ी माता के पिता) ने हम से कहा, "हम पैसा खर्च कर सकते हैं, इतना कष्ट नहीं कर सकते हैं, यानी रात भर कुर्सी पर बैठ नहीं सकते हैं।" हमने कहा, "इनका संयम यहाँ हमारे मन का नहीं होता है, दिन पर दिन कमजोरी बढ़ रही है।" तब पत्र गया डाक्टर आए लेडी और डाक्टर ने सलाह की। फिर हम से कहा, "आप ले जायँ। तब हम पहिले जहाँ अवध बिहारी थे, हातिम टोला मकान में ले गये, दो दिन रहे, फिर लारी मंगाया उस पर चारपाई छोड़ कर बिछौना डाल कर लिटा कर ले गये। रामबाग मकान में राखा। गाय के घी की पूड़ी देशी आलू करायल दार अपने हाथ से मसल कर खवाने लगे, पानी पिलाते, 15 दिन बादि दिवाल के सहारे से कुरसी पर बैठने लगीं। फिर हम उसी तरह खवाते रहे। 1 माह बाद आँगन में कुरसी पर बैठने लगीं, फिर भोजन अपने हाथ से करने लगी।

लट्ठा कोठी गंगा किनारे थी, स्कूल था। लड़की पढ़ती थी। अध्यापिका व राम जानकी वहाँ से रोज शाम को आती थी। सब जूठे

बरतन मलती, चौका लगाती, नहाती, राति भर रहती, सुबह जाती थी। जब दो माह हो गये हम बूढ़ी माता के लच्छादि सारे बदन में लगाते थे, लंगोटी पहना कर तो पेट के दोनों तरफ के नला बहुत मोटे थे। उनमें हवा भर गई थी। हमने अध्यापिका से कहा, "तुम यह नला इस तरह तेल लगा कर टारो आधा घंटा रोज बाकी तेल हम लगा लेंगे।" दो माह नला टारे गये तब पच गये।

फिर बूढ़ी माता भोजन बनाने लगी। हम से कहा, "बेटा! तुम छोटे होते तो हम तुम को अपनी इच्छा भर खूब दूध पिलाती और दुलार करतीं जैसे छोटे पर छाती पर लिटाती थी और मुंह में लाई चना की गोली बनाकर जीभ पर दिखाती थीं तो तुम मुंह से लेकर खा जाते थे।" हमने कहा, "अगर तुम्हारा सच्चा भाव होगा तो भगवान पूरा करैंगे आज तुम अपने कमरा में अकेले जा कर लेटो तो सायद भगवान तुम्हारी इच्छा पूरन करै। हमारे साथ न लेटौ। हम में इतनी सक्ति नहीं है।"

10 बजा था, सब लोग हमारे पास से चले गये, फिर जाकर लेटीं। भगवान 12 बजे रात्रि 6 माह का रूप धारन कर के उनके पास पहुंच गये। जाड़े का महीना था, रजाई ओढ़े थीं। रजाई के अंदर जा कर अस्थन पर हाथ का इशारा करने लगे। कुछ नींद में थीं जग गईं तो मुंह खोला। रोशनी थी। जान गई, हम ही पर विश्वास था। वही है। खूब दूध पिलाया, दुलराया, छाती पर लेटाया, बैठ कर मुंह चूमा, दोनौं हाथों से ऊपर को उलारा, भगवान हंसने लगे, फिर भगवान को छाती पर लिटाया तो भगवान नीचे ऊपर के ओंठ पीने लगे। फिर दोनों कानों की लौर पीने लगे, फिर मुंह पर मुंह धरे और जीभ निकाली, जीभ से गाल चाटने लगे, तो कहा, "हमें हँसी आ गई। हम हँसने लगीं। तो अपनी जीभ हमारे मुँह में छोड़ दिया। हँसी बंद हो गई, फिर हमारे मुँह जीभ सुतह बाहर निकल आई, उसे पीने लगे, फिर जीभ पीना बंद कर दिया। 2 घंटा रहे, हमने खूब दुलार किया। फिर अंतर हुये। शरीर महकता था। वह महक हमारे कपड़ौं में और सरीर में भर गई।" 4 बजे सुबह हमारे पास आई, यह हाल बताया और कहा, "हमैं यही बार-बार मन में आता है, तुम्हीं ने यह खेल किया है।" हमने बाँह पकड़ा पैर छुये और कहा, "हम नहीं थे, तुमारा भाव सच्चा था, भगवान ने इच्छा पूरी कर दी, भगवान भाव के भूंखे हैं।" यह सुन कर हमैं छाती से लगाया। फिर डोल डाल असनान कर के अपना नेम किया।

फिर यह बात किसी से कहा। वह बात प्रताप सिंह से किसी ने कहा। प्रताप सिंह बाबू पराग नरायन से कहा। बाबू ने पं० रामकिशोर को यहाँ (अयोध्या जी) लिखा।

वै रोज भोजन को आते थे। हम से पूंछा। हमने सब ठीक ठीक बताया। जब बूढ़ी माता यहाँ आती थी, जै दिन मन होता, रहती थी। तो पं. राम किशोर ने उनसे पूछा। वै भी ठीक ठीक बता दिया तो कहा, "तुम तो तप धन खूब जमा कर लिया, अब इसे किसी से न कहना, बिना भगवान की आज्ञा के। बिना अपनी कमाई के वहाँ कोई नहीं पहुंचता है। तुम तो बड़े ऊँचे संस्कार की हो, हम तो घर छोड़कर यहाँ आये हैं। इतना नहीं कमाया जितना तुम घर रहते हुये अपना ठीक ठेकाना कर लिया है। यह सब बातैं भगवान के यहाँ लिखी जाती हैं।"

जहाँ सिया राम का भाई और उसकी औरत रहती है उस कमरे में आकर रहती थीं। एक दिन हम से कहा "हमैं भी ध्यान बताओ।" संग बैठीं उसी कमरे में। हम 11 पर शयन करते थे, 2 पर उठते, 1 घंटा में किरिया कर्म हो जाता था, 3 बजे से जब तक सूर्य न निकले बैठते थे, संग बैठ गई तो ध्यान हो गया–राम जानकी, राधे श्याम, विष्णु कमला, शंकर पारवती, ब्रह्मा शारदा, गणेश, सरस्वती, हनुमानजी, षट मुख, काली, दुर्गा, भैरव और बहुत देवी देवताओं के दर्शन हुये। फिर प्रकाश हुआ, लय दसा हो गई। ज्ञान-ध्यान-भान-सब की सुद्धि-बुद्धि भूल गई। जब सुरति उतरी, शरीर में चेतना हुई और बल आ गया तो नाम की धुनी खुल गई रं रं रं रं रं रं होने लगी। जब हमारा सब काम हो गया तो हमैं छाती से लगाया आँसू चलने लगे। हमने आँसू पोंछा, तब कहा, "यह शरीर तो अनमोल है, इसमें सब देवी देवता भरे हैं। बेटा! तुम न मिलते तो हमारी न जाने कौन गती होती?" हमने कहा, "भगवान सब समय पर पुराना सुकृत भिड़ा देते हैं।"

फिर हम से कहा, "हमारा शरीर तुम्हारे रहते हुये छूट जाय तो ठीक है।" हमने कहा, "भगवान भक्त की इच्छा पूरी करते हैं।" लखनऊ आईं डाक्टर अपने भाई के सरकारी बंगला में रहीं। पत्र हमको लिखा–कोई ऐसी दवा बनाना जो दो माह तक खराब न हो, हम जल्दी ही तुमारे पास आवैंगी। कुछ दिन वहाँ रहीं। एक दिन 11 बजे रात तक

सब से बातचीत करती रहीं। फिर शायद राति 1 या 2 बजे तीन बार सीता राम सीता राम सीता राम कहा और शरीर छोड़ दिया, पत्र आया। फिर जो सामान हम उनके लिये पहिले ही खरीद कर धरा था, बड़ी-बड़ी थाली, बड़े-बड़े लोटा, मजबूत आसनी, चट्टी, कपड़ा सब उनके, काम में दिये गये। उनके न रहने पर सब को दुख भया। उनमें बड़ी सहन शक्ति और दया थी।

एक बार विष्णु चन्द्र की पतनी का एक पैर सूज गया, मुड़ता न था, अरसा हो गया, हमसे कहा, "चलौ देख आवो क्या बात है दवा फायदा नहीं करती है।" हम बूढ़ी माता गुरु प्रसाद गये, उनका हाल देखा, पैर सीधा था, तकलीफ थी तो बनवारी लाल ने हमसे कहा, "तुम हमारी बहू का पैर अच्छा कर दो तो 1 हजार रुपया हम देंगे।" हमने कहा "हम रुपया नहीं लेते हैं। अच्छा भगवान करैंगे।" फिर हम उनके पैर के तरवा में अपना सर रगड़ा तो हँसने लगी, कई लोग बैठे थे। हमने कहा, "देखो! हँस रही हैं अब धीरे-धीरे ठीक हो जायेंगी।" फिर भगवान की दया से धीरे-धीरे ठीक होकर चलने लगीं। रामचन्द्र कई बार बीमार पड़े। बूढ़ी माता ने हमसे कहा, "दद्दा को बड़ी तकलीफ है, देखा नहीं जाता।" हमने दान जप कराया, फिर ठीक हुये। बहुत घटना है कहाँ तक लिखें।

अब जब से भगौती ने रोक दिया है, सर, धड़ राम सिंह, महाबीर प्रसाद को माना था तब से, कहा, "दान जप करा दिया करौ, यथा शक्ति धर्म जो तन मन से करैगा उसका भला होगा और जिसका भाव तुम में होगा उसका काम भगवान पूरा करेंगे। तुमको यही करने का अब अधिकार दिया गया है। शरीर हमारा हो गया।"

बूढ़ी माता का हम चौथाई लिखाया है। बहुत विस्तार है।

यह इस जन्म में गुरु प्रसाद सुपुत्र सोहन लाल वकील उन्नाव की स्त्री थीं। राम बाग, कानपुर में रहती थीं। फिर एक घर कौशलपुरी कानपुर में बनाया था। इनके एक लड़की थी, कृष्णा, जो डा० जगदीश को बियाही गई है।

201. श्री जग जीवन साहेब

दोहा:- जग जीवन जग आय के, जग जीवन ले जान।
जग जीवन बिन तन बृथा, सुर मुनि कीन बखान।।
जग जीवन श्री राम हैं, जग जीवन श्री श्याम।
जग जीवन श्री बिष्णु हैं, बार बार परनाम।।

जगजीवन साहेब ने कहा है, "हमारा तो नाम पिता ने जगजीवन धरा था। जगजीवन राम हैं। जगजीवन श्याम, जगजीवन बिष्णु जी हैं जिनकी सृष्ठि बनाई है, तीनों शक्तिमान एक ही हैं। सारे बिश्व के जीवन मात्र की जान हैं।"

पद:- धन सम्पति पाकर के यँह पर कबहूँ जग में भरमैय्यो नहीं ।।1।।
सब ही में सियाबर व्यापक हैं काहू को भूलि सतैय्यो नहीं ।।2।।
जग जीवन चारि दिना जग में कबहूँ रघुबीर भुलैय्यो नहीं ।।3।।
नेकी न बनै यदि या तन से तो बदी की गाँठि बँधैय्यो नहीं ।।4।।

202. श्री गाजी मियाँ

बनारस

पद:- [1]

दीनता शान्ति की नकलैं बड़ी अच्छी जगह रखना ।।1।।
सदा सतगुरु के चरनों में दोऊ कर जोरि के परना ।।2।।
छिमा संतोष औ श्रद्धा धर्म दाया सदा करना ।।3।।
प्रेम औ भाव विश्वास सत्य औ शील में ठरना ।।4।।
यही नकलों के अधिकारी होय कबहूँ नहीं सरना ।।5।।
इसी से होयगी डिगरी नहीं बिगड़ी रही सुधरी,
यह बात ख्याल कर लीजै जियति में होयगा तरना ।।6।।
मान लो यह विनय मेरी चोर अब नहिं सकैं हेरी,
देव मुनि सब मिलैं घेरी कहैं जियतै भया मरना ।।7।।
न कोई बात है कर्री न इसमें है कोई मुर्री,
मान जो निज को लेय धुर्री वही जियते भया सरना ।।8।।

मिलै साकेत में बासा अजर औ अमर तन खासा,
न कोई इच्छा न कोई आशा मौन हरि रूप रंग वरना ।।9।।
कहैं गाजी मियाँ गाजी न माने सो रहै राजी,
काल की जाय ह्वै भाजी अन्त भव जाल में गरना ।।10।।

[2]

पद:- नाम की फूल रही फुलवारी ।।1।।
सतगुरु करि भेद जानि लो है तिरगुन से न्यारी ।।2।।
उस गुलशन में फूल अतौल हैं पावत दीन भिखारी ।।3।।
ध्यान ज्ञान विज्ञान के गुल हैं तेज समाधि सुखारी ।।4।।
रूप के फूल अमोल हैं भक्तौं सीता राम निहारी ।।5।।
छवि सिंगार छटा की शोभा है मुद मंगल कारी ।।6।।
को बरनै देखत बनि आवै फण पति शारद हारी ।।7।।
जियतै फूल लेहु करि करतल दोनों दिसि बलिहारी ।।8।।
निज कुल में मति दाग लगावो मिलै न ऐसी बारी ।।9।।
यह नर देह सुरन को दुर्लभ गाजी कहत पुकारी ।।10।।

[3]

पद:- रूप कि छबि लखि नैन सुफल हों,
नाम कि धुनि सुनि श्रवन सुखारी ।।1।।
सतगुरु करि जप की बिधि जानौ
जियते जीत जाव भव पारी ।।2।।
सारे चोर किनारे होवैं,
हर दम भक्तौं आनन्द भारी ।।3।।
सुर मुनि नित हरि चरित सुनावैं
संघै कर गहि लें बैठारी ।।4।।
झारैं अंग दिव्य बसनन ते, बिहँसि बिहँसि बोलैं बलिहारी ।।5।।
भाँति भाँति के फूल चढ़ावैं, लेंय उठाय उछँग उलारी ।।6।।
उर लगाय मुख को सब चूमैं, जय जयकार करैं दे तारी ।।7।।
गाजी कहैं भयो मुद मंगल, तन छूटै साकेत सिधारी ।।8।।

[4]

पद:- किया सुमिरन नहिं हरि का भया रद्दी तेरा खाता ।।1।।
बिना सतगुरु से बिधि जाने वहाँ कोई पहुँच नहिं पाता ।।2।।
जगत ठगने ठगाने हित पढ़ा कण्ठस्थ करि गाता ।।3।।
सुना तूने नहीं कबहूँ ये प्रभु को है नहीं भाता ।।4।।
ज्ञान यह है आडम्बर का इससे प्रभु से नहीं नाता ।।5।।
कमाई हाय यह कीन्हे पाप का सर धरा छाता ।।6।।
मिला अनमोल नर तन क्या गर्भ की बात बिसराता ।।7।।
अन्त तन छोड़ि ले जमपुर जहाँ तेरा कोई न नाता ।।8।।
हर समय दूत वहँ कूटैं कष्ट से तन रहै माता ।।9।।
जवानी के नशे में तू बचन अच्छे से रिसिआता ।।10।।
वहाँ पर कछु नहीं और हाय रे हाय चिल्लाता ।।11।।
मूत्र मल का मिलै खाना पचै नहिं उलटि गिर जाता ।।12।।
कहैं गाजी मियाँ चेतो समय जाकर नहीं आता ।।13।।
हमैं तो दु:ख यही भारी भेष बदनाम करवाता ।।14।।

नोट:- मूल "भक्त भगवन्त चरितावली एवं चरितामृत" जो परमपूज्य श्री परमहंस राम मंगल दास जी ने 1976 में छपवाई थी, उसमें यही नं० 202 तक कथाएँ व पद थे। गुरुदेव राम मंगल दास जी ने अपने प्रारम्भ के 'दो शब्द' जो उन्होंने 1976 में लिखे थे उसमें लिखा था, "...भगौती का हुक्म है तो धीरे धीरे अभी तक 300 से ऊपर कथाएँ लिखी हैं। पहिले इनमें से 200 छपैंगी, फिर भगवान की जैसी इच्छा होगी...।"
अब 2007 में भगवान की इच्छा से व गुरुदेव की कृपा से बाकी सब कथाएँ व पद इसके आगे नं० 203 से सम्मिलित होकर छप रहे हैं।)

203. भैरव गिरि औघड़ से बड़े महाराज की भेंट

भैरव गिरि त्रेता युग के औघड़ हैं। गिरिनार पर्वत में उनकी गुफ़ा है। भीतर बहुत दूर तक है। जब वे निकलते हैं तब जो साधू या आदमी देख लेता है वह डर के मारे वहीं खड़ा रहता है। अगर मौज हुई तो खाकर थूँक मार दिया वह फिर जीवित हो गया। एक बार महाराज जी डोलडाल (शौच क्रिया) से आ रहे थे तो वे गुफ़ा से निकले तो दंडवति किया। महाराज जी बिना शुद्ध हुए बोलते न थे। महाराज जी ने मत्था झुका दिया और जब आसन पर आये तो नहा कर हाल कहा तो साधुवों ने कहा, "आप महात्मा हैं।" उनको देख कर कोई भाग नहीं सकता सब डर जाते हैं। उनका एक पाँव हाथी का है एक आदमी जैसा है। बड़ी बड़ी लाल लाल आँखें हैं। वे त्रेतायुग के औघड़ हैं। प्रयाग में जब कुंभ या अर्द्ध कुम्भी होती है तब एक माह वहाँ रहते हैं। जो मैदान दोनों तरफ़ है जहाँ मेला पड़ता है वहाँ उनकी थोड़ी जगह बालू में है। वहाँ जो कोई आसन लगावै तो नीचे ऊपर मैला (टट्टी) प्रगट कर देते हैं। महाराज जी कहते थे कि कुम्भ में 5 लाख आदमी था। एक माई प्रहलाद दास मंदिर (रामघाट) में बहुत दिन से रहती थी। उसकी उम्र 70 की थी। उसी मंदिर में महाराज रहते थे। 10 मूर्ति (व्यक्ति) और रहती थीं। वह भी कुंभ में गई थी। जानती नहीं थी। शाम के समय उसी जगह कथरी बिछाया और एक कथरी ओढ़ कर पड़ गई। औघर बाबा कहीं टहलने गये थे। आये तो नीचे ऊपर तमाम मैला प्रगट कर दिया। बहुत गन्धाता था। वह स्त्री बहुत तंग आ गई। मैला से गरुवा (सन) गई तो रोने लगी अब कैसे क्या करूंगी। महाराज जी के पास खबर गई। महाराज ने कहा, "आसन खींचि कर अलग कर ले।" बड़ी मुश्किल से आसन हटाया गया। आसन हटाते ही मैला गायब हो गया।

भैरव गिरि औघड़ महाराज के दर्शन को आये। भेष दूसरा था। बहुत दुबले थे। हड्डी हड्डी शरीर में थीं। एक लंगोटी पहने थे। एक झोरी छोटी सी थी। उसमें एक काठ का टुकड़ा और एक गंड़ासा था। श्री महाराज जी ध्यान में बैठे थे। 3 बजे रात का समय था। महीना बरसात का था। जहाँ भगवान पधारे हैं भगवान की दाहिनी तरफ़ महाराज

जी थे बांई तरफ़ हम थे। किवार बन्द थे। वे प्रगट हो गये। महाराज की दंडवति करके हमारे पास सामने बैठ गये। कुछ देर बाद खड़े होकर लंगोटी खोल कर हमारे ऊपर मूतने लगे। हम आंखें बन्द करके बैठे रहे। फिर अन्तरध्यान हो गये। फिर आये। वह मूत सब गायब हो गया। फिर हमारे ऊपर इतना डोलडाल (टट्टी) किया कि सारा शरीर भर गया। हमने कहा "हम घिनाते नहीं हैं। सब साफ कर लेंगे।" फिर अन्तर ध्यान हो गये। फिर आये तो हमारे मूंह पर और सारे बदन पर अपना मूंह लगा कर चाट दिया। हम कुछ न बोले। फिर अन्तर ध्यान हो गये। फिर आये। हमसे कहा "भूख लगी है" तो हमने दोनों पैर उनके सामने उठा दिया। वे झोरी से काठ और गंड़ासा निकाल कर पैर काट कर चबा गये। हम कुछ नहीं बोले, कुछ तकलीफ नहीं हुई, खून नहीं आया। पैर फिर देखा जैसे के तैसे हो गये। फिर गायब हो गये। फिर आये तो सात महीन चावल दिये, कहा कि बाँध लो, कल रात भर कैलाश की लीला देखोगे। हमने कहा "महाराज जी ध्यान में हैं आप रुकैं।" तो कहा, "नहीं, वे खुद जान जायेंगे। कोई ध्यान में हो उस से बोलना महापाप है। उसका आनन्द चला जाता है तो उसे दुख होता है।" फिर महाराज जी की दंडवति करके अन्तरध्यान हो गये। दूसरे दिन, शयन 11 पर करते और 2 बजे उठते। शयन जैसे ही किया बस कैलाश की लीला शुरू हो गई। शिवजी के गणन का नाच गान जै जै कार। 4 बजे रात को बन्द हुआ। वह चावल गाँठ लगी रही गायब हो गये। दिन में महाराज जी से कहा तो बोले भैरव गिरि थे।

महाराज जी को पहले भी मिले थे। यह बात जब एक साल शरीर छोड़ने को रह गया था तब का हाल है। भगवान की चारों तरफ़ परिक्रमा करते थे। डोलडाल यहीं काठ में ईंटा बनवाकर दो लोहे की टेबल तस्तरी रख कर कराते थे। फिर चक्र धोते थे।

204. जब दयानन्द जी आए

पूरब से एक ब्राह्मण आये। सरजू बाग की ज़मीन खरीदी। बहुत धनी थे। दयानन्द जी के परिचय के थे। तो कहा, "यहाँ कृष्ण भगवान का मंदिर बनवाऊँगा। दयानन्द ने कहा, "मंदिर बनवा दो और एक पाठशाला बन जाय। अवध में कोई पाठशाला नहीं है। तब मंदिर बना।

सिर्फ़ भगवान पधरे हैं, राधा जी नहीं हैं। दयानन्द ने कहा, "खाली भगवान पधरा दो।" फिर पाठशाला बन कर ठीक हो गया। बड़े महाराज जी रहे। तो दयानन्द दर्शन को गये और 100 कदम पर दूर खड़े रहे देर तक। फिर हाथ जोड़ कर लौट पड़े। बहुत भक्त लोग कहने लगे, "आप समीप नहीं गये और कुछ सत्संग की बात नहीं पूछी" तो कहा, "हमें भासता रहा कि वह ब्रह्म को देख रहे हैं।" महाराज जी के सामने राम जानकी की झांकी हर समय रहती थी।

शंकर जी हनुमान जी की दया से सब हो गया था, सिर्फ़ मंत्र बलदेव दास जी से लिये थे। यहाँ बरेहटा है वहाँ के थे। साधू हो गये थे। बड़े महाराज जी के शिष्य थे, कृष्ण भगवान के भक्त थे। वे एक लंगोटी रखते थे। छोरते नहीं थे। जब सड़ जाती थी तब दूसरी लेते थे और ओढ़ना बिछौना कुछ नहीं। सौ बर्ष के ऊपर शरीर छोड़ा था। हमारे महाराज जी ने देखा था। वे रास्ते में मिल गये थे। वे पढ़े नहीं थे। पहले जन्म के पढ़े कवि थे। उनसे बात हुई। वे भगवान राम जानकी, राधा कृष्ण, बिष्णु लक्ष्मी का जस कविता में सुनाने लगे। धारा प्रवाह बन्द नहीं होवे। दो घंटे दयानन्द जी उनके सामने हाथ जोड़े खड़े रहे। कहा कि आप की रसना (जीभ) पर सरस्वती विराजमान हैं। हमारी ताकत नहीं कि कुछ कहैं। अब आप कृपा करके हमें जाने की आज्ञा दें। तब दिगविजई शान्त हो गये। दयानन्द हाथ जोड़ कर सरजू बाग की ओर चल दिये।

श्री दयानन्द जी के पद

[1]

है सर्व व्यापक अनन्त ईश्वर विचार देखो विचार देखो ।।1।।
समाये उसमें हैं सब चराचर विचार देखो विचार देखो ।।2।।
निशा अर्द्ध रात्रि की सनसनाहट जब किसी की मिले न आहट ।।3।।
प्रवीन कर लो व दृष्ट गोचर विचार देखो विचार देखो ।।4।।

[2]

धर्म की डूबती नैय्या को तराने वाले ।।1।।
दु:ख के सागर से हमें पार लगाने वाले ।।2।।

रूप रस गन्ध विकारों से हो बाहेर स्वामी ।।3।।
नाड़ी नस आदि के बंधन में न आने वाले ।।4।।
तेरी भक्ती की लगन जिसको लगी है ईश्वर ।।5।।
उसकी आनन्द और हिम्मत को बढ़ाने वाले ।।6।।
शरनागति छोड़ि तेरी और कहाँ मैं जाऊँ ।।7।।
सर्व आधार हौ गिरतौं को उठाने वाले ।।8।।

205. माया की चाल

दि. 11-9-1972

रामायणी रामजी दास को सम्बोधन करके (परमहंस राम मंगल दास जी ने) यह उपदेश लिखा। "माया त्रिभुवन पति की छाया है। राम नाम में अपार शक्ति है। शान्ति की तलवार व दीनता की ढाल से वह चुप होती है। अपने पांचों पुरुषों को भी चुप कर देती है। उस रीति से चलना सीखना चाहिए। मन जीव का वज़ीर है। जीव बादशाह है। वज़ीर को उसने सब सौंप दिया। उस से कभी हिसाब नहीं लिया। वह सब दखल बैठा लिया। माया और पांचौं चोरों का संगी बन गया। जीव को डांटता है। अकेला जीव कुछ नहीं कर पाता। अगर राम नाम में जुटि जाय तो मन को नाम खींचि कर जीव का संगी बना दे तो काम पूरा हो जाय। देखो अभी माया माता ने लिखाया है और निद्रा देबी ने लिखाया है तो कैसे पार हो सकोगे। मानुष तन, समय, स्वाँसा नित प्रलय में बीता जा रहा है। अब चेत कर भजन में लगाओ और सुखी हो जाओ।

।। श्री माया देवी ।।

दोहा:- हरि से करते प्रीति नहिं, झूठे बनते सन्त।
पाठ करैं माला जपैं, मन घूमत है अन्त ।।1।।
या से कछु नहिं ह्वै सकै, जब तक मन थिर नाहिं।
तन मन प्रेम लगै जबै, सन्मुख हरि दर्शाहिं ।।2।।
जाप औ पाठ का फल तुरत मिलै करौ यह काम।
सब में व्यापक कहत सब सुर मुनि राम का नाम ।।3।।

चौपाई:– सुनौ नाम धुनि हर दम भाई। निरखौ सन्मुख सिय रघुराई ।।
ध्यान में पहुंचि जब प्यारे। देखौ लीला अजब बहारे ।।
लय में सुधि बुधि कछु नहिं रहई। कौन बताय सकै का रहई ।।
हम सब हरि सुमिरन को जानी। हरि जो कार्य दियो
सो ठानी ।।1।।
हम को या में दोष न कोई। जो जस करै तैस फल होई ।।
बिना परीक्षा जाय न पैहौ। जो डरि जाव तो गोता खैहौ ।।

दोहा:– इधर उधर ते जात हैं अब हीं चेतत नाहि।
बे समुझन के कहै परि अन्त में नरकै जाहिं ।।1।।
चले रहे हरि भजन को ओढ़ि लीन परपंच।
नैना चारौं बन्द भे किमि सूझे सत पंच ।।2।।
भीतर में कछु और था ऊपर था कछु और।
काम सिद्ध वह होयगो जा पर हर दम गौर ।।3।।
हरि को जो सुमिरन करैं, तिन चरनन बलिहार।
त्रिभुवन पति की छांह मैं माया नाम हमार ।।4।।

।। श्री निद्रा देवी जी ।।

चौपाई:– हरि सुमिरन में जे मन लावैं। तिनहिं निरखि हम शीश नवावैं।
ना सोवैं न सोवन देवैं। हमहूँ को कायल करि देवैं।।
दहिनी बाईं करवट लेते। नैन मूंदि मोहिं धोका देते।
होंय उतान कबहूँ हरषाई। ध्यान करैं तन मन को लाई ।।1।।
देखैं हरि के चरित मनोहर। पढ़ा सुना जो नहीं कहीं पर ।।
अकथ अलेख कौन लिख पावै। सुन मुनि कोई पार न पावै ।।
लय में पहुँचि जाँय फिर मानो। नहिं जंह रूप नाम जप ध्यानो ।।
निर्गुण में निर्गुण ह्वै जावैं। सुधि बुधि रहै न क्या बतलावैं ।।2।।
भक्तन की यह निद्रा भाई। जा मैं परम शक्ति सब गाई ।।
उतरैं सुनैं नाम धुनि प्यारी। हर दम निरखैं अवध बिहारी ।।
उनको हम केहि भांति सोवावैं। हर दम हरि संग वै दुलरावैं ।।

दोहा:– देंय हाजिरी आय हम वै हमरे वश नाहिं।
निद्रा देवी नाम मम सांचि कही तुम पाहिं।

206. अभी हाल के एक भक्त का बैकुण्ठबास

फैजाबाद में खजाने के बाबू का स्वर्गबास 10-9-72 को हो गया। उनकी बिधवा स्त्री व लड़की आईं दिन में साढ़े बारह पर। श्री गुरुदेव (परमहंस राम मंगल दास जी) ने निम्न बातें उन्हें लिख कर दीं:–

आया है सो जायगा राजा रंक फ़कीर ।
कोई सिंहासन चढ़ि गये कोई बांधे जात जंजीर ।

वे अपना काम करके भगवान के धाम को गए। घर में रहते हुए खूब भजन किया। पुराना भोग भोग कर छुट्टी पा गये। उनका अनुभव हम जानते हैं। हम से सब बताते थे। हम से कहा, "महाराज जी! किसी से कुछ कहना नहीं। बेकार आकर हमारा समय खराब करेंगे। हम आप से कुछ नहीं छिपाते। जो देखते सुनते हैं कह देते हैं। अगर कोई गलती होगी तो आप बता देंगे। वह बड़े सच्चे जीव थे। हम से कहा, "अगर हम आप से कोई बात संसारी या ईश्वरी छिपावेंगे तो हमारा कल्याण न होगा यह हमारा अनुभव हो गया है। शंकर भगवान ने हमसे कहा कि तुमको भगवान अपनी शरण में लगा लेंगे। हम सब के कहने से दवा करने जा रहे हैं नहीं तो लोग कहैंगे कि दवा नहीं की। घर में इसी से नहीं कहा कि लोग रोने पीटने लगेंगे।" उनकी लड़की पहले ही हमसे कह चुकी थी कि यह अब नहीं रहेंगे। वह बड़ी अच्छी जीव है। बहुत अनुभव होता है।

भक्त का नाम था चन्द्रशेषर पांडे, गाँव भोला पांडे का पूरा, पोस्ट गोकुला, जिला फ़ैजाबाद।

207. काफ़िर लुटेरे के संबंध में

दि. 18-8-73

इनके दर्शन शायद 3 बजा हो, हुए। गोरे गोरे थे। उमर 40 की मालूम होती थी। यह धनी थे। लूट मार का काम करते थे। एक फ़क़ीर मियां चिश्ती से भेंट हो गई। उन्होंने कहा, "यह क्या करता है? तेरे साथ क्या जाएगा। नेकी का दरजा नेक होता है, बदी का खराब। तू तो ज़िन्दगी में ही दोज़ख (नर्क) जाने का रास्ता तै कर लिया है, मरने पर पता चलेगा।" तब हम पैरों पर गिरे और हमने कहा "हमें आप दोज़ख से

बचा दें। अब कभी ऐसा न करेंगे।" तब फ़क़ीर ने कहा "जितना पैसा तेरे पास है सब गरीबों को ख़ैरात कर दे।" हमने ख़ैरात करना शुरू कर दिया। कुछ न राखा। तब हमारे दिल में रहेम आ गया। मांग कर थोड़ा खा लेते और मन ही मन मालिक का नाम लेते। कज़ा होने पर बिहिश्त पहुँच गये। फिर हमारा नाम क़ाफ़िर शाह फ़क़ीर ने धरा।

शेरः– अगर पैसा खुदा देवै गरीबों की मदद करना।
कहैं क़ाफ़िर सुनो यारों अन्त चलि बिहिश्त में रहना ।।

208. चीरावतार

एक बार गंगा-स्नान का पर्व था। द्रौपदी स्नान को गईं थीं। और दुर्वासा जी भी गये थे, वह स्नान करके गंगा में ही लंगोटी धो कर गार कर पहिनना चाहते थे कि वह हांथ से छूट कर बह गई। उसी जगह द्रौपदी जी भी थीं। फौरन अपनी साड़ी चीर कर लंगोटी के लिये दे दिया। तब दुर्वासा जी प्रसन्न होकर कहे "जैसे तुम ने हमारी लाज बचायी है वैसे भगवान तुम्हारी लाज बचावैंगे।" वही जब भगवान कृष्ण भोजन कर रहे थे तो उदास देखकर रुक्मिणी जी पंखा करते हुए पूंछा "आप क्यों उदास हैं?" तो भगवान ने कहा "द्रौपदी पर मुसीबत आने वाली है।" वह अपने हांथों से साड़ी पकड़े थी बस हाथ ही उठाने वाली थी कि भगवान ने चीर में प्रकट होकर लाज बचाई। भगवान ने कहा जब द्रौपदी हांथ उठा देंगी तब उनके पट बन जायंगे। तब 10 हजार हांथी के बल का दुशासन खींचा तो भगवान सारी में प्रकट हो गये। आसमान तक सारी ही सारी हो गई तो भीष्म पितामह ने कहा ''देखो अन्धे पीछे पहाड़ लगा है, द्रौपदी इतने वस्त्र पहिने रहीं'' तो जब देखा तब कांपने लगा और थक गया। भुजा फूल गया। औ कहा "अब तुम्हारा नाश होना चाहता है।''

द्रौपदी की सारी में भगवान समा गये।

कवित्तः– सुन्दर सफ़ेद सब्ज़ बैंजनी हरेरी पेरी,
ढेरी बहुतेरी, नहिं गिनबै में अवै हैं ।।
लाल गुलाबांसी गुलेनारी औ गुलाबी,
पट साल सै काही औ बादामी दरसाये हैं ।।

खाकी मुल्तानी औ पियाजी जाफरानी बहु,
धानी आसमानी आसमान लगि छाये हैं ।।
द्रौपदी के काज बृजराज ह्वै बजाज
मानो लादि के जहाज पट द्वारिका से लाए हैं ।।

209. श्री बहौरी भुजुवा, मैगल गंज
"चिड़ियों का भंडारा"

चार पेड़ लगाये जाते हैं। पीपल, बरगद, पाकड़ि और गूलर। चिड़ियाँ खाँय करैं खुब हुल्लर। कोई भी पेड़ इनमें से लगवा दे तो प्रथम बैकुण्ठ में जाय।

दोहाः– शान्ति दीनता धैर्य धरि, सुमिरौ नाम अमोल।
कहै बहौरी विजय की बाजैं दोउ दिशि ढोल ।।1।।

पदः– सतगुरु से जप की बिधि गहुरे ।।1।।
जो अपने कल्याण को चहुरे ।।2।।
राम नाम को प्रेम से कहुरे ।।3।।
तब समझौ मेरे दिन बहुरे ।।4।।
सब के कटु बचनन को सहुरे ।।5।।
तब काहे फिरि गर्भ में ढहुरे ।।6।।

बहौरी भुजुवे से पूछा कि "भोजन क्या करते थे? कितने दिन हुए शरीर छोड़े?" तो कहा "शरीर छोड़े पांच सौ वर्ष हुए। भूँजा अन्न जैसे गेहूँ-चना-जौ-मूँग-मकाई सफ़ेद ज्वारि-बाजरा-मोथी-इसमें से कोई एक अन्न जो भूँजने को आता था उसकी भुँजाई में लेते थे। एक छटाँक खा कर जल पी लेते एक टेम 12 बजे दिन में। गाँव में जो साधू आते थे उन्होंने मुझसे कहा 'तुम भी राम राम किया करौ।' मैं राम राम करने लगा।"

210. श्री ओरी भर्र (जीवन मुक्त भक्त)

पदः– चौरासी का चक्कर छूटा राम नाम को जपली ।।1।।
सतगुरु ने रहिया बतलायो तन मन प्रेम से लगली ।।2।।
नाम कि धुनि परकाश दशा लय बिधि की लेख को मसली ।।3।।

अनहद सुनौ देव मुनि भेटैं दिब्य खिलावैं क्वसली ।।4।।
नागिन चक्र कमल सब जागैं अमी गगन में चखली ।।5।।
सिया राम प्रिय श्याम रमा हरि शिव गिरिजा संग लखली ।।6।।
हर दम सन्मुख नेक टरैं नहिं निरखि निरखि मैं हंसली ।।7।।
बारह बर्ष क अजर अमर तन क्षुधा पियास न लगली ।।8।।

दोहा:– जाड़ घाम व्यापै नहीं ऐसे इष्ट महान।
ओरी पर दाया करी अष्ट रूप सुख खानि।

चौपाई:– जाति क भर्र औ कू पशु राखा।
वाको मास बहुत दिन चाखा ।।1।।
ऐसे नीच अधम अपनाए।
पकड़ि पकड़ि चट हृदय लगाए ।।2।।

सोरठा:– सुमिरै इष्ट का नाम शाँत दीन बनि जग रहै।
ओरी कह नर बाम जो चाहै सोई लहै ।।
ज़िला बनारस गांव का नाम हम भूल गए, अपढ़ हैं।

211. मियाँ सच्चे शाह जी (अपढ़)
कुतुब नगर, सीता पुर

शेर:- खोदा से प्रेम है जिसका वही सच्चा खोदा का है।
उसी की दोनों दिसि जै जै वही सच्चा खोदा का है ।।1।।

212. मियाँ मुनीर काश्मीरी

पद:– मन को हमारे हर लिया राधे के पिया ।।1।।
जब से सूरत नैनन देखा तड़फत है रे जिया ।। राधे के० ।।2।।
मुरली की धुनि कानन व्यापी ऐसा गजब किया ।। राधे के० ।।3।।
बिरहा की आगी तन में लागी छिन पल कल न हिया ।।
राधे के० ।।4।।
अन्तरजामी जानि गये हरि प्रगट के दरश दिया ।। राधे के० ।।5।।
उर लगाय दोऊ अधरन चूमा सुर मुनि जै जै किया ।।
राधे के० ।।6।।

कहत मुनीर त्यागि तन पहुँचे पास में बास दिया ।।
राधे के० ।।7।।
ऐसे दीन दयाल न जाना बिरथा जन्म लिया ।। राधे के० ।।8।।

शेर:– कहता मुनीर भक्तौं हर जाँ में श्यामा श्याम हैं।
मन को करौ तो काबू सन्मुख में शोभा धाम हैं ।।

213. बदला चुकाना पड़ता है

श्री महाराज जी ने बताया कि राम जी ने त्रेतायुग में बाण से बालि को मारा। वह द्वापर में भील भया। कृष्ण भगवान को एक बाण से मारा। जब पास गया तो भगवान ने कहा "यह बदला है। हम ने तुम को एक बाण से मारा था रामाअवतार में।" बस शरीर छोड़ दिया।

भीष्म जी 101 जन्म में एक सांप को लाठी से मारा। वह अधमरा हो गया। उसे उठा कर बबूल के कांटों पर फेंक दिया। उसके काँटे शरीर में बेधि गये। वह 52 दिन में फटकि फटकि के मरा। वही सज़ा भीष्म जी को मिली कुरुक्षेत्र रणभूमि में। बाँणों से बेधे पड़े रहे। 52 दिन बाद शरीर छूटा।

राजा चित्रकेतु के भंडार में एक कंडे में चार सौ चींटी के अंडे जले। वही चार सौ रानी हुईं। राजा को ब्याही गईं। राजा बीमार भये। तो सब ने मिल कर राजा को ज़हर दे कर मारा।"

यह कर्म भूमि है। जो बोवोगे वह पावोगे।

214. श्री बिहारी अहीर
महोली, सीतापुर

पद:– राम शरनि है भारी भक्तौं राम शरनि है भारी ।।1।।
सतगुरु से जप भेद जानि कै जुटि जावो नर नारी ।।2।।
माया चोर शान्त ह्वै जावैं फेरि करैं नहिं वारी ।।3।।
आँखी कान खुलैं जियतै में नाम की धुनि हो जारी ।।4।।
सियाराम की झाँकी सन्मुख हर दम सकौ निहारी ।।5।।
सुर मुनि आवैं हिये लगावैं बोलैं जै जैकारी ।।6।।
सिया राधिका कमला नित प्रति देवैं खाँड़ स्वहारी ।।7।।
मंदाकिनी क नीर पिलावैं हेम कि भरि के झारी ।।8।।

पाय के जब तुम कुल्ला करिहौ मुख पोछैं निज सारी ।।9।।
यह सुख मुख से वरनि सकौ नहिं नैनन आँसू जारी ।।10।।
नाना बिधि की लीला देखो कहता अहिर बिहारी ।।11।।
अन्त त्यागि तन चढ़ि सिंहासन निज पुर जाव सिधारी ।।12।।

215. ठाकुर सुजान सिंह (शंकर जी के भक्त)
गाँव सातौं धर्मपुर, जिला फतेहपुर

पदः– भजिये शिवाशंभु सुखदाई ।।1।।
सतगुरु से जप भेद जानि कर तन मन प्रेम लगाई ।।2।।
हर दम झाँकी सन्मुख राजै शोभा वरनि न जाई ।।3।।
मेटैं कठिन कुअँक भाल के सुर मुनि सही बताई ।।4।।
अजर अमर हैं मुक्ति भक्ति दें कँह लगि करौं बड़ाई ।।5।।
कहैं सुजान सिंह कैलाश में तन तजि बैठो आई ।।6।।

बार्तिकः–

कैलाश का दिन और चौथे बैकुण्ठ का दिन हमारे सब के भोग के बराबर है। जब यहाँ चार हजार वर्ष बीतते हैं तब कैलाश का एक दिन भक्तौं के भोग का माना जाता है। कृष्ण भगवान के लोक से हब्य और अनार के दाने जो एक एक तोला के होते हैं दो दोनों में आते हैं। अनार 10 सेर का होता है। ज़मीन सोने की है। जहाँ गिरा फटा। दाने सब छिटक गये। वै गरुड़ जी तमाम रूप धारन करके जहाँ जहाँ भगवान का हुक्म है बांट आते हैं। बैकुण्ठ में दिब्य वसन भूषन फरते हैं बृक्षों में। आप ही आप गिरते हैं। वै गरुड़ जी बाँटते हैं। कैलाश के अन्दर दिब्य भवन बने हैं। बीच में अक्षय बट है। उसके नीचे शिवा-शिव रहते हैं और सब भवनन में रहते हैं। अन्दर ठंढक नहीं है न गर्मी है। वहाँ मल मूत्र नहीं होता। सब वायू होकर रोम रोम से निकल जाता है। दोना जिन में हब्य अनार आते हैं खाने के बाद जहाँ ज़मीन में धरौ तहाँ अन्तर हो जाते हैं। रोज़ बदली भूषन वसन की होती है। वह भी सब अन्तर हो जाते हैं। बड़ा विस्तार है थोड़ा लिखा है।

216. श्री नारद जी के शिष्य, काशीपुरी के बासी, सालिक राम गोवा यानी अहीर

दोहाः– ऒँ नमो भगवते बासुदेवाय।
द्वादश अक्षर मंत्र यह जाय जपौ हरखाय ।।1।।
मनु सतरूपा ने जप्यो यही मंत्र मन लाय।
तब दसरथ जी के यहाँ जन्मे चारिउ भाय ।।2।।
नैमिष क्षेत्र कहत उसे जग में है सरनाम।
चक्र तीर्थ औ गोमती बार बार परनाम ।।3।।
अवधपुरी पावन पुरी छइउ पुरिन की जान।
सालिक राम कहैं सही नारद कीन बखान ।।4।।

यही मंत्र ध्रू ने जपा अचल गये पद पाय।
नारद कह मेरा बचन मानि जपौ मन लाय ।।5।।
अमित शक्ति इस मंत्र में शेष न सकत बताय।
एक सहस मुख में लगीं दुइ सहश्र रसनाय ।।6।।
दस माला की जाप में चारि घड़ी लगि जाँय।
दस दिन की जप में तेरे घट के पट खुलि जाँय ।।7।।
जप जब पूरा ह्वै गयो बानी नभ ते आय।
अजर अमर तुम को किया निर्मल तुम पुत्राय ।।8।।

पदः– दस झाँकी मम सन्मुख छाई ।।1।।
सिया राम प्रिय श्याम रमा हरि शिव गिरिजा सुखदाई ।।2।।
हनुमति गणपति संग बिराजैं कर जोड़े मुसक्याई ।।3।।
छबि सिंगार छटा की शोभा शेष न सकत बताई ।।4।।
सुर शक्ती सब दर्शन देते उर में विंहसि लगाई ।।5।।
अमृत घट में टपकै पावौं अनहद सुनौ बधाई ।।6।।
नागिन जगी चक्र षट चलते सातौं कमल फुलाई ।।7।।
एक सहस अरतालिस किसिम की महक स्वरन ते आई ।।8।।

सब लोकन में जाय की शक्ती सत्य कहौं मैं पाई ।।9।।
हर शै से धुनि राम नाम की रं रं रं भन्नाई ।।10।।

क्षुधा तृषा औ शीत ऊश्न नहिं व्यापै नेकौं आई ।।11।।
धनुष बान मुरली कर सोहत शंख चक्र गदा पदुम स्वहाई ।।12।।
कर त्रिशूल डमरु है बाजत शब्द शब्द गिनि पाई ।।13।।
बक्र तुंड के भुज हैं सोरह सब में अस्त्र चमकाई ।।14।।
दहिनी बगल में गदा दबाये हनुमति परत देखाई ।।15।।
सालिक राम कहैं नर नारी भजन करौ बनि आई ।।16।।

217. श्री राम मनोरथ दुबे
निवासी नेवादा, पोस्ट बीकापुर, जिला फैजाबाद

इन्होंने 37 साल स्कूल कालेज में पढ़ाने का काम किया। 1–7–72 से अवकाश प्राप्त किया। उसके बाद भरत कुण्ड में पिण्ड वेदी तथा तपोभूमि मंदिर के निर्माण में सहयोग दिया।

दुबे जी ने बड़ी सच्चाई से काम किया है। इस धर्म कार्य से यह चौथे बैकुण्ठ के अधिकारी बना दिये गये। भगवान के यहाँ चित्रगुप्त जी ने खाता में दर्ज कर दिया। धर्मराज न्यायकारी ने भी देख लिया। ऐसा भक्त लाखों में कोई मिलेगा। बिना भजन के, शान्ति दीनता से काम करने से भी गती होती है। इनके माता पिता धन्य थे जिनके यह पुत्र हुए। वै भी ऊँचे पहुँच गये। कबीर जी ने कहा है:–

[1]

"तेरे दया धरम नहिं तन में मुखड़ा क्या देखै दर्पन में।"

[2]

वजहन जग में आय के करिये ना तुई मान।
दया धर्म नहिं छोड़िये जब तक घट में प्रान ।।
(संत वज़हन जी का पद है)

[3]

राम दास नागा कहैं होय भक्त सो पास।
दया धर्म छोड़े नहीं जब तक तन में स्वाँस ।।

[4]

ब्यास जी ने भी यही कहा है कि पर उपकार के बराबर कोई धर्म नहीं है। बहुत ऋषी-मुनी-सन्त यही कह गये हैं।

218. जानकी बाई

वैसे कई माई बड़ी भक्त हो गई हैं जैसे मीरा, गिरजा, गोदा, गंगा, कर्मा, कुबिजा, गणिका, सेवरी। हाल में जानकी बाई हुई हैं। वह बे टेम गाड़ी कुम्भ में छोड़ाती थीं, साधू सेवा करती थीं। साधू हजारौं गाली देते तो उनकी बड़ी सेवा करती थीं। जब वह पैरों पड़ते तो कहतीं "यह परिक्षा भगवान कराते हैं।" आप सन्त होकर हमारे पैरों पर न पड़ौ, भगवान की तरफ़ मन लगाओ। उनके हुक्म से मैं कुछ सेवा करती हूँ। आप हमैं गाली देते हैं उस से हमैं बहुत लाभ होता है। यही हम चाहती हैं। आप हमारे हितैषी हैं।" बेचारे साधू बहुत पछताते थे।

219. श्री महाराज जी
(परमहंस राममंगल दास जी) के उपदेशामृत

दीन दुखियों पर दया करने से भगवान बहुत खुश हो कर अपना लेते हैं। भागवत में ब्यास भगवान ने कहा है "पर उपकार से बढ़कर कोई भजन नहीं है। जिसके साथ भलाई करोगे उसकी आत्मा खुश होगी। इसी तरह तप धन इकट्ठा होते होते सब कुछ प्राप्त हो जायगा। पहले ऋषि सेवा धर्म सिखाते थे उसी से पट खुल जाते थे। फिर मंत्र बताते थे। शिष्य के पूछने पर इशारा कर देते थे। उसे पूरा पता चल जाता था तब पढ़ाते थे। तब शब्द शब्द के रूप प्रगट हो जाते थे। सब लीला दरश्ने लगती थी। पहले पढ़ाने से सब दिमाग़ में भर जाता है तो द्वैत नहीं छूटता। विद्या का मद दीनता आने नहीं देता। उसमें अपनी जीत चाहता है। अविद्या घुसी है। हमें किसी सन्त ने लिखाया है:-

दोहा:– धन मद बल मद रूप मद विद्या मद यह चारि ।
भव सागर की बारि में पकड़ि देत हैं डारि ।।1।।

220. साधक के लिए अनमोल उपदेश

बड़े महाराज ने बताया, "बोलने की ज़रूरत नहीं है न झगड़े की ज़रूरत है। दीनता और शान्ति की ज़रूरत है। न मान की ज़रूरत है न अपमान की ज़रूरत है, न क्रोध की ज़रूरत है। तब, भजन आपै आप

हो जाता है, न पूछने की है न जपने की है। तुम साधू भेष में हो तो इस रीति से मन खुद साधू हो जाता है। तन साधू बनाने से कुछ नहीं होता। यही ओनामासी (पढ़ाई का आरम्भ) आगे ऋषी मुनी पढ़ाते थे और सेवा धर्म लेते थे। बस आँखी कान खुल जाते थे।

221. दो अपढ़ माइन का गान

उन्होंने नाम नहीं बताया। कहा "हम ब्रह्मणी हैं। पढ़ी नहीं हैं। भगवान में हमारा प्रेम था। निम्न पद उनके मूँह से निकला है:–

पदः– क्या अजब शृंगार बनाया लड़िका नन्द जसोमति का ।।1।।
सन्मुख हर दम रहे छाया लड़िका नन्द जसोमति का ।।2।।
सब सखा सखी प्रगटाया लड़िका नन्द जसोमति का ।।3।।
फिरि रहस का ढंग देखाया लड़िका नन्द जसोमति का ।।4।।
संग राधे सबन नचाया लड़िका नन्द जसोमति का ।।5।।
बाजैं साज औ गान कराया लड़िका नन्द जसोमति का ।।6।।

घुँघुरू पगन में छम छम बाजैं दामिनि सम चमकाया
लड़िका नन्द जसोमति का ।।7।।
मुरली धुनि मधुर सुनाया लड़िका नन्द जसोमति का ।।8।।
सुर मुनि फूलन झरि लाया लड़िका नन्द जसोमति का ।।9।।
नभ ते दुँदुभी बजाया लड़िका नन्द जसोमति का ।।10।।
तन छूट विमान मंगाया लड़िका नन्द जसोमति का ।।11।।
तब अपने धाम पठाया लड़िका नन्द जसोमति का ।।12।।

222. श्री गोपाल दास जी

महमूदाबाद, ज़िला सीतापुर

पदः– सतगुरु से सुमिरन सिखि आवो ।।1।।
निज को सब से नीच बनावो ।।2।।
द्वैत को तब तन से बिलगावो ।।3।।
आलस नींद जीति तब पावो ।।4।।
शाँत दीन बनि मनहिं सिखावो ।।5।।

सिया राम सिया राम सिया राम ध्यावो ।।6।।
जोड़ी जुगुल सामने छावो ।।7।।
सुर मुनि मिलैं लिपटि उर लावो ।।8।।
सब के मुख से आशिष पावो ।।9।।
निर्भय औ निर्बैर कहावो ।।10।।

नाम कि धुनि परकाश समाधी कर्म रेख पर मेख मरावो ।।11।।
जियतै सब करतल जब होवै तन तजि के साकेत सिधावो ।।12।।
चौरासी का चक्कर छूटा सियाराम ढिग बैठक पावो ।।13।।
कहैं गोपाल दास मम बानी मानि लेहु तब भक्त कहावो ।।14।।

वार्तिकः-

महमूदाबाद में राजा अमीर हसन ने इनको कुटी बनवा दी थी। सब खाने पीने कपड़े का इन्तज़ाम रखते थे। 20-25 मूर्ती हर समय रहती थीं और साधू आया जाया करते थे। राजा दोनों समय दर्शन को जाते थे। राजा ने अपनी राज्य में बहुत हिन्दू साधुन को ज़मीनें दिया। तमाम कुटी बनी हैं। 8 लाख की रियासत थी। बहुत उदार थे।

223. एक ब्रह्मचारी से प्राप्त कथा

सुलतानपुर के करीब गोमती के समीप एक ब्राह्मण बड़े धनी थे। अरसा 80 साल का हुआ होगा। वै भागवत की कथा के लिए एक पंडित को बुलाया। किसी गांव में रहते थे। पंडित आये कथा हुई। पंडित को ब्राह्मण ने बहुत सामान दिया। बैलगाड़ी में भरा कर भेजा। एक घोड़ा बड़ी राशि का दिया। चरण छुए। पंडित घोड़े पर सवार होकर चल दिये। गोमती करीब थी। ब्राह्मण का एक लड़का पांच साल का था। वह गोमती के करीब चला गया था। और कोई न था। कमर में सोने की जंजीर और हाथों में सोने के खड़ुवा पहिने था। पंडित ने देखा। चट घोड़े से उतर कर उसकी गर्दन दबा दिया। करधनी, खड़ुवा निकाल कर लड़के को बालू में मूँद कर, घोड़े पर सवार होकर चल दिया। संयोग वश ब्राह्मण उधर आये थे। देखा कि लड़के को बालू में मूंद रहे थे। ब्राह्मण चुपके से छिप कर बैठ गये। जब पंडित चले गए तो ब्राह्मण ने आकर लड़के को बालू से निकाल कर कपड़े में बांध कर कोठरी में रख कर ताला मार दिया।

उसी रोज़ हजारौं ब्राह्मण व गरीबों का भंडारा था। बड़ी भीड़ थी। जब सब खा पी चुके तब भगवान साधू के रूप में आए। ब्राह्मण भीतर ले गये। सब पदारथ थाल में धरे। लोटा गिलास में पानी धरे। ब्राह्मण से कहा "लड़के को लावो ताला खोल कर। वह उठा बैठा है। हम अपने साथ भोजन करावैंगे। ब्राह्मण ने ताला खोल कर लड़के को देखा। उठा बैठा था। लाये। साधू ने लड़के के शरीर की बालू अपने कपड़े से झाड़ी, हाथ पांव धोया, मूँह धोया, कपड़े से पोछा, संग पाटा कर बैठाया, भोजन कराते और आप खाते, लड़के को जल पिलाते और आप पीते। जब आप और लड़का खा पी कर कुल्ला किहे, हाथ पांव धोया। लड़के को उसी रीति से कुल्ला करा कर हाथ पांव धोकर कपड़े से पोछा। फिर अन्दर कुछ देर बैठे। लड़के को पास बैठा कर ब्राह्मण से कहा "तुम धन्य हो। ऐसे धैर्यवान, दयावान, धर्मात्मा संसार में कम हैं।" ब्राह्मण ने कहा "हमने सोचा कि जो होना था हो गया। हजारों गरीबों, ब्राह्मणों का आज भोज है। अगर हम कहैंगे तो घर वाले दुखी होंगे और जो भोज में आये हैं उनको दुख होगा। कोई भोजन न करेंगे तो हमैं अन्त में नर्क होगा। इसी से हमने किसी को न बताया। साधू ने कहा "ठीक है। ऐसा ही भगवान की इच्छा से तुम्हारे मन में आया। उसी से तुम्हारा लड़का जी गया। ऐसे भक्तों के लिए भगवान सरगुन रूप धारन करते हैं। ऐसा न करैं तो संसार का काम कैसे चलै। फिर साधू बाहेर आकर अन्तरध्यान हो गए।

224. एक औरत व बच्चे की रक्षा

जनौरा के हरि हर बक्स ठाकुर रामराज सिंह के छोटे भाई हम से बताते थे। जनौरा में एक कुरमी ने अपनी औरत से कहा कि "तुम हमारे घर से निकल जाव।" महीना पूस-माह का था। उसके एक लड़का छह माह का था। वह एक धोती जो पहने थी और एक सलूका तथा एक चादरा ओढ़ कर लड़के को लेकर चल पड़ी। कुछ मामूली ज़ेबर पहने थे। जब दो कोस निकल गई तो एक गाड़ी वान बैल गाड़ी पर अकेला बैठा था। उसने पूछा "कहाँ जायगी तो उसने बताया कि अपने नैहर जाँऊगी।" तो उसने कहा "गाड़ी पर बैठ लो हम भी उधर ही जाते हैं।" वह गाड़ी

पर बैठ गई। कुछ देर चलकर गाड़ीवान ने कहा "जो तुम्हारे पास चीज है हमैं दे दो। आगे जंगल पड़ेगा। तो उसने दे दिया। जब जंगल आ गया तो गाड़ीवान ने गाड़ी रास्ते से जंगल की तरफ हाँका। औरत बोली "कहाँ चल रहे हो?" तो कहा "इस जंगल में एक पुरवा है वहाँ तमाखू पी लें तब फिर रास्ते पर चलेंगे।" तो औरत ने कहा "अच्छा।" बीच जंगल में गाड़ी खड़ी किया। औरत से कहा "उतरौ।" उसने कहा "काहे उतरैं?" तो कहा "तुम को हम मार डालैंगे।" वह उतर पड़ी।

गाड़ीवान ने एक लम्बी रस्सी एक पेड़ की झुकी डाल पर फेंका। औरत की गोद से लड़के की टांग पकड़ कर अलग फेंक दिया। उसे भगवान ने समाधि करा दी। वह रोया नहीं। औरत की दोनों बगल से रसरा डाल कर खींचि दिया। उसके पैर ज़मीन से एक बीता ऊपर उठ गए। तब वह गाड़ी पर से कुल्हाड़ी लाया। उसके सर पर दोनों हाथ से मारा। कुल्हाड़ी औरत के सर पर से पीछे गिर गई। वह कुल्हाड़ी उठाने गया। जैसे ही हाथ कुल्हाड़ी पर लगा वहाँ एक सांप बैठा था जिसने काट लिया। वह उसी जगह डर से गिर कर मर गया। जाड़े में ज़हरीले सांप कार्तिक (महीना) की ओस चाट कर बैठ जाते हैं। फिर जाड़े बाद निकलते हैं। सबेरे कुछ लोग उधर से निकले तो देखा। औरत को रसरी से छोरा। उसने लड़के को उठाया। लड़का जागा, दूध पिया। औरत के भी भगवान की दया से ठंढी नहीं लगी। लोगों ने गाड़ी में लाश धरा, औरत को बैठाया, फैजाबाद लाये। औरत अपने घर गई। लाश पुलीस ने सरजू में छोड़ा। गाड़ी बैल पुलीस को सौंप दिये।

225. भक्त हरिहर बक्स
गांव जनौरा, ठाकुर रामराज सिंह के छोटे भाई की बताई कथा

भक्त हरिहर बक्स स्टेशन के बाबू थे। एक पैसा किसी से नहीं लेते थे। जब रिटायर हो गये तो रामायण से प्रेम था। सात कोस रोज़ अंजना के बाबा को रामायण सुनाने जाते थे। 12 बर्ष सुनाया। वै साधू ऐसे थे कि पानी को नहीं पूछते थे। घर पर आते तो भोजन करते। उन्होंने हमसे बताया कि रेल पर कहीं जा रहे थे।

उसी गाड़ी में कई मर्द औरत बैठे थे। एक औरत पेशाब करने गई तो उसके बच्चा पैदा हो गया। उसे आने में देर हुई तो उसका आदमी अन्दर देखने गया। उस औरत ने कहा "बच्चा पैदा होकर गिर गया। गाड़ी 2 कोस निकल गई थी। जंजीर खींची गई। गाड़ी रुकी और पीछे लौटने लगी। बहुत लोग नीचे उतर पड़े। देखा कि एक काला सांप बच्चे के पास फन फैलाये बैठा था। कौवा नोचने की घात करते तो सांप सब को भगा देता था। बच्चा उठाया गया। सांप गायब हो गया। लड़के के कहीं चोट न लगी थी। ऐसी भगवान की लीला है। हमने भी बहुत घटना देखी हैं जो लिखावैं तो लोग विश्वास न करैंगे। विश्वास करने वाले लोग बीज मात्र हैं।

226. हिंडोले से गिरने पर भी भगवान द्वारा रक्षा

16 की उम्र का हाल बताते हैं। मेला मिसिरिख का होता है फागुन में। नीमसार से पैकरमा उठता है। शायद अमावस से चलता है। फिर सब जगह घूम कर 10 शाम तक मिसिरिख को आता है। पूरनमासी तक तो बड़ी भीड़ रहती है। फिर चार या पांच दिन तक सब चला जाता है। वहाँ पर जो हिंडोला गाड़े जाते हैं उसमें औरत, मर्द, लड़के झूलते हैं। शायद एक-एक खाना में 3 या 4 बैठते हैं। चौकोर बने होते हैं।

एक औरत के पेट में बच्चा था। वह भी झूलती थी। वह चौखटा टूट गया, नीचे गिरा। बच्चा पेट से बाहर गिरा। उसके कुछ चोट न लगी। इस बात का हल्ला हो गया। जो जो लोग देखे सो यही कहते थे कि भगवान ने सब को बचा लिया। लड़का कोई बड़ा संस्कारी था। सब के सब बच गये। हमारे मामा का मकान सड़क पर था। पूरब की तरफ़ सड़क मोहारे के पास, पश्चिम तरफ़ मोहारे के तीर्थ है। हम भी उस समय मेले में मौजूद थे।

227. बिना मौत कोई मर नहीं सकता

जब हम दुबारा यहाँ आए तो सरजू जी अश्नान को गये। सरजू जी ज़मीन काट रही थीं। महीना भादौं का था। एक ब्राह्मण कहीं से आया था। उसके पास 40 रुपये थे। वह अवध में दर्शन करने गया। किसी ने

रुपया निकाल लिया। वह सरजू किनारे बैठा था। पूछा तो उसने हाल बताया। कहा "हम शरीर छोड़ देंगे।" चार दिन से पानी नहीं पिया था। झाऊ दो दो हाथ का था। उसी में बैठा था। हम नहा कर गए। थोड़ा भोजन लाए। खाता न था। बहुत खुशामद की तब चार कौर खाकर पानी पिया। हम 18 दिन रहे। रोज़ थोड़ा ज़बरदस्ती खिला कर पानी पिलाते थे। सरजू जी जब तक दो बीगहा लम्बान तक काट ले गईं और थोड़ी टेकरी छोड़ दिया। एक रास्ता 5 या 6 हाथ का राखा आने जाने को। हमने कहा "सरजू जी तुम को न लेंगी। देखो दोनों तरफ़ से काट कर निकल गईं। यहाँ कोई नहाने नहीं आता है और न कोई तुम को पूछता है। उसने कहा "जो कुछ हो हम यहीं मर जाँयगे।" इतना सोच उसे पैसे का था। फिर हम घर चले गए। उसे जैसी भगवान की मरज़ी होगी वैसा हुआ होगा। बिना मौत कोई मर नहीं सकता।

228. एक बालक साधू की सरयू में डूबते हुए रक्षा

महीना भादौं का था। सरजू जी में पानी का बड़ा बेग था। साधू बहुत नहा नहा कर ऊँचे खड़े थे। वह छोटा साधू नहाने गया तो पानी के बेग से रुक न पाया। बह चला। एक लोटा हाथ में था जिसमें पानी 5 या 6 सेर आता। दोनों हाथ में साधे रहा। सब साधू ऊपर से हाय हाय करते थे। हम आ गये। कूद पड़े। करीब 60 हाथ निकल गया था। पास पहुँचे। एक धक्का मोढ़े का मारा। फिर हम पानी के बेग से बह चले। सरजू जी ने उसे किनारे कर दिया। हम पैर कर एक किनारे गए। वहाँ से उसके पास आए। वह काफ़ी पानी पी गया था और लोटा न छोड़ा था। उससे लोटा लेकर पानी फेंक दिया और उसे उठाया। एक साधू से कहा कि इसकी बाँह पकड़ का ऊपर खींचो। करार थी। उसने खींचा। हम लोटा लेकर गए। उसकी टाँगैं पकड़ कर उलटा कर दिया। सब पानी पेट का मूँह से निकल गया। देर तक पड़ा रहा। फिर धीरे धीरे बोलने लगा। हमने कहा "लोटा काहे नहीं छोड़ा तो कहा "आश्रम में मारे जाते।" हमने कहा कि "देखौ इसकी सुरति लोटे में लगी रही।" फिर धीरे धीरे खाली लोटा लेकर अपने आश्रम को गया। तुलसी बाड़ी में आश्रम था। करीब 4 फरलांग होता। लोटा दोनों हाथ से थामे था इसी से पानी पी गया।

229. एक बंधे साँड़ की रक्षा

तपसी जी की छावनी के दक्खिन करीब ही अहीराना है। उसमें तीन अहीर मिल कर एक सांड़ को एक गूलरि के पेड़ के नीचे चारौं पैर सांदि कर गरदन मे रसरी लगा कर बाँधि दिया था। मूँह नीचे रहता था ऊपर नहीं उठता था। हमारे करीब आधे बीघे पर था। 3 दिन हो गये थे। किसी ने उन्हें खोला न था। वे तीनों बड़े खराब अहीर थे। एक का नाम काशी था, एक का नाम औतार, एक का हम भूल गये हैं। वे हमारे पास आते थे। हम उनके घर दवा को जाते थे। दामोदर दास सीढ़ीपुर मंदिर से आए आठ बजे रात को। हमसे कहा "बड़ी तकलीफ साँड़ को है। 3 दिन से बंधा है। पानी तक नहीं पाया। डर के मारे कोई छोर नहीं सकता है। दूर तक नाग फनी काट काट कर बिछा दिया है। हम बड़ी छुरिया ले कर गए। उजेरी रात थी। सब रसरी पैरों की काट कर, गले की काट कर पीछे से उसे दोनों हाथों से धकिया दिया। वहाँ से बाहेर निकाल दिया। हमें नाग फनी का कुछ पता न चला। सवेरे अहीर देखने आए। हमारे पास आए तो हमने कहा "हमने छोर दिया।" उन्होंने कहा "आपने कैसे छोरा?" हमने कहा "8 बजे रात को मालूम हुआ कि 3 दिन से बांधा है। हमें दया आ गई। छुरी ले कर रसरी काट कर निकाल दिया। तो तीनों पांय पड़े और कहा "वहाँ नागफनी चारौं तरफ पड़ी है।" हमने कहा "हमने नहीं देखा है।" तो हमें ले गए। हम देख कर आए तो महाराज से कहा "दयावश भगवान ने रक्षा करी।"

230. एक जीव की रक्षा

एक जीव की रक्षा भगवान ने किया। अरसा 48 साल का हुआ होगा। चन्द्रहरी के दर्शन को गए। वहाँ 12 शंकर भगवान पधरे हैं काले अरघा में। एक बीच में हैं चारों तरफ और हैं। सभी मूर्ती बहुत अच्छी हैं। वहाँ से लौट कर बिदेही जी के मंदिर के सामने जो बुरजा है उस पर कई भक्त बैठे थे। हम भी बैठ गए। बसन्त राम और बस्ती ज़िला के एक साधू लाला हमारे परिचय के थे। वह भी बैठे थे। शाम हो गई थी। भादौं का महीना था। पानी बुरजा के नीचे एक गज तक आ गया

था। एक आदमी नहाने आया। कमर भर में गया। एक मगर बुड्डी लगा कर आया। जब 20 हाथ का फासला रह गया तो पानी पर आकर उसे पकड़ने दौड़ा। तब लाला ने कहा "मगर आ गया। छर छर छर छर पानी पर चला। हम कूद पड़े और लाला भी कूदे। लाला ने कहा "आ गए साले।" हम तो मगर की पीठि पर गिरे। वह डुब्बी मार गया। लाला जी पूँछ पर गिरे। वह आदमी नहा कर चला गया। लाला साधू ठौरे उदासिन का मंदिर है उसी में रहते थे। उन्होंने जा कर कपड़े बदले। हम आश्रम पर आये। वहाँ अचला लगोंटी बदला।

बिदेही जी के बुरजा पर एक सन्त कई युग के रहते हैं। जहाँ इच्छा होती है घूम आते हैं। रात में वहीं रहते हैं। वह अजर अमर हैं। काले रंग के हैं। 30 हाथ लम्बे हैं। एक बार हम रोगी देखने गए थे 10 बजे रात को। वहाँ से 12 बजे लौटे तो हमैं भेजने आए पीछे पीछे इस सड़क के किनारे जो पीपल था वहाँ तक। हम घूम कर देखा तो दंडवति किया। फिर अन्तर हो गए। उनमें बड़ी दया थी। जो छोटी देव काली कही जाती हैं वहाँ महारानी जी जनकपुर से गिरजा जी लाईं थीं। रोज रंग महल से पैदल जाती थीं पूजन करने। साथ में भरत जी या शत्रुहन जी या लखन लाल या हनुमान जी जाते थे। बसन्तराम को दिब्य शेर के कई बार दर्शन हुए। हमैं भी एक बार दर्शन हुए। रामघाट से किला पर रोगी देखने जाते थे। एक साधू आया कहा "देख लो चल कर। बहुत तंग है। करीब 12 बजे रात को चले। उजेरी रात थी। छोटी देव काली की छहरदीवाली पर धीरे धीरे चलता था। वह साधू कुछ आगे बढ़ गया था। हम समझ गए कि वही शेर है।

231. भगवान ने एक गाय की रक्षा करी

हम पछाँह बाबा टीका दास की कुटी पर से आ रहे थे। घर से ३० कोस है। जब सीतापुर 10 कोस रह गया तब एक चमार गऊ लिहे जाता था। उस गाय के आँसू बहते थे। हमने पूछा "गाय क्यों रोती है?" तो कहा "इसका बच्चा घर में है।" हमने कहा "इसे तुम कहाँ लिये जाते हो? तो कहा "कसाई के यहाँ बेचने। हम कई गाय बेच चुके हैं।" हमने कहा "कितने की बेचते हो?" तो कहा 5 या 6 रुपये की। हमने कहा

"हम 7 रुपये देंगे। सीतापुर से दो कोस हमारे भाई की ससुराल है वहाँ चलौ। भोजन भी करावैंगे। अगर बछरा दे जाओगे तो उसके दाम अलग देंगे।" वह गाय हमारे पीछे पीछे चलने लगी। हमने कहा कि रस्सी छोड़ दो। उसने रसरी छोड़ दी। जब सीतापुर डेढ़ कोस रह गया तो गोशाला में 32 आदमी थे। उसमें हमारे रिश्तेदार मैनेजर थे।

एक गऊ भगी थी। चार कसाई पीछे लगे थे। गऊ थक गई थी। खड़ी थी। जब कसाई आ गये तब गऊ भागने को चाही, पर थकी थी भाग न सकी। उसी जगह गिर पड़ी। कसाई सड़क की बगल में काट कर खाल निकाल चुके थे और गौशाला के सब लोग देखते रहे। तब तक हम आ गये। जिस कसाई के यहाँ वह जाता था वह वहीं पर मिल गया और हमारे साथ आया एक फरलांग तक। हमने कहा "हम गऊ खरीद चुके हैं 7 रुपये में अब तुम नहीं पा सकते हो चाहे एक एक रोवाँ की एक एक असर्फ़ी दो। बस वै लौट गये। हम भाई की ससुराल में आए। उसे भोजन कराया, रुपया दिया और कहा "बछरा दे जाना।" फिर वह बछरा नहीं लाया। गाय हार में छोड़ दी गई। जब खाकर मस्त हो गई तब गोशाला में पहुँचा दी गई। गोशाला में 400 गऊ थीं। रोज़ घी-आटा-गुड़ की लोई दी जाती थी। चारा, खूब दाना, खरी, घास, भूसा। सब गौवें मस्त दर्शनीय थीं। कई बिगहा जगह थी, चहारदीवाली थी। चारों तरफ़ लाइन की लाइन कमरे बने थे। बड़े बड़े सेंधा नमक की डीले जहाँ तहाँ धरे थे। गौवें चाटती थीं। बड़ा अच्छा समय था। गुड़ एक रुपये का 15 सेर था।

232. एक दूसरी गाय की रक्षा भगवान ने की

हम और दुर्गा चौबे की बहन का लड़का रामआसरे भगवानपुर बाजार को गए। गांव से शायद डेढ़ कोस हो। उधर से लौटे तो हमने कहा "अबकी जंगल में होकर चलेंगे। जंगल बहुत पुराना था। पहले ठाकुर लोगों की कच्ची गढ़ी थी और बहुत गहरी खावाँ चारों तरफ़ रहै। एक जगह से निकास रहा। चारों तरफ़ बाँस की बेनई लगी थीं। वै बाँस

बड़े ठोस होते हैं और एक में जकड़े होते हैं कि बिना काटे कोई अन्दर नहीं जा सकता। उन बाँसों को हमारे यहाँ झँखरा कहते हैं, कहीं कहीं कटबाँसी कहते हैं। उनकी लाठी डंडा बहुत मज़बूत होती हैं। जब खावाँ के पास गये तो एक गऊ उसमें खड़ी थी। उसमें बरसात के बहाव से मिट्टी भर गई थी। कुछ ढी थी। खावाँ के बराबर हो गई थी। गाय उधर जाने लगी तो चारौं पैर फंस गए। पूरे पैर मिट्टी के अन्दर चले गए। वह मिट्टी सूख गई। दो माह हो गए। चरवाह ढूढ़ कर लौट गए। समझे कहीं चली गई, कोई बांध लिया होगा। वह सूख गई थी। रोवाँ खड़े थे। आँखैं बड़ी बड़ी थीं। कान तक न हिला पाती थी। हमारे दोनों के पास बाँस के मजबूत डंडे थे ढाई ढाई हाथ के। वह हमसे तीन साल बड़े थे, ज़ोरदार थे। हम उनसे कुछ ऊँचे थे। उनसे कहा "पहले आगे के पैर डंडौं से खोदे जाँय फिर पीछे के। हम दोनों जुटे। चारौं पैरों की माटी निकाली। फिर हम कहा "पेट के नीचे की माटी निकाली जाय तब ठीक बैठेगा। पेट के नीचे की निकाला। हम कहा "डंडे पेट के नीचे लगाकर उठाने में उसकी हड्डी चोट खा जायगी तो उन्होंने कहा कि फिर कैसे उठावोगे?

हमने कहा "पेंच से उठावैंगे।" गऊ के नीचे मूड़ छोड़ कर छाती तक पहुंच कर उसे उठा लिया। एक हाथ थनों की तरफ़ एक आगे की तरफ़। आसानी से निकाल कर लिटा दिया। पैर सीधे थे, मुड़ नहीं सकते थे। दो माह से धँसे पड़े थे। फिर हम जंगल को गये, पुकारने लगे। चरवाहे आये। एक ने कहा "गाय हमारी है। दो माह हुए। हम समझे कहीं चली गई। बैलगाड़ी लाए। उसमें पाखरी बिछी थी। सब लोग मिल कर उठा कर लिटा दिया। घर ले गए। उसे पानी ऐसा सेतवा बांस के चोंगले में पिलाया। फिर गाय को दाल पिलाने लगे और आटे-गुड़ की लपसी देने लगे। कड़ू तेल गरमा कर पैरों में मलने लगे। धीरे धीरे मुलायम चारा देने लगे। उठ कर खड़ी होने लगी। अगहन शुरू में निकाली गई। चार माह बाद फिर ठीक हुई। 3 साल की थी। बहुत अहीरों ने सेवा की। ज़िन्दगी वाले को कौन मार सकता है। पुराना भोग था भोग कर ठीक हो गई।

233. श्री महाराज जी से प्राप्त अनमोल उपदेश

दोहाः– जेहि बिरिया जेहि बैसवा जेहि बिरिया जेहि बैस।
तुलसी मन धीरज धरो ह्विहै ता दिन तैस ।।
सिया बर रामचन्द्र की जै।

यही साइत हम मानते हैं और जानते हैं। बेकार है चिन्ता करना, सोच करना, दिमाग खराब करना।

दोहाः– ह्वै है वही जो राम रचि राखा।
को कहि तर्क बढ़ावै साखा।

बेकार है अपनी अपनी हुशियारी छाँटना। कोई कहता है यह अर्थ सही है, कोई कहता है यह सही है। जब सही अर्थ जान जायगा तो उससे अनर्थ नहीं होगा। वही अर्थ समझो सही है। कटु बचन तो सह नहीं पाते दूसरों को उपदेश करते हैं। अपनी तारीफ़ सुन कर मस्त हो जाते हैं। यह द्वैत महा विकराल है। गती की मती मार देता है। यह पाप का रूप है। सैंकड़ों किसिम के पाप हैं। लिखने में तकलीफ़ होती है इससे नहीं लिखते। जितनी खोपड़ी हैं सब के स्वभाव न्यारे न्यारे हैं। वह पैदाइशी हैं छूटते नहीं हैं। जब तन मन से लग जाय प्राणों का लोभ छोड़ कर तब भगवान पलकदरियाई हैं स्वभाव बदल देते हैं।

234. एक साँड़ की भगवान ने रक्षा की

हम और पं. शिवप्रसाद पं. मोहनलाल के यहाँ सरगद्वार जा रहे थे। राजेन्द्र रोड पर एक सांड़ ने दूसरे सांड़ को रपटाया। जो भागा था वह कुछ कमज़ोर था। पीछे वाला बड़ा जबर था। आगे वाला 50 हाथ निकल गया था। पीछे वाला गुस्से से हमारे सन्मुख आ गया। पंडित ने कहा "महाराज! बचौ–बचौ। वह दूसरी तरफ़ हो गये। हमने उसके चारों पैरों के बीच सोंटा फंसा दिया और खड़े हो गये। वह रुक गया। 15 मिनट खड़ा कर दिया। आगे का सांड़ दूर निकल गया। पंडित ने कहा "महाराज जी! क्या बात है?'' हमने सोंटा खींचि लिया। सांड़ का गुस्सा शान्त हो गया था। हमने कहा ''देखो! भगवान ने कैसी उस कमज़ोर

सांड़ की जान बचाई। बड़े सांड़ को बाहर के लोग यहाँ छोड़ गये थे। वह बैलों को और सांड़ों को तंग करता था। फिर यहाँ के लोग सरजू पार उतार आए। फिर नहीं आया।

235. बन्दरौं की रक्षा

16 की उम्र में हम और स्वामी दयाल चाचा हमारे परिवार के संग थे। नीमसार जा रहे थे। 20 कोस हमारे यहाँ से है। जब 2 कोस रह गया तो सड़क से दो फरलांग जंगल है। हमने कहा "जंगल होकर चला जाय" तो उन्हौंने कहा ''चलौ।'' वहाँ गए तो एक बगीचा था। पेड़ 20 साल के होते आम के। चारौं तरफ खन्दक लगी थी। उसी खंदक में हाथ पैर बाँधे सैकड़ों बन्दर पड़े थे। कुछ मर गये थे और कुछ के शरीरों को सियार खा गये थे। करीब 30 ज़िन्दा थे। उनके हाथ पैर छोरे, उठा कर बैठाया। वै फिर गिर पड़े। न मालूम कै दिन के भूखे प्यासे होंगे। शरीर सूख गए थे। वहाँ कहीं दूर तक पानी न था। हमने कहा ''देखो! यहाँ खोल देते तो पेड़ पर बैठते। आम के टेबुआ खाते हैं और पत्ती। भूख प्यास नहीं लगती है। हमने भी खाया है जब घूमते थे। फिर वहाँ से चल दिये। ऐसे ऐसे निरदई जीव हैं। उनको घोर नर्क हुआ होगा।

236. एक कुत्ते व सर्प की रक्षा भगवान ने करी

12 की उम्र में दीवाली के दिन हमारे यहाँ खेत जगाए जाते हैं। हर एक खेत के कोने पर थोड़ा फूस रख कर दिया सलाई से जला कर कह देते हैं ''खेत राजा जागौ, खेत राजा जागौ हो।''

कई खेत जगा कर 3 बजे मंगल बाबा तेवारी की बाग करीब थी वहाँ गये। उसमें एक कच्ची कुइयां का ओदर (गहराई) करीब 15 हाथ था। पानी नहीं था। उसमें एक कुत्ता पड़ा था और एक काला सांप खूब मोटा कुंए के अन्दर चारौं तरफ़ घूमता था। हमने झांक कर देखा तो कुत्ते ने हमारी तरफ़ मूँह उठाया। एक आम के पेड़ की डार पड़ी थी। हवा से गिर गई थी, पत्ते सूख कर गिर गये थे। गीली थी। हमारे शरीर ऐसी

मोटी लम्बी 20 हाथ की थी। हम उसे उठा लाए, और उस कुँए में धीरे धीरे एक किनारे से सरकाये। वह जा कर बैठ गई। ऊपर पांच हाथ निकली थी। सर्प उस पर चढ़ कर निकल गया। फिर हम उस डार को निकाल कर बाहेर डाल दिया। कई बकरी आ गईं। एक ने उसी जगह मरा बच्चा पैदा किया। वह उसे सूंघ कर जान गई कि मर गया। सब बकरिन के साथ चली गई। हमने मरा बच्चा उठा कर कुवां में डाल दिया। कुत्ते ने उसे खा लिया। गांव गए रस्सी लाए। रसरी का फंदा चौड़ा कर दिया और कुंए में छोड़ा। कुत्ते ने आगे के पैर फंदे में छोड़ दिए। हमने खींचि लिया। न बहुत कसा था न ढीला था। खोला तो पूँछ हिलाने लगा। पीछे पीछे चल दिया। वहाँ जा कर पानी पिलाया। दूध तीन तीन पसेरी भैंसी देती थीं। साढ़े नौ सेर गाय देती थी। कच्चे दूध में गेहूँ की रोटी दोनों समय देते थे। दूसरे दिन गरम पानी से रीठे के फेने से उसको खूब साफ़ किया। शरीर चमकने लगा।

चार दिन बाद हींगा पासी आया कहा, "भय्या! यह बड़ा खराब है। बड़ी बड़ी बछियाँ, बड़ी बड़ी बकरिन पर चोट करता है, छोटिन से नहीं बोलता है। बड़े बड़े कुत्ते कई हों सब को नोच कर भगा देता है। बन्दरों को तंग करता है। हम इसे कुँए में डाल आए थे दस दिन हुए। समझा था कि मर गया होगा। आप इसे निकाल लाए।" हम ने कहा "हम क्या करें? हम दया वश ले आए। इसकी मौत अभी नहीं थी। नहीं तो सांप जो कुँए में था काला वह काट खाता, मर जाता।" पांचवें दिन मझिया गांव से कुछबंधिया आए। हम से कहा "हमें दे दो इसे। खूब मांस खिलावेंगे।" यह गोहैं भी मारता था। सब कुत्ते नहीं मार सकते। हमने कुछबंधिया और कुत्ते को भोजन कराया और कहा ''तुम इसके साथ जाओ।" बस चल दिया।

237. साधुओं से धनुष यज्ञ का वरनन

50 वर्ष हो गया मलका (विकटोरिया) के पार्क में सरकार से मंजूरी लेकर 2 दिन कीर्तन हुआ था। 14 मंडली बिहार की तरफ़ की थीं। फिर चारौं भाइन का बिवाह हुआ। कलेवा पूरिन का भोजन और बहुत सामान था। अवध के बराती साधू-ब्राह्मण भोजन करते थे। यहाँ के

साधू जो महारानी जी को बहन मानते हैं सब कूदने नाचने लगे। कहा ''खूब खाव। ऐसा भोजन अवध में न खाया होगा जैसा मिथिला में खा रहे हो। भांड़ बन कर नकल करने लगे। कोई यहाँ के साधू न बोले। वह सब बहिन मानने वाले बहुत हैं, हम सब माता मानने वाले कम हैं। तब हमको उठना पड़ा कहा ''यहाँ कोई चीज़ की कमी नहीं है दशरथ जी के। तुम सब झूठै कूदते हो। अगर दशरथ जी के पुत्र न होते तो चारौं महारानिन का बिवाह कैसे होता?'' धनुष कौन तोड़ता? एक साल स्वयमवर हुआ। 64 कोस में मंच गड़े थे तिन पर सब बैठते थे।

कोई धनुष को उठा न सका। दूर दूर के बड़े नामी क्षत्री जोधा, राक्षस मनुष्य बन कर आए थे। रावण बाणासुर ऐसे बलवान थे कि उन्होने कैलाश उठा लिया था। वै धनुष की तरफ़ निगाह न किये थे। दस हजार जोधा एक ही बार उठे। धनुष में शंकर जी ने राम नाम का बीज भर दिया था। जो उसे छू लेता उसकी आधी ताकत खींचि लेता था। इसी से और वज़नी होता चला जाता था। महारानी जी सर्व शक्तिमान हैं। वै अलग हठा कर चौका लगा कर फिर उस जगह रख दिया तो जनक जी ने देखा तो प्रण किया कि जो धनुष को तोड़ेगा उसी के साथ बिवाह होगा। महाराज महारानी की शक्ति से बहुत जोधा गाड़ी पर लाकर रंग भूमि में धरे थे फिर वै भी न उठा सके। जब दस हजार भूप अभिमानी एक ही बार उठे तो धनुष तो ताड़ भर रहा, भगवान महारानी जी ने सब का अभिमान चूर करने के लिए धनुष को इतना बढ़ा दिया कि सब राजा उसमें लग गए परन्तु उठा न सके। सब की आधी ताकत धनुष ने खींचि ली। सब के शरीर शिथिल हो गए। सब जाकर गर्दन नीची करके बैठ गए। बहुत शर्मा गए। धनुष फिर ताड़ भर हो गया। यह लीला कोई जान न सका। जनक जी के एक कोटि चाकर थे। भगवान की बारात बहुत थी। स्वागत करने वाले 33 कोटि देवता उनकी पत्नी, 36 कोटि चामुंडा देवी, 9 कोटि कत्यानी देवी, सब ऐसे रूप धारन किये थे कि जो देखता था सो चकित हो जाता था। सब भोजन छप्पन प्रकार की बनाती थीं। देवता जितने रूपों की जरूरत होती थी उतने बन कर स्वागत करते थे। जनक पुर 18 खंड का था। चार फाटक थे जिसमें बहुत बड़े बड़े शीशे लगे थे गोल। बड़ा प्रकाश था। रतन सागर में चारों तरफ़ लहरों से रतन बाहर किनारे पर लग जाते थे। वह उठा उठा कर

सब महलों में भीतर बाहर लगे थे। कई रंग के रतन थे। वहाँ की शोभा का वरनन कौन कर सकता था जहाँ सर्व शक्तिमान आदि शक्ति, सब का पालन करने वाली प्रगट हुई थीं। फिर दस हजार सखी प्रगट भईं थीं ब्राह्मण-क्षत्री-वैश्य कुल में। बालपन से सब साथ खेलती थीं। फिर महारानी जी ने सभी को भजन की बिधि बताई थी।

238. बारात का वरनन

कवित्तः– करत बरात को पयान नर नाह सब सुर गण
आसमान देखत बहार है ॥1॥
डेढ़ कोटि हैं मतंग औ तुरंग तीस कोटि,
पालकी पचीस कोटि पैदल अपार हैं ॥2॥
भार बरदार सवा सात कोटि ऊँट जाति सेवक समूह
पांच कोटि बाज़दार हैं ॥3॥
रथ सवा तीन कोटि दसरथ राव जी के
साठि लाख नौ हजार साँड़िया सवार हैं ॥4॥

239. एक जहरीले सांप, एक मूस और एक बीछी की कथा

चक्कर और बैजू तेवारी अपनी बाग में एक सूखा पेड़ कटाते थे। उसमें 15 हाथ ऊपर एक जंघा में छेद था। जिस पेड़ में कीड़ा मोटा होकर काठ को खाता है उसे कठ फोरवा चिड़िया चोंच से काठ खोद कर कीड़ा निकाल कर खा लेता है। उस छेद में सांप-मूस-बीछी रहते थे। आने जाने का एक ही रास्ता था। जब पेड़ कटने लगा और आधा कटा तो उसमें से काली बीछी 6 अंगुल की निकली और रेंगती हुई नीचे उतर कर चली गई। फिर मूस छेद से कूद कर भाग गया। जब पेड़ कट कर गिरा तो सांप निकला और भाग गया। उस जंघा के भीतर हाथ जाने भर का कई हाथ तक खोखला था हम भी बैठे थे। काटने वाला नौकर था। सब ने कहा'' "ऐसा तो न हमने देखा था और न सुना था। आज यह विचित्र बात देखने में आई।"

240. औघड़ बाबा
मुकाम बनबीर पुर, फैजाबाद

औघड़ बाबा रीवाँ राजा के गुरु ने डेढ़ सौ बर्ष के होकर शरीर छोड़ा है। पतले पतले गोरे गोरे थे। ब्राह्मण थे। लम्बा अंगरखा बन्द दार पहनते थे। एक लोटा एक लोहे का बेंत रखते थे। चर्स खूब पीते थे। पीने वाले लोग जमा होते थे। बहुत चर्स जमा रहती थी। किसी ने दारोगा से शिकायत कर दी। दारोगा तलाशी लेने आए। बाबा से कहा। बाबा ने कहा "तलाशी ले लो तब बात करो।" बाबा की झोपड़ी में काफ़ी चर्स रही। बाबा ने मंत्र से सब मिट्टी कर दी। दारोगा ने कहा, "बाबा! लोगों ने हमसे झूँठ कहा।'' बाबा ने कहा "झूँठ नहीं कहा। जितनी तुम मिट्टी की डली देखते हो सब चर्स है।" दारोगा ने कहा "आप भी झूँठ कहते हैं। हम तो मिट्टी देख रहे हैं।'' बाबा ने कहा ''अब करीब आ कर देखो चर्स है।" दारोगा गए तो देखा सब चर्स देख पड़ी। दारोगा ने कहा ''यह कैसे चर्स हो गई।'' तो बाबा ने कहा "तुमको आते देखा तो मंत्र से मिट्टी कर दिया। हमारे पास बहुत लोग पीने आते हैं। वही ला ला कर धरते हैं जिसमें देवढ़ा लगा रहे कम न पड़ै।" फिर दारोगा से कहा "अब फिर देखौ जाकर चर्स कितनी है।" तो देखा जाकर कि सब मिट्टी हो गई। तब दारोगा ने पैर छुए और कहा "आप जितनी चाहै जमा राखौ।" कह कर चल दिए।

वह गाली बहुत देते थे। गांव के सब बारी बारी भोजन देते थे। चमार पासी के यहाँ जब सुअर का मांस, मरे गाय बैल-भैंस का मांस बनता था तो जा कर खाते थे। एक ब्रह्मचारी ने हमसे बताया तो हम और राम दौर तथा एक साधू गाज़ीपुर ज़िले का था उनके यहाँ गए। शाम को पहुंचे। गांव में एक ठाकुर के दरवाजे पर खटिया पर पड़े थे। पैर छुआ तो बैठ गए। हमसे कहा ''समाधि सिखना हो तो दूसरे दिन आना।''

हमने कहा ''हम सिर्फ़ दर्शन के लिए आये हैं।" फिर हमने पूछा "आप सुअर-गाय-भैंस-बैल का मांस चमार पासी के यहाँ खा लेते हैं?" हमसे कहा "नहीं।" जो हमारी इच्छा होती है वही मंत्र पढ़ने से हो जाता है। लोग देख नहीं पाते। गंदी चीज़ हम नहीं खाते। मालपुआ, खीर, जलेबी, पेड़ा, बर्फ़ी वही हो जाता है। सब की इच्छा पूरी कर देते

हैं। फिर मरने के समय सब से कहा ''बाग में शरीर छोड़ेंगे। कच्ची समाधि बना देना और जो कोई चर्स की चिलम चढ़ावैगा उसका काम हो जायगा।" रोज़ फैज़ाबाद आते थे। पीछे कोई चल नहीं पाते थे। फिर हम पैर छूकर चल दिये। वहाँ से 8 बजे चले। शाम को गए थे। महीना गर्मी का था। उसी रात में दो या ढाई बजा होगा, बीसों कुत्ते साथ थे, करीब 15 मिनट यहाँ टहले फिर अन्तर हो गए। उनके मूँह में दोबारा दांत जम आये थे। शंकर जी के भक्त थे।

241. श्री निर्बैर शाह जी (अपढ़)

पदः– जे सुरति शब्द में ढारे हैं ते जग में जग से न्यारे हैं ।।1।।
जे मन काबू करि डारे हैं ते षट रूपन के प्यारे हैं ।।2।।
जे मन से भक्तों हारे हैं ते नर्क में पड़े दुखारे हैं ।।3।।
जे दीन भये चुप मारे हैं ते तप धन खूब संभारे हैं ।।4।।
जे मान अपमान को जारे हैं ते हर दम रहत सुखारे हैं ।।5।।
जे जग सुख लात से टारे हैं ते बिधि का लिखा बिगाड़े हैं ।।6।।
जे दया धरम उर धारे हैं ते आप तरे औ तारे हैं ।।7।।
जे सब में ईस निहारे हैं ते रूप ईस का धारे हैं ।।8।।

दोहाः– सारी श्रृष्टि में ईस हैं, और न दूजा कोय।
जा के जैसा भाव है वा को तस फल होय ।।1।।

चौपाईः– निर्भय निर्बैर हो। तन में करौ सैर हो ।।1।।
अब ही तो गैर हो। कैसे होय खैर हो ।।2।।

242. श्री अंधेशाह जी

[1]

पदः- भाष्य किहे से का भयो नाम रूप नहिं पाय।
अंधे कह जन्मै मरै चौरासी चकराय ।।1।।
मन काबू जब तक नहीं तब तक राम से दूर।
अंधे कह मन मिलि गयो प्रेम में चकना चूर ।।2।।
मन काबू जब तक नहीं फलै न कर्म औ धर्म।
अंधे कह सुर मुनि बचन छूटि सकत नहिं भर्म ।।3।।

[2]

पदः- सतगुरु से सुमिरन ध्यान जानि
फिरि हर दम उस पर ख्याल रहै ।।1।।
बनि दीन शान्त जुटि जावै जो सो भक्तौ माला माल रहे ।।2।।
धुनि नाम प्रकाश समाधी हो सन्मुख में प्रिय नन्दलाल रहै ।।3।।
अंधे कह तन को छोड़ि चलै फिरि नेक न जग का ख्याल रहै ।।4।।

[3]

पदः- दुनियाँ से मेल करत घूमत भगवान से मेल नहीं करते ।।1।।
यह मेल तुम्हैं करि देय फेल अब ही कुछ ख्याल नहीं करते ।।2।।
जो गर्भ में कौल किया तुमने उस पर तो ध्यान नहीं धरते ।।3।।
अंधे कह तन जब छूटैगा जमदूत नर्क में ले धरते ।।4।।

[4]

पदः- झूठे भक्त कथा हैं बांचत ।।1।।
नर नारिन को अर्थ बतावैं मन पापौं में नाचत ।।2।।
ईश्वर मौत को डरते नाहीं जग में लेंगड़ी खाचत ।।3।।
कह अंध शाह तन छूट जहाँ जमदूत आय के टांचत ।।4।।

243. बेनाम के सन्त

जिन्होंने मारि मन डारा उन्हीं को सूरमा कहना ।।1।।
बड़ा बैरी यह मन घर में उसी की जीतना कठिना ।।2।।
पड़ो तुम इसी के पीछे और सब ही जतन तजना ।।3।।
गुरु की प्रीति कर पहले बहुर घट शब्द को सुनना ।।4।।
मान लो बात यह मेरी करो मत और कुछ जतना ।।5।।
हार जब जाय मन तुझ से चढ़ा दे सुरति को गगना ।।6।।

244. बिना आज्ञा के फूल तोड़ लिए

पुरानी भक्त माल में कथा है महाराज जी बताते थे। दो गुरु भाइन की कुटी पास पास थी। खंदक लगी थी। फूल थे, आम थे। छोटे गुरु भाई कहीं गए थे। बड़े बाहेर से आए तीर्थ यात्रा करके तो आसन धरा

अश्नान किया। कुवाँ दोनों कुटी में थे। भगवान सालिकराम को नहवाये। छोटे गुरु भाई की फुलवारी में कुछ आम पके थे। दो आम तोड़ लाए। जब छोटे गुरु भाई आए तो बड़े गुरु भाई को दंडवति किया। देखा आम धरे थे। पूछा तुम्हारे पेड़ों में आम पके नहीं हैं यह कहाँ से लाए।" तो कहा "तुम्हारे पेड़ से।" इस पर छोटे गुरु भाई ने कहा "भगवान ने गुरु पूजन के लिए जनक जी की फुलवाड़ी में जाकर मालियों से पूछ कर फूल उतारे थे। तुम को भगवान के यहाँ बड़ा दंड मिलेगा। चलो राजा के यहाँ थोड़े दंड में निपटवा दें।" राजा के यहाँ गए हाल कहा। राजा ने दोनों हाथ कटवा कर ज़मीन में गड़वा दिये। उसी से देवना हो गया है। भगवान के यहाँ का दंड छूट गया।

245. श्री अंधेशाह जी

पद:- शान्ति दीनता दया धर्म बिन जग का चक्कर नहिं छूटै ।।1।।
अंधे कहैं देव मुनि भाषा अन्त समय जम गहि कूटैं ।।2।।
जान मान के चेति गए जे ते हर दम यह सुख लूटैं ।।3।।
बिना सिखे सतगुरु से भक्तौं द्वैत के तागा नहिं टूटैं ।।4।।

246. साहू की खीर

पुरानी भक्त माल की कथा महाराज जी बताते थे। एक साहू बड़े धनी थे। उनके गौवें बहुत थीं। बड़ी सेवा होती थी। साधू, ब्राह्मण, गरीब सब को मानते थे, सेवा करते थे। एक साधू आए। शाम को भोजन को कहा तो कहा "हम भोजन कर आए हैं एक भक्त के यहाँ से। एक बार पाते हैं दो पहर में। आसन लगाए। रात दो बजे उठे, शौच अश्नान से छुट्टी पाकर नेम में लगे। सुबह होते होते नेम पूरा हो गया। साहू आए, दंडवति किया और कहा "आप कुछ जल पान करैं" तो कहा "हम 12 बजे एक बार भोजन करते हैं। जलपान की हमारी आदत नहीं है।" जब 12 बजे तो साहू आए और कहा "महाराज, भोजन बन गया।" भंडारी महाराज साधू ब्राह्मणों के लिए अलग बनाते थे। घर का भोजन दूसरा भंडारी बनाता था। तो साधू गए। भंडारी ने खीर पूरी परोसा। भोजन किया

फिर कुछ देर सैन किया, फिर आसन बांध कर साहू से कहा "अब हम जाते हैं।" तो साहू ने कहा "महाराज, आप की बिरती बहुत ठीक है। जब आप को भोजन ही करना है तो यहीं भोजन करैं।" साधू साहू की विनय सुनकर रुक गए। साहू के यहाँ हमेशा खीर पूरी बनता था। गौवें बहुत थीं। खीर पूरी ब्राह्मण साधू सब को खिलाते थे। वह साधू कुछ समय तक साहू के घर रह गए। शरीर छूटने के समय उनका मन गऊ में लग गया। बछरा हो कर जन्मे। पूरा ज्ञान बना था। जब चलाए जाँय तो चले नहीं, बैठ बैठ जाँय। एक सिद्ध सन्त उधर से जाते थे। बछरे को देख कर पास आए। सब को वहाँ से हटा दिया और बछरे से कहा "चल कर अपने संस्कार पूरे कर डालो नहीं तो कई जन्म बछरा होना पड़ेगा।" बछरा कायदे से चलने लगा। साधू का यह चमत्कार देख कर साहू ने उनसे रुकने को कहा। साधू ने हाथ जोड़ कर कहा "मुझे खीर पूरी खाकर हजम करने की सामर्थ नहीं है। बछरे को भी समझाये जाता हूँ।"

247. अयोध्या जी के चार हठ योगी

मणि पर्वत पर सीता राम जप कर बहुत अजर अमर हो गये हैं। 15-20-25-30 हाथ तक के हैं। बाबा हरनाम दास बारह मास आधी रात में पांच पैकरमा करते थे तो मिलते थे। जब बाबा हाथ जोड़ कर दंडवति करैं तो वह सीताराम बोलैं तो महाराज से आकर बताते थे। उनकी आवाज़ आसमान को जाती थी। हमें भी दो बार दर्शन हुए हैं। महाराज के बारे में जो कहा है वह कापी में लिखा है–

यहाँ 4 हठ योगी हैं। एक जैन मंदिर में हैं। एक मलका विकटोरिया के पास से रास्ता है। शंकर जी समाधि पर पधरे हैं। पास में कुवाँ है। एक बिदेही के मंदिर के सामने ऊँचा बुर्ज है वहाँ पर हैं। एक दिगम्बर अखाड़े में मंदिर के नीचे हैं। बिदेही के बुर्ज वाले तो 30 हाथ के काले रंग के हैं। वह हमें आधी रात में यहाँ पीपल के पास तक पठवै आए। हम एक रोगी को देखने गये थे किला पर। बड़ी दया उनके है और दयावान तो सभी हैं।

248. श्री महाराज से प्राप्त उपदेश

झूठ का बाप पाप, पाप का बाप लोभ। यह काम, क्रोध, मद, मोह का बाप है। इन सब का बाप आलस्य है। यह भगवान के भजन और शुभ काम में बाधा डालते हैं। मन इनका संघी है। जमुहाई, नींद, नेत्रों में कड़वाहत और रह रह कर झिटका लगाना इस का काम है। शरीर को बेचैन कर देना, व्याकुल हो जाना, घबड़ाहट पैदा करना। आलस्य पर लात मार कर कितने भजन करि अजर अमर हो गए। खान, पान, कपड़े की परवाह न की। प्राण का लोभ छोड़ दिया। निर्भय हो गए। आप को मिटा दिये। दीनता की ढाल, शाँति की तलवार भगवान ने दे दिया। द्वैत भाग गया। प्रेम आकर लिपट गया।

लाला राम सहाय ने कहा है:-

वही वही सब वही वही। वह वार पार भरपूर रहा।
सरमद शम्स तबरेज़ सदा इस नूर में चकनाचूर रहा।
गुरु सैन सहूर से सूझ पड़ा बे बूझ बहुत दिन दूर रहा।
पीवो सहाय सब मस्तों से यह नगद नशा मंज़ूर रहा।

दो शब्दों के आठ बनाये गए हैं। अर्थ एक ही है।
मान अपमान हर्ष औ शोका। दुख सुख हानि लाभ दुइ ढोका ।।1।।
समय पाय के मूँदैं उघरैं। जब तक प्राण न तन से निकरैं ।।2।।
जो कोई भजन की बिधि को जानै। सोई इनको सम कर मानै ।।3।।

249. लाला महाबीर प्रसाद

उन्नाव

उन्नाव के एक लाला महाबीर प्रसाद वकील की औरत फैज़ाबाद की रहने वाली बूढ़ी 60 साल की थी। उनके दरवाज़े पर एक औघड़ गया और महाबीर प्रसाद से कहा "साले! जो तू ने मांस पूरी खाया है वह मुझे भी खिला।" तो लाला ने बनवा कर खिलाया और 80 रुपये दिये।

बड़े कंजूस थे। एक पैसा कभी किसी गरीब को न देते थे। फिर पड़ोस के लोग आ गए। उसमें कई औरतें भी थीं। एक के गर्भ था। औघर ने एक फूँक फेंका तो गर्भ गिर गया और वह चल दिया कहा

"साले! मैं गोपाल दास मरघटा पर रहता हूँ। तेरा काम हो तो आना। तब लाला ने कहा "रुक जाओ।" तो लाला की औरत ने कहा "देखो! गर्भ गिरा दिया। तुम रोकते हो।" वह चला गया। अब लाला के घर में ईंटों-पत्थर के टुकड़े रात दिन गिरने लगे। जब हम गए तो उनकी औरत आई और हाल बताया "आठ दिन से ईंटों-पत्थर के टुकड़े आ रहे हैं।" हमने कहा "जाकर हनुमान चालीसे के 11 पाठ शुरू करो।" तब सब बन्द हो गया। ऐसे निरदई होते हैं।

250. एक ठाकुर औघर

एक औघड़ ठाकुर उम्र 25 साल की होगी फैजाबाद नाके पर चना भुनाते थे। हम और जनकपुर के पंडित फ़ैजाबाद से आ रहे थे तो देखा। उनका स्वभाव बहुत अच्छा था। हमने पूछा तो हमसे कहा "हमै स्वतः औघड़ मिल गया। हम कोई गन्दी चीज़ नहीं खाते हैं। पर उपकार कर देते हैं। हमारे औघड़ बाबा बड़े अच्छे हैं। कुछ पुराना संस्कार था उसी से मिल गए। नहीं तो हमारी कुगति होती।"

हम उनको भंडार में पवाते थे। हमसे कहा "महीना जाड़े का है। हम चाय बना कर पीना चाहते हैं, दूध कहीं थोड़ा मिल जाय तो ठीक रहै।" हमने कहा "दूध यहाँ करीब न मिलैगा। तुम बना नहीं सकते हो?" तो कहा "एक सफ़ेद बोतल हो तो बना लें।" हमने बोतल दिया। उसने पानी भरा, मंत्र पढ़ा, बोतल को हाथ से हिला दिया। पानी दूध हो गया। 15 दिन रहे। रोज़ दूध बना लेते। जो जो पीते उसे पिलाते थे। एक साधू आया कहा "बाबा! यह मसजिद टूट सकती है? तो कहा "हम ऐसा काम नहीं करते हैं। उसमें भगवान की प्रार्थना होती है। फिर हमसे कहा "हम नैपाल जाते हैं एक जड़ी लेने।" फिर चले गए।

251. गोमती किनारे के औघड़

हमारे परिवार के चाचा यदुनाथ के साले आते थे। बताते थे कि गोमती किनारे एक पंडित मकान में रहते थे। वहाँ एक मंदिर कालिका देवी का है और वहीं एक चन्द्रिका देवी का मंदिर है। वहाँ 30 विद्यार्थी

पढ़ते थे दुर्गा जी की पुस्तक। एक दिन लड़के नदी के किनारे टहलने गए तो वहाँ एक औघड़ सड़ी लाश का मांस खा रहा था। लड़के डर कर भागे। एक लड़का खड़ा रहा। औघड़ ने बुलाया। लड़का पास गया तो कहा "अंगौछा बिछा दे।" उसने बिछा दिया तो 16 बकोट मांस दिया कहा "अपने गुरु को दे देना।" वह लड़का बड़ा दृढ़ था। लाया, खोला गया तो 16 माल पुआ थे। एक पंडित ने खाया। 15 के 30 टुकड़े करके आधा आधा लड़कों को दिया। सब को दुर्गा कंठ हो गई। जो काम हो दुर्गा पाठ से सुफ़ल हो जाता था। उससे सब लड़कों की जीविका खूब बन गई।

252. नानी के ननिहाल के एक सांप की कथा

नानी जब 12 वर्ष की थीं तो उनके ननिहाल में एक सांप एक औरत के पैदा हुआ था एक बीता का। वह दूध पीता था। फिर बड़ा हो गया। धीरे धीरे धीरे बढ़ कर हमारी बांह ऐसा मोटा हो गया। वह घर घर जाता था। सब उसकी खातिर करते, दूध लाते। जो इच्छा होती तो पी लेता नहीं तो मूड़ हिला देता। फिर जहाँ जहाँ खेत रहे देखने जाता। मज़दूर या घर के कहते कि पानी लावो जाकर तो घर आता। जो कोई मिलता उसके पैर पर मूंह धर कर गगरा, मेटुकी जहाँ पानी भरा धरा होता था वहाँ जाता तो घर वाले जान जाते कि पानी के लिए खेत वालों ने भेजा है। पानी जो ले जाता उसके साथ जाता। भोजन को जो कहते कि जाओ भोजन बनवावो तो औरतों के पास जाता, फिर चूल्हे पर जाता तो सब समझ जाते।

जाड़े का महीना था। बहुएँ सो रही थीं। लड़की जागती थी। कई मेहमान आ गये। रात को देर हो गई थी तो घर के लोगों ने लड़कियों से कहा ''तुम सब मिलकर भोजन बना दो। बहुएँ सो रहीं थीं।" वह तो रोज़ ही बनाती हैं। एक लड़की रंज हो कर उठी। अंगीठी में आग पर राखी मूँदी थी। उसने चिमटा से निकाल कर कंडा चूल्हे में झोंक दिया। जानती थी कि सांप रोज़ इसी में बैठता है। उसके ऊपर पड़ा तो पटपटाने

लगा। फिर मर गया। घर वाले बड़े दुखी हुए और मेहमान भी सांप का हाल जानते थे। फिर कुछ न बना। सुबह उसे सफ़ेद कपड़े में लपेट कर उस पर फूल माला चढ़ा कर खटोली पर ले गए पैसा मखाना लुटाते हुए। कोई नदी वहाँ थी उसमें प्रबाह किया। उस सर्प ने किसी से स्वप्न में कहा "इस बंश की लड़की सुखी न रहेगी। शादी होने पर मर जायेगी या बेवा हो जायगी।" वह सर्प पास में एक तालाब था वहाँ डोल डाल जाता और नहा कर तब घर आता था।

253. सिलपिल्ले भगवान
श्री महाराज जी की बताई कथा
(भक्त माल से संबंधित)

एक गांव में एक साधू आए। एक भक्त के दरवाजे पर कुवाँ था, आगे बरामदा था, खूब सफ़ाई दूर तक थी, महीना गर्मी का था। भक्त घर से निकले, ठाकुर थे कहा ''बाबा बरामदे में आसन रख कर तब डोल डाल जाव।'' बाबा ने वैसा ही किया। आसन बरामदे में रखा, डोल डाल गये, फिर अश्नान किया, कपड़े धोये। उन्हें सुखाने के लिए दो बांस गड़े थे, उनमें रस्सी बंधी थी। उस पर अचला-लंगोटी फैला दिया। फिर ठाकुर जी का डिब्बा निकाला, पारखत धोये, ठाकुर जी को अश्नान कराया, चन्दन लगाया, फूल सुंगधित ठाकुर भक्त ने दिये उन्हें चढ़ाया, धूप दिया, गुड़ का भोग लगाया, आरती किया, भगवान की परिकरमा करके दंडवति किया। फिर चरनोदक परसाद ठाकुर और उनकी लड़कियों को दिया। एक लड़की सात साल की थी, एक पांच बर्ष की थी। फिर स्वयँ लिया और जप करने बैठ गए।

ठाकुर की दोनों लड़कियाँ संस्कारी थीं, शुद्ध भाव की थीं। दोनों ने कहा'' बाबा। हमको भी भगवान को देते तो हम भी पूजा करतीं।'' बाबा ने कहा ''जप कर लें तब देंगे।'' जब बाबा जप कर चुके तो देखा कि दोनों लड़कियाँ बैठी हैं। बाबा ने सोचा कि सालिग्राम जी की मूर्ती बहुत अच्छी हैं यह पूजा क्या करेंगी, कहीं बह जायँगी तो हमें पाप लगेगा। बाबा की झोली में स्लेट के दो टुकड़े थे, आधी आधी छिटाँक

के। वही निकाल कर उनको दिया कहा "एक एक ले लो। काहे में राखोगी?'' लड़कियाँ बाँस की बनी छोटी-छोटी दो पिटारी लाईं। उसमें धोया सूखा कपड़ा बिछा कर बाबा के सामने रखा तो बाबा बड़े खुश हुए। एक एक टुकड़ा दोनों में धर दिया। लड़कियों ने पूछा'' बाबा इनका नाम क्या है?'' बाबा ने कहा ''सिलपिल्ले भगवान।" लड़कियाँ बहुत खुश हुईं। बड़े प्रेम से वह उनकी पूजा करने लगीं। इस से खेतों में अन्न बहुत पैदा होने लगा, घर में खूब बढ़ती होने लगी। जब लड़कियाँ शादी योग्य हुईं तब तक घर में सब सामान जुट गया। शादी हो गई। दोनों अपने अपने भगवान अपने साथ ले गईं।

उन दोनों की ससुराल वाले नास्तिक थे। एक की ससुराल वालों ने, घर के पास कुआँ था, दूसरी के घर के पास नदी थी, दोनों की पेटारी में कंकड़-पत्थर भर कर रस्सी से बांध कर चारों ओर कुआँ और नदी में फेंक दिया। वे दोनों पेटारी डूब गईं। जब लड़कियों ने जाना तो दोनों ने तीन दिन तक अन्न जल नहीं किया। घर वालों ने कहा "बड़ी भक्त हो तो बुला लावो।" लड़कियों ने पूछा "कहाँ छोड़े हो" तो उन्होंने कहा ''एक कुआँ मे", दूसरी के घर वालों ने कहा "नदी में।" दोनों लड़कियाँ- एक कुआँ पर और दूसरी नदी पर गईं। बैठ गईं। अपना कोंछ फैलाया और कहा "आवो मोरे सिलपिल्ले भगवान।'' तो कुआँ और नदी से पेटारी कूद कर कोंछ में आ गईं। उन पेटारियों को वहीं खोला गया सब के सामने तो उन पेटारियों में कंकड़ पत्थर न थे सिर्फ़ भगवान थे।

यह देख कर उन लोगों के ससुराल वालों की बुद्धि पलट गई। सब भक्त हो गये। फिर दिन पर दिन दोनों घर धन-अन्न पुत्रों आदि से सुखी होते गये। ऐसी सच्ची भक्त लड़कियाँ हुईं कि जिनकी शक्ति से नैहर व ससुराल वाले सभी सुखी हो गए। ऐसी लीला सिलपिल्ले भगवान ने की। बहुत बिस्तार है हम थोड़ा लिखा है। धन्य ऐसे माता पिता को कि जिनके ऐसी भक्त लड़कियाँ पैदा हुईं।

254. लाला हठी प्रसाद
मोहल्ला पक्का बाज़ार, बस्ती

पन्ना राजा के खजांची बड़े सच्चे जीव थे। हमारे भक्त थे। पेंशन काफ़ी मिलती थी। विद्यार्थी और बेवा औरतों को देकर अपनी गुजर भर को रखते थे। उनका नाम बस्ती में मशहूर था। कोई जाति का मरै तो फौरन जाते, बांध देते। हम से कहा ''हजारौं मुर्दा इन कांधौ पर मरघट ले गए हैं। मरने पर एक पैसा न निकला। वै बस्ती का हाल बताते थे:-

''मिलकी जाति में एक आदमी हो गया है। कई पुश्तों का धनी था। उसके खजाने से चोरों ने सुरंग लगाया। उसके घर से दो माह तक अशर्फ़ी ढोया। पता लगा। अंग्रेजों ने जाना तो मिलकी ने कहा, "पता नहीं कितना खज़ाना कै पुश्तों का है। हम भी उसी में डालते चले जाते हैं।" एक दिन महीना गर्मी का था। बाजार आधा फ़रलांग थी। वह दो रुपये चांदी के मुट्ठी में दाब कर चला। मुट्ठी खूब कसे था। हाथ पिराने लगा तो बाजार के करीब हाथ खोला। रुपये पसीने से तर हो गये थे। उसने कहा ''तुम रोवो मत, हम तुम्हें खर्च न करेंगे।" जा कर खजाने में छोड़ दिया। जब मरा तो कुंजिन (चाभियों) का छल्ला दांत तरे दबा कर मरा। फिर बड़ी मुश्किल से छल्ला निकाला गया। यह सब कई पुश्त के सूम (कंजूस) थे।

255. आटे में सान कर रुपया निगल गया

राम सुख पांडे, मुकाम बड़नपुर ज़िला फ़ैज़ाबाद, के मास्टर थे। परतापगढ़ में अजीत सोमवशी हाई स्कूल में पढ़ाते थे। वहाँ से जब रिटायर हो गये तो महाराज जी से बताया:-

एक गांव परतापगढ़ के समीप है। वहाँ एक ब्राह्मण और उसकी पत्नी रहते थे। उनके एक लड़का था। जब ब्राह्मण बीमार पड़ा तो उसने औरत से कहा ''तीन पाव आटा सान दो।" उसने पूछा "क्या करोगे?" तो कहा ''तुम सान दो और हमसे मत पूछो।'' उसने सान दिया। तब कहा "कोठरी के किवाड़ा उड़का दो। तुम आँगन में बैठो।" उसने सना आटा दे दिया, किवाड़ा उड़का दिया और आँगन में बैठ गई। लड़का

बाहेर गया हुआ था। उस आदमी के पास 60 रुपये थे। एक एक रुपये में आटा लगा लगा कर सब निगल गया। एक रुपये में लपेटने के लिए कम पड़ गया। उसे गले में रखकर मर गया। जब देर हुई तब औरत गई। किवाड़ा खोला। तो देखा कि एक रुपया गले में अटका है। रोने लगी। तब तक लड़का आया। उसने कहा ''दादा सब रुपया कैसे निगल गए? एक रुपया गले में चमकता है।'' उसकी माँ ने कहा "हमसे कहै कि तीन पाव आटा सान दो।" हमने कहा कि क्या करोगे तो कहा "तुम सान दो हमसे मत पूछो।" हमने सान दिया और हमसे बाहेर आँगन में बैठने को कहा। सो हम बैठ गईं। जब देर हो गई तो देखा तो मरे मिले। लड़के ने कहा "वही जो रुपया 60 था वह आटा में लपेट कर लील गए। एक रुपये के लिए आटा चुक गया। वह गले में रख लिया।" गांव के लोग आए। किसी ने कहा "पेट चीर कर रुपया निकाल लो।" तो एक ने कहा "नहीं"। जो रुपया गले में है वह निकाल कर कफ़न मंगा लो। जलाने के बाद यह रुपया थक्का बन कर चांदी का निकल आया। उसी से क्रिया कर्म किया गया।

256. गुरु उपदेश

गीता को कंठ किये एक पंडित उन्नाव में मिले। सरकारी नौकर थे। मन पर बातचीत होती थी कि बिना मन काबू किहे शुभ काम नहीं होता। तो हम से कहा "भगवान ने गीता में कहा है 'मन तो जड़ है, मन कोई चीज़ नहीं है'।" हमने कहा "भगवान सब में हैं और सबों से न्यारे हैं, वै सर्व शक्तिमान हैं।" तुम गीता कंठ किहे हो। जब कचहरी में रुपया अधिक मिलता है तो तुम्हारा मन खुश रहता है, जब कम मिलता है तो उदास?" तो कहा "हां" तब हमने कहा "जो मन कंठ होता तो तुम्हारे पट खुल जाते। बन्ध-मोक्ष का कारण मन ही है। मन इस शरीर को चलाने वाला ड्राइवर है। अच्छी जगह ले जाय तो जीव की अच्छी गती हो, खराब जगह ले जाय तो खराब गती हो। तो फिर तुम भगवान की बराबरी की बात बेकार करते हो।

यह मत्थे का ज्ञान झूँठा है। इसमें प्राण नहीं है। इसे मुसलमानों ने भी आडम्बर का ज्ञान कहा है। शुकदेव जी ने कहा है–"ज़हरीले जानवर मार देने में कोई दोष नहीं है।" ऋषियों ने कहा है कि "जो चोरी-डाका

मारते, घर फूँकते व बिरानी औरत से पाप करते हैं, लड़कियों को बेच लेते हैं उनको मार देने में दोष नहीं है।"

257. दो साधुन का हाल

महाराज जी दो साधुन का हाल बताते थे। एक बट के नीचे रहते थे, एक इमली के नीचे। बट के नीचे वाले 11 पर शयन करते, 2 पर उठते, नित्य क्रिया करके 3 बजे से जप-पाठ-पूजन दिन के 11 बजे तक करते। फिर जो कुछ भोजन का सामान आया, बनाया, भोग लगाया, पाया, बर्तन मला, शयन किया, 3 बजे शाम डोल डाल गए, फिर नहाया, 4 बजे से रात 10 तक जप पाठ किया। उसका भजन देख कर लोग उसे खूब मानते थे। भोजन का सामान, कपड़ा, बर्तन से खूब सेवा करते थे।

जो इमली के तले रहते थे वह अश्नान करके चुप चाप बैठे, सिर्फ़ लंगोटी रहती। जब फट जाती तो कोई दे देता, लगा लेते, जो कुछ खाने को दे दिया थोड़ा खा लिया। भूजा अन्न दिया तो एक मुट्ठी ले लिया। एक मिट्टी का पात्र जल पीने को था। ताल समीप था। हमेशा उसमें जल रहता था। चुप बैठे रहते थे।

नारद जी गए तो बिष्णू भगवान से कहा कि दो भक्त आप के देखा एक बट के नीचे है, अच्छा बंगला छाया है उसमें रहते हैं, बहुत जप पाठ पूजन करते हैं। दूसरे इमली के तले रहते हैं, लंगोटी लगाए चुप बैठे रहते हैं, बरसात जाड़े में उनको तकलीफ़ होती होगी। भगवान ने कहा कि तुम जा कर पहले बट के तरे वाले से कहना ''हम भगवान के यहाँ गए थे तो भगवान हाथी को सुई के नाका से निकाल रहे थे, तो वह क्या कहता है, आकर बताना, और इमली के तरे वाले से कहना तो वह क्या कहता है सो आकर बताना।'' नारद जी गए। बट के तरे जो साधू था उस से कहा तो उसने कहा "नारद जी! क्या आप पागल हो गए हैं? इतना बड़ा हाथी सुई के नाका से कैसे निकल सकता है।" फिर इमली के तरे वाले साधू के पास गए और उस से भी कहा। तो उसने कहा "नारद जी आप इतने बड़े भक्त होकर ऐसी बात कहते हो। भगवान सर्व शक्तिमान हैं। वह क्या नहीं कर सकते? जिनके रोम में ब्रह्माण्ड हैं, स्वांसा से निकलते फिर समा जाते हैं।"

नारद जी भगवान के पास गए, और कहा "आप की बात ठीक है।" भगवान ने कहा "फिर जाओ और बट के तरे वाले से कहना कि जितने पेड़ के पत्ते हैं उतने हजार बर्ष बाद तक मरोगे पैदा होगे, तब हम मिलेंगे। इमली के तरे वाले से कहना कि जितनी पत्ती हैं उतने हजार बर्ष जन्मौ-मरौ तब हम मिलैंगे।" नारद गए। बट के नीचे वाले साधू से कहा तो वह बोला कि हम ऐसे भगवान को लेकर क्या करैंगे कि इतने हजार बर्ष मरैं पैदा हों तब मिलैं। आसन बांध कर चल दिये कहा ''हम जाकर शादी करेंगे खेती करेंगे, लड़के होंगे, हमारी सेवा करेंगे।" इमली के नीचे गये और भगवान का संदेश साधू से कहा। साधू उठकर नाचने लगा कहा "भला भगवान मिलैंगे तो, हमें यह मरना पैदा होना मंजूर है।" बस भगवान प्रगट हो गए। नारद से कहा "देखो जिसकी तुम तारीफ़ करते थे वह भाग गया। उसका भजन दिखाऊ था। वह तन मन प्रेम से नहीं करता था। इस साधू का भजन असली था। यह हर समय हम में सुरति लगाए रहता था। भीतर बाहेर हम ही को देखता था।" नारद जी भगवान के चरनों पर गिर पड़े कहा ''महाराज! आप की लीला आप जानैं और कोई जान नहीं सकता।" फिर भगवान और नारद जी अन्तर ध्यान हो गए।

258. मोहनी माई ब्राह्मणी (अपढ़)

दोहा:- गठरी अपजस की लिहे सीधे नर्कै जाँय।
जस की गठरी जे लिहे ते बैकुण्ठै जाँय ।।1।।

चौपाई:- अपजस दोनों दिसि धिक्कार। जस से दोनों दिसि जैकार ।।1।।
सब से नीचा बने जो कोय। वा की दोनों दिसि जै होय ।।2।।
शान्ति दीनता आवै धाय। गोदी में चट लेय उठाय ।।3।।
छिमा नारि हर दम संग राखौ। मुख से बचन सत्य ही भाखौ ।।4।।
जब संतोष पुत्र मिलि जावै। तब सब चोरन मारि भगावै ।।5।।
माया निद्रा निकट न आवै। दूरहि ते लखि शीश नवावै ।।6।।
कहे मोहनी भजि करतार। जियते हो भव सागर पार ।।7।।

259. हनुमान प्रसाद पोद्दार

गीता बाग, गोरखपुर

यह रतनगढ़ राजस्थान के निवासी थे। गोरखपुर में गीताप्रेस पहले मामूली था। जब से हनुमान प्रसाद आए तब से प्रेस की उन्नति होने लगी, और आचार विचार वाले भक्त लोग आने लगे और काम करने लगे। जितने काम करने वाले हैं कोई नशा नहीं खाते। जिस देवता से जिसका प्रेम है उसका जप पाठ करते हैं नेम टेम से। अश्नान करके, नेम करके तब अपने अपने काम पर काम करते हैं।

कई साल का हाल है। 400 भक्त गीता प्रेस में रहे। कोई उर्दू नहीं जानता था, सिर्फ़ गिरधारी जानते थे। अगर कोई भांग के लिए सिल-लोढ़ा मांगे तो न दिया जाय। हनुमान प्रसाद ने रामायण का टीका किया और कई पुस्तकें लिखीं, और शायद गोस्वामी जी की पुस्तकौं का टीका किया है, सब पुस्तकौं की याद नहीं है। भक्त तो यह राधे श्याम के थे परन्तु प्रेम सब देवी देवताओं से था इससे उनको राम जानकी, राधे श्याम, बिष्णु कमला, शंकर पारबती, गणेश जी, षटमुख, हनुमान जी, भैरव, काली, दुर्गा, शारदा, सरस्वती, आदि सब के दर्शन होते थे, और सब परम्परा के भक्त उनके पास आते थे, सब को मानते थे।

गोरखपुर में जो अफ़सर आते सब गीता प्रेस दर्शन को जाते, हनुमान प्रसाद से मिलते। उनका यथा शक्ति स्वागत किया जाता था। भाई जी की कीर्ति भारत वर्ष में छा गई। बड़े संस्कारी पुरुष थे। जब कभी बीमार होते तो वैद्य लोग आते। सब का मान रखते थे कहते ''तुम्हारी सब की दवा करैंगे जिसमें किसी को दुख न हो।" अबकी बीमारी में डाक्टर लोग रोग न जान पाये। कोई भोग था। 20 दिन बाद मूँह में बदबूदार पानी आने लगा फिर शरीर छूटा। गीता बाग में जहाँ जलाए गये वहाँ हमने चिता के दर्शन किया है फिर गीता प्रेस गये।

वहाँ ऊपर बहुत चित्र हैं। सब उदास थे। मालूम होता था कि सब अंश इनमें से निकल गया है। नीचे छापा खाना है वहाँ नहीं गए। जब चित्र तेज हीन देखे तो मन अन्दर जाने को न चाहा। प्रेस को शक्ति हीन देखा। हनुमान प्रसाद किसी महापुरुष के आशीर्बाद से पैदा हुए थे। हमें

किसी भक्त ने लिखाया है। ऐसा प्रेस भारत में नहीं है। हम दो किताब पढ़े हैं। उनका चरित्र लिख नहीं सकते। जैसे वे निष्कपट भक्त थे कोटिन में कहीं ऐसा भक्त होगा। नाम मात्र लिखा है जिसमें उनकी यादगारी बनी रहे। प्रेस में सब पुस्तकें बड़ी शुद्धता से बांधी जाती हैं, कोई लात नहीं लगा सकता। हनुमान प्रसाद की लड़की की शादी में सब मज़हब के भक्त गये थे। गिरधारी बताते थे कि सब की बड़ी खातिर हुई। खूब आनन्द रहा। 81 बर्ष की उम्र में शरीर छूटा। 38 बर्ष की उम्र में गोरखपुर में आए। 43 बर्ष प्रेस में काम किया।

॥ श्री बिधुमंगल जी ॥

पदः–श्री कृष्ण भगवान दया निधि गोरखपुर सुख छाया है जी ॥1॥
श्री हनुमान प्रसाद वैश्य से गीताप्रेस खुलवाया है जी ॥2॥
कल्याण धर्म के ग्रन्थ छपाकर देश विदेश पठाया है जी ॥3॥
पढ़ पढ़ नर नारी बहु सुधरै धर्म ध्वजा फहराया है जी ॥4॥
त्याग विराग भीतरी जामें बिरलै कोइ लखि पाया है जी ॥5॥
सब देवन में समता जाकी दीनन पर अति दाया है जी ॥6॥
शान मान को दीन तिलाञ्जुल सन्त कृपा जग आया है जी ॥7॥
या से बृद्ध तरुण और बालक सब के मन में भाया है जी ॥8 ॥
जो जैसा वैसै दे भोजन धन पट पात्र बँटाया है जी ॥9 ॥
ऐसा पुरुष कोई मुश्किल से मिलिहै सत्य सुनाया है जी ॥10 ॥
प्रेस भी ऐसा और कहीं पर हमैं नहीं दिखलाया है जी ॥11॥
बिधु मंगल कहैं पूरन दया क समय आय नकचाया है जी ॥12॥

दोहाः– श्री हनुमान प्रसाद को श्याम लेंय अपनाय।
बिधु मंगल कहैं हम तुम्हे ठीक दीन लिखवाय ॥1॥

260. बलिराम दास

बलिराम दास ठाकुर 25 की उम्र में राम घट पर महाराज जी से मंत्र ले कर चार साल चित्रकूट रह कर साधन किया। फिर मुक्ति नाथ गए, नैपाल से कुछ दूर है। वहाँ तिब्बत के लोगों ने रहने की जगह बना दी। जुट गए। मुक्तिनाथ की पूजा कर देते थे। जो जाता

एक दिन भोजन दे देते थे। जो यहाँ के परिचय के लोग जाते उनसे बताते थे कि महाराज हमें रोज़ दर्शन देते हैं। 75 की उम्र में शरीर छोड़ा। वहाँ बहुत ठंड होती है।

261. कबीर जी की बानी

दोहाः– करना हो सो कर चलो सब समाज है साथ।
कालि भरोसे न रहो कालि काल के हाथ ॥1॥
कालि करै सो आज कर आज करे सो अब।
पल में परलय होयगी बहोरि करोगे कब ॥2॥
बुरा जो देखने मैं चला बुरा न देखा कोय।
जो दिल खोजा आपना मुझ से बुरा न कोय ॥3॥
या दुनियाँ में आयके छाँड़ि देय तू ऐंठ।
लेना है सो लेहि ले उठी जात है पैंठ ॥4॥
कबिरा खड़ा बजार में दोनों दीन की खैर।
ना काहू से दोस्ती ना काहू से बैर ॥5॥

262. शिवनाथ सिंह की बहन माया देवी

मास्टर हरनाथसिंह के चचेरे भाई शिवनाथसिंह की बहन मायादेवी की कुछ बातें लिखते हैं। वै दो माह बीमार रहीं। हम गये और कहा "जो कुछ तुम्हारे पास है सब बाँट दो नहीं तो मन जाहे में लग जायगा यहीं रह जावगी। जहाँ आशा तहाँ बासा।" सब सामान बाँट दिया। थोड़ा गाय का दूध पीती रहीं। हमने राम नौमी का परसाद भेजा कहा "इसे भी थोड़ा पा लेना।" परसाद प्रेम से लिया। राधा कृष्ण की भक्त थीं। राधा कृष्ण की मूर्ती पूजती थीं। राम नवमी की पंजीरी दशमी को भेजा था। बहुत थोड़ा एकादशी को पाया और कहा "अब हम जा रही हैं, विमान आ गया। कृष्ण भगवान खड़े हैं।" बस शरीर छोड़ दिया 75 की उम्र में।

263. शिवनाथ सिंह की धर्म पत्नी चन्द्रवती देवी

चन्द्रवती देवी काली जी की भक्त थीं पर भाव उनका सब देवी देवताओं में था। इस से अपना भोग भोग कर बैकुण्ठ गईं। उनके लड़के भी सब अच्छे हैं। अपना अपना कमाते खाते हैं। आपस में मेल भी है। 70 की उम्र में शरीर छोड़ा।

264. हरनाथ सिंह जी की धर्म पत्नी श्रीमती कमला की यात्रा

यह बान वाली गली, चौक, लखनऊ में रहते थे। वहाँ काली चरण इन्टर कॉलेज में वाइस प्रिंसिपल थे। सन 1966 में रिटायर श्री गुरुदेव भगवान की सेवा में, गोकुल भवन अयोध्या में आकर रहने लगे। उनकी पत्नी कमला उनके साथ रहीं। उनके मन में विचार उठा कि 1974 की दीवाली बच्चों के साथ लखनऊ में व्यतीत की जाय। दीवाली के एक हफ़्ते पहले वह लखनऊ गईं, और अपने भतीजे बद्रीनाथ सिंह के साथ लाल बाग में रुकीं। दो तीन दिन में जो सामान खरीदना था खरीद कर रख दिया था। दीवाली के दो दिन पहले करीब दो फरलाँग पर अपनी भानजी इन्द्रा के घर गईं। वहीं कुछ तबियत खराब हुई। बद्री और उनकी स्त्री उन्हें देखने गए। जा कर नमस्ते की और तबियत का हाल पूछा। उन्होंने सही सही जवाब दिया। फिर कहने लगीं "अयोध्या जी में तुम्हारे चाचा का अनुष्ठान पूरा हो गया, हनुमान जी का भोग लगाया, महाराज जी की आरती हो रही है।" हमने कहा "हाँ" फिर पूछा "धन तेरस का कोई बर्तन खरीदा? मेरे लिए भी दो चमचे ले लेना।"

बद्री ने अमीनाबाद जाकर हनुमान जी का भोग लगाया और इनको भी परसाद लाकर दिया जो उन्होंने बड़े प्रेम से खाया। फिर बद्री ने कहा "हम लोग आकर कल सवेरे तुम्हें अपने घर ले चलेंगे" तो कहा "अच्छा।" सबा दस बजे रात को बद्री व उनकी पत्नी घर चले गए। कमला चार पाई पर लेटी लेटी कुछ न कुछ बोलती रहीं। उन्होंने अपनी भानजी से कहा "कल सवेरे 9 बजे तक के मेरे भोग हैं।" वह लोग इस

बात को क्या समझतीं। सवेरे 5 बजे के करीब उनका बोल बन्द हो गया। भानजा बद्री को बुलाने आया और कहा "जलदी चलिए।" जब यह लोग पहुँचे तो वह बेहोश थीं। दीवाली का दिन था कोई डाक्टर नहीं मिला। बहुत दौड़ धूप के बाद एक डाक्टर आए। उन्होंने देख कर कहा "इन्हें सिविल हासपिटल पहुँचाओ। मोटर पर वहाँ ले जाई गईं। दो एक सुई लगाई गईं, आक्सीजन दिया जाने लगा पर कोई लाभ नहीं हुआ। चरनोदक मूँह में डाला गया पर उसकी दो चार बूँद अन्दर जा सकीं और बाकी अन्दर नहीं गया। मुँह से बाहेर गिर गया। सवेरे 9 बजे शरीर छूट गया। लाश लाल बाग बद्री के घर लाई गई। हरनाथ सिंह अयोध्या से दूसरे दिन सवेरे लखनऊ पहुँच पाये। वहाँ भैंसा कुण्ड पर उनका दाह संस्कार हुआ। तीसरे दिन सवेरे उनकी अस्थि बटोर कर हरनाथ सिंह अयोध्या आ गए। यहाँ सरजू जी में उनका विसरजन हुआ। तेरहीं, भंडारा, गरीबों को खिचड़ी वितरण आदि आश्रम से ही हुआ। वह बिष्णु भगवान-लक्ष्मी जी की प्रेमी थीं। अपने इष्ट के पास पहुँच गई और आनन्द कर रही हैं।

265. बड़े महाराज जी द्वारा बताई कथा

[1]

महाराज जी बताते थे अर्जुन ने भगवान कृष्ण से कहा "महाराज! जीवों को न अपने लोक भेजो तो बैकुण्ठ ही में भेज दो। यहाँ बड़ा कष्ट है।" भगवान ने कहा कि कोई तय्यार नहीं होता है। जो सुअर इमली के किनारे गड्ढा में जो चहला (कीचड़) है उसमें लोट रहा है उस से पूछौ। देखौ क्या जवाब देता है। अर्जुन गये, उस से पूछा "बैकुण्ठ चलोगे" तो उसने कहा "वहाँ का हाल बताओ।" अर्जुन ने वहाँ के सुख बताए तो कहा "हम वहाँ नहीं जाँयगे, हमें यहाँ बैकुण्ठ है, इसी चहला में लोटते हैं और अपना भोजन इधर-उधर ढूँढ़ कर खा लेते हैं।" तो अर्जुन ने भगवान से जा कर कहा भगवान ने कहा "जो जिस योनि में जाता है उसी में सुख मान लेता है।"

सुअर तथा और जानवर भी मैला खाते हैं। उसका स्वाद खोवा का बना दिया गया है। उनको गंध नहीं मालूम होती है। जो बासी होता है उसमें कुछ खटास हो जाती है इतना फर्क है।

जो सड़ा मांस मरे जानवरौं का कुत्ता-सियार-गिद्ध-कौआ खाते हैं उनको हलुआ का स्वाद मालूम होता है, नहीं तो वह जी ही नहीं सकते। उस सड़े मांस में जहर हो जाता है। भगवान जीवों को भोग भी भुगाते हैं, पर दया भी करते हैं।

[2]

एक ठाकुर के तीन लड़के थे। उन्होंने अपने जाने के कुछ समय पहले लड़कों से कह दिया था कि जब हमारा शरीर छूटेगा फ़लाने महीने में इतने समय तो हम फ़लाने पासी के यहाँ सुअर होंगे, माठे पर सफ़ेद टीका होगा। जब कुछ सयाने हो जाँय तो तुम सब आकर उस योनि से छुड़ा देना।

जब पैदा हुए तो लड़के जा कर देख आए। जब कुछ सयाने हुए तब तीनों लड़के तीर धनुष लेकर गए कहा "हम लोग आ गए। तुम को इस योनि से छुटा दें?" तो कहा "भय्या रहने दो हमैं कोई कष्ट नहीं है। तीरों से मारोगे तो हम को बहुत कष्ट होगा।" तो लड़के फिर घर चले गए। जिस योनि में जीव जाता है उसी में सुख मान लेता है। ऐसी भगवान की माया है। तीन युगों में पशु-पक्षी-जंगली जानवर, सर्प, मनुष्य की बोली बोलते थे।

266. कुआँ के समीप बृक्ष

जहाँ कुआँ होते हैं वहाँ पेड़ गूलर-बरगद, पकरिया या पीपल, आम, जामुन के होते हैं। इनमें से कोई पेड़ हुए तो गिलहरी फल खाने में चूक जाती हैं और यदि नीचे कुएँ में गिर गईं तो कुआँ के गोला के पास पंजों से पकड़ कर चपट जाती है और सर्प किनारे पर लग जाते हैं। गोह एक हाथ की पीली, एक भदमैली होती है इनको निकालते थे। उसमें बहुत तो चल देते थे जो हाल के गिरे होते थे, बहुत पड़े रहते थे। सांप कुआँ में पड़े मिलते थे, उन्हें निकालते थे। वे कोई कोई चले जाते कोई पड़े रहते थे। जो गोहैं होती हैं-एक पीली एक भदमैली-कुआँ से निकाले हैं। जब बाहर घूमते थे तब कुआँ देखते थे। लोगों से पूछते थे कि यहाँ एक या दो फरलाँग पर कुआँ तो नहीं है। अगर किसी ने बताया तो जाकर देखते थे। एक दिन दोपहर को यहाँ बैठे थे। मन में आया चल दिये। दतून कुण्ड के पास पहुँच गए तो एक बत्तख अपने

बच्चों को तैरा रही थी। एक बच्चा पड़ा चटपटा रहा था, उलटा पड़ा था, ज़मीन बहुत जल रही थी। वह सीधा नहीं हो पा रहा था। हमने उस बत्तख के बच्चे के ऊपर कमंडल से पानी छोड़ा तो तर हो गया। बस उसे उठा कर दतून कुण्ड में छोड़ दिया। साथ बच्चों के तैरने लगा। हम लौट आए। हमने अपने मन में कहा "इसीलिए भगवान ने हमैं यहाँ भेजा था। भगवान दया सिंधु हैं।"

267. बाबा नारायण दास

सीतापुर

पदः-चले बिन बिछुआ बाजै हमार ।।1।।
सोवत जागत चलत पन्थ में केवल नाम उठै झंकार ।।2।।
सब धुनि ते धुनि अनहद बाजै तीन लोक में हा हा कार ।।3।।
जेहि घर बाजै सोई सुहागिन साहेब रीझैं बिना सिंगार ।।4।।
कहैं दास नारायण बिन बाजे ते बिरथा जन्म गयो संसार ।।5।।

268. तकदीर

सीतापुर में एक हलवाई तानसेन गंज में रहता था। उसकी लड़की की शादी थी। बरात का चार फरलांग पर जनवासा था। दरवाज़े चार पर बराती और लड़का पीनस पर थे। लड़के का पिता हाथी पर था। रुपया लुटाता चला। एक आदमी छतरी ताने था। 12 या 16 तीलियों की थी। उसमें रुपये अन्दर गिर कर बाहर निकल जाते थे। बहुत लोग लूटे, लाँग में भरे थे। उसे एक रुपया न मिला। अंग्रेज़ देखते और हंसते थे। तब हम 14 साल के थे। हमें याद आई "अकबर हाथी पर सवार हो कर अशर्फ़ी लुटाते चले। एक पंडित मूड़ (सर) में पगिया लपेटे थे। बीच में मूड़ खुला था। जो अशर्फ़ी मूड़ पर गिरती थी सो मूड़ चोट खा जाता था। एक न रुकी न एकौ लूट पाये तो बीरबल ने एक दोहा कहाः-

अकबर कमला कर गहे कंचन बरसत नीर।
सर पर पाग दरिद्र की बूंद न रुकत शरीर ।।

यही हाल छतरी वाले का हुआ। यह तकदीर पर है।

269. तदबीर

दो आदमियों में बात होती थी। एक कहता था तकदीर बड़ी है एक कहता था तदबीर बड़ी है। एक साधू के पास गए। उनसे दोनों ने अपना अपना हाल कहा। साधू ने दोनों से कहा "इस कोठरी में चलो तब फैसला करूँगा।" दोनों गये। साधू ने कहा, "बैठो।" बैठ गए। साधू ने बाहेर से जंजीर बन्द कर दिया। गाँव करीब था। कुछ देर बाद तदबीर वाले को एक बेलचा जिसे गदेला कहते हैं उस कोठरी में मिल गया। एक खिड़की पीछे कोठरी में लगी थी कमर भर की उँचाई पर। तदबीर वाले ने उसे निकाल कर अन्दर रख दिया। गांव में गया कहा लोगों से कि हम दो आदमी भूखे हैं। लोगों ने सामान दिया। उसने बनाया खाया। फिर सब से कहा कि दूसरे के लिए वहीं ले जाँयगे। ले गए और भोजन दिया, जल दिया। वह पाये। फिर खिड़की से बाबा के पास तदबीर वाले गए। उधर से जंजीर खोला तब तकदीर वाले को बुलाया। बाबा से कहा ''हमारा फैसला कर दो।'' बाबा ने कहा "फैसला तो हो गया। तुम तदबीर को मानते थे तो खिड़की निकाल कर गांव में जाकर, सामान मांग कर बना कर खाए। फिर इनके लिए बना बनाया लाकर दिया। तुम्हारा विश्वास तदबीर में है, इनका विश्वास तकदीर में है।"

270. अनइच्छित कैसे हो

भगवान का भजन करने वाले जितने सन्त व माई हुई हैं उन्होंने अपने को सब से नीचा मान लिया है, और बड़े बड़े कष्ट सहै हैं। वे भगवान के दीन भिखारी हो गए। उनकी झोली में भगवान ने सच्ची भीख भर दी है [मुक्ति-भक्ति-ज्ञान-विज्ञान।] अन्त समय अपने पास बुला कर अपने ऐसा रूप बना कर सिंहासन पर बैठा दिया। इसे अचल पद भी कहते हैं। जैसी भक्त की इच्छा होती है वैसा ही भगवान कर देते हैं। अब वह अनइच्छित हो गया, न बोलता है, न डोलता है, न खाता है, न पीता है, जैसी संग (पत्थर) की मूर्ति होती है। निर्मल मन वालों की बासना सब यहीं नाश हो जाती है। बासना ही मन की नारी हैं, मन को घेरे रहती हैं। किस किसकी इच्छा पूरी करें। यही उसके

लिए कठिन जेल है। जहाँ दीनता आई तहां प्रेम की नदी उमड़ी। बस शरीर का ध्यान-भान भूल उसी में लय हो गया, जीव की गती हो गई।

शेर:– बोल बाला में पड़े मद माल में झूले हुए।
अन्त दोज़ख में पड़ौ भगवान को भूले हुए ।।

271. भगवान की लीला भगवान जानैं

लगभग 50 साल हो गए जब रामघाट पर बाढ़ आई थी। पौने दो माह रही। कभी कमर भर रहती कभी गाँठ भर रहती। तपसी जी की छावनी की सड़क, मनीराम की छावनी की सड़क पर पानी आ गया था एक हाथ ऊँचा। पहले सरजू जी यहाँ थीं बताते थे। यह राम घाट कहा जाता था। तपसी जी राम दास यहीं आकर बैठे थे। यह पंजाबी ब्राह्मण थे। तुलसी बाड़ी में जल काफ़ी भरा था। स्टेशन से नये घाट की स्टेशन तक रेल खड़ी थी। उसमें लोग डोल डाल जाते थे। सरकार साफ़ कराती थी। बहुत लोग मनीपर्बत की तरफ़ जाते थे। पेड़ों पर सांप-गिलहरी-मूस बैठे थे। जहाँ बन्दर थे वहाँ पेड़ों पर आम की पत्ती फरेंद की पत्ती खा कर रहते थे।

बड़ी पुरानी छावनी के करीब कुछ पुराने झाऊ थे। हमारे हाथ ऊपर उठाने से एक बीता ऊपर, चींटी बहुती गेद ऐसा बनाए कई जगह रहीं। न मालूम कै जगह की थीं। पानी झाउन पर चढ़ गया था। हवा से डारें हिलती थीं। चींटी एक नहीं गिरती थी। जहाँ हम रहे वहाँ एक खाहीं करीब 6 हाथ की थी वह बची थी। उस पर महाराज जी को तीन बार डोल डाल कराते और उसे धोते थे। तुलसी बारी में कितने छत पर से डोल डाल करते थे। मौनी जी के सोती के किनारे मचान गड़े थे उन पर डोल डाल करते थे। बहुत तकलीफ़ रही। जो बाहेर के लोग आए थे वै कहते थे "अब बरसात सावन में अयोध्या कभी न आवैंगे। जब पानी घट कर ज़मीन ठीक हुई तब चींटी सब उतरकर अपने अपने काम में लग गईं और सांप गिलहरी मूस सब जहाँ तहाँ चले गए। ऐसी भगवान ने शक्ती दे दिया। हम रोज़ देखने जाते थे।

272. जा को राखै साइयाँ मार सकै नहिं कोय

हमारे यहाँ सिधौली तहसील आठ कोस है। वहाँ से कोनी घाट का पुल शायद एक कोस था या अधिक हो। नदी है, शायद सरायन नाम है। चेंटा-चींटिन को जब पानी बरसना होता है या बाढ़ जल की आना होती है तो उन्हें मालूम हो जाता है। चेटौं के अंडे नदी के करीब 50 हाथ पर धरे थे। वे कुछ दिन पहले ढो कर दो सौ हाथ पर एक पेड़ था उसके खोखल में जा कर रख दिये। जब पानी की बाढ़ आई तो पेड़ के चारों तरफ़ पानी चढ़ गया। एक बीता खोखल बचा उसी में चेंटा अंडा सब धरे बैठे थे। एक साधू पेड़ के नीचे झोंपड़ी में रहता था। उसकी झोंपड़ी बह चली। वह एक बन्दर पाले था। साधू और बन्दर पेड़ पर चढ़ गए। बाढ़ में जो सर्प बहकर आते और पेड़ पर चढ़ते तो बन्दर उनको पानी में गिरा देता था। एक न चढ़ने दिया। हम कई आदमी नीमसार जाते थे तो यह तमाशा देखा। तीन दिन बाद बाढ़ निकल गई। भगवान की लीला कौन जान सकता है। जब वै रक्षक हैं तब कौन मार सकता है।

273. कुवाँ का हाल

जिस कुँए का जीर्ण उद्धार हुआ है पहले यही था। इसी से पानी लिया जाता था। बाबू प्रयाग नारायण ने महाराज जी से कहा ''महाराज! कुआँ कहाँ बनै?'' महाराज जी जा कर खड़े हुए कहा ''इस जगह बनै।'' तो वहाँ पूजन हुआ, परसाद बटा, फिर खोदना शुरु हुआ। 14 हाथ नीचे एक नीव कंकड़ और चौड़ी ईंटौं की निकली। वह चार हाथ चौड़ी थी। बीच में कलश मिट्टी का धरा था उस पर सात दिया बने थे। एक मिट्टी का कटोरा ऐसा था। सब जलाए हुए थे। निशान जले के बने थे कलश में। एक लाल बटिया धरी थी। उसे गणेश जी कहते हैं और दो मेंढक तीन तीन सेर के बैठे थे। जब हमने उनको छुवा तो मूत दिया, कूद कर अलग बैठे। महाराज जी ने कहा ''यह कोई सिद्ध पुरुष हैं। इतने नीचे इतनी कड़ी ज़मीन में बैठे हैं। जहाँ बैठे थे वहाँ एक हाथ लम्बी-चौड़ी ज़मीन मुलायम थी। नीव काटी गई, गोला जोड़ा गया। गोला

के आस पास काफ़ी जगह थी। महाराज ने कहा "इनको उसी जगह बैठार दो और मिट्टी ऊपर छोड़ दो।" हमने उनको बैठार दिया। वे बड़े ठंढे थे। ऊपर से मिट्टी छोड़ दिया।

274. बांसी के खजानची के मंदिर, राम घाट, का कुछ हाल

यह मन्दिर बाबा सुन्दर दास के हाथौं से बना है। इसी में पूजा करते रहते थे। एक कुवाँ बनता था मंदिर के अन्दर। एक ब्राह्मण करीब 40 साल का ईंटा झौवा (डलिया) में भर कर, गोला बाँधा जाता था, देता था। वह झौवा रस्सी बांधि नीचे चरखी से जाता था। एक बार चूक गया। उसकी मौत थी, झुक गया, सर के बल चला गया। सर फट गया। वह आदमी मर गया। बाबा ने उसका उद्धार नहीं कराया। वह ब्रह्म राक्षस हो गया। बाबा की बोली बड़ी मीठी थी। सेवकाना जाते तो खूब रुपया कमाते थे। रुपया स्थान में नहीं धरते थे। दो जगह धरते थे। एक राम बारी की बेवा थी वहाँ और एक कुरमिन बीबीपुर गाँव की थी वहाँ धरते थे। मरते समय हम भी मौजूद थे। हाथों के इशारे से बताते थे। उस ब्रह्म के जरिये से 13 जीवों को मारा। गोपाल दास ने भागवत सुनी। हमने कहा कि नहीं तरेंगे। एक शूद्र को मारे दस हजार गौवों की हत्या लगती है, वैश्य को मारे पचीस हजार की हत्या लगती है, क्षत्री को मारे पचास हजार और ब्राह्मण को मारे एक लाख गऊ की हत्या लगती है। औरत को मारे चार लाख गऊ की हत्या लगती है, औरत कोई जाति की हो बराबर हत्या लगती है। शूद्र जिसके हाथ का पानी नहीं पिया जाता उसको कहते हैं।

पं. जगन्नाथ 12 की उम्र से वहाँ रहते हैं। अब 72 के हैं। 60 साल से रह रहे हैं। हमें 53 साल हो गए। तब हम 30 की उम्र के थे। रोगी को देखने जाते थे। 12 बजा होगा तो एक साधू हमें बुलाने जाता था। गोपाल दास के ऊपर ब्रह्म आया था। एक साधू बाबा के गुरु भाई थे। उनके एक थप्पड़ मारा था। और 20 साधू बैठे थे। हम गए तो पूछा "तुम कौन हो?'' उसने कहा ''इटावा के जिन्न हैं।'' हमने कहा "बकाओ मत, ठीक ठीक कहो, तुम्हारा हक दिला दें।'' तो कहा ''मिठाई खाओगे।''

हमने कहा ''नहीं।'' फिर कहा ''कपड़ा लोगे।'' हमने कहा ''नहीं।'' फिर कहा ''रुपया लोगे" तो हमने कहा'' नहीं।'' फिर कहा ''कुश्ती लड़ोगे" तो हमने कहा "खड़े हो जाओ।" वह खड़ा हो गया और बड़े ज़ोरों से दोनों हाथ हमारी गर्दन पर धरा। हमने सोचा कि अगर हम इसे पटकेंगे तो पक्की जमीन है, चोट लग जायगी। फिर गोपाल दास के ऊपर से उतरेगा तो गोपाल दास के शरीर को कष्ट होगा। उस ब्रह्म के बल बहुत रहा, पेंच नहीं जानता था। हमने उसे झोली दांव से उठा लिया और लिटा कर दाहिने पैर का टिहुना छाती पर धरा और नाक बड़े ज़ोर से पकड़ा तब सब कबूल दिया। सब साधू सन्न हो गये।

एक दिन गोपाल दास आराम कुर्सी पर सो रहे थे। कुर्सी उलट दिया। एक दिन लालटैन चूर कर दिया। एक दिन बाबा ने कहा "मैं मेड़वा गांव को जाता हूँ।" वहाँ कुछ कारोबार था। गये। एक गुरु भाई जप करते थे। एक चाँटा मारा। एक माई कार्यकर्ता थी उसे बीमार किया। उसकी नाक सड़ी और वह मर गई। एक दिन काशी गए। वहाँ एक मंदिर में राघौदास, इनका चेला, उसकी औरत रहे। जगमोहन पर कई बार पटका, मर गया। गोपाल दास से आकर कहा कि राघौदास को मार आए। दूसरे दिन तार आया। फिर उसकी औरत आई, हाल बताया। हमने गोपाल दास से कहा "तुम मंदिर छोड़ दो।" इनका मोह मंदिर में है। जब मंदिर छोड़ दिया तब फिर किसी को तंग न किया।

एक चांदी का कटोरा जिसमें एक सेर पानी आता, उसमें कराही का खोवा भूना घी में, शक्कर मिला कर धरा जाता था। वह खाते थे, दूध पीते, अमावट जो मीठा हो, आम मीठे, फल मीठे खाते थे। ओयल में उनके चेला बनियाँ अच्छे वैद्य थे। वै रस देते थे, वह खाते थे। चार दिन पर बाल बनवाते। दो जगह लाखौं रुपया धरा था वह रह गया। एक लाख नाम जपते, राम मंत्र-जानकी मंत्र जपते, गीता रामायण का पाठ करते। अब 14 संगी उनके भूत हो गए हैं। बहुत पैसे का खर्च है। कौन उद्धार करावे। इधर उधर घूमा करते हैं।

अब पं. जगन्नाथ उसमें रहते हैं, पूजा करते हैं। शायद उनकी पत्नी-परिवार भी रहता होगा। इनके 3 लड़के हैं, सब नौकर हैं। सब की शादी हो गई है। इनको मंदिर में रहते 60 वर्ष हो गये। यहीं पढ़े फिर यहीं रहे। अब 72 की उम्र पंडित की है।

275. मास्टर हरनाथ सिंह मेहरोत्रा के पिता प्राग नारायण व उनकी धर्म पत्नी

वै शंकर जी के भक्त थे। दोनों प्राणी कैलाश गए। कैलाश का दिन जब चार हजार वर्ष यहाँ के बीतते हैं तो वहाँ का एक दिन हमारे सब के भोग का होता है। इस तरह पूरे कैलाश के दिन 92 करोड़ बर्ष का कैलाश का भोग है, यानी चौथे बैकुण्ठ के बराबर है। शंकर जी का एक माटी का चबूतरा बना कर एक पत्थर की बटिया रख कर जल चढ़ाने से कैलाश भेज देते हैं। ऐसे दयालू हैं। उनकी महिमा अलेख है। अपना भाव ठीक होना चाहिए।

276. सन्त संग का प्रभाव

एक डाकू ब्राह्मण बाबा हरीदास जी को नहवाने जाते थे 4 बजे सवेरे। हम भूल गए कि कै कोस से आते थे। हम और बद्री दास, दुर्गा दास अद्धा पर हरी दास जी की कुटी पर जाते थे तब वै डाकू मिले। बद्री दास दुर्गादास ने बताया। गोरे गोरे दोहरी देह के थे। उम्र 60 की होती। तब सब लोगों ने हरी दास जी से कहा ''बाबा! यह कैसे तरेंगे?'' तो कहा ''भाव से जीव तरता है, बिना भाव के नहीं।'' जप-पाठ-पूजन-कथा-कीर्तन में भाव न हो तो तर नहीं सकता। जब भाव होगा तब मन लगेगा। यह सच्चा भजन है। फिर उस डाकू की दशा विचित्र हो गई। बाबा के शरीर छूटने के बाद डाकू एक माह पर दर्शन को जाने लगे। भाव ही सिरोमणि माना गया है। भाव के आगे पाप का ताप शीतल हो जाता है।

277. परभू पासी (अपढ़)

पदः- सुमिरन बिन आओ जाओगे ।।1।।
चौरासी का चक्कर भारी छिन पल कल नहिं पाओगे ।।2।।
सतगुरु से जप भेद जानि कर सूरति शब्द लगाओगे ।।3।।
नाम कि धुनि परकाश दशा लय रूप सामने छाओगे ।।4।।
अमृत पिऔ सुनौ घट अनहद सुर मुनि संग बतलाओगे ।।5।।
नागिन जगै चक्र षट नाचैं सातौं कमल खिलाओगे ।।6।।
उड़ैं तरंग मस्त हो तन मन नैनन जल बरसाओगे ।।7।।

परभू कहैं अन्त तन तजि के चढ़ि विमान घर जाओगे ।।8।।

दोहाः– नैनन में हैं दो नदी सुर मुनि कीन बखान।
सुख की ठंडा देत जल दुख की गर्म महान ।।1।।
परभू कह सुमिरन करौ तन मन प्रेम लगाय।
तब पावौ इस भेद को सत्य कहेन हम गाय ।।2।।

बार्ताः–

परभू का कहना है कि जब प्रेम की नदी उमड़ती है तब ज्ञान-ध्यान-भान-मुक्ति-भक्ति का एक में संगम हो जाता है तब जियति शरन, जियति तरन जियति मरन हो जाता है जैसे सेंका अन्न फिर नहीं जमता है। ईश्वरी दास नाऊ हमारे गुरु हैं, अपढ़ हैं।

चौपाईः– ईश्वरी ईश्वर को गे जान। खुलिगे उनके आँखी कान ।।1।।
अपढ़ का चेला अपढ़ै जानो। तब हो उनमें सममति मानो ।।2।।
परभू कहैं बड़ा सुख भारी। हर दम जोड़ी जुगुल निहारी ।।3।।

278. श्री आगा जी (अपढ़)

चौपाईः– हरि सुमिरन में जब मन लागा। ता को जीव जियति में जागा ।।1।।
सुरति शब्द में जब वह तागा। कर्म रेख को डारेव दागा ।।2।।
भागा भागा फिरत अभागा। अब नहिं ह्वै है उस से नागा ।।3।।
शाँति दीनता का बर माँगा। तब हरि बाँधेव भक्ति की पागा ।।4।।
हंस केर बनि बैठेव कागा। करि विश्वास भजौ कहैं आगा ।।5।।

दोहाः– तन मन प्रेम में सानि कै जुटे नीच बनि जौन।
आगा कह सो भक्त है पहुंचै हरि के भौन ।।

279. सुमति शाह जी (अपढ़)

हनुमान जी की बताई जप विधि

चौपाईः– राम नाम मन ही मन ध्यावै। दूसर कोई जानि न पावै ।।1।।
तब वह नाम फरै फरियावै। सतगुरु से बिधि यह सिख आवै ।।2।।
द्वैत दुष्ट को मारि भगावै। शाँति दीनता हृदय लगावै ।।3।।
आप को मेटि परम पद पावै। सियाराम, प्रिय श्याम,
रमा हरि गिरिजा शंकर सन्मुख छावैं ।।4।।

सब सुर मुनि दर्शन को आवैं। जै जै कार करैं जस गावैं ।।5।।
सुमति शाह कहैं तन तजि भक्तौं। श्री साकेत में बैठक पावैं ।।6।।

280. श्री छाया शाह जी (अपढ़)

काशी बासी, स्वामी रामानन्द जी के शिष्य

चौपाईः– अपने को तो मानो नीचा। और सबन को मानो ऊँचा ।।1।।
तब तुम पर प्रभु दाया करिहैं। दीन बनो तो झोरी भरिहैं ।।2।।
मुक्ति भक्ति औ ज्ञान की झोरी।
बिन विज्ञान भरत कम झोरी ।।3।।
जब विज्ञान देंय भरि जावै। तब हरि तुमको गोद उठावैं ।।4।।
परमारथ पूरन जब ह्वै गा। तब वह भक्त जियति ही तरिगा ।।5।।
परस्वारथ भी संग करावै। जब तक तन से प्राण न जावैं ।।6।।
दोनों दल साधै जो प्रानी। वा की महिमा कौन बखानी ।।7।।
हर हनुमान की दाया मुझ पर। राम सिया का कर है सिर पर ।।8।।
अजर अमर तन भूख न प्यासा। बाहर वर्ष का तन भा खासा ।।9।।
छाया शाह की बिनती सुनिये। तन मन प्रेम से नाम
को धुनिये ।।10।।

281. श्री खिल्ली शाह जी (अपढ़)

पदः– सतगुरु सतगुरु क्यों नहिं जपते, अन्त समय पछिताओगे ।।1।।
श्री गुरु श्री गुरु क्यों नहीं जपते अन्त० ।।2।।
सीताराम सीताराम क्यों नहिं जपते अन्त० ।।3।।
जै सिया राम जै सिया राम क्यों नहिं जपते अन्त० ।।4।।
राधे श्याम राधे श्याम क्यों नहिं जपते अन्त० ।।5।।
राधे कृष्ण राधे कृष्ण क्यों नहिं जपते अन्त० ।।6।।
श्यामा श्याम श्यामा श्याम क्यों नहिं जपते अन्त० ।।7।।
राघौ राम राघौ राम क्यों नहिं जपते अन्त० ।।8।।
जादौ श्याम जादौ श्याम क्यों नहिं जपते अन्त० ।।9।।
श्री राम श्री राम क्यों नहिं जपते अन्त० ।।10।।

जै जै राम जै जै राम क्यों नहिं जपते अन्त० ।।11।।
हरे राम हरे राम क्यों नहिं जपते अन्त० ।।12।।
नमो राम नमो राम क्यों नहिं जपते अन्त० ।।13।।
हरे कृष्ण हरे कृष्ण क्यों नहिं जपते अन्त० ।।14।।
नमो कृष्ण नमो कृष्ण क्यों नहिं जपते अन्त० ।।15।।
हरे श्याम हरे श्याम क्यों नहिं जपते अन्त० ।।16।।
नमो श्याम नमो श्याम क्यों नहिं जपते अन्त० ।।17।।
श्यामा श्याम श्यामा श्याम क्यों नहिं जपते अन्त० ।।18।।
कमला बिष्णु कमला बिष्णु क्यों नहिं जपते अन्त० ।।19।।
बिष्णू बिष्णू क्यों नहिं जपते अन्त० ।।20।।

राघौ राम राघौ राम क्यों नहिं जपते अन्त० ।।21।।
जादौ श्याम जादौ श्याम क्यों नहिं जपते अन्त० ।।22।।
केशो नाम केशो नाम क्यों नहिं जपते अन्त० ।।23।।
विष्णू नाम बिष्णू नाम क्यों नहिं जपते अन्त० ।।24।।
केशौ केशौ क्यों नहिं जपते अन्त० ।।25।।
गोविन्द गोविन्द क्यों नहिं जपते अन्त० ।।26।।
रघुबर रघुबर क्यों नहिं जपते अन्त० ।।27।।
माधौ माधौ क्यों नहिं जपते अन्त० ।।28।।
रघुबीर रघुबीर क्यों नहिं जपते अन्त० ।।29।।
रघुपति रघुपति क्यों नहिं जपते अन्त० ।।30।।

जदुपति जदुपति क्यों नहिं जपते अन्त० ।।31।।
राघौ बाय राघौ बाय क्यों नहिं जपते अन्त० ।।32।।
जादौ बाय जादौ बाय क्यों नहिं जपते अन्त० ।।33।।
केशौ बाय केशौ बाय क्यों नहिं जपते अन्त० ।।34।।
कृष्ण बाय कृष्ण बाय क्यों नहिं जपते अन्त० ।।35।।
माधौ बाय माधौ बाय क्यों नहिं जपते अन्त० ।।36।।
बिष्णू बाय बिष्णू बाय क्यों नहिं जपते अन्त० ।।37।।
ओम ओम क्यों नहिं जपते अन्त० ।।38।।
सोऽहं सोऽहं क्यों नहिं जपते अन्त० ।।39।।
हरि ओम हरि ओम क्यों नहिं जपते अन्त० ।।40।।

गौरी शंकर गौरी शंकर क्यों नहिं जपते अन्त० ।।41।।
गिरिजा शंकर गिरिजा शंकर क्यों नहिं जपते अन्त० ।।42।।
हनुमति हनुमति क्यों नहिं जपते अन्त० ।।43।।
गणपति गणपति क्यों नहिं जपते अन्त० ।।44।।
शारद शारद क्यों नहिं जपते अन्त० ।।45।।
सरस्वति सरस्वति क्यों नहिं जपते अन्त० ।।46।।
काली काली क्यों नहिं जपते अन्त० ।।47।।
दुर्गा दुर्गा क्यों नहिं जपते अन्त० ।।48।।
ज्वाला ज्वाला क्यों नहिं जपते अन्त० ।।49।।
भैरों भैरों क्यों नहिं जपते अन्त० ।।50।।

भरत लाल को क्यों नहिं जपते अन्त० ।।51।।
लखन लाल को क्यों नहिं जपते अन्त० ।।52।।
शत्रुहन लाल को क्यों नहिं जपते अन्त० ।।53।।
गौराँग गौराँग क्यों नहिं जपते अन्त० ।।54।।
नित्यानन्द को क्यों नहिं जपते अन्त० ।।55।।
बलिराम बलिराम क्यों नहिं जपते अन्त० ।।56।।
सूर्य नारायण को क्यों नहिं जपते अन्त० ।।57।।
गंगा गंगा क्यों नहिं जपते अन्त० ।।58।।
षट मुख षट मुख क्यों नहिं जपते अन्त० ।।59।।
चक्र सुदर्शन क्यों नहिं जपते अन्त समय पछिताओगे ।।60।।

चौपाईः– सुमिरन धरम दया करि लीजै।
अन्त समय हरिपुर चलि दीजै ।।1।।
वहाँ का सुःख करै को वरनन।
निरखत ही खुश होवै तन मन ।।2।।

दोहाः– परमारथ परस्वार्थ बिन होवै नर्क में बास।
खिल्ली कह सुर मुनि कहा बात मानिये खास ।।1।।

शेरः– यह सब देवी देवता करते हैं कल्यान।
खिल्ली कह सुमिरन करै मुक्ति भक्ति दें ज्ञान ।।1।।

282. श्री सफ़ा शाह (अपढ़)

अल्ला, अल्ला जपा करौ दिल को अपने सफ़ा करौ ।।1।।
खोदा खोदा जपा करौ दिल को अपने सफ़ा करौ ।।2।।
नबी नबी जपा करौ दिल को अपने सफ़ा करौ ।।3।।
रबी रबी जपा करौ दिल को अपने सफ़ा करौ ।।4।।
दाता दाता जपा करौ दिल को अपने सफ़ा करौ ।।5।।
मालिक मालिक जपा करौ दिल को अपने सफ़ा करौ ।।6।।
मौला मौला जपा करौ दिल को अपने सफ़ा करौ ।।7।।
साहेब साहेब जपा करौ दिल को अपने सफ़ा करौ ।।8।।
करीम करीम जपा करौ दिल को अपने सफ़ा करौ ।।9।।
रहीम रहीम जपा करौ दिल को अपने सफ़ा करौ ।।10।।
साँईं साँईं जपा करौ दिल को अपने सफ़ा करौ ।।11।।
सुभान अल्ला सुभान अल्ला जपा करौ दिल० ।।12।।
महबूब महबूब जपा करौ दिल को अपने सफ़ा करौ ।।13।।
सरकार सरकार जपा करौ, दिल को अपने सफ़ा करौ ।।14।।

दोहाः– सफ़ा शाह कहैं सफ़ा हो तन मन प्रेम में सान।
जियतै में सब प्राप्त हो तब संग लेंय सुभान ।।1।।

पदः- यार मिलन का रास्ता बनिये सब से नीच।
सब से सरल उपाय यह छूटै भव की कीच ।।2।।
सुमिरन में शक्ती बड़ी अन्दर से खुलि जाय।
एक तार जारी रहे नाम की धुनि भन्नाय ।।3।।

शेरः– दुनियाँ अपने मतलब की है।
राम रहीम से नफ़रत की है ।।1।।
एक घड़ी नहिं कसरत की है।
सुनिये कैसी गफ़लत की है ।।2।।

283. श्री भोला मस्तान (अपढ़)

भोला मस्तान सीतापुर में एक फ़कीर थे। जब हम 12 साल के थे तब वै 60 साल के थे। साँवले साँवले दोहरी देह के थे। उनको कोई

शर्बत पिलावै तो वै कुल्ला करते थे। जब उनसे कहैं "बाबा! यह शर्बत है, मीठा है, कुल्ला नहीं किया जाता, पिया जाता है" तो कहैं "शर्बत है, मीठा है," तो जितनी मौज हो उतना पी लेते थे। अगर न कहैं तो सब ले लेकर कुल्ला कर डालते थे। कोई अलफ़ी पहिना दे तो जब डोल डाल जाँय तो नदी में हल जाँय। फिर निकलैं तो अलफ़ी निचोड़ैं नहीं, पानी टपकि टपकि कर सूख जाय, सड़ कर गिर जाय निकालैं नहीं। हिन्दू-मुसलमान, अंग्रेज़ उनको सब मानते थे। शहर में घूमा करते थे। जहाँ मौज हो वहीं बैठ जाते, लेट जाते। भोजन हिन्दू मुसलमान, अंग्रेज सब देते थे। मास-मछली कोई नहीं खिलाता था। जो पहले ले गया और अपने हाथ खिला दिया, पानी पिला दिया, तो खा लिया और जो लाए लिए खड़े हैं तो कहते ''साले! किसका किसका खाँये।'' लोग हंस कर लौटाल ले जाते थे। 125 पर शरीर छोड़ा था।

284. तकनी माई कबरिन (अपढ़)

प्यारो लगै जदुबीर मोरी सजनी ।।1।।
मोर मुकुट दोऊ कानन कुण्डल पीत बसन
पीते कसे कछनी।। प्यारो० ।।2।।
मुरली अधर धरे हैं कूकत भृकुटी फेरि करत है हसनी।। प्यारो० ।।3।।
दौड़ बाट में राह रोक दे दोउ हाथन करे गसनी।। प्यारो० ।।4।।
दूध दही सब लूट लेत है संग ग्वाल करैं चखनी।। प्यारो० ।।5।।
नाचै छम छम घुँघरू बाजैं तन मन ह्वै जाय मगनी।। प्यारो० ।।6।।
बाम भाग में राधे सोहैं हरे हरे पहिरे बसनी।। प्यारो० ।।7।।
सतगुरु करै लखै सो झाँकी तन तजि हरिपुर बसनी।। प्यारो० ।।8।।

285. नारद और गान विद्या

पाटन दीन जोशी, बिसवां सीतापुर, ने बताया कि नारद जी, सनकादिक, शुकदेव जी को चारौं बैकुण्ठों में, कैलाश, इन्द्रपुरी में जाने की रोक नहीं है। नारद जी प्रथम बैकुण्ठ में जहाँ क्षीर समुद्र है, लक्ष्मी नारायण रहते हैं, वहाँ जाने के लिए फाटक पर पहुँचे तो जय-विजय द्वार

पालों ने कहा "इस समय भगवान तुम्बरू गंधर्व का गान सुन रहे हैं, आप न जाँय जब तक गान न हो जाय। बाद में जाना।" तो नारद जी लौट पड़े और कहा "गान हम खुद जानते हैं।" नारद जी सुने याद किहे थे, गान की बिधी नहीं जानते थे। एक दिन बैठकर गान करने लगे जब समाप्त हुआ तो बैकुण्ठ के फाटक पर गये। जय विजय से कहा। दोनों ने कहा "जाव अब भगवान बैठे हैं जो पूछना हो वह पूछ लेना।" नारद जी गए, महाराज-महारानी की दंडवति किया। भगवान ने कहा "बैकुण्ठ में घूम कर देख आवो।" नारद जी गए तो पहले जहाँ राग-रागिनी रहते थे वहीं पहुँचे। देखा कि सब अंग-भंग पड़े हैं तो पूछा रागों से। वे बोले "तुमको गाने की बिधी नहीं मालूम है। हम सब अंग-भंग हो गए। चारौं बैकुण्ठों में, कैलाश में, शेश के यहाँ जाते थे, अब कैसे जाँय?"

तो नारद जी देख कर आए। भगवान से हाल कहा। भगवान ने कहा "तुम शंकर जी के पास जाव वह गान विद्या के आचार्य हैं।" नारद जी शंकर जी के पास आए हाल कहा। शंकर जी ने कहा "तुम एक हजार वर्ष तुम्बरू गंधर्व के पास सिखो।" नारद जी गए। एक हजार बर्ष सिखा, फिर शंकर जी के पास आए। शंकर जी ने कहा "तुम ने दीनता से नहीं सिखा। गुरु से बड़ी दीनता से सीखा जाता है। एक हजार बर्ष जा कर फिर सीखो।" तो फिर गए। बड़ी दीनता से सिखा। फिर शंकर जी के पास आए। शंकर जी ने कहा "जाव! द्वारिका पुरी में सात दिन सत्यभामा के पास सिखो।" गए और सिख आए। तब शंकर जी ने सौ बर्ष सिखाया तब राग रागिनी ठीक होकर सब जगह जाने लगे। पहले नारद जी इकतारा से सिखाये गए। बाद में बीणा दिया गया। तब नारद जी गंधर्ब हो गए।

286. बैजू बावरे और तान सेन

अकबर के वक्त में बैजू बावरे गंधर्ब आए। शंकर जी का मंदिर था। बैजू बावरे से कहा गया कि शंकर जी को गाना सुनाओ तो बैजू बावरे ने सूर जी की बनाई कृष्ण भगवान की ध्रुपद सुनाया तो शंकर जी ने प्रसन्न होकर मूर्ति से मुखारबिन्दु निकाल दिया, तब बैजू बावरे ने अपना सोने का मुंदर मूंह में रख दिया। फिर मूर्ती जैसी की तैसी हो गई। इस घटना का हल्ला हो गया। अकबर ने कहा "जो मुंदर को मूर्ति से निकाल दे तो वह बैजू बावरे के बराबर गंधर्ब होगा।"

कुछ समय बाद तानसेन ग्वालियर से आए। लोगों ने उनसे कहा तो वे बोले "हम शंकर जी को सुनावैंगे। जैसी उनकी इच्छा होगी वैसा होगा।" फिर तानसेन जी ने अपनी बीना का ओहार उतार कर बीना को ठीक करके एक दोहा सुनायाः–

दोहाः– सदा भवानी दाहिने सिद्ध करैं गन्नेश।
पांच देव मिलि रच्छा करैं ब्रह्मा बिष्णु महेश।

फिर तान सेन जी ने शंकर जी की ध्रुपद जो पंचानन की बनाई है सुनाया। शंकर जी ने मूर्ती से मुखारबिन्दु निकाल कर मुंदर बाहर कर दिया। फिर बैजू बावरे और तान सेन लिपट कर मिले। अब जो ध्रुपद बैजू बावरे ने शंकर जी को सुनाया था वह लिखता हूँ। बैजू बावरे मृदंग बजाते थे।

पदः– नाचत सुढंग ऐ नन्दनदन बृन्दावन अमित मनमथ मदति
मरदन सघन कुंजन मंजु ।।1।।
संग गोपि गण के बीच ए थिरकत भूषणमणि मै चलत कुंडल
गंड मंडित विमल बसन सुरंग ।।2।।
बिच बिच बिराजत श्याम ए बिच बिच तरुणी सोभा नील कमल
स्ववर्ण कौस्तुभ माल रचित अनंद ।।3।।
सुर गण विमानन चढ़े ब्रम्हा, बिष्णु, नारद छकित पुलकित सूर
के प्रभु जैति जै जै जैति आनंद कंद ।।4।।

।। पद पंचानन का ।।

ध्रुपदः– शिव की मुरति चन्द्र भाल ।।1।।
संग लीन्हे गौरी बाल प्यारी कहौरी मुन्ड माल हौं
जोगी ध्यान न पावैं घंटा बजत घन नन नन नन।। शिव० ।।2।।
जै सोही बाम अंग जटा जूट सोहै गंग डिमकि डिमकि
डमरू बाज घंटा बजत घन नन नन नन।। शिव० ।।3।।
जटा जूट सोहै ब्याल बाघम्बर अति विशाल शिव के नेत्र
अगिनि ज्वाल घट घट सब मा पारबति पति स्वामी शक्ती पति
नंदी पति गण पति योग सिध्यानी तब ही सुमिरौं शिवध्यानी
शंकर सर्बदा सच्चितानंद अब सैल कन्या वरं परम रम्यं धा

धा सा स सि ग ग री कृं ध ति ध प नि ज प ता सा मम मन
म गरे ग म सा री सा धा पा मा गा सा पंचानन बिनती करत
सप्त स्वरन बाजी तान घंटा बजत घन नन नन नन।। शिव की
मुरति चन्द्र भाल ।।4।।

तीन कड़ी इस रीति से बजाई जाती है:–

किटि किटि का किटि किटि का किटि किटि का किटि का
किटि कृधान किटि धा धा धा धा

पराल के बोल:–

धा किटि किटि धा किटि धा किटि किटि धा, किटि किटि धा,
किटि धा, किटि किटि धा किटि किटि धा किटि धा किटि किटि ।।

तानसेन जब नैपाल गए हैं तो शंकर जी को दो ध्रुपद सुनाया है। शंकर जी खूब साजे गए थे, मूर्ति में मुकुट लगाया गया था।

[1]

पदः– क्रीट मुकुट लसत भाल कानन कुंडल विशाल सोहै री ।।1।।
हिम गिरि हिम गिरि लसत भुअंगम ढफ़ डमरू
मृदंग खाँझड़ी बाजत ताल नई।। क्रीट० ।।2।।
त्वहंग त्वहंग किटि धा धा किटि धिलांग
धुम किटि धा ।। क्रीट० ।।3।।
कहत मियाँ तान सेन गुनी जन गान करत पावत बैकुण्ठ धाम
दोनों दिशि जै जै कार ।। क्रीट० ।।4।।

तब शंकर जी हँसे हैं, क्रीट मुकुट गिर गए। फिर तानसेन ने कहा अब दूसरा पद हो जाय तब लगाना नहिं तो फिर हँसैगे तो गिर जाँयगे। तब फिर वैसा किया गया। नैपाल के राजा ने कहा कि तुमको क्या इनाम दिया जाय, जो माँगो सो दें। तान सेन ने कहा "हमैं कोई ज़रूरत नहीं है। हमारा जो हक है भगवान खाना-कपड़ा कर्मानुसार देते हैं। हम भगवान का गान करते हैं। हमारे ऊपर भगवान की बड़ी दया है।" तब राजा चुप हो गए।

[2]

पदः– (ध्रुपद)

अडंड डंडन पर अखंड खंडन पर शुभ नगर ए ।।1।।
धारा धारा धुरपा छंद त्रिवट तिल्लाना प्रबंध गीत संगीतन के

न्यारे न्यारे कर बम हर हे गंगाधर हे काम दहेन शिव
चिन्तामणि संपूरन कर ए ।।2।।
अंग अनंग अंगन वाघम्बर ए ।।3।।
कहत मियाँ तानसेन गुनी जन गान करत स्वर सुधा सुधा सम ए ।।4।।

फिर शंकर भगवान हंसे, मुखारबिन्द मूरति के ऊपर निकल आया। तानसेन ने सितार रख कर दंडवति किया। लोगों की आग्रह से कुछ दिन वहाँ रहे। सभा में गान होता था वहीं सभी गाने बजाने वाले आते थे। सब तानसेन की बड़ी खातिर करते थे। उनसे जो पूछते वह सब सबको बताते। जब तानसेन वहाँ से चले तो राजा और पबलिक व गाने वालों के आँसू चलने लगे। तानसेन ने सबको समझाया परन्तु वै सब प्रेम में कुछ बोल न पाये। फिर तान सेन वहाँ से आकर ज़िला सीतापुर मल्लापुर राव साहब के यहाँ गए। वहाँ भी अच्छे गाने वाले आते थे। मल्लापुर में सभा लगी। तानसेन का गान हुआ। दो पद सुनाया। पहला पद यह है तीन ताल का तिल्लाना–

[1]

तिल्लाना:– माई जंगल पखेड़ू आयो री ।।1।।
झिंव-झिंव झिंव-झिंव करत झिंगुरवा ता पर मोढ़वा करत
शोर तुम तन नन नन नन नन नन नन माई० ।।2।।
डढ़ियन डढ़ियन करत किलोलैं छतिया बोलत
धड़ धड़ सो झपट धतिलांग धतिलांग धिलांग धिलांग
तुम दिर ना कहैं तानसेन तिल्लाना तन नन तुम सोहैं
क्रीट मुकुट बैजंती माल ।। माई० ।।3।।

[2]

फरहत का है:

गजल:– हौं जिस पै फ़िदा गुल हाय चमन देखी श्याम वरन
एक कामिनियाँ ।।1।।
ओ अब्र मिसी दंदां की दमक घन बिज दमकै
जैसे दामिनियाँ ।।2।।
गेसू में फंसा ले ताइर दिल चंचल मृगनैनी बामिनियाँ ।।3।।
फ़रहत वह अदा है कहरो बला मन मोहि लेत
सुखधामिनियाँ ।।4।।

जब यह दोनों पद हो गए तब राधा कृष्ण प्रगट हो गए। सभा में जै जैकार होने लगा। फिर महाराज महारानी ने तान सेन के सिर पर हाथ फेरा। तान सेन ने चरनों पर शीश धरा। तब महाराज महारानी अन्तर हो गए। वहाँ 2 दिन रहकर तान सेन औरंगाबाद आगा के यहाँ को चलने का विचार किया। तब राव साहेब और सभा वाले सब ने कहा "हम लोग कुछ दूर आप को भेजने चलेंगे तब हमैं शान्ती आवैगी।"

तब तानसेन ने कहा "तुम सब को शांति मिलै वही बात ठीक है।" सब चल दिए। जब चार फ़रलांग चले तो तानसेन ने देखा कि राव साहेब थक गये तो तानसेन उसी जगह बैठ गए। कुछ देर बाद तान सेन ने राव साहेब से कहा "आप थक गए हमें बड़ा दुख हुआ। अब आप सब वापिस जाओ।'' तब सब लोगौं ने कहा "हम सब जाते हैं सवारी भेजैंगे तब वह आवैंगे। इतना पैदल यह कभी नहीं चले हैं।" सब लोग तानसेन से मिल कर चले गए। वहाँ से चार घोड़ों की बग्घी आई तब राव साहेब तानसेन से लिपट कर मिले कहा "अब हमारी थकावट चली गई, शरीर हलका हो गया। राव साहेब अपने मकान पर आये तानसेन औरंगाबाद आगा के यहाँ आए। वहाँ बड़ा स्वागत हुआ। फिर सभा लगी। गान शुरू हुआ। मंसूर और कबीर राम भक्त थे। उनका एक एक पद तानसेन ने सभा में गान किया। राम जानकी प्रगट होकर तानसेन के सर पर हाथ फेर कर अन्तर हो गए। सब सभा सन्न हो गई। सब को दर्शन हुए।

॥ मंसूर का पद ॥

पद:– अगर है शौक मिलने का तो हर दम लौ लगाता जा ।।1।।
द्वैत की धूल को लेकर मसल तन पर रमाता जा ।।2।।
तोड़ तसबी फेंक धागा किताबैं डार पानी में ।।।3।।
वजू का तोड़ कर कूचा प्रेम प्याले को पीता जा ।।4।।
न रहे रोज़ा न मर भूखा न जा मसजिद में कर सिज़दा ।।5।।
मुसाहिब बन के क्या होगा मुसीबत को जलाता जा ।।6।।
कहै मंसूर दीवाना खुदा ही आप हो जाना ।।7।।
यही कूचा फ़कीराना इसी कूचे से आता जा ।।8।।

॥ कबीर जी का पद ॥

पद:– हमन है इश्क मस्ताना हमन को होशियारी क्या ।।1।।
रहें आज़ाद या जग में हमें दुनियाँ से यारी क्या ।।2।।
न पल बिछड़ैं पिया हमसे न हम बिछड़ैं प्यारे से ।।3।।
जिन्हौं की प्रीति है लागी उन्हैं फिर इन्तज़ारी क्या ।।4।।
जो बिछुड़े होंगे प्यारे से भटकते दर बदर फिरते ।।5।।
मेरा तो यार है मुझमें हमन को बेकरारी क्या ।।6।।
कबीरा इश्क जब पकड़ौ गरूरी छाँड़ दो दिल से ।।7।।
वो चलना राह नाज़ुक है हमन सिर बोझ भारी क्या ।।8।।

फिर तानसेन वहाँ एक दिन रहकर ग्वालियर को रवाना हुए। आगा बड़े धर्मात्मा थे। हिन्दू मुसलमान सब को बराबर मानते थे। जो कोई आवै याचना करै तो खाली हाथ न जाय। हिन्दू मुसलमानों की शादी का सामान, बरतन, शामियाना, तम्बू, छोलदारी, कनात अलग अलग रहती थी।

बैजू बावरे को शंकर जी, पारबती जी का आशीर्बाद पहले ही हुआ था। एक गंधर्व स्वत: सिद्ध हो गए। तानसेन को बिष्णु कमला का आशीर्बाद पहले ही हुआ। यह भी स्वत: सिद्ध गंधर्ब हो गए। तानसेन की समाधि ग्वालियर में है। बैजू बावरे का नहीं मालूम कहां शरीर छूटा था।

287. बादशाह हुसैन

हमारे यहाँ से कबरा गाँव सात कोस है वहाँ बादशाह हुसेन सात भाई थे। बादशाह हुसेन बड़े पर उपकारी थे। काफ़ी जमींदारी थी। वै भी हिन्दुन के काम काज के बर्तन, शामियाना, तम्बू, छोलदारी कनातें रखते थे। माड़ौ छाने में खंभा रखते हैं। वै सब रंगाये हुए धरे थे। मुसलमानों के अलग रहते थे। ज़मानत लाखौं की कर देते थे। किसी ज़िले से कोई आ जाय, जान पहिचान कुछ नहीं है पर जो चीज मांगै फ़ौरन देते थे। उन पर भगवान की बड़ी दया थी।

288. साधू राम किशुन दास

हमारे गांव का नाम इसरवारा है, ज़िला सीतापुर। जब हम 10 या 12 साल के तब बल्दी सुनार के दरवाज़े पर एक साधु राम किशुन

दास, कौम के लोहार आए। उम्र 40 वर्ष की थी, बहुत गोरे रंग के लम्बे थे, बाल, दाढ़ी सर के, मोछ के सुनहरे थे। बल्दी के चार लड़के थे– परमेश्वर दीन, शम्भूदीन, भगवान दीन, गिरिजा दयाल।

हमारे मंझले चाचा को गाने का शौक था, ढोलक बजाते थे और डंड ताल लोहे की होती है, उसे सींक भी कहते हैं, वह बाजा बलदेव जी का है। चाचा के पास परमेश्वर दीन, बल्दी का लड़का आया हाल बताया कि एक साधू गाने वाले आए हैं, हमारे दरवाज़े पर ठहरे हैं। हमारे चाचा गए दंडवति किया, फिर कहा "बाबा! कुछ सुनावो" तो कहा "क्या सुनावैं" तो चाचा ने कहा "मेघ मलार''। बाबा ने कहा ''महीना जेठ का है, यह राग बरसात का है।'' तो चाचा ने कहा "बाबा! मेरी इच्छा इसी राग के सुनने की है" तो बाबा ने अपना चिकारा उठाया। वह सारंगी से बड़ा था। उसे ठीक करके गणेश जी की बंदना की। दो मेघ मलार सुनाया। मेघा आसमान पर आ गए, बरसने लगे। फिर इतना जल बरसा कि गांव में गांठि भर जल भर गया। गांव वालों ने कहा कि इतना जल कभी नहीं बरसा है, आगे के बड़े बूढ़े बताते थे। फिर बाबा कई दिन रहे, खूब गान बजान होता था।

॥ फ़रहत जी के मेघ मलार ॥

[1]

तीन ताल

आज उमड़ि घुमड़ि आई घटा ॥1॥
असुवाँ बहावैं बृज नारी दुख पावैं, ठाढ़ी ठाढ़ी अकुलावैं,
सकुचावैं पछितावैं कौंधा सुरस देखावै, घन बिजुली हिलावै,
मानो पटा ॥2॥
बिरह मरोरा मारै मदन टिकोरा, नस नस पोरा पोरा फ़रहत चहु
वोरा घिरि आयो घनघोरा, घर लागत सूनो सूनो अट पटा ॥3॥

[2]

तीन ताल

उमड़ि बृज बदरी गिरत कारी कारी रे ॥1॥
घा घा घा घा घन शब्द सुनावै, चपला चमकि चमकि डरपावै
कांपै जिया कांपै जिया थरथरान बृज नारी रे ॥2॥

फ़रहत बिरहिन को जिया हूँकै गुंजत भौंर कोकिला कूकै नाहीं
पिया नाहीं पिया पिया पिया रटत पपीहा डारी डारी रे ॥3॥

289. मिसरिख में एक गरीब लड़के का गान

जब नीमसार का पैकरमा फागुन में 84 कोस का होता है तो पैकरमा घूमकर मिसरिख शायद दशमी उजेरी को आ जाता है। बड़ा मेला पूरन मासी तक होता है। वहाँ पर गाने वाले दूर दूर से आते हैं, उनकी सभा लगती है। गान रोज़ होता है। तब हम 23 साल के थे। हमारे चाचा वहाँ गए थे और गाने वालों से परिचय थी। एक लड़का 16 साल का, सांवला, गरीब था, पुराने कपड़े पहिने था। वह संस्कारी पुराना गाने वाला था। वह छटपटा रहा था। चाचा ने पूछा "क्या बात है?'' तो कहा ''हम भी कुछ सुनाते परन्तु बड़े गंधर्व हैं हमें वहाँ कोई जाने न देगा।" हमारे चाचा ने उसे ले जा कर सभा में बैठार दिया। सब ने पूछा तो चाचा ने कहा "उसकी इच्छा कुछ सुनाने की है।"

सब ने कहा "अच्छा सुनाओ जो इच्छा हो।'' उसने ध्रुपद राग सुनाया। सब चुप हो गए। दो घंटा गान किया। सब ने कहा "हम सब इसके सामने गा नहीं सकते। सब राग रागिनी इस के पास बैठे हैं, हमारे पास नहीं आवैंगे और कृष्ण भगवान उसके सामने नृत्य कर रहे हैं।" वह लड़का नेत्र बन्द करके वीरासन से बैठ कर गान करता था। जब गान बन्द करता तब नेत्र खोलता था। जब गान बन्द किया तब सब ने उसे छाती से लगाया, नये कपड़े मंगाए गये, उसे दिये गए। रुपया सब देते थे, न लिया, कहा ''हम गरीब आदमी हैं हमारी माँ है। गांव के लोग सब रोज़ आते और आसपास के अन्न कपड़े का इन्तज़ाम करते हैं। सिर्फ़ गान सुनते हैं।

290. बिहारा सिंह की बताई एक विचित्र गंधर्व की कथा

बिहारा सिंह 92 की उम्र में मरे। जब वह 12 बर्ष के थे तब इनके पिता ने एक राजा का हाल बताया था। वह बिहारा सिंह ने हमसे बताया। उनके पिता की देखी बात है।

एक राजा के यहाँ एक गंधर्व आया। राजा से कहा ''हमारा गान सुनै तो हमारी तारीफ़ न करै।" उस राजा को गाने का शौक था। सभा लगी। बीच में एक मेज़ पड़ी थी। उसने सितार ठीक करके गान शुरु किया। मेज़ पर एक मास का गोला प्रगट हो गया। गान पूरा होते होते राग का रूप बन गया। सब बसन भूषन बसन प्रगट होकर सज गया। सिर्फ़ कुछ कसर नाक में ठीक होने को रह गई। होनहार, राजा के मुख से निकला वाह वाह। बस गंधर्व ने राजा के सिर पर सितार मारा। लौका फूट गया। मामूली चोट लगी। उसने कहा "हमने पहिले कह दिया था हमारी कोई तारीफ़ न करे।" फिर उसने अपने करेजे में कटार खोंस दिया, मर गया। फिर वह राग रोकर अन्तर हो गया।

291. जो जस कीन तो तस फल चाखा

अहमदाबाद में ठाकुर बद्री सिंह पुलीस में नौकर थे। हवलदार थे। यह किस्सा तीन सौ वर्ष का है। वह रिटायर होकर यहाँ आए। मकान पूरे बूँदी पठान का पुरवा, ज़िला रायबरेली, में है। वह हमसे बताए कि एक फ़कीर रोज़ फेरी लगाता था और कहता था–

"जो जस करै ता तस फल पावै।
पूत भतार के आगे आवै ।।"

एक मुसलमानिन ने अपनी बहू से कहा ''यह रोज़ यही बकता है। कल दो रोटी में मीठा ज़हर मिलाकर रख लेना। जब आवै तब दे देना। देखैंगे कि हमारे पूत भतार के आगे कैसे आता है। वह खा कर मर जायगा।

फ़कीर फेरी लगाते हुए यही कहता हुआ आया तो बहू से कहा ''रोटी दोनों दे दे।'' बहू ने दे दिया। संयोग वश उसका मर्द और लड़का नौकरी से मोहर्रम की छुट्टी पर, जब वह घर से नौकरी पर जाता था, तब फ़कीर से मिल कर जाता था और जब आता था तो फ़कीर से मिलकर घर जाता था। दोनों बाबा जी की झोंपड़ी पर आए। बाबा से कहा ''हमैं भूख बहुत लगी है।'' बाबा ने कहा "बच्चा! हमें दो रोटी मोटी मिली हैं। एक एक खा लो हम सबर करके रह जाँयगे। नमक हमारे पास नहीं है।'' दोनों ने कहा, "भूख में रूखा सूखा सब खा लिया जाता है।" दोनों खाकर, थके थे, सो गए। फिर ज़हर का नशा चढ़ा। मर गए।

दूसरे दिन फ़कीर फेरी लगाने निकला और जो रोज़ कहता था वही कहता हुआ उसने यह और कहा कि हमारे यहाँ दो मुसाफ़िर मुसलमान आए। हम से कहा। "बाबा! भूख बड़ी लगी है।" हमने कहा "हमैं दो मोटी रोटी मिली हैं। एक एक खा लो। हम सबर करके रह जाँयगे।" वह एक एक रोटी खा कर थके थे सो गए। फिर मर गए। बड़े गोरे रंग के थे। सब शरीर दोनों के काले हो गए। जिसके हों अपने उठा लावै। तमाम लोग देखने गए। पता लग गया तो वो दोनों औरतें भी गईं। वहाँ कुछ न कहा। मुसलमान लोग उठा लाए। घर के बाहेर धरे फिर जा कर सब ने दफ़न किया। तब दोनों औरतें घर में छाती पीट पीट कर कई दिन रोती रहीं। बाबा सांच कहता था "जो जस करै तो तस फल पावै। पूत भतार के आगे आवै। हमारे और बहू के आगे आ गया।" फिर लोगों ने औरतों से पूछा कि "क्या रोटिन में ज़हर पड़ा था जो गोरे थे काले हो गए।" तो कहा "किसी ज़हरीले सांप ने काट खाया होगा। रोटिन में ज़हर कौन डालता है।" सब लोग चुप हो गए और अपने अपने घर चले गए।

।। कबीर जी के दोहे ।।

खाड़ खनै जो और को ता को कूप तयार।
कह कबीर मानो सही सुर मुनि वेद पुकार ।।1।।
साधन करना कठिन है कहब सुनब आसान।
कह कबीर जे जानिगे खुलिगे आँखी कान ।।2।।
तन मन प्रेम से जाव जुटि साधक होवै सिद्धि।
कह कबीर विश्वास करु दिन पर दिन हो बृद्धि ।।3।।

292. श्री घसीटे शाह जी (अपढ़)

जहाँ बोलैं पक्षी मोर बृज की लता लागैं प्यारी ।।
जै राधेश्याम राधेश्याम राधेश्याम राधेश्याम ।।1।।
सखा सखी सब संग में सोहैं श्री राधे सुकुमारी ।। जै राधे० ।।2।।
कृष्ण मनोहर बंशी बजावैं नैन सैन दें मारी ।। जै राधे० ।।3।।
मोर मुकुट सिर ऊपर राजै कुंडल कानन धारी ।। जै राधे० ।।4।।
पीत बसन पीतै है कछनी कमर में कसे संभारी ।। जै राधे० ।।5।।
रहस करन सब हिलि मिलि लागे कूदैं दै कर तारी ।। जै राधे० ।।6।।

नाचैं गावैं भाव बतावैं घुँघरू पग झनकारी ।। जै राधे० ।।7।।
सुर मुनि नभ से नृत्य को देखैं एक टक रहे निहारी। जै राधे० ।।8।।
प्रेम में मस्त बोल नहीं फूटैं नैनन आँसू जारी ।। जै राधे० ।।9।।
बृज के नर नारी सब देखैं खड़े हुए चुप मारी ।। जै राधे० ।।10।।
सतगुरु करै लखै निसि बासर जियति होय भव पारी ।। जै राधे० ।।11।।
कहैं घसीटे शाह चेतिये मिलै न ऐसी बारी ।। जै राधे० ।।12।।

293. हरि दास जी

दि. 29.7.75

हरी दास मुसलमान जगदीश पुरी में मौलसरी के नीचे रहते थे। उनका पद है। जसोदा जी को सुना रहे थे। श्याम सुन्दर प्रगट हो गए। जसोदा जी के चरन छुए। फिर हरि दास जी जसोदा जी के चरन छूकर भगवान के चरन छुए। भगवान ने कहा! "बस दो कड़ी रहने दो। चारौं पूरी न करौ।" इतना कह कर सर पर हाथ फेर कर अन्तर हो गए। फिर जसोदा जी ने हरि दास के सर पर हाथ फेरा और अन्तर हो गईं।

यह पद हमारे पास 12 की उम्र से है। हम आज इस पर ध्यान दिया। इसमें चार कड़ी होना चाहिए। तब हरि दास ने सब हाल बताया। इस से दो कड़ी पूरी नहीं किया। मौलसरी का हाल पूछा तो कहा "वह पेड़ बड़ा छायादार घनघोर था और सीधा था, मोटा काफ़ी था। पानी की एक सरवर रोक देता था। उसके नीचे हम बारह मास रहते थे। 36 बर्ष पर भगवान का कलेवा (मूर्ति) बदल कर जहाँ कलेवा गाड़े जाते हैं वहीं गाड़ दिये जाते हैं। सब के मन में विचार आया कि इस पेड़ का कलेवर बने तो बहुत ठीक रहेगा। हमैं सुनकर बड़ा दुख हुआ तब रात में महाप्रभू ने कहा ''तुम दुखी न हो। पेड़ का समय आ गया है। वह स्वत: प्राणहीन होकर पृथ्वी पर सैन कर जायेगा और अन्दर पोला हो जायगा। रात 2 बजे के समय में पेड़-पत्ती सूखी हुई, जमीन पर पड़ा मिला। सब लोग देखकर चकित हो गए। हम भी पेड़ के नीचे थे कुछ पता न चला कैसे गिरा। कोई आवाज़ न हुई। फिर उसे लोग बकुल कहने लगे और दर्शन करने आने लगे। फिर तलाश करके दूसरे पेड़ का कलेवा बनाया गया। उसी पेड़ के नीचे उनकी झोंपड़ी बना दी गई।

।। हरिदास जी का ध्रुपद ।।

माई चटक मटक ठुमुकि चलत चितवत
मन हरत आन नन्द को नदन अति अनूप स्वर सुगन्ध
बन माली ए ।। माई० ।।1।।
उलटि पलटि ताल मूल नाचत हंसत नहिं लेत ताल चपल
चलत गिरधारी ए ।। माई० ।।2।।

294. कृष्ण भगवान युधिस्थिर बार्ता

महाराज जी बताते थे कि एक समय भगवान कृष्ण ध्यान में बैठे थे तो युधिस्थिर जी दर्शन को गये। लौट आए फिर दुबारा गए, लौट आए। चौथी बार गए तो भगवान से कहा "सारा विश्व आप का ध्यान करता है, आप किसका ध्यान करते हैं।" भगवान ने कहा "जो हमारा ध्यान तन-मन प्रेम से करता है हम उसका करते हैं। जो हमारा जप तन मन प्रेम से करते हैं हम उनका करते हैं।"

तो कहा "महाराज! हमें भी बताओ।" भगवान ने कहा "जो हमारा राम नाम है जानकी जी ने शंकर जी को बताया है, फिर राज-गादी के बाद हनुमान जी को बताया है, वही तुमको बतावेंगे।" पहले जसोदा जी को बताया, फिर कुंती जी को, फिर युधिस्थिर जी को, फिर अर्जुन, फिर भीम, फिर सहदेव, फिर नकुल, फिर द्रोपदी को बताया था। कहा "इसकी आचार्य जानकी जी हैं।" हमें भी लिखाया गया है कि तीनों बहनिन को, भरत जी को, लखन लाल जी को, शत्रुहन लाल जी को, दस हजार सखी संग अवतरित भई हैं ब्राह्मण-क्षत्री-वैश्य के घर उन सबको बताया है। जो बारह हजार सखा राम जी के साथ अवतरित भये हैं ब्राह्मण-क्षत्री-वैश्य कुल में, उनको बताया, लंका में मंदोदरी को बताया, बिभीषण को लंका में राम जी की प्रेरना से हनुमान जी ने बताया है। जब लड़ाई पर सब कटक (सेना) गई है बिभीषण जी आते थे राम जी के दर्शन को। रामानन्द जी ने द्वादश महाभागवतों को बताया है परन्तु प्रचार करने के लिए कबीर जी, रैदास जी से कहा है। "ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य को बतावैंगे सब को नहीं। तुम जिसको प्रेम हो उसको बताना। जैसे गंगा जल के सब अधिकारी हैं वैसे ही राम मंत्र के।"

295. श्री बनहूस शाह (अपढ़)

कुतुब नगर

चौपाईः– संगति से मेरी मनहूसी। निकल गई जिमि धान कि भूसी ।।1।।
बिन संगति यह होना मुशकिल। संग रहत दुनियाँ की किलकिल ।।2।।
या से सतगुरु करि भजु हरि को। जियति जानि भव सागर सरको ।।3।।
समय स्वाँस तन है अनमोला। भजि हरि नाम सुफल करु चोला ।।4।।

दोहाः– संगति से सुख होत है संगति से दुख होय।
चारों युग की बात यह जानि गहै जो कोय ।।1।।

सोरठाः– कहैं शाह बनहूस सुर मुनि संतन जो कही।
हमहूँ करि विश्वास तुम से आय क यह कही ।।1।।

दोहाः– कामी क्रोधी तरि गए कंजूसन भा नर्क।
कह बनहूस मानौ सही या में नेक न फर्क ।।1।।
लोभी धन में हर समय बने रहत आसक्त।
कह बनहूस कैसे भजैं मिलत न नेकौं वक्त ।।2।।

पदः– राम भजन बिन तरि नहिं सकते नर नारी कंजूसी ।।1।।
तन मन तो धन की संग्रह में हर दम रहत जलूसी ।।2।।
सतगुरु से जप भेद जानि जो सूरति शब्द में ठूँसी ।।3।।
नाम कि धुनि खुलि जाय अंखडित चोर सकैं नहिं मूसी ।।4।।
माया मृत्यु नींद संग भागी जाय पताल में घूसी ।।5।।
षट झाँकी सन्मुख रहै हरदम कहैं शाह बनहूसी ।।6।।

296. जन्म अष्टमी

मुख्य तिथि है 12 बजे रात तक मिल जाय। अगर तिथि न मिली तो रोहनी (नक्षत्र) की ताकत कम हो गई। सब इन बातौं को नहीं मानते हैं। दो हमेशा करते हैं। एक गृहस्तों की एक साधुओं की। यह झगड़ा लगा है। बड़े महाराज कहते थे "भगवान राम-कृष्ण गिरिहस्तों के घर जन्म लिये थे साधुन

के यहाँ नहीं। जो गृहस्थ रहें वही हम को रहना चाहिए। हम भी गृहस्तों के घर पैदा हुए हैं। बेकार झगड़े से क्या फ़ायदा। गृहस्तों के यहाँ से साधुओं को कितनी मदद मिलती है। जानते हैं पर उसपर अमल नहीं करते।"

साधू वही भगवान के यहाँ पहुँचता है जिससे किसी से बैर न हो, जीवों पर दया करै, अपनै तकलीफ़ सह ले दूसरे को आराम पहुँचावै उसकी गती होती है। अगर ऐसा नहीं है तो जप-पाठ-पूजन-कीर्तन करता है पर द्वैत भाव भरा है वह वहाँ नहीं जा सकता। भगवान के खाता में वहाँ दर्ज होता है, बार बार कर्मानुसार जन्मता मरता है।

297. श्री खिदमत शाह जी (अपढ़)

कुतुब नगर

पदः– काम क्रोध मद लोभ मोह ए तन में हर दम राजि रहे हैं ।।1।।
सारा सुकृत लूटने के हित छिन छिन में ए गाँजि रहे हैं ।।2।।
मन इन्हीं के संग में रहता अपने साज को साजि रहे हैं ।।3।।
सतगुरु से जप भेद जानि कै इन सब को जे गाँजि रहे हैं ।।4।।
तब तो यह सब बिलग जाय ह्वै दूरहि ते लखि भाजि रहे हैं ।।5।।
अमृत पियो सुनो घट अनहद मधुर मधुर धुनि बाजि रहे हैं ।।6।।
हर दम राम सिया रहें सन्मुख मुद मंगल तब छाजि रहे हैं ।।7।।
अन्त छोड़ि तन चढ़ि सिंहासन चलि साकेत विराज रहे हैं ।।8।।

दोहाः– मन को माँजि क साफ़ करि लेहु नाम धन पास।
एक भरोसा राम का छोड़ो जग की आस ।।1।।

298. श्री महबूब शाह (अपढ़)

लाहौर

पदः– तुम्है हम देखत रहत महबूब ।।1।।
छबि सिंगार छटा की शोभा चटक मटक चलैं खूब ।।2।।
अधर पै मुरली बाजि रही है गान सुनत हौं खूब ।।3।।
सखा सखी राधे संग नाचैं घुँघरू बाजैं खूब ।।4।।
साज बजैं बहु बिधि के संग में भाव बतावैं खूब ।।5।।
मुर्शिद किया मिला यह कूचा मस्त रहत हौं खूब ।।6।।

299. श्री सिफ़ारिश शाह (अपढ़)
काकोरी

पदः– सुधारौ हरि कृपा सागर पतित बहु बढ़ गए जग में ।।1।।
द्वैत का भाव छुटि जावै संभर कर के चलैं मग में ।।2।।
दया औ धर्म में लागैं आय तब जाँय निज ढंग में ।।3।।
यही बिनती मेरी स्वामी रहें फिर आप के संग मे ।।4।।

300. श्री महाराज जी के उपदेश वचन

गुरु नानक जी ने कहा है "पांच तत्व का शरीर यही पंजाब है। इसी में विचरने से सब लोक, देश, शहर, गांव, देवी देवता भरे हैं। हर एक जीव बास करते हैं। देखने वाले देखते हैं। निकसि निकसि बतलाते हैं। फिर तुम्हारे शरीर में समा जाते हैं।"

301. पारस और लोहे का भेद

लोहा साफ़ है तो पारस के स्पर्श से सोना हो गया और लोहे में मुरचा लगा है, उसे जंग भी कहते हैं, तो पारस सोना नहीं कर सकता। लोहा साफ़ है उस पर हलका कपड़ा छोड़ कर पारस रख दो तब भी सोना न होगा। यह भेद भाव का काम है। तुम का दवा दी जाय तुम उसे खूँट में बाँधे हो, खाओ तो फायदा करै। फिर दवा खाते हो संजम नहीं करते तो कैसे फ़ायदा करैगी।

दिन में रात, रात में दिन है। जब अमल करौ तो आँखी कान खुल जाँय तो दिन हो जाय, रात का भेद मिटि जाय, भीतर बाहेर एक हो जाय।

गोस्वामी जी ने लिखा है:–
चौपाईः–उघरैं विमल बिलोचन हिय के। मिटैं दोष दुख भव रजनी के ।।
सब सिद्ध सन्त ऋषी मुनी कह गए हैं उन पर चल नहीं मिलता है।।

लाला राम सहाय ने कहा है–
शेरः– इश्क नहीं घर खाला का जो झपके से घुस जावोगे।
बे पूछे जाँचे खोलि कमर आँगन में खात बिछावोगे ।।1।।

सर काट मनी को मैदा कर मुर्शिद की ठोकुर खावोगे।
तब राम सहाय मिटाय खुदी महबूब महल कहुँ पावोगे ।।2।।

302. श्री मोहर्रम शाह बगदादी (अपढ़)
ध्यान में देखा कि भगवान अपने मुखारबिन्दु से कह रहे हैं

श्री सुदामा तुम तो मेरे छोटे पर के मीत ।।1।।
हमरी श्राप से भये दरिद्री तबहूँ न छोड़ेव प्रीति ।।2।।
सच्चे भक्त आप हौ मेरे हम से भई अनीति ।।3।।
कृष्ण कहैं मेरे पुर ऐहौ तन तजि परम पुनीत ।।4।।

यह पद मोहर्रम शाह के मुख से निकला है। भगवान ने बात कही है ध्यान में। यह भी कृष्ण भक्त हैं।

303. प्रेम की नदी

गंधर्व लोग गान करके भगवान को प्रगट कर लेते हैं। प्रेम का दर्जा बड़ा ऊंचा है। प्रेम की नदी जहाँ उमड़ी तहाँ ज्ञान-ध्यान-भान का पता नहीं रहता है। प्रेम का बास नेत्रों में है। प्रेम के आँसू बड़े शीतल होते हैं। दो नदी नेत्रों में हैं–एक दुख की एक सुख की। सुख के आँसू ठंढे होते हैं, दुख के आँसू गर्म होते हैं। दाहिने नेत्र में राम जी, कृष्ण भगवान, बिष्णु भगवान का बास है। बाँये नेत्र में सीता-राधा-कमला का बास है।

304. गाने बजाने से भगवान की प्राप्ति

तान सेन सितार बजाते थे और गान करते थे। बैजू बावरे मृदंग बजाते और गान करते थे। कुदऊ सिंह मृदंग बजाते थे। राम किशुन लोहार चिकारा बजाते और गान करते थे। सफ़ालू मृदंग-तबला-ढोलक-मजीरा बजाते थे और गान करते थे। पं. मथुरा दत्त मृदंग बजाते और गान करते थे। तेज किशन, उनके भाई दंड ताल बजाते और गान करते थे। पाटन दीन जोशी सितार-मृदंग-तबला-ढोलक बजाते और गान करते थे।

अमीर अली थवई ढोलक बजाते थे। पं. राम चरन कपाल बजाते थे। चार कपाल चांदी ऐसे चमकते थे। लोहे के थे। गान करते थे।

इन सब ने गान बजान से भगवान के दर्शन कर लिए।

305. श्री महाराज जी कमला बार्ता

दि: 11.08.75

आज दिन ही में भोजन के बाद शायद एक घंटा हुआ होगा, आठ-सोरह-बत्तीस करके जब मिश्रा जी, और मिश्राइन भोजन करने गए तो फिर लेट गए। स्वत: ध्यान हो गया। कमला के पास पहुँच गए। हम पहिचान न सके – 12 बर्ष का दिव्य शरीर। चट से विमान पर से उतर कर चरनों में लिपट गईं कहा ''मैं आप की दासी कमला हूँ। मेरी सुरति शरीर छूटने के समय आप में लग गई थी। आप ने मेरी इच्छा पूरन कर दी। मैंने कई बार आप से पहले ही कहा था कि मुझे बिष्णू भगवान के पास भेजना। रोज़ यह बात अपने दिल में रखती थी। आज मेरी सुरति आप में ऐसी लग गई थी कि मालूम हुआ कि मैं आप में समा गई। उसी सुरति ने आप को खींचि लिया। बड़ा आनन्द आया जो कहने के बाहेर है। यहाँ महान सुख है।"

हमने कहा कि मास्टर तो चौथे बैकुण्ठ के अधिकारी बना दिए गए जब गंगा कूप का जीर्ण उद्धार कराया तभी, तो कहा ''बड़ा अच्छा हुआ। उनको हमसे ऊँचे ही जाना चाहिए। वै तो तुम्हारे बहुत दिन के प्रेमी हैं। उनका विश्वास ही ऐसा आप में है।" फिर हम से कहा ''हम न कुछ भजन किया न दान धर्म किया। कोई पुराना सुकृति था उस से आप में मेरी सुरति अन्त के समय लग गई। यहाँ पहुंच गई।" हमने कहा "भगवान की गति कोई जान नहीं सकता। वह पलक दरियाई सर्व शक्ति मान हैं।" तब कहा "बात आप की सत्य है।" हम से कहा "हमैं आप की याद बनी रहे और कुछ इच्छा नहीं है। हमारी आश्रम में सब से दंडवति कह देना। फिर हाथ जोड़े और खड़ी हो गईं।" हमारा ध्यान उतर आया। हमारे फिर आँसू चलने लगे। कई बार पोछा। तब यहाँ चले आए।

306. श्री टीका शाह जी (थियेटर)

आवो जी आवो कृष्ण लाज के बचाने वाले ।।1।।
श्वामी हो गिरधर प्यारे, दुस्सासन चीर उतारे,
कोई ना बरजन हारे, बैठे सब राज दुलारे,
लखि के अनीति सारे, हांसी कराने वाले ।।2।।
तुम्हारे भक्तौं का हमने ना अपिमान देखा,
सान औ गुमान अभिमानहुँ को खंडन देखा,
चेरी मैं हूँ अब तेरी, लज्जा तू रख ले मेरी, काहे को
करते देरी, केहरी ने गैय्या घेरी, हे जदुनन्दन,
कंस निकन्दन, रावण गंजन, देवकि नंदन,
टीका के मन भाने वाले ।।3।।

307. सांप का काटा दो माह बाद जीवित

हमारे गाँव में दुर्गा चौबे थे। उनकी माता सौ बर्ष के ऊपर थीं तब हम 12 साल के थे। वो बताती थीं कि उनके नैहर में एक ब्राह्मण की उमर 30 साल की थी। रात में, गर्मी का महीना था, चारपाई नीची थी, सो रहा था। एक काला सांप आया और उसने होंठ में काट लिया और चला गया। वह जागा और अपनी औरत से कहा "हमारे किसी जीव ने होंठ में काट लिया है पड़पड़ाता है।" उसने पड़ोस में जा कर कहा। लोग आए। कोई दवा न जानता था न झाड़ना जानता था। उसके प्राण सर पर चढ़ गए। सुबह पड़ोस के आदमी ताल के करीब गाड़ आए।

कुछ दिन के बाद पानी बरसा तो कबर बराबर हो गई। एक बाहरी आदमी कहीं जाता था तो ताल में अश्नान किया। धोती धोकर उसी जगह फैला दिया। वह धोती फ़ौरन सूख गई। गांव में आया पूछा "यहाँ किसी को सांप ने काटा है?" लोगों ने बताया कि दो माह हो गए एक आदमी को काटा था, गाड़ दिया था। उसने कहा "उसे खोदौ वह ज़िन्दा है। हम ठीक करेंगे।" खोदा गया, लाया गया, नहवाया गया। साफ़ी से पोछ कर धोती पहनाई गई। फिर उस आदमी ने चारपाई पर लेटाया और दो कौड़ी छोटी छोटी मंत्र से फूँका और फेंका। सांप की आँखों की

अगल बगल लग गईं। सांप आया। आदमी ने कहा "ज़हर खींचो।" वह खींचने लगा। घंटौ बाद ज़हर खींचि सांप बेहोश हो कर गिर गया। तब उसे झाड़ कर ज़हर उतार दिया कहा "अब तू अपनी जगह पर जा।" सांप चला गया।

उस आदमी के सांस चलने लगी। फिर झारने वाले ने उसकी औरत से कहा "दस दिन इसे गाय या बकरी का कच्चा दूध देना, फिर मूँग की खिचड़ी देना। धीरे धीरे दाल भात, फिर हलका साग रोटी देना।" वह कह कर चला गया। औरत ने वैसा ही किया। दो माह में ठीक हो गया। गाड़ने वालों ने ठीक गाड़ा न था कुछ कमर झुक गई थी मामूली। फिर उसके दो लड़के हुए। कारबार करने वाले हो गए। वह काफी बूढ़ा हो कर मरा। सीधा लेटा कर माटी देने में कसर रह गई थी।

308. ऊधो जी सखिन को समुझाने आये

ऊधो जी सखिन को समुझाने आए हैं, भगवान ने भेजा है। सखी ऊधो जी से कह रही हैं जो भगवान ने पत्र लिखा है योग करने को। 16 की उम्र के यह पद हैं।

[1]

पदः– ऐसे निठुर हाल मोहना लिखी रे ।।1।।
छिन न पड़त चैन, अँसुवा बहत नैन,
कासे कहौं बैन, दुखिया भई रे ।।2।।
जब से गये कान्ह, तब से भये आन,
बिरहा विथा बान छतिया जरी रे ।।3।।
ऊधौ कहौ जाय मैं कैसे जोग साधौं,
बिना संग माधौ न गतिया भई रे ।।4।।

[2]

पदः– श्याम की ऊधौ जुदाई अब सही जाती नहीं ।।1।।
बे वफ़ा हम से खफ़ा हो जा दिया सौतिन को दिल,
क्या खता मेरी खबर भेजी कोई पाती नहीं ।।2।।
क्या कहैं गोकुल क तुमसे हाल बरसाने क हम,
कुंज की कोई गली हरगिज हमें भाती नहीं ।।3।।

आइये गोकुल मनोहर आरज़ू करते गनेश,
है कोई दाना सखी हम दम को सुमुझाती नहीं ।।4।।
कान में मुद्रा गले सेल्ही मलैं तन में विभूति,
यह सखुन लिखते ज़रा उनको तरस आती नहीं ।।5।।
बन बन में हम घूमत फिरैं, और भूख से ब्याकुल मरैं,
होवैं योगिन हम उन्है कहते शरम आती नहीं ।।6।।

309. भगवान का रहस

रामघाट पर बिना अधार के पच्चीस हाथ ऊपर रहस भगवान का देखा था। हजारों सखा सखी देवी देवता थे। साज बजाने वाले हजारों देवी देवता थे। गर्मी का महीना बैसाख की शुरु सप्तमी थी। तब बहुत पद सुनने में आये थे। अब सब भूल गए। थोड़े याद रहे। 9 बजे से 1 बजे रात तक हवा ठंढी चलती रही। महाराज तखत पर बैठे ध्यान में मगन थे। हम देखते सुनते थे।

बड़े बड़े हरे मखमल के बिछौना बिछे थे। किनारे के चारों तरफ बेल बूटे बने थे। बीच में रहस गान होता था। बिछौने ऐसे तने थे जैसे कड़ी ज़मीन पर बिछे हों।

पहले थेई त त ता थेई त त ता गति ताल देकर हुई, फिर सूर जी की ध्रुपद हुई। 4 घंटा रहस हुआ। बहुत गाना हुए। बीच बीच जै जै कार होता था। देवता फूल सुगन्धित बरसाते थे। उसकी सुगंध हमें भी मालूम देती थी। एक बजे के बाद सब अन्तर हो गए।

310. सूर जी का ध्रुपद

नाचत सुढंग ए, नन्द नन्दन बिन्द्राबन अमित मनमथ मदति
मरदन सघन कुंजन मंजु ।।1।।
संग गोप गण के बीच ये थिरकत भूषण मणि मय चलत
कुंडल गंड मंडित विमल बसन सुरंग ।।2।।
बिच बिच बिराजत श्याम ए बिच बिच तरुणि सोभा नील
कमल सुगंध कौस्तुभमाल रचित अनन्द ।।3।।

सुरगण विमानन चढ़े ब्रम्हा-बिष्णु-नारद छकित पुलकित सूर
के प्रभु जैति जै जै जैति आनन्द कन्द ।।4।।

311. साधू के लक्षण

दि: 25.08.76

जब हम 12 वर्ष के रहे तब हमारे गाँव में बल्दी सोनार थे। उनके लड़के घर में परमेश्वरदीन, शम्भू, भगवान दीन, गिरजा दयाल थे। सब साधू सेवा करते थे, गाने बजाने की शौक थी। गाने बजाने वाले भी आते थे। एक बूढ़े साधू हनुमान जी के भक्त थे, उनके साथ 4 साधू नवजवान आए, उनके यहाँ महीनों रहा करते थे। एक बार गांव के कई दुष्ट राति में हँडी में मैला भर कर अद्धा पर आधी राति को फेंका। गरमी के दिन थे। हवा चलती थी। बाबा अद्धा पर सोये थे और सब अंबिली के नीचे थे, अद्धा भी उसी के नीचे था। सब सो रहे थे। हँड़ी फूटी बाबा छीप गये। अद्धा भी छीप गया। बाहर के साधुन पर भी छीटें पड़ीं। सब जग पड़े। पास में कुआँ ताल था। सब नहाये सुबह अद्धा धोया गया। बहुत लोग सुने आ गये। बाबा ने कहा, "इस गाँव में हम कई बार आये, कुछ न मिला। अबकी भगवान ने हमारी इच्छा पूरी कर दी। हम कैसे इन लोगों से उद्धार होंगे। धन्य हैं इस गाँव के भक्त लोग।" तब चार साधू जो थे वह कहे, "महाराज! आप की बदौलत हमें कुछ छिट्टे मिल गये। हमें उतना ही परसाद बदा था।" फिर कभी किसी ने नहीं बहाया। बाबा कई बार आये फिर गाँव के सब लोग आये, दर्शन करने लगे। ऐसे सहन शील सन्त थे। यह साधु के लक्षण हैं। गाँव ईशरवारा, ज़िला सीतापुर, डा. (डाकखाना) सदरपुर, तहसील सिघौली, परगना महमूदाबाद हैं।

312. बाबा बैष्णव दास जी

बड़ी जगह में एक साधू थे क्षत्रिय कुल के बालक थे नाम बैष्णव दास था। भँडार बनाते थे। उस समय महन्त चिन्तामणि दास थे। भगवान के थाल में बहुत गन्दा घी जाता था बहुत गन्धाता था। कई बार हल्ला किये कोई नहीं सुना तो 1 दिन उसी क्रोध में भट्ठी जल रही थी उसी में घुस गये। सब लोग पकड़ कर खींच लिए नहीं तो जल जाते। तब

से अच्छा घी आने लगा। वे बड़े महाराज से भजन सीखे थे। महराज से कहे कि महराज 2-3 माह में हमारे ऊपर क्रोध मेहतरि आता है। तो महराज बोले सब का समय है। एक बार प्रयाग का कुम्भ था महराज थे जगन्नाथ दास थे सात मूर्ति साथ थे। जहाँ ठहरना था वहाँ बहुत भीड़ थी। 52 लाख भेष (साधू, जन) था। सब कहे "महराज कैसे पहुचेंगे" तो महराज बोले "भगवान जैसे पहुंचावैं" तब महराज जोर से बोले हनुमान जी का सुमिरन किया, बोले-"अञ्जनी पुत्र परताप सुमिरौं रक्षा करन बेगि आवो"। बस महराज आगे चल पड़े एक दम रास्ता हो गया। सातों जने चले गये वहाँ पहुँच कर आसन लगाया।

भोजन दश बजे रोज बन जाता था। तीन दिन बाद बैष्णव दास जगन्नाथ दास से कहे कि यहाँ कुछ मसाला नहीं पड़ता वहाँ हमारे यहाँ सब मसाला पड़ता है। जगन्नाथ दास कहे कि महराज धोई दाल बिना मसाला के खाते हैं केवल हींग थोड़ी सी छोड़ दी जाती है। 1 उर्द भर तो जगन्नाथ दास को खूब गाली दिया और महराज को भी। बस चल दिया। जहाँ बड़ी जगह के लोग थे वहाँ आसन ले गया। जब भोजन बना तो महराज बोले, "बैष्णव दास को बुलावो।" सब कहे वह नहीं आवैगा। महराज बोले, "वह आवैगा वहाँ उसका पेट नहीं भरेगा। वह सबको कुछ दे ही गया है। लिया नहीं।" लोग गये वह आये दण्डवत किया। परसाद पाया तब उनका क्रोध मेहतरि चला गया। उसका समय आ गया 1 माह प्रयाग में रहे तब आये।

वैष्णव दास की दशा बिचित्र हो गई। केवल भंडार बनाते थे। किसी से नहीं बोलते थे। 1 साल 6 माह में हम जा कर पकड़ लाते थे बाल बनवाते थे। कहैं, "फुरसत ही नहीं पाते।" ऐसी बिलक्षण दशा हो गई फिर हद्द कर दिया। खूब भजन करके 80 बर्ष की उमर में शरीर छोड़ा अवध में। वह किसी से बोलते नहीं थे। केवल हमसे और महराज से बोलते थे। 1 बार भोजन करते थे। मसाला की शौक चली गई। निर्मल सन्त हो गये।

313. श्री अंधेशाह जी

भक्त निम्न बातों से ऊपर चढ़ता है:–

(1) सेवा धर्म से (2) कथा कहने से (3) कथा सुनने से (4) कीर्तन किहे से (5) कीर्तन सुनने से (6) पूजा किहे से (7) पूजा देखे से (8) जप किहे से (9) जप देखे से (10) धूप दिहे से (11) धूप देना देखने से (12) फूल चढ़ाने से (13) फूल चढ़ाते देखने से (14) आरती किहे से (15) आरती करते देखने से (16) आरती लिहे से (17) दण्डवति किहे से (18) दण्डवति देखने से (19) भोग लगाने से (20) भोग लगाना देखने से (21) तुलसी फूल सींचने से (22) तुलसी फूल भगवान के लिए लाने से (23) भगवान का दीपक जलाने से (24) मन्दिर भंडार का जाला झारने से (25) भंडार बनाने से (26) भोजन परसने से (27) पत्तल फेरने से (28) पत्तल उठाने से (29) भंडार धोने से (30) पंगति बैठारने से (31) जै बोलाने से (32) जल फेरने से (33) चरन धोने से (34) दक्षिणा देने से (35) पँखा करने से (36) बसन देने से (37) चरन पोछने से (38) रास्ता बुहारने से (39) कुआँ पर सफ़ाई करने से (40) नदी पर सफ़ाई करने से (41) तालों पर सफ़ाई करने से (42) रोगियों का मल मूत्र साफ़ करने से (43) रोगियों के कपड़े साफ़ कर देने से (44) दवा देने से (45) मरने पर कफ़न देने से (46) उनको उठा कर मरघट ले जाने से (47) किसी के यहाँ कोई काम परै बिना बोलाये जाय और जो अपने से सधै उसे कर देने से (48) जीव मात्र पर दया करने से (49) बाजा बजाने से (50) भंडार के बर्तन मलने से (51) लकड़ी कंडा भंडार में लाकर धरने से (52) भंडार के बर्तनों में पोती लगाने से (53) भगवान को सैन कराने से (54) भगवान को जगाने से (55) तीर्थ यात्रा करने से (56) चिता बनाने से (57) मुर्दे को अस्नान करने से (58) उनके नई कंठी जनेऊ बदलने से (59) तिलक लगाने से (60) कफ़न पहिराने से।

इन शुभ कामों में मन लग जाय तब पट खुल जाते हैं। सारा खेल मन का है अपने इष्ट में हर समय सुरति लगी रहै। द्वैत भाव छूट जाय दीनता शान्ति आ जाय। अपने को सबसे नीचा मान ले। प्रेम की नदी उमड़ि चली। ज्ञान ध्यान भान भूल जायगा। हर समय राम जानकी, राधा

कृष्ण, रमा हरि की झाँकी सामने हो जायगी। सब देबी देवता सिद्ध लोग मिलने लगेंगे। राम नाम की धुनी होने लगेगी जो सर्वत्र से स्वत: हो रही है। अनहद बाजा सुनाई पड़ने लगेगा। कुंडलिनी जाग जायगी। छइउ चक्र चलने लगैंगे और सातों कमल खिल जावैंगे।

314. सीता कुण्ड के पास देवी जी मन्दिर के कुयें के प्रेत का उद्धार

तान्त्रिक पण्डित जो मारन करते हैं और औघड़ जो मारन करते हैं यानी कोई जाति हो जो मारन करते हैं जाल बनाते हैं, अहंकारी सूम, यह सब कल्पों नर्क भोगते हैं। अगर यह बातें छूट गई और भगवान के तरफ़ लग गये तो गती हो जाती है यह हम बहुत देख चुके हैं।

अब हम सीता कुण्ड मुहल्ला में दुर्गा जी के मन्दिर के समीप का हाल लिखते हैं। जो भगौती ने पाँचू से कहा वहाँ एक कुआँ है पाँच सौ वर्ष का मुसलमानों का बनाया। एक तांत्रिक पण्डित ने एक ठाकुर मार कर प्रेत बनाकर उस कुआँ में बैठार दिया। कुछ अरसा हुआ दो बार कुछ लोग बिचार किये कुआँ ठीक हो जाय उसमें अन्दर कुछ खराबी हो गई थी। तो प्रेत ने मना कर दिया। जब उसका समै उद्धार का आ गया तो दुर्गा जी से कहा हमें रामार्चा सुनवा दो महाराज जी से कह कर, हम इस योनि से छुट जाँय। भगौती ने पाँचू से कहा। पाँचू ने परसुराम से कहा, परसुराम ने हमसे कहा। हमने कुआँ बनाने को जगतनारायन से कहा, काम शुरू हो गया।

कुआँ भीतर बाहर ठीक होकर जगति बन गई, पावा दो बन गये, एक चौकी नहाने की बन गई। कुछ दूर दक्खिन तरफ़ एक छोटा कुण्ड बन गया। उसमें पानी भर दिया जाता है, पशू पीते हैं।

बजरंग भवन में कथा का इन्तजाम हुआ। जो सामान लगती है आ गई। पंडित जी आये कथा शुरु हो गई। प्रेत को निमंत्रण दे दिया गया था। वह आया कथा सुना, हवन हुआ सबों को भोजन कराया गया। प्रेत का उद्धार हो गया। वह बिमान पर बैठकर बैकुण्ठ को गया।

शास्त्र में जो लिखा है वह सत्य है, बिना भाव के करने से जीव

नहीं तरते। करने वाले, कराने वाले का भाव ठीक हो तब गती होती है। सच्चे काम से भगवान और देबी देवता प्रसन्न होते हैं। जप पाठ पूजन कीर्तन धर्म से जीव तरते हैं। सबमें भाव की प्रधानता है। यह सब हम देख चुके हैं और हिन्दू मुसलमान सबने यही लिखाया है। जप पाठ पूजन कीर्तन कथा हवन ब्राह्मण साधू गरीबों का भोजन जहाँ भाव से होता है वहाँ भगवान और सब देबी देवता जाते हैं, देखकर बहुत प्रसन्न होते हैं। मनुष्य शरीर का यही धर्म है। पर उपकार से बढ़कर कोई धर्म नहीं है। व्यास जी ने कहा है सिद्ध सन्तों का यह कहना है अपने शरीर से किसी का दिल न दुखावो। तुम तकलीफ सह लो दूसरों का आराम पहुँचावो तुम्हारे पट खुल जाँय। समै स्वांसा शरीर अनमोल मिला है। जैसे ऋषी कह गये लिख गये चल गये उस रीति से सब करो तो तुम को भी सुख सागर का मार्ग मिल जाय महासुखी हो जाव।।

315. श्री राम

डॉक्टर श्री अखिलेश्वर नाथ सिंह श्रीवास्तव, अस्थि-चिकित्सा-विशेषज्ञ, लखनऊ, के पत्र की प्रतिलिपि

36 गोला गंज, लखनऊ

19-10-76

परम पूज्य श्री गुरुदेव जी महाराज,
साष्टांग दन्डवत।

घर में जो घटना हो गयी थी उसकी सूचना आपको भेजी थी। भाभी जी का स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता था। खून का दौरान तेज़ रहता था। अष्टमी की दोपहर को एकाएक दिमाग़ की नस फट गई और तुरन्त बेहोश हो गईं। तीन घंटे में ही सब समाप्त हो गया। भगवान की इच्छा माननी ही पड़ती है। वह जो ठीक समझते हैं वही करते हैं।

घर से ही सब काम हुवा था। इससे सब के कहने पर कि घर में सूदक है मैं लगभग 15 दिन श्री वरदानी हनुमान जी के दर्शन करने न जा सका।

एक दिन एक और आवश्यक काम से तेरही के बाद शनिश्चर को रात

लगभग 8:30 बजे मन्दिर जाना पड़ा। जाकर दर्शन किया और साष्टांग दन्डवत की पर गल्ती से भेंट रूप से कुछ नहीं ले जा सका। दूसरे दिन श्री पुजारी जी ने जो मुझसे मेरे भाई द्वारा कहलवाया वह यह है–

पुजारी जी द्वारा सूचना

मैं आपके भगवान के दर्शन करके चले जाने के बाद कमरे में रोज की तरह सो गया। एकाएक लगभग 3-4 बजे रात्रि में ऐसा लगा कोई मुझसे पुकार कर कह रहा है, "उठो, कब तक सोते रहोगे" मैं सपने में ही था। ऐसा लगा मैंने आँखें खोलीं और देखा श्री वरदानी हनुमान जी बिल्कुल अपने अभयमुद्रा रूप में हैं–मैं घबरा गया और कुछ डर भी गया–मैंने हाथ जोड़े, पूँछा– महाराज, कोई अपराध हुवा?"

भगवान बोले–डरो नहीं, तुम्हें कुछ मालूम है?

पुजारी जी–क्या महाराज?

भगवान–आज डाक्टर इतने दिनों बाद आया था।

पुजारी–हाँ महाराज, उनके घर में दुर्घटना हो गई थी। इससे बहुत दिन बाद आये।

भगवान–हाँ मुझे मालूम है। वह मेरा बड़ा भक्त है पर आज वह पहली बार मेरे लिए भोग के लिए प्रसाद नहीं लाया।

पुजारी–जी महाराज, परन्तु वह तो अपने भाई का पता लेने आये थे। एकाएक आ गये थे। इससे प्रसाद के लिये भोग नहीं लाये होंगे।

भगवान–हाँ, यह ठीक है पर उसे प्रसाद भोग लाना चाहिये था। 15 दिन से मेरे लिये फल एवम् भोग प्रसाद नहीं आया।

पुजारी जी का कहना है कि ऐसा लगा जैसे उनके बिल्कुल पास बैठ कर ऐसी बातें हुईं। श्री भगवान ने और बहुत सी बातें कीं पर वह अब उनको याद नहीं रहीं।

इतनी बातें हो ही रही थीं कि किसी ने ज़ोर से बाहर से 'सीताराम' कह कर पुजारी जी को पुकारा। उनकी आँख खुल गईं। बाहर एक आदमी उनसे पानी पीने के लिए बाल्टी माँगने आया था। उसके आने से यह सपना खत्म हो गया और वह जाग गये भगवान अन्तर्ध्यान हो गये।

यह सब सुन कर मुझे बहुत दुःख हुवा कि मैंने ऐसी ग़ल्ती कर दी जो जान कर नहीं की। रात भर भगवान से बहुत माफ़ी मांगी। दूसरे दिन निराहार रह कर पहले श्री वरदानी हनुमान जी के चरणों में पहुंच

कर भोग प्रसाद (बेसन के लड्डू) अर्पण भेंट किया। क्षमा मांगी – फिर प्रसाद पाकर भोजन किया।

पुजारी जी ने यह बात बहुत साधारण रूप में मानी है और जैसे उन्होंने मेरे पास सूचना भेजी इससे घर में सब को मालूम हो गया। आप की आज्ञा थी कि ऐसी बातें केवल आप से ही चुपचाप कही जायँ।

आप ही मेरे पथ दिखाने वाले हैं। यदि श्री वरदानी हनुमान जी के प्रति मुझसे अपराध हो गया है तो कृपा कर आप ही क्षमा दिला सकते हैं। मैंने तो आपको ही अगुवा करके उनके चरणों की धूल पाई है और आगे भी आपके ही आशीर्वाद से उनके निकट रह सकूंगा और सदा उनकी कृपा की छत्र छाया में बढ़ता रहूंगा।

मेरे योग्य और जो भी साधन आवश्यक हों लिख कर बताने की कृपा कीजिये।

मैं सदा ही आपका सेवक हूँ।

ह० अखिलेश्वर नाथ सिंह श्रीवास्तव

श्री अखिलेश्वर नाथ जी के पत्र के सन्दर्भ में पूज्य गुरुदेव श्री परमहंस महाराज जी के उत्तर की प्रतिलिपि–

गोकुल भवन
अयोध्या
पिन 224123
तारीखः 24/10/76

प्रिय अखिलेश्वर तथा परिवार को पूज्य गुरुदेव का तथा समस्त आश्रमवासियों का तथा हम दोनों का दंडवत।

आपका पत्र दिनांक 19-10-76 पूज्य गुरुदेव ने अपने कर कमलों से खोल कर पढ़ा और हमें दे दिया। आज सुबह 10 बजे आरती के बाद स्लेट पर लिखा–"अखिलेश्वर का पत्र आवा, ग्रंथ में लिखवावेंगे। बहुत बढ़िया पत्र है, अंगरादास पुजारी के धन्य भाग्य जो उन्हें वरदानी हनुमान जी ने अभयमुद्रा में दर्शन दिया। इसी प्रकार एक दिन अखिलेश्वर को भी दर्शन मिलेगा।"

फिर पूज्य गुरुदेव ने बताया–अंगिरादास ने बहुत पाप किये थे। वरदानी हनुमान जी की सेवा, भाव से, निरछल होकर की होगी तो हनुमान जी ने प्रसन्न होकर दर्शन उन्हें दिया।

आपको किसी प्रकार का दुख नहीं करना चाहिये। अपना भाव सदैव की भांति विशाल बनाये रखना चाहिए। गती भाव से होती है। भगवान फल व मिठाई के भूंखे नहीं हैं; वह भूंखे हैं भाव के और प्रेम के। उन्होंने स्वयं अंगिरादास से कहा "वह मेरा बड़ा भक्त है।" भगवान का इतना कहना बहुत बड़ी बात है।

हस्ताक्षर–"दः परमहंस राममंगलदास

316. पाँच महावाक्य

दिः 5.10.76

पूज्य गुरुदेव (परमहंस राममंगल दास जी) ने आज सुबह स्लेट पर लिखा और आज्ञा हुई इसे ग्रंथ में लिख दो–

॥ पाँच महावाक्य ॥

5 बात (बड़े) महाराज की बताई हैं:–

(1) "अवध में रहना कोई जगह पर।
(2) कोई ज़मीन दे तो न लेना।
(3) किसी से बैर न करना।
(4) मरे पर पैसा कफ़न को पास न निकले।
(5) कोई मारै तो सर कटा देना, श्राप न देना तो हमारे पास आ जाओगे।"

हम ने कहा हमें भी एक बात मांगना है तो कहा "कहो"। हमने कहा "जो हमें दंड दे, हम से जाल करै, उसकी गती अच्छी हो", तो पीठ पर हाथ फेरा, कहा, "उमा संत की यही बड़ाई। मंद करै तेहि करै भलाई।" यह संत भक्त के लक्षण हैं। बिना भजन के मुक्त भक्त हो जाता है। ऐसा करने वाला कोई कोटिन में होता है।

दि. 25.10.76

आज सुबह 10:30 पर हम मोलवी आबू अहमद को ले कर बड़ी बुआ की मज़ार पर गये। साथ में जगत नरायन तथा शैलेन्द्र नारायण सिंह भी थे। वहाँ पहुँच कर बर्फ़ी का भोग लगाया। स्वामी सुखानन्द व बड़ी बुआ का ध्यान में दर्शन हुआ। दोनों ने भोग पाया। फिर बड़ी बुआ ने

कहा "जो तुम को मारेगा और जो तुम से जाल करैगा उसकी गती अच्छी होगी, यह तुमने अपने गुरु से मांगा था, और यह नहीं लिखा जो गैर को सतायेगा उसे घोर नर्क होगा। जीव मात्र में राम रमे हैं। संत किसी को कष्ट नहीं देते। वही परम पद पाते हैं बिना भजन के।" यह बात सुन कर स्वामी सुखानन्द बहुत प्रसन्न हुये कहा, "सत्य है यह बात ग्रंथ में लिख लेना" और स्वामी जी अन्तर हो गये।

फिर बुआ जी ने कहा "थोड़ा काम दुर्गा देवी जी के मंदिर पर रह गया है। वह पहले पूरा कर दिया जाय, तब हमारी मज़ार के पलस्तर का काम शुरू किया जाय।"

317. प्रेत का उद्धार

कपूर माता ने 16-10-75 को पूज्य गुरुदेव से कहा था, "बड़ी परेशानी है क्या किया जावै।" तो पूज्य गुरुदेव ने कहा "बृहस्पति को दिया बार के आंगन में रख दो जो कुछ होगा मालूम हो जावेगा।" तो दिया बार कर रख दिया गया। तब रात दो बजे भगवत प्रसाद बैद्य को प्रेत बाधा ने प्रगट होकर सब हाल बताया। भगवत प्रसाद कपूर माता के किरायेदार हैं।

इस घटना की सूचना श्री भगवत प्रसाद शर्मा बैद्य ने (किरायेदार, कपूर माता के मकान लाटूश रोड चारबाग, लखनऊ केनाल वियू) पूज्य गुरुदेव को अपनी चिट्ठी दिनांक 16-10-75 में इस प्रकार दी:-

"आज रात 2 बजे करीब एक आदमी आया, बाहर से कहा, 'पंडित जी! दरवाजा खोलिये।' मैंने दरवाजा खोल दिया। उसने कहा, 'पंडित जी! जिस साधू को आप ले आये थे उनके लाने से मेरा बहुत कल्याण हुआ। मैं जाति का ठाकुर हूँ, मुसलमान हो गया था, शिया मुसलमान हुआ, तब से मैं सफ़ेद शेरवानी सफ़ेद पायजामा सफ़ेद टोपी पहनता हूँ। इस मकान के नीचे मेरी कब्र है। मैंने बुढ़िया के घर के तीन व्यक्ति मारे, नौजवान। इस मकान में मैं मकान मालिक के घर का कोई मर्द न रहने दूंगा। उन्हीं साधू के सामने यह बुढ़िया यदि श्रीमद्भागवत का सप्ताह सुनवावें तो मेरी गती हो जाय और मैं चला जाऊँ। तब इनके घर के लोग सुखी होंगे।"

मैं जाग रहा था आँखैं मेरी बन्द थीं। मैंने उनसे कहा कि इनके

घरवालों को स्वप्न दिखावो। वह कुछ नहीं बोला, चला गया। मैंने प्रातः कपूर माता जी को बतला दिया। आपको लिखकर दे रहा हूँ।"

भगवत प्रसाद शर्मा
लाटूश रोड, लखनऊ

नोटः-

(1) साधू कहा है पूज्य गुरुदेव को। पूज्य गुरुदेव कपूर माता के घर पधारे थे।

(2) बुढ़िया कहा है कपूर माता को। इनके पति श्री निहाल चन्द्र कपूर, चीफ़ सेनेटरी इन्सपेक्टर, लखनऊ, थे। इन्होंने लाटूश रोड पर केनाल के किनारे जमीन लेकर मकान बनवाया था। मकान बनने के एक वर्ष के अन्दर निहाल चन्द्र जी का निधन हो गया था। इनके 2 लड़के और 1 लड़की थी। लड़की कौशिल्या, जो आज कल मेडिकल सुपरिन्टेण्डेण्ट, इलाहाबाद है, की शादी हो गई थी। लड़के की भी शादी हो गई थी जो कुछ वर्ष बाद मर गया। छोटा लड़का भी जवान हो मर गया। इस प्रकार इस मकान में बेवा कपूर माता (लीलावती कपूर) व इनकी बेवा बहू है। बहू के एक लड़का व तीन लड़कियाँ हैं।

(3) तब पूज्य गुरुदेव ने कहा था कि होली के दो दिन बाद श्रीमद्भागवत बैठार दी जावेगी। अतः होली बाद 19-3-76 से गोकुल भवन के उत्तर पूर्व वाले कमरे में भागवत आरम्भ हो गई और श्री भगवत प्रसाद शर्मा को पत्र लिखा गया कि वै ठाकुर साहब की कब्र पर जाकर कह दें कि वे श्रीमद्भागवत सुनने गोकुल भवन आने की कृपा करैं। इस पत्र के उत्तर में श्री भगवत प्रसाद शर्मा अपने पत्र दिनांक 25-3-76 में लिखते हैं-

"श्री महाराज जी! घर के ठाकुर साहब जो प्रेत योनि में हैं, जिनकी तरफ़ से श्रीमद्भागवत हो रही है, उनको 19-3-76 चैत वदी 4 को प्रातः पुनः याद दिला दिया था कि आप की भागवत आज से प्रारम्भ होंगी। अतः आप वहाँ सुनने के लिए पहुँच जायँ। नित्य रात में यहाँ से भागवत सुनकर जाने के बाद हमसे आकर मिलते थे और आज भी नित्य की तरह 2 बजे यहाँ भागवत सुनने के लिए फिर कहा है

कि हम पहुँच जायेंगे महाराज जी ने हमारे ऊपर बड़ी कृपा की, जो हमें इस योनि से छुटकारा दिलाने की कृपा की, मैं जन्म जन्मान्तर श्री महाराज जी का आभारी रहूँगा। आज आप अयोध्या जा रहे हैं वहाँ मेरी तरफ़ से श्री महाराज जी से मुझे उद्धार कराने की प्रार्थना करियेगा, महाराज जी स्वत: सब जानते हैं संसारी दिखावे के लिए लोग लिखते हैं उसी तरह मैं भी प्रार्थना करवा रहा हूँ। वह सबके हृदय की तो जानते हैं।

श्री महाराज जी! जो उन्होंने हमसे कहा था वह आप की सेवा में लिख कर दे रहा हूँ।

25.3.76 **भगवत प्रसाद शर्मा बैद्य**

केनाल व्यू, चारबाग,

लाटूश रोड़, लखनऊ

(4) पूज्य गुरुदेव की आज्ञानुसार 25.3.76 की शाम 6 बजे भागवत समाप्त होने के बाद व्यास जी श्री श्याम बिहारी दास जो श्रीमद् भागवत पाठ पर बैठे, ने उपरोक्त पत्र उपस्थित भाई बहनों को सुनाया और कहा, "ठाकुर साहब हमारे पास भी तीन बार आए थे और आज रात (26.3.76) 1 बजे आए और हम सो रहे थे हमारे शरीर की मालिश की और कहा – 'महाराज जी। आप ने बड़ी कृपा की जो भागवत सुनाए और हम अभी आप के कमरे में जब तक हवन न होगा तब तक व्यास गद्दी के पास ही रहूँगा। हवन इत्यादि के बाद चला जाऊँगा।'

(5) श्री भगवत प्रसाद जी ने आज सुबह 26.3.76 को फिर पूज्य गुरुदेव को लिख कर दिया : "श्री महाराज जी! आज 25.3.76 रात में लगभग 1 बजे ठाकुर साहब ने कमरे के अन्दर आकर आवाज दिया। मैं नींद में था। जब आवाज मिली तो आँख खुल गई स्वरूप नहीं दिखलाई पड़ा। आवाज पहचान गए कपूर माता वाले कमरे के दक्षिण पूर्व के कोने से आवाज आ रही थी। ठाकुर साहब ने कहा:

'पंडित जी! आज हमारा आखिरी दिन है। महाराज जी की कृपा से हम कृतार्थ हो गये। आप की भी बड़ी कृपा रही जो आप लखनऊ से आए और महाराज जी से मेरे उद्धार की प्रार्थना किये। मैं बहुत खुश हूँ और आज मैं अपने स्थान लखनऊ नहीं गया। आज मैं उसी स्थान पर हूँ जहाँ भागवत हो रही है। कल यानी 26.3.76 को यहाँ से गती प्राप्त कर के चला जाऊँगा। मैं महाराज जी का बहुत आभारी हूँ। साथ साथ आप के माध्यम से हमारा कल्याण हुआ इससे मैं आप से बहुत प्रसन्न हूँ।'

इतना कह कर कमरे से बाहर जाते समय यह आवाज आ रही थी कि कोई कमरे से बाहर जा रहा है पैर की आवाज मालूम हो रही थी।

उनकी बात आप के चरणों में अर्पित कर रहा हूँ।

प्रार्थी

भगवत प्रसाद शर्मा बैद्य

केनाल व्यू, चारबाग,

लाटूश रोड, लखनऊ

गोकुल भवन

27.3.76

(6) फिर पूज्य गुरुदेव ने 11 बजे दिन में स्लेट पर लिखा:–

ठाकुर राति में हमारे पास आते थे रोज़, सिर्फ़ पैर घुटनौं तक दाब कर अंतर हो जाते थे बोलते नहीं थे, हम समझ गये। वैसे तो राति में कोई न कोई जरूर आता है बात भी करता है। जब से यह आने लगे तब से कोई नहीं आया। बड़े भाव के जीव हैं।

कल शाम जब हम यहाँ से गए डोल डाल अस्नान करके जलपान किया फिर जाकर आराम किया। राम सेवक चादरा दुसूती उढ़ाकर अन्दर गए तब ठाकुर रात नौ बजे हमारे पास गये कहा – 'महाराज जी! मैं जा रहा हूँ।' हमने दोनौं नाम पूंछा, बताया, फिर कहा–'दया बनाये रखना। मैं गोमती में स्नान करके यह सब कपड़े कंकड़ में बांध कर छोड़ दूंगा। दिव्य वस्त्र धारण कराये जायेंगे। तब यान पर बैठकर बैकुण्ठ जाऊँगा। मुसलमान उसे बिहिस्त कहते हैं। जैसे हमारे यहाँ चार बैकुण्ठ हैं वैसे ही मुसलमानौं के यहाँ चार बिहिस्त कहे जाते हैं। यह सूक्ष्म शरीर भगवान दिव्य कर देते हैं। प्रेत योनि छूट जाती है। भगवान सर्व शक्तिमान हैं उनकी

लीला वही जानें। इतने दिन का हमारा भोग था पूरा हो गया।'

इतना कह कर पैर छुए हम बैठ गये। बड़े गोरे थे, शरीर से पतरे थे मालूम होता था 40 के होंगे। कुछ हमसे लम्बे थे।

ठाकुर का नाम रामदीन सिंह है। मुसलमानों ने दीन मोहम्मद धरा था। उन्होंने बताया कि "27 की उम्र में हमें जबरदस्ती पकड़कर मुसलमान बनाया। 300 वर्ष हो गये। उस समय दिल्ली में औरंगजेब का राज्य था। हिन्दू कोई बोले नहीं देखते रह गए। हिन्दूओं में बड़ा आचार विचार था अगर एक बूंद मुसलमान का पानी हिन्दू पर पड़ जाए तो सब मिलकर उसे छोड़ देते थे इससे मुसलमानों को बड़ा आसान हो गया। ऐसे बहुत हिन्दुन को जल के छींटे देकर मुसलमान बना लिया। हिन्दू शोर मचा देते थे मुसलमान उनके ऊपर पानी छिड़क दिये हैं अब यह हमारे काम के नहीं रहे, तब से हमारा मन हिन्दुन से हट गया। हम हिन्दुन से बोलते न थे। आप को देख कर सुतह (स्वतः) हमारे मन में भासने लगा यह साधू दोनौं दीन के मानने वाले हैं, हमारा भी कल्याण होगा। तब हम भगवत प्रसाद से जाकर कहा।

असल बात यह है हमारा समय आ गया। भगवान हर काम का समय बांधे हैं। समय को कोई टाल नहीं सकता है।"

318. भगवान के सच्चे भक्त

भगवान के सच्चे भक्त किसी देवता से सहायता नहीं लेते अपने लिए, उसमें अपना तप नष्ट होता है। मंसूर, ईशा, सम्स तवरेज़, तेग बहादुर, हरीदास (गौराङ्ग महाप्रभु के शिष्य), बाबा हरीदास, वबुरिहा गाँव जिला राय बरेली, गोविन्द साहेब, दादू, नत्थू, सियारामदास, बाबा टीकादास रामघाट अयोध्या बड़ी छावनी, बाबा रघुनाथ दास, थोड़ा लिखा है बहुत है, सब बड़े बड़े कष्ट सह कर राम धाम गये और गाँव में बड़े बड़े परिवारदार हैं जो कसनी पर डटे रहे पास हो गये, दूसरे का भला किया सब भव सागर पार हो गये हिन्दू मुसलमान दोनों दीन हम देख चुके हैं और भक्तों से सुना भी है उनके आशीर्वाद से कहीं हमैं भी जगह मिल जायगी ऐसा विश्वास है।

319. श्री सूर शाह जी के दोहे

दोहा:- भजन कहत कैसे करैं, सिर पर घर का भार।
सूर साह कह भार को, झोंके भूज के भार ॥1॥
अंधकार जग भार है, कैसे हो उजियार।
सूर साह कह नर्क में, सुनिहै कौन पुकार ॥2॥
एक सहारा ईस का, अटल रहै विश्वास।
सूर साह कहैं दु:ख सब, ह्वै जावैगा नास ॥3॥

श्री धन्वन्तरि जयन्ती, दिनांक 20-10-1976 पूज्य श्री गुरुदेव, परमहंस महाराज जी ने लिखने की कृपा की:

यह आवाज सुनाई पड़ी है। **यह अपढ़ की बानी है:-**

एक लच्छिमी जी सूम हैं, एक उदार हैं।

सूम तो सूम के साथ रहती हैं, उदार उदार के साथ रहती हैं।

चौपाई:- सूम लच्छिमी नर्क पठावैं। उदार लच्छिमी स्वर्ग ले जावैं॥
सूम लच्छिमी में यह फर्क, भक्तौं करौ न यामें तर्क ॥
आपसे बात कही मैं खास। जाति का तो मैं हूँ रैदास ॥
राम नाम जपु स्वाँसै स्वाँस। सारे पाप जायँ ह्वै नास ॥

श्री सूर शाह जी (अपढ़)

दोहा:- सूर शाह कह सूर बनि, जुटि जावै जो कोय।
सबै पदारथ पास हैं, जानत है कोइ कोय ॥
राम नाम जपि छुट्टी पावो ॥1॥
जग में फेरि न चक्कर खावो ॥2॥
सतगुरु से सुमिरन सिखि आवो ॥3॥
मन को ठीक ठेकाने लावो ॥4॥
माया चोरन मारि भगावो ॥5॥
अनहद सुनो अमी रस पावो ॥6॥
सुर मुनि के संग हरि जस गावो ॥7॥
नाम कि धुनि परकास समाधी षट झाँकी,
सन्मुख में छावो ॥8॥
नागिनि जगै चक्र घुमरावो ॥9॥

सातौं कमलन उलटि खिलावो ।।10।।
भाँति भाँति की खुसबू पावो ।।11।।
निर्भय औ निरबैर कहावो ।।12।।
शुभ लोकन में घूमन जावो ।।13।।
जियतै अजर अमर ह्वै जावो ।।14।।

दोहाः- तूल गूल में झोंकिये, तब पावो सुख मूल।
सूरशाह कह बिनै मम, है तुमरे अनुकूल ।।1।।

320. साधू गनपत दास

दिः 22.11.76

आज रात ध्यान में साधू गनपतदास के पास पहुँचे। जहाँ मैदान था एक आम का पेड़ था वै संत साँवरे जटाजूट बैठे थे, पेड़ के नीचे, जपते थे, बिना माला के जय गोविन्दा परमानन्दा जय गोविन्दा परमानन्दा। सिर्फ़ लंगोटी लगाये थे। हमको देखा तब उठे दोनों पैर पकड़ कर गाठिन तक सुहराये, थोड़ी देर। हमने कहा पैर पिराते नहीं हैं तब छोड़ दिये। बैठक हो गई। हमने पूछा कुछ आप पाते नहीं हैं तो कहा अरसा हो गया नींद भूख भाग गई जाड़ा घाम भाग गया।

शेरः- जो पापिन में सिरताज रहे वो भक्तन में सिरताज हुए।
श्रीराम नाम की कसरत जानि के पहलवान उस्ताद हुए ।।

भगवान के दरबार में प्रेमभाव की जरूरत है। शुद्ध शब्द उच्चारण करते हैं। मन नहीं लगता है। कथा, कीर्तन, जप, पाठ, पूजन, हवन करते हैं। कुछ सुख का अनुभव नहीं होता है। अगर उनका प्रेम भाव हो तो मन को प्रेम खींचकर अपने में लय कर दे। मंत्र में भाव ही स्वतः शक्ति स्वरूप है। जब प्रेम की नदी उमड़ती है तब ज्ञान, ध्यान, भान सब उसी में समा जाते हैं। (हमने कहा), "हमने यहाँ देखा है मैदा अहीर की माता ने हमसे राम मंत्र लिया। पढ़ी नहीं थी। लड़का पढ़ा था वह हमसे पहले मंत्र ले चुका था। हमने कहा 'अपनी माता को मंत्र याद करा देना।' उसने याद नहीं कराया। एक दिन राम जानकी ने पूछा 'क्या जपती हो' तो कहा 'महाराज जी ने बताया है वही जपती हूँ।' तो कहा 'क्या बताया है' तो बोली 'राम रमैया, सिता सितैया राम रमैया सिता सितैया।' तब राम जानकी

ने हमसे बताया। उसकी अच्छी गति हुई। हम भी देख चुके हैं और सुन चुके हैं। हमारे ननिहाल, ग्राम का नाम हरिपालपुर है जिला सीतापुर। सीतापुर से सात कोस है। वहाँ एक नान्हू अहीर था। और घर के सब मर गये थे। अकेला था। अपने हाथ बनाता खाता था उमर 60 वर्ष की थी। मामा के दरवाजे पर बहुत आदमी आये और भगवान की चर्चा होने लगी। उसमें एक भक्त ने कहा 'भगवान सर्वत्र हैं और सब बस्तु में हैं।' तब वह एक पुरानी थैली छोटी रही उठा लाया और कहा 'देखें इसमें है।' तब वह रात दिन 'थैली थैली' जपने लगा। 15 दिन जपा लोग सब हँसते थे। एक दिन, दिन ही में बहुत लोग थे राम जानकी थैली से निकल पड़े। कुछ पढ़ा लिखा नहीं था। महामूर्ख था।

मौलाना रूम की बात है। एक चरवाहा गाय, भैंस चराता था। उसका भाव था कि भगवान तुम्हारे मूड़े में पाका होता कीड़ा पड़ता। हम कीड़ा निकालते दवा लगाते। ईसा जा रहे थे रात्रि में सुना कहा "क्या बकते हो भगवान के कहीं पाका निकलता है।" उसने कहा "तुम्हीं कुछ बताओ।" उन्होंने कुछ ध्यान बता दिया। उसका मन नहीं लगा तो आकाशबाणी हुई "तुमने हमारे भक्त को बहका दिया उसका मन लगने लगा था।" फिर ईसा लौट आये और कहा "भाई तुम अपनी ही बात जपो।" इसी पर भगवान प्रगट हो गये। अंत समय भगवान खुद लेने आये।

एक अहीर "गपकुआ गपकुआ" जपता रहा एक "ऊछरौ बूड़ौं, ऊछरौ बूड़ौं" जपता रहा। दोनों की गती अच्छी हुई।

एक भक्त एक महात्मा से मंत्र लिया और कहा "हमको भजन की विधि बताओ" तो गुरु ने कहा "एकान्त में बताया जाता है।" गुरु डोलडाल गये लंगोटी खोलकर बैठे तभी वहाँ पहुँच गया कहा "महाराज बड़ा एकान्त है अब बताओ।" तब गुरु ने कहा "दुवरचोद", "वक्त बेवक्त नहीं जानता।" वही धारण कर लिया, उसके पट खुल गये। तब वे संत बोले अब हम भी कुछ बताते हैं जो देखा है। एक भक्त लाम लाम जपते थे। एक छीताराम छीताराम जपते थे। एक किशुन किशुन जपते थे। एक विशुन विशुन जपते थे। एक रधिया रधिया जपते थे। एक लछमिन लछमिन जपते थे। एक समभुआ समभुआ जपते थे। एक परवतिया परवतिया जपते थे एक हनूमान हनूमान, एक गणपतिया गणपतिया, एक भास्करा भास्करा, एक दुर्गिया दुर्गिया, एक कलिया

कलिया, एक भैरवा भैरवा, एक नरसिहाँ भगवान, एक गोविन्दा गोविन्दा, एक रघुबरा रघुबरा, एक यदुबरा यदुबरा, एक बालमुकुन्दा बालमुकुन्दा, एक रमललवा रमललवा, एक रघुनन्दना रघुनन्दना, एक वृजनन्दना, वृजनन्दना, एक यदुनन्दना यदुनन्दना, एक सियाबरवा सियाबरवा, एक राधैबरवा राधैबरवा, एक पद्माबरवा पद्माबरवा, एक रधियापतिया रधियापतिया, एक छीतापतिया छीतापतिया एकपद्मापतिया पद्मापतिया, एक जयजयलाम लामे लाम।" बड़ा विस्तार है थोड़ा लिखा है। यह सभी शब्द गलत हैं फिर भी सभी के भाव ठीक रहे इससे गती हुई।" तब हमने पूछा, "क्या जपते हो?" तो कहा, "जयगोविन्दा परमानन्दा" जपते हैं। इसी से पट खुल गये। नाना प्रकार की लीला देखते हैं। अन्दर सर में बाजा बाजते हैं गाना होता है। षठचक्कर खुल गये हैं भन्नाते रहते हैं। सातों कमल खिल गये हैं। तरह तरह की गमकाये दोनों स्वरन से आती है। देवी देवता आते हैं। भगवान का गुणानुवाद वर्णन करते हैं। कुन्डलिनी जग गई है। सब लोकों की फेरी करते हैं। अमृत घट में पी चुके हैं। शरीर अजर अमर हो गया है। बरसात का पानी ऊपर नहीं आता है।"

321. एक सन्यासी

दि. 22.11.76 3 बजे शाम:

पं. राजेन्द्रदास जी बताते थे काशी में एक संन्यासी जी गंगा असनान करके चलते तो शंकर जी पारवती जी का कीर्तन करते ताली बजा बजा कर। "जै बोलो भोला बाबा की जै बोलो भोली बाबी की।" तो पंडित जी कहते स्वामी जी यह ठीक नहीं बनता है। "भोली माई की" ठीक बनता है तो कहते हमैं यही अच्छा लगता है, जिसको जैसा अच्छा लगै वह वैसा करै।

322. बुलाकी शाह

पद:- मुक्ति भक्ति औ ज्ञान ध्यान सब प्रेम भाव में है सामिल।
सतगुर से सब भेद जनिकै बनि जावो जियतै कर मिल ।।1।।
नीच बनै सो ऊँच जाय है सुर मुनि संतन की बानी।
कहे बुलाकी शाह चेतिए थोड़े दिन की जिन्दगानी ।।2।।

323. अपढ़ की बानी

दि: 24.11.76

राम भजन बिन इल्लति किल्लति जिल्लति ।।1।।
नाम से करिये मिल्लति ।।2।।
राम सिया का रूप सामने खिल्लति ।।3।।
अंत त्यागि तन चढ़ि सिहांसन निज पुर पिल्लति ।।4।।

अपढ़ की बानी है यह। कोई कह कर चला गया। हम अपने मौज में पड़े रहे दो बजा होगा देखा नहीं कौन था।

324. श्री देखा शाह जी अपढ़ की बानी

दि: 30.11.76

(ये बानी आज दिनांक 30 नवम्बर 1976 मंगलवार को सायं 5 बजे आवाज आई है। इसे श्री महाराज जी कागज पर लिख लिये हैं। ये ग्रंथ में लिखाया है)

पद:- मात पिता का सच्चा देखा ।।1।।
संगति से भा कच्चा देखा ।।2।।
बुद्धि खाय गई गच्चा देखा ।।3।।
नर्क में गिरा चभच्चा देखा ।।4।।
राम नाम रंग रच्चा देखा ।।5।।
अजर अमर भा ढच्चा देखा ।।6।।
तन मन का भी तच्चा देखा ।।7।।
दोनों दिसि का सच्चा देखा ।।8।।

दोहा:- अपढ़ साह का शिष्य हूँ देखा साह है नाम।
मैं भी कछु नहिं हो पढ़ा सुमिरौ राम क नाम ।।1।।
अजर अमर तन ह्वै गयो 12 वर्ष का जान।
प्रेम भाव से जो जपै वा को हो कल्यान ।।2।।
सबै सक्तियाँ नाम में मन जा को लगि जाय।
सिया राम का सुत वही देखा कहै सुनाय ।।3।।

325. श्री अपढ़ साह मुराव की बानी (अजर, अमर हैं) (देखा साह के गुरु हैं)

आज 1/12/76 बुधवार को प्रातः महाराज जी ने लिखा है—दो बजे राति की बात है।

दोहाः- अपढ़न में मैं था बड़ा महामूर्ख अज्ञान।
सिया राम के जपे से खुलिगे आँखी कान ।।

वार्तिकः-सतयुग त्रेता द्वापर के भक्त देखा बहुत हैं। कलयुग के भक्तौं पर जितना प्रेम राम कृष्ण विष्णु शंकर जी का है, उतना तीनों जुगौं के भक्तन पर नहीं है। 16 हजार मुशलमान भक्त रामानंद स्वामी जी के थे। उसमें से आपने भी अपने ग्रंथ में कई लिखा है।

आपको हम बहुत लिखा सकते थे आपको कष्ट होगा बोल नहीं पाते लिखने में गर्मी बढ़ जाती है कमजोरी बहुत है। सब जाति में भक्त हुये हैं। जिसका प्रेम है उसी के भगवान हैं। जाति कोई हो सब भगवान के बनाये हैं और भगवान सब के हैं।"

हमने कहा, "आप हमैं जानते होते तो जब हमारा शरीर ठीक था तब आते तो हम को बताते तो हम सब लिख लेते। कितने दिन लगते।" तो कहा, "भक्त तो बहुत हैं जो हम जानते हैं उनके लिखने में दो साल लगता।" फिर कहा "भगवान सब का समै बांधे हैं आप को हम जानते थे (पर) आ न सके। सब काम भगवान के हुकुम से होता है।"

"जीव पढ़ता सुनता है विश्वास नहीं करता। माया माता भुला देती हैं यही बड़ा बंधन है। हम तो सिया राम सिया राम जपा है इसी से सब प्राप्ति हो गया है। नाम के अंदर ही वेद, शास्त्र, उपनिषद, संहिता, गीता, भागवति, बालमीकी रामायण, पुरान, अगणित शक्ती भरी हैं।

जब जीव दीन बन जाय शांति मिल जाय अपने को सब से नीचा मान ले परमानन्द का दरजा मिल जाता है। सब देवी देवता प्रगट होकर वरदान देते हैं। नानक जी ने कहा है पैंतिस अच्छरी में:—

मान अपिमान दोऊ जरि गयऊ।
जोऊ थे सोऊ पुनि भयऊ ।।

या किरिया को सो पहिचानै।
अद्वैत अखंड आप को मानै ।।

जो आप को गौरांग जी की माता शची जी ने श्री कृष्ण भगवान का बाल खेल लिखाया है वह इसमें सामिल कर दो तो भक्तजन समझ जायेंगे कि सही है।

श्री शची माता के श्री कृष्ण का बाल खेल के पद :

चौपाईः- होत प्रभात उठे बनवारी। दधि की मेटुकी जाय उघारी ।।1।।
लागे पावन कुँवर कन्हैया। यशुमति को दैकर दुचितैया ।।2।।
गईं यशोमति देखैं हरि को। पावैं दही शंक नहि तनको ।।3।।
माता को निरख्यो बनवारी। मेटुकी उलटि दीन तहँ सारी ।।4।।
दही भवन में तहँ भरि गयऊ।
यशुमति के उर अति दुख भयऊ ।।5।।
भागे श्याम मातु रपटायो। आँगन में क्या खेल मचायो ।।6।।
आगे श्याम ओ पीछे मैया। पकरि न पावैं दें कोड़रैया ।।7।।
माता थकि हाँफन जब लागीं। तब हरि के उर दाया जागी ।।8।।
दौड़ि के लपटि गये हरि जाई। माता पकरयो अति
रिसिआई ।।9।।
यशुमति कहैं टेरि बलरामहिं। रसरी लावो बांधैं श्यामहिं ।।10।।

लै बलराम धरैं बहु रसरी। कई तरह की मोटी पतरी ।।11।।
बांधैं यशुमति होवै छोटी। जोरैं एक में पतरी मोटी ।।12।।
छोटि परै गांठी नहिं लागै। यशुमति के तब अति रिसि जागै ।।13।।
तब बलराम कहैं सुनु माई। आदि पुरुष हरि हैं सुखदाई ।।14।।
इनको कौन बांधिहै माई। भक्तन हित प्रगटे जग आई ।।15।।
सबको बांधन छोरन हारे। सब को पालन उत्पत्ति वारे ।।16।।
सबको परलय पल में कर दें। सब को फिर पल
ही में रच दें ।।17।।
प्रेम से भक्तन वश कर लीन्हा। प्रेमै के हरि रहत अधीना ।।18।।
पुर नर नारि सुन्यौ यह बाता। आज रिसानी हरि पर माता ।।19।।
नर नारी सब देखन आवैं। यशुमति को सब मिलि समुझावैं ।।20।।

काहे बांधौ कुंवर को माता। रोय रहे अति कोमल गाता ।।21।।
यशुमति कहैं सुनो मम बानी। नित प्रति ये करते बहु हानी ।।22।।
पूजा के हित दही जमाई। दीन जुठारि बड़े दुख दाई ।।23।।
देवन की पूजा सुखदाई। दीन छोड़ाय आज यदुराई ।।24।।
या ते हम इन पर रिसि आई। पीटब साटिन बांधि अघाई ।।25।।
सब नर नारी कहैं यशोमति। तुम्हरी ठीक नहीं है यह मति ।।26।।
दही के कारन मारो श्यामहिं। शान्त करो अपने
अब जामहिं ।।27।।
कहैं यशोमति सब नर नारी। आदति इनकी दिहेव बिगारी ।।28।।
कबहूँ इनको डाटेव नाहीं। ओरहन बस लायेव हम पाहीं ।।29।।
अधिक दुलारा लड़िका होई। मातु पिता के बचन को खोई ।।30।।

लड़िकी अधिक दुलारी होवै। सो तौ दोनों कुलन को खोवै ।।31।।
अपने अपने गृह को जावो। तुम सब हमको क्या समुझावो ।।32।।
सुनि सब पुरवासी चलि दीन्हे। तन मन दुःख
श्याम रस भीने ।।33।।
हलधर कहैं छोड़िये माई। बांधि न पैहौ तुम यदुराई ।।34।।
रसरी कितनी लैकर जोरी। वृद्ध अवस्था मति भई भोरी ।।35।।
तन मन ते तो करौ बिचारा। खुल जावैं तब ज्ञान केंवारा ।।36।।
क्रोध बुद्धि की हानि करत है। क्रोध से धीरज दूर टरत है ।।37।।
कहैं यशोमति हलधर भैया। भक्तन वश जो कुंवर कन्हैया ।।38।।
करौं परिक्षा अबहिं न देरी। देखौं बात सांच है तेरी ।।39।।

दोहाः– सतयुग के भक्तन शपथ, यशुमति कहैं सुनाय।
जो हरि तुमरे प्रिय हों, तौ तुम लेव बंधाय ।।1।।

चौपाईः– अस कहि बांधन लागीं माई। गांठि न लागै अति रिसि आई ।।

दोहाः– त्रेता द्वापर के भगत, जौन होंय हरि तोर।
तिनकी शपथ देवावती लेव बंधाय यह डोर ।।2।।

चौपाईः– अस कहि फिर बंधन कर लायो।
बैठि न सक्यो गांठि दुख छायो ।।41।।

तब यशुमति बोलीं रिसि आई।
कलि के भक्तन शपथ खवाई ।।42।।
फिर बांधन लागीं जब माई। रसरी बढ़ी बंधे यदुराई ।।43।।
ऊखल में बांध्यो हरषाई। हलधर को सौंप्यौ बैठाई ।।44।।
अब गृह को मैं कार्य्य सँवारो। जो न तकौ तो तुमहि निकारौं ।।45।।
हलधर कहै सुनो महतारी। अब हम खूब करब रखवारी ।।46।।
भागि न पैहैं अब यदुराई। ऊखल बंध्यौ संग में माई ।।47।।
अस कहि यशुमति भवन में जावैं।
दही बटोरन में मन लावैं ।।48।।
तब तक श्याम कहैं हलधर से।
पकरयो मति भय्या तुम कर से ।।49।।
ऊखल खींचि द्वार मैं जावों। तुमको कैसा खेल देखावों ।।50।।
माता को टेरयो मति भाई। शपथ अपन हम तुम्हैं खवाई ।।51।।
सुनि हरि बचन हँसे बलरामा।
कीन्ह चहत हैं प्रभु कुछ कामा ।।52।।
हम कछु बोल सकैं नहि भैया।
निर्भय ह्वै जाओ सुख दैया ।।53।।
चले श्याम ऊखल कढ़ि लाई। द्वारे पर पहुँचे हरषाई ।।54।।
यमलार्जुन वृक्ष विशाला। पहुँचि गये ऊखल लै लाला ।।55।।

सोरठाः– दोनों वृक्षन बीच रह्यो फासिला हाथ भरि।
ता में ह्वै हरि खींचि, लीन्हेव ऊखल जोर करि ।।3।।

चौपाईः– दोनों वृक्षन गिरे अरराई। पुर भर में यह शब्द सुनाई ।।56।।
वृक्षन ते दुइ सुघर कुमारा। प्रगटे श्याम को रूप निहारा ।।57।।

दोहाः– चरनन में दोनों परे उठि कै अस्तुति कीन।
श्याम चतुर्भुज रूप ह्वै तब फिर दर्शन दीन ।।4।।
अन्तरध्यान भये दोऊ, गये विष्णु के धाम।
नारद श्राप ते छूटिगे लीला कीन्ही श्याम ।।5।।

326. चेतन शाह (अपढ़)
(ध्यान में आया पद लिखाया)

दि: 03.12.76 प्रात: 11 बजे

लावनी:– चित चोर को बांधै पकरि प्रेम की डोरी।
तब पहुँचि जाव हरखाय राम की ओरी ।।1।।
यह चोरन का किये संग भजन क बाधक।
सतगुरु से लै उपदेश जुटै सब साधक ।।2।।
बनि नीच शांति को गहौ दीनता आवै।
जियते में मुक्ति भक्ति ज्ञान उर आवै ।।3।।
सनमुख में राधे श्याम छटा छवि छावै।
क्या नैन सैन करि मंद मंद मुशक्यावै ।।4।।
वेदन ते नाम कि धुनी सुनौ भन्नावै।
तन छोड़ि जाय निज धाम बहुरि नहिं आवै ।।5।।
यह चेतन साह की विनय जौन गहि पावैं ।।
वा की दोनों दिसि कीर्ति देव मुनि गावैं ।।6।।

327. पंचम मगता (अपढ़)

दि: 03.12.76, 3 बजे

चौपाई:– पंचम मगता कह कर जोरी। सुनहु भक्त जन विनती मोरी ।।1।।
पढ़ा नहीं मैं हौं कछु जानो। वचन मोर यह सत्यहि मानो ।।2।।
सीता राम नाम जप कीन्हा। आँखी कान हमैं प्रभु दीन्हा ।।3।।
राम सिया सनमुख छबि छाई। भीतर बाहर निरखौं भाई ।।4।।
जो भीतर सो बाहेर जानो। मुद मंगल यह दरजा मानो ।।5।।
र रंकार ध्वनि श्रुतिन से जारी। रग रग रोम रोम एक तारी ।।6।।
सुर मुनि नित प्रति दरसन देते। उर लगाय बोलैं तुम चेते ।।7।।
अजर अमर सिया राम ने कीना। कहा पुत्र तुम परम परवीना ।।8।।

दोहा:– नाम कि प्राप्ती जाय ह्वै रूप दसा लै ध्यान।
मुक्ति भक्ति सब मिलि गई सून्य समाधी ज्ञान ।।
सब नाम के अंदर है।

328. सेवक मगता (अपढ़)

दोहा:– अजर अमर हमहूँ हैं भाई।
सत्य सत्य तुम को बतलाई।

पद:– बेशर्म उन्हीं को कहेते हैं जिनको कछु लागत शर्म नहीं ।।1।।
वै पाप करम में डूबे हैं वै धर्म का जान्यो मर्म नहीं ।।2।।
निरभय निरबैर भक्त जो हैं पीटे से होते गर्म नहीं ।।3।।
नाम रूप लै सून्य को जाना उनको शर्म औ भर्म नहीं ।।4।।

चौपाई:– भजन की साखा बहुती जाना। पाप की साखा बहुती जाना ।।1।।
भजन की साखा जिन है जाना। ते साकेत को कीन पयाना ।।2।।
पाप कि साखा जिन है जाना। ते गे नर्क में दुख महाना ।।3।।
राम नाम जपि मन ठहराना। तब खुलि जावैं आंखी कान ।।4।।
सेवक मगता नाम हमारा। राम सिया लखते निशि बारा ।।5।।

329. आवाज सुनी
राग अद्धा

दि. 3.12.76 सांय 6 बजे

इस पद की आवाज अभी बाएँ कान से पूज्य श्री महाराज जी (परमहंस राम मंगल दास जी) को सुनाई पड़ी।

पद:– विहँसि हरि चितवैं तुमरी ओरिया ।।1।।
सत्गुरु से सुमिरन विधि लेकर, लागि जाव वहि ओरिया ।।2।।
सूरति शब्द में जब पगि जावै, टूटै ना वहि डोरिया ।।3।।
अन्त छोड़ि तन चलि साकेत में, बैठो प्रभु की कोरिया ।।4।।

330. भक्त सहिदिया, मुसलमान (अपढ़)

पद:– सखी री चितवनि हरि की बांकी ।।1।।
सिर पर मुकुट श्रवन दोउ कुंडल हीरन की कनी टांकी ।।2।।
जग मग जग मग जोती निकलै नैनन पलकै ढांकी ।।3।।
छबि सिंगार छटा को वरनै शेष शारदा थाकी ।।4।।
सुर मुनि नभ ते निरखैं बोलैं जै जै जै पितु माँ की ।।5।।

निरछल भक्त होय सो दीखै हर दम सनमुख झांकी ॥6॥
अंत छोड़ि तन निजपुर राजै गर्भ कि मिटि गई बाकी ॥7॥
कहैं सहिदिया हम लखि पावा प्रेम भाव में पाकी ॥8॥

पदः– हरि सुमिरन बिन बाट क ढेला ॥1॥
ज्ञान गुरु तन में हैं राजत चित को करिये चेला ॥2॥
सिया राम प्रिय श्याम रमा हरि से ह्वै जावै मेला ॥3॥
सुर मुनि आय आय दें आशिष जियतै भव दुख झेला ॥4॥
नाशवान सब जग की वसतू संग न जावै धेला ॥5॥
मन तुमार जब संग लेय करि तब ह्वै जाव अकेला ॥6॥
कहैं सहिदिया प्रेम भाव बिन मिटै न ठलिक ठेला ॥7॥
या से विनय हमारी सुनिये सांचे चेली चेला ॥8॥

दोहाः– राम नाम सुमिरन करौ सब से राखौ मेल।
अंत समय निजधाम हो छूटै तेलि क तेल ॥1॥
कहै सहिदिया अपढ़ मैं राम नाम जप कीन।
इसी से षट रूपन हमैं नैन श्रवन दै दीन ॥2॥
अजर अमर तन ह्वै गयो साखी हर हनुमान।
कहै सहिदिया भजन बिन मिलै न पद निर्वान ॥3॥
ऊपर से सब से मिलौ भीतर से प्रभु ओर।
कहै सहिदिया जाय छुटि यह है मोर औ तोर ॥4॥

331. दरसन साह (अपढ़)

दि. 5.12.76, 11 बजे

पदः– जब सिय राम के दरसन होते ॥1॥
माया चोर निकसि कै तन से दूरि खड़े ह्वै रोते ॥2॥
नाम कि धुनि परकास समाधी कर्म शुभाशुभ जोते ॥3॥
दरसन साह कहै तन तजि के चलि साकेत में सोते ॥4॥

दोहाः– महासुःख साकेत में को करि सकत बखान।
दरसन साह कहै सुनो आवागमन नसान ॥1॥
परस्वारथ परमारथ साधै सो है पूरा सूर।
दरसन साह कहै गुनौ बनि जावै जो घूर ॥2॥

वे की कीरति दोऊ दिसि सुर मुनि करत बखान।
दरसन साह कहै भयो रंग रूप भगवान ॥3॥
समुझाये समुझै नहीं तन मन करिखा लागि।
दरसन साह कहै सही पाप में गे वै पागि ॥4॥

332. अज्ञान शाह जी (अपढ़)

दिः 11.12.76

पदः– अज्ञानी बनते हम ज्ञानी ॥1॥
पढ़ सुनि लिख कंठस्थ लीन करि बोलत मीठी बानी ॥2॥
मान बड़ाई में है माते पास न कौड़ी कानी ॥3॥
कर उठाय उपदेश करत है सार वस्तु नहिं जानी ॥4॥
मत्थे के ज्ञान से गती न होइहै हाथ में हो सो जानी ॥5॥
आडम्बर का ज्ञान गलत है अन्त में हो हैरानी ॥6॥
लै जमदूत नर्क में डारैं महा दुःख की खानी ॥7॥
सतगुरु करो भेद तब पावो सुमिरौ सारंग पानी ॥8॥
नाम रूप परकास समाधी मिल जाय सुख की खानी ॥9॥
चलि कै बैठ जाव साकेत में सिया राम राजधानी ॥10॥
पढ़ा नहीं मैं महा मूर्ख हूँ कहैं शाह अज्ञानी ॥11॥
यह पद पढ़ गुनि लीजै भक्तौं जो जानी सो मानी ॥12॥

333. जग जीवन साहेब

दिः 19.12.76

दोहाः– राम नाम जाने बिना होत नहीं कल्यान।
कहै जग जीवन दास हम धरि कै देखे ध्यान ॥1॥
राम नाम हो जानिगे पायो पद निर्वान।
जग जीवन कह धन्य वै सुर मुनि कीन बखान ॥2॥
अमरपुरी में जाय के बैठि गये मुख मौन।
जग जीवन हरि रूप भे छूट आवागौन ॥3॥
सुमिरन वा को देत फल बनि जावै जो नीच।
जग जीवन हरि का भया रहा न नेकौ बीच ॥4॥

चौपाईः– बुद्धि भ्रष्ट जा की ह्वै जावै। जो मन आवै सोई भावै ।।1।।
पापी की संगति जो करि है। सो तन तजि कै नर्क सिधरिहै ।।2।।
जो वा को करि है विश्वासा। ता को होय नर्क में बासा ।।3।।
कहै जग जीवन दास पुकारी। आँखिन देखी बात हमारी ।।4।।

वार्तिकः–

भक्त सच्चा वही है जिसमें उदारता है। उदारता नहीं है वह अभक्त है। उसका जप पाठ पूजन कीर्तन हवन सब दिखाऊ है। दुनियाँ का काम अंधा है। विरलै कोई भक्त होते हैं जिनको इस बात का अनुभव है। वह दिखाऊ भक्ति भगवान के यहाँ खाता में नहीं लिखी जाती है उनको सजा दी जाती है। वह साँचा दरबार है। आडम्बर के ज्ञान में प्राण नहीं है। उनको गोस्वामी जी ने बनचक भक्त कहा है।

334. कसनी शाह जी

द्वैत उठाय धरै जो ताखा। सो जानै यह भजन की शाखा ।।
श्री जगजीवन साहेब भाखा। धन्य भक्त जो सिखि धरि राखा ।।
सबसे नीच बनै जो कोई। वाकी दोउ दिशि जै जै होई।
शांति दीनता गोद खिलावै। मुख चूमै औ हिये लगावै ।।
बार बार ऊपर उलरावै। पुत्र पुत्र कहि कै दुलरावै ।।
दया धर्म जो उर में लावै। सो सच्चा प्रभु भक्त कहावै ।।
तन छूटै साकेत सिधावै। रामसिया ढिग आसन पावै ।।
कसनी शाह कहैं कर जोरी। भजन करौ तन मन को जोरी।

335. जगजीवन साहेब

जीवन की जो बंदी छोरै उसका सतगुरु नाम।
जगजीवन कह पहुंचि जाय सो सीधे हरि के धाम।
फेरि गर्भ में आय सकत नहिं यह है अचल मुकाम।
जग जीवन कह बिरलै कोई जाय सकत यहि धाम ।।

दोहाः– जगजीवन जग आइ कै जग जीवन लो जान।
जगजीवन तब गर्भ का छूटि जाय लटकान ।।1।।
जग जीवन श्री राम हैं जग जीवन श्री श्याम।
जग जीवन श्री बिष्णु हैं शक्तिन सहित प्रनाम ।।2।।

336. श्री खुश ख़ुर्रम शाह जी

दिः 12.12.76

जिसका मुरशिद से है प्रेम, उसके सब दिन रहिहै छेम।

मुझे सुमिरन का कूंचा बताया गुरुवर ।।1।।
जल भोजन का संजम बताया गुरुवर ।।2।।
साज अनहद का घट में सुनाया गुरुवर ।।3।।
जाम कौसर का घूट में पिलाया गुरुवर ।।4।।
चश्म औ गोश हमारे खुलाया गुरुवर ।।5।।

षट रूपों को सन्मुख टिकाया गुरुवर ।।6।।
देवी देवताओं से मेल कराया गुरुवर ।।7।।
कुण्डलिनी शक्ति को फेरि जगाया गुरुवर ।।8।।
शुभ लोकों की फेरी लगवाया गुरुवर ।।9।।
षट चक्करों को सोधि चलाया गुरुवर ।।10।।

कमल सातौं को उलटि खिलाया गुरुवर ।।11।।
बीज मंतर की धुनी को सुनवाया गुरुवर ।।12।।
लय सून्य समाधि पठाया गुरुवर ।।13।।
कर्म रेखौं पर मेख मराया गुरुवर ।।14।।
तन छूटा तो निजपुर पठाया गुरुवर ।।5।।
कहैं ख़ुर्रम हम तुमको बताया गुरुवर ।।6।।

सोरठाः– खुश ख़ुर्रम है नाम, अपढ़ पढ़ा मैं हौं नहीं ।।
सुमिरौं हरि का नाम, तुमसे भेद कहा सही ।।11।।

337. श्री टंच शाह जी (अपढ़)

दिः 13.12.76

टंच शाह कौम के खुर्दुवा यानी मुसलमान जो नाम रूप को जान गया यानी पाय गया टंच लिया पकड़ लिया शाह हो गया उसे टंच शाह कहते हैं। यह अपढ़ हैं अजर अमर हैं। मुहम्मद साहब के समै से हैं उनके संगी हैं।

दोहाः– टंचशाह वाको कहैं नाम रूप गयो पाय।
वाकी दोउ दिसि बनि गई सुरमुनि वेदन गाय ॥1॥
माया निद्रा पांचौ चोरवा राम नाम ही जपते हैं।
जे नहिं जपते उनको पकड़ै, पीटैं औ मुंह दबते हैं ॥2॥
काल मृत्यु जमराज और गण, राम नाम से डरते हैं।
दूरहिं से लखि कांपन लगते मुंह घुमाय कर भगते हैं ॥3॥
राम नाम जपि अजर अमर भे कोटिन को हम लखते हैं।
टंच शाह कहैं हमहूं जपते, सांची तुमसे कहते हैं ॥4॥
अपढ़ जाति खुर्दवा की मेरी, निर्भय ख़लक़ में फिरते हैं।
अजर अमर तन भया हमारा, हरदम रूप को तकते हैं ॥5॥

शेरः– टंच लिया है नाम रूप को, निर्भय और निर्वैर हुआ।
तब परमेश्वर प्रगट गये ह्वै, सर पर कर धरि दीन दुआ ॥6॥

338. श्री रसना दास
(अपढ़, अजर अमर हैं)

दोहाः– दुनियावी जो सौक है लात मार दे टारि।
ना समझैं तो नर्क हो माया लेवै मारि ॥

चौपाईः– जो धन में होवै आसक्त। वह फिर कैसे होवै भक्त ॥1॥
पढ़ना सुनना लिखना कहना। यह सब माया का है गहना ॥2॥
मनुवां जब हो जावै ठीक। तब कटि जावै भाल कि लीक ॥3॥
संसारी चीजैं हों फीक। जैस सुरती की हौ पीक ॥4॥

दोहाः– मन का जो काबू करै सो हो भक्त महान।
रसना दास कहैं गुनौ सुर मुनि वेद बखान ॥

चौपाईः– इस रसना को जो कोई रोकै। माया चोरन को गहि ठोकै ॥1॥
तब वह भजन करै मन लाई। विधि के लेख को देय मिटाई ॥2॥
राम नाम की धुनि खुलि जावै। ररंकार जो बीज कहावै ॥3॥
सन्मुख राम सिया छबि छावै।
छिन छिन मन्द मन्द मुसक्यावै ॥4॥

तन त्यागै साकेत सिधावै। गर्भ वास से छुट्टी पावै ॥5॥
रसना दास कहै कर जोरी। अपढ़ जाति का मैं हूँ कोरी ॥6॥

दोहाः– खान पान में मन लगा उनसे भक्ति न होय।
रसना दास कहै सुने छूटि सकत न दोय ॥

339. नानक जी

दिः 15.12.76
नानक जी ने कहा हैः–

पंडित सो जो मन पर बोधै।
राम नाम आतम मह सोधै ॥

340. पैहारी बाबा

पंडित परम तत्व को जानै ॥1॥
करि पावै तब ठीक ठेकानै ॥2॥
पर बोधै जो शरनि में आवै ॥3॥
सो पंडित उत्तम गति पावै ॥4॥

पंडित, विरागी, उदासी, सन्यासी, ब्रह्मचारी, निरमला, गोरख पंथी, कबीर पंथी सब का अर्थ एक ही है।

341. नेम शाह जी

दिः 15.12.76 (रात में 2 बजे ध्यान में बताया)
पदः- रसना को जो लेवै जीति ॥1॥
मन औ चोर जांय ह्वै मीति ॥2॥
छूट जाय सब की अनरीति ॥3॥
हर दम तुम से करिहैं प्रीति ॥4॥
तुमको होवै तब परतीति ॥5॥
तब गिरि जाय द्वैत की भीति ॥6॥
चारौ युग की है यह नीति ॥7॥
सब के हित का है यह गीति ॥8॥

342. टेम शाह जी

पदः- नेम टेम से सुमिरन करिये तन मन प्रेम लगा करके ।।1।।
आँखी कान जांय खुलि तुम्हरे माया चोर भगा करके ।।2।।
मान अपिमान संग नहि छोड़त जलमत मरत ठगा करके ।।3।।
सुमिरन करौ राम सिय दरसैं मानै तुम्है सगा करके ।।4।।

दोहाः– हिरदय में तो भाव विराजै नैनन में है प्रेम।
दोनों की जब होय एकता छूटै नेम औ टेम ।।

वार्तिकः-

आज हमने दो भक्तौं (नेम शाह औ टेम शाह जी) से कहा, "हम बोल नहीं पाते हैं लिख नहीं पाते हैं बोलने से पेट में गर्मी बढ़ जाती है। मुंह कड़ू हो जाता है जबान सुखने लगती है। लिखने में आँखी लगावौ हाथ लगावो मन लगावो तो सर में बड़े जोर से बाजा बाजते हैं, गाना होता है अलापै राग रागिनी भरते हैं मालूम होता है सर फट जायगा। वैसे हर समय सैकड़ों बाजा बाजते हैं। किसी की बात सुन नहीं पाते हैं। 18 की उम्र से अब फगुन वदी 10 दिन बुधवार दो बजे राति का जन्म है तब 84 शुरू होंगी। आप सब अच्छे पढ़े पंडित को बता कर लिखवाया करौ।" तो कहा, "पंडित अपढ़ौं की बानी नहीं मानेंगे। उनके हृदय में मान अपिमान अविद्या की घानी (हथौड़ी) चलती है। भगवान के दरबार में प्रेमी की बात लिखी जाती है। तुम्हारा सब देवी देवतावों से प्रेम है और सब मत के भक्तों से। हम भगवान के हुकुम से काम करते हैं। तुम दो किताब (दो दरजा) पढ़े हो तुम्हारा भाव प्रेम ठीक है ज़ीवों पर दया है, सहन शील हो किसी जाति से घिन्ना नहीं है, इससे लिखाते हैं।"

343. जुक्ती शाह जी (अपढ़)

दिः 16.12.76, साढ़े नौ बजे

चौपाईः– साधू का मन धन में लागा। तन तजि गयो नर्क में टांगा ।।1।।
मातु पिता का भयो अभागा। नर्क में पायो पाप का बागा ।।2।।
सतगुरु के जो चरनन लागा। वाको टूट द्वैत का धागा ।।3।।
तन मन प्रेम से सुमिरन लागा। मिला परम पद जियतै जागा ।।4।।

धन में साधु की भई आसक्ती। वा के निकट न आवै भक्ती ।।5।।
सतगुरु से लै भजन की जुक्ती। जियतै पावै मुक्ती भक्ती ।।6।।
ज्ञान ध्यान विज्ञान में तृप्ती। लै हो शून्य कटै आसक्ती ।।7।।
जुक्ती शाह कहै यह जुक्ती। नीच बनै लखि माया झुकती।।

दोहाः– जुक्ती शाह की विनय यह दीन बनो गहि शांति।
निर्भय औ निर्बैर हो छूटि जाय तब भ्रांति ।।1।।
राम नाम सतगुरु दियो तन मन से जप कीन।
अजर अमर तन ह्वै गयो हरि के हौं आधीन ।।2।।
अपढ़ पढ़ा कछु हौं नहीं सत्य मानिये आप।
अंधरा बहिरापन मिटा प्रेम में हौं गड़काप ।।3।।
राम सिया सन्मुख रहैं सब के माई बाप।
काया गढ़ में खोजिये मिटि जाय तीनों ताप ।।4।।

344. श्री घंमडी शाह जी (अपढ़)

दिः 17.12.76 – साढ़े दस बजे

चौपाईः– साधू होकर पैसा जोरैं। उनको जम लै नर्क में बोरैं ।।1।।
खानपान में मन को जोड़ैं। राम रहीम से मुख को मोड़ैं ।।2।।
दुनियां से जे नाता तोड़ैं। ते सिया राम से तन मन जोड़ैं ।।3।।
अहंकार से मुख को मोड़ैं कपट को पकरि के खुब झकझोरैं ।।4।।
धन मद बड़ा कठिन दुःखदाई। भजन में विघन करै चट आई ।।5।।
लेन देन में रहत सदाई। भूख प्यास को दें चुपकाई ।।6।।
कमजोरी नहिं उसे सताई। धन का नशा चढ़ा बलदाई ।।7।।
अपढ़ पढ़ा कछु हौं नहिं भाई। सत्य बात तुम को बतलाई ।।8।।

दोहाः– राम भजन की विधि हमैं सतगुरु दीन बताय।
कहै घमंडी शाह हम तन मन दीन लगाय ।।1।।
राम सिया सनमुख रहत नाम कि धुनि भन्नाय।
अजर अमर तन ह्वै गयो, ठीक तुम्हैं लिखवाय ।।2।।

345. हस्थ शाह जी (अपढ़, अजर अमर हैं)
(सिया राम का हाथ इन पर हर समय रहेता है)

दि: 18.12.76, 10.30 बजे

पद:- जे जन परस्वारथ में चुक्के ।।1।।
सहते जमन के धक्के मुक्के ।।2।।
जे जन परमारथ में पक्के ।।3।।
छूटे जमन के धक्के मुक्के ।।4।।

दोहा:– धन मद बल मद रूप मद विद्या मद में मस्त।
राम नाम मद पिये बिन छूटि सकत नहिं गस्त ।।1।।
परस्वारथ परमार्थ में जे जन ह्वै गे मस्त।
उन पर हर दम रहत है सिया राम का हस्त ।।2।।
अजर अमर वै ह्वै गये मुक्ति भक्ति को पाय।
ज्ञान ध्यान विज्ञान चट आय गये लपटाय ।।3।।
प्रेम नदी उमड़ै जहाँ रहै न तन को भान।
जो को भाव विशाल हो सो पावै यह जान ।।4।।
प्रेम में जे जन अस्त है तिन को समझौ मस्त।
सिया राम का हर समय उन पर रहेता दस्त ।।5।।

346. बड़ी बुआ

दि: 19.12.76, 10 बजे

बड़ी बुआ का कहेना है:–

जप, पाठ, पूजन, कीर्तन, कथा, हवन, सेवा धर्म, गरीबौं को भोजन कपड़ा देना जिसका जिससे प्रेम हो विश्वास करके मन लगाकर करै उसके पट खुल जाते हैं। जर्रा, जर्रा कण-कण, तिल-तिल, अणु-अणु एक ही शब्द हैं। देश-देश की बोली है, सब में भगवान हैं। जब अमल करौ तब बिमल ह्वै जावै, देखने-सुनने लगौ। वाद-विवाद छोड़ दे। भगवान का भजन तभी होता है जब द्वैत छूट जाता है। भक्तौं के लिये भगवान बहुत रूप धारन किये हैं। ईश्वर के सिवाय दूसरा कोई नहीं है। जब तक वाद विवाद है तब तक कुछ नहीं होगा। इससे साधक आगे बढ़ नहीं सकता है। साधक सरलता धारन करै उसे दीनता आ जाय शांति मिल जाय।

347. अंधे शाह जी

दि: 21.12.76

शेर:– हर जगह मौजूद हैं हरि, पर नज़र आते नहीं ।।
मन के साधन के बिना उनको कोई पाते नहीं ।।

चमेली जान का कहना है:–
लखौ सियाराम राधेश्याम लक्ष्मी विष्णु छबि छाई।
नहीं तिल भर जगह खाली सुनो हमने कहीं पाई ।।

दोहा:– अमर भये से क्या भयो राम नाम नहिं जान।
जग में चक्कर करत हैं मिलै न पद निर्बान ।।

वार्तिक:–

अजर अमर हजारौं हैं उनका नाम रूप परकास समाधी की प्राप्ति है। उनके लिए हर जगह साकेत है। उनको सब देवी देवता ऋषि मुनि सिद्ध सन्त हिन्दू मुसलमान मिलते हैं। उनकी महिमा अपार है। अगम, अकथ, अलेख, अकह, अथाह है।

गोस्वामी जी ने कहा है:–

चौपाई:– विधि हरि हर कवि कोविद बानी।
कहत साधु महिमा सकुचानी ।।

नानक जी ने कहा है:–
सन्त की महिमा वेद न जानै।
जेता सुनै तेता बखिआनै ।।

कबीर जी ने कहा है:–
नदिया एक घाट बहुतेरे।
कहैं कबीर बचन के फेरे ।।

वार्तिक:–

जो श्रुतिन से शब्द होता है उसे ब्रह्म बानी कहते हैं, सब लोकौं से हर जगह से हो रही है उसी को सुनौ और चक्षुओं से अपने इष्ट का दर्शन करौ। सब से सुलभ रास्ता यही है।

हिन्दू मुसलमान जानते हैं वह करते हैं। जो प्रेमी भक्तौं की कथा महाराज जी ने बताया है उसे लिखकर फिर बन्द कर दो।

348. परपंच शाह जी
(अपढ़, अजर अमर हैं)

चौपाई:–जिनके तन मन में नहिं हिम्मति।
वै नहिं जानैं नाम की किम्मति ।।1।।
आलस हिम्मति का है दुश्मन।
या से शक्ति नहीं है तन मन ।।2।।
बृथा उमिरि बीति गई सारी।
तन तजि पहुँचे नर्क मझारी ।।3।।
कल्पन भोगैं फिर जग आवैं।
शुभ कारज बिन मुक्ति न पावैं ।।4।।
कर्मन सुर मुनि श्रेष्ठ बतावा।
कर्म अनुसार दुःख सुख पावा ।।5।।

पढ़ति सुनति औरेनि समुझावत।
अपने मन को रोकि न पावत ।।6।।
झूठा ज्ञान कथैं पाखंडी।
अगिनी बनत नहिं गीली कंड़ी ।।7।।
सतगुरु करो भजन विधि जानो।
तब पावोगे ठीक ठेकानो ।।8।।
अपढ़ जाति धानुक बसि खोरा।
अजर अमर तन ह्वैगा मोरा ।।9।।
नाम की धुनि हर शै से जारी।
राम सिया सनमुख छबि न्यारी ।।10।।
परपंच शाह है नाम हमारा।
छूटि गया परपंच क भारा ।।11।।

349. श्री भुरवा धरकार
(अपढ़, अजर अमर हैं)

दिः 23.12.76; 11 बजे

पदः– सिया राम प्रिया श्याम रमा हरि उमा शंभु से रूठे हैं ।।1।।
उनसे सब सुर सक्ती रिषी मुनि भक्तौ मानो रूठे हैं ।।2।।
वै झूंठेन के गुरु झूंठे हैं ।।3।।
वै घुने पेड़ के ठूंठे हैं ।।4 ।।

दोहाः– अपढ़ जाति धरकार की, राम नाम गुरु दीन।
तन मन प्रेम लगाय कै, जुटेन खूब जप कीन ।।1।।
राम सिया सनमुख रहै नाम कि धुनि एकतार।
बारह वर्ष क तन भयो अजर अमर सुख सार ।।2।।
भुरवा नाम हमार है निरभय औ निरवैर।
राम नाम सुमिरन करै इसी से होवै खैर ।।3 ।।

350. श्री रामदयाल काछी, परागराज
(अजर अमर हैं)

।। कुम्भ मेला महातम ।।

दिः 23.01.77 ई.

श्री स्वामी शंकराचार्य जी के समै से अजर अमर हुये श्री शंकर जी ने किया। 12 की उमर में माता पिता मर गये तो हमैं बड़ा दुःख हुआ अब हम क्या करैं, तो शंकर जी प्रगट हुये, कहा तुम राम राम करौ, मरना जीना तो लगा ही रहता है। हम राम राम करने लगे तो लोग हमारी बड़ी खातिर करने लगे, भोजन कपड़ा सब काम ठीक कर दिया। जब यहाँ कुम्भ का पर्व आया हमें 12 साल राम राम करते हो गये। तब शंकर जी ने कहा "तीन नहान होते हैं 1) मकर संक्रांति, 2) अमावश और 3) बसंत पंचमी। देवी देवता रिषी मुनी सिद्धि संत 2 बजे ब्रह्म मुहूर्त में अस्नान करते हैं, तुम तीनों पर्व 3 बजे नहाना।" हमने आज्ञा का पालन किया हमारे पट खुल गये। फिर शंकर जी ने कहा "कुम्भ अस्नान करने से 12 वर्ष के पाप नाश होते हैं अंत में बड़ी ऊंची गती

होती है, फिर नहा कर बड़ी दीनता शांति से रहै। अगर फिर कुछ खराब काम करेगा तो घोर नर्क होता है। पर उपकार और अपने इष्ट में अटल विश्वास राखै। अपना तकलीफ़ सह ले दूसरे को आराम दे, तो यहाँ वहाँ उसकी कीर्ति बनी रहती है। राम नाम में अपार शक्ति है इसी से हम अजर अमर हैं। तुमको भी अजर अमर कर दिया। जितना महात्म पराग जी के कुम्भ का है उतना हरद्वार-नासिक-उज्जैन का नहीं है।" इतना कह कर शंकर जी अंतर ध्यान हो गये।

॥ श्री कबीर जी ॥

चारौं धाम को जो निशचै भक्ती से प्रेम से जाता है वह चौथा बैकुंठ पूरा पाता है। यहाँ के 4 हज़ार वर्ष जब बीतते हैं तब वहाँ का 1 दिन माना जाता है। इस तरह से 92 करोड़ वर्ष का पूरा मिलता है। फिर वहाँ से लौट कर यहाँ आकर दीनता शांति से रहै नहीं तो घोर नर्क होता है। यह श्री कबीर जी ने लिखवाया है।

351. श्री छोटे शाह जी (अपढ़)

दिः 23.01.77

पदः– भक्तौ बन जाव सब से छोट ।।1।।
बड़ी भाग ते नर तन पायो बने बैठ हौ खोट ।।2।।
मात पिता का नहा धरावत रह्यो पाप में लोट ।।3।।
जब यमदूत आय कै घेरैं सर पर देवैं चोट ।।4।।
कहैं अरे नालायक सारे धरे पाप का मोट ।।5।।
कलपन चलि के भोगैं नर्क में कौन लेय तेरी ओट ।।6।।
छोटे कहैं ढूढ़ि सतगुरु के चरनन परि जा लोट ।।7।।
सुरति शब्द का भजन जानि कै सारे पापन घोट ।।8।।

दोहाः– सबै पदारथ पास हैं छोटे कह ले जान।
अंत समय हरि धाम ले आवागमन नशान ।।1।।

352. श्री नीचशाह जी (अपढ़)
मुरशिदाबाद, बंगाल

दिः 28.01.77
आज दो बजे रात को आकर सुनाये थे।

पदः– भजन में जौन नीके हैं। वही सियराम जी के हैं ।।
चोर सब भागि लूके हैं। फेरि कबहूं न पूके हैं ।।
दीन बनि जौन झूके हैं। बासना सारी फूके हैं ।।
भजन में जौन चूके हैं। पकड़ि जम मुख में थूके हैं ।।

दोहाः– नीच शाह कह नीच बनि, गुजर करै जग माहिं।
मुक्ति भक्ति जियतै मिलै, अंत में प्रभु पुर जाहिं ।।1।।
अपढ़ जाति मुसलमान की, राम नाम जप कीन।
नीच शाह कहैं रामसिय, अजर अमर करि दीन ।।2।।

353. श्री दयाशाह जी (अपढ़)

पदः– निज इष्ट से प्रेम भया जिसका, वह सुर सकती
रिषि मुनि मानत ।।1।।
उसके तो आंखी कान खुले, वह जानत है यासे मानत ।।2।।
सियराम रमैं सब में भक्तौ, जो नहिं जानत सो नहिं मानत ।।3।।
भगवान औ मौत को जो भूला, सो अपने मन ताना तानत ।।4।।

पदः– पढ़ि सुनि लिखि कंठस्थ किहे पर, अमल बिना
नहिं विमल भया ।।1।।
तब कैसे पार होय भक्तौ, उसको नहिं आती नेक हया ।।2।।
बिन जाने बूझे कूचे पर, मुरशिद बिन कहिये कौन गया ।।3।।
यासे नर नारी चेत करौ, सुमिरौ सियराम करेंगे दया ।।4।।

दोहाः– दयाशाह कह दया बिन, भक्त होत नहिं पास।
या से दया न छाड़िये, जब लग तन में सांस ।।1।।

पदः– काम क्रोध मद लोभ मोह यह सुकृत लूटने वाले हैं ।।1।।
इनसे बचै सो भक्त जाय ह्वै यह दुष्टों के साले हैं ।।2।।
हरदम भक्त को ताका करते सीखे पेच निराले हैं ।।3।।
मुरशिद बचन पै तुलि जाव यारो तब इनके मुंह काले हैं ।।4।।

बार्तिकः–

नेवाज़ पढ़ने में जब तनमैता हो जाय तब मालिक के यहाँ नेवाज़ सही लिखी जाती है। उसके कई कोड़े मारौ उसको पता न चलैगा यह पहिचान है। नेवाज़ को हिन्दू प्रार्थना कहते हैं। इसके पढ़ने के पांच समय कहे गये हैं इससे पट खुल जाते हैं किसके, जिसका द्वैद (द्वैत) भाव छूट जाता है।

रोजा को हिन्दू ब्रत कहते हैं, इससे भी पट खुल जाते हैं। दया धर्म बना रहै, पांचौ चोरन से बच कर रहै, सच्चाई की बड़ी ज़रूरत है। लालच से दूर रहै, दीनता शांति को पकड़े रहै, अपने को सब से तुच्छ मान ले प्रेम आकर लिपटि जाय, मन गुन प्रान जीव आत्मा परमात्मा में लै ह्वै जाय। रोजा में भी मालिक का नाम कोई कंठ से जपता है कोई स्वांसा से जपता है। मन लग जाय तो पट खुल जायं शरीर खाली रहता है। जिनका मन लग जाता है वै देखने सुनने लगते हैं।

354. श्री निरद्वंद साह जी (अपढ़)

पदः– निरद्वंद साह कहैं भक्त वही, जिसने तन मन से भजन किया ।।1।।
धुनि नाम प्रकाश समाधि जानि, संमुख निरखै रघुनाथ सिया ।।2।।
सुर मुनि आवैं जै जै बोलैं, जियतै में मुक्ति औ भक्ति लिया ।।3।।
तन छोड़ि सिंहासन बैठि चला, सियाराम के पास में बास लिया ।।4।।

पदः– निर्भय निर्बैर वही जग में, जो मन इन्द्रिन को जीति लिया ।।1।।
लै चोरन को भगि गई अजा, तब कजा नहीं प्रभु अमर किया ।।2।।
भक्त कि इच्छा करैं हरि पूर, तन मन प्रेम में जो है चूर ।।3।।
खलक है नेरे फलक है दूर, दोनों दिशि वाको मंजूर ।।4।।

चौपाईः– महा अपढ़ मैं हौं अज्ञानी। सन्मुख राम सिया महरानी ।।1।।
अंदर से उठती जो बानी। सो तव सन्मुख दीन बखानी ।।2।।
राम भजन बिन हो हैरानी। आना जाना ऐंचा तानी ।।3।।
निरद्वंद साह कहैं जो हैं ज्ञानी। सो मानैंगे मेरी बानी ।।4।।

355. श्री मुलाजिम शाह जी (अपढ़)

पदः– सियाराम की करौ मुलाजमति, जियति होहु भवपार ।।1।।
नाम कि धुनि परकास समाधी, हरदम हो दीदार ।।2।।
सुर सक्ती सब दर्शन देवैं, बोलैं जै जै कार ।।3।।
कहैं मुलाजिम साह, इसी से, भयो मोर निस्तार ।।4।।

दोहाः– अपढ़ पढ़ा कछु हौं नहीं, भक्तौ मानो बचन हमार।
अजर अमर सियाराम ने कीना, प्रेम में हो मतवार ।।1।।

356. श्री कामिल साह जी (अपढ़, अजर अमर हैं)

साहाबाद

दोहाः– जै लंगूर वीर हनुमान ।।1।।
सरन आपकी जो कोइ आवत, तुरत करत कल्यान ।।2।।
रामसिया की भक्ति देत हो, ऐसे दया निधान ।।3।।
माया चोर आपको डरते, देखत दूरि परान ।।4।।
विधि हरि हर सुर मुनि सब मानत, अपने प्रांण समान ।।5।।
अजर अमर हमको करि दीन्हेव अपढ़ जाति मुसलमान ।।6।।
जाड़ घाम औ भूख प्यास नहिं, तन ह्वैगो बलवान ।।7।।
निरभय औ निर्बैर गयो ह्वै, आवागमन नसान ।।8।।

357. श्री कमाई शाह जी (अपढ़, अजर अमर हैं)

पदः– कमाई नाम की करिये बदौलत जिसकी जाना है ।।1।।
जानि मुरशिद से लो कूचा पास ही में खजाना है ।।2।।
ध्यान परकाश लय होवे सून्य में चलि समाना है ।।3।।
नाम की धुनि सुनो रं रं लिखा विधि का कटाना है ।।4।।

हर समय राम सीता की छटा सन्मुख में छाना है ।।5।।
बजै अनहद सुनौ घट में अमी पी मुस्कियाना है ।।6।।
जगै नागिन चलै संग में लोक शुभ घूम आना है ।।7।।
चक्र षट् वेधि चालू हों कमल सातो खिलाना है ।।8।।

देव मुनि आय दे दरशन लिपटि उर में लगाना है ।।9।।
प्रेम में मस्त किमि बोलो नैनो से जल बहाना है ।।10।।
अपढ़ में जाति का मेहतर सत्य तुम से बखाना है ।।11।।
अमल जियतै में जो करिले वही बसरों में दाना है ।।12।।

न आना है न जाना है जिसे मिलिगो ठिकाना है ।।13।।
अजर औ अमर तन मेरा कमाई कह चेताना है ।।14।।
जे जानेंगे ते मानेंगे इसी में सुख महाना है ।।15।।
सुरति औ शब्द का मारग इसी में सब समाना है ।।16।।

358. श्री हवहब साह जी
(अपढ़, अजर अमर हैं)

दोहाः– राम नाम जप जानि कै हम सब भये फकीर।
जाको कोई फिकिर नहिं ताको कहत फकीर ।।1।।
राम नाम की धुनि खुली हर शै से भन्नाय।
रामसिया सनमुख भये सोभा बरनि न जाय ।।2।।
अजर अमर तन ह्वै गयो बारह वर्ष क जान।
ध्यान ज्ञान परकाश लै सून्य में जाय समान ।।3।।
सतगुरु ने दाया करी मिलिगा सुःख महान।
नर तन का फल यह सही बड़ी भाग्य सो जान ।।4।।
हवहब साह कहै सुनो जाति मोरि कलवार।
अपढ़ पढ़ा कछु हौं नहीं मैं मति मंद गंवार ।।5।।

चौपाईः– पैसा में जाको मन लागा। सो तौ साधू बड़ा अभागा ।।1।।
पैसा मिलै धरम में लावै। सो साधू उत्तम गति पावै ।।2।।

सतगुरु करि के जो कोई जागा। पायो मुक्ति भक्ति का बागा ।।3।।
द्वैत के टूटि गये जब तागा। सो साधू जियतै में जागा ।।4।।
तन मन प्रेम भाव भरि गयऊ।
सुरमुनि आय कै आशीष दयऊ ।।5।।
हवहब कहैं सुनो मम भाई।
सत्य वचन तुमको लिखवाई ।।6।।

359. श्री जालिम साह जी कुरमी
(अपढ़, अजर अमर हैं)

दिः 11.02.77

पदः– जालिम को प्रभु दंड देत हैं, उसकी रक्षा कौन करे।
सब सुरमुनि प्रभु को हैं मानत, प्रभु की आज्ञा शीश धरे ।।1।।
सियाराम प्रियश्याम रमा हरि, ही की सब श्रृष्टि रची।
जालिम साह कहैं भाई भक्तौ, इनसे भागि के कौन बची ।।2।।

रामनाम सतगुरु से जानौ, तन मन प्रेम से ताना तानौ ।।
आंखी कान जायं खुलि भाई, भीतर बाहर वही देखाई ।।1।।
अजर अमर षट् रूपन कीना, जाति क कुरमी अपढ़ मलीना ।।
कोई पाप बचा नहिं हमसे, सत्य बचन हम भाखा तुमसे ।।
रामनाम में शक्ति अपारा, जालिम कहैं भजौ सुखसारा ।।
पढ़ि सुनि लिखि के पार न पावैं, अमल करैं ते महासुखी।
जालिम कहैं जौन नहिं चेतैं, हरदम दुःख ते रहैं दुखी ।।
जनमत मरत रहत मन मुखिया, उनका मुरदा ज्ञान हुआ।
वाक्य ज्ञान अज्ञान है भक्तौ, जैसे टें टें करत सुआ ।।

360. श्री निडरसाह जी
(अपढ़, अजर अमर हैं)

दि: 17.02.77

आल्हा:–

परमारथ परस्वारथ सो करै, जो अपने को देय मिटाय ।।
निडर साह कहैं वह भा सच्चा, रामसिया का पुत्र कहाय ।।
मान अपिमान न छूटा जिसका, सो तन तजि के नर्क को जाय ।।
वाको तो हम ग्राम सिंह कहैं, बिरथा मानुष का तन पाय ।।
दोनों दल को हम साधेन है, अजर अमर हैं तुम्हें बताय ।।
शुभ लोकन में घूमन जाते, सियाराम की आशिष पाय ।।
हर शै से धुनि नाम कि होती, सियाराम छबि सनमुख छाय ।।
समै स्वांस तन है अमोल यह, यासे भजन करौ मन लाय ।।

361. श्री मुदमंगल साह जी, जाति कहार
(अपढ़, अमर हैं)

दि: 18.02.77

मुदमंगल कह मुदमंगल हो, मुदमंगल बिन गती न होगी।
नाम रूप परकाश समाधी, मिलि जाय सो हो जोगी।
वाक्य ज्ञान में सार नहीं है, अमल बिना रहते ढोंगी।
अंत समय जम नर्क जायं लै, तूरैं नस औ पोंगी ।।
जो भीतर सो बाहेर दरसै। सुर मुनि आय शीश कर परसैं ।।
तब खट्रूप अमर करि देवैं। मुख चूमैं गोदी लै लेवैं ।।
अपढ़ जाति धीमर की मेरी। चौरासी की छूटी फेरी ।।

362. श्री माधो साह जी, जाति माली
(अपढ़, अजर अमर हैं)

जाति मोरि माधो सब कहते। राम नाम हम जपते रहते ।।
रामसिया सनमुख छबि छायो। अजर अमर मोहिं विहंसि बनायो ।।
पढ़ना लिखना हम नहिं जाना। राम नाम जप पे सुख माना ।।
भीतर बाहर वही वही है। सुर मुनि भाख्यो सही सही है ।।

363. श्री भल्लर साह, जाति गोसाईं
(अपढ़)

पद:–सियाराम प्रियश्याम रमाहरि, यही मंत्र हम जपते हैं ।।1।।
खट झांकी हरदम रहैं सनमुख, नाम कि धुनि को सुनते हैं ।।2।।
दहिने शूलपाणि हैं राजत, बायें हनुमति रहते हैं ।।3।।
सुरमुनि नित दरशन हैं देते, जै जै की धुनि करते हैं ।।4।।
शुभ लोकन में घूमने जाते, ऐसे सदा विचरते हैं ।।5।।
सब तीर्थन के दर्शन करते, मृत्युलोक में रहते हैं ।।6।।
अपढ़ पढ़न में मन नहिं ठहेरा, सत्य बचन हम कहते हैं ।।7।।
भल्लर कहैं भल्ला भा भक्तौ, यही बात हम चहते हैं ।।8।।

364. श्री मंसाराम जी कुंभार
(अपढ़, अजर अमर हैं)

दि. 19.02.77

चक्री कहते हैं कुंभार को, देश देश की बाणी अलग अलग है।

दोहा:–रामनाम जाप कीन हम, खुलिगे आंखी कान ।।
मंसा कहैं पूर भई मंसा, जियति भया कल्यान ।।1।।
नैनन से प्रियाश्याम निहारौं, श्रवनन से सुनी नाम ।।
सब सुर मुनि नित दरसन देते, सब को करौं प्रनाम ।।2।।
अमृत पियौ सुनौ घट अनहद, बाजत है बसु जाम ।।
नागिनि जगी लोक शुभ देखा, चक्र चलैं निज ठाम ।।3।।
कमल फूलि के देयं सुगंधैं नाक से उड़ैं तमाम ।।
अजर अमर प्रियाश्याम ने कीनो, श्रीमधुपुरी धाम ।।4।।
सत्य सत्य तुमको बतलायन, बोलो जै प्रियश्याम ।।
इतना कहिके बोले प्यारे, आप क करौं प्रनाम ।।5।।
बिन हरि कृपा संत नहि मिलते, धन्य अवध ब्रजधाम ।।
अंतर ध्यान भये फिर छिन में, पहुंचि गये ब्रज धाम ।।6।।
दिब्य रहस निशि में नित होता, सुरमुनि देखत आय ।।
मंसाराम कहैं हम देखिति, आप से दीन बताय ।।7।।

365. श्री समर्थ रामदासजी का चरित्र

बार्तिकः-

आज दिन में कमरा में पड़े थे ध्यान हो गया। तमाम आदमी वहाँ थे। कोई परिचय का न था। हमसे कहा "समर्थ रामदास जी का औतार गोस्वामी जी के बाद हुआ है। उनका कुछ चरित्र सुनावो।" हमने कहा, "वह आंगन में पाटा पर बैठे थे पूजन सब बिवाह का हो चुका था तो कूद कर छत पर गये वहाँ से कूद कर नदी के किनारे नासिक पर गये। उम्र 12 साल की थी। आकाश बानी हुई "तुम श्री राम जै राम जै जै राम नदी में खड़े होकर 12 वर्ष जपौ।" जुट गये। छोटी मछली तंग करती थीं, पैर से छाती तक मांस थोड़ा खा लेती थीं। उनको कुछ तकलीफ न होती थी, कुछ एक बार हलका अहार करते थे। 12 वर्ष बाद आकाश बानी हुई, "अब तुम 12 वर्ष भिक्षा मांगौ।" पहिले घर पर गये आवाज़ दी तो बड़े भाई की पत्नी भिक्षा लेकर आई। समर्थ रामदास जी ने कहा "माता के हाथ से लेंगे।" माता उनके शोक से अन्धी हो गईं थीं। वह बांह पकड़ के उनके हाथ पर डलिया में भिक्षा धर कर लाईं। तो माता कुछ बोल समर्थ जी का समझ कर कहा "का समर्थ है।" तो समर्थ माँ की अंधेपन की दशा देख कर श्री राम जै राम जै जै राम पढ़ कर हाथ में जल लेकर आंखों पर छीटा मारा तो आंखें खुल गईं। तो माता ने कहा "भय्या! कौन भूत सिद्ध किहे हो?" तो कहा "जो कौशिल्या जी की गोद में हैं, जसोदा जी की गोद में हैं, वही सिद्ध किये हैं।" इतनी बात सुन कर हम जोर से रोने लगे। ध्यान टूट गया।

अब इसे पूरा करना है। फिर उठ कर अन्दर बैठे तो आंसू कुछ थोड़े थोड़े आ रहे थे। रामजानकी ने पूछा "काहे आंसू आये हैं?" तब उनको हाल बताया। अब कल इसको पूरा करैंगे।

फिर माता से भिक्षा लेकर चरन छू कर कहा "हमैं भगवान की आज्ञा है कि 12 बर्ष भिक्षा मांगौ।" तो माता ने कहा "भगवान की आज्ञा पूरी करना अपना धर्म है। जाव" बस चल दिये।

जहाँ जाते थे वहाँ लोग कहते "तुम कुछ काम नहीं करते भीख मांगते हो तो धक्का देते, मारते, चोट लगती, गिर पड़ते, गांठी फूट जाती। भिक्षा थोड़ी रखते बाकी गरीबों को दे देते। एक हंड़िया में जो मिलता

बना कर भोग लगा कर एक दफ़ा थोड़ा पा लेते, फिर चल देते। कहीं कहीं पर लोग उनको पायजामा पहिनाते उसमें पुराने गिरदान छोड़ देते। वे अन्दर दौड़ लगाते तो उनके पंजा पैरों में लगते खून आ जाता। वै कुछ न बोलते तब पायजामा खोल लेते तो गिरदान निकल जाते। फिर उनकी अलफी उनको पहिनाते और खूब लोग हंसते। 12 बर्ष बहुत तंग किये गये। फिर आकाश बानी हुई–"अब देश के सुधार के लिये घूमौ।" तब चल दिये।

शिवा जी के यहाँ पहुंचे। शिवाजी शिष्य हो गये। एक लौका का पात्र अलफी लंगोटी डोरी रखते थे। जब माता जी बीमार हुईं तो कहा "समर्थ के आगे हमारा शरीर छूटता हमारी यह इच्छा है।" समर्थ जी को मालूम हो गया। अन्तर ध्यान होकर आ गये। चरन छुआ, कई दिन रहे। जब शरीर छूटा, संस्कार हुआ, फिर दसवां तेरहीं हुई, तब फिर चल दिये। कई भक्त संग चले। एक जगह बाजरा-सफेद ज्वार अधपकी लगी थीं। भक्तौं ने कहा "हमारे भूख लगी है।" तो कहा "संतोष करौ, किसी का खेत है बिना उसके कहे न खाना चाहिये।" तो कहा "हमारे मारे भूख के संतोष न होगा।" समर्थ जी ने कहा तो "जैसी तुम्हारी इच्छा हो वैसा करो।" वे लोग खेत में घुस गये। बाली बाजरा की, सफेद ज्वारि के भुट्टे तूर तूर, मीस मीस कर खाने लगे। समर्थ जी ध्यान में मगन बैठे थे, तो खेत वाला आया देखा सब तूर तूर कर खा रहे हैं किसी से कुछ न कहा। समर्थ जी को सांटी से पीटने लगा। जब ध्यान टूटा तो कहा "तुमने हमारा बड़ा नुकसान करा दिया, बैठे रहे, सब तुम्हारे भक्त खाते रहे तुम मना नहीं किया।" समर्थ जी कुछ न बोले और भक्त भी चुप रहे। जब शिवाजी के यहाँ गये तो शिवा जी समर्थ जी को और सब को आसन लगवाया और समर्थ जी को सिंघासन पर बैठा कर अश्नान कराते थे तो देखा शरीर काला पड़ गया था। तमाम सांटिन की बरतैं शरीर में बनी थीं। पूछा तो कहा "कोई बात नहीं है।" एक भक्त ने बता दिया, तो चार सिपाही पहुंचे, उसे पकड़ लाये। जब वह आया तो डर से कांपने लगा। समर्थ जी ने शिवा जी से कहा "उसकी सब ज़मीन माफ़ कर दी जाय यही सज़ा ठीक है।" उसकी पांच हज़ार बिगहा ज़मीन थी, माफ़ कर दी गई। वह खुशी से घर गया।

एक दिन शिवा जी के मन में कुछ अभिमान आ गया कि इतनी राज्य हम चलाते हैं अपने शरीर से, तो समर्थ जी ने बुलाया, शिवाजी आये, दंडवति किया, "महाराज जी क्या आज्ञा है?" तो कहा "यह पत्थर तोड़ौ" घन मंगाया बड़े पहलवान थे। पत्थर मोटा था तोड़ा तो उसमें एक पच्छी बैठा था और एक गड़हा गोल बना था उसमें पानी भरा था। कहा "शिवाजी! इसको कौन भोजन पानी देता है। शिवाजी ने कहा "भगवान देते हैं।" तो कहा "अब तुम्हें ज्ञान हो गया, पहिले अभिमान था कि हम इतनी राज्य चलाते हैं। भगवान ही सब को देते हैं। जिसकी राज्य में प्रजा को दुख न हो उसकी गती होती है। गोस्वामी जी ने कहा है–

चौपाई:– जासु राज्य प्रिय प्रजा दुखारी।
सो नृप अवश्य नर्क अधिकारी ।।

फिर राज्य काज करने का सब ढंग बताया। तब शिवाजी उसी रीति से सब काम करने लगे। तब समर्थ जी ने कहा "हम अब भारत के जितने मंदिर हैं वहाँ जा जा कर देख कर सुधार करेंगे, पुजारी लोग कैसे पूजा करते हैं, कैसे भोग लगाते हैं, कैसे सैन कराते हैं।" यह कह कर चल दिये।

फिर समर्थजी भारत के मंदिरों में घूम घूम कर देखने लगे और बताने लगे–इस प्रकार से भगवान को अश्नान कराना, चन्दन लगाना, तुलसी फूल चढ़ाना, धूप, दीप, भोग लगाना, आरती, पैकरमा करना, बाजा बजाना, दंडवति करना, परसाद चरनोदक बाटना, समय पर राजभोग लगाना, सैन कराना, थोड़ा दिन रहे भगवान को जगाना, मीठा या मेवा या फल का भोग लगाना, सब को देना, शाम को भोग लगाना, आरती करना, पैकरमा करना, दंडवति करना, परसाद सब को बांटना, फिर कुछ देर भगवान को साज के साथ गान सुनाना। तब सैन करना, सबेरे भी कुछ देर गान सुनाना, अपने इष्ट पर हर समय सुरति रखना–तब भगवान प्रसन्न होकर दर्शन देते हैं। भगवान के पारखत खूब साफ रखना, मंदिर की सब जगह आस पास की सफाई रखना। कोई अतिथि किसी समय आवै उसका यथा शक्ति स्वागत करना। ऐसा करने से पट खुल जाते हैं, द्वैत भाव छूट जाता है। भगवान भक्तों के लिये बहुत रूप धारन किये हैं, एक को साधे से सब देवी देवता प्रसन्न रहते हैं और दर्शन देते हैं।

फिर जितने मंदिर भारत में देवी देवताओं के हैं सब जगह देखभाल करके गृहस्थों के यहाँ जा जाकर सब बताते रहे। शाम के जूठे बर्तन शाम को ही मांजना चाहिये। उनका अंश रूप धारन करके गंगा स्नान को जाता है। जूठे रहने से श्राप देते हैं। उससे बरक्क़त नहीं होती है। टूटी खाट सड़े बाध खटिया से निकाल दे। बहुत सवेरे माई घर आंगन में झाड़ू लगावैं, सूर्य उदय से चींटी निकल निकल कर चारा की खोज करती हैं। वै झाड़े से मर जाती हैं। जहाँ सफाई होती है वहाँ की हवा ठीक रहती है। घर में जाला साफ़ कर दिया जाय। जहाँ भंडार की सामान धरी हो वहाँ एक आदमी अश्नान करके अन्नपूरना लक्ष्मी की नाम लेकर दाहिने हाथ से सामान निकालै फिर ताला मार दे तो 10 दिन की सामान 15 दिन चलती है। आम तौर से सब लोग घुस कर न निकालैं नहीं तो यक्ष शै निकाल लेते हैं। बरक्क़त नहीं रहती है। शाम को थोड़ी देर अन्नपूरना लक्ष्मी का नाम लेकर दिया जला दे, तेल सरसों–अलसी तिल–रेंड़ी का हो। होली दीवाली पर मकान पोत दिया जाय। भोजन सतोगुनी सादा होना चाहिये। कपड़े साफ़ हों पुराने भी।

समर्थ जी भारत में घूम घूम कर जो भगवान का हुक्म था वह करके शिवाजी के यहाँ आकर उनको उपदेश दिया।

रामानंद स्वामी की जीवनी में लिखा है कि मंत्र स्वत: शक्ति स्वरूप है, उसकी सामर्थ की कोई सीमा नहीं है। मन लग जाय तो जो इच्छा हो वह हो जाये।

गोस्वामी जी ने कहा है:–

चौपाई:– जो इच्छा करिहौ मन माहीं।
राम कृपा कछु दुर्लभ नहीं ।।

मंत्र जाप से, पाठ से, पूजन से, कितने अजर अमर हो गये हैं। जिसकी सूरति अपने इष्ट में लग जाये वही अपने इष्ट का हो जाता है, सब रूप धारन कर लेता है। जैसे भगवान सब जगह मौजूद हैं, वैसे ही वह हर जगह अपने को देखता है।

गोस्वामी जी ने लिखा है:–

चौपाई:– ईश्वर अंश जीव अविनासी।
चेतन अमल सहज सुख रासी ।।

चेतकर अमल यानी साधन कर लिया पट खुल गये, मरना पैदा होना छूट गया।

कबीर जी ने कहा है:–

दोहा:– मरना मरना सब कहैं, मरना लखै न कोय।
ऐसा मरना जो मरै, बहुरि मरन नहिं होय ।।
शरनि, मरनि, तरनि, सब जियतै हो जाती है। सारा खेल मन का है।

एक दिन समर्थ जी शिवाजी के रामजानकी के मंदिर के करीब सिंहासन पर बैठे थे, बीसौं भक्त बैठे थे। भक्तों से कहा, "हमारी जात्रा का समय कितनी देर में होगा।" एक भक्त सिद्ध था। "उसने समय बताया, तो हर हर करते रहे।" भक्तों ने नीचे उतारने का उपाय किया उतार न पाया। फिर आप खुद उतर कर बैठ गये। रामजानकी के मंदिर के सामने राम राम शब्द कहा। मुख से तेज निकला मूर्तिन में समा गया। सब सन्न हो गये।

फिर शिवाजी ने समर्थ जी का बड़ी धूम धाम से सब काम किया था। शिवाजी पर बड़ी दया समर्थ जी की थी। शिवाजी सच्चे आज्ञाकारी बन गये थे।

समर्थ जी बारह वर्ष जल में खड़े खड़े नासिक की नदी में, गले भर पानी में श्री राम जै राम जै जै राम का जप किया। आकाश बानी हुई थी। फिर आकाश बानी हुई 12 वर्ष भिक्षा मांगौ। फिर आकाश बानी हुई बारह वर्ष अब भारत में घूम घूम कर सब देवी देवताओं के मंदिरों का सुधार करौ। फिर जनता को शिक्षित करौ जिससे ठीक ठेकाने पर आ जायँ।

हम बहुत संक्षेप लिखा है। एक पूरी रामायन भर है, बोल नहीं पाते हैं, गला मार गया 3 साल हुये। लिखने में हाथ मन आंखें लगाना पड़ता है, तो अन्दर के बाजा और गाना इतने तेज हो जाते हैं, मालूम होता है सर फट जायगा। एक स्लेट लिखने से 4 घंटा आवाज़ बढ़ जाती है। वैसे हमेशा बाजा गाने से किसी की बात नहीं सुन पाते हैं, इससे लाचार हैं। जितना भगवान की इच्छा हुई उतना लिखवाया। इतने में भक्त लोग समझैं तो उन सब का भला होगा।

यह बाजा मंदिरों में बजाने को समर्थ जी ने बताया। बाजा घड़ी, घंटा, विजयघंट, नगाड़ा, शंख, मजीरा, दारा, ढोलक, तबला, मृदंग,

पखावज, तम्बूरा, सारंगी, चिकारा, सितार, इस्तराज, डमरू, ढप, बासुरी, दंडताल, झांझ, यही सब बाजा मंदिरों में बजाए जाते हैं। सिर्फ डमरू शंकर जी के मंदिर में बजाया जाता है और मंदिरों में नहीं। यह 27 बाजा हैं। यही समर्थ जी ने मंदिरों में बताया था। नागफनी, नृसिहा, बिगुल करताल, कपाल, खंझड़ी। कपाल लोहे के, कोन गोल होते हैं।

366. श्री फटकार शाह जी (अपढ़)

पद:– जग में भगत बहुत हैं थोड़े, भजन के समुहे जाने वाले ।।1।।
पढ़ि सुनि लिखि कंठस्त लीन करि, भीतर ते हैं काले ।।2।।
खानपान सनमान में भूले, बोलत बचन संभाले ।।3।।
प्राण क लोभ लगा रहै हरदम, अन्त नर्क ढ़ाले ।।4।।
अब पछिताने काह होति है, जमन के चलते भाले ।।5।।
या से चेति भजौ निशि बासर, सिया राम के पाले ।।6।।

दोहा:– फटकार शाह फटकारि कै, कहैं सुनौ सब भक्त।
नैन श्रवन जियतै खुलैं, तब हो सच्चे भक्त ।।1।।

367. श्री लाला रामसहाय जी
ग्राम-नेवादा, जिला शाहजहांपुर
।। गंजीफ़ा ।।

दुनियाँ गंजीफ़ा मसनूई यह, खेल है खास मुकुटधर का ।।
वह बड़ा कौतुकी मौला है, पट्टा परवर विधि हरि हर का ।।
बत्तीस रंग के पत्ते हैं, सुरख़ाब के पर का है तड़का ।।
मुनि कपिल तत्व उनको कहते कर्दम जु प्रजापति के लड़का ।।1।।

मूलाबाई के संग सजन, घुल मिल कर पत्ते चलते हैं ।।
गंजीफ़ा का है शौक बड़ा, नित नव नव रंग बदलते हैं ।।
मुस्कान माधुरी खुम चितवन, नाजो नेयाज़ में पलते हैं ।।
याँ छलते हैं वाँ खलते हैं, क्या खूब मचलते चलते हैं ।।2।।

ग्यारह हैं भूल भुलैयां जी, जिनमें सब गच्चा खाते हैं ।।
आरिफ़ कोई विरले होंगे, जो बाल बाल बच जाते हैं ।।
तफ़सील मैं उनकी कहता हूँ, रोशन ज़मीर फ़रमाते हैं ।।
उलझाते हैं, अटकाते हैं, फुसलाते हैं, बहलाते हैं ।।3।।

पहले तो पहेली है ऐसी, जिस पर जग के ताने बाने ।।
ज्ञानी की बुद्धि पशीमा है, मन हठी न कुछ माने जाने ।।
हम जिसको सुख माने बैठे, उसको ही सुख सब ही माने ।।
है ऐसा समझना बड़ी भूल, छाने, स्याने ल्याने ठाने ।।4।।

क्या उचित है क्या अनुचित है, बस इसका खुद ही निर्णय करके ।।
कहना लोगों को बुरा भला, दोयम है भूल निश्चय करके ।।
जो राय मेरी है ठीक वही, सब ही की सम्मति तय करके ।।
है भूल तीसरी समझ यही, सत नय करके जय जय करके ।।5।।

अपनी ही सोच समझ को जो, पक्का गिनता तरुणाई में ।।
यह भूल है चौथी यौवन मद की, उपज है काम मथाई में ।।
ज़रा सी छोटी बात के ऊपर, ख्याल पलटना ताई में ।।
भूल पाँचवीं तुनुक मिजाज़ी, थाई में उकताई में ।।6।।

अपने ही जैसा हो जावे, सब ही का जो स्वभाव व्यवहार ।।
सदा यत्न करना इसके हित, छठी भूल यह है निर्धार ।।
बिना हमारे हो सकता नहिं, किसी से भी यह कारोबार ।।
भूल सातवीं समझना ऐसी, दरप तड़प है मन्द विचार ।।7।।

यतन के बाहर जो काम है, उसके वास्ते सर खपाते रहना ।।
और उसमें औरों को कष्ट देना, है आठवीं भूल हठ में बहना ।।
न डालना परदा दूसरों के करीह ऐबों कबीह लत पर ।।
नवीं बड़ी भूल है यही तो, गुवार वातिन है सलतनत पर ।।8।।

अपने को जितना भाता है, वही सत्य है, शेष नहीं ।।
जान लिया सब तत्व हवस नहिं और जानने की ही रही ।।
दसवीं भूल भयंकर है, यह मजहब मिल्लत का मोजिद ।।
निस दिन जक जक निस दिन बक बक कोरम को मंदिर मस्जिद ।।9।।

आँख फाड़ कर देखा करते, लोग नित्य ही मरते हैं ।।
तिस पर भी मृत्यु मालिक से, जरा नहीं हम डरते हैं ।।।
महा महा यह महा भूल है, सब ही इसको करते हैं ।।
ग्यारहवीं से बचे सन्त जन, दरस देत अघ हरते हैं ।।10।।

जो यह गंजीफ़ा खेलेगा, भूल भुलैयाँ झेलेगा ।।
कुदरत का यही तमाशा है, जौहर दिखला कर खेलेगा ।।
जो सुरति शब्द की कसरत में, मुद मुगदर सुख डंड पेलेगा ।।
है पहलवान हनुमान गढ़ी का, राम रंग में रेलेगा ।।11।।

जिसका वानर वही नचावे, मसला जग में छाई है ।।
गंजीफ़ा का असल खिलाड़ी, वही जो सृष्टि बनाई है ।।
राम सहाय शौक़ से खेले, खासी राम दुहाई है ।।
ग्यारह से बस बचा रहे, तब हर दम बे-परवाई है ।।12।।

पद:-

[1]

तनक हँसि हेरो जो राजकुमार ।।1।।
बुधि बौराय हेराय जाय मन, रहै न देह सम्हार ।।2।।
दूरहिं ते जाके तन ताके मदन भयो जरि छार ।।3।।
सो त्रिपुरारि भिखारि भेष धर, अलख जगावत द्वार ।।4।।
सपनेहु निकट जाय नहिं कबहू, माया मोह विकार ।।5।।
सो भुषुण्डि शिशु चरित विलोकत, फँस्यो प्रेम के जार ।।6।।
सुवन बोल बिनु मोल बिकानी, शारद सी हुशियार ।।7।।
'रामसहाय' जाय सोइ जाने, अवध नगर के बजार ।।8।।

[2]

दृगन लगि जैहैं री राजिवनयन ।।1।।
मैं जो कही जनि जा वह मारग, मानो वानरी वयन ।।2।।
रतनारे कजरारे प्यारे, अनियारे बरसयन ।।3।।
चितवत ही चुभि जात अचानक, करत हिये बिच अयन ।।4।।
जो काहू की दृष्टि पड़ैगी, खटकेंगे दिन रयन ।।5।।
'रामसहाय' रूप बिन देखे, पड़त नहीं जिय चयन ।।6।।

[3]

भला रघुनन्दन राजी रहना ।।1।।
मैं तो तुम्हरी खुशी में खुशी हूँ, और कछू नहिं चहना ।।2।।
सुख सोहाग दुख दरद विरह के, जो सहाव सो सहना ।।3।।
क़हर मिहर दोउ हाथ तिहारे, अपना अपना लहना ।।4।।
मारो चाहे जिया लो प्यारे, आशिक को क्या कहना ।।5।।
'रामसहाय' राज दरवाजे, पड़ा फ़कीर विरहना ।।6।।

[4]

देखन दे मोहिँ प्यारे नजर भर ।।1।।
आशिक भयों रँग्यों रंग तेरे, दशरथ राजदुलारे नजर भर ।।2।।
हौं तो तरस रह्यो तेरे दरश को, जीवन प्राण हमारे नज़र भर ।।3।।
'राम सहाय' रूप रस लोभी, होहु न दृगन ते न्यारे नज़र भर ।।4।।

368. धनुहा गांव के रामसिंह की कथा

जिला रायबरेली, जगदम्बा बक्स की बताई

धनुहा गाँव में रामसिंह के बाबा के बाप को सालिकराम जी रोज सोना देते थे। मूर्ति के चारिउ तरफ मिलता था। बीच में मूर्ति रहती थी। एक दिन जगदम्बा बक्स के बाप के मन में आया कि डिब्बा बंद रहता है, यह सोना कहां से आ जाता है। वे बड़े सीधे थे। भगवान ने राति में स्वप्न दिया–''तुम धर्मात्मा हो दुखी गरीब सब को मानते हो सोना हमारे अन्दर है हम मुंह से निकाल देते हैं, वही हमारे चारौं तरफ हो जाता है। सब की खूब सेवा करो, अन्त में हमारे पास आओगे।" वे अपने पुत्र से बताये, जगदम्बा बकस नाम था, बड़े विचारवान थे। उनके दो लड़के थे, शारदा बकस वह भी बड़ा उदार था। रामसिंह के पिता का शरीर छूट गया था। जगदम्बा बकस के आगे शारदा बकस ने अपने भतीजे को आधा हिस्सा दिया कहा "हमारे भाई का लड़का है।"

369. पं० प्यारे लाल

शहर लखनऊ

पंडित जी रेल में नौकर थे। रेल में सुबह अश्नान करके, जप, पाठ भोजन करके अपने काम पर जाते थे। फिर शाम को आते अश्नान करके फिर नेम करके भोजन करके सैन करते। वे मोहल्ले का हाल नहीं जानते थे। कौन दुखी है कौन सुखी है, कौन मरा है, कौन पैदा हुआ है। माता थीं बहिन थी। बहिन की शादी कर दिया, माता का शरीर छूट गया। उनका सब काम करके, मकान कच्चा था बेच लिया। हम जब जाते थे, तब भोजन कराते थे। हम मूंग की दालि खाते थे, उनके घर अरहर की खाते थे, गर्मी नहीं करती थी ऐसा उनका भाव था। उनमें सहन शक्ति पैदाइसी थी। उनके सामने तुम उनको गाली दो तो वै कुछ नहीं कहते थे, न मन में बैर था। जब भेंट हो तुम से तो बड़े प्रेम से बोलते थे। ऐसा सुभाव था। फिर जहाँ जानकी घाट पर पं० बल्लभाशरन के यहाँ शायद उनसे मंत्र लिया या उनके न रहने पर वेदांती जी से मंत्र लिया यह हमें याद नहीं है। सब रुपया जमा कर दिया। आश्रम में भंडारे में भोजन करते, भजन करते, दर्शनों को जाते थे। एक दिन जप करके रामायन का पाठ करते थे तो भगवान राम प्रगट हो गये। उनको साष्टांग दंडवति किये तो भगवान दाहिना चरन उनके सिर पर तीन बार धर दिये, और कहा कि "ऐसे भक्त से हम बहुत प्रसन्न रहते हैं।" फिर अन्तर हो गये।

370. पुरानी खोपड़ी का भूत

हमारे गांव में पं. गयादीन तिवारी थे। उनके चार लड़के थे अब दो हैं दो मर गए। एक लड़के की ससुराल से लड़के का साला आया, तो हमारे परिवार में शीतल प्रसाद काका के पैर में फोड़ा था। वह महीनों से अच्छा नहीं होता था। उस लड़के ने कहा "हम एक दवा भेजेंगे। अलसी के तेल में लगाना ठीक हो जायगा। अपने बहनोई को साथ ले गया, गांव के पास नदी थी। घर होकर आया। एक मुरदा की खोपड़ी उठा ले गया। उसे हाता में फोड़ कर टुकड़े कर के फूका और उसकी

राख कागज़ में रख लिया। जब उसका बहनोई घर को चला तब दे दिया। कहा "यह दवा शीतल प्रसाद को दे देना।" वह आये तो पहिले शीतल प्रसाद के घर गये, हाल बताया। वे बोले कि अभी अपने घर रख लो। जब अलसी का तेल मिलेगा, तब मंगा लेंगे। घर लौट गये। मुहारे घर पर छप्पर था उसमें खोंस दिया। घर गये। यहाँ शीतल परसाद के घर भर को कै दस्त जारी हो गये और वे घर पर जाकर बेहोश हो गये। जब पं. गयादीन घर आये तो देखा कि लड़का बेहोश पड़ा है। तब प्रार्थना किया तो भूत बोला "जो हमारी खोपड़ी की राख छप्पर में बाहर खुसी है उसे लेकर नदी में छोड़ आओ। इनको छोड़ देंगे, उनको मार देंगे जिन्होंने हमारी खोपड़ी फूकी थी।" राख नदी में छोड़ दी गई। इनको छोड़ दिया। फूकने वाले को मार दिया। ऐसी घटना हुई।

371. भगवान प्रेम के बंधन में हैं

लाला कृष्णचन्द्र रिटायर जज इलाहाबाद के राम भक्त की धर्मपत्नी दो साल गीता पाठ किये। उनके पट खुल गये। हमसे कहा "महाराज, मैंने सिर्फ गीता का पाठ किया और कोई मंत्र नहीं जपा है। सब देवी देवताओं के रात दिन दर्शन खुले नेत्रों से होते हैं।" भीतर की बहुत शुद्ध सरल थीं। शरीर छूटे शायद एक साल हो गया है। 70 की उमर में शायद शरीर छूटा था।

372. रामनेवाज सिंह, दारोगा
अयोध्या

एक लड़का यहाँ जमीन में गाड़ा मिला था। रामनेवाजसिंह दारोगा हमसे बताते थे कि "हमारे साथ कई सिपाही थे। हम शहर में घूमने गये तो सामने मैदान में ज़मीन थोड़ी हिलती थी।" हमने सिपाहियों से कहा "देखो ज़मीन हिलती है।" एक सिपाही ने भाला जमीन में खोंसा। फिर भाला उठाया ऊपर। उसमें काले कपड़े में एक लड़का लपेटा नार सूधा मिला। भगवान की दया से उसके शरीर में भाला न लगा। फिर वह किसी चमार को दे दिया गया। उसके लड़का न था। उसकी औरत ने

पाल लिया। वह सयाना हो गया। यह अयोध्या जी का हाल है। अरसा हो गया। रामनेवाज सिंह आर्य समाजी थे। हिन्दू के ऊपर बड़ी दया थी। तब यहाँ मुसलमान दारोगा भी थे। यह सब से बड़े थे। हिन्दू का काम हो तो मुसलमान दारोगा न जान पावै। उसका काम ठीक कर देते थे। हमारे पास आया करते थे।

373. बाबा हरीदास

बाबा दुर्गादास बताते थे। बाबा हरीदास के पास उन्नाव जिला में तकिया गांव है वहाँ मुहब्बतशाह की मजार है, बड़ी इमारत बनी है। बड़ा मेला होता है कई दिनों तक। एक दिन बाबा हरीदास की कुटी पर गये फिर कहा "हमारी मजार पर आओ।" बाबा हरीदास कुटी पर से गये घोड़ी पर चढ़ कर। 3 दिन वहाँ रहे। मुहब्बतशाह रोज प्रगट हो कर सत्संग करते थे। 3 दिन के बाद, बाबा ने कहा "अब हम अपनी कुटिया जायंगे।" तो मुहब्बतशाह ने 1 थान नयन सुख का और कुछ रुपया दिया। बाबा ने कहा, "साधू की चीज़ न लेना चाहिए।" तो मुहब्बत शाह ने कहा "पहिले पहिले आये हो वहाँ सबको बांट देना और जब तक शरीर है साल में एक बार हमारे यहाँ आया करो।" तो बाबा साल में एक बार जाते थे।

374. टंडन की बूढ़ी सास

परसोतम टंडन, नारायण प्रसाद के मित्र, जहाँ यह नौकर थे वह भी नौकरी करते थे। नारायण के साथ आये, राम जानकी का मंत्र लिया, जप की विधि बताया, शुरु कर दिया फिर यहाँ से गये अपनी सासु से बताया, सासु बुढ़िया सांवरे रंग की थी। पतरी पतरी उमर 60 की होगी अपने पति की गया करने की तयारी किया। 32 आदमी संग थे तो एक माटी का ऐसे ही गोला बना कर कहा "महाराज जी हम पति की गया करने जायं और मंत्र लेने?" तो माटी की मूर्ति से आवाज आई "गया कर आओ मंत्र ले लो।" तब लोगों ने कहा "इधर से दूर परैगा, गया कर के मंत्र ले लेना।" बुढ़िया बहुत सीधी थी, सब के साथ चली गई।

परसोत्तम ने हमैं यह बात लिखी, जब गया करके लौटी तो परसोत्तम साथ थे और लोग उधर से चले गये। हमसे परसोत्तम ने कहा "अब इनको मंत्र बता दो।" संगी लोग इनके इधर न आये तो इनको उनके संग आना पड़ा। हम उनको मंत्र बताया कंठी-माला-जपमाली दिया और कहा "ऐसे भाव का हमारे कोई भक्त नहीं है जो माटी की मूर्ति बना कर बात कर सकै। तुम धन्य हो।" थोड़े दिन रह कर घर गईं। फिर दुबारा आईं।

फिर परसोत्तम से पूंछा तुम अपना हाल बताओ तो कहा "हमारी नाभी से सीताराम सीताराम की आवाज हर समै होती है। हम जप दोनों मंत्रों का करते हैं वह आवाज हमारे कानों से रोम रोम से सुनाई देती है।" हमने कहा "यह जाप सतजुग की है। हृदय से त्रेता की होती है। कंठ से द्वापर की होती है। यह तीनों युग इस तरह से जपते हैं। पराबानी सतजुग की है। पैसंती त्रेता की है। मधिमा द्वापर की है। बैखरी कलजुग की है। यह चारौं बानी ब्रह्मबानी से निकलती हैं। तुम बड़े संस्कारी हो।"

375. पं. देवीदत्त बिसवां

बिसवां, जिला सीतापुर

पदः– छोहन छांह छएे छबि ली छिंगुनी छला छ्वैलिया ।।
दन्त दिजेन्द्र देखाय दगा दिलदार दहा पदही दिम द्वैलिया ।।
बागन बौर बसंत बहार बगावत वायु बहै बिन बोइलिया ।।
काढ़ि करेजु कुहू कुहू कूकत कारिक रूप कसाइन कोइलिया ।।

बार्तिकः–

पंडित जी जिस विद्या की ओना मासी तुम से लिखा लें उसे आखिर तक पढ़ देते थे। जो पत्र बिसवां में कोई न पढ़ पावे वह पढ़ देते थे।

चरिउ वेद, षट शास्त्र, पुरान, उपनिषद, संगिता गीता-मानस-भागवति-ज्योतिष सब के ज्ञाता थे। ईंटा का भट्ठा लगवाये थे पाठशाला के लिये तो एक गांव पर गये। वहाँ अस्नान करके अपना नेम किये। फिर एक गिलास शर्बत भगवान का भोग लगा कर पिया। थोड़ी देर बाद कहा "हमैं मकान पर लै चलौ।" पीपल के पेड़ के नीचे थे। सेज गाड़ी पर बैठे। कुछ पेट में दर्द होने लगी। सब से कहा कि "हमसे कोई बोलै नहीं, हमारा समय आ गया है। हम राम राम करते हैं।" राम राम करने

लगे। शहर के बड़े बड़े आदमी आते थे, वै राम राम करते थे। 2 बजे रात को शरीर छूटा था। एक लड़की आठ साल की थी और उनकी धर्मपत्नी थीं। बड़े भारी कवि थे। उनके साथ हजारौं आदमी बड़े बड़े शहर के, मरघट पर गये थे। सब बड़े दुखी हुये।

376. बाराह क्षेत्र की कुछ बातें

बाराह भगवान के मंदिर जिला गोड़ा पर बड़ी भीड़ होती है। लोग जल लोटा में ले जाते हैं तो मुश्किल से आधा जल वहाँ पहुंचता होगा, बीच में ही भीड़ से गिर जाता है। एकादसी से पूरनमासी तक ऐसी भीड़ होती है। बड़ा ठंढ होता है। खूब मैदान है। धनुष यज्ञ होती है। राजा बड़े बड़े लक्कड़ कई जगह धरा देते हैं। खूब जलते हैं। उससे सब को आराम मिलती है और एक पैसे की ऊख की पाती आधा सेर बिछाने को मिलती है। मेला की भीड़ की गरमी से और आगी की गरमी से ठंढक कम लगती है। वहाँ से आटा मोल लेते हैं, उसमें आधा सेर जुआर का आधा गेहूँ का मिला होता है। वह मांड़ने पर फट जाता है। तब लोग बाटी बना कर खाते हैं। 16 की उमर में हम दसमी उजेरी पूस की पहुंचे थे। फिर दुइज पर लौट आये थे।

यह बात आज (28-10-75) 3 बजे रात की है। दो बालक बहुत गोरे गोरे आये, पांच पांच वर्ष के मालूम होते थे। नंगे नंगे दोनों थे। हम चादरा ओढ़े पश्चिम मुख लेटे थे। दोनों कहते थे, "जै जै श्री त्रिभुवन पति साईं। जै जै श्री त्रिभुवनपति साईं।" एक कहता था "जै जै श्री त्रिभुवन पति स्वामी", यह कह कर नाचते थे और ताली बजाते थे। हमने कहा "आप कहां से आये।" तो कहा "बाराह क्षेत्र से" हम कहा "हम वहाँ गये हैं-पूस में मेला होता है, धनुष यज्ञ होती है, एकादसी से पूरनमासी तक बड़ी भीड़ होती है। बाराह भगवान का मंदिर है।" तो हमसे कहा "तुम मंदिर में नहीं गये जल चढ़ाने।" हम ने कहा "बड़ी भीड़ रही, जो जल लोग ले जाते थे आधा बीच ही में रह जाता था, हम दूर से हाथ जोड़ लेते थे।" फिर हमसे कहा "अब तुम्हारा समय करीब आ रहा है। इससे हम भी देखने आये हैं।" फिर कहा "जै बोलो संगम लाल की" फिर अन्तर हो गये।

377. ठाकुर अमर पाल सिंह
इटौंजा हाउस, लखनऊ

ठाकुर अमर पाल सिंह, इटौंजा हाउस, लखनऊ में रहते हैं। नौकरी करते हैं। इटौंजा रानी का भी जो काम होता है कहीं जाने का वहाँ जाते हैं। इनको हमने एक सोंटा दिया था, वह कोई उठा लिया घर पर धरे रहे। हमसे कहा फिर सोंटा दो। हमने कहा "क्या करौगे। जब मिलेगा तब देंगे।" तो कहा "आप कुछ दिन अपने हाथ में रख कर देना हमारा उससे कल्यान होगा, जो कोई बीमार होता है हम धोकर पिला देते हैं तो ठीक हो जाता है। हमारी भैंस कहीं चली गई थी 3 दिन ढूंढ़ा गया पता न चला तो हम आंख मूंदे बैठे थे, तो देखा सोंटा धीरे धीरे पूरब मुख झुक रहा है। हम और किसी को लेकर उधर चल दिये, तो भैंस बताया। वहाँ बांधी मिली। हम भूल गये कितनी दूर पर मिली।" यह हाल बताकर हम से कहा "सोंटा हमें जरूर देना।" हमने कहा "यह तो तुम्हारा भाव ऐसा काम करता है, ऐसे भाव के जीव बहुत कम हैं।"

378. श्री महाराज जी

जब हम 16 साल के थे तो लूक चलती थी, बहुत आदमी रास्ते में जहाँ तहां मर गये थे। ऊख की पाती बोझ बंधे खेतों में पड़े थे उनमें खरगोश-लोमड़ी-सर्प बैठे थे। पासी लोग शिकार करते थे। जहाँ पाती खरभराती वहीं तीर मार देते थे। बस खरगोश फटकने लगता, पकड़ लेते थे। कोई औरत, लड़का कपड़े में लपेट कर नार सूधा बोझ खोलकर मूंद गई थी। एक पासी गया तो वह कुछ पाती हलते देखा, तो तीर से पाती हटाया। उसमें लड़का मिला घर उठा लाया, नार कटाया, उसके लड़का नहीं था पाल लिया। सयाना हो गया, लोग उसे पतिहा कहने लगे। लहसादीन का नौकर बुड्ढा पासी खेत में पाती लेने गया, लहसादीन ने बोझ उठवा दिया, लेकर चला। उसमें जहरीला सांप था, उसके होठ में काट लिया, वह बोझा छोड़ कर चिल्लाने लगा कहा ''हमारे होठ में सांप ने काट लिया।" बोझ खोल कर देखा गया सांप जहरीला निकला, मार दिया गया। वह पासी मर गया।

तब लोग डर गये। सब ने अपनी पाती खेतों में जला दिया। जो जो पाती खेतों में फूके थे सो चारों तरफ से आग दे दिये थे, सब जीव जल गये थे। खरगोश-लोमड़ी-सर्प एकौ निकल न पाये। तब हम कहा नौकर से "बैलगाड़ी लेकर चलौ हम सब उठवा लावैं।" एक कोस पर खेत बनीगांव के पास, खेत में पाती जमा थी। कई गाड़ी थी, खेत साढ़े 6 बिगहा है सब उठवा लाये, एक बोझ रह गया बैलगाड़ी में धरने को, तो उसे उठवाया। परभू नौकर लेकर चला तो एक सांप मटिहा कहा जाता है 5 हाथ का, हमारे डंडा का ऐसा मोटा। बोझ से सरसरा कर परभू के कांधे पर गिर कर भगा। परभू ने देखा कहा ''यह सर्प काटता नहीं है।" फिर गाड़ी में धर दिया। फिर घर चले आये।

379. श्री महाराज जी

हमारी तरफ जब सीतला की बीमारी या हैजा होता है तब गांव में चन्दा लगाया जाता है। कुंवारी खाती हैं, ब्राह्मण खाते हैं, हवन होता है। माली पासी जिस पर भगौती का अंश आता है खेलते हैं। जीभ निकालते हैं, तिरशूल नाथ दिया जाता है फिर निकाल कर पान खवा दिया जाता है। जखम पूर जाता है। भगवन्तपुर हमारे गांव से एक कोस के करीब है। सवितादीन हलवाई के दरवाजे पर पं. बचान भागवत कह रहे थे। अध्याय समाप्त हुआ था। उसी तरफ से चार पसिनी नौजवान आगे आगे नीम का टेरवा लिये आती थीं। पीछे पीछे पबलिक थी तो पंडित बोले "देखो इनके ऊपर देबी आती हैं। चार झाखर के खरहरा इनके चूतड़ पर मारे सब ठीक हो जायँ।" एक उसमें से बोली "आज रात में तुमको देख लूंगी।" पंडित को रात में कै़-दस्त हुआ। मर गये। एक लड़का चार साल का था, औरत थी। पंडिताई से काम चलता था। फिर औरत दूसरे का काम कर देती थी। बड़ी मुशीबत से लड़के को पाला। लड़का पढ़ कर पंडित हो गया।

380. श्री महाराज जी

श्री महाराज जी ने सन् 10-9-75 को लिख कर दिया कि शरीर के अन्दर के पुरजे सब खून नसों से निकल जाने के कारण कमजोर हो गये हैं। न मालूम भगवान रद्दी शरीर को किस लिये रोके हैं। 200

चरित्र अब जाने के समय लिखाया है। पहिले तो दो हजार नाम में सात सौ मुसलमान डेढ़ हजार हिन्दू हैं, उसमें पद, दोहा, चौपाई हैं। कई हिन्दू मुसलमान रंडी अजर अमर हैं। नीच कौम के भी हैं। ब्राह्मण, क्षत्री भी हैं, बहुत अपढ़ हैं। पदों का जोड़ नहीं किया गया है, दो हजार नाम हैं। हम दो पुस्तक पढ़ें हैं। अक्षर का ज्ञान नहीं है। कौन कहां लिखा जाता है। बोल नहीं पाते हैं, तीन साल से स्वर भंग है।

381. श्री महाराज जी से प्राप्त सद् उपदेश

दि: 07.05.1976

एक के नाम बताये गये हैं (1) त्रिषना (2) लालच (3) कंजूस (4) लोभी (5) मूंजी (6) सूम (चुष्ट) (7) इनकी गती नहीं होती है। इनका मन हर समय धन में आसक्त रहता है। माता के जब गर्भ रहता है तो नहा कर किसी लोभी को देख लिया बस वही लड़के लड़की के जीव में प्रवेश हो गया। वह वैसा ही हो गया।

एक लक्ष्मी सूम होती है, एक उदार। सूम धर्म नहीं करने देती है। इससे जीव की गती नहीं होती है। उदार धर्म कराती है, इससे गती हो जाती है।

यह सब कोक शास्त्र की बातैं हैं। लड़की लड़का पैदा करना अपने घर की खेती है। चाहे लड़का पैदा करो, चाहे लड़की, चाहे कुछ न पैदा करो। इसमें स्वांसा का भी विचार रहता है। लोग यह बातैं कम जानते हैं इससे संतान खराब होती है तब माँ बाप को नर्क होता है। आधी रात का गर्भ शान्त होता है। दो बजे रात का जोगी भक्त। भोरहरे का चोर। शाम का राक्षस। दिन का पशू बेशरम होता है।

पुरुष का स्वर दाहिना होय, पत्नी का स्वर बायां होय तो पुत्र पैदा होता है। पुरुष का स्वर बायां होय और पत्नी का स्वर दाहिना होय तो लड़की पैदा होती है। दोनों के स्वर सुखमन हो तो कुछ नहीं होता है।

आगे बुजुर्ग लोग अपनी संतान को सिखाते थे। लड़की जब बर योग्य हो जाती थी, तो माता सब सिखा देती थी। पिता जब सयाना पुत्र होता था, तब सिखा देता था। जब लड़की की शादी होती थी तो सास पूछती थी कि तुम्हारी मां ने क्या सिखाया है? संतान कैसे पैदा की जाती

है? वह सास से बताती थी। दामाद से ससुर पूछता था कैसे संतान पैदा करोगे। वह बताता था। जो गलती होती थी वह ससुर बता देता था। तब संतान ठीक होती थी। यह अपने घर की खेती है।

भगवान की लीला भगवान जानै-अलेख है, अकथ है, अकह है, अगम है, अपार है। जो जितना देखै सुनै उतने में विश्वास कर ले तर्क न करे।

वैदक शास्त्र में लिखा है, उसके अलावा हम देखा है सुना है वह लिखते हैं। जब दवा करते थे तो देखा बहुत औरतों में मासिक कभी नहीं हुआ, कई लड़के थे। और बहुतिन के मासिक जब तक बच्चा होने वाला है होता था। बहुतिन के दूध 1 बूंद नहीं था ऊपर के दूध से पाले गये। बहुतिन के इतना दूध था जो बच्चा पीता और दुहि कर फेंक देती थीं। बहुतिन के छाती नहीं थीं सिर्फ घुंडी थी उसी में से दूध आता था। किसी के 7 मांह पर, किसी के 9 मांह पर, किसी के 12 मांह पर लड़के होते थे। एक लाला नादिर बहराइच में हैं, उनके 15 मांह पर मरा लड़का, औरत के पैदा हुआ। बाबा रामलगनदास की अंधना हमारे गांव से 4 कोस है। वहाँ एक पंडित आये थे। हम भी बैठे थे। कहा बाबा हमारी बहू के 15 मांह पर लड़के होते हैं। 3 हो चुके हैं। बड़े तन्दुरुस्त होते हैं। हमारी भक्त लेडी डाक्टर कौशिल्या कपूर इलाहाबाद में हैं। वह बताती थीं उन्होंने दो वर्ष बाद बच्चा होना भी बताया।

कितनी औरतों के लड़के जीते हैं, लड़की नहीं जीतीं। कितनी औरतों के लड़की जीती हैं, लड़का नहीं जीते। कितनिन के एक साल से लेकर पांच साल के होकर मर जाते हैं। कितनिन के गर्भ गिर गिर जाते हैं। कितनी बांझ हैं, कोई संतान नहीं हुई। जप-पाठ-पूजन कीर्तन-परउपकार तन मन प्रेम से नहीं किया जाता है, नहीं तो यह सब बातैं न हों। सब सुखी रहैं। खान पान भी ठीक नहीं किया जाता है। नृसिंह कवच में लिखा है कि देवाराधन से सब काम हो जाते हैं। राम-जानकी, राधे-श्याम, बिष्णु-लक्ष्मी, सब देवी देवताओं को सब कुछ देने का अधिकार दिये हैं।

382. नसे शाह जी की बाणी

जप-पाठ-पूजन-कथा-कीर्तन-दया-धर्म यानी परोपकार तन मन प्रेम से करने पर पट खुल जाते हैं इससे सरल मार्ग कोई नहीं है। इसका नशा चढ़ जाता है। वह उतरता नहीं है। श्रृद्धा बिश्वास अटल हो जाता है। अपनापन मिट जाता है। हमें यही आकाश बानी हुई थी। इसी पर तुल गये, महान सुख प्राप्त हो गया। भगवान ने अजर अमर कर दिया।

383. श्री भूधर दास हकीम

भूधर दास मुकाम बड़ी सेज़ ज़िला सीतापुर। उनके यहाँ 14 पुस्त से 1 हकीम, 1 फ़क़ीर घर में होता चला आया है। वे दवा करते थे। एक ब्राह्मण दवा करते थे फिर साधू हो गये। फ़रुख़ाबाद में गंगा जी के किनारे झोपड़ी में भजन करते थे। उनके पास गये कहा "हमैं रस फूकने की किरिया बता दो।" वहाँ कुछ दिन रहे, जो जो पूंछा बता दिया तब साधू ने कहा "तुम रामायन का पाठ रोज करना जब तक मन लगै।" हकीम ने शुरु कर दिया। उनके पट खुल गये। वे ऐसा अर्थ बताते थे जो अनुभव वाला समझ पाता था। मंत्र छोटे पर अवध आकर लिये थे राम-जानकी का। तीस बर्ष शरीर छोड़े हुआ। इनका भी बड़ा बिस्तार है, हम थोड़ा लिखे हैं। 98 वर्ष की अवस्था में शरीर छोड़ा था।

384. एक भक्त का बिशाल भाव

पुराना संस्कार आकर भिड़ जाता है। एक पशुन के डाक्टर पंजाबी ब्राह्मण उन्नाव में थे। उनकी माता सौ की हो कर मरी हैं। उनको राम मंत्र जानकी मंत्र बताया 90 की उम्र में। उनका बड़ा प्रेम राम-जानकी में था। उनको जप से बड़ा अनुभव होने लगा। फिर उनकी पत्नी को दुर्गाजी का मंत्र बताया वह भी ठीक निकली। डाक्टर के लड़का लड़की तीनि या चार थे। डाक्टर को कुछ न बताया परन्तु उनका प्रेम पुराना था। हमैं अपने घर ले जाते थे घर भर धूप आरती करते फल या मीठा का हम भोग लगाते। सब को

बांटते। हमसे कहा "महाराज! हमारा मांस न छुड़ाना हम रोज़ नहीं खाते 7 या 8 दिन पर खाते हैं।" हमने कहा "मांस खाने से क्या होता है।" तो कहा "सरीर में जोस आता है मुसलमानौं को मारैंगे हिन्दू की बड़ी दुरदसा किये हैं सुनने से क्रोध आता है।" फिर कहा "हम आपको अपने साथ सब औतार देखते हैं। हमारी सायकिल पर साथ रहते हो।" हमने कहा "तुम्हारा भाव बड़ा विशाल है वही सब रूप धारन कर लेता है। ऐसा भाव कोटिन में किसी का होगा। जीव की गती भाव से होती है।"

385. बिना मौत कोई मर नहीं सकता

ढेल, बांसी के करीब एक गांव है। हमारे यहाँ से शायद 14 कोस होगा। एक ब्राह्मण उमर 40 की थी गोरा गोरा था। उसको शायद क़तल के मुक़दमे में फांसी दी गई। तीन बार लगाई गई। लगी नहीं तब छोड़ दिया गया।

तमाम आदमी देखने जाते थे। तब हम 16 वर्ष के थे। हम भी गये दर्शन कर आये थे। बिना मौत के कोई मर नहीं सकता।

386. श्री महाराज जी के उपदेश

दि. 18.09.75

भगवान भाव के भूखे हैं जिसका सच्चा भाव है उसी के हैं। सर्व शक्तिमान हैं उसी को पास में बास देते हैं। महाराज जी बताते थे एक साधू काशी गये। किसी ने उनसे कहा था काशी में कोई भूखा नहीं रहता है, अन्नपूर्णा जी सब को भोजन देती हैं। तो वै तीन दिन घूमे फिर एक जगह बैठे और लोगों से कहा "हमने सुना था काशी में कोई भूखा नहीं रहता है, अन्नपूर्णा जी सब को भोजन देती हैं। हमें 3 दिन हो गये कोई नहीं पूछा।" इतने में पारवती जी बुढ़िया के रूप में आ गईं। कहा "बच्चा काहे बैठे हो" तो हाल बताया तो माता ने कहा "तुम्हारे करधना में अशरफी है वै निकाल डालो तब भोजन मिलेगा।" फिर अंतर हो गईं, लोग हंसने लगे। साधू उठ कर चला गया।

387. श्री महाराज जी के उपदेश

दि: 21.09.75

न मालुम कितनी औरतों मर्दों रोगियों के लिये दयावश भगवान से बिनती किया अच्छे हो गये और कितनों के पाप लिया सब ठीक हो गये।

एक दिन महाराज (दादा गुरू) ने कहा कि "तुम यहीं रह जाओगे।" हमने पूछा "काहे रह जायंगे।" तो कहा "तुम्हारी कमाई में से लेकर रोगी पापी ठीक हो रहे हैं। जब भरत जी पराग पहुंचे तो भरद्वाज मुनी ने योग बल से ऐसी ऐसी रचना की और दो दिन ऐसे ऐसे पदार्थ और मकान और पलंग सब सामान रच दिया तो जितने भरत जी के संग रहे कहा कि ऐसा सुख कभी नहीं हुआ, तो उनका 50 हजार बर्ष का तप घट गया। उन्होंने फिर योगाभ्यास कर के पूरा कर लिया। तुमको कितने दिन रहना है जो अपनी कमाई साफ किये देते हो। मरने पर पता चलेगा।" तब महाराज ने कहा कि "तुम रोगियों का इलाज करो इसमें कोई हर्ज नहीं है। किसी के लिये भगवान से प्रार्थना न करो।" यह बात हमारे भीतर समा गई। महाराज ने कहा था कि "तुम्हारे ऊपर जिसका सच्चा भाव होगा तो भगवान खुद उसका काम पूरा कर देंगे।" तब से हमारा मन उधर से पलट गया।

388. श्री ज्ञान दास
गिरनार के संत

शेरः– निंदा सुनने से खुश होवै सो सियाराम क पूत।
अस्तुति सुनने से खुश होवै सो कुपशु का पूत ।।1।।

बार्तिकः–

दो बजे रात सरजू जी अस्नान किया, अवध की पांच परिकरमा किया, मुख्य मुख्य स्थानों की दंडवति किया। अब आपसे मिलने आये हैं। हम चुप अपनी सुरति संभारे पड़े थे। वह दंडवति किये। राम जी, महारानी जी, कृष्ण भगवान - राधा जी के जन्म पर शंकर जी के बिवाह के उत्सव में सब देवी-देवता ऋषी-मुनी सिद्ध-संत आते हैं। इतना कह कर अंतर हो गये। अजर अमर हैं। दत्तात्रेई के शिष्य हैं। बड़े

सरल स्वभाव के हैं। ब्रह्मा-बिष्णु महेश का बरदान है। बड़ी बड़ी तपस्या की है। अपढ़ हैं। ब्राह्मण हैं।

389. श्री मुजफ्फर हुसेन, वकील
सीतापुर

इन्हें अरसा हुआ शरीर छोड़े। हम उनको जानते हैं। एक बार ठाकुर शिवगंगा बक्स और रव प्रसाद सिंह के साथ उम्र 16 की थी तब उनके मकान पर गये थे। सांवरे रंग के थे डाढ़ी केश थे 5 रुपये फीस लेते थे। डिपटी कमिश्नर की तलवार से सलाम करते थे। उनका कहना है कि भजन वही कर सकता है जो अपने को ग़रीब मान ले। जिस तरह भगवान राखै उसी तरह खुश रहै। खान पान में मन न आसक्त हो। एक बार सादा भोजन, सादे कपड़े अच्छी संगति और जीवों पर दया एक रोवां भर अहंकार और कपट न हो तो उसे ईश्वर की प्राप्ति जल्द हो जाती है। हमारे गुरु ने हमें यही बताया था। हम उस पर तुल गये। 10 दिन में पट खुल गये। सिर्फ 10 तसबी अल्ला अल्ला जपते थे एकान्त में। फिर लय दशा होने लगी और नूर ही नूर देख पड़ने लगा, फिर दर्शन होने लगे। तमाम देवी देवता बंशीधर और राधा जी सामने हो गये, नाम कि धुनि खुल गई, मन बंध गया, आधार पा गया। अब वह कहीं जा नहीं सकता। तरह तरह के सर में बाजे बजते हैं, गाना होते हैं, दर्शन होते हैं, हर जगह से नाम की आवाज़ आती है। यह घर के रईस थे। काफी उम्र में शरीर छोड़ा था। कचहरी को बूचा पर सवार होकर जाते थे। उसमें दो आदमी लगते हैं। यह पुरानी सवारी है किसी किसी की सोने से, किसी किसी की चांदी से मढ़ी होती है। इनकी सादी काठ की थी।

390. श्री मधुकरिया बाबा जी
स्थान के सामने

मधुकरिया बाबा स्कूलों के डिप्टी रहे। जब पेंशन हुई तो पेंशन के पैसे न लिये कहा हमें कोई जरूरत नहीं है। अवध आये। यहाँ स्थान के उत्तर कोने पर एक शहतूत का पेड़ था उसके नीचे एक कुटिया में

90 बर्ष की एक माई सीता राम सीता राम किया करती थीं जाड़े में ठंढे जल से स्नान करती थीं और गर्मी के दिनों में पानी गरम के स्नान करती थीं उन्हीं से मधुकरिया बाबा ने मंत्र लिया था। वह भी नेत्र बंद करके सीताराम सीताराम किया करते थे। जब प्रकाश होता था तो हाथों से आंखें बंद कर लेते थे। कहते थे "हमें नाम से प्रेम है सरूप से नहीं।" एक दिन 1 बालक गोरा 5 वर्ष का आया तो पूछा "भइया कहां से आये हो" तो कहा कि "बड़ी छावनी से।" भगवान ने कहा "वेद शास्त्र उपनिषद संहिता गीता सब में मेरा नाम ही सार है। मम् नामं पुष्टइ पुष्टम।" तब बाबा ने कहा "आज भले ठगि पायो।"

मधुकरिया बाबा साल में एक बार यहीं पर भंडारा करते थे। इनके पास कायस्थ बहुत आया करते थे। हम बाबा के पास दिन में एक बार जाया करते थे। फैजाबाद के बाबू सुरजन लाल ने सामने कुटी बनवा दी थी। बाबा महाराज जी के दर्शन करने नित्य आया करते थे। बाबा का शरीर छूटे करीब 40 वर्ष हो गया। बाबा के बाल सन की तरह सफ़ेद हो गये थे। नित्य मधुकरी मांग लाया करते थे। जब भजन में बैठें तो पैर फैला लेते थे वैसी ही दशा में समाधि हो जाती थी तो शिर पैर की गांठों पर धर जाता था। उनका भाव था कि दाहिनी आँख में राम जी और बाईं आँखी में महरानी जी रहती हैं। अयोध्या जी के सभी साधू बाबा को बहुत मानते थे और मधुकरिया बाबा कहते थे। इनका नाम खुल गया था।

391. श्री बड़े महाराज जी के संबंध में

दिः 23-08-73

हमैं रात को याद आई। कुछ बातैं हम भूल गये थे। महाराज जी (श्री परमहंस बाबा बेनी माधव दास जी) को 14 की उम्र में शंकर जी ने प्रकट होकर ध्यान बताया और कहा कि यह ध्यान बीच का है। इस से आसान और कोई नहीं है। हमें जानकी जी ने बताया है। वही तुम को बताते हैं। इस से सब प्राप्त हो जायगा। तुम को सिर्फ़ राम मंत्र जानकी मंत्र लेना पड़ेगा। महाराज 15 दिन ध्यान में बैठे तो पालथी मारे थे। दाँई जांघ पर राम जी और बाँई पर महारानी जी बैठ गईं छोटे रूप से। राम जी ने कहा "क्या चाहते हो?" महाराज जी ने कहा "हम

आप को ऐसे ही देखा करैं।" राम जी एवमस्तु कह कर अन्तर हो गये। फिर तुरन्त ही महारानी जी और राम जी हर समय छटा छबि सिंगार के हो गये। मिनट मिनट पर सिंगार बदला करता था। कुछ दिन बाद फिर उसी तरह आ कर बैठ गये। पूछा "अब क्या चाहते हो?" तो महाराज जी ने कहा "हम आप के पास ही रहैं।" भगवान ने एवमस्तु कहा।

बड़े महाराज बाबा रघुनाथ दास जी को भी शंकर जी ने भजन बताया था। उनके सामने भी राम जानकी की छटा रहती थी। हनुमान जी भी उनसे प्रसन्न थे। हमारे महाराज जी छोटे पर सुना था उनका चरित्र तो उनकी सुरति बड़े महाराज पर लग गई थी। उसी से शंकर जी ने ध्यान बता दिया। फिर उसी ध्यान को हनुमान जी ने दोहरा दिया। महाराज जी की माता ने 6 महीने पहले कह दिया था कि हम फलाने दिन शरीर छोड़ेंगे। सब लोग गांव के इकट्ठा हो गये। भगवान का भोग लग गया था, सब पा चुके थे। महाराज 14 साल के थे। माता ने पास बैठाया और कहा "हमने तुम को राम जी को सौंप दिया। अब हम जा रही हैं। देखो विमान आ गया।" बस राम राम कर के शरीर छोड़ दिया। सब गंगा जी ले गये। वहाँ उनको पधरा दिया गया। वह कह गईं थीं "हमारे मूँह में कपूर बार कर गंगा जी में छोड़ देना।"

जब महाराज 14 के हुए तो पिता ने कहा "अब हम भजन करने जाते हैं। जहाँ जन्म ले वहाँ न मरै। तुम इतने पशू पालना जिनका पेट भर जाय नहीं तो बड़ा पाप लगेगा। और जो तुम्हारी दो बहनें हैं कुआँरी उनकी शादी करा देना। पैसे की कमी नहीं है। आसावरी गांव से कुछ दूरी पर बड़े भाई थे। वहाँ जाकर भाई-भौजाई के पैर छूकर चले गये। फिर न लौटे। पं. राम सहाय नाम था। लहुरी के त्रिवेदी थे। महाराज जी ने बहनों की शादी कर दी। धन खूब दिया। 28 की उम्र तक रहे। फिर मकान व सामान एक ब्राह्मणी को सब देकर चले आए। सब को अन्न कपड़ा जो जौने मांगा घर से तुरन्त देते थे। जब छावनी में आये तब 8 दिन बैठे रहे। तब महाराज बाबा जगन्नाथ दास जे बेथर गाँव के बाला के शुकुल थे, महाराज की गादी की सेवा करते थे उठे और कहा "8 दिन हो गए, न उठे न नहाए, न कुछ भोजन किये।" तब कहा कि कुछ भूख प्यास नहीं है। फिर ज़बरदस्ती उठाया और पीठि ठोकी।

392. राजा राम सिंह गंगवल की यात्रा

9-11-73 को शरीर छूटा

दिः 21-11-73

भगौती ने मुझे बताया कि राम सिंह जब पहले बीमार पड़े थे तभी से मारकेश शुरू हो गया था। तुमने उनके लिए अपना सिर और महाबीर प्रसाद के लिए अपना धड़ मान दिया। हमें इतने दिन आयू बढ़ा देने की आज्ञा हुई और मैंने अन्त में उन्हें बैकुण्ठ पहुंचा दिया। तीनों भाइयों के परिवार को समय आने पर वहीं भेजूंगी। भरत सिंह ने खूब राम धुनि कराई। राम सिंह सुनते थे बोल नहीं पाते थे।

जब शरीर छूटा गरुड़ जी ने उनको बसन पहिना कर विमान पर बैठाया। पारखत लै कर उड़े तो हम अन्तरध्यान होकर उनसे पहले पहुंचीं। प्रथम बैकुण्ठ में दर्शन लक्ष्मी नारायण के किया, चरनों पर पड़े। माता पिता दोनों ने सिर पर हाथ फेरा। माता ने एक कटोरी में दिब्य क्षीर समुद्र का दूध पिलाया। फिर दूसरे बैकुण्ठ, तीसरे बैकुण्ठ में दर्शन करके परनारायण के दर्शन करके सिंहासन पर बैठ गये। वह सिंहासन पारषद ले गये। यह जिस पर बैठे हैं बहुत बड़ा है। काफ़ी जगह सैन करने की है। वहाँ का हाल हम क्या वरनन करैं। माता ने कहा "बच्चा! हम जा रही हैं। राम सिंह ने चरन छुए। पीठ पर हाथ फेरा और अन्तर हो गईं।

राजा राम सिंह के संबंध में

दिः 21-11-73

16-11-73 शुक्रवार रात में शायद 3 बजा होगा राम सिंह आये। हम चादरा ओढ़े पड़े थे। पैर पकड़े। हम मूँह खोला और कहा "कौन है?" फिर उठ कर बैठ गये तो देखा कि हाथ जोड़े खड़े थे। बोले, "आप का दासानुदास राम सिंह। मुझसे भगवती ने कहा कि तुम्हारे महाराज जी जब से तुम्हारा शरीर छूटा है बड़े दुखी हैं। तुम जाकर मिल आवो, जिससे उनको शान्ती हो जाय। उनकी आज्ञा से मैं आया हूँ। राम सिंह से यह सब सुनकर और परिचय पाकर मन में शान्ती आ गई।

हमने देखा "छटा छबि सिंगार, 12 बर्ष की उम्र"। समझ गये कि यह चौथे बैकुण्ठ की सजावट है। हमने कहा "वहाँ की परिचय दीजिए। तुम्हारा वहाँ कोई है?" तो कहा, "हमारी माता गय्या, पिता जी, भाई शत्रुहन,

मझले भाई का छोटा लड़का, सीता की माता, सीता के बाबा, सीता के भाई भरतेन्द्र सिंह।" हमने कहा, "भरतसिंह ने रामधुनि कराई सो सुना?" कहा, "सुनते रहै बोल नहीं पाते थे।" हमने कहा "अन्त समय कोई दर्शन हुए" तो कहा "शंकर जी, हनुमान जी, पारवती, गणेश जी, दुर्गाजी, काली जी भैरवजी, औरों को हम चीन्हा (पहिचाना) नहीं बहुत थे जै जै कार करते थे।" रामसिंह ने और बताया कि "मैं रोज़ वहाँ माता-पिता के चरन छूता हूँ। छोटा भाई, मझले भाई का लड़का, सीता का भाई, सीता की माता व बाबा सब करीब करीब हैं। सब खुश रहते हैं। वहाँ महान सुख है।" एक रानी का नाम बताया शायद एतराजि कुँबरि ऐसा ही होगा। हमैं ठीक याद नहीं है। वह जब चित्रकूट गईं तो वहाँ भगवान का दर्शन हुआ। तब से अधिकतर तीर्थों में रहती थीं। वह भी वहाँ मौजूद हैं।

राजा साहेब ने फिर कहा, "मैं आप से एक निवेदन करना चाहता हूँ।" हमने कहा "कहिये।" तो कहा, "मैं इस लायक न था। मैं तो आप का रिणी हूँ जो भगौती को सिर मान कर और इतने दिन रोक कर बैकुण्ठ भेज दिया। अब हमारे दोनों भाइयों से और भाइयों के लड़कों से, उनकी धर्म पत्नी से, सीता से, दोनों लड़कों से कह दीजिएगा कि अपने अपने इष्ट का जप-पाठ मन लगा कर नेम टेम से करैं और मेल कर रहैं, जीवौं पर दया करैं, सब भगवान ठीक करैंगे। जब ईमान ठीक होता है तब भगवान सब काम पूरा करते हैं। सब का समय भगवान बाँधे हैं। उस समय को कोई मिटा नहीं सकता।

महाबीर प्रसाद के लिए भगौती ने कहा कि तुम्हारे पास ही भेजूँगी। उनके लिए तुम्हारे महाराज धड़ मान चुके हैं। बूढ़ी रानी व उनके पिता भी वहीं जाँयगे।

॥ राजा राम सिंह के संबंध में श्री महाराज जी (परमहंस राम मंगल दास जी) के विचार ॥

राम सिंह की यात्रा से हमैं बहुत दुख हुआ। महाराज का शरीर छूटा, माता का यहीं छूटा, पिता का घर पर माला लेकर राम राम करते छूटा, आजी का छूटा, दो चाचों दो चाचिन का छूटा, बड़े चाचा के दो लड़कों का छूटा, हमारे दो भाइयों का छूटा-हमें इतना दुख नहीं हुआ जितना रामसिंह के लिए हुआ।

यह बात हमने राम सिंह से कही तो वह बोले, "यह कोई पुराना हमारा आप का संबंध होगा इसी से ऐसा हुआ।"

भक्तों की यात्रा का एक पद लिखाये देते हैं और वहाँ के सुख का वरनन कबीर जी का है चारौं बैकुण्ठन का, उसे सब देख सकते हैं। हमें लिखने में तकलीफ़ होती है, बोल नहीं पाते। लिखने में अक्षर छूट जाते हैं। बहुत बातैं भूल जाते हैं। कमज़ोरी से इधर का उधर हो जाता है। यह बहुत बिस्तार है।

॥ श्री बचावन शाह जी, मेरठ ॥

पदः– जाते भगत निज धाम को चढ़ि यान हरषाते हुए ॥1॥
सुर मुनि सभी जै जै करैं निज साज चटकाते हुए ॥2॥
रंग रंग की माला गले में फूलों कि पहनाते हुए ॥3॥
पंखा मुरछल आसा बल्लम झण्डा फहराते हुए ॥4॥
नाचैं अप्सरा गान करि करि फूल बरसाते हुए ॥5॥
सतगुरु करो नैनन लखौ क्यों जक्त में माते हुए ॥6॥
धुनि ध्यान लय परकाश सन्मुख श्याम छबि छाते हुए ॥7॥
देव मुनि भेटैं तुम्हैं हरि के चरित गाते हुए ॥8॥

अनहद सुनो अमृत पियो पितु मातु के काते हुए ॥9॥
लेते कमा जे जन यहाँ ते बैठि वँह खाते हुए ॥110॥
जिसने न जाना जियति में ते दोनों दिशि ताते हुए ॥111॥
पीटैं नरक में दूत हर दम कल न पल पाते हुए ॥12॥
मानो कहा नर नारि चेतो क्या हौ बतलाते हुए ॥13॥
गर्भ का रिन दो चुका हम सब को समझाते हुए ॥14॥
खोते समय अनमोल हो नाहक में अलसाते हुए ॥15॥
दुर्लभ यह तन चारों पदारथ देत मन भाते हुए ॥16॥

॥ श्री महाराज जी–भगवती बार्ता ॥
(राम सिंह से संबंधित)

दिः 22.11.73

भगौती ने कहा, "हमारे ऐसा कोई भक्त नहीं है जो अपना सर व धड़ अपने भक्त के लिए हमैं माना हो। हम तुमको भी अपने पास राखैंगी। कृष्ण भगवान ने तुम से कहा था 'कुछ दिन और रहौ। थोड़ा काम तुम से कराना है। फिर हमारे पास आवोगे।' अब तुम सर व धड़ हमें दे चुके तो भगवान से हम तुम को मांग लेंगी। भगवान हमारी बात न टालेंगे। वै दीन दयाल करुणा सागर हैं। और यह कहा "जब अपने पास राखौंगी तो ऐसी शक्ति तुम को दे दूँगी कि सब देवी देवताओं के लोक देख आवोगे, सब से मिल आवोगे।"

भगवती ने आगे कहा कि "जिसकी सुरति तुम में लग जायगी वह तुम्हारे पास आ जायगा। वह तार ऐसा है कि खींचि लेता है छूटता नहीं। जब सुरति लगाने वाला आ जाता है तभी छूटता है। इसी तरह सुरति लगाने से देवी देवता सब आ जाते हैं। इस सुरति के तार को बहुत कम भक्त जानते हैं। इसका प्रचार जानकी जी ने किया है। प्रथम शंकर जी को बताया, हनुमान जी को बताया। भरत जी, लखनलाल, शत्रुहन को बताया, माण्डवी, उर्मिला, श्रुतिकीर्ति को बताया। इसका बड़ा विस्तार है। सब काम सुरति से होते हैं। थोड़ा लिखाया है।" हमने कहा "जैसी आप की इच्छा हो वैसा ही हमैं मंजूर है।"

भगौती ने फिर कहा "जिसका आप में सच्चा भाव और विश्वास होगा उसका काम ठीक होगा।"

॥ श्री पाटेश्वरी माता जी ॥

पदः– पाटेश्वरी कहैं सुनिये सुत सतगुरु बिन भव तरै न कोई ॥1॥
भजन के जौन सिंगार कहावत सो तो निकट न आवत कोई ॥2॥
शान्ति शील संतोष दीनता सरधा छिमा दया नहिं होई ॥3॥
सत्य धर्म विश्वास प्रेम औ भाव गया भीतर में खोई ॥4॥
तन मन अजा असुर बस कीन्हो कैसे नाम बीज कोइ बोई ॥5॥

या से जानि बूझि सतगुरु करि पाप ताप डारै सब धोई ।।6।।
ध्यान धुनी परकाश दशा लय जाय तहाँ पर सुख से सोई ।।7।।
सुर मुनि मिलैं सुनै घट अनहद पियै अमी रस सुरति मिलोई ।।8।।
नागिन जगै चक्र सब बेधैं खिलैं कमल रंग तत्व बिलोई ।।9।।
सन्मुख राम सिया छबि छावै जाय त्यागि तन आस निचोई ।।10।।

शब्दार्थ

अ

अंग भंगः शरीर के अंगों का कट जाना, टूट जाना, नाश हो जाना
अंगरखाः एक प्रकार की लंबी ढीली आदमियों की पोषाक
अकथः जिसका वर्णन न किया जा सके
अखंडः संपूर्ण, बिना टूटे, बिना रुके
अखाड़ाः साधू मंडली के रहने का स्थान
अगुवाः मार्ग बताने वाला, मुखिया, आगे चलने वाला
अगहनः मार्गशीर्ष मास (महीना), नवम्बर-दिसम्बर
अग्रभागः सामने वाला हिस्सा
अघः पाप, दुःख
अघाईः जी भर के
अघानाः पेट भर, तृप्त होना
अचलाः साधुओं द्वारा कमर के नीचे लुंगी की तरह पहिना जाने वाला वस्त्र
अचकनः लंबा बन्द गले का कोट
अजपाः बिना जपा गया अपने आप होने वाला जप। बहुत ऊँची स्थिति में साधक को इसका अनुभव होता है।
अज़मतिः बड़प्पन, महत्ता
अजरः जिसे कभी बुढ़ापा न आये
अजाः माया
अथाहः जिसकी थाह (गहराई) न मिले
अधरनः होंठ
अद्वैतः आत्मा और परमात्मा की एकता का सिद्धान्त
अनहद नाद (धुनि)ः बिना आहत (छेड़े) बजने वाले बाजों की ध्वनि। ये दिव्य बाजे भगवान के दरबार में बजते हैं तथा अत्यन्त ऊँची आध्यात्मिक स्थिति में साधक को सुनाई देते हैं।
अनरीतिः बुरी रीति, अनुचित (गलत) व्यवहार
अन्न परासनः पहली बार बच्चे को अन्न खिलाने का उत्सव
अनियारेः नुकीले, पैने
अन्तरायः अंतर्धान, गायब
अपजसः अपयश, बदनामी
अपढ़नः अपढ़ों में
अब्रः बादल
अभय मुद्राः देवता की वह मुद्रा (रूप) जो किसी को निर्भय या पूर्ण आश्वासन देती हुई हो
अमनियाँः काटना

अमी: अमृत
अयन: घर
अरज: अर्ज, प्रार्थना
अरझ: फंस
अरतालिस: अड़तालिस (48)
अरिष्ट कुंडली: दुष्ट ग्रहों का मरण कारक योग
अरु: और
अरूई: अरबी, घुइयाँ
अलख जगावत: पुकार पुकार कर परमात्मा के नाम पर भिक्षा मांगना
अलफी: साधुओं का कमर के ऊपर का एक प्रकार का पहिनावा
अलिफ: उर्दू वर्णमाला का पहला अक्षर
अलिफनामा: एक पदों का संग्रह जिसमें हर अक्षर से शुरू होने वाले पद हों
अलोना, अलोनी: बिना नमक का, बिना स्वाद का
अवतरित: अवतार लिये
अशर्फी, असरफी: सोने का सिक्का
अस्त: डूब जाना
अस्तुरा: बाल काटने का धारदार छुरा
अहीर: ग्वाला, पशुपालन करने वाला
अहीराना: ग्वालों के रहने का स्थान
अद्धा: छोटी बैलगाड़ी

आ

आँको: अँक, लिखाई, भाग्य
आकाशवृत्ति: ऐसी आमदनी जो बंधी न हो, अनिश्चित जीविका
आजी: दादी
आडम्बर: दिखावा, ऊपरी बनावट
आतम: आत्मा
आबदाना: अन्न-जल, खाना-पानी
आबरू: इज्जत, सम्मान
आरिफ़: जानने पहचाने वाला, साधु, महात्मा
आरूढ़: सवार, चढ़ा हुआ, दृढ़, स्थिर
आवागमन, आवागौन: संसार में जन्म मृत्यु का चक्र
आषाढ़: आषाढ़ मास, जुलाई-अगस्त
आश्विन: आश्विन मास (महीना), सितम्बर-अक्टूबर
आसक्त, आसक्ति: लिप्तता, लगन, चाह
आसनी: बैठने के लिये छोटी दरी, चादर। इस पर बैठकर पूजा-ध्यान किया जाता है।
आसा: सोने या चाँदी का डंडा जो राजा महाराजाओं अथवा बारात या जुलूस के आगे चोबदार (दरबान) लेकर चलते हैं।

इ

इक्का: एक घोड़े की गाड़ी
इजलास: कचहरी, न्यायालय, पेशी
इन्द्री: प्रजनन (जीव पैदा करने) की इन्द्रिय (अंग)
इल्लत: झंझट, परेशानी, बखेड़ा
इष्ट: सबसे प्रिय पूज्य देवी-देवता

उ

उकताना: ऊबना, जल्दी मचाना
उघरैं: प्रकट होवें, आवरण (पर्दा) हटायें, खोलें

उच्चरैं: उच्चारण करे, बोले
उच्चाटन: किसी व्यक्ति के चित्त को कहीं से हटाने के लिये किया जाने वाला तांत्रिक प्रयोग (क्रिया)
उछंग: गोद, छाती
उजेरी पूस: पूस माह के शुक्ल पक्ष में
उड़का देना: बिना चटखनी लगाये बन्द करना
उतान: सीधा, जमीन पर पीठ लगाये हुये
उदर: पेट
उदार: दानशील, खुले दिल से दान देने वाला/वाली
उद्‌भट: बहुत बड़े, श्रेष्ठ
उपरना: ऊपर ओढ़ने वाली चादर
उपनिषद: हिन्दुओं के अट्‌ठारह (18) प्राचीन धार्मिक ग्रन्थ
उपासक: पूजा, उपासना करने वाला
उबारा: उद्धार किया, मुक्त किया
उष्न, उष्णा: गर्मी

ऊ

ऊख: गन्ना
ऊर्ध्व: ऊपर; वीर्य ऊर्ध्व होना = जिनका वीर्य कभी स्खलित (गिरा) न हो

ए

एँचातानी: खींचातानी

ऐ

ऐब: अवगुण, बुराई

ओ

ओनामासी: पढ़ाई का आरम्भ
ओट: शरण
ओरहन: उलाहना, शिकायत, दोष देना
ओरिया, ओर: तरफ

औ

औघड़, औघर: अघोर पंथ पर चलने वाले तांत्रिक
औढर दानी: अत्यन्त उदारता से दान करने वाले शिव भगवान

क

कंचन: सोना
कंठी: गले में पहिनने वाली माला
कंठ होना: याद होना, रटा होना, बस में होना
कंठस्थ: रटा हुआ
कंद मूल: एक 3-4 हाथ का पौधा जिसकी जड़ मोटी, लंबी व गूदेदार होती है
कगर: ऊँचा किनारा
कचहरी: कोर्ट
कछनी: घुटनों तक ऊपर चढ़ा कर पहनी हुई धोती
कज़ा: मौत
कटार: चाकू, खंजर
कटाव: वर्षा, बाढ़ आदि से जमीन का कट कर बह जाना
कढ़ना: घसीट कर बाहर लाना
कढ़ि के: बना कर

कथरी, कथड़ीः पुराने चिथड़ों को जोड़कर बनाया हुआ बिछौना
कनीः (हीरे का) बहुत छोटा टुकड़ा
कपालः खोपड़ी
कबीहः बुरा, खराब
कबहूँः कभी
कबीरपंथीः कबीर जी के आध्यात्मिक मार्ग पर चलने वाले
कमरीः छोटा कंबल
कम्पायमानः कांपना
करः हाथ
कर परसैः हाथ रखकर आशीर्वाद दें
करतलः हाथ की हथेली में
करतारः ईश्वर
करारः नदी का वह ऊँचा किनारा (टीला) जो जल के काटने से बना हो
कराहीः कढ़ाई (भोजन पकाने का बर्तन)
करिखाः कालिख
करीहः जिसे देखकर घृणा हो, नफरत हो
करेजुः कलेजा, हृदय
कोरमः सभा, समिति आदि को आरंभ करने के लिये आवश्यक सदस्यों की उपस्थिति
कर्दम जुः स्वायम्भुव मन्वन्तर (अत्यन्त प्राचीन काल) के प्रजापति विशेष। इनके पुत्र कपिल मुनि थे जिन्होंने सांख्य शास्त्र की रचना की
कलः चैन, आराम
कल्पवासः माघ (जनवरी-फरवरी) महीने में गंगा किनारे रहना
कल्पौं, कल्पनः कई कल्प (1 कल्प = 4 अरब 32 करोड़ वर्ष)
कलितः सजाई हुई, सुन्दर
कलेवाः ब्याह के समय की रस्म (परंपरा) जिसमें दूल्हा ससुराल में भोजन करने जाता है
कलेवाः भगवान का शरीर (मूर्ति)
कवाईदः शारीरिक व्यायाम, ड्रिल, परेड
कसाइनः कई कसाई
कहरो बलाः बहुत बड़ी आफत, विपत्ति
कहरः विपत्ति, आफत
कहारः एक जाति जो पानी भरने और डोली (पालकी) उठाने का काम करती है
कागभुषुण्डः एक ऋषि जिनका रूप कौवे जैसा है
कागाः कौआ
काठः लकड़ी
काढ़नाः अन्दर से बाहर निकालना, बनाना या लगाना
कातिकः कार्तिक मास (अक्टूबर-नवम्बर)
कादरः कातर, डरपोक, अधीर, व्याकुल
कादिरः सर्वशक्तिमान, ताकतवर
काफिरः नास्तिक, भगवान को न मानने वाला, उपद्रवी
कामिलः पूर्ण, योग्य, फ़कीर
कारजः कार्य, काम
कारिकः कालिख
काल त्रासः काल (मृत्यु) का भय (कष्ट)
कायलः मान लेने वाला

काया गढ़ः शरीर का किला
किल्लतिः कमी, तंगी, कठिनाई
किवाड़, केवाड़ः दरवाज़ा
किसिम किसिमः कई किस्म (तरह) की
कीचः कीचड़
कीनः किया
क्रीटः सिर पर बांधने वाला एक आभूषण (गहना)
कुंजनः बगीचों
कुंडलिनीः मनुष्य के अन्दर सोई हुई आध्यात्मिक शक्ति जो जगने पर अनेकों शक्तियां व सिद्धियां प्रदान करती है। इसका रूप नागिन जैसा है जो अपनी पूँछ मुँह में दबाये बैठी है (सो रही है)
कुंभारः कुम्हार, मिट्टी के बर्तन बनाने वाला
कुअंकः विधाता द्वारा लिखा गया खराब भाग्य, दुर्भाग्य
कुकरौंधाः एक विशेष पौधा
कुगतिः मरने के बाद जीव की खराब गति (अवस्था)
कुछबधियाः कुत्ता लेकर शिकार करने वाली जाति
कुदरतीः ईश्वरीय
कुर्मीः कृषि, खेती करने वाली जाति
कुलुफ़ः ताला
कूचाः गली, संकरा (तंग) रास्ता
कूंडीः छोटी नाँद, पानी रखने के लिए मिट्टी या पत्थर का गहरा बरतन
कूपः कुआँ
केंचुलः सांप की झिल्लीदार चमड़ी जो हर साल उतर या गिर जाती है
केवलः सिर्फ
केहरीः सिंह
कोकिलाः कोयल
कोचवानः घोड़ा गाड़ी चलाने वाला
कोटिनः करोड़ों
कोटिः करोड़
कोठारः कुठार, भंडार घर
कोड़रैयाः चक्करदार भागना
कोंछः आँचल (स्त्रियों की धोती का)
कोरीः कपड़े बुनने वाली जाति
कोविदः पंडित, विद्वान
कोसः दूरी का एक नाप जो लगभग 2 मील (3 किलोमीटर) के बराबर होती है
कौड़ीः पुराने समय में सबसे कम मूल्य का सिक्का। इसका रूप घोंघे जैसा होता है
कौंधाः बिजली का चमकना
कौतुकीः खेल तमाशा
कौमः जाति, वंश
कौलः प्रतिज्ञा, वादा
कौसरः स्वर्ग का एक कुंड, अमृत
कौस्तुभः एक रत्न जो भगवान विष्णु अपने गले में पहिने रहते हैं
क्षुधाः भूख

ख

खजांचीः खजाने का अधिकारी
खट् (षट्)ः छह
खटोलीः छोटी खाट
खनैः खोदे
खड़ाऊँः लकड़ी के तले का खुला

जूता (चप्पल) जो साधू पहिनते हैं, पादुका
खंडः मंजिल
खन्दकः खाई, गहरा गड्ढा
खरंजा, खड़ंजाः बिछी ईंटों का बना फर्श (जमीन) या रास्ता
खरहराः घनी झाड़ी के डंठलों की झाड़ू
खलकः संसार, दुनिया
खलीताः थैली, जेब
खसमः पति
खाकः धूल
खांचनाः खींचना, निशान बनाना, अंकित करना
खांड़ः बिना साफ की हुई चीनी
खाड़ः खाई, गड्ढा
खांड़ाः तलवार
खाँवाः चौड़ी खाई, खन्दक, गड्ढा
खिल्लतिः खिलते हैं
ख़ुमः घड़ा, मटका
खुरपाः घास छीटने का एक औजार (उपकरण)
खुर्दः छोटा, सूक्ष्म, लघु
खुशखतः सुन्दर अक्षरों में लिखा हुआ
खुशामदः झूठी प्रशंसा (तारीफ़)
खूँटः कपड़े का एक कोना या सिरा
खेद देनाः खदेड़ देना, बलपूर्वक भगा देना
खेवताः पार लगाने वाला
खेवनहारः नाव चलाने वाला, जो संसार के संकट से पार लगाने वाला हो
खैर करनाः कुशल (भला) चाहना
खैरातः दान

ग

गंजीफाः एक प्रकार का ताश का खेल
गंडः कपोल, गाल
गंड़ासाः हँसिये के आकार का घास काटने का औज़ार
गगरः घड़ा
गच्चा खानाः गोता खाना, धोखा खाना
गडुई, गरुवाः पानी रखने का टोंटीदार छोटा बर्तन, झारी
गड़कापः डूबना
गटकिः निगल जाना
गढ़ीः छोटा किला
गतीः मरने के बाद जीव को प्राप्त होने वाली अवस्था
गदाः भक्त
गदियाः गूदा
गफ़लतः बेपरवाही, भूलचूक, असावधानी
गमकः खुशबू, सुगन्ध
गमकायेंः सुगन्धें
गनः गण, समूह
गरद गुब्बारः धूल का गुब्बारा
गरनाः निचुड़ना
गरुआनाः भारी होना
गरूः भारी
गरूरीः घमंड, अभिमान
गलमोच्छाः गालों पर की दाढ़ी-मूंछ
गल्लाः अनाज, अन्न
गश्तः पहरा देने या हाल चाल जानने के लिये घूमना या चक्कर लगाना
गसनीः जकड़न
गस्तः गश्त; (संसार में) घूमना (आना-जाना)
गह, गहिः पकड
गहुरेः ग्रहण करे, पकड़े
गाँजनाः ढेर लगाना
गाँठ, गाँठिनः घुटना
गाँठताः जोड़ता, ठीक करता
गाढ़ेः एक प्रकार का मोटा सूती कपड़ा
गाड़ा, गाराः सुर्खी, चूने आदि से बनाया गया मसाला
गादीः गुरु, सन्त के बैठने का स्थान
ग्रामः गाँव
ग्राम सिंहः गाँव का शेर, झूठ मूठ का शेर
गारनाः निचोड़ना
गाँसः दबोच लेना, जकड़ लेना
गिन्नीः सोने का सिक्का
गिरदाः तकिया
गिरदानः गिरगिट
गुझियाः छोटा काला कीड़ा
गुरुमुखः सतगुरु की शरण, सतगुरु से दीक्षा लेना
गुलः फूल
गुल, गूलः जलता हुआ कोयला
गुलबदनः जिसका शरीर गुलाब के फूलों के समान सुन्दर हो, कोमल हो
गुवारः अच्छा लगने वाला
गूढ़ः गहरा, जिसमें कुछ विशेष बात छिपी हो
गूलरः पीपल की जाति का एक पेड़
गूलर की गदियाः गूलर का फल, कच्ची गूलर
गेः गये
गेदः बांबी (चीटियों की)
गेसूः बालों की लट, ज़ुल्फ
गैबीः आसमानी, दैविक
गोकशीः गोहत्या
गोजीः बड़ी लाठी
गोताः डुबकी
गोता खानाः डूबना
गोफाः शरीर के आगे दोनों हाथों का मिलाना (एक दूसरे को पकड़ना)
गोशः कान
गोहः छिपकली जैसा पर उससे बड़ा एक विषैला जानवर

घ

घटः शरीर, घड़ा
घाटियाः नदी के घाट पर बैठकर दान लेने वाला ब्राह्मण
घनः बादल
घानीः हथोड़ी, चोट, प्रहार
घुआइन्दः घी की खुशबू
घुघुआः उल्लू
घुटन्नाः तंग (कम) मोहरी (चौड़ाई) वाला पायजामा
घुनघुनाः झुनझुना नाम का खिलौना
घुनघुनियाः छोटा घुनघुना
घुनेः एक छोटा कीड़ा जो पेड़ (या लकड़ी) में लगकर उसे बहुत कमजोर बना देता है
घूरः कूड़े करकट का ढेर
घुराइन्दः घोड़े की महक
घेरीः घेर कर

घोटनाः महीन पीसना, रगड़ कर मिलाना

च

चँवर, चँवरीः हाथ से डुलाने वाला विशेष पंखा
चक्र धोनाः मूलाधार चक्र (गुदा द्वार, टट्टी का स्थान) को धोना
चक्षुः आँख
चटः तुरन्त
चभच्चाः दाँतों से कुचलकर खाना
चमनः बगीचा, फुलवारी
चट्टीः चप्पल
चरसः इसको जलाकर इसके धुयें को तंबाकू की तरह पीने से नशा होता है
चरहीः कुयें के पास जानवरों को पानी पिलाने के लिये रखी नांदें
चश्मः आँखें
चहलाः कीचड़, दलदल
चहारदीवालीः देखिये छहरदीवाली
चहु वोराः चारों ओर
चाको, चाकः चक्कर, चक्र
चामः चमड़ा, खाल
चारों भाईः राम जी, लक्ष्मण जी, भरत जी, शत्रुघ्न जी
चिकाराः तार वाला बजाने का बाजा (छोटी सारंगी जैसा)
चितवनि, चितवैः ताकने या देखने का एक भाव (ढंग)
चित्तः मन
चिलमः मिट्टी की एक तरह की नलीदार कटोरी जिसपर तंबाकू रखकर उसका धुआँ पीते हैं
चिल्लाः 40 दिन का समय
चीन्हाः पहिचाना
चुरनाः उबल कर पकना
चेत, चेतिः सावधान
चेतनः जिसमें जीव हो, ज्ञान हो, अनुभव करने की क्षमता (शक्ति) हो
चेतियेः होशियार हो जाइये
चैतः चैत्र माह (मार्च-अप्रैल)
चोलाः ढीला ढाला लंबा वस्त्र, भगवान का सिंगार
चौखुंटाः चौकोर, चार कोने वाला
चौतरेः चबूतरा
चौपारिः चौपाल, बड़ा छायादार चबूतरा

छ

छइउ चक्रः छह चक्र, मनुष्य (नर-नारी) के सूक्ष्म शरीर में स्थित छह अत्यधिक ऊर्जा के केन्द्र
छट्टी पूजनः जन्म के छटवें दिन की पूजा
छप्पड़ः छप्पर; बाँस, लकड़ी, फूस आदि से बनाई झोपड़ी या कुटी
छहरदीवालीः किसी मकान या बड़े मैदान के चारों ओर बनी हुई दीवार
छाकोः इच्छा भर के, तृप्त होना, छक जाना
छानेः अच्छी तरह देखभाल के ढूंढें
छारः राख, भस्म
छांटनाः (कपड़े) धोना
छावनीः आश्रम, साधुओं के रहने का स्थान, डेरा, पड़ाव
छिंगनीः सबसे छोटी उंगली

छिद्रः छेद
छिनः क्षण, पल
छीणः क्षीण, कमज़ोर, घट जाना
छेंक दियाः काट दिया, मिटा दिया
छेमः क्षेम, कुशल मंगल, सुख, आनन्द
छेवताः काट देता, छिन्न कर देता
छोलनाः छीलना, काटना, हजामत बनाना
छोहनः प्रेम, दया, कृपा
छौलदारीः एक प्रकार का छोटा तंबू
छ्वैलियाः छलिया, छलने वाला

ज

जक जकः झक झक, बेकार की कहा सुनी
जगतः संसार
जगमोहनः सभा मंडप
जमातः व्यक्तियों का संघ, भीड़, मनुष्यों का समूह
जगति, जगतः कुयें के ऊपर चारों तरफ बना हुआ चबूतरा
जज्ञोपवीतः जनेऊ
जड़ः जिसमें जीवन न हो (जैसे पत्थर)
जनकपुरीः बिहार-नेपाल सीमा के पास यह स्थान है
जनन माँझ उबरैः जन्म मरण के चक्कर से मुक्ति पाये
जबरः बलवान, पक्का
जमनः यमदूत
जलमतः जन्म लेते, जन्मते
जलालः तेज, प्रकाश
जलाशयः तालाब
जवारिः आस पास का स्थान, आस पड़ोस
जाकीः जिसकी
जाजिमः जमीन पर बिछाने की चादर, कालीन
जाड़घामः जाड़ा-गरमी
जामेः जिसमें
जिकर, जिक्रः स्मरण, याद
जिन्नः एक प्रकार के भूत प्रेत
जिन्नातः भूत, प्रेत, जिन्न आदि
जिमिः जैसे
जिल्दें: जिल्द (दफ्ती) लगे ग्रन्थ (मोटी पुस्तकें)
जिल्लतिः बेइज्जती, दुर्दशा
जियते तरनिः जीते जी ही सब पापों को जलाकर तर जाना, मुक्ति पा जाना
जियते मरनिः जीते जी ही मर कर (पुराना जीवन समाप्त कर) भगवान की शरण में नया जीवन शुरू करना
जियते सरनिः जीते जी (इस जीवन में ही) भगवान की शरण में हो जाना
जुक्तिः युक्ति, तरकीब
जेठः ज्येष्ठ माह (मई-जून), पति के बड़े भाई
जुठारिः जूठी कर दी
जोरिः जोड़ कर
जौहरः श्रेष्ठता, उत्तमता

झ

झंगलीः बच्चों के पहनने का एक प्रकार का ढीला कुर्ता
झंझरीदारः जालीदार, जिसमें बहुत से

छोटे-छोटे छेदों का समूह हो
झकझोरैं: झटका दें
झाँप: परदा, ऊपरी आवरण
झाऊ: मोरपंखी की जाति का छोटा झाड़
झाखर: झंखाड़, घनी या काटेंदार झाड़ी या पौधा
झारी: पानी रखने का एक प्रकार का लंबा टोंटीदार बरतन
झाली: झाड़ी
झेला: सहा
झोरी: झोली

ट

टट्टी: पाखाने का स्थान, संडास
टरौ: हटो
टाँकी: एक छोटी चीज़ को किसी बड़ी चीज़ के साथ जोड़ना या लगाना
टाट: सन की डोरियों का बना मोटा कपड़ा जिससे बोरे, बिछावन, आसन बनते हैं
टारे: हटाने पर, टालने पर
टिकठी: अरथी जिस पर शव लेकर चलते हैं
टिकोरा: कसक, टीस, थोड़ी-थोड़ी देर में उठने वाला दर्द
टीका करना: कठिन ग्रंथों के अर्थ स्पष्ट (साफ) समझाने वाली पुस्तक लिखना
टेकरी: ऊँचा टीला
टेखा: कोमल टहनी
टेर्यो: ऊँची आवाज़ से पुकारना
टोला: बड़ी बस्ती, नगर का एक भाग, मोहल्ला

ठ

ठगि पायो: धोखा देकर लूटना
ठठेर: बर्तन बनानेवाला
ठमके, ठमकी, ठामक: मध्यम ऊँचाई के, नाटा (नाटी)
ठलिक ठेला: आवागमन (जन्म मरण) का चक्कर
ठाढ़ी: खड़ी हुई
ठाने: पक्का करे, निश्चित दृढ़ संकल्प करे
ठूंठ: पेड़ जिसमें कोई डाली या पत्ती न रह गई हो, सूखा पेड़ का तना
ठेकाने: ठिकाना, स्थान, जगह
ठेलना: धक्का देकर आगे बढ़ाना, ढकेलना
ठैरना: रुकना
ठौर: स्थान, जगह

ड

डंका: एक प्रकार का बड़ा नगाड़ा
डंके की चोट पर कहना: निडर होकर खुलेआम (सबको सुनाकर) कहना
डंड पेलना: हाथ पैर के पंजों के बल की जाने वाली एक कसरत
डारेव दागा: जला डालना
डिगि: हिल जाना, विचलित हो जाना, फिसल जाना
डील डौल: शरीर की लंबाई चौड़ाई
डीले: टुकड़े
डीह: उजड़े हुये गाँव का अवशेष (बचा खुचा अंश)
डेग: बड़ी पतीली
डोलडाल: टट्टी

ढ

ढंग: कोई काम करने का तरीका
ढच्चा: ढांचा (शरीर)
ढारे: उड़ेले, गिराये
ढिग: पास
ढी: पानी की धारा से इकट्ठा की हुई मिट्टी या रेत
ढीलौं: मिट्टी पत्थर आदि के टुकड़े
ढोका, ढोंका: बड़ा ढेला

त

तंजेब, तनजेब: मलमल, एक प्रकार का बढ़िया महीन कपड़ा
तकदीर: भाग्य
तच्चा: तपाया हुआ (निखार आया हुआ)
तजि: छोड़ कर
तड़का: छौंक, बघार
तड़ाका: चटपट, तुरन्त
तत्व: सृष्टि पाँच तत्वों से बनी है-धरती, आकाश, जल, अग्नि, वायु
तदबीर: कर्म, काम पूरा या ठीक करने का उपाय, तरकीब, प्रयास
तपेदिक: क्षय रोग, टी.बी.
तफसील: विस्तार से वर्णन
तबक: लोक, तल
तम: अंधकार
तमोगुण: प्रकृति के तीन गुणों में से अन्तिम जो अंधकार, अज्ञान, पाप से भरा, खराब माना गया है
तरुणी: स्त्री, युवती
तरुणाई: जवानी
तरे: तले (नीचे)
तरे: उद्धार हुये
तलफै: तड़पै
तवाफ: परिक्रमा
तसबी: जपने की माला
तृषा: प्यास
तस्मई: खीर
त्रषना: तृष्णा, कोई वस्तु पाने के लिये व्याकुल करने वाली इच्छा, वासना लोभ, लालच
त्रिकुटी: दोनों भौहों के बीच का स्थान (ध्यान करने का एक स्थान)
त्रिपुरारि: शंकर भगवान
ताइर: पक्षी, चिड़िया
ताई: (किसी के) प्रति
ताका: ध्यान से देखा
तागा: धागा, डोरी
ताड़ा: भाँप करके, नज़र लगा कर के
तात: पिता, पूज्य या मान्य व्यक्ति, भाई, मित्र या छोटों के लिये एक प्रेमपूर्ण सम्बोधन
ताते हुये: तपाये (गर्म किये) हुये
ताप: तीनों ताप (त्रयताप), तीनों प्रकार के कष्ट
आधिदैविक: दैवी (मनुष्यों के बस से बाहर) कष्ट जैसे सूखा, भूचाल आदि
आधिभौतिक: जीवों या शरीर धारियों

द्वारा प्राप्त सांसारिक दु:ख
आध्यात्मिक: भगवान या आत्मा से संबंध रखने वाला दु:ख

तारकशी का टोपा: टोपा जिसमें धातुओं (सोने चाँदी) के तार से बेल बूटे बने हों
तिरगुन: त्रिगुण (सतोगुण, रजोगुण, तमोगुण)
तिलाँजुल: तिलाँजलि, सदा के लिये त्याग देने का संकल्प
तिस पर: उस पर
तीव्र: तेज, बहुत ज्यादा
तीर्थाटन: तीर्थयात्रा
तुनुक मिजाज: बात बात पर रूठने या बिगड़ने वाला
तुरंग: घोड़ा
तुलि जाव: जुट जाओ, पिल जाओ
तूँबी: छोटे कड़ुवे कद्दू को खोखला कर बनाया गया बर्तन (पात्र)
तूरैं: तोड़ें
तूल: लम्बाई, विस्तार, अहंकार
तैस: वैसा ही
तोला: 1 तोला = 11.664 ग्राम,; × 1 तोला = 12 माशा

थ

थाई: जगह में, बैठक में
थान: एक निश्चित लम्बाई का कपड़ा

द

दंडवत: डंडे के समान लेटकर प्रणाम
दंदां: दाँत
दगा: धोखा
दधि: दही
दफ़े: बार
दरक कर: चटक कर, चिर कर
दरप: दर्प, घमंड, अभिमान
दमन: बलपूर्वक शान्त करना
दरवेश: साधू, भक्त
दहा: जलाया
दागा: तोप बन्दूक आदि छोड़ना
दाना: जाननेवाला, बुद्धिमान, ज्ञानी
दामिनी: बिजली
दिग्विजयी: जिसने सब दिशाओं में जीत (विजय) प्राप्त कर ली हो
दिच्छा: दीक्षा
दिजेन्द्र: दाँत जो एक बार गिर कर फिर निकलते हैं
दिशि, दिसि: दिशा
दीन: विनम्र, विनीत
दीन: धर्म, मजहब
दुचितैया: जिसका चित्त दो बातों में लगा हो, दुविधा, खटका
दुलंगी धोती: धोती जो दोनों पैरों में लिपटी हो
दुसूती: दोहरे सूतों का मोटा कपड़ा
दुहाजू: पत्नी की मृत्यु के बाद दूसरा विवाह करने वाला पुरुष
देवढ़ा (डेवढ़ा): डेढ़ गुना
देवतन: देवताओं
देवना: कर्ज, जो दिया जाना हो
दैत्य: राक्षस
द्वैत: अपना-पराया, जीव और परमात्मा को अलग अलग मानना। परमहंस राममंगलदास जी ने उपदेश दिया है, "हम, हमारे नात भाई सब ठीक रहें, बाकी दुनिया मरे, हमसे क्या मतलब, यही द्वैत है।"
दोऊ: दोनों
दोज़ख: नरक
दोयम: दूसरी
दोहरी देह: दुगुनी देह के (मोटे)
दृगन: आँखों से
दृष्टिगोचर: जो देखने में आये

ध

धमकैं: झपट पड़ें
धरावत, धराते: रखवाते
धातु: वीर्य
धानुक: रुई धुनने वाला धुनियाँ
धानुक: एक जाति जिसका काम धनुष बनाना है
धारोष्ण: तुरन्त का दुहा गया दूध (जो हल्का गरम होता है)
धुर्री: धूल का कण
धीमर: मछुवारा, मल्लाह, नाव चलाने वाला
धीर: धैर्य, धीरज, कठिनाई के समय मन की स्थिरता
धेला: आधा पैसा

न

नकचाया: नजदीक (पास) आया
नजूल: शहर की वह भूमि (जमीन) जो सरकार के अधिकार में हो
नट कला: खेल तमाशा, कलाबाजी की विद्या (कौशल)
ननिहाल: नाना-नानी का घर
नफ़ीरी: शहनाई के साथ बजनेवाली बाँसुरी की तरह का एक बाजा
नभ: आकाश
नय करके: नम्रता से, दीनतापूर्वक
नयनसुख: बड़ा अच्छा मलमल का कपड़ा
नवावै: झुकावे
नसान: नाश
नसूढ़ी: अमंगलकारी, अपशकुनी, मनहूस
नहौं: नसों
नाँद, नदोला: तसला, पानी पीने का खुला मिट्टी या पत्थर का बर्तन इसमें पशुओं को चारा या पानी दिया जाता है।
नागफनी: एक कांटेदार पौधा
नाजो नेयाज: नाज = नखरे, नियाज = प्रेमी, प्रिय, इच्छुक; बहुत नाज़ नखरे करने वाले
नार: नये जन्मे बच्चे की गर्भ से बंधी रहने वाली नाड़ी
नार सूधा: नार कटी न हो
निकसि: निकल कर
निजधाम: अपने घर (भगवान के घर जहाँ से अलग होकर हम आये हैं)
निजपुर: निजधाम
निठुर, निष्ठुर: निर्दयी, जिसमें दया न हो, बेरहम
नित्य नेम: रोज़ का नियम-नहाना, धोना, पूजा, पाठ आदि
निर्गुण, निरगुन: भगवान का निराकार (बिना आकार का) स्वरूप

निर्धार: निश्चित
निरखै, निरखत: देखते हुए
निर्वान, निर्वाण, निरबान: जन्म मरण के चक्र से मुक्ति, भगवान में मिल जाना
निर्वाह: गुजारा करना, जीवन चलाना
निर्वैर: जिसकी किसी से दुश्मनी (बैर) न हो
निशिबार, निसिवार: रात-दिन
निस्तार: उद्धार, कल्याण
निहाल: पूर्ण रूप से तृप्त, संतुष्ट व प्रसन्न, सफल मनोरथ
नूपुर: घुँघरू
नूर: ज्योति, प्रकाश
नेक, नेकौ: जरा सा भी, थोड़ा सा भी
नेरे: पास
नेवाज़: नमाज़
नै गया: दीन बन गया
नैहर: विवाहित स्त्री का मायका
नीक: भला, अच्छा, बढ़िया
नीरवता: शान्ति
नृपति: राजा
न्यारे: अलग, दूर, निराला, अनोखा

प

पंच पात्र: पाँच बर्तन
पंगत, पंगति: भोजन करने के लिये लाइन से बैठना
पक्की समाधि: ईंट, सीमेन्ट आदि से बनी समाधि
पग: चरण, पैर
पछाँह: पश्चिम की तरफ की जगह (स्थान)
पछोड़ना: अनाज के दानों को सूप में रखकर उन्हें फटककर साफ करना (जो भूसा या हल्का कचरा होता है वह उड़ जाता है, भारी दाने नीचे बच जाते हैं)
पट्टा: अधिकार पत्र
पट: वस्त्र, कपड़ा
पट खुल जाना: आँखी कान खुल जाना। परमहंस राममंगलदास जी के अनुसार, "जब आँखीं खुल जायँ तो तमाम देवी देवता जो यहाँ घूमत हैं सबको देखने लगो। जब कान खुल जायँ तब रोम रोम से जर्रा जर्रा से, सब हड्डी से, सब लोकों से नाम (र रंकार) का हाहाकार मच जाता है।"
पटरिन: फीता जो कपड़ों के किनारे टांका जाता है
पटा: भरा
पठाना: भेजना
पठवै: भेजने के लिये
पड़ाका: आतिशबाजी की गोली
पदारथ: पदार्थ (फल) चार प्रकार के होते हैं–धर्म, अर्थ (धन), काम (इच्छा पूर्ति), मोक्ष (जन्म मरण के चक्कर से मुक्ति)
पधर: स्थापित
पधारना: स्थापना करना
पन्थ: रास्ता
पयहारी, पैहारी: केवल दूध पीकर रहने वाला साधू-महात्मा
पयान: प्रयाण, जाना, गमन
परस्वारथ: दूसरों की सेवा
परकाश: प्रकाश
परचारा: प्रचार करना, सब लोगों को बताना
परचून: किराने का सामान (आटा, दाल, चावल आदि)
परजन, परिजन, परजा: साथ में रहने वाले सेवक तथा आश्रित जन, जैसे नौकर, नाई, धोबी आदि
परमधाम: भगवान के धाम (घर)
परमहँस: ज्ञान की परम अवस्था तक पहुँचा हुआ महात्मा
परमारथ: भगवान को पाने के लिये किया गया भजन, जप, पाठ, पूजन, कीर्तन
परतीति, प्रतीति: विश्वास
परपंच, प्रपंच: संसार और उसके छल-कपट, लड़ाई-झगड़े से भरे कार्य
परलय, प्रलय: संसार का प्रकृति में लीन होकर मिट जाना, फिर नई सृष्टि का जन्म होना
परवर: पालने वाला
परवाना: आज्ञा पत्र, आदेश पत्र
भूसा का पछोड़ना = कुछ हाथ न आना
परान: पड़ जाना
परसैं: रखखें
परिच्छा: परीक्षा
पल: 24 सेकेंड के बराबर समय का एक नाप
पलक दरियाई: भगवान का नाम, जो पलक झपकते ही कृपा और दया का समुद्र बहा देते हैं भक्त पर
पलटन: सैनिकों का समूह
पलाकी : पालक
पशीमा: लज्जित, शरमिंदा, पछताने वाला
पसारा: फैलाना
पसार खाना: पंसारी (अनाज, तेल, मसाले) की दुकान
पसेरी: पाँच सेर
पहुड़ना, पौढ़ना: लेटना
पाक: पवित्र
पाखरी: खड़ पतवार, बड़े पत्ते, घास-फूस
पाट देना: गड्ढे में भर कर समतल कर देना
पाती: पत्ती
पारखत: भगवान के भोग लगाने के बर्तन
पारषद: भगवान के दरबारी गण (दूत)
पारुस, पारुसि: परोसा हुआ एक बार का भोजन
पाषाण: पत्थर
पासी: मजदूर जाति, जाल या फन्दा डालकर चिड़िया पकड़ने वाला
पाहिं, पाहीं: पास में, किसी के प्रति
पाहिं, पाहीं: पास में, किसी के प्रति
पिच्छा: पीछा
पिटारी, पेटारी: बांस की पट्टियों से बना ढकनेदार डिब्बा
पिपीलिका: चींटी, जाप का एक तरीका
पिल्लति: जोर लगाकर प्रवेश कर

जाना
पीक: खाये हुये पान आदि के रस की थूक
पीटब: पीटूंगी, पीटूंगा
पीत: पीला
पीर: कष्ट
पीनस: पालकी, डोली
पुरखन: पूर्वज, दादा परदादा लोग
पुरवा: छोटा गाँव
पुर्जे: अंग, हिस्से (किसी यंत्र के)
पुलकित: आनन्दित
पुष्ट: बलवान, सब प्रकार से पूर्ण
पुष्टई: पुष्टता, तेज (बल) बढ़ाने वाली औषधि (दवा)
पूत: पुत्र
पूर जाना: भर जाना
पूस: पौष मास (दिसम्बर-जनवरी)
पेचिस: तेज़ दस्त आना
पेंच: कुश्ती का एक दाँव जिसमें घुमाव, फिराव व लपेट होता है
पेलना: ढकेलना, दबाकर अन्दर घुसाना, धँसाना
पेवता: पिलाता
पै: पर
पैकरमा: परिक्रमा
पैजनिया: पायल
पैठ, पैंठ: प्रवेश होना, घुसना
पैंती: उंगली में पहिनने वाला छल्ला
पैन: डटे रहना
पैर कर: तैर कर
पैरा: सूखी घास
पैड़ा: रास्ता (भगवान को पाने का)

पोथी: छोटी पुस्तक
पोथी पंडित: किताबी ज्ञान के पंडित (अनुभव के नहीं)
प्रतिष्ठा: स्थापना, सम्मान
प्रतिष्ठा: भगवान की स्थापना, सम्मान
प्रवाह किया: जल समाधि दे दी
पृथक: अलग
प्रवीन, परवीन: होशियार
प्रीति: प्रेम

फ

फकीर: भिखारी, साधू, संसार त्यागी
फणपति: शेष नाग
फनाफिला: फ़नाफ़िल्ला, ईश्वर में लीन
फ़रज़न्द: बेटा
फरमाते हैं: आज्ञा देते हैं, कहते हैं
फरियाना: स्पष्ट (साफ साफ) होना
फरेंद: काला मीठा बेर
फ़लक: आकाश, आसमान
फलाने: कोई विशेष
फलीभूत: फल की प्राप्ति
फस्थ (फस्त) खोलना: शरीर का गंदा खून निकलवाना
फाका, फाँका: उपवास, बिना भोजन के
फागुन: फाल्गुन मास (फरवरी-मार्च)
फाजिल: जरूरत से ज्यादा
फातिहा: प्रार्थना, कुरान की आयत
फीक: फीका, बिना स्वाद के
फीया: फाहा, पट्टी
फीलवान: हाथीवान, महावत

फेरी: आना जाना
फेरे: अदला-बदली, वचन के फेरे = शब्दों की अदला-बदली
फोता: इन्द्री (पेशाब की इन्द्री) के नीचे के दो गोल अंडकोष
फौत: मृत्यु

ब

बकोट: नाखूनों से नोचकर दिये टुकड़े
बखान, बखियाने: तारीफ, प्रशंसा, विस्तार से वर्णन
बट: बरगद
बटिया: छोटा गोल मटोल टुकड़ा
बटुर गया: सिमट गया, एकत्रित हो गया
बटुली: दाल आदि पकाने का भगौना (देगची)
बड़ेर: कच्चे मकान को बीच में ऊँचा करने के लिये लगाई गई मोटी लकड़ी
बदरी: बादल
बदी: कृष्ण पक्ष, बुराई
बरजन हारे: मना करने, रोकने वाले
बरनि: वर्णन करना
बरनै: वर्णन करना
बरसयन: बरसाने वाले
बलदाई: शक्तिशाली
बल्लम: एक सुनहरा रूपहला डंडा जिसे चोबदार बड़े आदमियों के आगे लेकर चलते हैं
बसन: वस्त्र, कपड़ा
बसर, बशर: इन्सान, मनुष्य

बहका: ठीक रास्ते के बजाय इधर उधर ले जाना
बहिर: बहरा
बांका: लोहे का टेढ़ा एक तरह का हथियार
बाँकी: टेढ़ी, तिरछी, अनोखी व सुंदर
बांको: बहुत बना-ठना और सुन्दर
बाँचना: पाठ करना
बागा: बगीचा, पुराना लम्बा पहनावा
बाघम्बर: शेर की खाल का वस्त्र पहनने वाले-भगवान शंकर
बाजदार: बाज (शिकारी चिड़िया) को लेकर चलने वाले
बाट: मार्ग, रास्ता
बाट देखना: प्रतीक्षा करना, इंतजार करना
बातिन: हृदय, अन्दर की हालत
बाध: खाट बुनने की मूँज या रस्सी
बादी: वात (वायु) विकार (रोग) करने वाली
बाम: स्त्री
बामिनियाँ: स्त्रियाँ
बाराह: विष्णु भगवान का एक अवतार जो शूकर (सुअर) के रूप में हुआ था
बारादरी: वह कमरा या बैठने का स्थान जिसके चारों तरफ बहुत सारे दरवाजे हों
बासर, वासर: दिन में
बासा: रहने का स्थान, निवास
बिकानी: बिक जाना
बिछुआ: पैर की उंगलियों में पहिनने का घुंघरूदार छल्ला

बिछखोपड़ा (विषखोपड़ा): बड़ी जंगली ज़हरीली छिपकली
बिनै: विनय, प्रार्थना
बिमल: पवित्र, निर्मल, स्वच्छ
बिरले, विरले: बहुत कम मिलने वाले
बिरथा: वृथा, बेकार
बिरहा: वियोग, किसी से अलग होने का भाव
बिरिया, बेरिया: समय, बेला
बिलग: अलग, जुदा
बिलरिया: माया
बिस्वा: एक बीघे का बीसवां भाग
बिहंसै: हँस कर
बिहिश्त: बैकुंठ
बिहरत: बिहार (सैर) करती हैं
बीघा: एक एकड़ का साठ प्रतिशत भाग
बीछी: बिच्छू
बीड़ा: गिलौरी, कौर (जैसे पान का बीड़ा)
बुड्डी: डुबकी
बुरजा: मीनार, किले या भवन की दीवारों का वह ऊपरी भाग जिसमें बैठने के लिये थोड़ा स्थान होता है
बुहारैं: झाड़ू लगाना
बूचा: एक तरह की सवारी
बेटेम: असमय, बिना सही समय के
बेदम: साँस समाप्त होने तक
बेपरवाई: बेफिक्री, निश्चिन्तता
बेफई: बृहस्पतिवार
बेर: बार
बेलचा: कुदाली
बेवा: विधवा
बेहना: धुनियाँ
बैठेव: बैठे हो
बैन: वचन
बैन: वचन, बोल
बैर: दुश्मनी, शत्रुता
बैस: वयस, आयु, अवस्था
बोध: भगवान की प्राप्ति का सच्चा ज्ञान
बोरैं: डुबायें
बोलकारना: बुलाना
बौराय: पागल हो जाय
ब्रज, बृज: कृष्ण भगवान की जन्म भूमि तथा बचपन में रहने का स्थान
ब्रह्मरंध्र: सिर में एक स्थान जहाँ पर योगी प्राण चढ़ा लेते हैं
बृथा, वृथा: बेकार
ब्याल: साँप

भ

भंगड़ी: भांग (नशा) खाने वाला
भंजाकर: भुना कर, छोटे सिक्के करा कर
भगिनी: बहिन
भगौती, भगवती: देवी दुर्गा
भट्टा: ईंट पकाने की बड़ी भट्ठी, आँवां
भल: सहारा
भतार, भर्तार: पति
भरम, भ्रम: संदेह, संशय

भरमैयो: भ्रमित होना
भव: संसार
भवजाल: संसार में जन्म मरण का चक्कर
भांटा: बैगन
भांड़: हँसाने वाला, मसखरा
भा: भया, हुआ
भाख्यो: कहा है
भाता: अच्छा लगता
भादों: भाद्रपद माह (अगस्त-सितम्बर)
भारा: छोटा घर, बाड़ा
भावावेश: प्रेम भाव के वेग में डूबे हुये
भासता रहा: मालूम होना, जान पड़ना, दिखाई देना
भिखियारा: भिखारी
भिच्छा: भीख
भीति: दीवार
भुआल, भुवाल: राजा
भुइंधरा, भुइंहरा: भूमि के नीचे खोदकर बनाया गया स्थान, तहखाना
भुरजी: बुर्ज, मीनार
भुरजी: लैया भूनने वाला
भुवंग: भुजंग, साँप
भुषुण्डि: कागभुषुण्डि ऋषि जिनका रूप कौवे ऐसा है
भूँजा: भुना
भोर: बहुत सवेरे
भोरहरे: भोर या तड़के के समय, बहुत सवेरे
भौंरी: बाटी, सेंके हुये आटे का गोलाकार लोंदा (टुकड़ा)
भ्रान्ति, भर्म: भ्रम, सन्देह, धोखा, शक

म

मंजु: सुंदर
मँझारी: बीच में
मंडली: लोगों का समूह
मंडित: सजाया हुआ
मचियाए: साजे गये, बांधे गये
मज्जन: स्नान
मजहब: धर्म
मतंग: हाथी
मतवार: मतवाला, मस्त
मथाई: मथानी से तरल पदार्थ तेजी से चलाना, बिलोना, हिलाना; बार बार सोचना
मद: घमंड, अहंकार
मदति: घमंड
मद्दी: सस्ती
मदन: कामदेव
मधुकरी: भिक्षा - पके हुये भोजन की
मधुपुरी: मथुरा
मन: 1 मन = 40 सेर
मनमथ: कामदेव
मनी: अहंकार
मन्द विचार: नीच दुष्ट विचार
मनौगती से: अंतर्धान होकर
मरदन: मर्दन, कुचलना, नाश करना
मर्तबा: बार, दफा
मर्म: सच्चा स्वरूप, रहस्य, भेद

मलका: महारानी
मसला: कहावत, समस्या, सोचने वाला विषय
मसली: मसल देना
मस्नूई: झूठा, मिथ्या, बनावटी
मह: मँह, में
महतारी: माता
महाकाल: कालों का काल
माँजन: मैल छुड़ाया जाना
माघ: माघ महीना (जनवरी-फरवरी)
माठा: मट्ठा
माछी: मक्खी
माते हुये: मस्त हुये, बहुत नशे में हुये
माफिक: अनुसार, मुताबिक
मारग: मार्ग, रास्ता
मारन, मारण: एक तांत्रिक प्रयोग किसी को मारने के लिये
मासिक: स्त्रियों के हर महीने होने वाला रज स्त्राव, मेन्सेस
माहवार: हर महीने की तनख्वाह, आमदानी
माहीं: में
मिथिला: बिहार में एक स्थान जहाँ सीताजी का जन्म हुआ था
मिल्लत: धर्म, मज़हब
मिहर: मेहर, कृपा
मीन: मछली, जाप का एक तरीका
मुंदर, मुंदरी: अंगूठी
मुण्डमाल: शंकर भगवान के गले में रहने वाली कटे हुए सिरों (मुण्डों) की माला
मुकर्रर: निश्चित
मुखारबिन्द: मुँह

मुगदर: भारी मुँगरी का जोड़ा जिसका उपयोग व्यायाम के लिये होता है
मुद: आनन्द
मुद: आनन्द
मुद मंगल: हर्ष, आनन्द, कल्याण
मुरचंग: तारों का एक प्रकार का बाजा
मुराऊ: साग सब्जी पैदा करने वाली जाति
मुर्री: कपड़े आदि में लपेटकर उसमें डाली हुई ऐंठन
मुरछल: मोरछल, मोर पंख या मुलायम सफेद बालों का बना चँवर (एक प्रकार का पंखा)
मुरीद: शिष्य, चेला
मुलाजिमत: नौकरी, सेवकाई, सेवा
मुर्शिद, मुरशिद: गुरु, पीर
मुश्क्यावै: मुस्कुराये
मुसल्लम: पूर्ण, पूरा, अखंड, पक्का
मुसाहिब: बड़े आदमियों के पास उठने-बैठने वाला
मूंड: सर
मूँदना: ऊपर मिट्टी डालकर बन्द कर देना (ढाँक देना)
मूजिद: आविष्कार, ईज़ाद करने वाला
मूजी: सताने वाला, धूर्त, नीच आदमी
मूढ़: मूर्ख
मूर: जड़ी-बूटी
मूर्ति, मूर्ती: मनुष्य
मूलाबाई: माया देवी
मूस: चूहा
मेख: कील, लकड़ी का खूँटा
मेटुकी: मटका, घड़ा
मैदा कर: मिटा कर

मोट: गठरी, ढेर, चमड़े का बड़ा थैला जिसमें पानी भरा जाता है धोने या सिंचाई के लिये
मोढ़े: कन्धा
मोजिद: उपासना करने वाला
मौलसरी: एक बड़ा सदाबहार पेड़ जिसमें छोटे सुगन्धित फूल लगते हैं, बकुल
मौला: ईश्वर

य

यक्ष: कुबेर के गणों और उनकी निधियों (संपत्ति) की रक्षा करने वाली एक प्रकार की देव योनि
यदुराई: कृष्ण भगवान
याचक: मांगने वाला, भिखारी
यानन: दिव्य विमान
याम: तीन घंटे का समय। एक दिन में अष्ट (आठ) याम या पहर होते हैं
यासे: इसीलिये
योग बल: योग साधना से प्राप्त बल
योग भ्रष्ट: जिसकी साधना में विघ्न आ गया था
योगी वृन्द: योगियों का समूह
योनि: प्राणियों की जातियाँ (जल चर, स्थल चर, नभ चर आदि) जिनकी कुल संख्या चौरासी (84) लाख है

र

रंज: दुख, शोक
रंडी: वेश्या

रगर: रगड़ के
रच देना: बना देना, स्वरूप खड़ा कर देना
रतनारे: कुछ लाल सुर्खी (गहराई) लिये हुआ
रजोगुण: प्रकृति के तीन गुणों में से एक-जो मन में चंचलता, भोग विलास, राजसी ठाठ बाट की प्रवृत्ति (इच्छा) उत्पन्न करता है
रफ़ते-मोहब्बत: प्रेम की ऊँचाई (बुलंदी)
रम्यं: सुन्दर, रमणीय
रयन: रैन, रात
रसना: जीभ
रसाल: मीठा
रसूल: ईश्वर का दूत, पैगम्बर
रहाइश: धीरज
राजत, राजैं: विराजमान (प्रकट) रहें
राजिवनयन: कमल नयन (भगवान का नाम)
रिन, रिण: कर्जा, ऋण
रिसि: क्रोध
रिसिआई: क्रोधित होकर
रीझना: अत्यन्त प्रसन्न होना, मुग्ध होना
रीझैं: मोहित हो जावें
रुख: भाव
रुखसत: विदा होना, चले जाना
रूचिर: रुचि (पसन्द) के अनुसार
रूठैं: नाराज हैं
रूपकला: अयोध्या का एक मंदिर
रोड़ा: ईंट या पत्थर का बड़ा टुकड़ा, ढेला
रोशन ज़मीर: संत; रोशन = साफ,

उज्जवल, जमीर = अंतरात्मा, मन
रोशनाईः स्याही

ल

लखि, लखनाः देखकर, देखना
लगरः लंगर (जिससे नाव या जहाज ठहर जाता है)
लतः बुरी आदत
लवाराः गाय का बछड़ा
ल्यानेः लाने
लाँगः धोती का वह भाग जो पीछे खोंसा जाता है
लावनीः एक प्रकार का लोक गीत
लीन्हेः लेकर
लील गयाः निगल गया
लुब्धीः पिसा हुआ पदार्थ (सामान)
लूकः लूह, तेज़ गरम हवा गर्मी की
लूकनाः लुकना, छिपना
लेंगड़ी खाचतः स्वादिष्ट भोजन करना
लेहुः ले लीजिये
लोभः लालच
लै, लय दशाः अत्यन्त ऊँची आध्यात्मिक दशा, भगवान के प्रेम में लय (लीन) होने की स्थिति
लौः मन की सच्ची लगन

व

वंशीः बाँसुरी
वज़ूः नमाज पढ़ने के पहले शुद्धि के लिये हाथ पाँव धोना
वयनः बयन, वचन, बोल
वलीः सिद्ध पुरुष, अल्लाह का प्यारा
वशीकरणः मणि, मंत्र या औषधि आदि के द्वारा किसी को अपने वश में करने का प्रयोग
वाकीः उसकी
वाकोः उसको
वातिनः हृदय, दिल, मन, अंदर की हालत
वादिनः बोलने वालों में
वानरीः बंदरिया
वाम मार्गः एक प्रकार का तंत्र साधना मार्ग
विकरालः डरावना, भीषण
विकार, विकाराः रोग, खराबियां; काम, क्रोध, मद, लोभ, मोह आदि
विटपः पेड़
विथा, व्यथाः पीड़ा, कष्ट
विद्रुमः लाल मूंगा (रत्न)
विधिः ब्रह्मा जी, विधाता
विमलः स्वच्छ, निर्मल, पवित्र
विरलेः बहुत ही कम मिलने वाले
विरती, वृत्तिः स्वभाव, प्रकृति
विरहः वियोग, किसी से अलग होने का भाव
विलोकतः देखते हुये
विष्टाः टट्टी, मल
विहँसिः हँस कर
वीर्यः शरीर की वह धातु जिससे उसमें बल, तेज और कान्ति आती तथा सन्तान उत्पन्न होती है, शुक्र, रेत, बीज
वीर्य ऊर्ध्वः जिनका वीर्य कभी स्खलित (गिरा) न हुआ हो

वेधिः बेध कर, छेद कर
वेरीः बेड़, चेन
वैदक शास्त्रः वैद्य शास्त्र
वैश्यः हिन्दुओं के चार वर्णों (ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य, शूद्र) में तीसरा वर्ण जिसका कार्य खेती, गोरक्षा तथा व्यापार है
वैसाखः वैशाख माह (अप्रैल-मई)
व्यापैगाः फैलेगा, समायेगा
व्यालः साँप
वृथाः बेकार, व्यर्थ

श

शरासनः धनुष
शालिगरामः शालिग्राम, विष्णु भगवान की गोल पत्थर की मूर्ति
शाहः बादशाह, बहुत बड़ा या श्रेष्ठ, मुसलमान फकीरों की उपाधि
शिकस्तः टूटा हुआ, खण्डित, हार, पराजय
शिथिलः सुस्त, थके हुये, कमज़ोर
शिज़दा, सिज़दाः घुटने टेक कर सर झुकाकर किया जाने वाला प्रणाम
शिरोमणिः सर्वश्रेष्ठ
शीत-उषनः जाड़ा-गर्मी
शुकुलः श्वेत, सफ़ेद, उजला
शुमारः हिसाब
शूलः तेज दर्द
शूलपाणिः जिनके हाथ में त्रिशूल है—शंकर भगवान
शेषः बाकी और कुछ
शेषः शेष नाग
शैः वस्तु, चीज़
शैवः भगवान शिव की पूजा करने वाले
श्रवननः कानों
श्रुतिनः कानों से

ष

षटरूपः छह रूप—भगवान सीता राम जी, राधा कृष्ण जी, लक्ष्मी विष्णु जी

स

संजमः संयम; परहेज़; इलाज के समय हानिकारक बातों, भोजन तथा कार्यों से बचना
संहारतः नाश करते
संहिताः वेदों के काल से चला आ रहा हिन्दुओं का धार्मिक ग्रन्थ
सखरनाः कर्जा उतर गया यह मान लेना
सखिनः सखियों
सखुनः बात, उपदेश, वार्तालाप
सघनः घना
सतपंचः ईश्वरी बातें तथा कार्य
सतोगुणः प्रकृति के तीन गुणों में पहला—जो अच्छे और सात्विक कर्म करने की प्रेरणा देता है
स्तोत्रः देवी-देवताओं की स्तुति के पद
सनः सनई के रेशे जिससे रस्सियां और टाट बनते हैं
सनमानः इज्जत, शान मान
सनातनः सदा बना रहने वाला, अनादि,

अनन्त, परंपरानुसार चला आता हुआ
सन्दलः चन्दन
सन्मुखः सामने
समः एक समान, एक बराबर
समताः एक समान की श्रद्धा, व्यवहार
समरः युद्ध
समलबाईः आँख का एक रोग
सम्मतिः राय, मत, अनुमति, विचार
समाधि कच्चीः मिट्टी से ढँक दी गई समाधि
समाधि पक्कीः ईंट सीमेन्ट से बनी समाधि
समुहेः समुदाय, कुल, सब प्रकार
समैयाः उत्सव, त्योहार
सम्बोधितः पुकार कर
सरः तालाब
सरगुन, सर्गुण, सगुणः भगवान का साकार रूप जैसे राम कृष्ण विष्णु शिव
सरजू लाभः सरजू नदी में शरीर को प्रवाह कर देना
सरमदः ईश्वर के प्रेम में मग्न (लीन)
सरनामः प्रसिद्ध, मशहूर
सरिताः नदी
सरैः पूर्ण हो
सरोवरः तालाब
सलतनतः शासन, राष्ट्र
सलूकाः स्त्रियों द्वारा ऊपर, ब्लाउज जैसा, पहिनने वाला वस्त्र।
सलूका बाँह कट्टाः बिना बाँह का ब्लाउज
सहजः स्वाभाविक, सरल
सांगोपांगः सब अंगों, उपांगों और उपनिषदों से युक्त, सम्पूर्ण
सांटीः छोटी पतली छड़ी
सांड़ियाः तेज चलने वाली ऊँटनी
साईतः मुहूर्त
साजः बाजा
साझाः हिस्सेदारी, सब का भाग (हिस्सा)
साफीः गमछा, छोटा कपड़ा पोछने या बांधने के लिये
सातौं कमलः मानव (नर-नारी) के सूक्ष्म शरीर में स्थित सात दिव्य कमल
सानीः पानी में भिगोया हुआ गाय भैंसों का चारा
सारंगपानीः विष्णु भगवान (जिनके हाथों में शार्गं धनुष है)
सारौः पूर्ण करो, पूरे करो
सालिगरामः शालिगराम
सावनः श्रावण माह (जुलाई-अगस्त)
सावांः दाना
साष्टांग दंडवतिः पूरा लेटकर प्रणाम करना
सिंगीः फूंककर बजाया जाने वाला सींग का एक बाजा
सिंग्रहणीः पेट की बीमारी, पेचिश
सिच्छाः शिक्षा (सीख)
सियाबरः सियावर, रामचन्द्र जी
सिरताजः मुकुट, सरदार, शिरोमणि
सिरानाः ठंडा होना, बीतना, बन्द होना, पूरा या समाप्त होना
सीधा (सीधे)ः भोजन की कच्ची सामग्री (सामान), बिना पका हुआ अन्न
सीतलाः चेचक रोग
सुआः तोता
सुकृत, सुकृतिः सत्कर्म, ईश्वर की प्राप्ति के लिये किये गये कर्म
सुखधामिनियाँः जो आनन्द का धाम (घर) हों
सुगतिः मरने के बाद जीव की अच्छी गति (अवस्था)
सुघरः सुडौल, सुन्दर
सुदीः शुक्ल-पक्ष
सुबहानः पवित्र, पूज्य
सुरख़ाब के परः बहुत विशेषता या अनोखापन होना
सुरतिः ध्यान करने का विशेष तरीका जो सतुगुरु के द्वारा प्राप्त होता है
सुरेशः इन्द्र
सुलगा करः जला कर, दहका कर
सुवन बोलः स्वर्ण (सोना) जैसे सुंदर वचन बोलने वाली
सूक्ष्मः बहुत कम, थोड़ा
सूक्ष्म शरीरः ऊपर के हड्डी-माँस के शरीर के अंदर का शरीर जिसमें जीवात्मा रहती है। ये शरीर मरने के बाद भी बना रहता है।
सूतक, सूदकः घर में किसी के मरने पर परिवार वालों को लगने वाला अशौच, अशुद्धता
सूपः अनाज फटकने के लिये सीकों का बना एक चौड़ा, किनारे से मुड़ा उपकरण
सूमः कंजूस
सूरः शूर, वीर, बहादुर
सेरः वजन का एक माप, 1 सेर = 80 तोला, 1 सेर = 0.9331 किलोग्राम
सैनः शयन (सोना)
सोंटाः कंधे तक का डंडा, मोटी छड़ी
सोईः वह
सोधनाः शुद्धता, सच्चाई की परीक्षा करना, निश्चित करना, शोध करना
सोतीः प्राकृतिक रूप से कहीं से निकलकर बराबर बहती रहने वाली पानी की छोटी धारा
सोरिनः सुअर के
सोहाग, सुहागः सौभाग्य (पति का साथ)
स्फटिकः एक प्रकार का सफेद पारदर्शी पत्थर जो देखने में बरफ के टुकड़े जैसा होता है
स्यानेः सयाने, बुद्धिमान
स्वर, स्वरनः स्वरों से, बाईं नासिका (नाक) चन्द्र स्वर व दाहिनी नासिका सूर्य स्वर कहलाती है
स्वर भंगः ठीक से बोल न पाना
स्वहारीः सुन्दर आहार (भोजन)

ह

हजूमः भीड़
हठः ज़िद
हव्यः हवन में देवताओं को अर्पित किया भोजन
हरखायः हरषाय, खुश होकर
हरः शंकर जी
हर हरः शिव शिव

हरताल: पीले रंग की दवा
हरि: विष्णु जी, भगवान
हल जाना: कमर के ऊपर तक पानी में घुस जाना
हवस: लालसा, वासना, चाह
ह्वै: हो कर
हाँक देना: जोर से पुकारना, ललकारना
हाकिम: बड़े अधिकारी
हाड़: हड्डी
हाड़न: हड्डियों से
हाता: अहाता, बाड़ा, घेरा, चहारदीवारी
हार में: जहाँ फसल काट कर फैलाई जाती है
हिंडोला: झूला, लकड़ी का बना बड़ा चक्कर जिसमें लोगों के बैठने के लिये ऊपर-नीचे घूमने वाले चौखट होते हैं।
हिय: हृदय
हुलास: विशेष आनन्द, उल्लास
हेम: सोना, स्वर्ण
हेराय: सुध बुध भूल जाय, खो जाय
हेरो: देखो, ताको

परमहंस राम मंगल दास जी
के
दिव्य ग्रन्थ

अनन्त श्री परमहंस राम मंगल दास जी

(1893-1984)

गोकुल भवन, अयोध्या

परमहंस राम मंगल दास जी विश्व के एक अद्वितीय ब्रह्मलीन संत थे जिनके समक्ष भगवान, देवी-देवता, ऋषि-मुनि, हर धर्म के पैगम्बर, सिद्ध संत, पौराणिक तथा ऐतिहासिक महापुरुषों ने प्रगट होकर आध्यात्मिक पद व उपदेश लिखवाए। परमहंस राम मंगल दास जी ने इन आध्यात्मिक पदों को मुख्यतः चार दिव्य ग्रंथों में संग्रहीत किया। भगवत् कृपा से लगभग 50 वर्ष पूर्व लिखे गए तथा दिव्य रूप से नामकरण किए गए इन ग्रंथों का सर्व जगत कल्याण के लिए अब प्रकाशन किया जा रहा है।

विश्व के इन अलौकिक ग्रंथों में भगवान के नाम की महिमा, सद्गुरु महिमा, सुरति शब्द योग, भगवान को पाने के अनेक मार्ग तथा उनमें आने वाली स्थितियां व अनुभव, ध्यान की विधियां, विभिन्न अनहद नाद, पूजन की विधियां, सब कमलों, चक्रों व नाड़ियों का वर्णन है। भगवान, देवी देवताओं के स्वरूप तथा सब लोकों का वर्णन किया गया है।

इन समस्त दिव्य ग्रंथों की मुख्य बात यह है कि इनमें किसी विशेष गुरु या साधन पद्धति का अनुकरण करने के लिए नहीं कहा गया है। ये दिव्य ग्रंथ हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई, जैन, बौद्ध आदि सभी धर्मों के पालन करने वालों के लिए हैं। अपनी अपनी परंपराओं पर चलते हुए कैसे भगवान की प्राप्ति हो सकती है इसका वर्णन दिव्य सिद्ध संतों ने किया है।

हर धर्म, जाति व पेशे (व्यवसाय) के संत पुरुष व संत स्त्रियों ने लिखवाया है कि जीवन में कैसा आचार-विचार होना चाहिए तथा उन्होंने किस प्रकार के कार्य किए जिनसे उनका कल्याण हुआ तथा उन्हें भगवान का धाम प्राप्त हुआ।

इन दिव्य ग्रंथों में सब धर्मों का सार, उनकी एकता, विश्व बंधुत्व, सब में प्रेम व्यवहार, सद्भाव, दीनता व सेवा भाव का उपदेश दिया गया है। श्री गुरुदेव परमहंस राम मंगल दास जी के अनुसार, इन ग्रंथों को जो पढ़ेगा, उन बातों पर चलेगा और तदनुसार अपनी दिनचर्या बनाएगा तो उसका जीवन सार्थक होगा, उनका कल्याण होगा।

श्री राम-कृष्ण लीला भक्तामृत चरितावली

दिव्य ग्रंथ-1

इस दिव्य ग्रन्थ-1 में श्री परमहंस राम मंगल दास जी को दर्शन देकर जिन्होंने पद लिखवाये हैं, संक्षिप्त रूप में वे हैं:–

- भगवान राम जी, सीता जी, कृष्ण जी, राधा जी, विष्णु जी, लक्ष्मी जी, शिव जी, पार्वती जी, गणेश जी, सरस्वती जी, दुर्गा जी, काली जी, हनुमान जी
- वशिष्ठ जी, विश्वामित्र जी, ध्रुव जी, प्रहलाद जी, यमराज जी, वाल्मीकि जी, व्यास जी
- हरि व हरि भक्तों द्वारा मारे जाने पर भगवान के धाम को गए राक्षस—हिरण्यकश्यप, तारकासुर, महिषासुर, रावण, कंस
- रामायण व महाभारत के पात्र– दशरथ जी, जनक जी, भीष्म जी, विभीषण जी, युधिष्ठिर जी
- बुद्ध जी, ऋषभ देव जी, मोहम्मद साहब जी, ईसा मसीह जी, हजरत निजामुद्दीन औलिया जी, स्वामी रामानन्द जी, आदिगुरु शंकराचार्य जी, स्वामी रामानुजाचार्य जी
- गुरु नानक जी, गुरु गोविन्द साहब जी, कबीर दास जी, तुलसीदास जी, रामकृष्ण परमहंस जी
- बादशाह अकबर, बादशाह सिकंदर, महाराणा प्रताप, महारानी विक्टोरिया, लेनिन जी

- भगत सिंह जी, गोखले जी, तिलक जी, मोतीलाल नेहरू जी, लाला लाजपत राय जी

इस ग्रन्थ में पूज्य ग्रन्थों–श्री रामचरितमानस, गीता, कुरान, गुरु ग्रन्थ साहब के दिव्य रूप से लिखे जाने का समय बताया गया है। जैसे, श्री हनुमानजी ने लिखाया है कि श्री रामचरितमानस की रचना विक्रमी संवत् 1631 चैत रामनवमी, मंगलवार के दिन विष्णु भगवान तथा सब देवी देवताओं के समक्ष शंकर भगवान द्वारा दी हुई दिव्य लेखनी के द्वारा तुलसीदास जी ने सुबह 8 बजे से शाम 4 बजे के बीच सम्पन्न की।

इस ग्रन्थ का नामकरण दिव्य रूप से गुरु वशिष्ठ जी ने किया। उन्होंने वि. संवत् 1990 अर्थात् 1933 ईस्वी में प्रकट होकर श्री परमहंस राम मंगल दास जी को इस दिव्य ग्रन्थ को 1999 ईस्वी में छपवाने की आज्ञा दी। यद्यपि इस ग्रन्थ का समापन 11 जुलाई 1945 ईस्वी को हो चुका था किन्तु यह ग्रन्थ परमहंस राममंगल दास जी द्वारा गोकुल भवन आश्रम में परम पूज्य रूप से सुरक्षित रखा गया। भगवान की असीम कृपा से तथा श्री परमहंस राममंगलदास जी के आशीर्वाद से, श्री वशिष्ठ जी की आज्ञानुसार 1999 ईस्वी में यह दिव्य ग्रन्थ प्रकाशित किया गया।

श्री भक्त भगवन्त चरितामृत सुखविलास

दिव्य ग्रंथ–2

इस दिव्य ग्रंथ–2 में श्री परमहंस राम मंगल दास जी को दर्शन देकर जिन्होंने दिव्य आध्यात्मिक पद लिखवाये हैं, संक्षिप्त रूप में वे इस प्रकार हैं–

- श्री परीक्षित जी, कृपाचार्य जी, मेनका जी, उर्वशी जी, रम्भा जी, विद्याधर गंधर्व जी।
- ऋषि भड्डरी जी, श्री शबरी जी, गणिका जी, कर्मा माई जी।
- संत एकनाथ जी, तुकाराम जी, मीरा जी, नरसी जी, निमाई–निताई जी।
- सम्राट अशोक जी, राजा भोज जी, बीरबल जी, शिवाजी, लक्ष्मीबाई जी
- परमहंस रामकृष्ण जी की पत्नी शारदा जी, महर्षि अरविन्द जी, गुरु गोविन्द सिंह जी, श्री अद्वैतानन्द जी।
- श्री हजरत जी, इब्राहीम जी, औलिया जी, बुल्लेशाह जी।
- श्री विद्यासागर जी, कमला नेहरू जी, मौलाना मुहम्मद अली जी।

इस ग्रंथ की रचना सन् 1936 ई० के लगभग से प्रारंभ हुई। इसमें कई संतों ने प्रकट होकर भविष्यवाणी की है कि महात्मा गांधी, जो कबीरदास जी के अंश थे, उनके द्वारा भारत का उद्धार होगा तथा वि० संवत् 2000 (सन् 1943 ई०) के बाद भारत के लिए 100 वर्ष का समय अत्यंत सुख का होगा।

श्री संत भगवन्त कीरति

दिव्य ग्रंथ–3

इस दिव्य ग्रंथ–3 में श्री परमहंस राम मंगल दास जी को दर्शन देकर जिन्होंने दिव्य आध्यात्मिक पद लिखवाये हैं, संक्षिप्त रूप में वे इस प्रकार हैं–

- श्री विराट भगवान जी, श्री पर नारायण जी
- श्री विन्ध्यवासिनी देवी जी, श्री अष्टभुजा माता जी, श्री धमसा माता जी,
- भगवान राम जी के मुकुट, धनुष व बाण, भगवान कृष्ण जी की मुरली व कुंडल, भगवान विष्णु के शंख, गदा व पद्म
- भगवान शंकर जी का त्रिशूल, डमरू व झोरी
- श्री सीता जी, राधा जी, लक्ष्मी जी की चन्द्रिका
- ऐसे सन्त जिनके सामने हर समय विभिन्न देवी–देवताओं की छटा रहती है।
- श्री नागा राम दास जी, श्री पलटू जी
- श्री अंधे शाह जी

विभिन्न दुष्कर्मों व कुकर्मों के करने से किस भयावह नर्क में सजा मिलती है उसका वर्णन किया है। निंदा करने वाले को आधा पाप मिलता है–यह बताया गया है।

श्री हरि चरित्र भक्तन चरित्र

दिव्य ग्रंथ–4

इस दिव्य ग्रंथ–4 में श्री परमहंस राम मंगल दास जी को दर्शन देकर जिन्होंने दिव्य आध्यात्मिक पद लिखवाये हैं, संक्षिप्त रूप में वे इस प्रकार हैं–

- श्री अंधे शाह जी (श्री कबीर दास जी के समकालीन) जिनके गुरु स्वयं भगवान शंकर जी व हनुमान जी थे।
- श्री कबीर दास जी, श्री तुलसी दास जी
- श्री मलिक मुहम्मद जायसी, श्री चाली दास जी
- श्री कृष्णदास पयहारी जी

इस दिव्य ग्रंथ-4 के अंत में संत श्री पयहारी जी ने सन् 1958 में प्रकट होकर दिव्य रामायण लिखवाई है। यह दिव्य रामायण अलौकिक है। इसमें रामायण संबंधी अभूतपूर्व आध्यात्मिक तथ्यों का वर्णन है जो और कहीं उपलब्ध नहीं हैं। ये दिव्य प्रसंग व तथ्य भक्ति तथा प्रेम से सराबोर हैं और असीम आनन्द प्रदान करने वाले हैं।

बैकुण्ठ धाम के अमृत फल

श्री परमहंस राममंगलदास जी निरन्तर ब्रह्मलीन अवस्था में अनहद नाद सुनते रहते थे। इसी कारण वे अपने कानों से बाहर की आवाज नहीं सुन पाते थे। भक्त अपने प्रश्न पत्थर की स्लेट पर लिख कर देते थे। श्री महाराज जी उस स्लेट को पढ़कर कभी स्लेट पर ही लिखकर या अपने श्री मुख से बोलकर शंका समाधान करते व उत्तर देते। उन्हीं कुछ उपदेशों व प्रश्नोत्तर का संकलन इस पुस्तक में किया गया है।